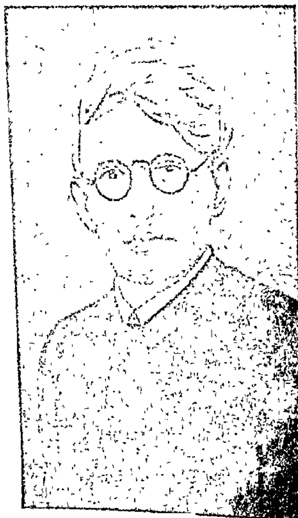
१. जैन साहित्य महारथी स्व० श्री मोहनलाल द० देशाई



समर्पण

जिनके "कविवर समयसुन्दर" निबन्ध ने हमें साहित्यक्षेत्र में
आगे बढ़ने का अवसर दिया, जिनके "जैन गूर्जर कविओ"
भाग १-२-३ व "जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास" ग्रन्थ
जैन साहित्य और इतिहास के लिए परम प्रकाश पुञ्ज
हैं, उन्हीं सहृदय, परम अध्यवसायी, शोध निरत,
महान् परिश्रमी और निष्णात साहित्य-महारथी
स्वर्गीय श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई (एड-
वोकेट, बम्बई हाईकोर्ट) महोदय की मधुर
स्मृति में यह समयसुन्दर कृति
कुसुमाञ्जलि सादर समर्पित है।



अगरचन्द नाहटा,
भँवरलाल नाहटा.

भूमिका



मेरे मित्र श्री अगरचन्दजी नाहटा प्राचीन ग्रन्थों के अन्वेषक की अपेक्षा उद्धारक अधिक हैं, क्योंकि वे केवल पुस्तकों के भाण्डारों में गोते लगाकर सिर्फ पुरानी अज्ञात अपरिचित पुस्तकों और ग्रन्थकारों का पता ही नहीं लगाते हैं बल्कि पता लगाई हुई पुस्तक और लेखकों के अतिरिक्त वक्तव्य विषय का ऐतिहासिक वृत्त एवं सांस्कृतिक महत्त्व बताकर साहित्य प्रेमी जनता को उनके प्रति उत्सुक बनाते हैं और समय समय पर महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके उन्हें सर्व-जन-सुलभ भी बनाते हैं। नाहटाजी ने अब तक सैंकड़ों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का संधान बताया है और विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में सैंकड़ों लेख लिखकर विस्मृत ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की ओर सहृदयों का ध्यान आकृष्ट किया है। नाहटाजी जैसे परिश्रमी और बहुश्रुत विद्वान हैं वैसे ही उदार और निस्पृह भी। उन्होंने अपने महत्त्व-पूर्ण लेखों को दोनों हाथ लुटाया है। छोटी-छोटी अपरिचित पत्रिकाएँ भी उनकी कृपा से कभी वञ्चित नहीं रहती हैं। इस अवढर दानी स्वाभाव का फल यह हुआ है कि उनके लेख इतने बिखर गए हैं कि साहित्य के विद्यार्थी के लिए एकत्र करके पढ़ना और लाभ उठाना लगभग असम्भव हो गया है। यदि ये सभी लेख पुस्तक रूप में एकत्र संगृहीत हो जाँय तो बहुत ही अच्छा हो। अस्तु।

उत्तर भारत में ईस्वी सन् की १० वीं शताब्दी के बाद विदेशी आक्रामकों के धक्के बार-बार लगते रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में जो साहित्य बना वह उचित संरक्षण नहीं पा सका। साधारणतः तीन प्रकार से प्राचीन काल में हस्तलिखित ग्रन्थों का रक्षण होता रहा है—(१) राजशक्ति के आश्रय में, (२) संघटित धर्म-संप्रदाय के संरक्षण में, और (३) लोक-मुख में। जिन प्रदेशों में परवर्तीकाल में अवधी और व्रजभाषा का साहित्य लिखा गया, उनमें दुर्भाग्यवश चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में लिखे गए साहित्य के लिए प्रथम दो आश्रय बहुत कम उपलब्ध हुए। मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा के बाद देश में शान्ति और सुव्यवस्था कायम हुई और हस्तलिखित ग्रन्थों के संरक्षण का सिलसिला भी जारी हुआ। परन्तु राजपूताने में दोनों प्रकार के आश्रय प्राप्त थे। इसीलिये राजस्थान में देशी भाषा के अनेक ग्रन्थ सुरक्षित रहे। यद्यपि विदेशी आक्रामकों ने राजपूताने पर भी आक्रमण किए परन्तु भौगोलिक कारणों से उस प्रदेश में बहुत-सी साहित्यिक संपत्ति सुरक्षित रह गई। अनेक राजवंशों के पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकें किसी न किसी रूप में सुरक्षित रह गई। किन्तु पुस्तकों के संग्रह और सुरक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जैन-ग्रन्थ-भाण्डारों ने किया है। जैन मुनि लोग सदाचारी और विद्याप्रेमी होते थे। वे स्वयं शास्त्रों का पठन-पाठन करते थे, और लोक-भाषा में काव्य-रचना भी करते थे। इन ग्रन्थ भाण्डारों का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है। काल-क्रम से गृहस्थ भक्तों के चित्त में इन ग्रन्थ भाण्डारों के प्रति कभी कभी मोहान्ध भक्ति भी देखी गई है। कितने ही भाण्डारों के ताले वर्षों से खुले ही नहीं, कितने ही ग्रन्थ भाण्डारों में पुस्तकें रखी-रखी राख हो गई, और जाने कितने बहुमूल्य

ग्रन्थ सदा के लिये लुप्त हो गए। फिर भी इस निष्ठा पूर्वक समाचरित अन्धभक्ति का ही सुफल है कि इन ग्रन्थ-भाण्डारों के ग्रन्थ बिना हेर—फेर के शताब्दियों से ज्यों के त्यों सुरक्षित रह गए हैं। इन ग्रन्थ-भाण्डारों की पूर्ण परीक्षा अभी नहीं हुई है। परन्तु जिन लोगों को भी इन महत्त्वपूर्ण भाण्डारों को देखने का सुअवसर मिला है; वे कुछ न कुछ महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ अवश्य (प्रकाश में) ला सके हैं। नाहटाजी को कई भाण्डारों के देखने का अवसर मिला है और उन्होंने अनेक ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार भी किया है। समयसुन्दर कृति 'कुसुमाञ्जलि' भी ऐसी ही खोज का सुफल है। यह ग्रन्थ भाषा, छन्द, शैली और ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से बहुत महत्त्व-पूर्ण है। इसमें सन् १६८७ ई० के अकाल का बड़ा ही जीवन्त वर्णन है। यह अकाल गोसाईं तुलसीदास के गोलोकवास के सिर्फ सात वर्ष बाद हुआ था। कवि ने इसका बड़ा ही हृदय-द्रावक और जीवन्त वर्णन किया है। इस ग्रन्थकार के बारे में नाहटाजी ने नागरी-प्रचारिणी पत्रिका के सं० २००६ के प्रथम अंक में जो लिखा था, उससे ज्ञात पड़ता है कि इस ग्रन्थकार की जन्म-भूमि मारवाड़ प्रांत का सांचौर स्थान है। ये पोरवाड़ वंश के रत्न थे और इनका जन्मकाल संभवतः सं० १६२० वि० है। अकबर के आमंत्रण पर ये लाहौर में सम्राट से मिलने गए थे। इनके लिखे संस्कृत ग्रन्थों की संख्या पच्चीस है और भाषा में लिखे ग्रन्थों की संख्या भी तेईस है। इन्होंने 'सात छत्तीसियों' की भी रचना की थी। कई अन्य रचनाएं भी इनके नाम पर चलती है पर नाहटाजी को उनकी प्रामाणिकता पर सदेह है। स० १७०२ में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी (महावीर जन्म जयन्ती) के दिन अहमदाबाद में इन्होंने अनशन आराधना पूर्वक शरीर त्याग किया।

इनके द्वारा रचित साहित्य की नामावली देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह कितना महत्त्व पूर्ण है। उसमें रास, चौपाई आदि कई ऐसे काव्य रूप मिलते हैं, जो अपभ्रंश-काल से उस समय तक बनते चले आ रहे थे। इनके प्रकाशित होने पर उन छूटी हुई कड़ियों का पता लग सकता है, जो अब तक अज्ञात हैं। नाहटाजी ने जिस ग्रन्थ का संपादन किया है वह इनकी कवित्व-शक्ति की प्रौढ़ता का उदाहरण है। इसकी भाषा में भावों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। कवि का ज्ञान-परिसर बहुत ही विस्तृत है, इसलिये वह किसी भी वर्ण्य विषय को बिना आयास के सहज ही संभाल लेता है।

इस पुस्तक के छन्दों और रागों से तत्कालीन व्रजभाषा में प्रचलित पद-शैली के अध्ययन में सहायता मिलेगी। नाथ-पंथी योगियों और निर्गुणियों सन्तों की भाषा और शैली की तुलना की जा सकती है। जान पड़ता है कि इस ग्रन्थ का लेखक निर्गुण भाव से भजन करने वाले सन्तों की साखी तथा सबदी शैली से पूर्णत: परिचित है और सूरदास, तुलसीदास जैसे सगुण भाव से भजन करने वाले भक्त कवियों की पदावली से भी प्रभावित है। कई पदों में सूरदास और तुलसीदास की शैलियों का रस मिलता है। यह ग्रन्थ सन् ई० की सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी की भाषा और शैली के अध्ययन में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

नाहटाजी ने इस ग्रन्थ का संपादन करके हिन्दी-साहित्य के अध्येताओं के सामने बहुत अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है। मैं हृदय से उनके प्रयत्न का अभिनन्दन करता हूँ। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि नाहटाजी को दीर्घायुष्य और पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें; जिससे वे अनेक महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार करते रहें। तथास्तु।

काशी
११-३-५६

हजारीप्रसाद द्विवेदी

वक्तव्य

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दर की लघु रचनाओं का यह संग्रह प्रकाशित करते हुए २८ वर्ष पूर्व की मधुर स्मृतियें उभर आती हैं। वैसे तो कविवर की रचनाओं का रसास्वाद हमें अपने बाल्यकाल में ही मिल गया था, क्योंकि राजस्थान में, विशेषतः बीकानेर में आपके रचित शत्रुञ्जय रास, ज्ञान पञ्चमी और एकादशी के स्तवन, वीर स्तवन (वीर सुणो मोरी वीनती), शत्रुञ्जय आलोयणा स्तवन (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार) और कई अन्य स्तवन और सज्झायें जैन जनता के हृदयहार बन रही हैं। इनमें से कई रचनायें तो किसी गच्छ और सम्प्रदाय के भेदभाव बिना समस्त श्वेताम्बर जैन समाज में खूब प्रसिद्ध हैं। हमारे पिताजी प्रातःकाल की सामायिक में आपके रचित शत्रुञ्जय रास, गौतमगीत, नाकोड़ा स्तवन आदि नित्य पाठ किया करते थे और माताजी एवं अन्य परिवार वालों से भी आपकी रचनाओं का मधुर गुञ्जारव हमने बाल्यकाल में सुना है। पर सं० १९८४ को माघ शु० ५ को खरतरगच्छ के बड़े प्रभावशाली और गीतार्थ आचार्य श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी हमारे पिताश्री और बाबाजी आदि के अनुरोध से बीकानेर पधारे। वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हमारी कोटड़ी में ही उनके विराजने से हम भी व्याख्यान, प्रतिक्रमण आदि का लाभ उठाने लगे। इससे पूर्व भी कलकत्ता में सरबसुखजी नाहटा के साथ प्रतिदिन सामायिक में गाते हुए शत्रुञ्जय रास आदि तो हमने कण्ठस्थ कर लिये थे और ज्ञानपञ्चमी-एकादशी के स्तवन आदि भी समय समय पर बोलने और सुनाने के कारण अभ्यस्त हो गये थे। आचार्यश्री के साथ उपाध्याय सुखसागरजी, विनयी राजसागरजी और लघु शिष्य

मंगलसागरजी थे, उनसे भी प्रतिक्रमण आदि में आपके कई स्तवन-सज्झाय सुनते रहते थे। पर एक दिन उनके पास आनन्द-काव्य महोदधि का सातवाँ मौक्तिक देखा, जिसमें जैन-साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई का "कविवर समयसुन्दर"† निबन्ध पढ़ने को मिला। इस ग्रन्थ में कविवर का चार प्रत्येकबुद्ध रास भी छपा था। देसाई के उक्त निबन्ध ने हमें एक नई प्रेरणा दी। विचार हुआ कि समयसुन्दर राजस्थान के एक बहुत प्रसिद्ध कवि हैं और बीकानेर की आचार्य खरतर शाखा का उपाश्रय तो समयसुन्दर जी के नाम से ही प्रसिद्ध है। अतः उनके सम्बन्ध में गुजरात के विद्वान ने इतने विस्तार से लिखा है तो राजस्थान में खोज करने पर तो बहुत नई सामग्री मिलेगी। बस, इसी आंतरिक प्रेरणा से हमारी शोध प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी के उपाश्रय में ही हमें आपकी अनेक रचनाएँ मिलीं, जिनमें से चौवीसी को तो हमने अपने 'पूजा संग्रह' के अन्त में सं० १९८५ ही में प्रकाशित करदी थी और बड़े उपाश्रय के ज्ञान-भंडार, जयचंदजी भंडार, श्रीपूज्यजी का संग्रह, यति चुन्नीलालजी भं० अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और पार्श्वचंद्रसूरि उपाश्रय भं० व खरतर आचार्य शाखा का भण्डार मुख्यतः इसी दृष्टि से देखने आरम्भ किये कि कविवर की अज्ञात रचनाओं का संग्रह और प्रकाशन किया जाय। ज्यों ज्यों इन संग्रहालयों की हस्तलिखित प्रतियां देखने लगे, त्यों त्यों कविवर को अनेक अज्ञात रचनाएँ मिलने के साथ अन्य भी नई नई सुन्दर सामग्री देखने को मिली उससे हमारा उत्साह बढ़ता चला गया। सबसे पहले महावीर मण्डल के पुस्तकालय में हमें एक ऐसा गुटका मिला जिसमें कविवर की छोटी छोटी पचासों रचनाएँ संगृहीत थीं। साथ ही विनयचन्द्र आदि सुकवियों की मधुर

---

† यह गुजराती साहित्य परिषद में पहले पढ़ा गया फिर जैन साहित्य संशोधक भा० २ अ० ३-४ में छपा था।

रचनाएँ भी देखने को मिलीं। हमने बड़े उत्साह के साथ उन सब की नकलें करलीं। उस समय की लिखी हुई स्तवन सज्झाय संग्रह की दो कापियां आज भी हमें उस समय की हमारी रुचि और प्रवृत्ति की याद दिला रही हैं। साथ ही दूसरे कवियों की जो छोटी छोटी सुन्दर रचनाएँ हमें मिलीं, उनके नोट्स भी दो छोटी-कॉपियों में लेते रहे, जो अब तक हमारे संग्रह में हैं। कविवर की रचनाएँ इतनी अधिक प्रचलित हुई व इतनी बिखरी हुई हैं कि जिस किसी संग्रहालय में हम पहुंचते, वहां कोई न कोई अज्ञात छोटी मोटी रचना मिल ही जाती। इसलिये हमारी शोध प्रवृत्ति को बहुत वेग मिला। बड़े-बड़े ही नहीं, छोटे-छोटे भण्डारों के फुटकर पत्रों और गुटकों को भी हमने इसी लिये छान डाला कि उनमें कविवर की कोई रचना मिल जाय। आशानुरूप हर जगह से कुछ न कुछ मिल ही जाता। इस तरह वर्षों के निरन्तर लगन और श्रम से इस संग्रह को हम तैयार कर सके हैं।

कविवर के सम्बन्ध मे ही हमें बड़े बड़े विद्वानों से पत्र व्यवहार करने, मिलने और भण्डारों को देखने का सुयोग मिला। अन्यथा पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थी और व्यापारी घराने में जनमे हुए साधारण व्यक्ति के लिये वैसे सम्पर्कों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस लिये कविवर का जितना ऋण हमारे पर है, उससे थोड़ा सा उऋण होने का हमारा यह प्रकाशन-प्रयास है। देसाई के उल्लिखित कविवर की कई रचनाओं के सम्बन्ध में हमें उन्हें पूछ-ताछ करना आवश्यक था। इसलिये हमने अपनी जिज्ञासा कई प्रश्नों के रूप में उन्हें लिख भेजी। किसी भी साहित्यिक विद्वान से पत्र व्यवहार करने का हमारा यह पहला मौका था। कई महीनों तक उनका उत्तर नहीं आया तो बड़ा विचार और निरुत्साह होने लगा। पर कई महीनों बाद (ता० १६-१-३० को) उनका एक विस्तृत पत्र आया और फिर तो हमारा और उनका घनिष्ट सम्बन्ध होगया। उनके करीब ५० महत्त्वपूर्ण

पत्र हमारे संग्रह के हजारों पत्रों में निधिरूप हैं। फिर तो देसाईजी ने हमारे यु० जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ की विस्तृत प्रस्तावना लिखी। वे बीकानेर भी आये और कई दिन हमारे यहां रहे। तत्पूर्व और तब सैंकड़ों अज्ञात ग्रन्थों की जानकारी हमने शताधिक पृष्ठों की उन्हें दी, जिसका उपयोग उन्होंने 'जैनगूर्जर कविओ' के तीसरे भाग में किया है। इसी तरह पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी, बड़ौदा इन्स्ट्रीच्यूट के बड़े विद्वान हैं; उन्होंने जैसलमेर भांडागारीय सूची में समयसुन्दरजी की रचनाओं की सूची दी है, उसमें से कई रचनाएँ हमें कहीं नहीं मिली थीं। इसलिये उनसे भी सर्व प्रथम (ता० २७-१२-२६ के हमारे पत्र का उत्तर ता० १-२-३० को मिला) पत्र व्यवहार कवि की उन रचनाओं के लिये ही हुआ। कलकत्ते के अद्वितीय संग्राहक स्व० पूर्णचन्द्रजी नाहर से भी हमारा सम्बन्ध कविवर की आलोयणा छत्तीसी को लेकर हुआ। हम कविवर की अज्ञात रचनाओं की जानकारी के लिए उनके यहाँ पहुंचे तो आलोयणा छत्तीसी का नाम उनकी सूची में पाप छत्तीसी लिखा देखकर दोनों रचनाओंकी अभिन्नता की जांच करने के लिए उसकी प्रति निकलवाई। तभी से उनसे हमारा मधुर सम्बन्ध दिनों दिन बढ़ता गया। वे कई बार हमारे इस प्रारम्भिक सम्पर्क की याद दिलाते हुए कहा करते थे कि हमारा और आपका सम्बन्ध उस "पाप छत्तीसो" के प्रसङ्ग से हुआ है। ये थोड़े से उदाहरण हैं, जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि कविवर की रचनाओं की शोध के द्वारा ही हमारा साहित्यिक, ऐतिहासिक, अन्वेषणात्मक जीवन का प्रारम्भ हुआ और बड़े बड़े विद्वानों के साथ सम्पर्क स्थापित हुआ।

उपाध्याय सुखसागरजी की प्रेरणा और सहयोग भी यहां उल्लेखनीय है। उन्हें भी कविवर के ग्रन्थों के प्रकाशन की ऐसी धुन लगी कि बीकानेर चातुर्मास के बाद सर्व प्रथम सं० १६८८ में कल्याण मन्दिर वृत्ति, जिसकी उस समय एक मात्र प्रति पाटण-

चन्द्रसूरि गच्छ के उपाश्रय में ही मिली थी, प्रकाशित करवाई और उसके बाद क्रमशः गाथा सहस्री, कल्पसूत्र की कल्पलता टीका, कालिकाचार्य कथा (स० १६६६), सप्तस्मरण वृत्ति, समाचारी शतक (स०१६६६) आदि बड़े-बड़े ग्रंथ सम्पादित कर प्रकाशित करवाये। इसके पूर्व भी विशेषशतक (सं० १६७२), जयतिहुअणवृत्ति, दुरियर-वृत्ति (सं० १६७२-७३), जिनदत्तसूरि ग्रन्थमाला से वे प्रकाशित करवा चुके थे। इनके अतिरिक्त इससे पूर्व कविवर की संस्कृत रचनाओं में दशवैकालिकवृत्ति, अल्पबहुत्वगर्भित वीरस्तवस्वोपज्ञ-वृत्ति, श्रावकाराधना और अष्टलक्षी ये चन्द ग्रन्थ ही विविध स्थानों से छपे थे। सं० २००८ में बुद्धिमुनिजी ने चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति प्रकाशित की। राजस्थानी भाषाओं की रचनाओं में शत्रुञ्जय रास, दानादि चौढालिया, ज्ञानपञ्चमी, एकादशी आदि के पूर्व वर्णित स्तवन, सज्झाय, 'रत्नसागर', 'रत्न समुच्चय' और हमारे प्रकाशित 'अभयरत्नसार' आदि में बहुत पहले ही छप चुके थे। देसाई ने भी उन्हें प्राप्त कुछ छोटे-मोटे गीत और वस्तुपाल तेजपालरास, सत्यासिया दुष्काल वर्णन आदि जैनयुग (मासिक) में प्रकाशित किये थे। हमने कविवर की रचनाओं में सर्वप्रथम 'जैनज्योति' मासिक पत्र में पुन्जा ऋषिरास सं. १६८७ में प्रकाशित करवाया और कवि के मृगावतीरास के आधार से 'सती-मृगावती' पुस्तक लिखकर सं० १६८६ में प्रकाशित की। उसके बाद तो कविवर सम्बन्धी कई लेख जैन, कल्याण (गुज०), भारतीय विद्या (सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी), नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जैन-भारती,¶ जैन जगत आदि पत्रों में प्रकाशित किये।

सं० १६८६ मे ही हमें कविवर के जीवनी संबंधित उन्हीं के शिष्य हर्षनंदन और देवीदास रचित 'समयसुंदरोपाध्यायनाम् गीत द्वयम्' का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिनकी नकल हमने देसाईजी को भेजकर जैनयुग

¶ गत वर्ष धनदत्त रास व प्रियमेलक रास का सार भी जैनभारती और मरुभारती में प्रकाशित किया गया है।

के सं० १६८६ के वैशाख जेठ अङ्क के पृ० ३५२ में प्रकाशित करवाये। साथ ही सत्यासिया दुष्काल वर्णन के अपूर्ण प्राप्त १६ पद्य देसाई ने जैनयुग सं० १६८५ के भादवे से कार्तिक अङ्क के पृ० ६८ में छपवाये थे, उनके कुछ और पद्य हमें प्राप्त हुए उन्हें भी अगमवाणी के साथ उसी वैशाख-जेठ के अङ्क में प्रकाशित करवा दिये। गीत द्वय को प्रकाशित करते हुये उस समय हमारे सम्बन्ध में देसाई जी ने लिखा था—"आ कवि श्री सम्बन्ध मां में भावनगर गुजराती साहित्य परिषद माटे एक निबन्ध लख्यो हतो अने ते जैन साहित्य संशोधक ना खण्ड २ अङ्क ३।४ मां अने ते सुधारा वधारा सहित आनन्द काव्य महोदधि ना मौक्तिक ७ मां नी प्रस्तावना मां प्रकट थयो छे। ते कवि सम्बन्धी बीकानेर ना एक सज्जन श्रीयुत अगरचन्द भँवरलाल नाहटा घणो प्रयास करता रह्या छे अने अप्रकट कृतिओ तेमणे मेलवी छे। ओ शोधना परिणाम रूपे तेमना सम्बन्ध मां तेमना शिष्य हर्षनन्दने अने देवीदासे गीतो रच्या छे ''''''''आ बन्ने गीतो अमे नीचे उतारीने आपिये छीये अने तेनो उपगार श्रीयुत नाहटाजी ने छे कारण के तेमने पोताना संग्रह मां थी उतारी ने मोकल्या छे।"

कविवर की जीवनी संबन्धी जो दो गीत उपर्युक्त 'जैन-युग' में प्रकाशित करवाये गये, उनमें सं० १६७२ तक की घटनाओं का ही उल्लेख था। इसके बाद बाड़मेर के यतिवर्य नेमिचन्दजी से कविवर के प्रशिष्य राजसोमरचित 'महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्' प्राप्त हुआ, जिसमें उनके उपाध्यायपद, क्रियाउद्धार और अहमदाबाद में सं० १७०२ के चैत्र शु० १३ को स्वर्गवास होने का महत्वपूर्ण उल्लेख पाया गया। उसके बाद आज तक भी उनकी जीवनी सम्बन्धी कोई रचना और कहीं से प्राप्त नहीं हुई।

कविवर के प्रगुरु अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि थे। कविवर के प्रसङ्ग से ही उनका संक्षिप्त परिचय पहले लिखा गया जो बढते बढते ४५० पृष्ठों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में परिणित हो गया। शताधिक ग्रन्थों के आधार से हमारा यह सर्वप्रथम विशिष्ट ग्रन्थ लिखा गया, उसका श्रेय भी कविवर को ही है। इस ग्रन्थ में विद्वत् शिष्य समुदाय नामक प्रकरण में कविवर का भी परिचय दिया गया था। उसी के साथ-साथ हमारा दूसरा बृहद् ग्रन्थ 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' छपना प्रारम्भ हुआ, जिसमें कविवर के जीवन सम्बन्धी उपर्युक्त तीनों गीत प्रकाशित किये गये।

कविवर ने अपनी लघु रचनाओं का संग्रह स्वयं ही करना प्रारम्भ कर दिया था। क्योंकि वैसी रचनाओं की संख्या लगभग एक हजार के पास पहुंच चुकी होगी। अतः उनका व्यवस्थित संकलन किये बिना इन फुटकर और बिखरी हुई रचनाओं का उपयोग और संरक्षण होना बहुत ही कठिन था। हमें उनके स्वय के हाथ के लिखे हुए कई संकलन प्राप्त हुए हैं और कई संकलनों की नकलें भी प्राप्त हुई हैं, जिनसे उन्होंने समय-समय पर अपनी लघु रचनाओं का किस प्रकार सङ्कलन किया था उसकी महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनके किये हुए कतिपय संकलनों का विवरण इस प्रकार है—

छत्तीस की संख्या तो उन्हें बहुत अधिक प्रिय प्रतीत होती है। क्षमा छत्तीसी, कर्मछत्तीसी, पुण्य छत्तीसी, सन्तोष छत्तीसी, आलोयण छत्तीसी आदि स्वतंत्र छत्तीसियां प्राप्त होने के साथ-साथ निम्नोक्त संकलित छत्तीसियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :—

१. ध्रुपद छत्तीसी—इसमें छोटे छोटे छत्तीस पद जो राग-रागनियों में हैं, उनका संकलन किया गया है। यद्यपि हमने

उनको उस रूप में इस ग्रन्थ में नहीं रखा है। हमारा वर्गीकरण कुछ विशेष प्रकार का होने से प्राप्त कई संकलनों का क्रम टूट गया है। इस ध्रुपद छत्तीसी की सं० १६७० की लिखित प्रति देसाई के संग्रह में है। अन्य प्रति बीकानेर के बड़े ज्ञान भंडार में है।

२. तीर्थ भास छत्तीसी—इसमें तीर्थों सम्बन्धी छत्तीस गीतों का संकलन किया गया है। इसकी ११ पत्रों की अहमदाबाद में सं० १७०० आषाढ वदि १ स्वयं की लिखित प्रति बंबई रॉयल देशियाटिक सोसाइटी से प्राप्त हुई है। अन्य प्रति हमारे संग्रह में है।

३. प्रस्ताव सवैया छत्तीसी—इसमें छत्तीस फुटकर सवैयों का संकलन है, जो समय समय पर रचे गये होंगे। इसकी स्वयं लिखी प्रति हमारे संग्रह में है।

४. साधु गीत छत्तीसी—इसके अंतिम २ पत्रों वाली प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ३१ से ३६ तक के गीत व अन्त में ३६ गीतों की सूची है।

५. सत्यासिया दुष्काल वर्णन छत्तीसी—इसके फुटकर वर्णन वाले छन्दों की कई प्रकार की प्रतियां मिली हैं। जिनसे मालूम होता है कि समय समय पर उन छन्दों की रचना फुटकर रूप में हुई और अन्त में पूर्तिस्वरूप कुछ पद्य बनाकर यह छत्तीसी रूप संकलन तैयार कर दिया गया।

६. नेमिनाथ गीत छत्तीसी—इसकी स्वयं लिखित प्रति के नौ पत्र हमारे संग्रह में हैं. इसका अन्त का एक पत्र नहीं मिलने से ३४ वें गीत की एक पंक्ति के बाद शेष २ गीत अधूरे रह जाते हैं।

७. वैराग्य गीत छत्तीसी—इसमें वैराग्योत्पादक छत्तीस गीतों का संकलन था, पर इसकी प्रति भी त्रुटित (पत्रांक ५-१० वां, दो पत्र)

प्राप्त हुई है। उसके अन्त में जो सूची दी गई है, उसमें से तीन गीत तो अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं—१. मोरा जीवनजी, २. जपउ पञ्च परमेष्ठी परभाति जाणं, ३. मरण पग माहि नित वहइ।

सांझी गीत पचीसी—इसी तरह सांझी गीतों का एक संग्रह तैयार किया गया, जिसकी एक प्रति पालनपुर भण्डार में इलादुर्ग में स्वयं की लिखी हुई सात पत्रों की मिली, जिसमें २१ सांझी गीत थे। इसके बाद बीदासर के यति गणेशलालजी के संग्रह में दूसरी प्रति मिली, जिसमें चार गीत और जोड़कर गीतों की संख्या २५ की करदी गई है। इसलिये हमारे इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४६३ में सांझी गीतों का कलश रूप जो गीत छपा है, उसके अन्तिम पद्य में 'सांझी गीत सुहावणा ए, मैं गाया इकवीस' छपा है। यहां दूसरी प्रति में २१ के स्थान 'पचवीस' का पाठ मिलता है।

रात्रिजागरण गीत पंचास—इसमें धार्मिक उत्सवों के समय रात्रिजागरण करने की जो प्रणाली थी, उसमें गाये जाने योग्य ५० गीतों का संकलन कवि ने किया है। जिसका अंतिम कलश-गीत इसी ग्रन्थ के पृ० ४६३ में छपा है। इसकी स्वयं की लिखित प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ४६ गीत हैं।

भास शतकम्—इसमें भास संज्ञावाली एक सौ रचनाओं का संकलन है। सं० १६६७ अहमदाबाद में स्वयं की लिखी हुई २६ पत्रों की प्रति महोपाध्याय विनयसागरजी को प्राप्त हुई। इसका प्रथम पत्र नहीं मिला है।

साधु गीतानि—इसमें मुनियों की जीवनी सम्बन्धी गीतों का संकलन किया गया है। इसकी भी स्वयं लिखित दो प्रतियां और अन्य लिखित कई प्रतियां मिली हैं। जिनमें एक के तो मध्य पत्र ही मिले हैं। उनमें संख्या २१ से ५१ तक के गीत ही मिले हैं।

सं० १६६५ में हरिराम का लिखा हुआ गीत भी इसमें है। प्रारम्भिक गीत स्वयं लिखित है और पीछे के गीत हरिराम के लिखित हैं। एक गीत में १॥ गाथा तो स्वयं की लिखित और पीछे का अंश हरिराम का लिखा मिला है। लींबड़ी भण्डार में 'साधुगीतानि' की जो दूसरी प्रति मिली है उसमें ४६ गीत हैं। इनमें सं० १६६२ मिग० सुदि १ अहमदाबाद के ईदलपुर में चातुर्मास करते हुये ४५ गीत लिखे और ४ गीत फिर पीछे से लिखे गये। ६ पत्रों की अपूर्ण अन्य प्रति में २३ गीत मिले हैं।

वैराग्यगीत-साधुगीतानि—की एक दूसरी प्रति के अंत के पत्रों में वैराग्य गीतों का संकलन किया है। पर वह प्रति अधूरी मिली है।

नाना प्रकार गीतानि—इसकी स्वयं लिखित एक प्रति २७ पत्रों की हमारे संग्रह में है, जिसमें १३५ गीत संगृहीत हैं। पर इसके प्रारम्भ और मध्य के कुछ पत्र नहीं मिले हैं।

पार्श्वनाथ लघुस्तवन—इसकी ८ पत्रों की स्वयं लिखित प्रति हमारे संग्रह में है। इसमें पार्श्वनाथ के १४ गीतों का संकलन है, सं० १७०० मार्ग० व० ५ अहमदाबाद के हाजा पटेल पोल के बड़े उपाश्रय में शिष्यार्थ यह प्रति लिखी गई।

अन्त समये जीव प्रतिबोध गीतम्—इसमें इस भाव वाले १२ गीत संकलित हैं। प्रथम पत्र प्राप्त नहीं होने से प्रथम के दो गीत प्राप्त नहीं हो सके। प्रति स्वयं लिखित है।

दादागुरु गीतम्—इसमें जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि जी के १० गीत हैं। इसका स्वयं लिखित सं० १६८८ के एक पत्र का आधा अंश ही मिला है। जिससे पांच गीत त्रुटित प्राप्त हुए हैं, जो इस ग्रन्थ के अन्त में दिये गये हैं। इनमें से अजमेर दादा जी स्तवनादि का एक पत्र स्वयं लिखित और हमारे संग्रह में था पर अभी नहीं मिला अन्यथा पूर्ति हो जाती।

जिनसिंहसूरि गीत—हमारे संग्रह की वृहद् संग्रह प्रति के बीच के पत्रांक ४३ से ५६ में जिनसिंहसूरि के २२ गीत लिखे हैं। पीछे

के कई पत्र नहीं मिले, उनमें और भी होंगे। इसी तरह जिन-सागरसूरि का गीत संग्रह आदि विविध प्रकार के अनेक सङ्कलन-संग्रह मिले हैं।

इस प्रकार और भी कई छोटे-बड़े संकलन कवि के स्वयं लिखित या उनकी प्रतिलिपि किये हुये प्राप्त हैं। हमें ये सङ्कलन आहिस्ता-आहिस्ता मिलते गए और कइयों की प्रतियां तो अधूरी ही मिली हैं। इसलिये बहुत से गीत अभी और मिलेंगे और कई जो त्रुटित रूप में अपूर्ण मिले हैं, उनकी भी अन्य प्रतियां प्राप्त होनी आवश्यक हैं। हमने उनको पूर्ण करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। पचासों प्रतियां व सैंकड़ों फुटकर पत्र देखे, पर जिनकी अन्य प्रति नहीं मिली उन्हें जिस रूप में मिले उसी रूप में छपाने पड़े हैं।

अब हम इस संग्रह में प्रकाशित जिन रचनाओं में कुछ पाठ त्रुटित रह गये हैं। उनकी सूची नीचे दे रहे हैं, जिससे उन रचनाओं की किसी को पूरी प्रति प्राप्त हो तो वे पूर्ति के पाठ को लिख भेजें।

पृ० १६ 'चौबीस जिन सवैया' के ७ वें पद्य का प्रारंभिक अंश।
,, १७ ,, ,, ,, ८ वें पद्य का मध्यवर्ती अंश।
,, २२ 'ऐरवतक्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि' के प्रारंभिक सात जिनगीत
,, १०४ 'पाटण शांतिनाथ स्तवन' की प्रारम्भिक १६ गाथाएँ।
,, १२६ 'नेमिनाथ गीत' की प्रथम पद्य के बाद की गाथाएँ।
,, १३३ 'नेमिनाथ सवैया' के प्रारम्भिक ८॥ सवैये।
,, १३६ ,, ,, पद्यांक १६ में इस प्रकार छपने से रह गया है—

'विजुरी विचइं डरावइ सखि मोहि नींद नावइ,
कृपाल कुं को कहावइ अेकु अरदास रे।'

,, १४२ 'नेमिनाथ सवैया' के पिछले २॥ सवैये।

पृ० १८८ श्लोक ८ की प्रथम पंक्ति में 'ललित' और 'विनात भव्यै' के बीच एक अक्षर त्रुटित है।

,, १६४ 'पार्श्वनाथ शृङ्गाटक बद्ध स्तवन' के ८ वें पद्य की तीसरी पंक्ति में 'ललनं' और 'विधारिरिक' के बीच में एक अक्षर त्रुटित है।

,, २४७ 'अइमत्ता मुनिगीत' के सवा दो पद्यों के बाद के पद्य नहीं मिले हैं।

,, ३३२ 'चुलणी भास' के पद्य ३॥ से ४॥ नहीं मिले हैं।

,, ३४१ 'राजुल रहनेमि गीतम्' के पद्य ५ की अन्तिम दूसरी पंक्ति का छूटा हुआ अंश त्रुटित है।

,, ३७१ 'जिनचन्द्रसूरि छन्द' के तीसरे छन्द की तीसरी पंक्ति त्रुटित है।

,, ३७८ 'जिनसिंहसूरि आलीजा गीत' गाथा १० के बाद त्रुटित है।

,, ३८४ 'जिनसिंहसूरि गीत' के गीत नं० ७ की गाथा नं० १ का मध्यवर्त्ती अंश त्रुटित।

,, ४०३ 'जिनसिंहसूरि गीत' नं० ३२ गाथा ४॥ के बाद त्रुटित।

,, ४०७ 'जिनसागरसूरि अष्टक' तीसरे श्लोक की अंतिम पंक्ति त्रु०.

,, ४४८ 'कर्मनिर्जरा गीत' चौथी गाथा की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४५५ 'तुर्य बीसामा गीत' दूसरी गाथा की तीसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४७३ 'ऋषि महत्त्व गीत' दूसरी गाथा की अंतिम पंक्ति प्राप्त नहीं।

,, ४७६ 'हित शिक्षा गीत' ७ वें पद्य की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४८७ 'आहार ४७ दूषण सज्झाय' गाथा ३६ की अन्तिम पंक्ति के कुछ अक्षर त्रुटित।

,, ५०० फुटकर श्लोकों में सं० १ की अन्तिम और अन्त्य श्लोक की प्रत्येक पंक्ति का प्रारम्भिक अंश त्रुटित।

" ६१६ 'नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्' के प्रारम्भिक ६॥ श्लोक त्रुटित।

,, ६१७ 'नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्' ६ वें श्लोक की प्रथम पंक्ति में त्रुटित अंश।

,, ६१८ 'यमकबद्ध पार्श्वनाथ स्तवन' में गाथा प्रथम की पंक्ति दूसरी त्रुटित।

,, ६१६ 'समस्यामयं पार्श्वनाथ स्तवन' पहले और दूसरे श्लोक त्रु०.

,, ६२० ,, ,, ,, श्लोक ६ से १२ त्रुटित।

,, ६२२ 'यमकमय पार्श्व लघुस्तवन' श्लोक ७ की प्रथम पंक्ति त्रुटित

,, ,, 'यमकमय महावीर बृहद्स्तवन' श्लोक १ और ४ में दो दो अक्षर त्रुटित।

,, ,, 'यमकमय महावीर बृहद् स्तवन' श्लोक ११ और १२ में दो दो अक्षर त्रुटित।

,, ६२५ 'मणिधारी जिनचन्द्रसूरि गीत' तीनों ही गाथा त्रुटित।

,, ,, 'जिनकुशलसूरि गीत' ,, ,, ,,

,, ६२६ 'जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि गीत' दोनों की पांचों गाथा त्रुटित।

,, ६२७ 'अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीत' चारों गाथाएँ त्रुटित.

,, ६२८ 'प्रबोध गीत' गाथाएँ २ से ५ त्रुटित।

कविवर की रचनाएँ आज भी जहां तहां नित्य मिलती रहती हैं। पृ० ६१४ छप जाने पर इस संग्रह को पूरा कर दिया गया था। पर उसी समय विक्रयार्थ एक त्रुटित प्रति प्राप्त हुई, जिसमें आपकी बहुत सी रचनाएँ थीं। अतः उसमें जो रचनाएं पहले नहीं मिली थीं उन्हें भी इसमें सम्मिलित करना आवश्यक हो गया। हस्त लिखित फुटकर पत्र आदि के लिये हमारा संग्रह भी, एक बहुत बड़ा भण्डार है। समयसुन्दरजी के गीतों के फुटकर पत्रों की संख्या सैंकड़ों पर है। उनमें की अभी कुछ रचनायें ऐसी ठीक मालूम होती हैं, जो बहुत ध्यानपूर्वक संग्रह करने पर भी इस संग्रह में नहीं आ सकीं।

आखिर में अपने पूज्य गुरु श्री कृपाचन्द्रसूरिजी का यह वचन याद कर संतोष करना पड़ता है कि "समयसुन्दर ना गीतड़ा, भींतां पर ना चीतरा या कुम्भे राणा ना भींतड़ा" अर्थात् दीवालों पर किये गये चित्रों का और राना कुम्भा के बनाये हुये मकान और मन्दिरों का पार पाना कठिन है उसी तरह समयसुन्दर जी के गीत भी हजारों की संख्या में और जगह-जगह पर बिखरे हुए हैं उन सबको एकत्र कर लेना असम्भव सा है। पचासों संग्रह-प्रतियां हमें त्रुटित व अपूर्ण मिली हैं। उनके बीच के और आदि अन्त के पत्र माला के मोतियों की तरह न मालूम कहाँ कहाँ बिखर गये हैं। बहुत से तो उनमें से नष्ट भी हो गये होंगे। इसी तरह समयसुन्दर जी का विहार भी राजस्थान और गुजरात के बहुत लम्बे प्रदेशों में था और उनके शिष्य प्रशिष्य भी बहुत थे। अतः उन सभी स्थानों और व्यक्तियों में प्रतियां बिखर चुकी हैं। जालोर, खम्भात, अहमदाबाद आदि स्थानों में जहां कवि कई वर्षों तक रहे थे, उन स्थानों के भण्डारों को तो हम देख ही नहीं पाये।

महान् गीतिकार समयसुन्दर

गीति काव्य के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य में इधर में काफी चर्चा हुई और कई बड़े-बड़े ग्रन्थ भी प्रकाशित हुये, लेकिन अभी तक आज से ४००/५०० वर्ष पहले कितने प्रकार के गीत प्रचलित थे, उनका शायद किसी को पूरा पता नहीं है। जिस प्रकार लोक गीतों के अनेक प्रकार हैं—अनेक राग-रागनियां हैं, हर प्रसंग के गीतों के अलग-अलग नाम हैं, उसी तरह विद्वानों के रचित गीतों के भी अनेक प्रकार थे। उनकी अच्छी झांकी समयसुन्दरजी के इस गीत संग्रह से मिल सकेगी। वैसे तो प्रायः सभी लघु रचनाओं की संज्ञा गीत ही दी गई है, पर उनके प्रकारों की संख्या

भी संक्षिप्त जीवन गाथा देना आवश्यक था। पर उस इच्छा को भी संवृत्त करना पड़ा है।

कवि की संवतानुक्रम से लिखी हुई संक्षिप्त जीवनी और उनकी रचनाओं व लिखित प्रतियों की सूची नागरी-प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५७ अङ्क १ में प्रकाशित की गई थीं, पर उनकी रचनाओं के उदाहरण सहित जो विस्तृत जीवनी हम लिखना चाहते थे, वह भी करीब ५०० पृष्ठों के लगभग की होती, क्योंकि २७ वर्षों से हम इनकी रचनाओं का रसास्वादन कर रहे हैं। इसलिये हमने ग्रन्थ बढ़ जाने के भय से संक्षिप्त जीवनी महोपाध्याय विनयसागर जी से लिखवा लेना ही उचित समझा और उनके भी बहुत संक्षिप्त लिखने पर भी १०० पृष्ठ तो हो ही गये।

भाषाएँ भी इस ग्रन्थ में कई हैं। प्राकृत, संस्कृत, समसंस्कृत, सिन्धी की रचनाएँ थोड़ी हैं, पर राजस्थानी, गुजराती और हिन्दी तीन तो मुख्य ही हैं। इनमें से हिन्दी के भी इसमें दो रूप मिलते हैं; जो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्य पदों एव गीतों की हिन्दी भाषा से पृ० ३६३ में जिनसिंहसूरि सम्बन्धी जो ५ पद्य छपे हैं, उनसे तुलना करिये। वे एक दम खड़ी बोली के और मानों जहांगीर के भेजे हुए मुसलमान मेवड़ों की स्वयं की भाषा हो, लगते हैं। उसका थोड़ा सा नमूना देखिये—

वे मेवरे, काहेरी सेवरे, अरे कहां जात हो उतावरे, टुक रहो नइ खरे।
हम जाते बीकानेर साहि जहाँगीर के भेजे,
हुकम हुया फुरमाण जाइ मानसिंघ कुं देजे।
सिद्ध साधक हउ तुम्ह चाह मिलणे की हमकुँ,
वेगि आयउ हम पास लाभ देऊँगा तुम कुँ ।१। वे मेवरे०।

और बहुत से लोक प्रचलित गीतों की देशी या चाल में। उनके रास-चौपाई आदि में भी इन लोक गीतों की देशियों को खूब अपनाया गया है। सीताराम चौपाई जो लोक भाषा की आपकी सबसे बड़ी कृति है, में लगभग ५० देशियें हैं। कवि ने इस चौपाई में देशियों के आदि पद्य के *साथ ऐसा भी निर्देश किया है कि*— "ए गीत सिंध मांहे प्रसिद्ध छै, नोखा रा गीत मारूयाड़ी, ढूँढाड़ी नागोर नगरे प्रसिद्ध छै। दिल्ली रा गीतरी ढाल मेड़ता आदि देशे प्रसिद्ध छै" और अन्त में कहा है कि—

सीताराम नी चौपाई, जे चतुर हुई ते वाँचो रे।
राग रतन जवहर तणो, कुण भेद लहै नर काचो रे॥
नवरस पोष्या मै इहां, ते सुघड़ो समझी लेज्यो रे।
जे जे रस पोष्या इहां, ते ठाम देखाड़ी देज्यो रे॥
के के ढाल विषम कही, ते दूषण मत द्यौ कोई रे।
स्वाद साबुणी जे हुवे, नैं लिंग हुदै कदे न होई रे॥ १॥
जे दरबार गयो हुसें, ढुंढाड़ि, मेवाड़ि नै ढिल्ली रे।
गुजराति मारुवाड़ि में, ते कहिसें ए भल्ली रे॥
मत कहो मोटी कां जोड़ी, बांचतां स्वाद लहैसो रे।
नवनवा रस नवनवी कथा, सांभलतां साबास देसो रे॥
गुण लेज्यो गुणियण तणो, मुझ मसकति साहमो जोज्यो रे।
अणसहतां अवगुण म्रही, मत चालणि सरखा होज्यो रे॥
आलस अभिमान छोडि नै, सूधी प्रत हाथ लेई रे।
ढाल लेजो तुमे गुरु मुखे, वली रागनो उद्योग देई रे॥
सखर सभा मांहे बांचजै, वे जणा मिल मिलते सादे रे।
नरनारी सहु-रीझसे, जस लेहसो गुरु प्रसादे रे॥

कवि की कविता में एक स्वाभाविक प्रवाह है। भाषा में सरलता तो है ही, क्योंकि उनकी रचना का उद्देश्य पांडित्य-प्रदर्शन

नहीं। पर जैसा कि उन्होंने अपने अनेक ग्रन्थों में भाव व्यक्त किया है; कि साधु और सती के गुणानुवाद में मुझे बड़ा रस है। और बहुत सी रचनाएँ तो उन्होंने अपने शिष्यों और श्रावकों के सुगम बोध के लिये ही बनाई है। कुछ अपनी स्मृति की रक्षार्थ। इन सब कारणों से कवि प्रतिभा का चमत्कार उतना नहीं दिखाई देता जितना कि स्वाभाविक सारल्य।

प्रस्तुत ग्रन्थ में सकलित गीतों का भक्ति, प्रेरणा, प्रबोध प्रधान विषय है। भक्ति का स्रोत अनेक रचनाओं में बह चला है। विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन में कवि कहता है कि —

विमलगिरि क्यों न भये हम मोर,
क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर।
अहनिश जिनजी के अङ्ग पखालत, तोड़त कर्म कठोर। वि. १।
क्यों न भये हम बावन चन्दन, और केसर की छोर।
क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजी की ओर। वि. २।
क्यों न भये हम मृदङ्ग झलरिया, करत मधुर धुनि मोर।
जिनजी आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर। वि. ३।

इसी प्रकार अन्य गीतों में भी कहीं पर पांख न होने से पहुंच न सकने की शिकायत, कहीं पर चन्द्रमा द्वारा सन्देश भेजना, कहीं पर स्वयं न पहुंच सकने की वेदना व्यक्त की है। इस प्रकार नाना प्रकार के भक्ति के उद्‌गार इस ग्रन्थ में प्रकाशित गीतों में मिलेंगे। उन सबके उद्धरण देने का बहुत विचार था, पर विस्तार भय से उस इच्छा को संवरित करना पड़ा है। प्रेरणा गीतों में कवि अपने शिष्यों को कितने ढङ्ग से प्रेरित कर रहा है, यह इस ग्रंथ के पृष्ठ ४२६-३७ में प्रकाशित पठन प्रेरणा और क्रिया प्रेरणा गीत में पढ़िये। इसी प्रकार प्रबोध गीत भी पृ० ४२० से प्रारम्भ होते हैं।

कई गीतों में कवि कल्पना भी बड़े सुन्दर रूप में प्रगट हुई है। इन सबके उदाहरण नोट किये हुये होने पर भी, यहां विस्तार भय से नहीं दिये जारहे हैं। कभी विस्तृत विवेचन का अवसर मिला तो अपने इन नोट्स का उपयोग किया जा सकेगा।

महोपाध्याय विनयसागरजी ने कवि का परिचय देते हुए कथाकोश की पूरी प्रति नहीं मिलने का उल्लेख किया है। यद्यपि इसकी कई प्रतियां हमें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से, एक तो कवि की स्वयं लिखित है। पर भिन्न-भिन्न प्रतियों के मिलाने से ऐसा मालूम पड़ता है कि कवि ने दो तरह के कथाकोश बनाये हैं। एक में अन्य विद्वानों के ग्रन्थों से कथाएं उद्धृत व संगृहीत की गई हैं और दूसरे में उन्होंने स्वयं बहुत सी कथाएँ लिखी हैं। इनमें से पहले प्रकार की एक प्रति नाहरजी के संग्रह में मिली और दूसरी की एक पूरी प्रति स्व० जिनऋद्धिसूरिजी के संग्रह में से प्राप्त हुई है। इसमें १६७ कथाएँ हैं। पर कवि के अन्य ग्रन्थों की भाँति इसमें प्रशस्ति नहीं मिलने से सम्भव है कुछ और भी कथाएँ लिखनी रह गई हों या प्रशस्ति नहीं लिखी गई हो। 'कथापत्राणि' नामक कवि के स्वयं लिखित फुटकर पत्रों की एक प्रति मिली है, जिसके १२७ या १५५ पत्र (दोनों हांसियों पर दो संख्याक) थे। इसमें ११४ कथाएँ हैं और ग्रंथ परिमाण करीब ६००० श्लोक का लिखा है। अंत में कवि ने स्वयं लिखा है कि—

"सं० १६६५ वर्षे चैत्र सुदि पंचमी दिने श्री जालोर नगरे लिखितं श्री समयसुन्दर उपाध्यायैः। इयं कथाकोशप्रति मयि जीवति मदधीना, पश्चात् पं० हर्षकुशलमुनेः प्रदत्तास्ति। वाच्यमाना चिरं विजयताम्।"

अर्थात् कविवर स्वयं जहां तक जीवित रहे अपनी रचनाओं में उचित परिवर्तन परिवर्द्धन करते रहे हैं।

कवि के रचित माघ काव्य की टीका के केवल तृतीय सर्ग की वृत्ति के मध्य पत्र चूरु सुराना लाइब्रेरी में स्वयं लिखित मिले हैं। उसमें बीच

के पत्रांक दिये हैं। अतः यह टीका तो पूरी बनाई ही होगी, पर अभी तक अन्य सर्गों की टीका के पत्र नहीं मिले। जिसकी खोज अत्यावश्यक है। इसी प्रकार मेघदूत वृत्ति की अपूर्ण प्रति ओरियन्टल कीलाइब्रेरी लाहौर में देखी थी, उसकी भी अन्य प्रति नहीं मिली। अतः पूरी प्रति अन्वेषणीय है।

सं० २००२ में जब कवि के स्वर्गवास को ३०० वर्ष हुये, हमने शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीच्यूट की ओर से समयसुन्दर त्रिशती उत्सव मनाया था और कवि की रचनाओं का प्रदर्शन भी किया गया था, जो विशेष रूप से स्मरणीय है।

कवि की कई रचनाएँ अभी संदिग्धावस्था में है। उनकी अन्य प्रतियों की प्राप्ति होने से ही निर्णय किया जा सकेगा। जिस प्रकार जैन गुर्जर कविओं भाग ३ के पृ० ८४४ में स्थूलभद्र रास का विवरण छपा है। इस प्रति को हमने मँगवा कर देखी तो पद्यांक ६५ में समयसुन्दर नाम आता है, अन्यत्र 'कवियण' उपनाम प्रयुक्त है और ग्रन्थ का रचना काल संदिग्ध है—

इन्दु रस संख्याइं एह, संवत्सर मान
आदिनाथ थी नेमिजन, तेतमउ वरस प्रधान।

इसकी अन्तिम पंक्ति से देसाईजी ने २२ की संख्या ग्रहण की है, पर वह संदिग्ध लगती है। इसी प्रकार भ्रूडियालागुरु (पंजाब) की सूची में कवि के रचित शालिभद्र चौपाई और अगडदत्त कथा (सं० १६४३ में रचित पत्र १०) आदि का उल्लेख है। जैसलमेर भण्डार की सूची में पं० लालचन्द गांधी उल्लिखित कई रचनाएं हमें अभी तक नहीं मिलीं। वे वास्तव में कवि की हैं या नहीं, प्रतियां मिलने पर ही निर्णय हो सकेगा।

हमारे संग्रह में एक व्रत ग्रहण टिप्पण मिला है। जिससे मालूम होता है कि सं० १६६७ के फाल्गुन शु० ११ गुरुवार को

अहमदाबाद में संखवाल गोत्रीय साह नाथा की भार्या श्राविका धन्नादे ने जो शाह कर्मशी की माता थी, महोपाध्याय समयसुन्दरजी के पास इच्छा परिमाण (१२ व्रत) ग्रहण किये थे । इस पत्र के पिछली ओर में कवि ने उन १२ व्रतों के ग्रहण का रास बनाया था, जिसकी कुछ ढालें स्वयं लिखित मिली हैं । इससे कवि के रचित १२ व्रत रास का पता चलता है, जिसकी पूरी प्रति अभी अन्वेषणीय है । और भी कई श्रावक-श्राविकाओं ने आपसे इसी तरह व्रत आदि ग्रहण किये होंगे, जिनके उल्लेख कहीं भण्डारों के विकीर्ण पत्रो में पड़े होंगे या ऐसे साधारण पत्र अनुपयोगी समझे जाते हैं; अतः उपेक्षावश नष्ट हो चुके होंगे । विविध विषयों के सैंकड़ों फुटकर पत्र कवि के लिखे हुए हमने भण्डारों में देखे हैं और हमारे संग्रह में भी हैं । उन सबसे इनकी महान् साहित्य-साधना की जो झांकी मिलती है, उससे हम तो अत्यन्त मुग्ध हैं । सुयोग-वश कवि ने दीर्घायु पाई और प्रतिभा तो प्रकृति प्रदत्त थी ही । विद्वान् विद्यागुरुओं आदि का भी सुयोग मिला, सैंकड़ों ज्ञानभंडार देखे, विविध प्रान्तों के सैंकड़ों स्थानों में विचर कर विशेष अनुभव प्राप्त किया और सदा अप्रमत्त रहकर पठन-पाठन और साहित्य निर्माण में सारे जीवन को खपा दिया । उस गौरवमयी साहित्य-विभूति की स्मृति से मस्तक उनके चरणों में स्वयं झुक जाता है । उनके शिष्यों में हर्षनन्दन आदि बड़े विद्वान् थे । अभी अभी तक उनकी परम्परा विद्यमान थी ।

उनकी चरण पादुका गड़ालय (नाल) में होने का उल्लेख तो म० विनयसागरजी ने किया ही है; पर जैसलमेर में भी दो स्थानों पर आपके चरण प्रतिष्ठित हैं । तीनों पादुका लेख इस प्रकार हैं:—

१. "संवत् १७०५ वर्षे (पें) फागुण सुदि ४ सोमे श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय पादुके कारिते श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं हर्षनंदन (गणिभिः) हीं नमः ।"

(नाल गढ़ाजय में जिनकुशलसूरि गुरु मन्दिर के पास चौमुख स्तूप में आपके गुरु सकलचन्द जी की भी पादुका रीहड़ जयवंत लूणा कारित व यु० जिनचन्द्रसूरि प्रतिष्ठित है। (देखें, हमारा बीकानेर जैन लेख संग्रह ग्रन्थ। लेखांक २२८७।)

२. "सं० १७०५ वर्षे पोष वदि ३ गुरुवारे श्रीसमयसुन्दर-महोपाध्यायानां पादुका प्रतिष्ठिते वादि श्रीहर्षनन्दन गणिभिः।" (जैसलमेर के समयसुन्दरजी के उपाश्रय में)

३. जैसलमेर देरासर दादावाड़ी की समयसुन्दरजी की शाखा में स्तूप पर—

श्री जिनायनमः ॥ सं० १८८२ रा मिति आषाढ़ सुदि ५ श्री जैसलमेर नगरे रावल श्री गजसिंहजी विजयराज्ये आचारज गच्छे श्रीजिनसागरसूरि शाखायां भ। श्रं०। श्रीजिनउदयसूरिजी विजय-राज्ये॥ उ०। श्री १०८ श्री समयसुन्दरजी गणि पादुकामिदं ॥ उ। श्री आणंदचंदजी ततूशिष्य पं। प्र। श्रीचतुरभुज जी ततूशिष्य पं०। लालचंद्रे ण कारापितमियं थंभ पादुका शाखा सही २।

पादुकाओं पर

॥ उ ॥ श्री १०८ श्री समयसुन्दर गणि पादुका।

स्वर्ग स्थान अहमदाबाद में भी चरण अवश्य प्रतिष्ठित किये गये होंगे, पर वे शायद अब न रहे या खोज नहीं हुई।

कवि की प्राप्त लघु कृतियों का यह संकलन हमने अपने ढङ्ग से किया है। सम्भव है उसमें कुछ अव्यवस्था रह गई हो।

आभार—

इस ग्रंथ को इस रूप में तैयार करने और प्रकाशन करने में अनेक भण्डारों के संरक्षकों और कई अन्य व्यक्तियों से

विविध प्रकार की सहायता मिली है। २७ वर्षों से हम जो निरन्तर इस सम्बन्ध में कार्य करते रहे हैं, उनमें इतने अधिक व्यक्तियों का सहयोग है कि जिनकी स्मृति बनाये रखना भी सम्भव नहीं। इसलिये जो सहज रूप में स्मरण आरहे हैं, उन्हीं का उल्लेख कर अवशेष सभी के लिये आभार प्रदर्शित करते हैं।

सबसे पहले जिनकृपाचन्द्रसूरिजी, उपाध्याय सुखसागरजी, बीकानेर के भण्डारों के संरक्षक, फिर स्वर्गीय मोहनलाल दलीचन्द देसाई, स्व० यति नेमचन्दजी बाड़मेर, पन्यास केशरमुनिजी और बाहर के अनेक भण्डारों के संरक्षकगण, फूलचन्दजी झाबक, मुनि गुलाबमुनिजी, आनन्दसागरसूरिजी, स्व० पूर्णचन्द्रजी नाहर आदि से जो कवि की रचनाओं की उपलब्धि और अन्य प्रकार की सहायता मिली है, उसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

अन्त में महोपाध्याय विनयसागरजी, जिन्होंने इस सारे ग्रंथ का प्रूफ संशोधन का और कवि के विषय में अध्ययनपूर्ण निबन्ध लिखकर हमारे काम में बड़ी आत्मीयता के साथ हाथ बँटाया है, उनके हम बहुत ही उपकृत हैं।

हिन्दी साहित्य महारथी विद्वान् मित्र डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी ने हमारे इस ग्रंथ की भूमिका लिख भेजी है। जिसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में एक प्रेरणा रूप श्री अनोपचन्दजी झाबक, कनूर ने हमें रु० १५१) अपनी सद्भावना से भेजकर इस ग्रंथ को तत्काल प्रेस में देने को प्रेरित किया, अतः वे भी स्मरणीय हैं।

कवि की लिखी हुई सैंकड़ों प्रतियों और फुटकर पत्र हमारे संग्रह में हैं। उनमें से संवतोल्लेख वाले २ पत्रों का सम्मिलित ब्लॉक इस ग्रन्थ में छपाया जा रहा है। कवि का कोई चित्र

नहीं मिलता तो उनकी अक्षर देह को ही प्रकाश में लाना आवश्यक समझा गया। दूसरा ब्लॉक कवि के एक चित्र-काव्य स्तोत्र का है, जिसका हारबद्ध चित्र पन्यास केशर मुनिजी ने पालीताना से बनाकर भेजा था और दूसरा चित्र-बद्ध उपाध्याय सुखसागरजी ने कवि की कल्याण मन्दिर स्तोत्रवृत्ति के साथ छपवाया है।

जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई अपनी विद्यमानता में हमारे इस संग्रह को प्रकाशित देखते तो हर्षोल्लास से झूम उठते। अतः उन्हीं की मधुर स्मृति में अपना यह प्रयास समर्पित करते हैं।

अगरचन्द नाहटा
भँवरलाल नाहटा

महोपाध्याय समयसुन्दर



प्रस्तुत संग्रह के प्रणेता १७वीं शती के साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र, महोपाध्याय पद-धारक, समय-सिद्धान्त (स्वदर्शन और परदर्शन) को सुन्दर मंजुल-मनोहर रूप में जनसाधारण एवं विद्वत्समाज के सन्मुख रखने वाले, समय–काल एवं क्षेत्रोचित साहित्य का सर्जन कर समय का सुन्दर-सुन्दरतम उपयोग करने वाले अन्वर्थक नाम धारक महामना महर्षि समयसुन्दर गणि हैं। इनकी योग्यता एवं बहुमुखी प्रतिभा के सम्बन्ध में विशेष न कहकर यह कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी कि कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के पश्चात् प्रत्येक विषयों में मौलिक सर्जनकार एवं टीकाकार के रूप में विपुल साहित्य का निर्माता अन्य कोई शायद ही हुआ हो! साथ ही यह भी सत्य है कि आचार्य हेमचन्द्र के सदृश ही व्याकरण, साहित्य, अलङ्कार, न्याय, अनेकार्थ, कोष, छन्द, देशी भाषा एवं सिद्धान्तशास्त्रों के भी ये असाधारण विद्वान् थे। सङ्गीतशास्त्र की दृष्टि से एक अद्भुत कलाविद् भी थे।

कवि की बहुमुखी प्रतिभा और असाधारण योग्यता का मापदण्ड करने के पूर्व यह समुचित होगा कि इनके जीवन और व्यक्तित्व का परिचय दिया जाय; क्योंकि व्यक्तित्व के बिना बहुमुखी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। अतः ऐतिह्य ग्रन्थों के अनुसार संक्षिप्त रूप से इनकी जीवन-घटनाओं का यहां क्रमशः उल्लेख कर रहा हूँ।

जन्म और दीक्षा

मरुधर प्रदेशान्तर्गत साचोर (सत्यपुर) में आपका जन्म हुआ था, जैसा कि कवि स्वयं स्वरचित सीताराम चतुष्पदी के खण्ड ६ ढाल तीसरी के अन्तिम पद्य में कहता है:—

"मुझ जनम श्री साचोर मांहि, तिहां च्यार मासि रह्या उछाहि।"
[पद्य ४०]

आप पोरवाल* (प्राग्वाट) ज्ञाति के थे तथा आपके मातु† श्री का नाम लीला देवी और पिता श्री का नाम रूपसिंह (रूपसी) था। कवि का जन्म समय अज्ञात है, किन्तु जैन साहित्य के महारथी श्री मोहनलाल¶ दुलीचन्द देशाई बी० ए०, एल० एल० बी० के मत को मान्य रखते हुये जैन इतिहास के विद्वान् और मेरे मित्र श्री अगरचन्द जी नाहटा ने अपने "कविवर समयसुन्दर" ‡ लेख में इनका जन्म काल अनुमानतः सं० १६२० स्वीकृत

---

* "प्रज्ञाप्रकर्षः प्राग्वाटे, इति सत्ये व्यधायि यः।२३।" वादी हर्षनन्दन प्रणीत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति।

† कवि देवीदास कृत समयसुन्दर गीत, "मातु लीलादे रूपसी जनमिया।" [प० ६]

¶ "प्रथमनो ग्रन्थ भावशतक सं० १६४१ मां रचेलो मली आवे छे, तेथी ते वखते तेमनी उमर २१ वर्ष नी गणीए तो तेमनो जन्म सं० १६२० मां मूकी शकाय।" कविवर समयसुन्दर निबन्ध, आनन्द काव्य महोदधि मौक्तिक ७, पृष्ठ २।

‡ "परन्तु इनकी प्रथम कृति 'भावशतक' के रचना काल के आधार पर श्री मोहनलाल दुलीचन्द देशाई ने उस समय इनकी आयु २०-२१ वर्ष अनुमानित कर जन्म काल वि० १६२० होने की सम्भावना की है जो समीचीन [illegible]

किया है, किन्तु मेरे मतानुसार इससे कुछ पूर्व ज्ञात होता है। क्योंकि देखिये:—

महालाक्षणिक आचार्य मम्मट द्वारा प्रणीत काव्य प्रकाश नामक लक्षण ग्रन्थ में मम्मट ने वाच्यातिशायि व्यङ्गया ध्वनि काव्य की जो चर्चा की है, कवि उसी वाच्यातिशायि व्यङ्गया ध्वनि काव्य के भेदों का उद्धरण सहित लक्षण इस (भावशतक) ग्रन्थ में स्वोपज्ञ वृत्ति के साथ दे रहा है:—

"काव्यप्रकाशे शास्त्रे, ध्वनिरिति संज्ञा निवेदिता येषाम्।
वाच्यातिशायि व्यङ्ग्यान, कंतिचभेदानहं वच्मे ॥२॥"

काव्यप्रकाश जैसे क्लिष्ट लक्षण ग्रन्थ का अध्ययन कर 'ध्वनि' जैसे सूक्ष्म विषय पर लेखिनी चलाने के लिये प्रौढ एवं तलस्पर्शी ज्ञान की आवश्यकता है; जो दीक्षा के पश्चात् ५-६ वर्ष में पूर्ण नहीं हो सकता। यह ज्ञान कम से कम भी १०-१२ वर्ष के निरन्तर अध्ययन के फलस्वरूप ही हो सकता है और दूसरी बात यह है कि यदि हम स० १६३५ दीक्षा स्वीकार करें तो यह असंभव सा है कि ५-६ वर्ष के अल्प दीक्षा पर्याय में 'गणि पद' प्राप्त हो जाय। अत. वि० १६२८ के आसपास या १६३० में दीक्षा हुई

नन्दन के "नवयौवन भर सयम सग्रह्यो जी, सइ हथे श्रीजिनचंद" इस उल्लेख के अनुसार दीक्षा के समय इनकी अवस्था कम से कम १५ वर्ष होनी चाहिये। इस अनुमान से दीक्षा-काल वि० १६३५ के लगभग बैठता है।"

[नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५७ अङ्क १, स० २००६]

हो, यह मानना उचित होगा। और जहां वादी हर्षनन्दन अपने समयसुन्दर गीत में "नवयौवन भर संयम संग्रह्यो जी" कहते हुये नजर आरहे हैं, वहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि "नवयौवनभर" परिपूर्ण तरुणावस्था का समय १६ से २० वर्ष की आयु को सूचित करता है। अतः दीक्षा का अनुमानतः संवत् १६२८—३० स्वीकार करते हैं तो जन्म सम्वत् १६१० के लगभग निश्चित होता है। इनका जन्म नाम क्या था और इनका प्रारम्भिक अध्ययन कितना था? इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु मरुधर प्रान्त जिसमें साचोर डिविजन में देवगिरा के पठन-पाठन का अत्यन्ताभाव होने से इनका अध्ययन दीक्षा पश्चात् ही हुआ हो, समीचीन मालूम होता है।

युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६२८ में सांभलि के श्री संघ को पत्र दिया था, उसमें समयसुन्दर का नाम नहीं है। हो भी नहीं सकता, क्योंकि इस पत्र में उल्लिखित उपाधिधारक प्रमुख साधुओं के ही नामों का उल्लेख है। अतः सं० १६२८ में इस पत्र के देने के पूर्व या पश्चात् या आस-पास ही आचार्य श्री ने स्वहस्त * से इनको दीक्षा प्रदान कर अपने प्रमुख एवं प्रथम शिष्य श्री सकलचन्द्र गणि का शिष्य घोषित कर समयसुन्दर नाम प्रदान किया होगा।

कवि अपने को खरतरगच्छ का अनुयायी बतलाता हुआ, खरतरगच्छ ¶ के प्राद्याचार्य श्रीवर्धमानसूरि के प्रगुरु से अपनी परम्परा सिद्ध करता है। इस परम्परा में कवि केवल 'गणनायकों' के नामों का ही उल्लेख कर रहा है। अष्टलक्षी प्रशस्ति के अनुसार कवि का वंशवृक्ष इस प्रकार बनता है:—

---

* वादी हर्षनन्दन कृत गुरु गीत "सइं हथे श्रीजिनचन्द्र"।

¶ खरतरगच्छ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में देखें, मेरी लिखित वल्लभ-भारती प्रस्तावना।

नेमिचन्द्रसूरि
|
उद्योतनसूरि
|
वर्धमानसूरि[१] (सूरिमन्त्रशोधक)
|
जिनेश्वरसूरि[२] (वसतिमार्ग (खरतरगण) प्रकाशक)
|
जिनचन्द्रसूरि[३] (संवेगरंगशालाकार)
|
अभयदेवसूरि[४] (नवाङ्गीवृत्तिकारक)
|
जिनवल्लभसूरि[५]
|
जिनदत्तसूरि[६] (युगप्रधानपदधारक)
|
जिनचन्द्रसूरि[७] (नरमणिमण्डित भालस्थल)
|
जिनपतिसूरि (षट्त्रिंशद्‌वादविजेता)
|
जिनेश्वरसूरि
|
जिनप्रबोधसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि[८]
|
जिनकुशलसूरि[९] (खरतरवसति प्रतिष्ठापक)
|
जिनपद्मसूरि[१०] (कूर्चालसरस्वति)

१-५, देखें, मेरी लि० वल्लभभारती प्रस्तावना. ६ देखें, अगरचन्द भँवरलाल नाहटा द्वारा लि० युगप्रधान जिनदत्तसूरि. ७ लेखक वही, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि. ८-९-१० लेखक वही, प्रगटप्रभावी दादा जिनकुशलसूरि.

|
जिनलब्धिसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि
|
जिनोदयसूरि
|
जिनराजसूरि[११]
|
जिनभद्रसूरि (जेसलमेर, जालोर, देवगिरि, नागपुर, अणहिलपुर पत्तन आदि भण्डारों के संस्थापक)
|
जिनचन्द्रसूरि
|
जिनसमुद्रसूरि
|
जिनहंससूरि
|
जिनमाणिक्यसूरि[१२]
|
जिनचन्द्रसूरि[१३] (सम्राट् अकबर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक)
|
सकलचन्द्र गणि (प्रथम शिष्य)
|
समयसुन्दर गणि (महोपाध्याय पद धारक)

कवि को दीक्षा प्रदान करने वाले युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि हैं; जो आपके प्रगुरु होते हैं और कवि के व्यक्तित्व का विकास भी इनकी ही उपस्थिति में और इनके ही प्रसाद से हुआ है। अतः यहां युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि का संक्षिप्त जीवन-दर्शन कर लेना समुचित होगा।

११, मेरी लि० खरजिनरत्न प्रस्तावना. १२-१३ नाहटा बन्धु लि० युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि।

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के माता-पिता वीसा ओसवाल ज्ञातीय श्रीवंत और सियादे खेतसर (मारवाड़) के निवासी थे। आपका जन्म सं० १५६५ में हुआ था और आपका बाल्यावस्था का नाम सुलतान था। आचार्य प्रवर श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी के उपदेश से प्रभावित होकर ६ वर्ष की अवस्था में आपने सं० १६०४ में दीक्षा ग्रहण की थी। आपका दीक्षा नाम रखा गया था सुमतिधीर। आचार्य जिनमाणिक्यसूरि का देरावर से जेसलमेर आते हुए मार्ग में ही स्वर्गवास हो गया था। अतः सम्वत् १६१२ भाद्रपद शुक्ला ६ गुरुवार को जेसलमेर में वेगड़गच्छ (खरतरगच्छ की ही एक शाखा) के आचार्य श्री गुणप्रभसूरि ने आपको आचार्य पद प्रदान कर, जिनचन्द्रसूरि नाम प्रख्यात कर श्री जिनमाणिक्यसूरि का पट्टधर (गच्छनायक) घोषित किया। इस पट्टाभिषेक का महोत्सव जेसलमेर के राउल श्री मालदेवजी ने किया था। जेसलमेर से विहार कर, बीकानेर के मन्त्रिवर्य्य संग्रामसिंह जी के आग्रह से आप बीकानेर पधारे। वहां सं० १६१४ चैत्र कृष्णा सप्तमी को स्वगच्छ में प्रचलित शिथिलाचार को दूर करने के लिये आपने क्रियोद्धार किया। सं० १६१७ में पाटण में जिस समय तपगच्छीय प्रखर विद्वान् किन्तु कदाग्रही उपाध्याय धर्मसागरजी* ने गच्छविद्वेषों का

* सागर जी के गच्छ विद्वेष प्रकरण पर लिखते हुए कविवर समयसुन्दर निबन्ध में श्री मो० द० देशाई लिखते हैं:—

"श्वेताम्बर मतना खरतरगच्छ अने तपगच्छ वच्चेनी मतामता पण प्रबल थई पड़ी हती अने तेमां धर्मसागर उपाध्यायजी नामना तपगच्छीय विद्वान्-पण उग्र स्वभावी साधुए कुमतिकदकुद्दाल (याने प्रवचन परीक्षा) नामनो ग्रन्थ बनावी तपगच्छ सिवाय ना अन्य सर्व गच्छ अने मत सामे अनेक आक्षेपो मूक्या। आथी ते सर्व मतो खलबली उठ्या; अने तेनुं

सूत्रपात किया उस समय आचार्यश्री ने उसको शास्त्रार्थ के लिये आह्वान किया और उसके उपस्थित न होने पर तत्कालीन अन्य समग्र गच्छों के आचार्यों के समक्ष धर्मसागर जी को उत्सूत्र-

---

जो समाधान न थाय तो आ आ जैन-समाज मां दावानल अग्नि प्रकटे। आ माटे जोखमदार आचार्यो ने वच्चे पड्या वगर रही शकाय नहीं तेथी तपागच्छाचार्य विजयदानसूरिये उपरोक्त ग्रन्थ पाणी मां बोलावी दीधो अने तेने अप्रमाण-ठेरव्यो। तेमणे जाहिरनामुं काढी 'सात बोल' नी आज्ञा काढी एक बीजा मत-वालाने वाद-विवाद नी अथडामण करता अटकाव्या हता। पण आटलाथी विरोध जोइए तेवो न शम्यो त्यारे विजयदानसूरि पछी आचार्य हीरविजयसूरि ए उक्त सात बोल पर विवरण करी 'बार बोल' ए नामनी बार आज्ञाओ जाहिर करी हती सं० १६४६। आथी जैन समाजमां घणी शान्ति आवी।" [पृ० ३]

× × × ×

"११. विक्रमनी सत्तरमी शताब्दि मां (सं० १६१७) अभय-देवसूरि खरतर हता के नहिं ते संबंधी पाटणमांज तपागच्छना धर्मसागर उपाध्याय अने खरतरगच्छना धनराज उपाध्यायने जबरो झगड़ो थयो हतो। धर्मसागरे एवुं प्रतिपादन करवा मांड्युं हतुं के खरतरगच्छनी उत्पत्ति जिनेश्वरसूरि थी नहिं, पण जिनदत्तसूरि थी थई छे; अभयदेवसूरि खरतरगच्छमां थइ शकता नथी; जिनवल्लभसूरिये शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करी छे-वगेरे चर्चाना विषयो पोताना औष्ट्रिक मतोत्सूत्र दीपिका नामना ग्रन्थमां मूक्या (रच्या सं० १६१७)। आ ग्रन्थनुं बीजुं नाम प्रवचन परीक्षा छे या बन्ने जूदा होय-बन्नेमां विषयो सरखा छे। तेमांना एकनुं बीजुं नाम कुमतिकंदकुद्दाल छे। आथी बहु होहाकार थयो। बे गच्छ वच्चे अथडामणी अने अन्ते प्रबल विखवाद उत्पन्न थतो ते क्यां अटकशे, ए विचारवानुं रह्युं।

वादी [1] घोषित किया था। सम्राट् अकबर के आमन्त्रण से सूरिजी खम्भात से विहार कर सं० १६४८ फाल्गुन शुक्ला १२ के दिवस महोपाध्याय जयसोम, वाचनाचार्य कनकसोम, वाचक रत्ननिधान

जो जोखमदार आचार्यो ने वच्चे पड्या वगर चाले नहिं, ते थी तपागच्छना विजयदानसूरिओ उक्त कुमतिकुद्दाल ग्रंथ सभा समक्ष पाणीमां बोलावी दीधो हतो अने ओ ग्रन्थनी नकल कोईनी पण पासे होय तो, ते अप्रमाण ग्रन्थ छे माटे तेमानुं कथन कोइओ प्रमाणभूत मानवुं नहि, ओवुं जाहेर कर्युं हतुं। खरतरगच्छ वालाओ पोताना मतनुं प्रतिपादन करावबा भगीरथ प्रयत्न सेव्यो हतो; ओ वातना प्रमाणमां जणावबानुं के आपणा नायक समयसुन्दर उपाध्यायजी ना सं- १६७२ मां रचेला समाचारी शतक मां सं० १६१७ मां पाटण मां थयेला एक प्रमाण पत्र नी नकल आपेली छे के जेमां एवी हकीकत छे के अभयदेवसूरि खरतरगच्छ मां थयेला छे, ओ वात पाटणना ८४ गच्छो वाला माने छे, अने ओ प्रमाण पत्र साचुं जणाय छे, अने तेनो हेतु उपरनो कलहवाद शमाववा अर्थे हतो।" [पृ० १४ टिप्पणी]

जहाँ प्रवचन-परीक्षा जैसे ग्रन्थ को अप्रामाणिक ठहराकर जल-शरण कराया गया और इसी कारण धर्मसागरजी को सात और बारह बोल निकाल कर गच्छ बाहर घोषित किया गया था। वहीं उन्हीं के विचारानुयायी उसी ग्रन्थ को प्रकाशित कर और उसी विचार सरणि को पुनः समाज पर लादकर जो समाज में विषमता का बीज बो रहे हैं, यह सचमुच में दयनीय विषय है। अस्तु, धर्मसागरजी कथित समस्त प्रश्नों का विशद-समाधान सह उत्तरके लिये देखें, मेरी लिखित वल्लभभारती प्रस्तावना।

[1] देखें, उ० समयसुन्दर रचित समाचारी शतक 'श्री अभयदेवसूरेः खरतरगच्छेशत्वाधिकारः' पृ० १६ [प्र० जि० भं० सूरत]

और पं० गुणविनय प्रभृति ३१ साधुओं के परिवार सहित लाहोर में सम्राट् से मिले और स्वकीय उपदेशों से प्रभावित कर आपने तीर्थों की रक्षा एवं अहिंसा प्रचार * के लिये आषाढी अष्टाह्निका एवं स्तम्भतीर्थीय जलचर रक्षक आदि कई फरमान प्राप्त किये थे। और सं० १६४६ फाल्गुन वदि १० के दिवस सम्राट के हाथ से ही युगप्रधान ¶ पद प्राप्त किया था; जिसका विशाल महोत्सव एक करोड़ रुपये व्यय कर महामन्त्री कर्मचन्द्र† बच्छावत ने किया था। एक समय जब कि सम्राट् जहांगीर अपने अन्तःपुर में सिद्धिचन्द्र नामक व्यक्ति को दुष्कृत्य करते हुए देखता है तो अत्यन्त ही कुपित होकर समग्र जैन साधुओं को कैद करने का और अपनी सीमा से बाहर करने का हुक्म निकाल देता है। उस समय जैन-शासन की रक्षा के निमित्त आचार्यश्री वृद्धावस्था में भी आगरा जाते हैं और

---

* युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि परिशिष्ट ग.

विद्यामन्त्रविशेषैश्चमत्कृतः श्रीजलालुद्दीनोऽपि।
श्रीस्तम्भतीर्थजलनिधिजलजन्तुदयापरो वर्षम्। ८।
आषाढ-विमलपक्षे, दिनाष्टकं सर्वदेशसूबेषु।
अनुकम्पायाः पटहः साहेर्वचनेन दत्तो यैः। ६।
[उत्तराध्ययन वृत्ति प्रशस्तिः, हर्षनंदन कृता]

¶ तेजः श्रीमदकब्बराभिधनृपः श्रीपातिसाहिर्मुदा-
वादीदस्तु युगप्रधान इति सन्नाम्ना यथार्थेन वै ॥ ४ ॥
श्रीमन्त्रीश्वरकर्मचन्द्रविहितोदारकोटिटङ्कव्ययं,
श्रीनन्द्युत्सवपूर्वकं युगवरा यस्मै ददौ स्वं पदम्।
श्रीमल्लाभपुरे दयादृढमति-श्रीपातिसाह्यग्रहा—
भन्याच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुः सत्फीततेजोयशाः ॥ ५ ॥
[श्रीवल्लभोपाध्याय कृत अभिधानचिन्तामणिनाममाला टीका.]

† कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध वृत्ति सह.

स्वनामधन्य मन्त्रिवर श्री कर्मचन्द्रजी बच्छावत



२. युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि मूर्तिः



(बीकानेर ऋषभदेव मन्दिर)

सम्राट् जहांगीर (जो उनको अपना गुरु मानता था) को समझा कर इस हुक्म को रद्द करवाते हैं।* सं० १६७० में आश्विन कृष्णा द्वितीया को बिलाड़ा में आपका स्वर्गवास हुआ था। महामन्त्री कर्मचन्द्र बच्छावत और अहमदाबाद के प्रसिद्ध श्रेष्ठी संघपति श्री सोमजी शिवा† आदि आपके प्रमुख उपासक थे। आपने सं० १६१७ विजयदशमी के दिवस पाटण में आचार्य प्रवर जिनवल्लभसूरि प्रणीत पौषधविधि प्रकरण पर ३५५४ श्लोक परिमाण की विशद टीका की रचना की; जो सैद्धान्तिक और वैधानिक दृष्टि से बड़ी ही उपादेय है।

कवि के गुरु श्री सकलचन्द्रगणि हैं; जो रीहड़ गोत्रीय‡ हैं, और जो हैं युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के आद्य शिष्य। जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६१२ में गच्छनायक बनने पर सर्वप्रथम नन्दी 'चन्द्र' ही स्थापित की थी। अतः इनकी दीक्षा भी सं० १६१२ के अन्त में या १६१३ के प्रारंभ में ही हुई होगी। अथवा सं० १६१४ में आचार्य श्री बीकानेर पधारे, वहीं हुई हो ! क्योंकि आपकी चरणपादुका नाल में रीहड़ गोत्रियों द्वारा स्थापित है। अतः शायद ये बीकानेर

* येऽभयतीर्थकरस्तदीय नृपतेः क्रोसं परित्यक्तवान,
येभ्यः साधुजनाः तुरुष्कनृपतेर्देशे विहारं व्यधुः। ६।
[हर्षनन्दन कृत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति-प्रशस्तिः]

इसका विशेष अध्ययन करने के लिए देखें, नाहटा बन्धु लिखित युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पुस्तक का 'महान् शासन सेवा' नामक ग्यारहवां प्रकरण।

† देखें, ताजमल बोथरा लि० संघपति सोमजी शिवा।

‡ गणिः सकलचन्द्राह्वयो, रीहडान्वयभूषणम् ॥ १० ॥ [कल्पलता प्रशस्तिः]

के निवासी हों और वहीं दीक्षा हुई हो! सं० १६२८ के सांभलि वाले पत्र में आपका नामोल्लेख है अतः सं० १६२८ से १६४० के मध्यकाल में ही आपका स्वर्गवास हुआ हो, ऐसा प्रतीत होता है। आपकी जो चरण पादुका* नाल (बीकानेर) दादा-वाड़ी में स्थित है जिसके निर्मापक रीहड़ गोत्रीय हैं, सभव है ये आपके ही संबंधी हों! पादुका के प्रतिष्ठा-कारक हैं आचार्य जिनचन्द्रसूरि और जिनकी उपाधि युगप्रधान सूचित की गई है जो आपको सं० १६४९ में प्राप्त हुई थी। अतः पादुका की प्रतिष्ठा इसके बाद ही हुई है।

श्री देशाई ने सकलचन्द्र गणि के सम्बन्ध में अपने लेख में लिखा है:—

"सकलचन्द्र गणि—तेओ विद्वान् पंडित अने शिल्पशास्त्रमां कुशल हता। प्रतिष्ठाकल्प श्लोक (११०००) जिनवल्लभसूरि‡ कृत धर्मशिक्षा पर वृत्ति (पत्र १२८), अने प्राकृतमां हिताचरण नामना औपदेशिक ग्रन्थ पर वृत्ति १२४२६ श्लोकमां सं० १६३० मां रचेल छे।"†

जो वस्तुतः भ्रमपूर्ण है। इन ग्रन्थों के रचयिता पं० सकल-

* "............वर्षे ....सुदि ३ दिने शनौ सिद्धियोगे श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्यमुख्य पं० सकल........चरण पादुका श्री खरतरगणाधीश्वर युगप्रधानप्रभु श्री.............श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं..........हड़ जयवंत लूणाभ्यां कारिते॥"

† कविवर समयसुन्दर पृ. १६ टि० १३.

‡ जिनरत्नकोष और जैन ग्रन्थावली में यही उल्लेख है। किन्तु मेरे नम्र विचारानुसार विजयचन्द्रसूरि प्रणीत धर्मशिक्षा पर वृत्ति होगी, न कि जिनवल्लभीय धर्मशिक्षा पर। विशेष विचार तो प्रति सम्मुख रहने पर ही हो सकता है। अस्तु,

चन्द्र गणि तपगच्छीय विजयदानसूरि के शिष्य हैं तथा भानुचन्द्र महोपाध्याय के दीक्षा गुरु हैं। नाम और समय की साम्यता वश ही देशाईजी भूल कर गये हैं।

शिक्षा और पद

कवि ने अपना विद्यार्जन यु० जिनचन्द्रसूरि वाचक महिमराज (श्री जिनसिंहसूरि *) और समयराजोपा-

* आचार्य जिनसिंहसूरि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के पट्टधर थे और साथ ही थे एक असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान्। इनका जन्म वि० १६१५ के मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को खेतासर ग्राम निवासी चोपड़ा गोत्रीय शाह चांपसी की धर्मपत्नी श्री चाम्पलदेवी की रत्नकुक्षि से हुआ था। आपका जन्म नाम था मानसिंह। स० १६२३ में जब आचार्य जिनन्चन्द्रसूरि खेतासर पधारे थे, तब आचार्यश्री के उपदेशों से प्रभावित होकर एवं वैराग्यवासित होकर आठ वर्ष की अल्पायु में ही आपने आचार्यश्री के पास ही दीक्षा ग्रहण की। दीक्षावस्था का आपका नाम रखा गया था महिमराज। आचार्यश्री ने स० १६४० माघ शुक्ला ५ को जेसलमेर में आपको 'वाचक' पद प्रदान किया था। 'जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास' के अनुसार सम्राट् अकबर के आमंत्रण को स्वीकार कर सूरिजी ने वाचक महिमराज को गणि समयसुन्दर आदि ६ साधुओं के साथ अपने से पूर्व ही लाहोर भेजा था। लाहोर में सम्राट् आपसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ था। सम्राट् के पुत्र शाहजादा सलीम (जहांगीर) सुरत्राण के एक पुत्री मूलनक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न थी; जो अत्यत ही अनिष्टकारी थी। इस अनिष्ट का परिहार करने के लिये सम्राट् की इच्छानुसार स० १६४८ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को महिम-

ध्याय¶ के चरण कमलों में रहकर किया था। यही कारण है कि कवि अपनी सर्वप्रथम रचना भावशतक और अपनी विशिष्ट कृति अष्टलक्षी में इन दोनों को मेरी विद्या के 'एक मात्र गुरु' श्रद्धा-पूर्वक कहता हुआ नजर आ रहा है:—

"श्रीमहिमराजवाचक–वाचकवर–समयराजपुण्यानाम्।
मद्विद्यैकगुरूणां, प्रसादतो सूत्रशतकमिदम् ॥"

[भावशतक]

"श्रीजिनसिंहमुनीश्वर–वाचकवर–समयराज–गणिराजाम्।
मद्विद्यैकगुरूणामनुग्रहो मेऽत्र विज्ञेयः ॥"

[अष्टलक्षी पृ० २८]

¶ उपाध्याय समयराज भी आचार्य जिनचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्यों में से हैं। आपके सम्बन्ध में कोई ऐतिह्य वृत्त प्राप्त नहीं है। 'राज' नंदी को देखते हुए आपकी दीक्षा भी जिनसिंहसूरि के साथ ही या आस-पास सं० १६२३ में ही हुई होगी। आपकी प्रणीत निम्न कृतियां प्राप्त हैं:--

१. धर्ममंजरी चतुष्पदी (१६६२) मेरे संग्रह में।
२. पर्युषण व्याख्यान पद्धति (नाहटा संग्रह में)
३. जिनकुशलसूरि प्रणीत शत्रुञ्जय ऋषभजिनस्तव अवचूरि (मेरे संग्रह में)
४. साधु-समाचारी (आगरा विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मन्दिर) आदि कई संस्कृत भाषा के स्तोत्र।

राजजी ने अष्टोत्तरी शान्तिस्नात्र करवाया; जिसमें लगभग एक लाख रुपया व्यय हुआ था और जिसकी पूजा की पूर्णाहुति (आरती) के समय शाहजादा ने १००००) रु० चढ़ाये थे।

— काश्मीर-विजय यात्रा के समय सम्राट् की इच्छा को मान

अध्येता समयसुन्दर ने इन दोनों विद्वानों के समीप किन किन ग्रन्थों का अध्ययन किया, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु कवि की जिस प्रतिभा का परिचय हमें तत्प्रणीत द्वितीय कृति अष्टलक्षी से मिलता है; उससे अनुमान करने पर यह सिद्ध है कि आपने वाचकों से सिद्धहेमशब्दानुशासन, अनेकार्थ संग्रह, विश्वशंभुनाममाला, काव्यप्रकाश, पंच महाकाव्य आदि ग्रन्थों के साथ साथ जैन आगमिक साहित्य का और जैन दर्शन का विशेषतया अध्ययन किया था। इनके ज्ञानार्जन की योग्यता के सम्बन्ध में हम अगले प्रकरणों में विचार करेंगे। अस्तु

देते हुए आचार्यश्री ने वा० महिमराज को हर्षविशाल आदि मुनियों के साथ काश्मीर भेजा। काश्मीर के प्रवास में वा० महिमराज की अवर्णनीय उत्कृष्ट साधुता और प्रासंगिक एवं मार्मिक चर्चाओं से अकबर अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसी का फल था कि वाचकजी की अभिलाषानुसार गजनी, गोलकुण्डा और काबुल पर्यन्त अमारि (अभयदान) उद्घोषणा करवाई और मार्ग में आगत अनेक स्थानों (सरोवर) के जलचर जीवों की रक्षा कराई। काश्मीर विजय के पश्चात् श्रीनगर में सम्राट् को उपदेश देकर आठ दिन की अमारी उद्घोषणा कराई थी।
(देखें, जिनचन्द्रसूरि प्रतिबोध रास)

"शुभ दिनइ रिपुबल हेलि भेजी, नयर श्रीपुरि उतरि।
अमारी तिहां दिन आठ पाली, देश साधो जयवरी ॥"
(जि० अ० प्र० रास)

"श्रीपुरनगर आई, अमारि गुरु पलाई;
मछरी सबई छोराइ, नीकउ भमउ भइयारी।" (कु० पृ० ३६२)

वाचकजी के चारित्रिक गुणों से प्रभावित होकर, स० ने आचार्यश्री को निवेदन कर बड़े ही उत्सव के साथ में

गणिपद—भावशतक (र० सं० १६४१) में सूचित 'गणि'* शब्द को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी मेधावी प्रतिभा और सयमशीलता से आकर्षित होकर आचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरि ने स्वकरकमलों से वाचक श्री महिमराज के साथ ही सं० १६४० माघ शुक्ला पंचमी को जेसलमेर में कवि को 'गणि' पद प्रदान किया होगा !

* "तच्छिष्य समयसुन्दरगणिना स्वाभ्यास वृद्धिकृते ॥६६॥ शशिसागररसभूतल (१६४१) संवति विहितं च भावशतकमिदम् ॥१००॥"

सं० १६४६ फाल्गुन कृष्णा १० के दिन आचार्यश्री के ही करकमलों से आचार्य पद प्रदान करवा कर जिनसिंहसूरि नाम रखवाया। (देखिये, उ० समयसुन्दर रचित 'जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य')

सम्राट् जहांगीर भी आपकी प्रतिभा से काफी प्रभावित था। यही कारण है कि अपने पिता का अनुकरण कर स० जहाँगीर ने आपको युगप्रधान पद प्रदान किया था।

(देखें, राजसमुद्र कृत 'जिनसिंहसूरि गीतम्')।

गच्छनायक बनने पश्चात् आपकी अध्यक्षता में मेड़ता निवासी चोपड़ा गोत्रीय शाह आसकरण द्वारा शत्रुञ्जय तीर्थ का सङ्घ निकाला गया था।

सं० १६७४ में आपके गुणों से आकर्षित होकर, आपका सहवास एवं धर्मबोध प्राप्त करने के लिये सम्राट जहांगीर ने शाही स्वागत के साथ अपने पास बुलाया था। आचार्यश्री भी बीकानेर से विहार कर मेड़ता आये थे। दुर्भाग्यवश वहीं सं० १६७४ पोष शुक्ला त्रयोदशी को आपका स्वर्गवास हो गया।

आपके जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि आदि कई विद्वान् शिष्य थे।

वाचनाचार्य पद— सं० १६४६ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को लाहोर में जिस समय वाचक महिमराज को आचार्य श्री ने आचार्य पद प्रदान कर जिनसिंहसूरि नाम उद्घोषित किया था; उसी समय गणि पद भूषित कवि को 'वाचनाचार्य'¶ पद प्रदान कर सम्मानित किया था।

उपाध्याय पद—श्री राजसोम गणि प्रणीत 'समयसुन्दर गुरु गीतम्'† के अनुसार यह निश्चित है कि तत्कालीन गच्छनायक श्रीजिनसिंहसूरि ने लवेरा में आपको 'उपाध्याय' पद से अलंकृत किया था, किन्तु संवत् का इस गीत में उल्लेख न होने से हमें उनके ग्रन्थों के आधार से ही निश्चित करना है।

सं० १६६८ तक की आपकी कृतियों में उपाध्याय पद का कहीं भी उल्लेख नहीं है। नाहटाजी के लेखानुसार सं० १६७१ में लिखित अनुयोगद्वारसूत्र की पुष्पिका में भी वाचक पद का ही उल्लेख है। किन्तु कवि की १६७१ के पश्चात् की रचनाओं में उपाध्याय पद का उल्लेख है। देखिये:—

"तेषां शिष्यो मुख्यः, स्वहस्तदीक्षित सकलचन्द्रगणिः।
तच्छिष्य-समयसुन्दर सुपाठकैरकृत शतकमिदम् ॥४॥"

[विशेषशतक* सं० १६७२]

¶ "तेषु च गणि जयसोमा, रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
गुणविनय-समयसुन्दरगणिकृतौ वाचनाचार्यौ ॥"
[कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध]

† "श्रीजिनसिंहसूरिंद, सहेर लवेरइ हो पाठक पद कीयउ"

* "विक्रमसंवति लोचनमुनिदर्शनकुमुदबांधव (१६७२) प्रमिते।
श्रीपार्श्वजन्मदिवसे, पुरे श्रीमेडतानगरे ॥ २ ॥"

"जयवंता गुरु राजीयारे, श्रीजिनसिंहसूरि राय।
समयसुन्दर तसु सानिधि करी रे, इम पभणइ उवझाय रे॥६॥"
[सिंहलसुत प्रियमेलक रास* सं० १६७२]

अतः यह निश्चित है कि सं० १६७१ के अंतिम भाग में या १६७२ के पोष मास के पूर्व ही आपको उपाध्याय पद प्राप्त हो गया था।

महोपाध्याय पद—परवर्ती कई कवियों ने आपको 'महोपाध्याय' पद से सूचित किया है; जो वस्तुतः आपको परम्परानुसार प्राप्त हुआ था। सं० १६८० के पश्चात् गच्छ में आप ही वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और पर्यायवृद्ध थे। साथ ही खरतरगच्छ की यह परम्परा रही है कि उपाध्याय पद में जो सबसे बड़ा होता है, वही महोपाध्याय कहलाता है। अतः स्वतः सिद्ध है कि आपकी महिमा और योग्यता से प्रभावित होकर यह पद लिखा गया है। यही कारण है कि वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन सूत्र के प्रारम्भ में "श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय चरणसरोरुहाभ्यां नमः" लिखता है।

प्रवास और उपदेश

कवि के स्वरचित ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ, तीर्थमालायें और तीर्थस्तव साहित्य को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का प्रवास उत्तर भारत के क्षेत्रों में बहुत लम्बा रहा है। सिन्ध, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, सौराष्ट्र, गुजरात के प्रदेशों में विचरण अत्यधिक रहा है। प्रशस्तियाँ आदि के अनुसार वर्गीकरण किया जाय तो इस प्रकार होगा:—

* "संवत सोलबहुत्तरि समइ रे, मेडतानगर मझारि।"

सिन्ध—मुलतान, मरोठ, उच्चनगर, सिद्धपुर, देरावर।

पंजाब—लाहोर, सरसपुर, पीरोजपुर, कसूर।

उत्तरप्रदेश—उग्रसेनपुर (आगरा), अकबरपुर[1], सिकन्दरपुर[2], बीबीपुर[3]।

राजस्थान—सांगानेर, चाटसू, मंडोवर, तिमरी, मेड़ता, फलवर्धी पार्श्वनाथ, डिंडूआणा, नागोर, जालोर, नाकोड़ा, बिलाड़ा, लवेरा, सेत्रावा, सांचोर, सेत्रावा, घंघाणी, वरकाणा, नडुलाइ, नलोल,[4] राणकपुर, आबू, अचलगढ़, देलवाड़ा, जीरावला, जेसलमेर, अमरसर, लौद्रवा, वीरमपुर, बीकानेर, नाल, रिणी, लूणकरणसर, चदवारि[5] (?)

सौराष्ट्र—नागद्रह,[6] नवानगर,[7] सौरिपुर,[8] गिरनार, शत्रुञ्जय।

गुजरात—अंकेट, पालनपुर, ईडर, शंखेश्वर, सैरीसर, पाटण, नारंगा,[9] देवता,[10] भडकुल,[11] भोडुआ,[12] अमदाबाद, गौडी-पार्श्वनाथ, खंभात, पुरिमताल, कलिकुंड, कंसारी, त्रंबावती,[13] मगलोर, अजाहरा।

श्री देशाई[14] तीर्थमालाओं में उल्लिखित सम्मेतशिखर, राज-

---

१. कुसुमाञ्जलि पृ० ३०६ २. वही पृ० १७१
३. वही पृ० १७८ ४. ,, पृ० १७०
५. वही पृ० १७, ६६, ६. ,, पृ० १५२
७. ,, पृ० ५८, ८. ,, पृ० ११२
९. ,, पृ० १७३, १०. ,, पृ० १७७
११ ,, पृ० १७८, १२. ,, पृ० २०६
१३. ,, पृ० १६०,
१४. देखें, कविवर समयसुन्दर निबंध पृ० २६-२७,

गृही के पांच पहाड़, क्षत्रियकुण्ड, चम्पानगरी, पावापुरी, अंतरीक्ष और मक्षी आदि प्रदेशों में विचरण का अनुमान करते हैं; जो समुचित नहीं है। क्योंकि इस बात का कोई पुष्टप्रमाण नहीं है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण हुआ हो! किन्तु कवि की रचनाओं और प्रवास को देखने हुये यह सिद्ध है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण नहीं हुआ है किन्तु, प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान होने से स्तव रूप में नमस्कार-मात्र ही किया है।

कवि अपने प्रवास को तीर्थयात्रा और प्रचार का माध्यम बनाकर सफलता प्रदान कर रहा है। जहां जहां भी तीर्थस्थल आते हैं, वहां-वहां कवि मुक्त हृदय से भक्ति करता हुआ भक्त के रूप में दिखाई पड़ता है, नूतन स्तवन बनाकर अर्चा करता रहता है। कवि के तीर्थयात्रा सम्बन्धी कई स्तव भी ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करते हैं। उदाहरण स्वरूप घंघाणी* और राणकपुर¶ का स्तवन देखिये।

कवि विचरण करता हुआ अपने समाज में तो ज्ञान और धर्म का प्रचार करता ही रहा है; किन्तु साथ ही राजकीय अधिकारियों से भी सम्बन्ध स्थापित कर, अहिंसा-धर्म का भी मुक्तरूप से प्रचार करता रहा है। कवि अपनी वृत्ति को संकीर्ण न रखकर, केवल स्वसमुदाय में ही नहीं, अपितु सामान्य जनता और मुसल-

* कुसुमाञ्जलि पृ० २३२।

¶ वही पृ० २८। इस स्तवन में कवि खरतरवसही का भी उल्लेख करता है:—

'खरतर वसही खांतीसुं रे लाल, निरखंता सुख थाय मन मोह्यउ रे।६।'

जो कि वर्तमान में नहीं है। किन्तु स० २००६ वैशाख शुक्ला में मैं यात्रार्थ राणकपुर गया था। वहां वेश्या का मन्दिर नाम से प्रसिद्ध मन्दिर के तल घर में पिप्पलक खरतर शाखा के प्रवर्तक आचार्य जिनवर्धनसूरि के पौत्र शिष्य, श्रीजिनचन्द्रसूरि

मानों तक से अपना संपर्क स्थापित कर उपदेश देता है। यही कारण है कि वह सिद्धपुर (सिन्ध) के कार्यवाहक (अधिकारी) मखनूम मुहम्मद शेख काजी को अपनी वाणी से प्रभावित कर समग्र सिन्ध प्रान्त में गौमाता का, पञ्चनदी के जलचर जीव एव अन्य सामान्य जीवों की रक्षा के लिये अभय की उद्घोषणा करवाता है † इसी प्रकार जहां जेसलमेर में मीना-समाज सांडों का

के पट्टधर श्रीजिनसागरसूरि प्रतिष्ठित एक मूर्ति (जो सभवतः मूलनायक की होगी !) लगभग २४ अगुल की थी और १०–१२ मूर्तियां छोटी मौजूद हैं। इससे निश्चित है कि कवि वर्णित खरतरवसही का ध्वस होने से मूर्तियें उक्त मन्दिर के तलघर में रखी गई हों।

† शीतपुर मांहे जिण समझावियउ, मखनूम महमद सेखोजी।
जीवदया पड़इ फेरावियो, राखी चिहुँ खड रेखोजी ।३।
[देवीदास कृत समयसुन्दर गीतम्]
सिंधु विहारे लाभ लियो घणो रे, जो मखनूम सेख।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे, वलि धेनु विशेष ॥ ५ ॥
[वादी हर्षनन्दन कृत समयसुन्दर गीतम् ।]

वादी हर्षनन्दन तो कवि के उपदेश द्वारा अकबर के हुक्म से सम्पूर्ण गुर्जरभूमि मे किया हुआ अमारि पटह का भी उल्लेख करता है :—

"अमारिपटहो येऽतु, साहिपत्रप्रमाणतः।
दापयांचक्रिरे सर्व-गुर्जराधरणीतले । १० ।
श्रीउच्चनगरे शेप, श्रीमखतूंम जिहानीयाम्।
प्रतिबोध्य गवां घातो, वारितस्तारितात्मभिः । ११ ।"
[ऋषिमण्डल टीका प्र०]
"मखतूमजिहानीया, म्लेच्छगुरु प्रबोधका ।
सिन्धौ गोमरणभय-त्रातारः पापहर्तारः । १४ ।"
[उ० टी० प्र०]

वध किया करता था, वहां ही जेसलमेर के अधिपति रावल भीमजी[1] को बोध देकर इस हिंसा-कृत्य को बन्द करवाया था और मंडोवर[2] (मंडोर, जोधपुर स्टेट) तथा मेड़ता[3] के अधिपतियों को ज्ञान-शिक्षा देकर शासन-सेवी बनाया था।

औदार्य और गुणग्राहकता

कवि सचमुच में ही भावुकता और औदार्य के कारण कवि ही था। वैसे तो कवि खरतरगच्छ का अनुयायी और महास्तंभ गीतार्थ था; किन्तु अनुयायी होने पर भी उसके हृदय में श्रुतदेवी का विलास होने कारण किंचित् भी हठाग्रह या संकीर्णता नहीं थी; थी तो केवल उदारता ही। उदाहरण स्वरूप देखियेः—

तपागच्छ के धर्मसागरजी जहां प्रलापी की तरह खरतरगच्छ को और उसके कर्णधार महाप्रभावी आचार्यों को खर-तर, निह्नव, उत्सूत्रभाषी, मिथ्याप्रलापी और जार-पुत्र आदि अशिष्ट विशेषण दे रहा था वहां कवि अपने गच्छ और आचार्यों की मर्यादा तथा अपनी वैधानिक परम्पराओं को सुरक्षित रख रहा था। 'समाचारी शतक' में कवि अभयदेवसूरि की खरतरगच्छीयता, षट्कल्याणक निर्णय, अधिकमास निर्णय, उपवास सह पौषध और खरतरगच्छ की परिभाषा एवं ऐतिहासिकता सिद्ध करता हुआ शास्त्रीयता का प्रतिपादन कर रहा है। किन्तु क्या मजाल की कहीं भी धर्मसागर का नामोल्लेख भी किया हो अथवा कहीं भी, किसी के लिये भी अशिष्ट विशेषणों का या शब्दों का प्रयोग किया हो ! अपितु देखा ऐसा जाता है कि कवि, धर्मसागर जी के ही सहपाठी, गुरुभ्राता और तपागच्छनायक हीरविजयसूरि

१-२-३ देखें, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १६७।

को अपने गणनायक के समान ही प्रभाविक और जिनशासन का सितारा मानकर स्तुति करता है:—

भट्टारक तीन भये बड़भागी।
जिण दीपायउ श्रीजिनशासन, सबल पडूर सोभागी। भ० १।
खरतर श्रीजिनचन्द्रसूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी।
विधिपक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी। भ० २।
मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक, पुण्य दशा हम जागी।
समयसुन्दर कहइ तत्त्वविचारउ, भरम जाय जिम भागी। भ० ३।

कवि गुणों का ग्राहक और साधुता का पूजक था। न तो उसके सामने गच्छ का ही महत्त्व था और न थीं छोटे-मोटे का ही महत्त्व, अपितु महत्त्व था तो केवल गुणों का आदर करना। यही कारण है कि पार्श्वचन्द्रगच्छ (लघु-समुदायी) के आचार्य विमलचन्द्रसूरि के शिष्य पूँजा ऋषि थे जो रातिज (गुजरात) ग्राम निवासी कडुआ पटेल गोरा और धनबाई का पुत्र था और जिसने १६७० में अहमदाबाद में दीक्षा ली थी। बड़ा ही उग्र तपस्वी था। देखा जाय तो कवि, पुञ्जा ऋषि से अवस्था, ज्ञान, प्रतिभा और चारित्र में अधिक सम्पन्न होने पर भी पूँजा ऋषि की तपस्या से अत्यधिक प्रभावित होता है और श्लाघा पूर्वक रास में वर्णन करता है :—

श्रीपार्श्वचन्द्र ना गच्छ मांहि, ए पुंजो ऋषि आज।
आप तरै नै तारिवै, जिम बड़ सफरी जहाज। ८।

× × ×

ऋषि पुंजो अति रूड़ो होवइ, जिन शासन मांहे शोभ चढावइ।१४।
तेहना गुणगातां मन मांहइ, आनन्द उपजै अति उछाहे।
जीभ पवित्र हुवे जस भणतां, श्रवण पवित्र थाये सांभलतां।१५।

ऋषि पुंजे तप कीधो ते कहुं, सांभलजो सहु कोई रे ।
आज नइ कालै करइ कुण एहेवा, पणि अनुमोदन थाई रे ।१६।

× × ×

पुंजराज मुनिवर वंदो, मन भाव मुनीसर सोहै रे ।
उग्र करइ तप आकरो, भवियण जन मन मोहै रे ।३२।

× × ×

आज तो तपसी एहवो, पुंजा ऋषि सरीखो न दीसइ रे ।
तेहनै वांदता विहरावतां, हरखै कवि हियड़ो हींसइ रे ।३४।
एक वे वैरागी एहवा, श्रीपासचन्द गच्छ मांहि सदाई रे ।
गरुयड वाढइ गच्छ मांहि, श्रीपासचन्द्रसूरिनी पुण्याई रे ।३६।

× × ×

इतना ही नहीं कवि के हृदय में गच्छ वाद तो दूर रहा किन्तु श्वेताम्बर-दिगम्बर जैसे विवादास्पदीय विषयों से भी वे दूर रहे। उनके तीर्थों के प्रति भी इनकी वैसे ही श्रद्धा और आदर भक्ति है, जैसे कि अपने तीर्थों के प्रति । दिगम्बर प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में भी कवि यात्रा करने जाता है और भाव अर्चा करता है.—

"चन्द्रपुरी अवतार, लक्ष्मणा माता मल्हार,
चन्द्रमा लांछन सार, उरु अभिराम में ।
वदन पूनिमचंद, वचन शीतलचंद,
महासेन नृपचंद, नवनिधि नाम में ।
तेज करइ झिग झिग, फटित रतन बिंब,
सांच्यो है·········दिगम्बर धाम में ।
समयसुन्दर इम, तीरथ कहइ उत्तम,
चन्द्रप्रभ भेट्यो हम, चांदवारि गाम में । ८ ।

इस प्रकार की विशालहृदयता और उदारता उस समय के महर्षियों में भी विरलता से प्राप्त होती है जैसे कि कवि में थी।

सचमुच में कवि के जैसी गुणग्राहकता तत्कालीन मुनि-जनों में होती तो आज 'गच्छवाद' का विकृत स्वरूप हमें देखने को प्राप्त नहीं होता और न समाज की ऐसी करुणदशा ही होती। आज भी हम यदि कवि की इस गुणग्राहकता को अपना करके चलें तो निश्चय ही हम विश्व में अपना स्थान बना सकेंगे। अस्तु.

गुजरात का दुष्काल और कवि का क्रियोद्धार

कवि के जीवन को करुण और दयनीय स्वरूप प्रदान करने वाला गुर्जर देश का संवत् १६८७ का भयंकर दुष्काल है। इस दुष्काल ने अन्नाभाव के कारण इस प्रकार की दुर्दशा कर दी थी कि चारों तरफ त्राहि-त्राहि की पुकार मची हुई थी:—

अध पा न लहे अन्न भला नर थया भिखारी,
मूकी दीधउ मान, पेट पिण भरइ न भारी,
पमाडियाना पांन, केइ वगरौ नइ कांटी,
खावे खेजड़ छोड़, शालितुस सबला बांटी।
अन्नकण चुणइ के अइंठि में, पीयइ अइंठि पुसली भरी।
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, एह अवस्था तइं करी ॥८॥

× × ×

मांटी मुंकी बइर, मुक्या बइरै पणि मांटी,
बेटे मुक्या बाप, चतुर देतां जे चांटी,
भाई मुकी भइण, भइणि पिण मुंक्या भाइ,
अधिको व्हालो अन्न, गइ सहु कुटुम्ब सगाइ।
घरबार मुंकी माणस घणा, परदेशइ गया पाधरा,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तेही न राख्या आधरा ॥९॥

× × ×

इस दुष्काल ने अपने भयकर वरद हस्त से समाज के रुधिर और मज्जा से यमराज को भी काफी प्रसन्न किया था:—

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया,
सोजो वलयउ सरीर, पछइ पाज मांहे पडिया;
कालइ कवण वलाइ, कुण उपाडइ किहां काठी,
ताणी नाख्या तेह, मांहि थइ सगली माठी।
दुरगंधि दशो दिसि उछली, मडा पड्या दीसइ मुआ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, किण घरइ न पड्या कुकुआ ॥१६॥

× × ×

ऐसी भयंकर अवस्था में, जो उपासक, देव-गुरु और धर्म के परमपूजारी और श्रद्धालु थे वे भी अपने कर्त्तव्यों से पराङ्मुख हो गये थे। अतः उपासकों के भगवत्तुल्य ८४ गच्छ के साधुओं की दशा भी आहार न मिलने के कारण बड़ी विचित्र हो गई थी। देवमंदिर शून्य से हो गय थे:—

घर तेडी घणी वार, भगवान ना पात्रा भरता,
भागा ते सहु भाव, निपट थया वहिरण निरता;
जिमता जडइ किमाण, कहै सवार छै केई,
थइ फेरा दस पांच, जती निठ जायइ लेई।
आपइ दुखइ अणछूटतां, ते दूषण सहु तुझ तणउ;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, विहरण नहीं विगुचणउ ।१४।

× × ×

पडिकमणउ पोसाल, करण को श्रावक नावइ,
देहरा सगला दीठ, गीत गंधर्व न गावइ;
शिष्य भणइ नहीं शास्त्र, मुख भूखइ मचमोडइ,
गुरुवंदण गइ रीति, छती प्रीत माणस छोडइ।
वखाण खाण माठा पड्या, गच्छ चौरासी एही गति;
समयसुन्दर कहइ सत्यसीया, कांइ दीधी तइं ए कुमति ।१५।

× × ×

इस सत्यासीया भाग्यशाली ने तो कई आचार्यों को अपना ग्रास बनाया था। कितने गीतार्थों को अपने अधिकार में किया था; कल्पना ही नहीं:—

श्री ललितप्रभसूरि, पाटण पूनमिया सुगुरु,
प्रभु लहुडी पोसाल, पूज्य वे पींपलिया खरतर;
गुजराती गुरु वेउ, वडउ जसवत नइ केसव,
शालिवाडियउ सूरि, बहूँ कितो पूरो हिसब ।
सिरदार घणेरा सहरथा, गीतारथ गिणती नहीं;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तु हतियारउ सालो सही ।१८।

ऐसी अवस्था में कई साधुओं ने उल्टा लाभ उठाया था। श्रावकों की अनिच्छा होते हुये भी अनेकों अनाथ बच्चों को दीक्षित कर जमात बढ़ाई थी। इसी पर कवि व्यंग्य कसता हुआ कहता है:—

आपणा वाल्हा आंत्र, पड्या जे आपणां पेटा,
नाण्यो नेह लिगार, बापइ पिण वेच्या वेटा;
लाधउ जतीए लाग, मूंडी नइ मांहइ लीधा;
हुंती जितरी हुंस, तीए तितराहिज कीधा ।
कूकीया घणु श्रावक किता, तदि दीक्षा लाभ देखाडीया;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, लइ कुटुम्ब विछोहा पाडीया।१०।

× × ×

कवि भी इस दुष्काल की मार से बचा नहीं। इधर तो कवि की वृद्धावस्था और इधर शिष्यों द्वारा त्याग; ऐसी अवस्था में यह ८४ गच्छ का सर्वमान्य कवि अति-दुर्बल और पीड़ित हो जाता है। फिर भी क्षीण देही कवि अपने शिष्यों के मोह में ग्रसित होकर, साधुओं के लिये अनाचरणीय, शास्त्र, पात्र और वस्त्र वेचकर कितना ही काल व्यतीत करता है*। पर, हा, हतभाग्य! कवि के वे ही शिष्य उसका त्याग कर जाते हैं:—

दुःखी थया दरसणी, भूख आधी न खमावइ;
श्रावक न करी सार, खिण धीरज किम थायइ,
चेले कीधी चाल, पूज्य परिग्रह परहउ छांडउ;

* यह दशा उस समय सर्व साधारण की थी।

पुस्तक पाना वेचि, जिम तिम अम्हनइ जीवाडत।
वस्त्र पात्र वेची करी, केतीक तो काल काढियउ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तुनइ निपट निरधाटीयउ ॥१३॥

× × ×

इस प्रकार दुर्भिक्ष से स्वस्थ होने पर कवि अनुभव करता है कि स्वसाधना और परार्थसाधना जो हमारा जीवन का लक्ष्य है, उससे हम दूर होते चले जा रहे हैं। साध्वाचार के प्रतिकूल शिथिलता में पनपते जा रहे हैं जो हमारे साध्यजीवन के लिये अत्यन्त ही घातक है। हमें पुनः उत्थान की तरफ चलकर आदर्शमय बनना होगा। इन्हीं विचारों में अग्रसर होकर कवि वृद्धावस्था में भी सं० १६६१ में शैथिल्य का त्याग कर सुविहित साधुता अपनाते हुये 'क्रियोद्धार' करता है और भावी-समाज के लिये आदर्श की भूमिका छोड़ जाता है।

जीवन की कातरता

यह जीवन का सत्य है कि भौतिकवाद की दृष्टि से मानव की सम्पूर्ण आकांक्षायें कदापि पूर्ण नहीं होती। किसी न किसी प्रकार की कमी रहती ही है और यही कमी जीवन का शल्य बनकर सम्पूर्ण भौतिक सुखों पर पानी फेर देती है तथा जीवन को दुःखी बना देती है। यही दुःखीपना कातरता का स्वरूप धारण कर मनुष्य को दीन भी बना देता है। यही जीवन की एक आकांक्षा कवि जैसे सक्षम व्यक्ति को भी कातर बना देती है।

कवि का जीवन अत्यन्त सुखमय रहा है। क्या शारीरिक दृष्टि से, क्या अधिकार की दृष्टि से, क्या उपाधियों की दृष्टि से, क्या सन्मान की दृष्टि से और क्या शिष्य-प्रशिष्य बहुल परिवार की दृष्टि से। कहा जाता है कि कवि के स्वहस्तदीक्षित ¶ ४२ शिष्य

¶ दीक्षा तो स्वयं आचार्य देते थे किन्तु जिनके द्वारा प्रतिबोधित होते थे, उन्हीं के शिष्य बनाया करते थे।

थे, जिसमें शायद प्रशिष्यों की संख्या सम्मिलित नहीं है उन शिष्यों में से कई तो शिष्य महा विद्वान्, वादी और प्रतिभा सम्पन मेधावी† भी थे। किन्तु इतना होने पर भी कवि को शिष्यों का सुख प्राप्त नहीं हुआ। जिन शिष्यों को योग्य बनाने के लिये कवि ने अपना सर्वस्व त्याग किया, गुजरात के सत्यासीया दुष्काल में भी शिष्यों को सुखी रखने के लिये जिसने कोई कसर नहीं रखी, जिसने अपनी आत्मा को वंचित कर साधु-नियमों का उल्लङ्घन कर माता-पिता के समान ही शिष्यों का पुत्रवत् पालन किया था। व्याकरण, प्राचीन एवं नव्यन्याय, साहित्य और दर्शन का अध्ययन करवा कर, गणनायकों से सिफारिशें कर उपाधियां दिलवाई थी–और जो समाज एव गच्छ प्रतिष्ठित यशस्वी माने जाते थे, वे ही शिष्य कवि को वृद्धावस्था में त्याग करके चले जाते हैं, सेवा शुश्रूषा भी नहीं करते हैं और जो पास में रहते हैं वे भी कवि की अन्तर्पीड़ा नहीं पहचान पाते हैं; तो कवि का हृदय रो उठता है और अनिच्छा होने पर भी बलात् वाचा द्वारा अभिव्यक्त करता हुआ अन्य साधुओं को सचेत करता है कि शिष्य-सन्तति नहीं है तो चिंता न करो। देखो, मैं अनेक शिष्यों का गुरु होता हुआ भी दुःखी हूँ:–

चेला नहीं तउ म करउ चिन्ता,
दीसइ घणे चेले पणि दुक्ख।
संतान करंमि हुआ शिष्य बहुला,
पणि समयसुन्दर न पायउ सुक्ख ॥ १ ॥
केइ मुया गया पणि केइ,
केइ जुया रहइ परदेस।
पासि रहइ ते पीड न जाणइ,

कहियउ घणउ तउ थायइ किलेस ॥ २ ॥
जोड़ घड़ी विस्तरी जगत महं,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यन्त ।
पणि एकणि वात रही अणूरति,
न कियउ किणा चेलइ निश्चिन्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सांभलिज्यो,
देतउ नहीं छुं चेला दोस ।
× × ×

इधर वृद्धावस्था, उधर दुष्काल से जर्जरित काय और ऐसी अवस्था में भी अपने प्राण प्यारे शिष्यों की उपेक्षा से कवि अत्यंत दुःखी हो जाता है जिसका वर्णन कवि अपने 'गुरु दुःखित वचनं' में विस्तार से प्रकट करता हुआ कहता है कि ऐसे शिष्य निरर्थक ही हैं:—

"क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीत्वा अपवादतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१।
वंचयित्वा निजात्मानं, पोषिता मृष्टभुक्तितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।२।
लालिताः पालिताः पश्चान्मातृपित्रादिवद् भृशम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।३।
पाठिता दुःखपापेन, कर्मबन्धं विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।४।
गृहस्थानामुपालम्भाः, सोढा वाढं स्वमोहतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।५।

तपोपि वाहितं कष्टात्, कालिकोत्कालिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।६।
वाचकादि पदं प्रेम्णा, दापितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।७।
गीतार्थं नाम धृत्वा च, बृहत्क्षेत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।८।
तर्क–व्याकृति–काव्यादि–विद्यायां पारगामिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।९।
सूत्रसिद्धान्तचर्चायां, याथातथ्यप्ररूपकाः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१०।
वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।११।
ज्योतिर्विद्या चमत्कारं, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१२।
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्याश्च महिमा महान् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१३।
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छहृच्चितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१४।
गच्छस्य कार्यकर्तारो, हर्तारोऽर्तेश्च भूस्पृशाम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१५।
गुरुर्जानाति वृद्धत्वे, शिष्याः सेवाविधायिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१६।

गुरुणा पालिता नाऽऽज्ञाऽर्हतोऽतोऽतिदुःखमागभूत्।
एपामहो ! गुरुर्दुःखी, लोकलज्जापि चेन्नहि ।१७।*

पराधीनता

यह भी एक जीवन का सत्य है कि मानव अपनी तारुण्य वस्था और प्रौढ़ावस्था में अपने विराद ज्ञान, अधिकार औं प्रतिभा के बल पर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होकर जीवित रहता है किन् वही वृद्धावस्था में अपने मनको मारकर पुत्रों की इच्छानुसा चलने को वाधित हो जाता है। उसकी सारी योग्यता, प्रतिभा औ स्वाभिमान का नामोनिशान भी मिट जाता है। देखिये कवि वे जीवन को ही। घटना इस प्रकार है:—

आचार्य जिनसिंहसूरि के पश्चात् श्रीजिनराजसूरि¶ गण नायक बने और जिनसागरसूरि आचार्य बने। जिनसागर

* संभवतः यह 'दुःखित वचनं' वादी हर्षनन्दन को लक्ष्य कर लिखा गया प्रतीत होता है।

¶ आचार्य जिनराजसूरि—बीकानेर निवासी बोहित्थिरा गोत्रीय श्रेष्ठि धर्मसी के पुत्र थे। आपकी माता का नाम धारलदे था। आपका जन्म नाम राजसिंह था। सं० १६५६ मिगसर सुदि ३ को आपने आचार्य जिनसिंहसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। आपका दीक्षा नाम था राजसमुद्र। आपको उपाध्याय पद स्वयं युगप्रधानजी ने सं० १६६८ में दिया था। आ० जिनसिंहसूरि के स्वर्गवास होने पर आप स० १६७४ वैशाख शुक्ला सप्तमी को मेड़ता में गणनायक आचार्य बने। इसका पट्टमहोत्सव मेड़ता निवासी चोपड़ा गोत्रीय सङ्घवी आसकरण ने किया था। अहमदाबाद निवासी सङ्घपति सोमजी कारित शत्रुञ्जय की खरतर वसही में सं० १६७५ वैशाख शुक्ला १३ शुक्रवार को

५०० मूर्तियों की आपने प्रतिष्ठा की थी। भाणवड पार्श्वनाथ तीर्थ के स्थापक भी आप ही थे। सं० १६७७ जेठ वदि ५ को चोपड़ा आसकरण कारापित शान्तिनाथ आदि मन्दिरों की आपने प्रतिष्ठा की थी; (देखें, मेरी सपादित, प्रतिष्ठा लेख समग्र प्रथम भाग)। जेसलमेर निवासी भणसाली गोत्रीय सङ्घपति थाहरु कारित, जैनों के प्रसिद्ध तीर्थ लौद्रवाजी की प्रतिष्ठा भी स० १६७५ मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को आपने ही की थी और आपकी ही निश्रा में स० थाहरु ने शत्रुञ्जय का सङ्घ निकाला था। कहा जाता है कि अंबिका देवी आपको प्रत्यक्ष थी और देवी की सहायता से ही घङ्घाणी तीर्थ में प्रकटित मूर्तियों के लेख आपने बांचे थे। आपकी प्रतिष्ठापित सैकड़ों मूर्तियां आज भी उपलब्ध हैं। स० १६६६ आषाढ़ शुक्ला ६ को पाटण में आपका स्वर्गवास हुआ था। आप न्याय, सिद्धान्त और साहित्य के उद्भट विद्वान् थे। आपकी रचित निम्न कृतियें प्राप्त हैं:—

१. स्थानांग सूत्र वृत्ति (अप्राप्त, उल्लेख मात्र प्राप्त है)
२. नैषध महाकाव्य जैनराजी टीका श्लो० स० ३६००० (उत्कृष्ट पाण्डित्यपूर्ण टीका, प्रति मेरे सग्रह में)
३. धन्ना शालिभद्र रास स० १६७६, (सचित्र प्रति मेरे सग्रह में)
४. गुणस्थान विचार पार्श्वस्तवन स० १६६५.
५. पार्श्वनाथ गुणवेली स्तव. ,, १६८६ पो० व० ८
६. गज सुकुमाल रास. ,, १६६६ अहमदाबाद (प्रति, मेरे सग्रह में)
७. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका बालावबोध
८. चौवीसी
९. वीसी.
१०. शील बतीसी.
११. कर्म बतीसी.
१२. नवतत्त्व स्तवक.
१३. स्तवन सग्रह.

सूरि * १२ बारह वर्ष तक आ० जिनराजसूरि के साथ ही रहे। सं० १६८६ में कवि का प्रसिद्ध शिष्य, बहुश्रुत, प्रकाण्ड विद्वान्, नव्यन्याय वेत्ता, यशस्वी, वादी हर्षनन्दन के बखेड़े के कारण दोनों आचार्यों में मनोमालिन्य हुआ। फलस्वरूप अलग अलग हो गये। वादी हर्षनन्दन ने जिनसागरसूरि का पक्ष लिया था, क्योंकि उनका वह एक नेता रहा है। अतः कवि को भी प्रमुख आ० जिनराजसूरि का साथ छोड़कर, अपने शिष्य के हठाग्रह से पराधीन हो उसके मतानुसार ही चलना पड़ा। यहीं से खरतरगच्छ की एक 'आचार्य शाखा' का प्रादुर्भाव हुआ। हाय रे वार्धक्य! तेरे कारण ही कवि जैसे समदर्शी विद्वान् को भी एक पक्ष स्वीकार करना पड़ा।

* जिनसागरसूरि—बीकानेर निवासी बोहिथिरा गोत्रीय शाह वच्छराज और मृगादे माता की कुक्षि से सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रवि अश्विनी नक्षत्र में इनका जन्म हुआ था। जन्म नाम था चोला। सं० १६६१ माह सुदि ७ को अमरसर में जिनसिंहसूरि ने आपको दीक्षा दी। दीक्षा महोत्सव श्रीमाल थानसिंह ने किया था। युगप्रधानजी ने वृहद्दीक्षा देकर इनका नाम सिद्धसेन रखा था। इनके विद्यागुरु थे उपाध्याय समयसुन्दरजी के शिष्य वादी हर्षनन्दन। सं० १६७४ फागुण सुदि ७ को मेड़ता में संघपति आसकरण द्वारा कारित महोत्सव पूर्वक आप आचार्य बने। जिनराजसूरि के साथ ही आप शत्रुञ्जय खरतर वसही की प्रतिष्ठा के समय मौजूद थे। १२ वर्ष तक आप जिनराजसूरि के साथ ही रहे। किन्तु सं० १६८६ में किंचित् मतभेद एवं वादी हर्षनन्दन के आग्रह के कारण आप पृथक् हुये। तब से आपकी शाखा आचार्य शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपने अहमदाबाद में ११ दिन का अनशन कर सं० १७२० ज्येष्ठ कृष्णा ३ को स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया था।

आप बड़े ही मनस्वी और श्रेष्ठ संयमी थे तथा आपकी

प्रसिद्धि भी अत्यधिक फैली हुई थी। इसके सम्बन्ध में कवि स्वयं उल्लेख करता है:—

"थोलइ थोड़' बइठा रहइ रे, वाचइ सूत्र सिद्धान्त।
राति उभा काउसग्ग करइ रे, ध्यान धरइं एकांत।अ.।४।"

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४१३]

"श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे श्रीविक्रमे गुर्जरे,
थट्टायां भटनेर-मेदिनीतटे, श्रीमेदपाटे स्फुटम्।
श्रीजावालपुरे च योधनगरे श्रीनागपुर्यां पुनः,
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्रीसत्यपुर्यामपि ।१।
मूलत्राणपुरे मरोट्टनगरे देराउरे पुग्गले,
श्रीउच्चे किरहोर-सिद्धनगरे धींगोटके संबले।
श्रीलाहोरपुरे महाजन-रिणी-श्रीआगराख्ये पुरे,
सांगानेरपुरे सुपर्वसरसि श्रीमालपुर्यां पुनः ।२।
श्रीमत्पत्तननाम्नि राजनगरे श्रीस्तम्भतीर्थे तथा,
द्वीपश्रीभृगुकच्छ-वृद्धनगरे सौराष्ट्रके सर्वतः।
श्रीवाराणपुरे च राधनपुरे श्रीगुर्जरे मालवे,
.................................।३।
सर्वत्रप्रसरी सरोति सततं सौभाग्यमाहात्म्यतः,
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता भाग्याधिकत्वं भृशम्।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता येषां यशोवादता,
सूरिश्रीजिनसागरा विजयिनो भूयासुरेते चिरम्।४।

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४०७]

स्वर्गवास

कवि वृद्धावस्था में शारीरिक क्षीणता के कारण संवत् १६६६ से ही अहमदाबाद में स्थायी निवास कर लेते हैं। वहीं रहते हुए आत्म-साधना और साहित्य-साधना करते हुए संवत् १७०२ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को इस नश्वर देह को त्याग कर समाधि पूर्वक स्वर्ग की ओर प्रयास कर जाते हैं। इसी का उल्लेख कवि राजसोम अपने "समयसुन्दर" गीत म करता है :—

"अणसण करि अणगार, संवत् सतरहो सय वीड़ोत्तरे।
अहमदाबाद मझार, परलोक पहुंता हो चैत सुदि तेरसै।।"

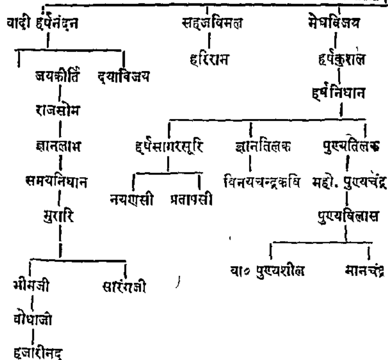
किन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि सर्वगच्छ-मान्य कवि के स्वर्गारोहण स्थान पर अहमदाबाद के उपासकों ने स्मारक बनवाया था या नहीं? सम्भव ही नहीं निश्चित है कि कवि का स्मारक अवश्य बना होगा, किन्तु अब प्राप्त नहीं है। सम्भव है उपेक्षा एवं सारसंभाल के अभाव में नष्ट हो गया हो! यदि कहीं हो भी तो शोध होनी चाहिये। अस्तु,

वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन टीका में उल्लेख करता है कि गडालय (नाल, बीकानेर) में कवि की पादुका स्थापित है:—

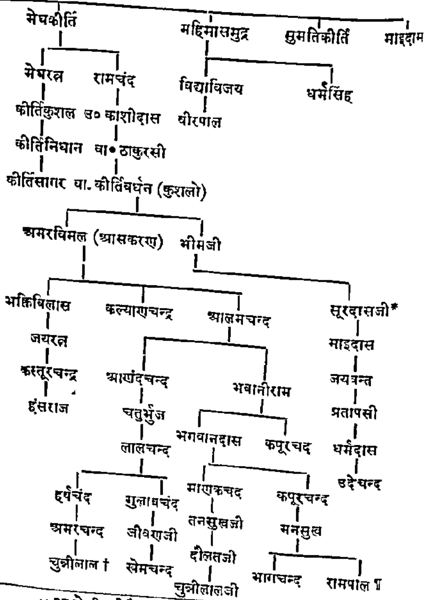
"श्रीसमयसुन्दराणां गडालये पादुके वन्दे ।५।"

शिष्य परिवार

एक प्राचीन पत्र के अनुसार ज्ञात होता है कि कवि के ४२ बयालीस शिष्य थे। कवि के ग्रन्थों की प्रशस्तियों को देखने से कुछ ही शिष्यों और प्रशिष्यों के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। अतः अनुमानतः आपके शिष्य-प्रशिष्यादिकों की संख्या विपुल ही थी। कौन-कौन और किस किस नाम के शिष्य थे? उल्लेख नहीं मिलता। कतिपय ग्रन्थों के आधार पर कवि की परम्परा का कुछ आभास हमें होता है :—



*सूरदासजी से चंदेचंदजी तक की परंपरा; आचार्य शाखा भंडार, बीकानेर से



१९ पर से दी गई है। † चुन्नीलालजी कुछ वर्षों पूर्व विद्यमान थे। ¶ वर्त-

कवि की शिष्य परंपरा में अनेकों उद्भट विद्वान् मौलिक साहित्य-सर्जन कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध करने वाले हुये हैं जिनमें से कुछ विद्वानों का संक्षिप्त उल्लेख कर देना यहाँ अप्रासंगिक न होगा।

१. वादी हर्षनन्दन—कवि के प्रधान शिष्यों में से है। वादीजी गीतार्थ और उद्भट विद्वानों में से हैं। कवि स्वयं इनके सम्बन्ध में उल्लेख करता है:—

"प्रक्रिया-हैमभाष्यादि-पाठकैश्च विशोधिता।
हर्षनन्दनवादीन्द्रैः, चिन्तामणिविशारदैः॥१२॥"
[कल्पलता प्रशस्तिः]

"सुशिष्यो वाचनाचार्यस्तर्कव्याकरणादिवित्।
हर्षनन्दनवादीन्द्रो, मम साहाय्यदायकः।"
[समाचारी शतक प्रशस्तिः]

इसी प्रकार की योग्यता का अङ्कन कवि ने कतिपय पद्यों द्वारा 'गुरुदुःखित वचनम्' में भी किया है। वादी ने कवि कृत कल्पलता, समाचारी शतक, सप्तस्मरण टीका, एवं द्रौपदी चतुष्पदी के संशोधन एवं रचना में सहायता दी थी। कवि ने हर्षनन्दन के लिये ही 'मंगलवाद' की रचना की थी।

वादी प्रणीत निम्नलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं:—

मान में पो० संबली. (निजामस्टेट) में विद्यमान हैं। और यतिवर्य उ० श्री नेमिचन्द्रजी (बाड़मेर) के कथनानुसार "उ० समयसुन्दरजी की शाखा में अखेचन्दजी, हीराचन्दजी माल में थे और माणकजी, बच्छराजजी, सुगनजी, भवानीदास, रूपजी, अमरचन्दजी, हेमराजजी, दौलतजी आदि कईयों को हमने देखा है।" किन्तु ये किनकी शाखा में थे, ज्ञात नहीं।

(१) शत्रुञ्जय चैत्य परिपाटी स्तव र० स० १६७१
(२) मध्याह्न व्याख्यान पद्धति र० सं० १६७३ अक्षयतृतीया, पाटण [त्रिकराब्दाष्टपडेकाब्दे] प्र० ६००१,
(३) गौडीस्तव र० सं० १६८३
(४) ऋषिमण्डल वृत्ति. र० सं० १७०४ वसंतपंचमी, बीकानेर, कर्णसिंह राज्ये, शिष्य दयाविजय पठनार्थे,
(५) स्थानाङ्ग वृत्तिगत गाथा वृत्ति र० सं० १७०५ माघ, अहमदाबाद प्र० ११०००, सुमतिकल्लोल सह.
(६) उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति र० सं० १७११ अक्षयतृतीया, अहमदाबाद, प्र० १८२६५. प्रथमादर्श लेखक शिष्य दयाविजय.
(७) आदिनाथ व्याख्यान.
(८) पार्श्व-नेमि चरित्र.
(९) ऋषिमण्डल बालाबोध.
(१०) आचार दिनकर लेखन प्रशस्ति.
(११) उद्यम कर्म संवाद (प्रति, तेरापंथी संग्रह, सरदार शहर)
(१२) जिनसिंहसूरि गीत आदि.

वादी की मध्याह्न व्याख्यान पद्धति, ऋषि मण्डल टीका, स्थानांग वृत्ति गत गाथा वृत्ति और उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति ये चारों ही ग्रन्थ बड़े ही महत्व के हैं।

मध्याह्न व्याख्यान पद्धति अर्थात् शास्त्रीय परिपाटी के अनुसार प्रातः आगमों का वाचन होता ही है। मध्याह्न में जनता को मनोरंजन के साथ उपदेश प्राप्त हो सके—इसी लक्ष्य से इसका प्रणयन किया गया है। वादी इस ग्रन्थ के प्रति गर्वोक्ति के साथ कहता है कि "प्रतिभाशाली हो या अल्पज्ञ, सुस्वर हो या दुःस्वर, गीतार्थ हो या अगीतार्थ, पुरुषार्थी हो या प्रमादी, संकोचशील हो या धृष्ट

हो, सौभाग्यशाली हो या दुर्भागी; वक्ता सभा के समक्ष इन प्रबन्धों को निश्चित होकर वांचन करे:—

सुमेधाऽल्पमेधा वा, सुस्वरो दुःस्वरोऽपि वा ।
अगीतार्थः सुगीतार्थः, उद्यमी अलसोऽपि वा ॥१४॥
लज्जालुर्धृष्टचित्तो वा, सुभगो दुर्भगोऽपि वा ।
सभाप्रबन्ध सर्वोऽपि, निश्चिन्तो वाचयत्विदम् ॥१५॥

यह ग्रन्थ १८ विभाग-अध्यायों में विस्तार के साथ लिखा गया है ।

ऋषिमण्डल टीका, ४ विभागों में विभाजित है । यह टीका अत्यन्त ही विस्तार के साथ लिखी गई है । इसमें दृष्टान्तों की भरमार है जिसका अनुमान निम्नतालिका से हो जायगा । उदाहरणों की विपुलता को देखते हुये हम इसे टीका की अपेक्षा एक वृहत्कथा कोष कह दें तो कोई अत्युक्ति न होगी । कथानकों की तालिका इस प्रकार है:—

प्रथम विभागः—

१. भरत	२. बाहुबलि	३. सूर्ययशा
४. महायशा	५. अतिबल	६. बलभद्र
७. बलवीर्य	८. जलवीर्य	९. कार्तवीर्य
१०. दण्डवीर्य	११. सिद्धिदण्डिका	१२. सगर चक्रवर्ती
१३. मघवा चक्रवर्ती	१४. सनत्कुमार चक्र०	१५. शान्ति "
१६. कुन्थु "	१७. अर "	१८. श्री पद्म "
१९. हरिषेण "	२०. जय "	२१. महाबल "
२२. अचल बलदेव	२३. विजय बलदेव	२४ बलभद्र बलदेव
२५ सुप्रभ "	२६. सुदर्शन "	२७ आनन्द "
२८. नन्दन "	२९ रामचन्द्र "	३०. बलदेव "

द्वितीय विभागः—

१. मल्लि षड्मित्र　　२. विष्णुकुमार
३. स्कन्दकशिष्य　　४. कार्तिक शेठ
५. सुकोशल　　६. अक्षोभ्यादिक
७. अक्षोभ्य　　८. स्तमित दशार्ह
९. सागर दशार्ह　　१०. हिमवद् दशार्ह
११. अचल „　　१२. धरण पूरण
१३. अभिचन्द्र　　१४. रथनेमि
१५. जालिमयालि उवयालि　　१६. पुरुषसेन, वारिषेण
१७. दृढनेमि-सत्यनेमि　　१८. प्रद्युम्न-शंब-अनिरुद्ध
१९. गजसुकुमाल　　२०. ढंढण
२१. थावच्चासुत　　२२. शुकपरिव्राजक शैलक राज
२३. शैलक पुत्र मण्डक　　२४. सारण मुनि
२५. नवम नारद　　२६. वल्क प्रत्येक बुद्ध
२७. पुत्र प्रत्येक बुद्ध　　२८. असित बुद्ध
२९. अंग प्रत्येक बुद्ध　　३०. दवदंत राजर्षि
३१. कुरुजधार　　३२. पाण्डव
३३. केशिकुमार　　३४. कालिक पुत्र
३५ काला शर्वेसिक　　३६. काला शर्वेसिकपुत्र
३७. पुण्डरीक-कंडरीक　　३८. ऋषभदत्त-देवानंदा
३९ करकण्डू　　४०. द्विमुख
४१. नमि राजर्षि　　४२. नग्गइ राजर्षि
४३. प्रसन्नचन्द राजर्षि　　४४. वल्कलचीरी
४५. अतिमुक्तक　　४६. क्षुल्लककुमार
४७. द्रुप श्रमण भद्र　　४८. लोहार्य
४९. सुप्रविष्ठ श्रेष्ठि

चतुर्थ विभागः—

१. जम्बूस्वामी	२. कुबेरदत्त
३. महेशदत्त	४. कर्षकः काक
५. वानर-वानरी	६. अंगारक
७. नूपुरपण्डित-शृङ्गाल	८. ....
९. विद्युन्मालि	१०. शंखधामक
११. शिलाजपुत्र वानर	१२. सिद्धिबुद्धि
१३. जात्यश्विकिशोर	१४. ग्रामकूट सुत
१५. सोल्लक	१६. मासाहस
१७. त्रिमित्र	१८. नामश्री
१९. ललितांग	२०. शय्यंभवसूरि
२१. यशोभद्रसूरि	२२. संभूतिविजय
२३. भद्रबाहु	२४. स्थूलिभद्र
२५. चाणक्य-चन्द्रगुप्त	२६. भद्रबाहु के ४ शिष्य
२७. आर्य महागिरि	२८. आर्य सुहस्ति
२९. आर्य समुद्र	३०. आर्य मंगुल
३१. अवंती सुकुमाल	३२. कालिकाचार्य
३३. कालिक गणि	३४. सिंहगिरि
३५. सिंहगिरि के ४ शिष्य	३६. ....
३७. भद्रगुप्त	३८. समिताचार्य
३९. वज्रस्वामी	४०. वज्रसेन
४१. आर्य रक्षित	४२. दुर्बलिका पुष्यमित्र
४३. स्कन्दिलाचार्य	४४. देवर्धि क्षमाश्रमण
४५. ब्राह्मी-सुन्दरी	४६. राजीमती
४७. चन्दनबाला	४८. धर्मघोष

तृतीय विभाग सन्मुख न होने के कारण हम नहीं कह सकते कि इसमें कौन-कौन सी और कितनी कथायें हैं। इन कथाओं के लिये भी वादी का कथन है कि 'ये कथायें विकथायें नहीं हैं; अपितु जिन महापुरुषों के नाम स्मरण से ही चिर सञ्चित पापों का नाश होता है, वैसी ही सार-गर्भित कथायें हैं :—

चिरपापप्रणाशिन्यः, प्राज्ञनिर्ग्रन्थसत्कथा ।
विकथा-वर्जितो वाचा, कथयामि निरन्तरम् ।४।

स्थानांगवृत्तिगत गाथावृत्ति, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के विद्वान् शिष्य वाचनाचार्य सुमतिकल्लोल और वादी इस युग्म ने, आचार्य अभयदेव द्वारा स्थानांग सूत्र की टीका में 'कर्मग्रन्थादि प्रकीर्ण साहित्य, निर्युक्ति एवं भाष्य साहित्य, देवेन्द्रस्तव, विशेषणवती, षट् त्रिंशिकायें, सप्ततिकायें, संग्रहणी आदि, पंचाशक, सिद्धप्राभृत, सन्मतितर्क, आदि शास्त्र और ज्योतिष, संगीत, शिक्षा, प्राकृत, कोष, एवं सूक्तियें आदि सम्बन्धित विषयों के जो उद्धरण हजार के ऊपर दिये हैं; वे अत्यन्त क्लिष्ट हैं, अतः उन पर विशिष्ट प्रकाश डालते हुये विपुल परिमाण में यह टीका रची है :—

कर्मग्रन्थबहुप्रकीर्णकबृहन्निर्युक्तिभाष्योत्तराः ।
देवेन्द्रस्तवसद्विशेषणवती प्रज्ञप्तिकल्पा श्रेयो (?)।
अङ्गोपाङ्गकमूलसूत्रमिलिताः षट्त्रिंशिका-सप्ततिः,
श्लिष्यत् संग्रहणीसमप्रकरणाः पञ्चाशिका संस्थिताः ।८।
सिद्धप्राभृतसम्मतीष्टकरणे ज्योतिष्क — सङ्गीतक—
शिक्षा-प्राकृत-कोष-सूक्तललिता गाथाः सहस्रात्पराः ।

सत्रालापकमुद्रितार्थविवृतौ तत्साधिभूता धृताः,
प्रायस्ताः कठिनास्तदर्थविवृतौ टीका विना दुर्घटाः ।६।

उत्तराध्ययन टीका भी साहित्यिक दृष्टि से काफी महत्व रखती है। इसकी प्रशस्ति में वादी स्वयं अपने को नव्यन्याय और महाभाष्य का विशारद कहता है:—

तच्छिष्यमुख्यदक्षेण, हर्षनन्दन वादिना ।
चिन्तामणि–महाभाष्य–शास्त्रपारप्रदृश्वना ।१५।

इन चारों ही कृतियों की भाषा अत्यन्त प्रौढ एवं प्राञ्जल होते हुये भी सरल-सरस प्रवाह युक्त है। वादी की लेखिनी में चमत्कार यह है कि पाठक स्वतः ही आकृष्ट होकर मननशील हो जाता है।

(क) वादी हर्षनन्दन के शिष्य वाचक जयकीर्ति गणि जैन-साहित्य के साथ-साथ ज्योतिष शास्त्र के भी अच्छे निष्णात थे। कवि 'दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि' में स्वयं कहता है कि 'यह ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् है और इस की सहायता से इस ग्रन्थ की मैंने रचना की है:—

"ज्योतिःशास्त्र विचक्षण-वाचक-जयकीर्ति-दत्तसाहाय्यैः"

इनकी प्रणीत निम्न रचनायें प्राप्त हैं—

(१) पृथ्वीराज वेलि बालावबोध. सं॰ १६८६ बीकानेर.
(२) षडावश्यक बालावबोध. सं॰ १६९३
(३) जिनराजसूरि रास.

(ख) वादी हर्षनन्दन के द्वितीय शिष्य दयाविजय भी अच्छे विद्वान् थे। इन्हीं के पठनार्थ वादीजी ने ऋषिमण्डल

टीका और उत्तराध्ययन टीका की रचना की है। उत्तराध्ययन टीका का प्रथमादर्श भी इन्हीं ने लिखा था।

"दयाविजयशिष्यस्य, वाचनाय विरच्यते।" [ऋ० टी०]

"प्रथमादर्शकोऽलेखि, दयाविजय साधुना।" [उ० टी०]

(ग) वाचक जयकीर्ति के शिष्य राजसोम प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं:—

(१) श्रावकाराधना भाषा. सं० १७१५ जे० सु० नोखा

(२) इरियावही मिथ्यादुष्कृत बालावबोध

(घ) वाचक जयकीर्ति के पौत्र शिष्य समयनिधान द्वारा सं० १७३१ अकबराबाद में रचित सुसढ चतुष्पदी प्राप्त है।

२. सहजविमल और मेघविजय के पठनार्थ कवि ने रघुवंश टीका, नव तत्त्व टीका और जयतिहुअण स्तोत्र टीका की रचना की थी।

(क) सहजविमल के शिष्य हरिराम के निमित्त कवि ने रघुवंश टीका और वाग्भटालंकार टीका की रचना की है और इसे अपना पौत्र "पाठयता पौत्र हरिरामं" [रघु० टी०] बताया है। निश्चिततया नहीं कहा जा सकता कि हरिराम किसका शिष्य था, सहजविमल का या मेघविजय का? और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हरिराम यह नाम इनका पूर्वावस्था का था या दीक्षितावस्था का? अथवा दीक्षितावस्था का नाम हर्षकुशल था? यहां इनका नाम सहजविमल के शिष्य रूप में अनुमानतः ही लिखा गया है।

३. मेघविजय कवि का प्रिय शिष्य है। स्वयं कवि ने सं० १६८७ में 'विशेष शतक' की प्रति लिखकर इसको दी थी। कवि इस पर प्रसन्न भी अत्यधिक था। इसने दुष्काल जैसे समय में भी कवि का साथ नहीं छोड़ा था। यही कारण है कि कवि इसकी प्रशंसा करता हुआ लिखता है:—

"मुनि मेघविजयशिष्यो, गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्ती च।
तस्मै पाठनपूर्वं, दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा ॥६॥
[विशेषशतक लेखन प्रशस्तिः]

(क) मेघविजय के शिष्य हर्षकुशल अच्छे विद्वान् थे। जैसे कवि को 'गुरुभक्त' मेघविजय अत्यन्त प्रिय थे, तो वैसे उनसे भी अत्यधिक पौत्र हर्षकुशल कवि को प्रिय थे। ऐसा मालूम होता है कि वृद्धावस्था में कवि (दादागुरु) की इसने प्राण-पण से सेवा की होगी। यही कारण है कि कवि वृद्धावस्था में भी स्वयं अपने जर्जर हाथों से लिखित माघकाव्य तृतीय सर्ग टीका, रूपकमाला अवचूरि आदि पचासों महत्त्व के ग्रन्थ इसको देता है; जैसा कि कवि लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों जाना जाता है। इसने 'द्रौपदी चतुष्पदी' की रचना में भी कवि को पूर्ण सहायता दी थी:—

वाचक हर्षनन्दन वलि, हर्षकुशलइ सानिधि कीजइ रे।
लिखन शोधन सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करो दीधी रे।६।
[द्रौ० चौ० ए० खं० ७ वीं ढाल]

इसकी स्वतंत्र रचना केवल 'वीसी' ही प्राप्त है।

(ख) हर्षकुशल के पौत्र आचार्य हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ कार्तिक कृष्णा नवमी को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लायब्रेरी, बीकानेर) प्राप्त है।

(ग) हर्षकुशल के द्वितीय पौत्र ज्ञान तिलक रचित ३-४ स्तोत्र और स्वयं लिखित फुटकर संग्रह का एक गुटका (मेरे संग्रह में) प्राप्त है और ज्ञान तिलक के शिष्य विनयचन्द्र गणि अच्छे कवि थे। इनकी प्रणीत निम्न-लिखित कृतियाँ प्राप्त हैं:—

(१) उत्तमकुमार चरित्र, र० सं० १७५२ फा० शु० ५ पाटण, (२) बीसी, र० सं० १७५४ राजलगढ़, (३) ग्यारह अंग सेज्झाय, र० सं० १७५५, (४) शत्रुञ्जय स्तव र० सं० १७५५ पो० शु० १०, (५) मदनरेखा रास (?), (६) चौवीसी, (७) रोहक कथा चौपाई (८) रथनेमि स्वाध्याय, (९) नेमि राजुल बारहमासा

(घ) हर्षकुशल के तृतीय पौत्र पुण्यतिलक प्रणीत 'नरपतिजय चर्या यन्त्रकोद्धार टिप्पनक (जिनहरिसागरसूरि भ० लोहावट) प्राप्त है। इन्हीं पुण्यतिलक के पौत्र वाचक पुण्यशील द्वारा सं० १८१० में लिखित 'महाराजकुमार चरित्र चतुष्पदी' (चुन्नीजी का संग्रह, बीकानेर) प्राप्त है।

४. मेघकीर्ति के शिष्य रामचन्द्र प्रणीत एक बीसी प्राप्त है। और सं० १६८२ में लिखित लिंगानुशासन की प्रति भी (उ० जयचन्द्रजी सं० बीकानेर) प्राप्त है। इन्हीं की परम्परा में अमरविमलजी के तृतीय शिष्य आलमचन्द्जी एक श्रेष्ठ कवि थे। इनकी निम्न रचनायें प्राप्त हैं:—

(१) मौन एकादशी चौपाई, र० सं० १८१४ माघ शु० ५ रवि० मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में), (२) सम्यक्त्व कौमुदी, र० स० १८२२ मि० सु० ४ मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में), (३) जीवविचार स्तव, र० सं० १८१५ वै० शु० ५ रवि मकसुदाबाद, (४) त्रैलोक्य प्रतिमा स्तव, र० स० १८१७ श्रा० शु० २।

इन्हीं अमरविलासजी के पौत्र शिष्य, वाचक जयरत्न के शिष्य कस्तूरचन्द्र गणि एक प्रौढ़ विद्वानों में से थे। इनकी रची हुई केवल दो ही कृतियां प्राप्त हैं:—

(१) षड्‌दर्शन समुच्चय बालावबोध, सं० १८६४ वै० व० २ शनि, बीकानेर, (इसकी प्रति यति श्री मुकनचन्द्रजी के संग्रह, बीकानेर में प्राप्त है।)

(२) ज्ञातासूत्र दीपिका, जिनहेमसूरि राज्ये, सं० १८६६, प्रारम्भ जयपुर और समाप्ति इन्दोर, ग्रं० १८००० कृति अत्यन्त विद्वतापूर्ण है।

(प्रेस कॉपी मेरे संग्रह में)

मेघकीर्ति की परम्परा में कीर्तिनिधान के शिष्य कीर्तिसागर लिखित (१) रत्नपरीक्षा ले० सं० १७२२ (चुन्नी जी सं० बी०) और (२) स्याद्वादमजरी ले० सं० १७२५ मेहता (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त हैं।

५. महिमासमुद्र के लिये कवि ने सं० १६६७ उच्चानगर में श्रावकाराधना की रचना की थी।

(क) महिमासमुद्र के शिष्य धर्मसिंह द्वारा स० १७०८ में लिखित थावच्चा चतुष्पदी (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त है।

(ख) महिमासमुद्र के पौत्र, श्रीविद्याविजय के शिष्य वीरपाल द्वारा सं० १६६६ में लिखित जिनचन्द्रसूरि निर्वाण रास एवं आलीजा गीत (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त है।

साहित्य-सर्जन

कविवर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धारक एक उद्भट विद्वान् थे। केवल वे साहित्य की चर्चा करने वाले वाचा के विद्वान् ही नहीं थे, अपितु वे थे प्रकाण्ड-पाण्डित्य के साथ लेखनी के धनी भी। कवि ने व्याकरण, अनेकार्थी साहित्य, साहित्य, लक्षण, छन्द, ज्योतिष, पादपूर्ति साहित्य, चार्चिक, सैद्धान्तिक और भाषात्मक गेय साहित्य की जो मौलिक रचनायें और टीकायें ग्रथित कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध कर जो भारतीय वाङ्मय की सेवा की है, वह वस्तुतः अनुपमेय है और वर्तमान साधु-समाज के लिये आदर्शभूत अनुकरणीय भी है। कवि की कृतियाँ निम्न हैं। जिनकी तालिका विषय विभाजन के अनुसार इस प्रकार है:—

व्याकरण:— सारस्वत वृत्ति*, सारस्वत रहस्य, लिंगानुशासन अवचूर्णि ¶, अनिट्कारिका†,

* कवि, स्वयं लिखित सारस्वतीय शब्दरूपावलि में उल्लेख करता है:—

"सारस्वतस्य रूपाणि, पूर्वं वृत्तेरलीलिखत्।
स्तम्भतीर्थे मधौ मासे, गणिः समयसुन्दरः ।१।"

कवि की यह कृति अभी तक अज्ञात ही है। शोध होनी चाहिये।

¶ कवि स्वयं लिखित पुल्लिङ्गान्त तक ही चूर्णि है।

† प्रति अ० जै० ग्र० में है।

सारस्वतीय शब्द रूपावली†, वेट्थपद विवेचनाϕ।

अनेकार्थी साहित्य:— अष्टलक्षी[१], मेघदूत प्रथम श्लोक के तीन अर्थ, द्वयर्थराग गर्भित पाल्हणपुर मण्डन चन्द्रप्रभजिन स्तवनम्[२], चतुर्विंशति तीर्थंकर-गुरुनाम गर्भित श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्[३], ६ राग ३६ रागिणी नाम गर्भित श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्[४], पूर्व कवि प्रणीत श्लोक द्वयर्थीकरण अमीझरा पार्श्व स्तव[५], श्री वीतराग स्तव-छन्द जातिमयम्।

साहित्य:— रघुवंश टीका[६], शिशुपाल वध तृतीयसर्ग

† स्वयं लिखित प्रति अ० जै० ग्र० में है।

ϕ "सं. १६८४ वर्षे अक्षतृतीयायां श्रीविक्रमनगरे श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैर्व्यलेखि।" अ० जै० ग्र०

१ "श्रीविक्रमनृपवर्षात्, समये रसजलधिरागसोम (१६४६) मिते। श्रीमल् 'लाभ' पुरेऽस्मिन्, वृत्तिरियं पूर्णतां नीता ॥३२॥"

२ "सवत् १६७१ भादवा सुदि १२ कृतम्" (कुसुमाञ्जलि पृ० ६६)

३ "सूर्याचाररसेन्दुसंवति नुतिं श्री स्तम्भनस्य प्रभो !" (कुसुमाञ्जलि पृष्ठ १८५)

४ "सोलसइ बावन विजयदसमी दिने सुरगुरु वार । थंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार ॥" (कुसुमाञ्जलि पृ. ३८६)

५ कुसुमांजलि पृ० १६१

६ "सवत् १६६२ खम्भात"

"लोचनग्रहशृङ्गार वर्षे मासे च माधवे ।
स्तम्भतीर्थेषु रेखारूपावाटकप्रतिश्रये ।७।
× × ×
पाठयता पौत्र हरिरामम् ।६।"

	टीका९ ।
भाषा काव्य पर संस्कृत टीका:—	रूपकमाला अवचूरि८ ।
पादपूर्ति-साहित्य:—	श्रीजिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य (रघुवंश, तृतीय सर्ग पादपूर्ति), ऋषभ भक्तामर (भक्तामरस्तोत्र पादपूर्ति)।
लक्षण:—	भावशतक९, वाग्भट्टालङ्कार टीका१० ।
छन्द:—	वृत्तरत्नाकर वृत्ति११
न्याय:—	मङ्गलवाद१२

७ "इत्थं श्रीमाघकाव्यस्य, सर्गे किल तृतीयके ।
वृत्तिः सम्पूर्णतां प्राप, कृता समयसुन्दरैः ।१।"
स्वयं लिखित प्रति, सुराणा लायब्रेरी, चूरु ।

८ "संवति गुणरसदर्शनसोमप्रमिते च विक्रमद्रङ्गे ।
कार्तिक शुक्ल-दशम्यां विनिर्मिता स्व-पर-शिष्यकृते ।४।"

९ "शशिसागररसभूतलसंवति विहितं च भावशतकमिदम्"

१० "अहमदावादे नगरे, करनिधिशृङ्गारसङ्ख्याब्दे ।२।
× × ×
किन्त्वर्थलापनं चक्रे, हरिराममुनेः कृते ।३।"

११ "संवति विधिमुख-निधि-रस-शशि (१६६४) सङ्ख्ये दीप-पर्व दिवसे च ।
'जालोर' नामनगरे लूणेया फसलार्पितस्थाने ॥ २ ॥"

१२ "कृता लिखिता च संवत् १६५३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० दिने श्रीइलादुर्गे चातुर्मासस्थितेन श्री युगप्रधान श्री ५ श्रीजिनचन्द्र-सूरिशिष्यमुख्यपण्डितसकलचन्द्रगणिस्तच्छिष्य वा० समय-सुन्दरगणिना पं० हर्षनन्दन-मुनि-कृते ।"

ज्योतिष:—	दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि[13]
वैधानिक:—	समाचारी शतक[14], सन्देह दोलावली पर्याय[15]
सैद्धान्तिक चर्चा:—	विशेष शतक[16], विचार शतक[17], विशेष संग्रह[18], विसम्वाद शतक, फुटकर प्रश्नोत्तर, प्रश्नोत्तर सार संग्रह[19]
ऐतिहासिक:—	खरतरगच्छ पट्टावली[20], अनेक गीत स्तवनादि

१३ "श्रीलूणकर्णो सरसि, स्मरशर-वसु षड्डुपति वर्षे ॥१॥
ज्योतिःशास्त्रविचक्षण वाचक-जयकीर्तिदत्त-साहाय्यैः ।
श्री समयसुन्दरोपाध्यायैः सन्दर्भितो ग्रन्थः ॥२॥"

१४ "आरब्धं किल सिन्धुदेशविषये श्रीसिद्धपुर्यामिदं,
मूलत्राणपुरे कियद्विरचितं वर्षत्रयात् प्रागमया ।
सम्पूर्णा विदधे पुरे सुखकरे श्रीमेड़तानामके,
श्रीमद्विक्रमसंवति द्वि-मुनि-षट्-प्रालेयरोचिर्मिते १६७२ ॥३॥"

१५ "संवत् १६६३"

१६ "विक्रमसंवति लोचनमुनिदर्शन कुमुदबान्धवप्रमिते । (१६७२)
श्री पार्श्वजन्मदिवसे पुरे श्रीमेड़तानगरे ॥२॥"

१७ "स्वच्छे 'खरतर' गच्छे विजयिनि जिनसिंहसूरिगुरुराजे ।
वेदमुनिदर्शनेन्दु (१६७४) प्रमितेऽब्दे 'मेड़ता' नगरे ॥१॥

१८ "तैः शिष्यादिहितार्थं ग्रन्थोऽयं प्रथितः प्रयत्नेन ।
नाम्ना विशेषसंग्रह इषुवसुशृङ्गार (१६८५) मितवर्षे ॥३॥

१९ "इति श्रीसमयसुन्दरकृत प्रश्नोत्तरसारसंग्रहसमाप्तः ।" प्रति, का० वि० भ० बड़ोदा । यह ग्रन्थ नामस्वरूप प्रश्नोत्तर रूप न होकर स्वयं संगृहीत शास्त्रालापकरूप है ।

२० "इमं गुर्वावली ग्रन्थं गणिः समयसुन्दरः ।
नभो-निधि-रसेन्द्वब्दे स्तम्भतीर्थपुरेऽकरोत् ।१।"

कथा साहित्यः— कालिकाचार्य कथा२१, कथा-कोष२२, महावीर २७ भव, द्रोपदी सहरण, देवदुष्यवस्त्रार्पण कथानक।

समह-साहित्य— गाथा सहस्त्री२३,

जैनागम एव प्रकरण साहित्य—कल्पसूत्र टीका२४, दशवैकालिक टीका२५, नवतत्त्व शब्दार्थवृत्ति२६, दण्डक वृत्ति२७, चत्वारि परमंगाणि व्याख्या२८, अल्पबहुत्वगर्भित स्तव स्वोपज्ञवृत्ति सह, चातुर्मा-

२१ "श्रीमद्विक्रम संवति, रस-र्तु-शृङ्गार संख्यके सहसि।
श्रीवीरमपुरनगरे, रावलनृपतेजसी राज्ये ॥१॥"

२२ "सं० १६६७ वर्षे श्रीमरोट्टे वा० समयसुन्दरेण"।

२३ "ऋतु-वसु-रस-शशि (१६६८) वर्षे, विनिर्मितो विजयतां चिर ग्रन्थः।
व्याख्यानपुस्तकेषु, व्याख्याने वाच्यमानोऽसौ ॥६॥"

२४ "लूणकर्णसरे ग्रामे प्रारब्धा कर्तुमादरात्।
वर्षमध्ये कृता पूर्णा, मया चैषा रिणीपुरे ॥१७॥ (१६८४-८५)"

२५ "सवत् १६६१ खम्भात"
"तच्छिष्य-समयसुन्दरगणिना चक्रे च स्तम्भतीर्थपुरे
दशवैकालिकटीका, शशिनिधिशृङ्गारमित वर्षे।"

२६ "संवत्वसुगजरसशशिमिते च दुर्भिक्ष-कार्तिके मासे।
अहमदाबादे नगरे पटेल हाजाभिध प्रोल्यां ॥१॥"

२७ "संवतिरसनिधिगुहमुखसोममिते नभसि कृष्णपक्षे च।
अमदाबादे हाजा पटेल पोलीस्थ शालायाम् ॥३॥"

२८ "नवीन शिष्यस्य पूर्वं अकृत व्याख्यानस्य हितकृते।
सवत १६८७ फा० शु० ८ दिने श्रीपत्तने ॥"

सिक व्याख्यान[२९], श्रावकाराधना[३०], यति आराधना[३१]।

स्तोत्र-साहित्यः— सप्तस्मरण वृत्ति[३२], भक्तामर सुबोधिनी वृत्ति[३३], कल्याण मन्दिर वृत्ति[३४], जयतिहुअण वृत्ति[३५], दुरियर स्तोत्र वृत्ति[३६], विमल स्तुति वृत्ति, ऋषिमण्डल स्तोत्र अवचूरि[३७]।

---

२६ "श्रीमद्विक्रमसंवति, बाणरसभ्रमरचरणशशिसङ्ख्ये।
श्रीअमरसरसि नगरे, चैत्रदशम्यां च शुक्लायाम्॥"

३० उच्चाभिधान नगरे ....
महिमासमुद्र-शिष्याग्रहेण मुनिषड्रसचन्द्रवर्षे।"

३१ "संवत् १६८५"

३२ "संवत् १६६५"
"सप्तस्मरणटीकेयं, निर्मिता न च शोधिता।
वृद्धावस्थावशाच्छोध्या, परं श्रीहर्षनन्दनैः।६।
लूणियाफसला-दत्त-वसत्यां वृत्तिरुत्तमा।
श्रीजालोरपुरे बाणनिधिशृङ्गारसंवति।७।"

३३ "पत्तने नगरे सप्तवसुशृङ्गारसंवति"

३४ "श्रीमद्विक्रमतः वरेषु नवषट्जैवातृके (१६६५)वत्सरे,
मासे फाल्गुनिके प्रपूर्णशशिनि प्रह्लादने सत्पुरे।"

३५ "अणहिलपत्तननगरे, सवति मुन्यऽष्टशृङ्गारे १६८६॥१॥
मुनि-सहजविमल पण्डित-मेघविजय-शिष्य पठनार्थम्॥२॥"

३६ "संवत् १६८४ लूणकरणसर"

३७ "इति श्रीसंग्रामपुरे सं० १६६२ वर्ष"

भाषा टीका:— षडावश्यक बालावबोध[३८]।
भाषा रास-साहित्य:— शांब प्रद्युम्न चौपाई[३६], दानादि चौढालिया[४०], चार प्रत्येक बुद्ध रास[४१], मृगावती रास[४२], सिंहलसुत प्रिय मेलकरास[४३], पुण्यसार-

---

३८ "श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे, पूर्वं सदा वासित-
श्चरवारश्चतुरा अमीकृत चतुर्मास्यां मया पाठिताम् ।२।
× × ×
कल्याणाभिधराउल क्षितिपतौ राज्यश्रियं शासति,
श्रीमद्विक्रमभूपतेरिंत्रवसुषट्ग्लौ संख्यके वत्सरे ।"

३६ "श्री संघ सुजगीस ए, द्दीयइ अ हरख अपार ।
थमण पास पसाउलइ, खम्भायत सुखकार ॥
सुखकार संवत् सोल एगुणसट्ठिविजय दशमी दिनइ ।
एक थीस ढाल रसाल ए ग्रन्थ रच्यउ सुन्दर शुभ मनइ ॥"

४० "सोले सै बासठ समै रे, सांगानेर मझार ।
पद्मप्रभू सुपासउलै रे, एह शुण्यो अधिकारो रे। धर्म हिये धरो"

४१ "सोलसइ पांसठि समइए, जेठ पूनिम दिन सार,
चउथउ खंड पूरउ थयउ ए, आगरा नयर मझार,
विमलनाथ सुपसाउलइ ए, सानिधि कुशल सूरिंद,
च्यारे खंड पूरा थया ए, पाम्यउ परमानन्द" ।

४२ ' सोलसइ अड़सठी वरषे, हुई चउपइ घणे हरषे वे,
मृगावती चरण कथा त्रिहुँ खण्डे, घणे आनन्द घमण्डे वे ।६१।
× × ×
सहर वड़ा मुलताण विशेषा, कान सुण्या अब देखा वे,
सुमतिनाथ श्री पासजिणंद मूलनायक सुखकन्दा वे ।६२।'

४३ "संवत् सोल चहुत्तरि, मेड़ता नगर मझारि,
प्रिय मेलक तीरथ चौपइ रे, कीधी दान अधिकार ।२४।
कचरौ श्रावक कौतकी रे, जेसलमेरि जाणो,
चतुरे जोड़ावी जिणि ए चोपइ रे, मूल आग्रह मूलताण ।२६।"

रास४४, नल दमयन्ती चौपाई४५, सीताराम चौपाई४६, वल्कलचीरी रास४७, शत्रुञ्जय रास४८, वस्तुपाल-तेजपाल रास४९, थावश्चा

---

४४ "संवत सोल विहुत्तरइ, भर भादव मास ।
ए अधिकार पूरउ कह्यो, समयसुन्दर सुख वास ॥"

४५ "तिलकाचारज-कही एहनी, टीका सात हजार ।
दसविकलिक मूल सूत्रनी, महाविदेह क्षेत्र मझार ॥
× × ×
संवत सोल त्रिहुत्तरे, मास वसंत आणंद ।
नगर मनोहर मेड़तो, जिहां वासुपूज्य जिणंद ॥
× × ×
उवझाय पभणइ समयसुन्दर, कीयो आग्रह नेतसी,
चउपइ नल दवदन्ती केरी, चतुर माणस चितवसी ।

४६ "त्रिणहजार नें सातसे माझने सह ग्रन्थनुं मानो रे,१६
× × ×
खरतर गच्छ मांहि दीपता श्री मेड़ता नगर मझारो रे.
२०" (सं० १६७७ आदि)

४७ "जेसलमेरइ जिन प्रासाद जिहाँ घणा रे,
सोम वसु सिणगार १६८१ वरस वखाणीये रे" ५

४८ "भणशाली थिरु अति भलोए, दयावंत दातार,
शत्रुञ्जय सङ्घ करावीयो ए, जेसलमेर मझार ।
'शत्रुञ्जय महात्म्य' ग्रन्थ थी ए, रास रच्यो सुखकार,
रास भण्यो शत्रुञ्जय तणो ए, नयर नागोर मझार." २२-२३

४९ "संवत सोले बयांसीया वरसे, रास कीधो तिमिरीपुर हरषे,
वस्तपाल तेजपाल नो रास, भणतां सुणतां परम उल्लास." ४०

चौपाई५०, स्थूलिभद्र रास५१, क्षुल्लक कुमार रास५२, चम्पक श्रेष्ठि चौपाई५३, गौतम पृच्छा चौपाई५४, व्यवहार शुद्धि धनदत्त चौपाई५५, साधु-वन्दना, पुञ्जा ऋषि रास५६, केशी प्रदेशी प्रबन्ध५७, द्रौपदी चौपाई५८।

---

५० "संवत सोल एकाणु वरसे, काती वदी तृज हरपे वे. १६
श्री खम्भायत खार वाडइ, चउमास रया सुविहाडइ वे. २०"

५१ "इन्दु रस संख्याई एह संवच्छरमान,
आदिनाथ श्री नेमिजिन तेतमउ वरस प्रधान।
ऋतु हेमंत थूलिभद्र दीक्षामास सुचंग,
पंचमी बुधवारइ रचीउ रास सुरङ्ग ॥६॥"

५२ "संवत् १६६४ जालोर"

५३ "संवत सोल पंचाणुयइ मइं, जालोर म रे जाड़ी रे।
चंपक सेठनि चउपइ अङ्गि, आलस नइ उ प छोडी रे, के-१५

५४ "पाल्हणपुर थी पांचे कोसे, उत्तरदिशि चान्द्रेठ गामो रे।
तिहाँ खरतर श्रावक वसइ, साह नींबउ जसवत नामो रे। पु० ५।
तेह नइ आग्रह तिहाँ रह्या, दिन पनरहसीम त्रिठाणु रे
तिहाँ कीधी ए चउपई, संवत सोल पंचाणु रे। पु० ६॥"

५५ "संवत सोल छनु समइ ए, आसू मास मझारि।
अमदावादइ ए कहइ ए, धनदत्त नउ अधिकार।"

५६ "संवत सोल अठाणुयइ, श्रावण पंचमी अजुवालइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाइ।३०।"

५७ "सं० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने कृतो लिखितश्च श्री अहमदावादनगरे श्रीहाजापटेलपोलमध्यवर्ती श्रीवृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक—श्रीजिनसागरसूरि—विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः, पं० हर्षकुशलगणिसहाय्यैः।"

चौबीसी-बीसी:— चौबीसी५६, ऐरवतक्षेत्रस्य चौबीसी६०, विहरमानवीसी६१।
छत्तीसी-साहित्य:— सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी, प्रस्ताव सवैया छत्तीसी६२, क्षमा छत्तीसी६३,

---

५८ "द्रुपदीनी ए चउपइ, मइ वृद्ध-वणइ पणि कीधी रे।
शिष्य तणइ आग्रह करी, मइ लाभ ऊपरि मति दीधी रे।२।
× × ×
अमदावाद नगर मांहे, संवत सतरसइ वरपे रे।
माह मास यइ चउपई, हुंसी माणस ने हरपे रे। द्रु०५।
वाचक हरपनन्दन वली, हरपकुशलइ सानिधि कीधइ रे।
लिखण सोभाग सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करि दीधी रे। द्रु:६।

५९ "वसु इन्द्री रे रस रजनीकर सवच्छरैं रे,
(१६५८) हरि अमदावाद मझार।
विजयादशमी दिनें रे गुण गाया रे,
तीर्थंकरना शुभ मनें रे॥ती० २।"

६० "संवत् सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया।
हाथी साह तणइ आग्रह कहइ,
समयसुन्दर उवझाय रे। ऐ० २।"

६१ "संवत सोलह सत्ताणु, माह वदि नवमी वखाणु।
अहमदावाद मझारि, श्रीखरतरगच्छ सार। वी० ५।"

६२ सवत सोलनेउया वरषें, श्री खंभाइत नयर मझारि;
कीया सघाया ख्याल विनोदइ, सुगुण मंडण श्रवणे सुखकारि।

६३ नगर मांहि नागोर नगीनउ, जिहां जिनवर प्रासादजी।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया,
धर्म तणइ परसाद जी। आ०। ३४।

चौपाई५०, स्थूलिभद्र रास५१, क्षुल्लक कुमार रास५२, चम्पक श्रेष्ठि चौपाई५३, गौतम पृच्छा चौपाई५४, व्यवहार शुद्धि धनदत्त चौपाई५५, साधु-वन्दना, पुञ्जा ऋषि रास५६, केशी प्रदेशी प्रबन्ध५७, द्रौपदी चौपाई५८।

---

५० "संवत सोल एकाणू वरसे, काती वदी त्रज हरपे वे. १६
श्री खम्भायत खार वाडइ, चउमास रया सुविहाइड वे. २०"

५१ "इन्दु रस संख्याइं एह संवच्छरमान,
आदिनाथ थी नेमिजिन तेतमउ वरस प्रधान।
ऋतु हेमंत थूलिभद्र दीक्षामास सुचंग,
पंचमी बुधवारइ रचीउ रास सुरङ्ग ॥६॥"

५२ "सवत् १६६४ जालौर"

५३ "संवत सोल पंचाणुयइ मई, जालोर म रे ऊड़ी रे।
चंपक सेठनि चउपइ अछि, आलस नइ र्च प छोड़ी रे, के-१५

५४ "पाल्हणपुर थी पांचे कोसे, उत्तरदिशि चान्द्रेठ गामो रे।
तिहाँ खरतर श्रावक बसइ, साह नींबउ जसवत नामो रे। पु० ५।
तेह नइ आग्रह तिहाँ रह्या, दिन पनरहसीम त्रिठाणु रे
तिहाँ कीधी ए चउपई, संवत सोल पंचाणु रे। पु० ६॥"

५५ "सवत सोल छनु समइ ए, आसू मास मझारि।
अमदावादइ ए कहइ ए, धनदत्त नउ अधिकार।"

५६ "संवत सोल अठाणुअइ, श्रावण: पंचमी अजुवालइ रे।
रास भण्यो रलियामणो श्री.समयसुन्दर गुण गाइ ।३०।"

५७ "सं० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने कृतो लिखितश्च श्री अहमदावादनगरे श्रीहाजापटेलपोलमध्यवर्ती श्रीबृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक—श्रीजिनसागरसूरि—विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः, पं० हर्षकुशलगणिसहाय्यैः।"

चौबीसी-बीसी:—	चौवीसी[५९], ऐरवतक्षेत्रस्थ चौवीसी[६०], विहरमानवीसी[६१]।
छत्तीसी-साहित्य:—	सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी, मस्ताव सवैया छत्तीसी[६२], क्षमा छत्तीसी[६३],

५८ "द्रुपदीनी ए चउपइ, मइ वृद्ध भणइ परिण कीधी रे।
शिष्य तणइ आग्रह करी, मइ लाभ ऊपरि मति दीधी रे।२।
× × ×
अमदावाद नगर मांहे, संवत सतरसइ वरषे रे।
माह मास थइ चउपई, हुंसी माणस ने हरषे रे। द्रू० ५।
वाचक हरषनन्दन वली, हरषकुशलइं सानिधि कीधइ रे।
लिखण सोभाग सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करि दीधी रे। द्रू० ६।

५९ "वसु इन्द्री रे रस रजनीकर सवच्छरें रे,
(१६५६) हारे अमदावाद मझार।
विजयादशमी दिनें रे गुण गाया रे,
तीर्थंकरना शुभ मनें रे। वी० २।"

६० "सवत् सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया।
हाथी साह तणइ आग्रह कहइ,
समयसुन्दर उवझाय रे। ऐ० २।"

६१ "संवत सोलह सत्ताणु, माह वदि नवमी वखाणु।
अहमदावाद मझारि, श्रीखरतरगच्छ सार। वी० ५।"

६२ सवत सोलनेवया वरषें, श्री खंभाइत नयर मझारि;
कीया सवाया ख्याल विनोदइ, सुख मंडण श्रवणे सुखकारि।

६३ नयर मांहि नागोर नगीनऊ, जिहां जिनवर प्रासादजी।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया,
धर्म तणइ परसाद जी। आ०। ३४।

	कर्मछत्तीसी[६४], पुण्य छत्तीसी[६५], सन्तोष छत्तीसी[६६], आलोयणा छत्तीसी[६७]।
फुटकर साहित्यः—	स्तोत्र, स्तव, स्वाध्याय, गीत, वेलि, भास आदि।

सैद्धान्तिक-ज्ञान

कवि के रचित विशेषशतक, विसंवादशतक और विशेष संग्रह आदि का आलोडन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने अनुपमेय आगमिक ज्ञान का निचोड़ इन ग्रन्थों में रखकर जो जैन-साहित्य की अनिर्वचनीय सेवा की है वह सचमुच में पीढ़ियों तक चिर-स्मरणीय रहेगी। क्योंकि, आगम-साहित्य में जो स्थल-स्थल पर पूर्वापरविरोधिनी और तर्क-विरोधी वक्तव्यों का उल्लेख है, जिससे आगम साहित्य; पर एक बहुत बड़ा धब्बा सा लगता है उन लगभग ३५० विरोधी वक्तव्यों का आगमिक-प्रमाणों द्वारा समाधान करते हुये जिस प्रकार सामञ्जस्य स्थापित किया है; वह हर एक के लिये साध्य नहीं। इस प्रकार का सामञ्जस्य बहुश्रुतज्ञ और प्रवर गीतार्थ ही कर सकता है। वही कार्य कवि ने करके अपनी 'महोपाध्याय'

---

६४ सकलचन्द सद्गुरु सुपसाये, सोलह सइ अड़सट्ठजी।
करम छत्तीसी ए मइ कीधी, माहतणी सुदी छट्ठजी। क० ।३५।

६५ संवत निधि दरसण रस ससिहर, सिधपुर नयर मझारजी।
शांतिनाथ सुप्रसादे कीधी, पुण्य छत्तीसी सारजी॥ पु० ॥३५॥

६६ संवत सोल चउरासी वरसइ, सर मांहे रह्या चउमास जी।
जस सोभाग थयउ जग मांहे, सहु दीधी साबासजी। सा० ।३६।

६७ संवत सोल अट्ठाणूए, अहमदपुर मांहि।
समयसुन्दर कहइ मइं करी, आलोयण उच्छाहि ॥पा०॥३६॥

और ज्ञान-वृद्ध-गीतार्थों की योग्यता समाज के सन्मुख रखकर आगम-साहित्य की प्रामाणिकता और विशदता की रक्षा की है।

कवि का आगमिक ज्ञान अगाध था; जिसकी विशदता का आस्वादन करने के लिये हमें उपर्युक्त ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिये। कवि के जैन-साहित्य-ज्ञान की परिधि का अनुमान करने के लिये गाथा सहस्री, विशेषशतक और समाचारी शतक में उद्धृत ग्रन्थों की अधोलिखित तालिका से उसकी विपुल ज्ञान राशि का और अद्भुत स्मरण शक्ति का 'स्केच' हमारे सामने आ जायगा।

आगम— आचारांग सूत्र निर्युक्ति-चूर्णि-टीका सह, सूत्रकृतांग निर्युक्ति-चूर्णि-टीका सह, अभयदेवीया टीका सह स्थानांग सूत्र. कलिकाल सर्वज्ञ के गुरु देवचन्द्रसूरि कृत स्थानांग टीका सह (देखिये, स० श० पृ० ४३], समवायांग टीका सह, भगवती सूत्र लघु एवं बृहट्टीका सह, ज्ञाताधर्मकथा-उपासकदशा-प्रश्नव्याकरण - विपाकसूत्र-औपपातिक सूत्र-राजप्रश्नीय-प्रज्ञापना-जीवाभिगम-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति टीका सह, सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति-टीका सह, चन्द्रप्रज्ञप्ति-निरयावलिका टीका सह, ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्ण टीका सह, गच्छाचार प्रकीर्ण, भक्त प्रकीर्ण, सस्तारक प्रकीर्ण, मरण समाधि प्रकीर्ण, तीर्थोद्गालिक प्रकीर्ण, तीर्थोद्धार प्रकीर्ण*, विवाह चूलिका।

बृहत्कल्पसूत्र भाष्य-टीका सह, व्यवहार सूत्र भाष्य टीका सह, निशीथ भाष्य चूर्णि सह, महा-

* देखिये, स० श० पृ० ५३.

निशीथ चूर्णि[1] सह, जीतकल्प, यतिजीतकल्पसूत्र बृहद्वृत्ति सह[2], विशेषकल्पचूर्णि[3], दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि-टीका सह,

ओघनिर्युक्ति भाष्य-टीका सह, वीरविकृता पिण्डनिर्युक्ति लघु टीका, अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि[4] टीका सह, नन्दीसूत्र टीका सह, प्रवचन सारोद्धार टीका सह, दसवैकालिक निर्युक्ति-टीका सह, उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णि, लघु वृत्ति, शान्त्याचार्य कृत बृहट्टीका, कमलसंयमोपाध्याय कृत सर्वार्थसिद्धि टीका सह,

कल्पसूत्र, जिनप्रभीय संदेहविषौषधि टीका, पृथ्वीचन्द्रसूरि कृत कल्पटिप्पनक, विनयचन्द्रसूरि कृत कल्पनिरुक्त, कुलमण्डनसूरि कृत कल्पसूत्र अवचूरि और टिप्पनक, हेमहंससूरि कृत कल्पान्तर्वाच्य,

आवश्यक सूत्र—चूर्णि, निर्युक्ति, भाष्य सह, देवर्धिगणि कृत आवश्यक चूर्णि[5], हारिभद्रीय बृहट्टीका, मलयगिरि कृता लघु टीका, तिलकाचार्य कृता लघु टीका, यशोदेवसूरि कृता पाक्षिक प्रतिक्रमण टीका,

षडावश्यक—नमि साधु और देवेन्द्रसूरि कृत टीका, तरुणप्रभसूरि-मुनिसुन्दरसूरि-उ० मेरुसुन्दर और हेमन्त गणि कृत बालावबोध, जयचन्द्रसूरि कृत

१. स० श० पृ० ४७ २. स० श० पृ० ३३
३. स० श० पृ० १२५ ४. स० श० पृ० ५७
५. स० श० पृ० ८

प्रतिक्रमण हेतु, श्राद्धविधि प्रकरण सभाष्य, हरिभद्रसूरि कृत श्रावक प्रज्ञप्ति टीका सह, विजयसिंहसूरि कृत श्रावक प्रतिक्रमण चूर्णि, महाकवि धनपाल कृत श्रावकविधि६ , जिनवल्लभसूरि कृत श्राद्धकुलक, जिनेश्वरसूरि कृत श्रावकधर्मप्रकरण, देवेन्द्रसूरिकृत श्राद्धदिनकृत्य टीका, रत्नशेखरसूरि कृत श्राद्धविधि कौमुदी, तपा कृत प्रतिक्रमण वृत्ती,

समाचारी— परमानन्द - अजितसूरि-इन्द्राचार्य-तिलकाचार्य-श्री चन्द्राचार्य कृत योगविधि, श्रीदेवाचार्य कृत यतिदिनचर्या टीकासह, जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि-जिनपतिसूरि - तिलकाचार्य - देवसुन्दरसूरि - सोमसुन्दरसूरि और बृहद्गच्छीय सामाचारी, जिनप्रभसूरि कृत विधिप्रपा ।

ऐतिहासिक—आमदेवसूरि और चन्द्रप्रभसूरि कृत प्रभावक चरित, कुमारपाल चरियं, मावड्डा कृत गुरुपर्वप्रभावक, छापरिया पूनमीया गच्छीय-साधु पूनमीया गच्छीय-तपागच्छीय-तपा लघुशाखीय पट्टावली, विजयचन्द्रसूरि कृत तपागच्छीय प्रबन्ध ।

प्रकरण— उपदेशमाला, उपदेश कर्णिका, उपदेशमाला विवरण, उपदेशचिन्तामणि, मलयगिरि कृत बृहत्क्षेत्रसमास और बृहत्संग्रहणी प्रकरण टीका, धनेश्वरसूरि कृत सूक्ष्मार्थविचारसार प्र० टीका; देवेन्द्रसूरि कृत षडशीति प्रकरण, कम्मपयडी, पञ्चवस्तुक टीका सह, यशोदेवसूरि कृत पञ्चाशक चूर्णि, पञ्चाशक टीका सह; पुष्पमाला टीका सह, सिद्धप्राभृत टीका, मुनिचन्द्रसूरि कृत धर्मबिन्दु प्र० टीका, उ० धर्मकीर्ति कृत

६. गा० पृ० ६

सङ्घाचार भाष्य, 'निच्छय' गाथा वृत्ति[१], रत्नसञ्चय[२], यशोदेवसूरि एवं देवगुप्तसूरि कृत नवपद प्रकरण वृत्ति, हरिभद्रसूरि कृत ज्ञानपञ्चक विवरण, पञ्चलिङ्गी प्रकरण टीका सह, निर्वाण कलिका, विचारसार, कुलमंडनसूरि कृत विचारामृतसंग्रह, उमास्वाति कृत पूजा प्रकरण, आचारवल्लभ और प्रतिष्ठा कल्प, पादलिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प, जिनप्रभसूरि कृत गृहपूजाविधि, जिनवल्लभसूरि कृत पौषधविधि प्रकरण, पिण्डविशुद्धि बृहट्टीका, जिनदत्तसूरि कृत उपदेश रसायन, चर्चरी, उत्सूत्रपदोद्घाटनकुलक, जिनपतिसूरि कृत प्रबोधोदय वादस्थल और सङ्घपट्टक टीका, देवेन्द्रसूरि कृत धर्मरत्न प्रकरण टीका, हेमचन्द्राचार्य कृत योगशास्त्र स्वोपज्ञ वृत्ति, योगशास्त्र अवचूरि और सोमसुन्दरसूरि कृत बालावबोध, नवतत्त्व बृहद्बालावबोध, उपदेश सत्तरी, चैत्यवन्दन भाष्य, प्रत्याख्यान भाष्य, प्रत्याख्यान भाष्य नागपुरीय तपागच्छका[३], अभयदेवसूरि कृत वन्दनक भाष्य, जीवानुशासन टीका, पीपलिया उदयरत्न कृत जीवानुशासन, चैत्यवन्दनकुलक टीका, आचारप्रदीप, उ० जिनपाल कृत संदेह दोलावली बृहद्वृत्ति (?), और द्वादशकुलक टीका, संबोधप्रकरण, कायस्थिति सूत्र, संघतिलकसूरि कृत सम्यक्त्व सप्तति वृत्ति, देवेन्द्रसूरि कृत प्रश्नोत्तर रत्नमाला टीका, मुनिचन्द्रसूरि कृत उपदेश (पद) वृत्ति, सोमधर्मकृत उपदेशसप्ततिका, मुनिसुन्दरसूरि कृत उपदेश तरङ्गिणी, उ० श्रीतिलक कृत गौतमपृच्छा प्र० टीका, वनस्पति सप्ततिका,

१ गा० पृ० ३४ । २ गा० पृ० ३५ । ३ स० श० पृ० १२७

दर्शन सप्ततिका, आराधना पताका, नमस्कार पञ्जिका, भावना कुलक, मानदेवसूरि कृत कुलक[1], उ० मेरुसुन्दर कृत प्रश्नोत्तर ग्रन्थ, हीरप्रश्न।

स्तोत्र— जिनवल्लभसूरि कृत नन्दीश्वर स्तोत्र टीका सह, हेमचन्द्रसूरि कृत महादेवस्तोत्र और वीतराग स्तोत्र प्रभाचन्द्रसूरि कृत टीका सह, जिनप्रभसूरि कृत सिद्धान्त स्तव, देवेन्द्रसूरि कृत समवसरण स्तोत्र, ऋषिमण्डल स्तव, देवेन्द्रस्तव।

चरित्र— संघदासगणि कृत वसुदेवहिण्डी, पउम् चरिय, जिनेश्वरसूरि कृत कथाकोष प्रकरण, देवभद्राचार्य कृत पार्श्वनाथ चरित और महावीर चरित, वर्धमानसूरि कृत कथाकोषर और आदिनाथ चरित, हेमचन्द्राचार्य कृत, आदिनाथ-नेमिनाथ-महावीर चरित, शान्तिनाथ चरित, चित्रावलीय देवेन्द्रसूरि कृत सुदर्शन कथा, देवधर प्रबन्ध[2] जयतिलकसूरि कृत सुलसा चरित महाकाव्य, पद्मप्रभसूरि कृत मुनिसुव्रत चरित, अभयदेवसूरि कृत जयन्तविजय काव्य, भावदेवसूरि एवं धर्मप्रभसूरि कृत कालिकाचार्य कथा, पूर्णभद्रगणि कृत कृतपुण्यक चरित, सिंहासन द्वात्रिंशिका।

लेख— आबू वस्तुपाल मंदिर-देवकुलिका प्रशस्ति[4], ऊनानगर प्रतिमालेख[5], बीजापुर शिलालेख[6]।

इन उल्लेखनीय ग्रन्थों में छोटे-मोटे प्रचलित प्रकरणों आदि का समावेश नहीं किया गया है। साथ ही इस सूची में आगम की देवचन्द्रसूरि कृत स्थानांग टीका, तीर्थोद्धार प्रकीर्ण, महानिशीथ

१ स० श० पृ० ६७, ७१। २ स० श० पृ० ४। ३ स० श० पृ० ७। ४-५-६ स० श० पृ० २४।

चूर्णि, यतिजीत कल्पसूत्र बृहद्वृत्ति, विशेष कल्पचूर्णि, देवर्धिकृत आवश्यक चूर्णि, श्राद्धविधि प्रकरण भाष्य, आमदेवसूरि कृत प्रभावक चरित, विजयचन्द्रसूरि कृत तपागच्छ प्रबन्ध, भावडहा गुरुपर्वक्रम, छापरीया पूनमीया-साधुपूनमीया गच्छ की पट्टावलियें, देवसुन्दरसूरि कृत समाचारी, बृहद्गच्छी समाचारी, उमास्वाति कृत आचारवल्लभ और प्रतिष्ठा-कल्प, पादलिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प, नागपुरीय तपागच्छ का प्रत्याख्यान भाष्य, पीपलिया उदयरत्न कृत जीवानुशासन, मानदेवसूरि कृत कुलक, वर्धमानसूरि कृत कथाकोष, देवधर प्रबन्ध आदि ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। अतः मनीषियों का कर्त्तव्य है कि इन अप्राप्त ग्रन्थों का अनुसंधान करें।

वैधानिकता

जिस चैत्यवास का खण्डन कर आचार्य जिनेश्वर ने सुविहित-विधिपक्ष-खरतर गच्छ का निर्माण किया था और जिसकी नींव दृढ़ करने के लिये आचार्य जिनवल्लभ, आचार्य जिनदत्त, आचार्य मणिधारी जिनचन्द्र[१] और आचार्य जिनपति ने वैधानिक ग्रन्थ निर्माण किये थे। आचार्य जिनप्रभ ने विधि प्रपा और रुद्रपल्लीय आचार्य वर्धमान ने आचार दिनकर रचकर जिसके अनुष्ठानों की वैधानिकता स्थापित की थी। वही गच्छ ४-५ शताब्दियों पश्चात् पुनः शैथिल्य के पन्जे में फँस चुका था—जिसका उद्धार युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने किया था, किन्तु जिसकी वैधानिक शास्त्रीय परम्परा पुनः स्थापित न कर पाये थे और इधर अन्य गच्छीयों ने (जिसमें विशेषकर तपागच्छ वालों ने) इस गच्छ की मान्य परम्पराओं पर कुठाराघात करना प्रारम्भ किया था। उसकी रक्षा के लिये तथा मर्यादा अक्षुण्ण और प्रतिष्ठित रखने के लिये

१ पद-व्यवस्था कुलक।

कवि ने अभूतपूर्व साहस कर इस गच्छ की रक्षा की थी। उसी का फल था समाचारी शतक का निर्माण।

समाचारी शतक में 'महावीर के षट् कल्याणक थे, अभयदेवसूरि खरतरगच्छ के थे, पर्व दिवस में ही पौषध करना चाहिये, सामायिक मे पहले 'करेमिभंते' के पश्चात् इर्यापथिकी आलोचना करनी चाहिये, 'आयरिय उवज्झाय' श्रावकों को ही पढ़ना चाहिये, साध्वी को व्याख्यान देने का अधिकार है, देवपूजा शास्त्रीय है, तरुण स्त्रियों के लिये मूलनायक का स्नात्र-विलेपन निषिद्ध है, प्रासुक जल ग्रहण करना चाहिये, ५० वें दिन संवत्सरी पर्व मानना चाहिये, तिथियों की क्षय-वृद्धि में लौकिक पञ्चांगों को मान्यता देनी चाहिये, पौषध में भोजन नहीं करना चाहिये और साधु को पानी ग्रहण करने के लिये मिट्टी का घड़ा रखना चाहिये' आदि चार्चिक प्रश्नों का समाधान करते हुये शिष्टता के साथ शास्त्रीय-प्रमाणों को सन्मुख रखकर गच्छ की परम्परा को वैधानिक स्वरूप प्रदान किया है तथा अनुष्ठानीय कर्मकाण्ड-उपधान, दीक्षा-शान्ति-स्नात्र, प्रतिक्रमण, लुञ्चन, देवपूजन आदि का विधान निर्मित कर कवि ने स्थायित्व प्रदान किया है।

इस भगीरथ प्रयत्न में कहीं भी कवि ने अन्य विद्वानों की तरह कि 'मेरा सत्य है, तेरी मान्यता झूठी और अशास्त्रीय है' आदि अशिष्ट वाक्यों का प्रयोग कर, अन्य गच्छीयों का खण्डन कर; स्व मत के मण्डन का कहीं भी प्रयत्न नहीं किया है। किन्तु सैद्धान्तिक परम्परा को सन्मुख रखकर सभी जगह यह दिखाया है कि यह शास्त्रसिद्ध और सत्य है। इस प्रकार कवि को इस व्यावहारिक जीवन और प्ररूपक जीवन में देखते हैं तो वह विधानकार के रूप में दिखता हुआ 'वैधानिक' अनुष्ठानों का मूर्तिमान स्वरूप ही दिखाई पड़ता है।

व्याकरण

यह सत्य है कि कवि ने अपनी कृतियों में अन्य विद्वानों की तरह पाण्डित्यपन दिखाने के लिये स्थल-स्थल पर, शब्द-शब्द पर व्याकरण का उपयोग नहीं किया है। किन्तु यह नहीं कि कवि का व्याकरण ज्ञान शून्य हो! कवि की समग्र देववाणीमय रचनाओं को देख जाइये; कहीं भी व्याकरण ज्ञान की क्षति प्राप्त नहीं होगी। कवि को 'सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन, पाणिनीय व्याकरण, कलापव्याकरण, सारस्वत व्याकरण और विष्णुवार्तिक* आदि व्याकरण ग्रन्थों का भी विशद ज्ञान था। कवि की प्रकृति को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि उनका विचार था कि ऐसी वाणी का प्रयोग किया जाय जो सर्वग्राह्य हो सके और संस्कृत भाषा का सामान्य छात्र भी उसको समझ सके। यदि स्थल-स्थल पर व्याकरण का उपयोग किया गया तो वह कृति केवल विद्वद्भोग्या ही बनकर रह जायगी। यदि उस विद्वद्भोग्या कृति का सामान्य विद्यार्थी अध्ययन करेगा तो व्याकरण के दल-दल में फँसकर, सम्भव है देवगिरा के अध्ययन से पराङ्मुख हो जाय। अतः जहां विशेष मार्मिक-स्थल या अनेकार्थी या असिद्धाभास से स्थल हों, वहीं व्याकरण से सिद्ध करने की चेष्टा की जाय। इसी भावना को रखते हुये, व्याकरण के दल-दल में न फँसकर, कृति को निर्दोष रखते हुये जिस सरलता को अपनाया है; वह व्याकरण के सामान्य-अभ्यासी के अधिकार के बाहर की बात है। इस प्रकार का प्रयत्न पूर्ण वैयाकरणी ही कर सकता है और वह प्रतिभा इस कवि में विद्यमान है।

---

* अने० पृ० ५६

अनेकार्थ और कोष

कहा जाता है कि एक समय सम्राट अकबर की विद्वत्सभा में किसी दार्शनिक विद्वान ने जैनों के आगम सम्बन्ध की 'एगस्स सुत्तस्स अनंतो अत्थो' 'एक सूत्र के अनन्त अर्थ होते हैं' पर व्यंग कसा ¶। उससे तिलमिलाकर, कवि ने अपने शासन की सुरक्षा और प्रभावना, सर्वज्ञ के सर्वज्ञता और आगम साहित्य की अक्षुण्णता रखने के लिये सम्राट से कुछ समय प्राप्त किया। इसी समय में कवि ने "रा जा नो द द ते सौ ख्यम्" इन आठ अक्षरों पर ८ आठ † लाख अर्थों की रचना की। इस ग्रन्थ का नाम कवि ने 'अर्थरत्नावली' रखा और सं० १६४६ श्रावण शुक्ला १३ की सांय को जिस समय अकबर ने काश्मीर विजय ‡ के लिये श्रीराज श्रीरामदासजी की वाटिका में प्रथम-प्रयाण किया था, वहीं समस्त

¶ उ० रूपचन्द्र (रत्नविजय) लिखित एक पत्रानुसार।

† मूलतः अर्थ १० लाख किये थे किन्तु पुनरुक्ति आदि का परिमार्जन कर ८ लाख ही अर्थ सुरक्षित माने गये हैं।

‡ "संवति १६४६ प्रमिते श्रावण सुदि १३ दिनसन्ध्यायां 'कश्मीर' देशविजयमुद्दिश्य श्रीराज-श्रीरामदासवाटिकायां कृत प्रथमप्रयाणेन श्रीअकब्बरपातिसाहिना जलालुदीनेन अभिजातसाहिजात-श्रीसलेमसुरत्राणसामन्तमण्डलिकराजराजितराजसभायां अनेकविधवैयाकरणतार्किकविद्वत्तमभटसमक्ष अस्मद्गुरुवरान् युगप्रधानखरतरभट्टारकश्रीजिनचंद्रसूरीश्वरान् आचार्यश्रीजिनसिंहसूरिप्रमुखकृतमुख्यमुख्यशिष्यव्रातसपरिकरान् असमानसन्मानबहुमानदानपूर्वं समाहूय अयमष्टलक्षार्थी ग्रन्थो मत्पार्श्वाद् वाचयाञ्चक्रेऽवक्रेण चेतसा। ततस्तदर्थश्रवणसमुत्पन्नप्रभूतनूतनप्रमोदातिरेकेण सञ्जातचित्तचमत्कारेण बहुप्रकारेण श्रीसाहिना

राजाओं, सामन्तों और विद्वानों की परिषद् में कवि ने अपना यह नूतन ग्रन्थ सुनाकर सबके सन्मुख यह सिद्ध कर दिखाया कि मेरे जैसा एक अदना व्यक्ति भी एक अक्षर का एक लाख अर्थ कर सकता है तो सर्वज्ञ की वाणी के अनन्ते अर्थ कैसे न होंगे? यह ग्रन्थ सुनकर सब चमत्कृत हुये और विद्वानों के सन्मुख ही सम्राट ने इस ग्रन्थ को प्रामाणिक ठहराया।

वस्तुतः कवि की यह कृति जैन-साहित्य ही क्या, अपितु समग्र भारतीय वाङ्मय में ही अद्वितीय है। क्योंकि, वैसे अनेकार्थी कृतियें अनेकों¶ प्राप्त हैं किन्तु एक अक्षर के हजार अर्थ के ऊपर किसीने भी अर्थ कर रचना की हो, साहित्य-संसार को ज्ञात नहीं। अतः इस अनेकार्थी रचना पर ही कवि का नाम साहित्य जगत में सर्वदा के लिये अमर रहेगा।

इस कृति को देखने से ऐसा मालूम होता है कि कवि का व्याकरण, अनेकार्थी कोष, एकाक्षरी कोष और कोषों पर एकाधिपत्य था और एकाक्षरी तथा अनेकार्थी कोषों को तो कवि मानो घोट-घोट कर पी गया हो। अन्यथा इस रचना को कदापि सफलता के साथ पूर्ण नहीं कर पाता। कवि इस कृति में निम्न कोषों का उल्लेख करता है:—

> अभिधान चिन्तामणि नाममाला कोष, धनञ्जय नाममाला, हेमचन्द्राचार्य कृत अनेकार्थ संग्रह, तिलकानेकार्थ, अमर एकाक्षरी नाममाला, विश्वशम्भु एकाक्षरी नाममाला, सुधाकलश

बहुप्रशंसापूर्वं 'पठतां पाठ्यतां सर्वत्र विस्तार्यतां सिद्धरस्तु।' इत्युक्त्वा च स्वहस्तेन गृहीत्वा एतत् पुस्तकं मम हस्ते दत्वा प्रमाणीकृतोऽयं ग्रन्थः। [अने० पृ० ६५]

¶ हीरालाल र० कापड़िया लिखित 'अनेकार्थरत्नमंजुषा-प्रस्तावना'

एकाक्षरी नाममाला, वररुचि एकाक्षरी निघंटु नाममाला*, जयसुन्दरसूरि कृत एकाक्षरी नाममाला† (?)

और इस प्रकार की अनेकार्थी तो नहीं किंतु द्वयर्थी कृतियें स्तोत्र और गीत रूप में कवि की और भी प्राप्त हैं; जो 'साहित्य-सर्जन' अध्याय में अनेकार्थी-साहित्य की तालिका में उल्लिखित हैं।

छन्द

कवि प्रणीत 'भावशतक' और 'विविधछन्द जातिमय वीतरागस्तव' को देखने से स्पष्ट है कि कवि का 'छन्द' साहित्य पर भी पूर्ण अधिकार था। अन्यथा स्तोत्रों में छन्दनाम सह द्वयर्थी रचना करना सामान्य ही नहीं, अपितु अत्यन्त दुष्कर कार्य है। कवि ने जिन जिन छन्दों का प्रयोग किया है उनमें से कतिपय तो साहित्य में अप्रयुक्त ही हैं, हैं तो भी क्वचित् ही। कवि प्रयुक्त छन्द निम्न हैं:—

आर्या, गीतिका, पथ्यावक्त्रा, वैतालीय, पुष्पिताग्रा, अनुष्टुप्, उपजाति, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा, सोमराजी, मधुमती, हंसमाला, चूडामणि, विद्युन्माला, भद्रिका, चम्पकमाला, मत्ताक्रीडा, दोधक, तोटक, मणिनिकर, मृदङ्गक, रथोद्धता, अश्विनी, शालिनी, स्रग्विणी, द्रुतविलम्बित, प्रमाणिका, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

अलङ्कारः—रस

कवि की खण्डकाव्य अथवा महाकाव्य के रूप में रचनायें प्राप्त नहीं हैं, हैं तो भी केवल पादपूर्ति रूप 'जिनसिंहसूरि पद

* अने० पृ० ५४।

महोत्सव काव्य' और ऋषभ भक्तामर काव्य। इस काव्य में कवि ने शब्दालङ्कारों के साथ अर्थालङ्कारों में उपमा, रूपक, प्रतीप, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, स्वभावोक्ति, विभावना, निदर्शन, दृष्टान्त, सदेह और सङ्कर तथा संसृष्टि अलङ्कारों का सन्निवेश रस-परिपाक की दृष्टि से बहुत ही सुन्दर किया है।

स्तोत्र साहित्य में श्लेष और यमकालङ्कारों की प्रधानता कवि की शब्दालङ्कार प्रियता को प्रकट करती है।*

आनन्दवर्धनाचार्य ने 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' कहकर ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार की है। आचार्य मम्मट ने अपने काव्य-प्रकाश नामक लक्षणग्रन्थ में इसी ध्वनि को आश्रित करके वाच्यातिशायी व्यङ्ग के पूर्णकाव्य को उत्तम काव्य स्वीकार किया है। उसी उत्तम काव्य के कतिपय भेदों पर कवि ने 'भावशतक'† में विशदता से विचार किया है और इसके द्वारा ही रस-परिपुष्टि सिद्ध करता हुआ उत्तम काव्य की महत्ता पर विशद प्रकाश डाला है।

चित्रकाव्य

साहित्यशास्त्र की दृष्टि से चित्रकाव्य अधम काव्य माना गया है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि चित्रकाव्य की रचना में छन्द-शास्त्र, व्याकरण, निर्वचन तथा कोष आदि पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है। कवि ने भी अपने कतिपय स्तोत्रों में ऐसे ही पाण्डित्य का परिचय दिया है। इन चित्रकाव्यमय स्तोत्रों को भावाभिव्यक्ति या रसनिष्पत्ति की दृष्टि से चाहे उत्कृष्ट काव्य न मानें, किन्तु विचार वैदग्ध्य और रचना-कौशल की दृष्टि से इन स्तोत्रों को उत्कृष्ट काव्य मानना ही होगा। कवि प्रणीत चित्रकाव्यमय स्तोत्र निम्न हैं:—

* कु० पृ० १८७, १८८, १६२। † भावशतक पद्य २।

१. पार्श्वनाथ शृङ्खलामय लघुस्तव ¶, २. जिनचन्द्रसूरि कपाट-लोह शृङ्खलाष्टक‡, ३. पार्श्वनाथ हारबन्धचलच्छृङ्खलागर्भित स्तोत्र†, ४. पार्श्वनाथशृङ्गाटकबन्धस्तव* ।

कवि का रचना-चातुर्य देखिये:—

"निखिल-निर्वृत-निश्वन-नर्दितं, नतजनं सम-नर्म्मद-दम्भमम्।
दमपदं विमदं घन-नव्यमं, नभवनं ह्रससं शिवसंभवम् ।२।
सतत-सज्जन-नंदित-नव्यमं, नयधनं वरलब्धिधरं समम् ।
रदन-नक्रमन-श्वलन-प्रियं, नलिन-नव्यय-नष्टवनं कलम् ।३।"

[पार्श्वनाथ-शृङ्गाटक-बन्धस्तव]

"श्रीजिनचन्द्रसूरीणां, जयकुञ्जरशृङ्खला ।
शृङ्खला-धर्मशालायां, चतुरे किमसौ स्थिता ।१।
शृङ्खला-धर्मशालायां, वासितां पापनाशिनाम् ।
शिवसद्मसमारोहे, किमु सोपानसन्तति ।२।"

[जिनचन्द्रसूरि-कपाटलोहशृङ्खलाष्टक]

कवि के उत्तम चित्रकाव्य के द्वारा पाठकों का रसास्वादन और मनोरंजन करने के लिये हारबन्ध स्तोत्र का उदाहरण पर्याप्त है ।×

पादपूर्ति और काव्य

कवि कृत ग्रन्थों में उद्धृत काव्यग्रन्थों की तालिका देखते हुये यह तो निश्चित है कि कवि साहित्य-शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे ।

¶ कु० पृ० १८६। ‡ कु० पृ० ३४६। † कु० पृ० १६४। * कु० पृ० १६३

× देखिये, सामने पृष्ठ पर ।

पञ्चमहाकाव्य, खण्डप्रशस्ति, चम्पू, मेघदूत, महाभारत आदि ग्रन्थों के अध्येता और अध्यापक भी थे। निष्णात होने के कारण ही ऐसे पादपूर्तिरूप और स्तोत्रात्मक स्वतन्त्र काव्यों की वे रचना कर सके। इनके काव्यों में शब्दमाधुर्य, लालित्य और ओज के साथ अलङ्कारों का पुट आदि सब ही गुण प्राप्त हैं। इनके काव्य रसाभिव्यक्ति के साथ ही अन्तस्तलस्पर्शी भी हैं। इनकी आश्चर्यकारी रचनाकौशल को देखिये:—

"भक्त्या जे···हं जरागणमदानन्दादयध्वंसकं,
लक्ष्मीदीप्रतनुं दयागुणभुवं तातां सतां देव रम्।
क्ष्म्यास्फीतरुचिं नरा नमत भो! जीवामतीति क्षिपं,
त्यागश्रेष्ठयशोरसं कृतनतिं नेमिं मुदा त्रायक ।६।"

देखिये, कवि इसी पद्य के अक्षरों को ग्रहण कर अनुष्टुब् का नया श्लोक निर्माण करता है:—

"भजेऽहं जगदानन्दं, सकलप्रसुतावरम् ॥
कृत राजीमतीत्यागं, श्रेयः सन्ततिदायकम् ।६।"
[नेमिनाथस्तव० कु० पृ० ६१६]

अनेकविध श्लेष और भङ्गश्लेष तथा यमकमय काव्य होते हुये भी इनकी स्वाभाविक सरलता और माधुर्य देखिये:—

"केवलागममाश्रित्य, युष्मदुव्याकरणे स्थिताः।
सिद्धिं प्रकृतयः प्रापुः, पार्श्व! चित्रमिदं महत् ।४।"
[चिन्ता० पार्श्व० स्तोत्र श्लेष, कु० पृ० १८८]

"जय प्रभो! कैतवचक्रहारी, यस्य स्मृतेस्त्वं तव चक्रहारी।
मायामहीदारहलोभवामं, स्वर्गाधिपामार हलो भवाम ।४।
× × ×

त्वां नुवे यस्य तं शंकरे गे मते, देवपादाम्बुजेशं करे मे मते।
मन्मन(?)चञ्चरीकोऽसंतापते, नाभिभूपाङ्गभूः को-पसंताप ते।१३।"

[श्लेषमय आदिनाथस्तोत्र कु० पृ० ६१४]

"ततान धर्म्मं जगनाह तार, मदीदह दुःखततो-हतार।
अचीकरच्छर्म सतां जनानां, जहार दीप्तारशितांजनानाम्।३।
वेगादूव्यनीपी दरिकाममादं, थियापि नो यो भविकाममादम्।
नुत प्रभुं ते च नता रराज, शिवे यशः कैरवताररराज।४।"

[यमकमद्ध पार्श्वस्तोत्र, कु० पृ० १८७]

"अमर-सत्कल-सत्कलसत्कलं, सुपदयाऽमलया मलयामलम्।
प्रबलसादर-सादरसादरं, शमदमाकर-माकर-माकरम्।२।"

[यमकमद्ध पार्श्वस्तोत्र कु० पृ० १६२]

एक ही स्वरसंयुक्त पद्य का रसास्वादन करियेः—

"पदकजनत सदमरशरण, वरकमलवदनवरकरचरण!।
शमदमधर नरदरहरण! जय जलज-धरपमरकरकरण!।११"।

× × ×

प्राच्य कवि के रचित काव्य के एक चरण को ग्रहण कर तीन नये चरणों का निर्माण-पादपूर्ति कहलाता है। यह कार्य अति-दुष्कर है। क्योंकि इसमें कवि को प्राच्य कवि के भाव, भाषा, शब्दयोजना को अक्षुण्ण रखते हुये, अपने भाव और विचारों का सन्निवेश करना होता है। यह कार्य प्रतिभा, पटुता और शब्द-योजना सम्पन्न कवि ही कर सकता है। इसीलिये कहा जाता है कि 'नवीन काव्य का निर्माण करना, पादपूर्ति साहित्य की अपेक्षा अत्यन्त सरल है।'

कवि की लेखिनी इस साहित्य पर भी स्वाभाविक गति से अविराम चलती हुई दिखाई पड़ती है। कवि प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं :—

१. जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य,
२. ऋषभ भक्तामर,

इसमें प्रथम काव्य महाकवि कालिदास कृत रघुवश महाकाव्य के तीसरे सर्ग के चतुर्थ चरण की पादपूर्ति रूप में है। इस काव्य में कवि अपने गणनायक, काकागुरु महिमराज के आचार्य पदोत्सव का वर्णन करता है। यह पद सम्राट अकबर के आग्रह पर यु० जिनचन्द्रसूरि ने दिया था—और इसका महामहोत्सव महामन्त्री स्वनामधन्य श्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने किया था। इस प्रसङ्ग का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता के साथ, कालिदास की पंक्ति के सौन्दर्य को अक्षुण्ण रखते हुए किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये:-

"यदूर्ध्वरेखाभिधमंह्रिपङ्कजे, भवान्ततः पूज्यपदं प्रलब्धवान्।
प्रभो! महामात्यवितीर्णकोटिशः-सुदक्षिणाऽदो हृद!
लक्षणां दधौ।१।

अकब्बरोक्त्या सचिवेशसद्गुरुं, गणाधिपं कुर्विति मानसिंहकम्।
गुरोर्यकः सूरिपदं यतिव्रतिप्रियाऽऽप्रपेदे प्रकृतिप्रियं वद।२।

× × ×

श्लेष का चमत्कार देखिये,

"अरे! महाम्लेच्छनृपाः पलाशिनः,
पशुव्रजां मां हत चेद्द्वितीयिणः।

त्वमाच्छमैवं निशि तान्, भृशं गुरो !
नवावतारं कमला-दिवोत्परम् ।३८।"

दूसरी कृति, आचार्य मानतुङ्गसूरि प्रणीत भक्तामर स्तोत्र के चतुर्थ चरण पादपूर्ति रूप है। इसमें कवि ने आचार्य मानतुङ्ग के समान ही भगवान आदिनाथ को नायक मानकर स्तवना की है। यह कृति भी अत्यन्त ही प्रोज्ज्वल और सरस-माधुर्य संयुक्त है।

कवि का स्तव के समय भावुक स्वरूप देखिये और साथ ही देखिये शब्द योजना:—

"नमेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्रचन्द्र !
ज्ञानात्मदर्श-परिहृष्ट-विशिष्ट ! विश्व ! ।
त्वन्मूर्तिरर्त्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।१।"

कवि की उपमा सह उत्प्रेक्षा देखियेः—
"केशच्छटां स्फुटतरां दधदङ्गदेशे,
श्रीतीर्थराजविबुधावलिसंश्रितस्त्वम् ।
मूर्धस्थकृष्णलतिका-सहितं च शृङ्ग—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।३०।"

न्याय

कवि ने अपने प्रमुख शिष्य वादी हर्षनन्दन को नव्यन्याय का मौलिक एवं प्रमुख ग्रन्थ 'तत्त्वचिन्तामणि' का अध्ययन करवा

कर हर्षनन्दन को 'चिन्तामणिविशारदैः' बनाया था। इससे स्पष्ट है कि कवि का 'न्यायशास्त्र' के प्रति उत्कट प्रेम था। इतना ही नहीं, कवि ने हर्षनन्दन के प्रारम्भिक अध्ययन के लिये स० १६५२ आषाढ शुक्ला १० को इलादुर्ग (ईडर) में 'मङ्गलवाद' की रचना भी की थी।

'मङ्गलवाद' का विषय है—केशव मिश्र ने 'तर्कभाषा' में शास्त्रीय परम्परा के अनुसार मङ्गलाचरण क्यों नहीं किया? इसी प्रश्न को चर्चात्मक, अनुमान, फल-प्रभाव, कार्य-कारण, विघ्न-समाप्ति, शिष्टाचार-पद्धति से बढ़ाकर नैयायिक ढङ्ग से ही उत्तर दिया है और सिद्ध कर दिखाया है कि मिश्र ने हार्दिक मङ्गल किया है।

'मङ्गलवाद' न्याय का विषय और उत्तर देने की नैयायिकों की प्रणाली होने पर भी कवि ने इसको अत्यन्त ही सरल बनाया है। इससे यह सिद्ध है कि कवि न्यायशास्त्र के भी प्रकाण्ड पण्डित थे।

ज्योतिष

जैन साधुओं के जीवन में दीक्षा और प्रतिष्ठा ऐसे संबंधित विषय हैं जिनका की अध्ययन अत्यावश्यक है। क्योंकि व्यावहारिक ज्योतिष से जैन-ज्योतिष में तनिक अन्तर सा है। अतः इनका ज्ञान होने पर ही इस सम्बन्ध के मुहूर्त आदि निकाले जा सकते हैं। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर कवि ने अपने पौत्र-शिष्य जयकीर्ति को इस ज्योतिष शास्त्र का अच्छा विद्वान बनाया था। कवि स्वयं कहता है कि 'ज्योतिःशास्त्र-विचक्षण-वाचकजयकीर्तिः' और भविष्य में परम्परा के श्रमण भी ज्ञान-पूर्वक इस कार्य को सफलता से कर सकें, इसलिये 'नारचन्द्र, रत्नकोष, रत्नमाला, विवाह

पटल, शीघ्रबोध और सारंगधर आदि ग्रन्थों के आधार पर कवि ने 'दीक्षा-प्रतिष्ठा शुद्धि' नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना अत्यन्त ही सरल भाषा में की है। साथ ही कल्पसूत्र टीका, गाथा सहस्री आदि ग्रन्थों मे कई वर्ण्य-स्थलों पर इस सम्बन्ध का अच्छा विशद-विवेचन किया है और वह भी पृथक्-पृथक् भेदों के साथ। अतः यह स्पष्ट सत्य है कि कवि ज्योतिष्-शास्त्र के भी विशारद और निष्णात थे।

टीकाकार के रूप में—

काव्य, अलङ्कार, छन्द, आगम, स्तोत्र आदि प्रत्येक साहित्य पर कवि ने टीकाओं की रचना की है। जिसकी सूची हम 'साहित्य-सर्जन' में दे आये हैं; अतः यहां पुनरुक्ति नहीं करेंगे। इन टीका ग्रन्थों को देखने से यह तो निर्विवाद है कि टीकाकार का जिस प्रकार पाण्डित्य, बहुश्रुतज्ञता और योग्यता होनी चाहिये, वह सब कवि में मौजूद है। कवि का ज्ञान-विशद और भाषा प्राञ्जल होते हुये भी आश्चर्य यह है कि कहीं भी 'मूले इन्द्र विडौजा टीका' उक्ति के अनुसार अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करता या बघारता हुआ नहीं चलता है। अपितु शिष्यों के हितार्थ अतिसरल होते हुये भी वैदग्ध्यपूर्ण प्राञ्जल भाषा में लिखता हुआ नजर आता है। कवि, प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ की अपेक्षा भी मूल काव्यकार के भावों को, अर्थगांभीर्य को सरस-रसप्रवाह युक्त प्रकट करने में अधिक सफल हुआ है। कवि की शैली खण्डान्वय है। खण्डान्वय होते हुये भी, अविप्रचलित प्रत्येक वाक्यों की व्याख्या नहीं करता है। जहां मूल अति सरल होता है वहां कवि सारांश (भावार्थ) कह देता है और अन्य वाक्यों की व्याख्या। अप्रचलित विषयों पर विशदता से भी लिखता है जिससे विषय का प्रतिपादन कहीं

अस्पष्ट न रह जाय। सामान्यतः इस सम्बन्ध के एक दो उद्धरण ही देकर हम सन्तोष करेंगे। देखिये:—

'अथ' अधुना 'प्रजानामधिप' दिलीपो राजा 'ऋषेः' वशिष्ठस्य 'धेनु' गां प्रभाते वनाय मुमोच। किंविशिष्टां धेनु ? 'जायाप्रतिमाहितगन्धमाल्याम्' गन्धश्च माल्यं च गन्धमाल्ये यस्याः सा, कोऽर्थः ? राजा स्वयं गन्धमाल्ये गृह्णाति राज्ञी च आहति। पुनः किंविशिष्टां धेनुम् ? 'पीतप्रतिबद्धवत्सा' पूर्वं पीतः पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा पीत इति, कोऽर्थः ? पायितः पूर्वं, पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा तां पी०। अथवा अयमपि अर्थः पीतः-शंकुरदाहृत इत्युक्तत्वात् पीति शंको प्रतिबद्धो वत्सो यस्याः सा पी० ताम्। किंविशिष्ट प्रजानामधिपः ? 'यशोधनः' यशः एव धन यस्य स यशोधनः ॥१॥　　　　[रघुवश टीका, द्वि. स. प्र. श्लो.]

"हे अधीश !-हे स्वामिन् ! अस्मादृशा मन्दमतयः तव स्वरूपं वर्णयितुं सामान्यतोऽपि, आस्तां विशेषतः, प्रतिपादयितुं कथं अधीशाः-समर्था भवन्ति ? अपि तु न। अत्र दृष्टान्तमाह—'यदि वा' इति दृष्टान्ते। कौशिकशिशुः-घूकस्य बालो दिवसे अन्धः सन् 'किं घर्मरश्मेः' सूर्यस्य रूपं-भास्करबिम्बस्वरूपं 'किल' इति प्रसिद्धवार्तायां किं प्ररूपयति-यथावस्थितं कथयति ? अपितु नेत्यर्थः। किंविशिष्टः कौशिकशिशुः ? धृष्टोऽपि दृढहृदयतया प्रगल्भोऽपि ॥३॥"　　　　[कल्याणमन्दिर स्तोत्र श्लो. ३ टीका]

इसी स्तोत्र के पांचवे पद्य की व्याख्या के पूर्व भूमिका की विशदता देखिये—

"ननु यदि भगवतो गुणान् प्रति स्तोतुं शक्तिर्नास्ति तदा स्तवं कर्त्तुं कथमारब्धवान् ? न चैवं वक्तव्यम्। यत एकान्तेन एवं नास्ति —यदुत सम्पूर्णशक्तावेव सत्यां कार्यं कर्त्तुमारभ्यते, यतो गरुडवदा-

कारो चड्डयितुमसमर्थोपि कीटिका किं स्वकीयेन चारेण न चरति ? चरन्त्येव, चरन्ती न केनापि वार्येत । अतो जिनयोग्यस्य सद्भूतस्य सम्पूर्णस्य स्तवस्य करणशक्तेरभावेऽपि भक्तिभरप्रेरितस्य मम स्वकीयशक्तेरनुसारेण स्तोत्रकरणे प्रवृत्तस्य दोषो नाशङ्कनीयस्तदेवाऽऽह—"

व्याख्या का चातुर्य देखना हो तो देखें, मेघदूत प्रथम श्लोक की व्याख्या।

कवि ने केवल संस्कृत-प्राकृत भाषा-ग्रथित ग्रन्थों पर ही टीका नहीं की है अपितु 'रूपकमाला' जैसे भाषा काव्य पर भी संस्कृत में अवचूरि की रचना की है। वस्तुतः कवि कृत अवचूरि पठन योग्य है।

औपदेशिक और कथासाहित्य

कवि स्वयं तो सफल प्रचारक और उपदेशक थे ही। 'अन्य श्रमण भी प्रचार और उपदेश में सफलता प्राप्त करें' इसी विचारधारा से कवि ने औपदेशिक और कथा साहित्य की सृष्टि की।

व्याख्याता का 'जनरञ्जन' करना सर्वप्रथम कर्त्तव्य है और जनरञ्जन तब ही संभव है जबकि उपदेश के बीच-बीच में प्रासंगिक और औपदेशिक श्लोकों की छटा बिखेरी जाय और चुलबुले चुटकले या कहानियों का जाल बिखेरा जाय।

गाथा-सहस्री इसी औदेपशिक और प्रासगिक श्लोकों की पूर्ति-स्वरूप ही बना है इसमें अनेकों ग्रन्थों के चुने हुये फूलों के समान सौगन्ध्य बिखेरते हुये उत्तम-उत्तम पद्यों का चयन किया गया है; और वे भी सब ही विषयों के हैं। इससे कवि की भ्रमर की तरह चयन शक्ति का श्रेष्ठ परिचय प्राप्त होता है।

अस्पष्ट न रह जाय। सामान्यतः इस सम्बन्ध के एक दो उद्धरण ही देकर हम सन्तोष करेंगे। देखिये:—

'अथ' अधुना 'प्रजानामधिपः' दिलीपो राजा 'ऋषेः' वशिष्ठस्य 'धेनुं' गां प्रभाते वनाय मुमोच। किंविशिष्टां धेनुं ? 'जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्' गन्धश्च माल्यं च गन्धमाल्ये यस्याः सा, कोऽर्थः ? राजा स्वयं गन्धमाल्ये गृह्णाति राज्ञी च ग्राहति। पुनः किंविशिष्टां धेनुम् ? 'पीतप्रतिबद्धवत्सां' पूर्वं पीतः पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा पीत इति, कोऽर्थः ? पायितः पूर्वं, पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा तां पी०। अथवा अयमपि अर्थः पीतः-शंकुरदाहृत इत्युक्तत्वात् पीति शंको प्रतिबद्धो वत्सो यस्याः सा पी० ताम्। किंविशिष्ट प्रजानामधिपः ? 'यशोधनः' यशः एव धनं यस्य स यशोधनः ।१। [रघुवंश टीका, द्वि. स. प्र. श्लो.]

"हे अधीश !-हे स्वामिन् ! अस्मादृशा मन्दमतयः तव स्वरूपं वर्णयितुं सामान्यतोऽपि, आस्तां विशेषतः, प्रतिपादयितुं कथं अधीशाः-समर्था भवन्ति ? अपि तु न। अत्र दृष्टान्तमाह—'यदि वा' इति दृष्टान्ते। कौशिकशिशुः-घूकस्य बालो दिवसे अन्धः सन् 'किं घर्मांश्मेः' सूर्यस्य रूपं-भास्करबिम्बस्वरूपं 'किल' इति प्रसिद्धवार्तायां किं प्ररूपयति-यथावस्थितं कथयति ? अपितु नेत्यर्थः। किंविशिष्टः कौशिकशिशुः ? धृष्टोऽपि दृढहृदयतया प्रागल्भोऽपि ।३।" [कल्याणमन्दिर स्तोत्र श्लो. ३ टीका]

इसी स्तोत्र के पांचवे पद्य की व्याख्या के पूर्व भूमिका की विशदता देखिये—

"ननु यदि भगवतो गुणान् प्रति स्तोतुं शक्तिर्नास्ति तदा स्तवं कर्त्तुं कथमारब्धवान् ? न चैवं वक्तव्यम्। यत एकान्तेन एवं नास्ति -यदुत सम्पूर्णाशक्तावेव सत्यां कार्यं कर्त्तुमारभ्यते, यतो गरुडवदा-

काशे रङ्कयितुमसमर्थोपि कोटिका किं स्वकीयेन चारेण न चरति ? चरन्त्येव, चरन्ती न केनापि वार्यते । अतो जिनयोग्यस्य सद्भूतस्य सम्पूर्णस्य स्तवस्य करणशक्तेरभावेऽपि भक्तिभरप्रेरितस्य मम स्वकीयशक्तेरनुसारेण स्तोत्रकरणे प्रवृत्तस्य दोषो नाशङ्कनीयस्तदेवाऽऽह्—"

व्याख्या का चातुर्य देखना हो तो देखें, मेघदूत प्रथम श्लोक की व्याख्या ।

कवि ने केवल संस्कृत-प्राकृत भाषा-प्रथित ग्रन्थों पर ही टीका नहीं की है अपितु 'रूपकमाला' जैसे भाषा काव्य पर भी संस्कृत में अवचूरि की रचना की है । वस्तुतः कवि कृत अवचूरि पठन योग्य है ।

औपदेशिक और कथासाहित्य

कवि स्वयं तो सफल प्रचारक और उपदेशक थे ही । 'अन्य श्रमण भी प्रचार और उपदेश में सफलता प्राप्त करें' इसी विचारधारा से कवि ने औपदेशिक और कथा साहित्य की सृष्टि की ।

व्याख्याता का 'जनरञ्जन' करना सर्वप्रथम कर्त्तव्य है और जनरञ्जन तब ही संभव है जबकि उपदेश के बीच-बीच में प्रासंगिक और औपदेशिक श्लोकों की छटा बिखेरी जाय और चुलबुले चुटकले या कहानियों का जाल बिखेरा जाय ।

गाथा-सहस्री इसी औदेपशिक और प्रासंगिक श्लोकों की पूर्ति-स्वरूप ही बना है इसमें अनेकों ग्रन्थों के चुने हुये फूलों के समान सौगन्ध्य बिखेरते हुये उत्तम-उत्तम पद्यों का चयन किया गया है; और वे भी सब ही विषयों के हैं । इससे कवि की भ्रमर की तरह चयन शक्ति का श्रेष्ठ परिचय प्राप्त होता है ।

कथा-साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने की दृष्टि से 'कथा-कोष' रचा गया। इसमें छोटे-मोटे, रसपूर्ण, अनेकों आख्यायिकायें हैं जो श्रोता को मुग्ध करने में अपनी सानी नहीं रखती हैं। किन्तु अफसोस है कि यह चुटकलों और आख्यायिकाओं भण्डार आज हमें प्राप्त नहीं है; है तो भी अपूर्ण रूप में। अतः तज्ज्ञों का कर्त्तव्य है कि इसकी प्राप्ति के लिये अनुसन्धान करें।

संस्कृत भाषा सर्वग्राह्य न थी, क्योंकि सामान्य उपदेशक भी इससे अनभिज्ञ थे। अतः कवि ने सर्वग्राह्य दृष्टि से प्रान्तीय भाषाओं में 'रासक और चतुष्पदियों' की रचना की है; जिसकी तालिका हम ऊपर दे आये हैं। ये 'रास' संस्कृत के काव्यों की तरह ही काव्य शास्त्रों के लक्षणों से युक्त प्रान्तीय भाषा के कलेवर से सुसज्जित किये गये हैं। कवि के रासक साहित्य में 'सीताराम चतुष्पदी' और 'द्रौपदी चतुष्पदी' महाकाव्यों की तरह ही विशद और अनुपम सौन्दर्य को धारण किये हुये हैं। इनके रासक जन-रञ्जन के साथ विद्वज्जनों के हृदय को आह्लादित कर रसाभिव्यक्ति करने में भी समर्थ हैं। कवि ने 'कथा' के साथ प्रसङ्ग-प्रसङ्ग पर जो धार्मिक अनुष्ठानों की, उपदेशों की बहार दिखाई है, उससे रसाभिव्यक्ति के साथ जीवन की उत्कट श्रद्धा और विश्व-प्रेम का भी अभ्युदय होता दिखाई देता है।

कई संस्कृतनिष्ठ विद्वान भाषा-साहित्य की उपहास किया करते हैं, वे यदि कवि के रासक-साहित्य का अध्ययन करें तो उन्हें अपनी विचार-सरणि अवश्य बदलनी पड़ेगी।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो ये 'रास' बड़े ही उपयुक्त हैं। १७ वीं शती के भाषा के स्वरूप को स्थिर करने के लिये इन रासों में काफी सामर्थ्य है। आवश्यकता है केवल वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसंधान करने की।

सङ्गीत-शास्त्र

विश्व को आकर्षित और अभिभूत करने का जितना सामर्थ्य संगीत-शास्त्र में है उतना सामर्थ्य और किसी साहित्य में नहीं। यही कारण है कि महाकवियों ने अपने काव्यग्रन्थों को 'छन्दस्यूत' किये हैं। पद्य में छन्दों का निर्माण संगीतशास्त्र की नैसर्गिकता और अनिर्वचनीयता प्रगट करता है। ताल, लय, गण, गति और और यति आदि संगीत के ही प्रमुख अंग हैं और ये ही छन्दज्ञों ने स्वीकार किये हैं। इसी कारण पद्य काव्य श्रव्य काव्य कहलाते हैं।

भाषा-साहित्यकारों ने जनता को आकृष्ट करने के लिये गेय पद्धति अपनाई। प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशीयें, ख्याल, तर्जें आदि का प्रमुखता से अपनी रचनाओं में स्थान दिया। यह अनुभव सिद्ध है कि जनता ने अपने हृदय में जितना स्थान इन 'गेयात्मक' काव्यों को दिया, उतना और किसी को नहीं।

संगीत में प्रमुख ६ राग और छत्तीस रागिनियाँ हैं और इन्हीं के भेदानुभेद, मिश्रभाव और प्रान्तीय आदि से सैंकड़ों नयी रागिनियों का निर्माण माना गया है।

कवि भी संगीत की प्रभावशालिता को पहिचान कर इसका आश्रय ग्रहण करता है और स्वच्छन्दता के साथ गंगा-प्रवाह के समान मुक्त रूप से गेय गीतों और काव्यों की रचना करता है। कवि का गेय साहित्य इतना प्रवाहशील और व्यापी है कि परवर्ती कवियों को यह कहना पड़ा कि "समयसुन्दर रा गीतड़ा, कुम्भे रांणे रा भीतड़ा।"

कवि का वर्चस्व इस साहित्य पर भी फैला हुआ है। कहीं तो कवि गुरुवर्णन* करता हुआ ६ राग और छत्तीस रागिणी के

* कु० पृ० ३६५.

के नाम देता है, तो कहीं भगवान ¶ की स्तुति करता हुआ द्वयर्थी रूप ४४ रागों के नाम गिनाता है, तो कहीं एक ही स्तव १७ रागों ‡ में बनाकर अपनी योग्यता प्रकट करता है, कहीं प्रत्येक पृथक् पृथक् रागों में मुक्तक-काव्यों की रचना करता दिखाई दे रहा है।

कवि ने अपने गीत और रासक साहित्य में प्रायः प्रत्येक राग-रागिनियों समावेश किया है। केवल राग-रागिनियें ही नहीं; सिन्ध, गुजरात, ढूंढाड़, मारवाड़, मेड़ती, मालवी आदि देशों की प्रसिद्ध देशियों का समावेश कर अपने ग्रन्थों को 'कोष' का रूप प्रदान किया है। कवि के द्वारा गृहीत व निर्मापित देशियों की टेक पंक्तियों को आनन्दघन, कवि ऋषभदास, नयसुन्दर आदि अनेक परवर्ती कवियों ने उपयोग किया है।

कवि की राग-रागिनियों की विशदता का आस्वादन करने के लिये देखिये, सीताराम चौपाई आदि रासक और तत्सबंधीय उल्लेख, जैन गुर्जर कविओ भाग १।

अनेक भाषा-ज्ञान

प्राकृत, संस्कृत, सिन्धी, मारवाड़ी, राजस्थानी हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं पर कवि का अच्छा अधिकार था। कवि ने इन प्रत्येक भाषाओं में अपनी रचनायें की हैं। इन प्रत्येक भाषाओं के ज्ञान का महत्व भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अत्यधिक है।

भाषा पर अधिकार होने के पश्चात् रचना करना सरल है किन्तु दो भाषाओं में संयुक्त रूप में रचना करना अत्यन्त ही दुष्कर है। समसंस्कृत और प्राकृत भाषा में रचना करना वैदग्ध्य का सूचक है। कवि इन दोनों ही भाषाओं में समान रूप से अपनी पटुता दिखलाता है:—

¶ कु० पृ० ६३। ‡ कु० पृ० १४६।

"लसएणाण–विन्नाण–सन्नाण–मेहं,
कलाभिः कलाभिर्युतात्मीयदेहम् ।
भणुएणं कलाकेलिरुवाणुगारं,
स्तुवे पार्श्वनाथं गुणश्रेणिसारम् ।१।
सुण्णा जेण तुम्हाण वाणी सहेवं,
गतं तस्य मिथ्यात्वमात्मीयमेयम् ।
कहं चंद मज्झिल्ल पीउसपाणं,
विषापोहकृत्ये भवेन्न प्रमाणम् ।२।
लुहप्पायपंके रुहे जे अ भत्ता,
लभे ते सुखं नित्यमेकाग्रचित्ताः ।
कहं निप्फला कप्परुक्खस्स सेवा,
भवेत्प्राणिनां भक्तिभाजां सदेवा ।३।
[पार्श्वनाथाष्टक कु० पृ० १८२]

समसस्कृत-प्राकृत की रचनायें साहित्य में नहीं के समान ही हैं। इस प्रकार की रचनाओं का प्रादुर्भाव आचार्य हरिभद्र की 'संसार दावा' स्तुति से होता है और विस्तार आचार्य जिनवल्लभ के 'भावारिवारण स्तोत्र' और 'प्रश्नोत्तर षष्ठिशतक' काव्य में। इस प्रकार की कवि की यह एक ही रचना है। केवल संस्कृत-प्राकृत मिश्र ही नहीं, हिन्दी और संस्कृत मिश्र कृति का भी चमत्कार देखियेः—

"भलूँ आज भेट्यु, प्रभोः पादपद्मं,
फली आस मोरी, नितान्तं विपद्मम्।

गयूँ दुःखनासी, पुनः सौम्यदृष्ट्या,
थयुं सुक्ख झाझूँ, यथा मेघवृष्ट्या ।१।
जिके पार्श्व केरी, करिष्यन्ति भक्ति,
तिके धन्य वारु, मनुष्या अशक्तिम् ।
भली आज वेला, मया वीतरागाः,
खुशी मांहि भेट्या, नमद्देवनागाः ।२।
तुमे विश्वमांहे, महाकल्पवृक्षा,
तुमे भव्य लोकां, मनोऽभीष्टदक्षा ।
तुमे माय बाप, प्रियाः स्वामिरूपाः,
तुमे देव मोटा, स्वयंभू स्वरूपाः ।३। आदि.

[पार्श्वनाथाष्टक, कु० पृ० १६६]

कवि जन्मतः राजस्थानी होता हुआ भी 'सिन्धी' भाषा पर अच्छा अधिकार रखता है। देखिये कवि की पटुताः—

"मरुदेवी माता इवै आखइ, इद्धर उद्धर कितनु झाखइ ।
आउ आषाढइ कोल ऋषभजी, आउ असाढइ कोल ।१।

× × ×

मिट्ठा थे मेवा तैकुं देवां, आउ इकट्ठे जेमण जेमां ।
लावां खूब चमेल ऋषभजी, आउ असाढइ कोल ।२।

× × ×

आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, यही वेड़ा गोदी में सुख पावां।
मन्न असाढ़ा बोल ऋषभजी, आउ असाढा कोल ।७।

तुं जगजीवन प्राण आधारा, तूँ मेरा पुत्ता बहुत पियारा।
तैथुँ वंजा घोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल।८।"
[कु० पृ० ६१]

❀ ❀ ❀

"साहिब मड़डा चंगी सूरति, आ रथ चढीय आवंदा हे भइणा।
नेमि मइकुं भावंदा हे।
भावंदा हे मइकुं भावंदो हे, नेमि असाड़े भावंदा हे।१।
आया तोरण लाल असाड़ा, पसुय देखि पछिताउंदा हे भइणा।२।
ए दुनिया सब खोटी यारों, धरमउ ते दिलु धाउंदा हे भइणा।३।
कूड़ी गल्ल जीवां दइ कारणि, जादुं कितकुं जावंदा हे भइणा।४।
घोडु असाडड़ संयम गिद्धा, सच्चा राह सुणावंदा हे भइणा।६।
इंवै राजुल राणी आखै, संयम मइकुं सुहावंदा हे भइणा।७।

❀ ❀ ❀

[नेमिस्तव कु० पृ० १३२]

इसी प्रकार मृगावती चतुष्पदी तृतीय खण्ड नवमी ढाल, सिन्धी भाषा में ही ग्रथित है।

कवि ने सर्व प्रथम राजस्थानी में ही लेखनी उठाई, किन्तु ज्यों ज्यों उसके भ्रमण का क्षेत्र विस्तृत होता गया त्यों-त्यों उसका भाषा-ज्ञान भी विस्तृत होता गया और वह प्राचीन हिन्दी, गुजराती सिन्धी आदि में भी साहित्य के भण्डार को भरता गया। प्राचीन हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती सम्मिश्रित तो प्रस्तुत ग्रन्थ हैं ही।

प्रस्तुत-संग्रह

प्रस्तुत संग्रह क्या भक्त की दृष्टि से, क्या उपदेशक की दृष्टि से, क्या उपदेश-पदों की दृष्टि से, क्या क्रियावादियों की दृष्टि से, क्या वर्णनात्मक दृष्टि से, क्या लोकोक्तियों की दृष्टि से, क्या ऐतिहासिकों की दृष्टि से, क्या संस्कृत-प्राकृत के विद्वानों की दृष्टि से अर्थात् सर्वांग दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। भक्त की दृष्टि से देखिये तो चौवीसी, बीसी, तीर्थंकरों के स्तव, तीर्थ-स्तव, प्राचीन महर्षियों के गीत, सद्गुरुओं के गीत आदि की सामग्री इतनी भरी पड़ी है कि भक्त इसी गंगा की पावन-धरा में डुबकियां लगाता चल जाय, आराध्यों और सद्गुरुओं को प्रसन्न करता चला जाय अर्थात् इस संग्रह में इतनी सामग्री है कि सबका अध्ययन कर, हृदयंगम करने में भक्त असमर्थ ही रहेगा। भक्त की भक्ति के लिये संग्रह के कुछ गीत और स्तवन ही पर्याप्त हैं। उदाहरण स्वरूप सुविधिनाथ का स्तवन ही देखिये :—

प्रभु तेरे गुण अनन्त अपार।
सहस रसना करत सुरगुरु, कहत न आवे पार।प्र०।१।
कोण अम्बर गिणै तारा, मेरु गिरी को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कोण विचार।प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाखुं, सुविध जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम आधार।प्र०।३।
(सुविधि जिन स्तवन, राग-केदार, पृ० ७)

प्रभु के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कवि की लेखनी का आस्वादन कीजिये :—

पूरण चन्द जिसौ मुख तेरो, दंत पंक्ति मचकुंद कली हो।
सुन्दर नयन तारिका शोभत, मानु कमल दल मध्य अली हो।२।
(अजितजिन स्तवन)

भक्त कवि के कोमल-हृदय का अवलोकन कीजिये:—

तुम मूँ विचि अन्तर घणउ, किम करूँ तोरी सेव।
देव न दीधी पांखड़ी, पणि दिल में तूँ इक देव ॥२॥
(सीमन्धर गीत)

विया पांख विना किम वांदूं, पणि माहरूँ मन त्यांह रे ॥२॥
(बाहुजिन गीत)

पणि मुझ नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो घणी जाण पिछाण।
तुमे नीरागी निसप्रीही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण ॥
(अजितवीर्य जिन गीतम्)

अहो मेरे जिन कुँ कुण ओपमा कहूं।
काष्ठकलप चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहुँ।अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूं।
जल दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण तउ हुं किम सदहुं।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, संख कुटिलता वहुँ।
समयसुंदर कहइ अनंत तीर्थंकर, तुम मइं दोष न लहुँ। अ०।३।
(अनन्तजिन गीतम्)

प्रभु-दर्शन से कवि का मन-मयूर नाच उठता है:—

तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चन्द चकोरड़ा ।

तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि,
मेह आगम जिम मोरड़ा । मो०।१२।
तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि,
जिम दिन ऊगइ चोरड़ा ।
तुम नामइ हो सुख संपति थाय कि,
मन वंछित फलइ मोरड़ा । मो० १३।
हुँ मांगूँ हो हिव अविहड़ प्रेम कि,
नित नित करूँय निहोरड़ा ।
मुझ देज्यो हो सामी भव भव सेव कि
चरण न छोड़ूं तोरड़ा । मो०।१४।

(शीतलनाथ स्तवन)

कवि अपने को वीतराग के पथ पर चल सकने के अयोग्य अनुभव करते हुए भी, जो आत्म विश्वास प्रकट करता है वस्तुतः वह स्तुत्य है:—

सबउ संजम नवि पलइ, नहिं तेहवउ हो मुज दरसण नाण।
पण आधार छइ एतलउ, एक तोरउ हो धरूँ निश्चल ध्यान। वी.१६।

(वीर स्तवन)

तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ।
आण धरुं सिर ताहरी जी, भव भव ताहरी सेव ।२१। क्र० ।

(आदिनाथ स्तव)

कवि केवल भगवद् स्वरूप को ही भक्ति का आधार मानकर नहीं चल रहा है, अपितु बाल्यक्रीड़ा को भी भक्ति का एक अङ्ग स्वीकार कर वात्सल्य-भावना में रस विभोर हो जाता है :—

पालणइइ पउढयउ रमइ म्हारउ बालुयड़उ,
हींडोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥१॥
पग घूघरड़ी घमघमइ म्हारउ बालुयड़उ,
ठम ठम मेल्हइ पाय म्हारउ नान्हड़ियउ ।

(शान्तिनाथ हुलरामणा गीतम्)

मिट्ठा वे मेवा तैं कुँ देवां, आउ इकट्ठे जेमण जेमां ।
लावां खूब चमेल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।२।
कसबी चीरा पै बांधूँ तेरे, पहिरण चोला मोहन मेरे ।
कमर पिछेवड़ा लाल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।३।
काने केवटिया पैरे कड़िया, हाथे बंगा जवहर जड़िया ।
गल मोतियन की माल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।४।
बांगा लाट्टू चकरी चंगी, अजब उस्तादां वहिकर रङ्गी ।
आंगण असाड़े खेल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।५।
नयण वे तैंडे कज्जल पावां, मन भावड़दां तिलक लगावां ।
रूढड़ा कैंदे कोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।६।
आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, वही बेड़ा गोदी में सुख पावाँ ।
मञ्ज असाड़ा बोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।७।

(आदि स्तव)

× × ×

भक्ति की तन्मयता में कवि जीवन का अनुराग पक्ष भी नहीं भूलता है । राजीमति के शब्दों में अनुराग को किस खूबी से प्रकट करता है । देखिये:—

दीप पतंग तणइ परि सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो।
हुं अत्यन्त तोरी रागिणी सुपियारा हो।
तु' काइ चै मुझ छेह; नेम सुपियारा हो।१।
संगत तेसु कीजिये, सु० जल सरिखा हुवे जेह; ने० सु०।
आवटणु' आपणि सहै, सु० दूध न दाझण देय; ने० सु०।२।
ते गिरुया गुणवंतजी, सु० चंदन अगर कपूर; ने० सु०।
पीइंता परिमल करै, सु० आपइ आणंद पूर; ने० सु०।३।
मिलतां सुं मिलीयै सही, सु० जिम बापीयड़ो मेह; ने० सु०।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी, सु० आम मिले सुसनेह; ने० सु०।४।
हुं सोना नी मूँदड़ी, सु० तु' हिव हीरो होय; ने० सु०।
सरिखइ सरिखइ जउ मिलइ, सु. तउ ते सुंदर होय; ने० सु०।५।
(नेमिस्तव)

× × ×

अनुराग के साथ साथ कवि राजीमती एवं गौतम के शब्दों द्वारा जिस सरणि से वियोग एवं बिछोह का वर्णन करता है; वह सचमुच में साहित्य-निधि में एक अनमोल रत्न है। वियोग सम्बन्धित अनेकों गीत इस संग्रह में संग्रहीत हैं। पाठकों को अवलोकन कर रसास्वादन कर लेना चाहिये।

कवि के हृदय में गुरु भक्ति और गच्छनायक के प्रति अटूट श्रद्धा थी। कवि ने दादा साहब श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिन-कुशलसूरि जी के बहुत से स्तवन बनाए हैं। श्री जिनकुशलसूरि जी

के परचों का चमत्कारी * उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है। श्री जिनचन्द्रसूरि जी के बहुत से गीत, अष्टक आदि में ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ गुरु-भक्ति भी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार श्री जिनसिंहसूरि, श्री जिनराजसूरि और श्रीजिनसागरसूरि के पद अष्टकादिक भी बनाये हैं। श्री जिनचन्द्रसूरि अष्टक व आलजा गीत आदि अनेक गीत भावपूर्ण व धारावाही मुक्तकों में बद्ध है। श्री जिनसिंहसूरि के प्रति अगाध भक्ति पूर्ण पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप देखियेः—

मुझ मन मोह्यो रे गुरुजी, तुम्ह गुणे जिम बाबीहडउ मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चन्द चकोर सनेहो जी। मु.।१।
मान सरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोही भरतारो जी। मु.।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी। मु.।३।
सकल सोभागी सह गुरु राजियउ, श्री जिनसिंघ सूरीसो जी।
समयसुंदर कहइ गुरु गुण गावतां, पूजइ मनह जगीसो जी। मु.।४।

(कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३८७)

गुरु दीवउ गुरु चन्द्रमा रे, गुरु देखाड़इ वाट।
गुरु उपगारी गुरु वड़ा रे, गुरु उतारइ घाट ॥२॥

(जिनसिंहसूरि गीत)

× × ×

उपदेशक की दृष्टि से देखिये, तो पृष्ठ ४२० से ४६३ तक औपदेशिक गीत ही गीत मिलेंगे। पृष्ठ २४७ से पृष्ठ ३४३ तक पूर्व

* "आयो आयो जी समरता दादो आयो"—कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३५०

के महा महर्षि और महासतियों के स्वाध्याय और गीत प्राप्त होंगे। इन दोनों के आधार पर ही उपदेशक यदि चाहे, तो कुछ दिन या मास तो क्या, वर्षों व्यतीत कर सकता है और सफलता मह उपदेशों के साथ अपने धर्मों का प्रचार भी कर सकता है।

उपदेशक पदों की दृष्टि से—मुमुक्षुओं के त्याग-वैराग्य में वृद्धि हो एवं प्रसग आने पर वे क्रोध कषाय आदि शत्रुओं से दूर रहकर आत्मगुण प्राप्ति के भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा आत्मोन्नति कर सकें, इसके लिये कविवर ने पद-रचना कर पर्याप्त उपकार किया है। इस प्रकार के पदों का स्वाध्याय करने वाले की आत्मा दुर्व्यापारों से बचकर सदाचार की ओर अग्रसर होती है। इस प्रकार के गीतों में भिन्न-भिन्न राग-रागनियों के चमत्कार के साथ-साथ बोध देने वाली चेतावनी भी दी गई है। क्रोध मान, माया, लोभ, निन्दा, स्वार्थ, मात्सर्य इत्यादि नाना विषयों के परिहार के साथ-साथ जीव प्रतिबोध, पारकी होड़ निवारण, घड़ी लाखीणी, उद्यम, भाग्य, घड़ियाली, जीवदया, मरण-भय सन्देह, वीतराग सत्यवचन, पठन-प्रेरणा, क्रिया-प्रेरणा, दान, शील, तप, भावना, स्वर्ग प्राप्ति, नरक प्राप्ति आदि नाना प्रकार के विषयों पर पदों की रचना कर कवि ने सुन्दरतम भाव व्यक्त किये हैं।

क्रियावादियों की दृष्टि से—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि आप ज्ञान के प्रबल पक्षपाती और उपासक थे आपकी दीर्घायु ज्ञानोपार्जन, ग्रन्थप्रणयन, स्वाध्याय, पठन-पाठन व धर्मोपदेश में व्यतीत हुई। आप ज्ञान के साथ-साथ क्रिया को भी बड़े आदर पूर्वक करते रहने का मनोभाव सर्वत्र व्यक्त करते रहे हैं। तपश्चर्या, पर्याराधन आदि स्तवनों से यह स्पष्ट है। पञ्चमी स्तवन में "क्रिया सहित जो ज्ञान, हुवइ तो अति परधान। सोनो ने सुरो ए, सह्व दूधे भरयो ए" कहकर क्रिया की महत्ता स्वीकार की है। क्रिया प्रेरक स्वाध्याय मे क्रिया की सजीवता देखिये :—

क्रिया करउ, चेला क्रिया करउ,
क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ । क्रि० ।१।
पड़िलेहउ उपग्रण पातरउ,
जयणा सुं काजउ ऊधरउ । क्रि० ।२।
पड़िकमतां पाठ सुध उचरउ,
सहु अधिकार गमा सांभरउ । क्रि० ।३।
काउसग्ग करता मन पांतरउ,
च्यार आंगुल पग नउ आंतरउ । क्रि० ।४।
परमाद नइ आलस परिहरउ,
तिरिय निगोद पड़ण थी डरउ । क्रि० ।५।
क्रियावंत दीसइ फूटरउ,
क्रिया उपाय करम छूटरउ । क्रि० ।६।
पांगलउ ज्ञान किस्यउ कामरउ,
ज्ञान सहित क्रिया आदरउ । क्रि० ।७।
समयसुन्दर यइ उपदेश खरउ,
सुगति तणउ मारग पाधरउ । क्रि० ।८।

ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध में आपके उपरोक्त विचार आज भी समाज के लिये मार्ग दर्शक हैं।

वर्णनात्मक दृष्टि से—कवि ने पौराणिक चरित्रों के वर्णन में भी अपने युग की छाप अङ्कित की है, जिससे व्याख्यानादि में बड़ी ही सजीवता और रोचकता आ जाती है। मृगावती चौपाई में चित्रकार का वर्णन करते हुए अपने युग के भित्ति चित्रों का सुन्दर चित्रण किया है। राम, सीता, गणेश, कावुली,

फिरङ्गी आदि की वेशभूषा का भी सुन्दर निदर्शन किया है। इसी प्रकार स्त्रियों को आभूषण की कितनी चाह होती है, इस पर गौर्जरीय नारियों की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन भी कराया है। कवि द्वारा प्राकृतिक सुषमा का चित्रण, प्रतिहारी का चित्रण, पूजारी, ब्राह्मणादि का और ज्योतिषी का चित्रण तो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। अन्तरङ्ग श्रृङ्गार गीत, नेमि श्रृङ्गार वैराग्य और चारित्र्य चूनड़ी आदि गीतों में तो उस युग के आभूषणों का भी उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये:—

सिर राखड़ी, काने उगणियाँ, चुनी, कुण्डल, चूड़ा, हार, पमारड़उ, लोलणउ, चन्दलउ, नक्षफूल, बिन्दली, बीटी, कटि-मेखला, वेहणी, काजल, महँदी, चिछिया, पुणछिया, गलइ दुलड़ी, चूनड़ी, नेउरी, तिलक आदि।

मुहावरों की दृष्टि से—कवि ने अपने युग में प्रचलित लोकोक्तियों का भी अपनी कृतियों में स्थान-स्थान पर, सुन्दर पद्धति से समावेश किया है इससे उन कहावतों की प्राचीनता पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। उदाहरण स्वरूप देखिये:—

आपणी करणी पार उतरणी, आप मुयाँ विन
सरग न जाइयइ, वातें पापड़ किमही न थाइ,
सूता सेह विगूता सही जांगतां काऊ उर भय नाहि,
सूँतारी पाडा जिणइ एह वात जग जाणे रे,
आप डूबे सारी डूब नई दुनियां,
दाहिनी आँख सखीमोरी फरकी "रंगमें भंग जणावइ हो"

सगीत-शास्त्र की दृष्टि से—केवल छः राग और छत्तीस रागिनियों का ही इसमें समावेश नहीं है, प्रत्युत इसके

साथ ही सिन्ध, मारवाड़, मेड़ता, मालव, गुजरात आदि के प्रान्तों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशीयें, रागिनियाँ, ख्याल आदि सभी इसमें प्राप्त हो जायेंगे। गेय-प्रेमी इस सङ्गीत-पद्धति से अत्यन्त ही प्रसन्न हो उठेगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। उदाहरण स्वरूप जैसलमेर मण्डन पार्श्वनाथ का स्तवन ही देखिये, जो सत्रह रागों में रचित है—(पृ० १४६)।

ऐतिहासिकों की दृष्टि से—तीर्थमालाएँ (पृष्ठ ५४ से ६०) और तीर्थों के 'भास', तीर्थों के 'स्तवन', घघाणी पार्श्वनाथ स्तवन, सेत्रावा स्तवन, राणकपुर स्तव, युग-प्रधान जिनचन्द्रसूरि—जिनसिंहसूरि-जिनराजसूरि-जिनसागरसूरि गीत और संघपति सोमजी वेलि आदि कृतियाँ बहुत ही महत्व रखती हैं। यदि अनुसन्धान किया जाय, तो इनमें बहुत कुछ नये तथ्य और नई सामग्री प्राप्त हो सकती है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो यह संग्रह महत्व का है ही। १७वीं शताब्दी की प्राचीन-हिन्दी, मारवाड़ी, गुजराती, सिन्धी आदि भाषाओं के स्वरूप को समझने के लिये और शब्दों के वर्गीकरण के लिये यह अत्यन्त सहायक होगा।

संस्कृत और प्राकृत के विद्वानों को भी उनके काल को मनोविनोद में व्यतीत करने के लिये इसमें प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। पहले-प्राकृत भाषा के काव्यों को ही लीजिये—

स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र (पृ० १५५), नेमिनाथ स्तव (पृ० ६१५), पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० १८५), यमकबद्ध पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० ६१८),

समसंस्कृत-प्राकृत भाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १६६)।

सम हिन्दी-संस्कृतभाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १८६)।

संस्कृत भाषा में—शान्तिनाथ स्तव (पृ० १०३), चतुर्विंशति तीर्थंकर गुरुनाम गर्भित पार्श्वनाथ स्तव (पृ० १८४), पार्श्वनाथ-

यमकबद्ध-श्लेषबद्ध-शृङ्गाटकबद्ध-चलितशृङ्खलाबन्ध-कपाटशृङ्खलाबन्ध स्तवन-द्विअर्थीयुक्तस्तव (पृष्ठ १८६ से १६६, ३५७, ६१४)। नानाविध श्लेषमय आदिनाथ स्तोत्र (पृ० ६१५), नानाविध काव्य जातिमय नेमिनाथ स्तव (पृ० ६१६), समस्यामय पार्श्वनाथ बृहस्तव (पृ० ६१६), यमकमय पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० ६२१), यमकमय महावीर बृहत्स्तव (पृ० ६२२)।

अष्टक और पादपूर्ति साहित्य भी देखने योग्य है :—

तृष्णाष्टक, रजोष्टक, उदच्छत्सूर्यबिम्बाष्टक, समस्याष्टक, समस्या-पूर्ति (पृष्ठ ४६४ से ५०० तक), पादपूर्ति रूप ऋषभ भक्तामर काव्य (पृष्ठ ६०३)

समस्या-पूर्ति में कवि-कल्पना की उड़ान तो देखिये:—

प्रभुस्नात्रकृते देवा नीयमानान् नभे घटान् ।
रौप्यान् दृष्ट्वा नराः प्रोचुः शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१॥
रामया रममाणेन कामोद्दीपनमिच्छता ।
प्रोक्तं तच्चारु यद्येवं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥२॥
हस्त्यारोहशिरस्त्राणश्रेणिमालोक्य संगरे ।
पतितो विह्वलोऽवादीत् शतचन्द्रनभस्तलम् ॥४॥
भुक्तघत्तूरपूरत्वाद्भ्रान्तदृष्टिरितस्ततः ।
अपश्यत्कोऽपि सर्वत्र शतचन्द्रनभस्तलम् ॥६॥

इस प्रकार अनेक विध दृष्टियों से देखने के पश्चात् हम निर्विवाद कह सकते हैं कवि असाधारण मेधा-सम्पन्न सर्वतोमुखी प्रतिभावान था और था एक साहित्य-यज्ञ का महास्रष्टा भी। इस स्रष्टा की न जाने कितनी कृतियाँ इस साहित्य-संसार से विदा हो चुकी होंगी और न जाने आज जो प्राप्त हैं, वे भी सरस्वती-

भण्डारों में किस रूप में पड़ी-पड़ी बिलख रही होंगी। नाहटा बन्धुओं ने कवि के फुटकर समूह को संगृहीत करने का और परिश्रम उठाकर प्रकाश में लाने का जो प्रयत्न किया है एतदर्थ वे साहित्य-समाज की ओर से अभिनन्दनीय हैं।

उपसंहार

अन्त में मैं कवि की प्रतिभा के सम्बन्ध में वादीन्द्र हर्षनन्दन, कवि ऋषभदास और पंडित विनयचन्द्र कृत स्तुति द्वारा पुष्पाञ्जलि अर्पित करता हुआ अपनी भूमिका समाप्त करता हूँ.—

"तच्छिष्य-मुख्यदक्षाः, विद्वद्वर-समयसुन्दराह्वयः।
कलिकालकालिदासाः, गीतार्था ये उपाध्यायाः।
प्राग्वाटशुद्धवंशाः, षड्भाषागीतिकाव्यकर्त्तारः।
सिद्धान्तकाव्यटीका—करणादज्ञानहर्त्तारः।

(उत्तराध्ययन टीका)

× × ×

वचनकला-काव्यकला, रूपकला-भाग्यरञ्जनकलानाम्।
निस्सीमावधिभूयान्, सदुपाध्यायान् श्रुताध्यायान्।

× × ×

तेषां शिष्या मुख्या, वचन-कला कविकलासु निष्णाताः।
तर्क-व्याकृति-साहित्य-ज्योतिः समयतत्त्वविदः।
प्रज्ञाप्रकर्षः प्राग्वाटे, इति सत्यं व्यधायि यः।
येषां हस्तात् सिद्धिः, सन्ताने शिष्य-शिष्यादौ।
अष्टौ लक्षानर्थानेकपदे प्राप्य ये तु निर्ग्रन्थाः।
संसारः सक सुभगाः, विशेषनः सर्वराजानाम्।

(मध्याह्नव्याख्यान पद्धति)

× × ×

येषां वाणिविलासानां, गीतकाव्यादियोजना।
प्रकाशते कवीशत्वं, स्वगच्छ-परगच्छभिः।

× × ×

तेषां मुख्या शिष्याः, चतुर्थपरमेष्ठिनः कलाचतुराः।
कलिकालकालिदासाः उचालसरस्वतीरूपाः।

× × ×

सुसाधु हंस समयो सुरचन्द, शीतल वचन जिम शारद चन्द।
ए कवि मोटा, बुद्धि विशाल, ते आगलि हुँ मूरख बाल॥

(कवि ऋषभदास)

ज्ञानपयोधि प्रबोधि वारे, अभिनव शशिहर प्राय,
कुमुद चन्द्र उपमान वहेरे, समयसुन्दर कविराय।
ततपर शास्त्र समरथिवारे, सार अनेक विचार,
वलि कलिन्दिका कमलिनी रे, उल्लास दिनकार।

(प० विनयचन्द्र)

श्री नाहटा जी ने महोपाध्याय समयसुन्दर के सम्बन्ध में लिखने का आग्रह कर, मुझे कवि के यशोगान का अवसर प्रदान किया, इसके लिये मैं नाहटा बन्धु को हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

३१-८-१९५५
विवेक वर्धन सेवाश्रम
महासमुन्द (म० प्र०)

श्यामासूनु—
महोपाध्याय विनयसागर

अनुक्रमणिका



संकेत—स्त.=स्तवन, गी.=गीत, गा.=गाथा, ग =गर्भित, म

ऐरवत क्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि (प्रथम के ७ स्त० प्राप्त नहीं)

साधु गीतानि

चार प्रत्येक बुद्ध गीतः—

सती गीतानि

गुरु गीतानि

औपदेशिक गीतानि

छत्तीसी—

कविवर–लेखनदर्शनम्—(४)

[स० १६६६ लि० केशी प्रदेशी प्रबन्ध का अन्तिम पत्र]

समयसुन्दरकृतिकुसुमाञ्जलि

—×❀[○]❀×—

श्री वर्तमान चौवीसी स्तवन

जीव जपि जपि जिनवर अंतरयामी । जी० ।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पदमप्रभु शिवपुर गामी ॥१॥ जी० ॥
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,
विमल अनंत धरम हितकामी ।
शांति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत,
नमि नेमि पार्श्व महावीर स्वामी ॥२॥ जी० ॥
चौवीस तीर्थंकर त्रिभुवन दिनकर,
नाम जपत जाके नवनिधि पामी।
मन वंछित सुख पूरण सुरतरु,
प्रणमत समयसुन्दर सिर नामी ॥३॥ जी० ॥

श्री अनागत चौवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

ए अनागत तीर्थंकर चौवीस जिन,
प्रह उठी नइं नाम लेतां सफल दिन ॥१॥ ए० ॥

पद्मनाभ　सूरदेव　सुपास,
　　स्वयंप्रभ सर्वानुभूति लील विलास ॥२॥ ए० ॥
देवश्रुत उदय पेढाल पोट्टिल स्वामी,
　　सत्कीर्ति सुव्रत अमम नामी ॥३॥ ए० ॥
निःकषाय निःपुलाक निर्मम जिण,
　　चित्रगुप्त श्रीसमाधि अनंत गुण ॥४॥ ए० ॥
संवर यशोधर विजय मल्लि देव,
　　अनंतवीरज भद्रकृत भव भव सेव ॥५॥ ए० ॥
ए तीर्थंकर आगे होस्यै गुण अभिराम,
　　समयसुन्दर तेह अवस्था करे प्रणाम ॥६॥ ए० ॥

श्री अतीत चोवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

केवलज्ञानी　नई　निर्वाणी,
　　सागर महायश विमल वखाणी ॥ के० ॥१॥
सर्वानुभूति श्रीधर दत्त नामी,
　　दामोदर　श्री सुतेज　स्वामी ॥ के० ॥२॥
मुनिसुव्रत सुमति शिवगति वर,
　　अस्ताग नमीश्वर अनिल यशोधर ॥ के० ॥३॥
कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमति शिवकर,
　　स्यंदन संप्रति चौवीसे तीर्थंकर ॥ के० ॥४॥
अतीत चौवीसी जग विख्याती,
　　समयसुन्दर　प्रणमत　प्रभाती ॥ के० ॥५॥

[कृतम् श्री सिद्धपुरे, स्वयं लिखित पत्र से]

चौबीसी

ऋषभ जिन स्तवन

राग—मारू

ऋषभदेव मेरा हो ऋषभदेव मेरा हो ।
पुन्य संयोगइ पामीया मइं, दरिसण तोरा हो ॥१॥ ऋ० ॥
चउरासी लख हूँ भम्यउ, भव का फेरा हो ।
दुख अनन्ता मइं सह्या, स्वामी तिहाँ बहुतेरा हो ॥२॥ ऋ० ॥
चरण न छोड़ं ताहरा, सामी अब की वेरा हो ।
'समयसुन्दर' कहइ तुम्ह थइ, स्वामी कउण भलेरा हो ।३।ऋ०॥

अजित जिन स्तवन

राग—गउड़ी

अजित तुं अतुल बली हो, मेरा प्रभु-अजित० ।
मोह महामल हेलइ जीतउ,
मदन महीपति फौज दली हो ॥१॥ अ० ॥
पूरणचन्द जिसउ मुख तेरउ,
दंत पंक्ति मचकुन्द कली हो ।
सुन्दर नयन तारिका शोभित,
मानूं कमल दल मध्य अली हो ॥२॥ अ० ॥
गज लांछन विजया कउ अंगज,
भेटत भव दुख भ्रांति टली हो ।

समयसुन्दर कहइ तेरे अजित जिन,
गुण गावा मोकुं रंगरली हो ॥३॥ अ० ॥

संभव जिन स्तवन

राग—काफी

आ हे रूप सुन्दर सोहइ, सखि सम्भवनाथ । रूप० ।
गुण अनन्त मन मोहन मूरति, सुर नर के मन मोहइ ॥१॥
समोसरण सामीं द्यइ देशण, भविक जीव पडिबोहइ ।
केवलज्ञानी धर्म प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ ॥२॥ स० ॥
भवदधि पार उतार भगत कूं, सुगति—पुरी आरोहइ ।
समयसुन्दर कहइ तीन भुवन मइं, जिन सरिखउ नहि को हइ॥३॥

अभिनंदन जिन स्तवन

राग—मालवी गौड़ी

मेरे मन तूं अभिनन्दन देवा ।
सौंस करी मैं तेरे आगे, हरि हरि आन वहेवा ॥१॥ मे० ॥
मूरख कोण भखै नींब फल कुं, जो लहै वंछित मेवा।
तूं भगवंत वस्यौ चित भीतर, ज्युं गज के मन रेवा ॥२॥ मे० ॥
तूं समरथ साहिब मैं सेव्यो, भव दुख भ्रांति हरेवा ।
समयसुन्दर मांगत अब इतनो, भव भव तुम्ह पाय सेवा ॥ ३ मे० ॥

सुमति जिन स्तवन

राग—कांनड़ी

जिन जी तारो हो तारो।
मेरा जिनराज जि०, विनती करूँ कर जोड़ी।
असरण सरण भगत साधारण,
भवोदधि पार उतारो ॥ जि० ॥ १ ॥
पर उपगारी परम करुणा पर[1],
सेवक अपणो संभारो।
भगत अनेक भवोदधि तारे,
हम विरियां क्युं विचारो ॥ जि० ॥ २ ॥
मेघ मल्हार मात-मंगला सुत,
वीनती ए अवधारो।
समयसुन्दर कहै सुमति जिणेसर,
सेवक हुं छुं तुम्हारो ॥ जि० ॥ ३ ॥

पद्मप्रभ जिन स्तवन

राग—वेलाउल

मेरो मन मोह्यो मूरतियां।
अति सुन्दर मुख की छवि पेखत,
विकसत[2] होत मेरी छतियां ॥१॥ मे० ॥

१ रस। २ हरषित

केसर चंदन मृगमद भेली[1],
भगति करूँ बहु भतियां ।
आर्द्रकुमार सज्जंभव की परि,
बोध बीज प्रापतियां ॥२॥ मे० ॥
पदम लांछन पद्मप्रभु स्वामी,
इतनी करूँ वीनतियां ।
समयसुन्दर कहै द्यो मेरे साहिब,
सकल कुशल संपतियां ॥३॥ मे० ॥

सुपार्श्व जिन स्तवन

राग—श्रीराग

वीतराग तोरा पाय सरणं ।
दीनदयाल सुपास जिणेसर, जीनी संकट दुख हरणं ।१। वी० ।
कासी जनम मात पृथिवी सुत, तीन भुवन तिलकाभरणं ।
पर उपगारी तु परमेसर, भव समुद्र तारण तरणं ।२। वी० ।
अष्ट करम मल पंक पयोधर, सेवक सुख संपति करणं ।
सुर-नर-किन्नर-कोट[2] निसेवित, समयसुंदर प्रणमति चरणं ।३। वी०

चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

राग—रामगिरि

चंद्रानगरी[3] तुम्ह अवतार जी, महसेन नरिंद मल्हार जी ।
भगवंत (तु) कृपा भंडार जी, इक वीनतड़ी अवधार जी ।
चन्द्रप्रभस्वामी तार जी ॥ १ ॥ स्वामी तारि जी ।

---

१ मेली । २ कोडि निषेवित । ३ चद्र ।

स्वामी ए संसार असार जी, बहु दुख अनंत अपार जी।
मुझ[1] आवागमन निवार जी ॥ २ ॥ सा० ॥
मुझ नै हिव तु आधार जी, सरणागत नै संभार[2] जी।
तुझ सम कोइ नहीं संसार जी, समयसुन्दर नै सुखकार जी।३ सा०

सुविधि जिन स्तवन

राग—केदारू

प्रभु तेरे गुण अनंत अपार।
सहस रसना करत[3] सुरगुरु, कहत न[4] आवै पार।प्र०।१।
कोण अंबर गिणै तारा, मेरु गिर को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कोण विचार।प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाखु, सुविध जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकु, स्वामी तुम[5] आधार।प्र०।३।

शीतल जिन स्तवन

राग—केदारो

हमारे हो साहिब शीतलनाथ।
दीनदयाल भविक[6] कु मेले, शुगतपुरी को साथ।ह०।१।
भव दुख भंजण स्वामी निरंजण, संकट कोट प्रमाथ।
दृढरथ वंश विभूषण दिनमणि, संजम रमणी सनाथ।ह०।२।

१ हुं भम्यउ अनती वारजी। २ आधार। ३ धरइ। ४ नावइ। ५ ई
६ भगत

सकल सुरासुर वंदित पदकज, पुण्यलता घन पाथ ।
समयसुन्दर कहइ तेरी कृपातें, होत मुगत सुख हाथ । ह० । ३ ।

श्रेयांस जिन स्तवन

राग—ललित

सुरतरु सुन्दर श्री श्रेयांस ।
सुमनस श्रेणि सदा प्रभु शोभित,
साधु साख की नीकी प्रशंस । सु० । १ ॥
मन वंछित सुख संपति पूरति,
आरति[1] विघन करत निध्वंश ।
इंद चंद किन्नर अप्सर गण,
गावत गुण वावति[2] सुरि वंश । सु० । २ ॥
खड्ग लंछन तप तेज अखंडित,
अरिहंत तीन भुवन अवतंस ।
समयसुन्दर कहै मेरो मन लीनौ,
जिन चरणे जिम मानस हंस । सु० । ३ ॥

वासुपूज्य जिन स्तवन

राग—गोड़ी केदारो

भविका तुमे[3] वासुपूज्य नमो री ।
सुखदायक त्रिभुवन को नायक, तीर्थंकर बारमो री । १ । भ० ।

---

१ अरति । २ वावत सुख । ३ तुम्हें ।

भाव भगति भगवंत भजोरी, चंचल इंद्री दमोरी।
निश्चल जाप जपो जिनजी को, दुर्गति दुख गमोरी। २। भ०।
मेरो मन मधुकर प्रभु के पदांबुज, अहिनिस रंग रमोरी।
समयसुन्दर कहै कोण कहुं जग, श्री जिनराज समो री। ३। भ०।

विमल जिन स्तवन

राग—मारुवणी धन्यासिरी, जइतसिरी

जिनजी कुं देखि मेरउ मन रींझइ री।
तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इन्द्र चामर वींझइ री। जि०।१।
कणक सिंहासण स्वामी वइसण, चैत्य वृक्ष शोभित कीजइ रीं।
भामंडल झलकै प्रभु पूठि, देखत[1] मिथ्यामति खीजइ री[2]। जि०२।
दिव्य नाद सुर दुन्दुभि वाजइ, पुष्प वृष्टि सुर विरचीजइ री।
समयसुन्दर कहइ तेरे विमल जिन, प्रातीहारज पेखीजइ री। जि०३।

अनन्त जिन स्तवन

राग—सारंग

अनंत तेरे गुण अनंत, तेज प्रताप तप अनंत।
दरसण चारित अनंत, अनंत केवल ज्ञान री।१। अ०।
अनंत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति-सुख विलास।
अनंत वीरज अनंत धीरज, अनंत सुकल ध्यान री।२। अ०।

१. पेखत। २. छीजई री

अनंत जीव कउ तूं आधार, अनंत दुख कउ छेदणहार।
हमकुं स्वामी पार उतार, तूं तो कृपा निधान री।३। अ०।
समयसुन्दर तेरे जिणंद, प्रणमति चरणारविंद।
गावति परमाणंद सारंग, राग तान मान री।४। अ०।

धर्म जिन स्तवन

राग–आसाउरी

अलख अगोचर तूं परमेसर, अजर अमर तूं अरिहंत जी।
अकल अचल अकलंक अतुल बल, केवलज्ञान अनंत जी।१ अ०।
निराकार निरंजन निरुपम, ज्योतिरूप निरखंत जी।
तेरा सरूप तुं ही प्रभु जाणइ, के जोगींद्र लहंत जी।२ अ०।
त्रिभुवन स्वामी तुं अंतरजामी, भय भंजण भगवंत जी।
समयसुन्दर कहै तेरे धरम जिन, गुण मेरे हृदय वसंत जी। ३ अ०।

शान्ति जिन स्तवन

राग–मारूणी

शांतिनाथ सुणहु[१] तूं साहिब, सरणागत प्रतिपालो जी।
तिण हूँ तोरइ सरणइ आयउ, स्वामी नयण निहालो जी।१।
दयाल राय तारउ जी, मुंने आवागमण निवारउ जी।
हूँ सेवक सामी तुमारो जी, तूं साहिब शांति हमारउ जी।२।द०।

१ सुणयउ

पूरव भव राख्यो पारेवो, तिम मुझनें सरणइ राखि जी।
दीनदयाल कृपा करि स्वामी, मुझ नें दरसण दाखि जी।३।द०।
शांतिनाथ सोलमउ तीर्थंकर, सेवे सुरनर कोडि जी।
पाय कमल प्रभु ना नित प्रणमइ, समयसुन्दर कर जोड़िजी।४ द०।

कुन्थु जिन स्तवन

राग-भैरव

कुंथुनाथ कुं करूं प्रणाम, मन वंछित पूरवइ सुख काम। कुं०१।
अंतरजामी गुण अभिराम, अहिनिस समरूं अरिहंत नाम। कुं०२।
वीनति एक करूं मोरा स्वाम, द्यो मोहि मुगति पुरी को धाम। कुं०३।
किसके हरि हर किसके राम, समयसुन्दर करे जिनगुण ग्राम। कुं०४।

अर जिन स्तवन

राग-नट्टनारायण

अरनाथ अरियण गंजणं। अ०।
मोह महीपति मान विहंडण, भवियण के दुख भंजणं। अ०।१।
मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुरनर को मन रंजणं।
सुन्दर रूप वदन चंद सोभित, लोचन निरंजन खंजनं[१]। अ०।२।
हरि हर देव प्रमुख व्यासंगी, तूं मन सुख[२] को मंजणं[३]।
समयसुन्दर कहै देव[४] तूं साचो, जो निराकार निरंजणं। अ०।३।

१ खंडण। २ दोप। ३ मंजण। ४ सो देव सांचउ।

मल्लि जिन स्तवन

राग—सारग मल्हार

मल्लि जिन मिल्यउ री मुगति दातार ।
फिरत फिरत प्रापति मइं पायउ, अरिहंत तुं आधार ।१।म०।
तुम्ह दरसण विन दुख सह्या बहुला[1], ते कुण जाणइ पार।
काल अनंत भम्यो भवसागर, अब मोहि पार उतार ।२। म०।
सामल वरण मनोहर मूरति, कलस लांछण सुखकार।
समयसुन्दर कहै ध्यान एक तेरउ, मेरे चित्त[2] मझार ।३। म०।

मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग—रामगिरी

सखि सुन्दर रे पूजा सतर प्रकार ।
श्री मुनिसुव्रत सांमो केरउ रे, रूप बण्यो जगि[3] सार ।स०।१।
मस्तकि मुकट हीरे जड़्यउ रे, भालइ तिलक उदार ।
बांहिं मनोहर[4] बहिरखा रे, उर मोतिन कउ हार ।स०।२।
सामल वरण सोहामणो रे, पदमा मात मल्हार ।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, सफल मानव अवतार[5] ।स०।३।

नमि जिन स्तवन

राग—आसाउरी

नमुं नमुं नमि जिन चरण तोरा,
हूँ सेवक तूं साहिब मोरा ।न०।१।

१ बहु। २ हृदय। ३ अति। ४ पहिर्यां। ५ पामीजइ भव पार।

वीर जिन स्तवन

राग—परजयो

ए महावीर मो[1] कछु देहि दानं,
हूँ द्विज मीत तूं दाता प्रधानं। ए०।१।
ए वूठो तूं कनक की धार, अष्ट लक्ष कोटि मानं।
ए मैं कछु न पायो ताम, प्रापति पुण्य विनानं। ए०।२।
ए तव देवदूष्य को अर्द्ध, दीनो कृपा निधानं।
ए गुण समयसुन्दर गाया, को नहीं प्रभु समानं। ए०।३।

कलश

राग—धन्याश्री

तीर्थंकर रे चोवीसे मैं संस्तव्या रे।
हां रे ऋषभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे। ती०।१।
वसु इन्द्री रे रस रजनीकर संवच्छरें रे, हां रे अहमदावाद मझार।
विजयादसमी दिनें रे गुण गाया रे, तीर्थंकर ना शुभ मनें रे। ती०२।
खरतरगच्छ रे श्रीजिनचंद्रसूरीसरू रे, हां रे श्रीजिनसिंघसुरीस।
सकलचंद मुनिवरू रे सुपसायें रे, समयसुन्दर आणंद करू रे। ती०

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर गीतम्।

[इति श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां गीतानि संपूर्णानि समाप्तानि। संवत् १६५७ वर्षे अहम्मदावादे लि०।
श्री पोकरण नगरे स० १६८८ वर्षे श्रावण वदि ८ दिने।]

---

१ कछु मोहि देहु दान।

श्री चौबीस जिन सवैया

नाभिराय मरुदेवी नंदन, युगलाधर्म निवारण हार।
सउ बेटां नै राज सौंपि करि, आप लियौ संयम व्रत भार॥
समौसर्या स्वामी सेत्रुंज गिरि, जिनवर पूर्व निवाणुं वार।
समयसुन्दर कहै प्रथम तीर्थंकर, आदिनाथ सेवो सुखकार॥१॥

पंचास कोड़ी लाख सयरोपम, आदिनाथ थकी गया जाम।
वंस इखाग मात विजया कुखि, जनम अयोध्या नगरी ठाम॥
तारंगे मूरति अति सुन्दर, गज लंछन स्वामी अभिराम।
समयसुन्दर कहै अजितनाथ नै, प्रह ऊठी नै करूं प्रणाम॥२॥

सेना मात कूखि मानस सर, राजहंस लीला राजेसर।
प्रगट रूप पणि तूं परमेसर, अलख रूप पणि तूं अलवेसर॥
हय लंछण अति रूप मनोहर, वंश इक्खाग समुद्र शशिहर।
समयसुन्दर कहै ते तीर्थंकर, संभवनाथ अनाथ को पीहर॥३॥

सुरगुरु सहस करइ मुखि रसना, तउ पणि कहितां नावइ अंत।
गुण गिरुआ परमेश्वर केरा, प्रकट रूप त्रिभुवन पसरंत॥
भव समुद्र तारण त्रिभुवन पति, भय भंजण स्वामी भगवंत।
समयसुन्दर कहै श्री अभिनंदन, चौथउ तीर्थंकर अरिहंत॥४॥

शौक बिहुं झगड़ौ समझाव्यउ, सुमति दोध माता नै सार।
सुमति सहु वांछइ नर नारी, सुमति दो हे मुझ सरजनहार॥

सुमति थकी सीजइ मन वंछित, इह लोक नैं परलोक अपार।
समयसुन्दर कहइ सुमति तीर्थंकर, सेवउ सुमति तणउ दातार ।५।

वदन पदम सम, कनक पदम क्रम,
पदम पाणि उपम, पदम इइ पाय जु ।
पदम लंछन धर, पदम बांधव कर,
चरण पदम चर, पदम की छाय जु ॥
सुसीमा माता सुहाय, पदम सय्या बिछाय,
पदम प्रभु कहाय, नामैं जिनराय जु ।
पदमनिधान पायउ, पदमसरसि न्हायउ,
समयसुन्दर गायउ, सुगुरु पसाय जु ॥६॥

....................थयउ आकाश,
इन्द्र सेवा आवै जास, करै अरदास जु ।
पाप कौ करौ प्रणास, तोड़ौ कर्म बंध पास,
टालो भव केरउ त्रास, पूरो मन आस जु ॥
माता केरइ कर फास, पिता का थया सुपास,
सुकुमाल सुविलास, अधिक उल्हास जु ।
समयसुन्दर तास, चरण दासानुदास,
जपति सुजस वास, साहिब सुपास जु ॥७॥

चंद्रपुरी अवतार, लच्मणा माता मल्हार,
चंद्रमा लांछन सार, उरु अभिराम में ।
वदन पुनिमचंद, वचन शीतलचंद,
महासेन नृपचंद, नव निधि नाम में ॥

तेज करइ भिन्न भिन्न, फटिक रतन बिंब,
मांड्यौ है.........दिगम्बर धाम में।
समयसुन्दर इम, तीरथ कहइ उतम,
चंद्रप्रभ भेट्यो हम, चंदवारि गाम में ॥८॥

काकंदी पुरी कहाय, राजा श्री सुग्रीव राय,
रमणीक रामा माय, उरे अवतार जू।
मकर लंछन पाय, एकसौ धनुष कहाय,
प्रभु को दीक्षा पर्याय, वरस हजार जू॥
निरमम निरमाय, कर्म आठ खपाय,
बि पूर्व लाख आयु, पाम्यौ भव पारंजू।
समयसुन्दर ध्याय, साचौ इक तु सखाय,
सुविधि जिणंदराय, मुगति दातार जू॥९॥

नगर भद्दिलपुर, दृढरथ नेरवर,
नंदा कुखि सरवर, लीला राजहंस जू।
श्रीवच्छ लांछनधर, धन राशि मनोहर,
नउसै नइ साठि कर, तनु परसंद्र जू॥
एक असी गणधर, इक लाख मुनिवर,
मुगति समेतगिर, इक्ष्वाकु है वंस जू।
प्रणमै समयसुन्दर, दसमौ ए तीर्थंकर,
श्री शीतल सुरतर, कुल अवतंस जू॥१०॥

कोउ ब्रह्मा भजौ कोई कृष्ण भजौ,

कोई ईशान को दुख डारक हइ ।
रागरु द्वेष जिते जिणदेव,
सोउ देव सुख कउ कारक हइ ॥
श्री वीतराग निरंजन देव,
दया गुण धर्म को धारक हइ ।
समयसुन्दर कहइ भविका भजउ इक,
श्रेयांस तीर्थंकर तारक हइ ॥११॥

जम वाहण कहइ जाण नीर, पणि वहु निरंतर ।
सुपन दीठ शुभ हाणि अशुभ, मारग अभ्यन्तर ॥
दसराहे वहु दुख हणइ, राजा हथियारे ।
दूध न धावण देइ, महिष नहीं सुख जमारे ॥
कवि एम समयसुन्दर कहै, लाखीणो अवसर लह्यो ।
वासुपूज्य शरण आव्यउ वही, लांछन मिषि लागी रह्यो ।१२।

विमल जाति कुल वंश, विमल सुर चवण विमानं ।
विमल पिता कृतवर्म, विमल श्यामी सुवखानं ॥
विमल कंपिलावास, विमल तिहां दीक्षा महोत्सव ।
विमल नाण निर्वाण, विमल सर्व गुण संस्तव ॥
वलि चढ्यो विमलगिरि विचरतो, पणि सीधो समेतगिरि ।
कर जोड़ि समयसुन्दर कहइ, ते विमल नाथ नै तूं समरि ।१३।

बल भी तेरो अनंत दल भी तेरो अनंत,
पुण्य को फल अनंत साधे षट खंड जु ।

भोग भी तेरो अनंत जोग भी तेरो अनंत,
प्रयोग तेरो अनंत प्रताप प्रचण्ड जु ॥
ज्ञान भी तेरो अनंत दर्शन भी तेरो अनंत,
चरित्र भी तेरो अनंत आज्ञा अखण्ड जु ।
सुन्दर कहइ सत्यमेव (सुन्दर) सुरनर करइ सेव,
अनंत तीर्थंकर देव तारण तरण्ड जु ॥१४॥

श्रेयांस नी परै दान तुम्हे द्यउ, जिम संसार समुद्र तरौ ।
पालउ शील सती सीता जिम, तप सुन्दरि राखिवौ आदरौ ॥
भरत नाम चक्रवर्त्ती तणी परि, भवियण मन भावना धरौ ।
समयसुन्दर कहइ समवशरण मांहि धर्मनाथ कहै धर्म करौ ।१५।

विश्वसेन पिता माता अचिरा, मृग लांछन सोवन तनु कांति ।
चउसठ इन्द्र मिली न्हवराव्यौ, मेरि उपरि मनि आणी खांति ॥
मरकी गई प्रजा सुख पाम्यौ, देश मांहि थई सुख शान्ति ।
समयसुन्दर कहै मात पिता ए, पुत्र तणौ दीधौ नाम शांति ॥१६॥

तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, सुर चामर ढालइ सुविहाण ।
दिव्यनाद सुरदुन्दुभि वाजइ, पुष्पवृष्टि पणि जानु प्रमाण ॥
कनक सिंहासण चारु चेइतरु, भामंडल झलकै जिम भाण ।
समयसुन्दर कहइ समोसरण में, कुन्थुनाथ इम करइ वखाण ।१७।

चुलसी लाख अश्व रथ हाथी, छन्नू कोडि पायक परिवार
बत्तीस सहस मुकुट-बद्ध राजा, चौसठ सहस अंतेउर

पचवीस सहस करइ यक्ष सेवा, चउदं रत्न नव निधि विस्तार ।
समयसुन्दर कहइ अर तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती पण पदवी सार ।।१८।।

पूरव भव ना मित्र महीपति, प्रतिबोध्या पूतलि वइराग ।
स्त्री पणइ तीर्थ वरताव्यौ, स्त्री आगै बैठी लहि लाग ।।
निराकार निरंजन स्वामी, उगणीसमौ ए श्री वीतराग ।
समयसुन्दर कहइ भव मांहें भमतां, मल्लिनाथ मिल्यौ मुझ भाग।१६

हरि हर ब्रह्मा देव तणै रे, देहरइ भूला काय भमौ ।
समकित सूधो धरउ मन मांहे, मिथ्या मारग दूर गमौ ।।
आठ करम बंधन थी छूटौ, अरिहंत देव नैं ध्याय नमौ ।
समयसुन्दर कहइ श्री मुनिसुव्रत, वांदउ तीर्थंकर वीसमौ ।।२०।।

गुरु मुख शुद्ध क्रिया विधि साचवी, सामायक नैं पोसउ करौ ।
दृढ आसन बैसी मन निश्चल, ध्यान एक अरिहंत धरौ ।।
जरा मरण दुख जल पूरण, भविक जेम संसार तरौ ।
समयसुन्दर कहै लय लगाड़ि नइ,
नमि नमि नमि नमि मुख उचरौ ।।२१।।

बे बब्बीहा भाई अरे काहे री राजुल बाई,
अरी तें कहां देखे नेमि मैं तो विरह न खमाई ।
विरह कोकिल सहकार विरह गज रेवा होइ,
विरह बब्बीहा मेह विरह सर हंस विछोई ।।
चक्रवाक चकवी विरहा, विरह सहु व्यापी रह्यौ ।
म करि दुख राजुल मुधा कि,समयसुन्दर साचौ कह्यौ ।।२२।।

वे बब्बीह भाई,
आयउ री वसंत मास, सब जन पूगी आस,
रमत खेल रास, उडत अबीर जू ।
ऊछलै गुलाल लाल, लपटाणी दोउ गाल,
वाहइ पिचरके विचाल, भीजे चोली चीर जू ।
अति भलो आम बाग, छैल छबीला लाग,
सुन्दर गीत सराग, सुन्दर सरीर जु ॥
समयसुन्दर गावै, परम आणंद पावै,
वसंत की तान भावै, गुहिर गंभीर जु ॥२३॥
पंच दिन करि ऊण, छमासी पारणा दिन,
झटकि पड्या बंधन पग का जंजीर जू ।
दुन्दुभि वाजी आकास, प्रगट्यौ पुण्य प्रकास,
चन्दना की पूगी आस, पाम्यौ भवतीर जू ॥
साध तौ चवदे हजार, साधवी छत्तीस सार,
वीरजी कौ परिवार, गौतम वजीर जु ।
समयसुन्दर वर, ध्यान धर निरंतर,
चौवीसमौ तीर्थंकर, वांद्यौ महावीर जु ॥२४॥
आदिनाथ दे आदि स्तव्या, चौवीस तीर्थंकर ।
पवित्र जीभ पण कीध, शुद्ध थयौ समकित सुन्दर ॥
सुणौ भणौ सहु कोइ, श्रवण रसना करौ सफला ।
इहु लोक नैं पर लोक, सफल करौ पछि सगला ॥
चौवीस सवैया चतुर नर, कहजो कर मुख नी कला।
समयसुन्दर कहइ सांभलौ, ए मीठा मिश्री ना डला।२५।

ऐरवत क्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि*

(८) जुत्तसेण जिन गीतम्

राग—केदारउ, ताल एकताली

जुत्तसेण तीर्थंकर सेती, मोहि रह्या मन मोरा रे।
मालति सुं मधुकर जिम मोह्या, मेघ घटा जिम मोरा रे। जु०।१।
मयगल जिम रेवा सुं मोह्या, हंस मानस सुं सदोरा रे।
मीन मोह्या जिम जलनिधि मांहे, चंद सुं जेम चकोरा रे। जु०।२।
पूरब पुण्य संजोगे पाया, दुर्लभ दरसन तोरा रे।
समयसुन्दर मांगइ तुझ सेवा, नमि नमि करत निहोरा रे। जु०।३।

(९) अजितसेण जिन गीतम्

राग—शुद्ध नट चर्चरी ताल संगीत

आवइ चौसठ इन्दा, मन में रंगइ ए। आ०।
भगवंत नी भगति करइ, सुर गिरि शृङ्गइ। आ०। १।
धप मप धौं मादल बाजइ, भुङ्गल भेरि ए। आ०।
तत थे तत थे नट्टुया नाचइ, फरंगट फेरि। आ०। २।
अजितसेन अरिहंत नइ, चरणे लागइ ए। आ०।
समयसुन्दर संगीत गावइ, शुद्ध नट रागइ। आ०। ३।

* इस चौवीसी के प्रारभिक ७ गीत अप्राप्त हैं।

(१०) शिवसेन जिन गीतम्

राग—काफी अठवाला

दसमउ तीर्थंकर शिवसेन नामा साचउ । द०।
निराकार निरंजन निरुपम, मोह नहीं तिहां माचउ । द०।१।
हरि हर ब्रह्मा देव देखी नइ, नर नारी मत नाचउ ।
आप तरइ अवरां नइ तारइ, देव तिको तिहां राचउ । द०।२।
कल्पवृक्ष समउ प्रभु कहियइ, जो जोइयइ ते जाचउ ।
समयसुन्दर कहि शिवसेन नाम तउ, समवायांग सूत्र मइं वांचउ ।

(११) देवसेन जिन गीतम्

राग—मारूणी एकताली देसी नी

साहिब तुं है सांभलउ, हूँ वीनति करुं आप वीत । सा०।
चउरासी लख हूँ भम्यउ, तिहां वेदन सही विपरीत । सा०।१।
देवसेन देव तुं सुण्यउ, परम कृपाल कहीत ।
तिण तुझ शरणइ हुं आवियउ, हिव तुं देव तुं गुरु मीत । सा०।२।
ध्यान इक तोरउ धरूँ, चरणइ लाउँ चीत ।
समयसुन्दर कहइ माहरइ, हिव परमेसर सुं प्रीत । सा०।३।

(१२) नक्खत्तसत्य जिन गीतम्

राग—वसन्त

नमुं अरिहंत देव नक्खत्त सत्य । न० ।

मुगति जातां थकां मेलइ सत्थ। न० ।१।
पालउ जीव दया इह धरम पत्थ।
भगवंत भाखइ सवत्थ सत्थ। न० ।२।
दुर्गति पड़तां आडउ दिइ हत्थ।
समयसुन्दर कहइ प्रभु छइ समत्थ। न० ।३।

(१३) अस्संजल जिन गीतम्

राग—भूपाल अठतालउ

तेरमउ अस्संजल तीर्थंकर, तिण देशन ए दीधी रे।
छ जीव नी रचा तुम करजो, मुगति तणी वाट सीधी रे। ते०।१।
वीतराग नी वाणी मीठी, प्रेम करी जिण दीधी रे।
भव समुद्र मांहें ते भवियण, नहीं भमइ वात प्रसिद्धी रे। ते०।२।
आज्ञा सहित क्रिया सहु कीधी, दीक्षा पणि फलइ लीधी रे।
समयसुन्दर कहइ मन शुद्ध करजो, धर्म थकी राज रिद्धी रे। ते०३।

(१४) अनन्त जिन गीतम्

राग—वेलावल इकताला

अहो मेरे जिन कुं कुण ओपमा कहूँ।
काष्ठ कलप चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहुँ। अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूँ।
जल दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण तउ हुँ किम सदहुँ।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, संख कुटिलता वहुँ।
समयसन्दर कहइ अनंत तीर्थंकर, तुम मइं दोष न लहुँ। अ०।३।

(१५) उपशान्त जिन गीतम्

राग—मारूणी एकताली

बार परखदा बइठो आगलि, आप आपणइ उल्लासइ रे।
पनरमउ श्री उपशांत तीर्थंकर, चउविधि धर्म प्रकाशइ रे।१।
धन जीव्यु रे २ धन जीव्युं आज अम्हारुं।
रंग्या लोक कहइ नरनारी, वचन सुण्युं जे तुम्हारुं रे।
धन जीव्युं रे २ ॥ आंकणी ॥
पंइतालीस धनुष नी उंची, कंचन वरणी काया रे।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, प्रणमइ सुरनर पाया रे।२ ध०।
दस लाख वरस नुं आऊखुं, सुप्रतिष्ठ गिरि (घर) सीधारे।
समयसुन्दर कहइ जीभ पवित्र थइ, जिन गुण ग्राम मइं कीधा रे।३।

(१६) गुत्तिसेण जिन गीतम्

राग—मिश्र विहागड़उ केदारऊ। एकताला

सोलमा श्री गुत्तिसेण[1] तीर्थंकर सांभलउ,
श्री शांतिनाथ समान[2] तुम्हे तउ ते सांभलउ।
पणि तिण तउ पारेवउ शरणे राखियउ,
तिम मुझ शरणे राखि मिलइ जिम भाखियउ।१।
चालिस धनुस शरीर सोवन मइ-सोहतउ,
आउखुं लाख वरस लांछन मृग मोहतउ।२।

अशुद्ध—१ अनंतसेन-गजसेन। २ सरिखुं।

राशि मेल मन मेल विशापथ लाहणा,
साहिब सेवक जोड़ सेवु पय तुम तणा ।३।
भवि भवि देज्यौं सेव म करिस्यउ वेगलउ,
समयसुन्दर कहि एम ए प्रेम पूरउ मलउ।४।

(१७) अतिपास जिन गीतम

राग-वेलावल

सतरमउ श्री अतिपास तीर्थंकर, मन वंछित फल नउ दातार।
बे बोल मांगु बे कर जोड़ी, भवि भवि व्रत के समकित सार।१।
भव्य अछु पणि भारी करमउ, दुषम काल भरत अवतार।
पणि समरथ साहिब तु सेव्यउ, पहुंचाड़िसी जाणु छु पार।२।
सिद्धि गमन परिपाक जे जिम छइ, ते तिम छइ तिम तउ निरधार।
समयसुन्दर कहइ जां छु छदमस्थ, तां सीम धरम करिसी श्रीकार।

(१८) सुपास जिन गीतम्

राग—तोड़ी

सुपास तीर्थंकर साचउ सही री। सु०।
अलख अगोचर अकल सरूपी, राग द्वेष लव लेश नहीं री। सु०।
मीन लांछन तीस धनुष मनोहर, काया कंचन वरण कही री।
श्री अरनाथ समउ ए अरिहंत, सुप्रतिष्ठ गिरि सुगति लही री। सु०।
गुण ग्राम कीधा गिरुया ना, दुर्गति नी वात दूरी रही री।
समयसुन्दर कहइ सफल जनम थयउ, वीतराग देवनी आण वही री।

(१९) मरुदेव जिन गीतम्

राग—मालवी गउड़ड

ओगणीसमउ मरुदेव अरिहंत, मल्लिनाथ समान रे।
नील वरणी तनु विराजइ, पुरुप रूप प्रधान रे।१। ओ०।
जिण दिन जिन[1] चारित्र लीधुं, तिण दिन केवलज्ञान रे।
इन्द्र चउसठि मिली आवइं, गायइं गीत नइं गान रे।२। ओ०।
तुझ विना हुं भम्यउ भूलउ, जिम पड़चउ मृग रान रे।
समयसुन्दर कहइ हिव हुं, धरिस तोरुं ध्यान रे।३। ओ०।

(२०) श्री सीधर जिन गीतम्

राग—अडाणउ कनड़उ

हिव हुँ वांदुं री वीसमउ सीधर।
सामि नित ऊठी ल्युं नाम। हिव०।
हुं करुं गुण ग्राम, केवल मुगति काम।
प्रभु सोहइ अभिराम, ऐरवरत ठाम। हिव०।१।
हरिवंश कुल भाण, उपनुं केवल नाण।
सरस करइ वखाण, अमृत वाणि।
जीवदया पालउ जाण, आप समा पर प्राण।
समयसुन्दर कहइ, वचन प्रमाणि। हिव०।२।

---

१ स्वामि।

(२१) सामकोठ जिन गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

श्रीसामकोठ[१] तीर्थंकर देवा,
एकवीसमा हिव नाम कहेवा ।१। श्री सा० ।
जउ जाणउ भव समुद्र तरेवा,
तउ वीतराग नइ वचने रहेवा ।२। श्री सा० ।
मुझ मन भागुं भव मइं भमेवा,
समयसुन्दर कहइ हुं करिस्युं सेवा ।३। श्री सा० ।

(२२) अग्गिसेण जिन गीतम्

राग—गउड़ी

अग्गिसेन[२] तीर्थंकर उपदिसइ, एह संसार असार रे ।
पुण्य करउ रे तुम्हे प्राणिया, सफल करउ अवतार रे ।१। अ०।
हरिवंश सामवरण तणू, संख लाछन छइ श्रीसार रे ।
चित्रकूट परवत ऊपरिं, पामीयुं शिव सुख सार रे ।२। अ०।
एह अरिहंत बावीसमउ, ऐरवरत क्षेत्र मझार रे ।
श्री नेमिनाथ ना[३] सारिखउ, समयसुन्दर सुखकार रे ।३। अ०।

(२३) अग्गपुत्त जिन गीतम्

राग—अधरस

वीतराग वांदिस्युं रे हिव हुँ, अग्गपुत्त[४] अरिहंत।

१ समकोटि । २ अग्निसेन । ३ सरिखुं सवि उपम । ४ हुउ पवित्र ।

संसार[1] समुद्र नइ पारि उतारइ, भय भंजण भगवंत।१।वी०।
नील वरण महिमा निलउ रे, सरप लांछण सोभंत।
तीर्थंकर तेवीसमउ रे, नव हथ तनु निरखंत।२।वी०।
पारसनाथ सरिखु सहु रे, एहना गुण छइ अनंत।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ इन्द्र, तउ पिण कहि न सकंत।वी०।

(२४) वारिसेण जिन गीतम्

राग—विहागड़उ

वारसेण तीर्थंकर ए चउवीसमउ,
सगली परि श्री महावीर समउ।१।वा०।
खरउ वीतराग देव खंति खमउ,
भजउ भगवंत जिम भव न भमउ।२।वा०।
चरणे[2] चित्त लगाइ नमउ,
समयसुन्दर कहइ मुगति रमउ।३।वा०।

[कलश]

राग—धन्याश्री

गाया गाया री ऐरवरत तीर्थंकर गाया ।
चउवीसां ना नाम चीतार्या, समवायांग सूत्र मइं पाया री।१ ऐ०।
संवत सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया ।
हाथी साह तणइ आग्रह कहइ, समयसुन्दर उवझाया रे।२ ऐ०।

इति ऐरवरत क्षेत्र २४ तीर्थंकर गीतानि समाप्तानि ।

१ अथाग। २ समयसुन्दर कहि ए चुवीसमु, श्री जिन वांदी भय भउ गमु। (पाठान्तर भद्रमुनि, बुद्धिमुनि प्रेषित कापी से)

चन्द्रानन १ सुचन्द्र २ अग्गिसेण ३ नंदसेण ४ इसिदिन ५ वयधारि ६ सामचंद ७ जुत्तसेन ८ अजितसेन ९ शिवसेन १० देवसेन ११ नक्खत्तसत्थ १२ असिंजल १३ अनंत १४ उवसंत १५ गुत्तिसेण १६ अतिपास १७ सुपास १८ मरुदेव १९ सीधर २० सामकोठ २१ अग्गसेण २२ अग्गिपुत्त २३ वारिसेण २४।

इति श्रीसमवायांगसूत्रोक्त ऐरवतक्षेत्र २४ तीर्थंकरनामानि।

[स्वयं लिखित प्रति से]

विहरमान-वीसी-स्तवनाः

१. सीमंधर जिन गीतम्

राग—मारुणी

सीमंधर सांभलउ, हुं वीनति करूँ कर जोड़ि। सी०।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, मुं नइ भव बंधण थी छोड़ि। सी०।१।
तुम मूं विचि अंतर घणउ, किम करूँ तोरी सेव।
देव न दीधि पांखड़ी, पणि दिल मइं तुं इक देव। सी०।२।
चंद चकोर तणी परिं, तूं वस्यउ मोरइ चीति।
समयसुन्दर कहइ ते खरी, पे परमेश्वर स्युं प्रीति। सी०।३।

२. युगमंधर जिन गीतम्

राग—गौड़ी

तूं साहिब हूँ सेवक तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी।
हुं प्रभु तोरइ सरणै आयउ, तुं मुझ नंइ साधारि जी।१।

५. सुजात जिन गीतम्

राग—गुंड

सुजात तीर्थंकर ताहरी, हुयइ देव किण होड़ि रे ।
देव बीजे तउ दूषण घणां, तुं मइ नहीं तिल खोड़ि रे ।१।सु०।
पूरव लाख ब्यांसी पछी, छती राज ऋद्धि छोड़ि रे ।
संयम मारग आदर्यउ, महा मोह दल मोड़ि रे ।२।सु०।
तुझ वीतराग नइ समरतां, तूटइ करम नी कोड़ि रे ।
समयसुन्दर कहइ ते भणी, तूंनइ नमूं कर जोड़ि रे ।३।सु०।

६. स्वयंप्रभ जिन गीतम्

राग—प्रभाती

सयंप्रभ तीर्थंकर सुन्दरु ए, मित्रभूति रायां चा कुंअरु ए।१ स०।
सुमंगला राणी माता उरि धरू ए, वीरसेना राणी कंत सुखकरु ए।
चंद लांछन देव दया परू ए, समयसुदर चा परमेसरू ए।२ स०।

७. ऋषभानन जिन गीतम्

राग—श्रीराग

(ढाल :—ऐउ २ चंद्रानन जिणचंद नमो, ए चदनी जाति ।)
ऐउ २ रिषभानन अरिहंत नमो, भय भंजण श्री भगवंत नमो ।१।
धातकीखंड जिणिंद नमो, केवलज्ञान दिणिंद नमो ।२ रि०।
सिंह लांछन अभिराम नमो, समयसुन्दर चा सामि नमो।३ रि०।

८ अनन्तवीर्य जिन गीतम्

राग—कल्याण

(ढाल :—कृपानाथ तइ कृप नू उवयंउ री। कृ०। एहनी जाति)

अनंतवीरिज आठमउ तीर्थंकर। अ०।
राग द्वेष रहित कुण बीजउ,
देव कहुं हरि ब्रह्मा संकर। १। अ०।
त्रिभुवन नाथ अनाथ कउ पीहर,
गुण अनंत अतिसय अतिसुन्दर।
सुर नर कोडि करइ तुम्ह सेवा,
चउसठि इंद्र तिके पणि किंकर। २। अ०।
धातकीखंड मइ धरम प्रकासइ,
अरिहंत भगवंत तु अलवेसर।
समयसुन्दर कहइ मनसुधि माहरइ,
इहभवि परभवि तुं परमेसर। ३। अ०।

९ सूरिप्रभ जिन गीतम्

राग—गउड़ी

(ढाल:—छइ मोटुं पणि पदम सरोवर। एहनी जाति)

श्री सूरिप्रभ सेवा करस्युं,
ध्यान एह भगवंत नु धरिस्युं। श्री०।
पाय कमल प्रभु ना अनुसरस्युं,

संसार समुद्र हुँ हेला हरिस्युं । श्री०॥१॥
पंच प्रमाद दूरि परिहरस्युं,
वीतराग देव ना वचन समरस्युं । श्री०॥२॥
अरिहंत अरिहंत नाम ऊचरिस्युं,
समयसुन्दर कहइ हूँ इम तरिस्युं । श्री०॥३॥

१० विशाल जिन गीतम्

राग—सुघडउ

(ढालः—मन जाणइ के सिरजणहार । एहनी जाति)

जिनजी वीनति सुणउ तुम्हे स्वामि विसाला,
तुम्हनइ सुण्या मंइ दीनदयाला । जि०।१।
मिली न सकुं आया समुद्र विचाला,
पणि तुझ नाम जपुं जपमाला । जि०।२।
भगत ऊधरतां मत करउ टाला,
समयसुन्दर चा तुम्हे प्रतिपाला । जि०।३।

११ वज्रधर जिन गीतम्

राग—वसंत

(ढालः—चंद्रप्रभ भेट्यउ मइ चंदवारि । एहनी जाति)

वज्रधर तीर्थंकर वांदु पाय, जिहां छइ तिहां जाय ।
पणि पूरव विदेह मइ ते कहाय । १ । व० ।

मिलवानी मुझ नहि संगति काय,
दरसण दीठां विण दुख थाय।
समयसुन्दर कहइ मुझ करि पसाय,
सुपनंतरि पणि दरसण दिखाय।२।व०।

१२ चन्द्रानन जिन गीतम्

राग—ललित

(ढालः—मेरउ गुरु जिणचंद सूरि। एहनी जाति)

चंद्रानन जिणचंद, दरसण दीठां आणंद।
धातकी खंड मंडाण, वीतराग विहरमाण।
भविक कमल भाण, दूरि करइ दंद।१।चं०।
वृषभ लांछन पाय, पदमावती राणी माय।
पिता वालमीक राय, नमइ नर वृन्द।२।चं०।
दक्षिण भरत वर, अयोध्या नामइ नगर।
प्रणमइ समयसुन्दर, पाय अरविन्द।३।चं०।

१३ चन्द्रबाहु जिन गीतम्

राग—मारुणी

(ढालः–देखि २ जीव नटावइ अइमउ नाटक मडगाउ री। दे० एहनी जाति)

चंद्रबाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरउ हो। चं०॥
अवर देव तिके वणराइ, नावइ कदि नेरउ हो। चं० ॥१॥

तुझ समरण थकी मुझ, करम मूंकइ केरउ ।
सहस किरण सूरिज ऊग्यां, किम रहइ अंधेरउ हो । चं० ॥२॥
वीतराग देव विना हुं, देव न मानु अनेरउ ।
समयसुन्दर कहत मुझ, सरणउ एक तेरउ हो । चं० ॥३॥

१४ भुजंग जिन गीतम्

राग—मारुणी

भुजंग तीर्थंकर भेटियइ जी, त्रिभुवन केरउ ताय ।
ऊंची पांचसइ धनुषनी जी, कंचन वरणी काय । भु०॥१॥
पुष्करार्ध मांहे परगड़उ जी, केवलज्ञानी कहाय ।
विहरमान विचरइ तिहां जी, चउरासी पूरव लाख आय । भु०॥२॥
समोसरण मांहे बइसि नइ जी, देसणा धइ जिनराय ।
समयसुन्दर कहइ हूँ दूरि थी जी, प्रणमु प्रभु ना पाय । भु०॥३॥

१५ ईसर जिन गीतम्

राग—शुद्ध नट

ईसर तीर्थंकर आगइ आवइ इंदा । ए आ ।
बत्रीस बद्ध नाटक करइं, नव नव नव छंदा । ए आ । ई० ।१।
भवनपती देव व्यंतर, सूरिज चंदा । ए आ ।
देवलोक ना इन्द्र आवइ, गावइ गुण वृन्दा । ए आ । ई० ।२।
भगवंत नी भगति जुगति, मुगति आणंदा । ए आ ।
समयसुन्दर वंदण चाह, चरणारविन्दा । ए आ । ई० ।३।

१६ नेमि जिन गीतम्

राग—गउड़ी

विहरमान सोलमउ तु' नेमि नाम ।
दखिण विदेह नलिनावती विजए, पुंडरीकिणी पुरी ठाम ।१ वि०।
वीरराज सेना कउ नंदन, इन्द्र नमैं सिर नामि ।
सुरतरु चिन्तामणि सरिखउ तूं, पूरवइ वंछित काम ।२ वि०।
केवल ज्ञान अनंत गुणे करी, अरिहंत तूं अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ तिण करूं तोरा, रात दिवस गुण ग्राम ३ वि०।

१७ वीरसेन जिन गीतम्

राग—सबाब

वीरसेन जिन नी सेवा कीजइ,
पवित्र वचन अमृत रस पीजइ ।१। वीर०।
पुखरारध माहे दूरि कहीजइ,
तउ पणि अरिहंत ध्यान धरीजइ ।२। वीर०।
जनम जीवित नउ लाहउ लीजइ,
समयसुन्दर नइ दरसण दीजइ ।३। वीर०।

१८ महाभद्र जिन गीतम्

राग—केदारउ

महाभद्र अढारमउ अरिहंत ।
गज लांछन देवराज नंदन, सूरिज कान्ता कंत ।१। महा०।

कृपानाथ अनाथ पीहर, भय भंजण भगवंत ।
पच्छिम महा विदेह विजया, नगरी मंइ विचरंत ।२। महा०।
उमादेवी मात अंगज, सकल गुण सोभंत ।
समयसुन्दर चरण तेरे, ग्रह ऊठी प्रणमंत ।३। महा०।

१९ देवयशा जिन गीतम्

राग—मारुणी

देवजसा जगि चिर जयउ तीर्थंकर, देव पुष्करद्वीप मझार रे । ती०।
भव्य जीव प्रतिबोधता ती०, क्रमि क्रमि करइ विहार रे । ती०।१।
सर्वभूति नामइं पिता ती०, गंगा मात मल्हार रे । ती०।
ए अरिहंत उगणीसमउ ती०, त्रिभुवन नउ आधार रे । ती०।२।
राजऋद्धि किसी वस्तु नी ती०, लालचि न करुं लिगार रे । ती०।
समयसुन्दर इम वीनवइ ती०, आवागमण निवारि रे । ती०।३।

२० अजितवीर्य जिन गीतम्

राग—मारुणी

हां मेरी माई हो, अजित वीरज जिन वीसमउ,
मोडुं मांड्युं हो समवसरण मंडाण ।
सुरनर कोड़ि सेवा करइ, वीतराग नुं सुणइ सरस वखाण । अ०१।
व्रत थी लाख पूरव वउले, स्वामी तुम्हे तउ पहुचिस्यउ निरवाण ।
पणि मुझ नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो घणी जाण पिछाण । अ०।
तुमे नीरागी निसप्रीही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण ।
समयसुन्दर कहइ शिव पामुं, तां सीम तउ करज्यो कल्याण । अ०३।

॥ कलश ॥

राग—धन्याश्री धवल

वीस विहरमान गाया, परमाणंद सुख पाया।
जीभ पवित्र पिण कीधी, मिश्री दूधस्युं पीधी।१। वी०।
समकित पणि थयुं निरमल, पुण्य थयुं शुभ परिघल।
सुणस्यइ ते पणि तरस्यइ, कान पवित्र पण करस्यइ।२। वी०।
जंबू द्वीप मंइ च्यार, महा विदेह मझार।
घातकी-पुष्कर जेथि, आठ आठ अरिहंत तेथि।३। वी०।
मसकति नु फल मांगूं, वीतराग नइं पाए लागूं।
जिहां हुयइ जिणधर्म सार, तिहां देज्यो अवतार।४। वी०।
संवत सोलह सइंत्राणुं, माह वदि नवमी वखाणुं।
अहमदावादि मझारि, श्री खरतरगच्छ सार।५। वी०।
श्री जिनसागर सूरि, प्रतपइ तेज पडूरि।
हाथी साह नी हूंसे, तीर्थंकर स्तव्या वीसे।६। वी०।
श्री जिनचंद सूरीस, सकलचंद तसु सीस।
तेह तणइ सुपसायइ, समयसुन्दर गुण गायइ।७। वी०।

इति श्रीविद्यमानविंशति तीर्थङ्कराणां गेयपदानि
(लिखितानि वा० हर्षकुशल-गणिना १७१७)

वीस विहरमान जिन स्तवन

[निजनाम १ मातृ २ पितृ ३ लांछन ४ सहितम्]

प्रणमिय शारद माय[१] समरिये सद्गुरु,
धर्म बुद्धि हियड़े धरी ए ।
विहरमान जिन वीस थुणिसु मन थिरै,
माय ताय लंछण करी ए ॥१॥
श्री सीमंधर स्वामि सत्यकि नंदनो,
मन मोहन महिमा निलो ए ।
जास पिता श्रेयांस वृषभ लांछन वर,
श्री जिनवर त्रिभुवन तिलो ए ॥२॥
श्री युगमंधर देव सेव करुं नित,
मात सुतारा नंदनो ए ।
सुदृढ़ पिता सुखकार गज लांछनवर,
वचन सुधारस चंदनो ए ॥३॥
बाहु नाम जिनराज विजया अंगज,
सुग्रीव वंश निसाकरु ए ।
अंके हरिण उदार रूप मनोहर,
वंछित पूरण सुरतरु ए ॥४॥

॥ ढाल ॥

श्री सुबाहु सुविख्यात, भु(ध)नंदा अंग जात ।
तात निसढ वरु ए, कपि अंके धरु ए ॥५॥

१ पाय

समरू स्वामी सुजात, देवसेना जसु मात।
देवसेन अंगजु ए, रवि चिन्ह पदकजु ए ॥६॥
श्री स्वयंप्रभ स्वामि, मात सुमंगला नाम।
मित्रभूति कुलतिलो ए, चन्द्र लंछन भलो ए॥७॥
ऋषभानन जिणचंद, श्री वीरसेना नंद ।
कीर्त्तिराय कुंयरू ए, सिंह अंक सुंदरु ए ॥८॥

॥ ढाल ॥

अनंतवीर्य अरिहंतु ए, मंगलावती सुत गुणवंतु ए।
मेघराया घर अवतर्या ए, चंद लंछन गुणरयणे भरया ए॥६॥
श्री सूरप्रभ वंदिये ए, विजया माता चिर नंदिये ए।
विजयराज तसु तातु ए, ससिहर लंछन अवदातु ए ॥१०॥
श्री विमल[1] सुप्रशंसु ए, भद्रा माता उर हंसु ए।
जासु पिता श्रीनागु ए, सूरिज लंछन सोभागु ए ॥११॥
श्रीवज्रधर जग जाणिये ए,श्रीसरस्वती मात वखाणिये ए।
जनक पद्मरथ जासु ए, संख[2] लांछन जासु प्रकासु ए ॥१२॥

॥ ढाल ॥

चन्द्रानन जिनवर, त्रिभुवन जन आधार ।
माता पद्मावती, राणी उर अवतार ॥
वाल्मीक पिता जसु, लांछन वृषभ उदार ।

१ विशाल २ अंकइ संख पूरइ आसु ए।

प्रभुना पद पंकज, प्रणमंतां जयकार ॥१३॥
भव भय दुख भंजन, चंद्रबाहु भगवंत।
रेणुका राणी सुत, महियल महिमावंत॥
देवानंद नरवर, वंश विभूषण हंस ।
अद्भुत पद पंकज, लांछन जग अवतंस ॥१४॥
भवियण जण भेट्यो, श्रीभुजंग जिनराय ।
महिमा माता वलि, तातु महाबल राय ॥
अंके अति सुन्दर, सोहे जसु अरविंद ।
समरंतां सेवक, पामे परमाणंद ॥१५॥
ईश्वर परमेश्वर, प्रणमुं परम उल्लास ।
जयवंत जिणेसर, मात जशोजला जास ॥
गलसेन पिता गुण, माणिक रयण भंडार ।
शशि लंछन शोभित, सेवक जन(म) साधार ॥१६॥

॥ ढाल ॥

जगगुरु नेमि जिनेसरु, सेना मात मल्हारो जी ।
जीवयश नृप नंदनो, सूरज अंक उदारो जी ॥१७॥
वीरसेन[1] प्रभु वंदिये, भानुमती सुत सारो जी ।
भूमिपाल भूपति पिता, लांछन वृषभ अपारो जी ॥१८॥
स्वामी महाभद्र समरिये, उमा देवी नंदो जी ।
देवराज कुल चंदलो, गज लंछन जिनचंदो जी ॥१९॥

१ वीरराज

देश यशा जगि चिरजयो, गंगा देवी मायो जी ।
सर्वभूति नामे पिता, शशिहर चिन्ह सुहायो जी ॥२०॥
अजितवीर्य जिन वीसमो, मात कनीनिका जासो जी ।
राजपाल सुत राजियो, स्वस्तिक अंक विलासो जी ॥२१॥
प्रह उगमते प्रणमिये, विहरमान जिन वीसो जी ।
नामे नवनिधि संपजे, पूरे[1] मनह जगीसो जी ॥२२॥

॥ कलश ॥

इह वीस जिनवर भुवन दिनकर, विहरमान जिनेसरा ।
निय नाम माय सुताय लांछन, सहित हित परमेसरा ॥
जिनचंद सूरि विनेय पंडित, सकलचंद महामुणी ।
तसु सीस वाचक समयसुन्दर, संथुण्या त्रिभुवन धणी ॥२३॥

वीस विरहरमान जिन स्तवन

वीस विहरमान जिनवर राया जी ।
प्रह ऊठी नित प्रणमुं पाया जी ॥
प्रह ऊठी नित प्रणमुं पाप प्रभुना, सीमंधर युगमंधरो ।
बाहू सुबाहु सुजात स्वयंप्रभ, श्री ऋषभानन जिनवरो ॥
श्री अनंतवीर्य श्री सूरप्रभ के, चरण से चित लाया ।
प्रह ऊठी प्रणमें समयसुन्दर, विहरमान जिनराया ॥१॥

1 पावइ

विशाल तीर्थंकर वांदूं त्रिकालो जी।
वज्रधर चंद्रानन प्रतिपालो जी॥
प्रतिपाल चंद्रबाहु भुजंग ईश्वर, नेमि चरण कमल नमुं।
वीरसेन महाभद्र देवयशा श्री अजितवीरिज वीसमुं॥
ए वर्त्तमान जिणंद विचरै, अढीय द्वीप विचालो।
प्रह ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, तीर्थंकर त्रिकालो॥२॥

वीसे जिनवर ज्ञान दिणंदा जी।
चौमुख सोहै पूनमचंदा जी॥
पूनमचंद तणी परे, प्रभु समवसरण विराज ए।
देशना अमृतधार वरसै, भविय संशय भाज ए॥
पांचसइ धनुष प्रमाण काया, नमइ इंद्र नरिंदा।
प्रह ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, जिनवर ज्ञान दिणंदा॥३॥

भवि भवि देज्यो तुम पाय सेवा जी।
मिलन उमाह्यो गज जिम रेवा जी॥
गज जेम रेवा मिलन उमह्यो, दैव न दीधी पांखड़ी।
सो सफल दिवस गिणीस अपनौ, जिण दिन देखिस आंखड़ी॥
दूरि थी मोरी वंदना हिव, जाणजो नित मेवा।
प्रण ऊठि प्रणमै समयसुन्दर, भव भव तुम पय सेवा॥४॥

——xox——

श्रीसीमन्धरस्वामिस्तवनम्

पूर्वभुविदेहपुष्कलविजयमण्डनं,
मोहमिथ्यात्वमतितिमिरभरखण्डनम् ।
वर्त्तमानं जिनाधीश–तीर्थङ्करं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥१॥
असुर-सुर-खचर-नरवृन्दकृतवन्दनं,
रूपसुररमणिसम-सत्यकिनन्दनम् ।
वृषभलाञ्छनधरं ज्ञातगुणसुन्दरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि–सीमन्धरम् ॥२॥
परमकरुणापरं जगति हितकारकं,
भीमभवजलधिजलपारउत्तारकम् ।
धर्म धारिमधरा धरणधरमन्दरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि–सीमन्धरम् ॥३॥
ऋद्धिवर-सिद्धिवर-बुद्धिवर-दायकं,
त्रिदशपति-भवनपति-मनुजपतिनायकम् ।
भविकजननयनकैरववने शशिकरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥४॥
स्वर्णसमवर्णवरमूर्तिशोभाधरं,
सुगुरुजिनचंद्र–जितसिंहगुणसागरम् ।
समयसुन्दर-सदानन्द-मङ्गलकरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥५॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन

धन धन क्षेत्र महाविदेह जी, धन पुण्डरंगिणी गाम ।
धन्य तेहना मानवी जी, नित उठ करै रे प्रणाम ।१।
सीमंधर स्वामी, कइये रे हूँ महाविदेह आवीस ।
जयवंता जिनवर, कइये रे हूँ तुमनें वांदीस ।आ०।
चांदलिया संदेसड़ो जी, कहजे सीमंधर स्वाम ।
भरतक्षेत्र ना मानवी जी, नित उठ करइ रे प्रणाम ।२।सी०।
समवसरण देवे रच्यो तिहां, चौसठ इन्द्र नरेश ।
सोना तणैं सिंहासण बैठा, चामर छत्र धरेश ।३।सी०।
इंद्राणी काढै गूंहली जी, मोती ना चौक पूरेश ।
ललि ललि लीयैं लूँछणा जी, जिनवर दियैं उपदेश ।४। सी०।
एहवइ समइ मंइ सांभल्यूं जी, हवे करवा पचक्खाण ।
पोथी ठवणी तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण ।५।सी०।
राय नैं व्हाला घोड़ला जी, वेपारी नैं व्हाला छैं दाम ।
अम्ह ने वाल्हा सीमंधर स्वामी, जिम सीता ने राम ।६।सी०।
नहीं मांगूं प्रभु राज ऋद्धि जी, नहीं मांगूं ग्रंथ भंडार।
हूँ मांगूं प्रभु एतलो जी, तुम पासे अवतार ।७।सी०।
दैव न दीधी पांखड़ी जी, किम करि आवुं हजूर ।
मुजरो म्हारो मानजो जी, प्रह उगमते सूर ।८।सी०।
समयसुन्दर नी वीनति जी, मानजो वारं वार ।
बेकर जोड़ी वीनवुं जी, वीनतड़ी अवधार ।९।सी०।

सीमंधर जिन स्तवन

विहरमान सीमंधर सामी, प्रह ऊठी प्रणमुं सिरनामी ।१। वि०।
सत्यकी माता उरि सर हंसि, लांछन वृषभ पिता श्रेयंसि ।२। वि०।
पूरव महाविदेह मझारी, पुखलावती विजयो अवतारी ।३। वि०।
कंचन वरणी कोमल काया, चउरासी लख पूरव आया ।४। वि०।
पांचसय धनुष शरीर प्रमाणा, अमृत वाणी करत वखाणा । वि०।
सकल लोक संदेह हरंता, समयसुन्दर वांदइ विहरंता ।६। वि०।

इति श्रीपुष्कलावतीविजयमण्डणश्रीसीमधरसामिभास ॥ २६ ॥

सीमंधर जिन स्तवन

चंदालाइ . एक करूं अरदास चंदा,
चंदालाइ सीमंधर सामी नै कहे मोरी वंदना रे लो।
चंदालाइ सूरति मोहन वेल चंदा,
चंदालाइ सूरति तो अति सुन्दर शीतल चंदना रे लो ।१ चं०।
चंदालाइ मो मन मिलन उमेद चंदा,
चंदालाइ देवड़ले न दीधी मुझने पांखड़ी रे लो।
चंदालाइ सकल दिवस मुझ सोइ चंदा,
चंदालाइ आपणड़ा वाल्हेसर देखिस आंखड़ी रे लो ।२ चं०।
चंदालाइ मन मान्या मेलाप चंदा,
चंदालाइ पूरवलै सरजै विण क्युं करि पाइये रे लो।

चंदालाइ समयसुन्दर कहे एम चंदा,
चंदालाइ एकरसउ सुपनंतर साहिब आइये रे लो।३ चं०।

सीमंधर जिन स्तवन

सीमंधर जिन सांभलउ, वीनति करूं कर जोड़ ।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, मुने भव संकट थी छोड़ ।१।सी०।
तुम मूं विचि अंतर घणो, किम करूं तोरी सेव ।
पांख विना किउं मिलूं, पण दिल में तूं एक देव ।२।सी०।
जिम चकोर मन चंद्रमा, तिम तूं मोरे चित ।
सयमसुन्दर कहइ ते खरी, जे परमेसर सुं प्रीत ।३।सी१।

सीमंधर जिन गीतम्

राग—मारुणी

स्वामि तारि नइ रे मुझ परम दयाल, सीमंधर भगवंत रे।
सरणागत सेवक जन वच्छल, श्री जिनवर जयवंत रे।१।स्वा०।
पुखलावती विजय प्रभु विहरइ, महाविदेह मझारि रे।
हूँ अति दूरि थकां प्रभु तोरी, सेवा करुं किम सार रे।२।स्वा०।
हे है दैव काय नवि दीधी, पांखड़ली मुझ दोय रे।
जिम हूँ जइ नइ जगगुरु वांदू, हीयडलुं हरखित होय रे।३।स्वा०।
समवसरण सिंहासण स्वामी, बइठा करइ वखाण रे।
धन ते सुर किन्नर विद्याधर, वाणी सुणइ सुविहाण रे।४।स्वा०।

धन ते गाम नयर पुर मंदिर, जिहां विहरइ जिनराय रे।
विहरमाण सीमंधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे।५। स्वा०।
तुम दरसण विण चउ गति मांहि, हूँ भम्यउ अनंतीवार रे।
हवइ प्रभु तोरइ सरणे आव्यउ, आवागमण निवारि रे।६। स्वा०।
सेवक नी प्रभु सार करो नइ, सारउ वंछित काज रे।
समयसुन्दर कर जोड़ी वीनवइ, आपउ अविचल राज रे।७। स्वा०।

(२)

राग—गउड़ी

पूरव माह विदेह रे, पुखलावती विजय जेह रे।
पुंडरीकणी पुरी नामि रे, विहरइ सीमंधर स्वामि रे ॥१॥
वृषभ लांछन सुखकार रे, श्री श्रेयांस मल्हार रे।
सत्यकी उरि अवतार रे, रुकमणि नउ भरतार रे ॥२॥
पांच सइ धनुष नी काय रे, सेवइ सुरनर पाय रे।
सोवन वरण शरीर रे, सायर जेम गंभीर रे ॥३॥
कनक कमल पद ठावइ रे, सुर किन्नर गुण गावइ रे।
भवियण जण नइ साधारइ रे, भवजल पार उतारइ* रे ॥४॥
धन धन ते पुरगाम रे, विहरइ सीमंधर स्वामि रे।
धन धन ते नर नारी रे, भगति करइ प्रभु सारी रे ॥५॥
श्री सीमंधर स्वामी रे, चरण नमुं सिर नामी रे।
समयसुन्दर गुण गावइ रे, मन वंछित फल पावइ रे

* पाठान्तर—सांभलइ देसणा सार रे, हियड़इ हरख अपार

सीमंधर स्वामी गीतम्

राग—कड़खा

सामि सीमंधरा तुम्ह मिलवा भणी,
हियड़लु राति नइ दिवस हींसै ।
ध्यान धरतां सुपन मांहि आवी मिलइ,
झबकि जागु तब कांइ न दीसै ।१। सा०।
नउ तंइ रे देव दीधी हुंती पांखड़ी,
तउ हूं ऊडी प्रभु जांत पासे ।
सामि सेवा भणी अति घणउ अलजयउ,
देवतइ कां दिउ दूरि पासे ।२। सा०।
ध्यान समरण प्रभु ताहरूं नित धरूं,
तूं पणि मुज्झ ने मत वीसारे ।
समयसुन्दर कर जोड़ि इम वीनवइ,
सामि मुंनइ भव समुद्र तारे ।३। सा०।

युगमंधर जिन गीतम्

ढाल—उपशम तरु छाया रस लीजइ, एहनी

तूं साहिब हूं तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी ।
हूं प्रभु तोरइ शरणइ आव्यउ, तूं मुझ नइ साधारि जी ।१।
श्री जुगमंधर करुणा सागर, विहरमाण जिणिंद जी । आं०।
सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणंद जी ।२ श्री०।

जन्म जरादिक दुख थी बीहतउ, हूँ आव्यउ तुम्ह पासि जी।
मुझ ऊपरि प्रभु महिर करी नइ, आपउ निरभय वास जी।३ श्री०।
पूरब पुण्य संजोगइ पाम्यउ, तूं त्रिभुवन नउ नाह जी।
एक वार मुझ नयण निहालउ, टालउ भव दुह दाह जी।४ श्री०।
वीनतड़ी प्रभु सफल करेज्यो, श्री जुगमंधर देव जी।
समयसुन्दर कर जोड़ी मांगइ, भव भवि तुम्ह पय सेव जी।५ श्री०।

इति श्रीयुगमधरस्वामिगीतम् स० १३ ॥

शाश्वतजिनचैत्यप्रतिमावृहत्स्तवनम्

रिषभानन वधमान, चन्द्रानन जिन,
वारिषेण नामइ जिणा ए।
तेह तणा प्रासाद, त्रिभुवनि सासतां,
प्रणमुं निंव सोहामणा ए ॥१॥
चेइहर सगकोड़ि लाख बहुत्तरि,
चेइ चेइ प्रतिमा सउ असी ए।
तेरसइ नव्यासी कोडि साठि लाख सुंदर,
भवनपती मांहि मनि वसी ए ॥२॥
बार देवलोक प्रासाद चउरासी लख,
सहस छन्नू नइ सातसइ ए।
एक सउ असी गुण त्रिभुवन सउ कोड़ि,
चउराणुं लख सहस छड़ ए ॥३॥

॥ ढाल ॥

हवइ नवग्रैवेकइ पंचाणुत्तर सार,
चेइहर त्रणसइ त्रेवीसा सुविचार।
प्रत्येकइ प्रतिमा वीसा सउ तिहां जाणि,
अठत्रीस सहस सत साठ साठि गुण खाणि।४।
नंदीसर त्रावन कुंडल रुचक वखाणि,
चउ चउ चेईहर साठि सवे त्रिहुं ठाणि।
एकसउ चउवीस गुणी प्रतिमा चिहुं नामि,
च्यार सइ च्यालीसा सात सहस प्रणमामि।५।
नंदीसर विदसइ सोलस कुलगिरि तीस,
मेरु वणि अइसी दस कुरु गजदंते वीस।
मानुषोत्तर पर्वति च्यार च्यार इषुकारि,
अइसा अति सुन्दर वृत्तसकारि मझारि।।३।।

॥ ढाल ॥

दिग्गज गिरि च्यालीस असिय द्रहे सुजगीस,
कंचण गिरि वरइ ए, एक सहस धर ए।।७।।
वृत्त दीरघ वेताढ्य, वीस सतरि सउ आद्य,
सत्तरि महा नदी ए, पंच चूला सदी ए।।८।।
जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारइ सत्तरि सुक्ख,
कुंड त्रण सइ असी ए, वीस जमग वसी ए।।६।।

॥ ढाल ॥

अथ सहस सउ एक नवाणु रे,
जिणवर प्रासाद वखाणु रे।
बीसा सउ ए अंक गुणीयइ रे,
तीर्थंकर प्रतिमा गुणियइ रे ॥१०॥

त्रिण लाख सहस वलि आमी रे,
प्रतिमा आठसइ नइ अइसी रे।
सिर चालइ भवि मेलिजइ,
त्रिभुवन प्रासाद नमिजइ रे ॥११॥

आठ कोडि सतावन लक्खा रे,
दुय सत च्यामी कय रक्खा रे।
हियइ प्रतिमा गान कहीजइ रे,
जिणवर नी आण वहीजइ रे ॥१२॥

पनर सइं बइतालीस कोडी रे,
अट्ठवन लख अधिका जोडी रे।
छत्रीस सहस असि कहियइ रे,
प्रतिमा सगली सरदहियइ रे ॥१३॥

॥ ढाल ॥

जोइसवंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहोजी।
पाय कमल तेहना नित प्रणमियइ, समयसुन्दर मुदेहो जी ॥१४॥

विनय करी जिन प्रतिमा वांदियइ, सुन्दर सकल सरुपो जी।
पूजइ प्रतिमा चउविह देवता, वलिय विद्याधर भूपो जी॥१५॥
जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी,हितसुख मोक्ष निदानो जी।
भवियण नइ भवसागर तारिवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी॥१६॥
जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखियउ,ए सहु अरथ विचारो जी।
सांभलतां भणतां सुख संपदा, हियडइ हरख अपारो जी॥१७॥

॥ कलश ॥

इम सासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिणवर तणा,
चिहुं नाम जिनचंद तणे त्रिभुवन सकलचंद सुहामणा,
वाचनाचारिज समयसुन्दर गुण भणइ अभिराम ए,
त्रिहुं कालि त्रिकरण सुद्ध हुइज्यो सदा शुभ परणाम ए॥१८॥

तीर्थमाला बृहत्स्तवनम्

श्रीशत्रुंजयशिखरे, मरुदेवं स्वामिनीह गजचटिता।
पुत्रनमस्कृति चलिता, सिद्धा बुद्धा नमस्तस्यै॥१॥
श्रीशत्रुञ्जयशृङ्गार–कारिणे दुःखहारिणे।
प्रलम्बतरविम्बाय, अर्बुदस्वामिने नमः॥२॥
श्रीमत्खरतरवसति–प्रौढप्रासादमूलविम्बाय।
श्रीशान्तिनाथजिनवर ! सुखकर ! सततं नमस्तुभ्यम्॥३॥
श्रीशत्रुञ्जयमण्डन ! मरुदेवाकुक्षिराजहंससम ! ।
प्रणमामि मूलनायक ! चरणं तव नाथ ! मम शरणम्॥४॥

स्वर्गे च मर्त्यलोके, पाताले ज्योतिषां च जिनभवने ।
शाश्वतरूपाः प्रतिमाः वन्दे श्रीवीतरागाणाम् ॥१५॥
इति जिनेश्वरतीर्थपरम्परा, सकलचंद्र-सुबिम्बमनोहरा ।
सुरनरादिनुता भुवि विश्रुता, समयसुन्दर सन्मुनिना स्तुता । १६ ।

इति श्रीशत्रुञ्जयादितीर्थबृहत्स्तवनं समाप्तम् *

तीर्थमाला स्तवन

सेत्रुञ्जे ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ।
सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥
तीन कल्याणक जिहां थया, मुगते गया रे ।
नेमीश्वर गिरनार, तीरथ ते नमुं रे ॥ २ ॥
अष्टापद इक देहरउ, गिरि सेहरउ रे ।
भरते भराव्या बिंब, तीरथ ते नमुं रे ॥ ३ ॥
आबू चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ।
विमल वसही वस्तुपाल, तीरथ ते नमुं रे ॥ ४ ॥
समेत शिखर सोहामणो, रलियामणो रे ।
सीधा तीर्थंकर बीस, तीरथ ते नमुं रे ॥ ५ ॥

*स्वयं शोधित प्रति से । रचनाकाल सं० १६७२ से पूर्व सुनिश्चित है क्योंकि राणकपुर की यात्रा से पूर्व इसकी रचना हुई । सं० १६६६ के पश्चात् की कृति में लिखी मिलने से अनुमानतः इसकी रचना सं० १६६६ पश्चात् हुई होगी ।

नयरी चंपा निरखिये, हियै हरखियै रे।
सीधा श्री वासुपूज्य*, तीरथ ते नमुं रे॥ ६॥
पूरब दिसि पावापुरी, ऋद्धे भरी रे।
मुगति गया महावीर, तीरथ ते नमुं रे॥ ७॥
जेसलमेरि जुहारियइ, दुख वारियइ रे।
अरिहंत बिंब अनेक, तीरथ ते नमुं रे॥ ८॥
बीकानेर ज वंदियइ, चिर नंदिये रे।
अरिहंत देहरा आठ, तीरथ ते नमुं रे॥ ६॥
सैरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे।
फलोधी थंभण पास, तीरथ ते नमुं रे॥१०॥
अंतरीक अजाहरउ, अमीझरउ रे।
जीरावलउ जगनाथ, तीरथ ते नमुं रे॥११॥
त्रैलोक्य दीपक देहरउ, जात्रा करो रे।
राणपुरे रिसहेस, तीरथ ते नमुं रे॥१२॥
श्री नाडुलाई जादवो, गौंडी स्तवो रे।
श्री वरकाणा पास, तीरथ ते नमुं रे॥१३॥
[क्षत्रियकुण्ड सोहामणउ, रलियामणो रे।
जनम्यां श्री महावीर, तीरथ ते नमुं रे॥१४॥
राजगृही रलियामणी, सोहामणी रे।
फरसुं पहाड़ा पंच, तीरथ ते नमुं रे॥१५॥

* प्रणमुं पगलाधारि

शत्रुञ्जय नी कोरणी, नवा नगर में रे ।
श्री राजसी भराया विंब, तीरथ ते नमुं रे ॥१६॥]
नंदीसर ना देहरा, बावन चैरा रे ।
रुचक कुण्डल च्यार च्यार, तीरथ ते नमुं रे ॥१७॥
शासती नइं असासती, प्रतिमा छती रे ।
स्वर्ग मर्त्य पाताल, तीरथ ते नमुं रे ॥१८॥
तीरथ यात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ।
समयसुन्दर कहै एम, तीरथ ते नमुं रे ॥१९॥

तीर्थमाला स्तवन

श्री सेत्रुञ्जि गिरि शिखर समोसरचा,
त्रेवीस तीर्थंकर श्री अरिहंत ।
आठ करम नउ अंत करी नइ,
सीधा मुनिवर कोड़ि अनंत ।१।प्र०।
मह ऊठी ने नित प्रणमीजइ,
तीरथ सेत्तुंजि प्रमुख प्रधान ।
हियड़इ ध्यान धरंतां आपइ[१],
आठ महासिद्धि नवे रे निधान ।२।प्र०।
श्री गिरनार नमुं नेमीसर,
श्री जिनवर जादव कुल भाण ।

१ हुयई

जिहां प्रभु त्रिण्ह कल्याणक हूयउ,
दीक्षा ग्यान अनइ निरवाण ।३।प्र०।
अष्टापदि प्रणमुं चउवीसे,
भरत कराव्या जिन प्रासाद ।
गौतम सामि चड्यां जिहां लवधि,
प्रतिबोध्या तापस सुप्रसाद ।४।प्र०।
श्री सम्मेत शिखर समरीजइ,
अजित प्रमुख तीर्थंकर वीस ।
सुकल ध्यान धरी शिव पहुंता,
जगबंधव जगगुरु जगदीश ।५।प्र०।
नंदीसर वर दीपि नमीजइ,
सासता तीर्थंकर च्यार ।
ऋषभानन वधमान जिणेसर,
वारिषेण चन्द्रानन सार ।६।प्र०।
अभयदेव सूरि खरतर गच्छ पति,
प्रगट कियउ प्रभु बिंब उलास ।
तेहनउ रोग हर्यउ तिहां ततखिण,
प्रणमुं श्री थंभणपुर पास ।७।प्र०।
जरासिंधु विद्या बल गंजण,
हरिसेना मनि कियो रे आणंद ।
जय जय जादव वंश जीवाडण,
श्री संखेसर पास जिणंद ।८।प्र०।

आबू आदीसर वरकाणइ,
जीराउलि गउड़ी प्रभु पास ।
साचउरउ वर्धमान जिणेसर,
प्रणमंता पूरइ मन आस ।६।प्र०।
भुवनपति व्यंतर नइ ज्योतिषि,
वेमाणिक नरलोक मझारि ।
जे जिणवर तीर्थंकर प्रतिमा,
प्रणमति समयसुन्दर सुखकार ।१०।प्र०।

इति श्री तीर्थमाला भास १३।
[प्रसिद्धतीर्थस्थिततीर्थंकरप्रतिमागीतम्]

—०—

तीरथभास

सखि चालउ हे, सखि चालउ हे चतुर सुजाण,
भावइ हे, आपे भावइ हे तीरथ भेटस्यां ।
सखि करस्यां हे, सखि करस्यां हे जनम प्रमाण,
दुरगति हे, आपे दुरगति ना दुख मेटस्यां ॥१॥
सखि सेत्रुञ्ज हे, सखि सेत्रुञ्ज तीरथ सार,
पहिलुं हे, आपे पहिलुं रिषम जुहारस्यां ।
सखि पछइ हे, सखि पछइ हे करिय प्रणाम,
बीजा हे, आपे बीजा बिंब संभारिस्यां ॥२॥
सखि वारू हे, सखि वारु हे गढ गिरनारि,
ऊँचा हे, आपे ऊँचा हे टूंक निहालस्यां

सखी नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां नेमि जिणंद,
पगि पगि हे, आपे पगि पगि पाप पखालस्यां ॥३॥
सखि आबू हे, सखि आबू अचलगढ आवि,
चौमुख[1] हे, आपे चौमुख मूरति चरचस्यां।
सखि प्रणमी हे, सखि प्रणमी हे विमल प्रासाद,
धरमइ हे, आपे धरमइ हे निज धन खरचस्यां ॥४॥
सखि जास्यां हे, सखि जास्यां हे राणकपुत्र जात्र,
देहरउ हे, आपे देहरउ देखी आणंदस्यां।
सखि नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां आदि जिणंद,
दोहग हे, आपे दोहग दुख निकंदस्यां ॥५॥
सखि फलवधि हे, सखि फलवधि हे जेसलमेरि,
जास्यां हे, आपे जास्यां जात्रा करण भणी।
सखि लहिस्यां हे, सखि लहिस्यां हे लील विलास,
बोलइ हे, मइ बोलइ हे समयसुन्दर गणी ॥६॥

इति श्री तीरथ भास।

अष्टापद तीर्थ भास

मोरूं मन अष्टापद सुं मोह्यु ,
फटित रतन अभिराम मेरे लाल।
भरतेसर जिहां भवन कराव्यउ,
कीधुं उत्तम काम मेरे लाल। मो०। १।

---

१ केसर हे, आपे केसर चंदन चरचस्यां

सगर तणै सुत खाई खणावी,
भगति दिखाड़ी भूरि मेरे लाल।
इण गिरि गंग भागीरथ आणी,
पाखलि जल भरपूर मेरे लाल। मो०। २।
रिषभदेव तिहां मुगति पहुंता,
भरत कराव्या थूंभ मेरे लाल।
सुरनर किन्नर नइं विद्याधर,
सेवा सारइ ऊभ मेरे लाल। मो०। ३।
जोयण जोयण पावड़ शाला,
आठ जोयण ऊंचाति मेरे लाल।
गौतम सामि चढ्या जिहां लवधि,
अवलंबि रवि कांति मेरे लाल। मो०। ४।
संवत सोल अठावना वरसे,
अहमदावाद मझारि मेरे लाल।
सुणि सखी अष्टापद मंडाव्यउ,
मनजी साह अपार मेरे लाल। मो०। ५।
ते अष्टापद नयणे निरख्यउ,
सीधा वांछित काज मेरे लाल।
समयसुन्दर कहे धन्न दिवस ते,
तिहां भेट्या जिनराज मेरे लाल। मो०। ६।

इति श्री अष्टापद तीरथ भास ॥१०॥

(२)

मनडु अष्टापद मोह्यु माहरु रे,
हूँ नाम जपूं निशदीस रे।
चत्तारि अठ दस दोय नमुं रे,
चिहुं दिशि जिन चउवीस रे।१।म०।
जोयण जोयण आंतरइ रे,
पावड़सालां आठ रे।
आठ जोयण ऊँचो देखतां रे,
दुःख दोहग जायइ नाठि रे।२।म०।
भरत कराव्यउ भलउ देहरउ रे,
सउं भाई ना थूंभ रे।
आप मूरति सेवा करइ रे,
जाणे जोइयइ ऊभ रे।३।म०।
गौतम स्वामि चढ्या इहां रे,
आणी भागीरथ गंग रे।
गोत्र तीर्थंकर बांधव्यउ रे,
रावण नाटक रंग रे।४।म०।
दैव न दीधी मुंनइ पांखड़ी रे,
कहउ किम जाउं तिण ठाम रे।
समयसुन्दर कहै माहरउ रे,
दूरि थकी परणाम रे।५।म०

इति श्रीअष्टापद तीरथ भास ॥ ११ ॥

अष्टापदमण्डनशान्तिनाथगीतम्

राग—मालवी गउड्उ

सो जिनवर मियु कहउ मोहि कत री।
रावण वेणु बजावत मधुरी,
नृत्य करत मंदोवरी पूछत री।१। सो०।
शरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरव भव अइसउ चरित सुणत री।
जाकउ जनम भयउ सब जग मंइ,
शांति भई दुख दूरि गमत री।२। सो०।
पांचमउ चक्रवर्त्ती सोलमउ जिनपति,
साधत री षट खंड भरत री।
चउसठि सहस अंतेउरि मनोहरी,
तृण ज्युं तजी करि संयम गहत री।३। सो०।
तब लंकेश हसी प्रिया कर ग्रही,
देखावति अहो इनु न जानत री।
इया सो जिन मृग लांछन शोभित,
तीन भुवन जाकी आण मानत री।४। सो०।
त्रूटति तांति नसा सांधत री,
रावण तीर्थंकर गोत्र बांधत री।
अष्टापद गिरि शांति जिनेसर,
समयसुन्दर पाय प्रणमत री।५। सो०।

श्री शत्रुंजय आदिनाथ भास

चालउ रे सखि शेत्रुञ्ज जइयइ रे,
तिहां भेटीइं रिषभ जिणंद रे।
नरग त्रयंच गति रुंधीयइ रे,
मुझ मनि अति परमाणंद रे। चा०।१।

पालीताणइ पेखियइ रे,
रूड़ी ललित सरोवर पालि रे।
सेत्रुञ्ज पाज चडीजियइ रे,
विमला नयण निहालि रे। चा०।२।

जगगुरु आदि जिणेसरू रे,
मरुदेवी मात मल्हार रे।
रायण रूंख समोसरचा रे,
प्रभु पूरब निवाणुं वार रे। चा०।३।

त्रेवीस तीर्थंकर समोसर्या रे,
इण मुगति निलइ निरकंस रे।
पांच पांडव शिव गया रे,
इम मुनिवर कोड़ि असंख रे। चा०।४।

देखुं चिहुं दिस देहरी रे,
रायण तलि पगलां जुहारि रे।

पुंडरीक प्रतिमा नमुं रे,
चउमुखि प्रभु प्रतिमा चारि रे । चा० ।५।

खरतर वसही वांदियइ रे,
श्री शांति जिनेसर राय रे ।
अदबुद आदि जुहारियइ रे,
नित चरण नमुं चित लाय रे । चा० ।६।

चढता चउ गति भव टलइ,
प्रणमतां पातक जाय रे ।
समरतां सुख संपजइ रे,
निरखंता नव निधि थाइ रे । चा० ।७।

संवत सोल चिमालमइ रे,
चैत्र मासि वदि चउथि बुधवार रे ।
जिनचंद्रसूरि जात्रा करी रे,
चतुर्विध संघ परिवार रे । चा० ।८।

श्री आदीसर राजियउ रे,
श्री शेत्रुञ्ज गिरि सिणगार रे ।
समयसुन्दर इम वीनवइ रे,
हुज्यो मन वंछित दातार रे । चा० ।९।

इति श्री शत्रुञ्जय आदिनाथ भास ।। १ ।।

—x—

श्री शत्रुंजय तीर्थ भास

राग—मारुणी-धन्याश्री । जाति धमालनी ॥

सकल तीरथ मांहि सुन्दरु, सोरठ देश शृङ्गार ।
सुरनर कोड़ि सेवा करइ, सेत्रुञ्ज तीरथ सार । १ ।
चालउ चालउ विमल गिरि जाइयइ रे,
भेटउ श्री ऋषभ जिणंद । चा०। आंकणी।
ए गिरि नी महिमा घणी, पामइ को नहिं पार ।
तउ पण भगति भोलम भणु, सेत्रुञ्ज जग सुखकार । २। चा०।
ऋषभ जिणंद समोसरचा, पूरव निवाणु वार ।
पांच कोड़ि सु परिवरचा, श्री पुण्डरीक गणधार । ३ । चा०।
सेत्रुञ्ज शिखरि समोसरचा, तीर्थंकर तेवीस ।
पांचे पांडव शिव गया, चरण नमु निशदीश । ४ । चा०।
मुगति निलउ जाणी करी, मुनिवर कोड़ि अनंत ।
इण गिरि आवी समोसरचा, सिद्ध गया भगवंत । ५ । चा०।
धन धन आज दिवस घड़ी, धन धन मुझ अवतार ।
सेत्तुञ्ज शिखर ऊपर चडी, भेट्यउ श्री नाभि मल्हार । ६ । चा०।
चंद चकोर तणी परइ, निरखंता सुख थाय ।
हीयडुं हेजइ उल्हसइ, आणंद अंगि न माय । ७ । चा०।
दुख दावानल उपसम्यो, वूठउ अमिय मइ मेह ।
मुझ आंगणि सुरतरु फल्यउ, भागउ भव भ्रमण संदेह । ८। चा०।

धन धन जोगी सोम जी, धन धन तुम्ह अवतार ।
सेत्रुञ्ज संघ करावियउ, पुण्य भरयउ भण्डार । ६ । चा०।
संवत सोल चिमालमइ, मास सु चैत्र मझार ।
श्री जिनचंद्र सूरीसरू, जात्र करी सपरिवार ।१०। चा०।
श्री सेत्रुञ्ज गुण गावतां, हियड्इ हरख अपार ।
समयसुन्दर सेवक भणइ, रिषभ जिणंद सुखकार ।११। चा०।

इति श्री सेत्तुञ्ज तीरथ भास ॥ २॥

—०—

शत्रुंजय आदिनाथ भास

मुझ मन उलट अति घणउ मन मोह्यउ रे,
सेत्रुञ्ज भेटण काज लाल मन मोह्यउ रे ।
चैत्री पूनम दिन चढ्इ मन मोह्यउ रे,
पालीताणा पाजि लाल मन मोह्यउ रे ॥१॥
संघ करइ वधामणा मन मोह्यउ रे,
तीरथ नयण निहालि लाल मन मोह्यउ रे ।
सेत्तुञ्ज नदीय सोहामणी मन मोह्यउ रे,
ललित सरोवर पालि लाल मन मोह्यउ रे ॥२॥
केसर भरिय कचोलड़ी मन मोह्यउ रे,
पूज्या प्रथम जिणंद लाल मन मोह्यउ रे ।

देव जुहारी देहरी मन मोह्यउ रे,
प्रगट्यउ परमाणंद लाल मन मोह्यउ रे ॥ ३ ॥
खरतर वसही वांदिया मन मोह्यउ रे,
संतीसर सुखकंद लाल मन मोह्यउ रे ।
राइणि तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे,
अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोह्यउ रे ॥ ४ ॥
पांचे पांडव पूजिया मन मोह्यउ रे,
सोलमउ जिनवर राय लाल मन मोह्यउ रे ।
सकल बिंब प्रणम्या मुदा मन मोह्यउ रे,
गज चढि मरुदेवी माय लाल मन मोह्यउ रे ॥ ५ ॥
चेलण तलाइ सिद्ध सिला मन मोह्यउ रे,
अति भलउ उलखा झोल लाल मन मोह्यउ रे ।
सिद्ध वड़ कुंड सोहामणा मन मोह्यउ रे,
निरखंता रंगरोल लाल मन मोह्यउ रे ॥ ६ ॥
इण गिरि रिषभ समोसरचा मन मोह्यउ रे,
पूरब निवाणुं वार लाल मन मोह्यउ रे ।
मुनिवर जे मुगति गया मन मोह्यउ रे,
ते कुण जाणइ पार लाल मन मोह्यउ रे ॥ ७ ॥
संवत सोल अठावनइ मन मोह्यउ रे,
चैत्री पूनम सार लाल मन मोह्यउ रे ।

आज सफल दिन माहरउ मन मोह्यउ रे,
　　जात्रा करी सुखकार लाल मन मोह्यउ रे ॥ ८ ॥
दुरगति ना भय दुख टल्या मन मोह्यउ रे,
　　पूगी मन नी आस लाल मन मोह्यउ रे ।
समयसुन्दर प्रणमइ सदा मन मोह्यउ रे,
　　सेत्रुञ्ज लील विलास लाल मन मोह्यउ रे ॥ ६ ॥

इति श्री सेत्तुञ्ज तीरथ आदिनाथ भास ॥ ४ ॥

—:o:—

आलोयणा गर्भित
श्री शत्रुञ्जय मण्डन आदिनाथ स्तवन

वेकर जोड़ी वीनवूं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ।
कूड़ कपट मूकी करी जी, बात कहूँ आप वीति । १ ।
कृपानाथ मुझ वीनति अवधार ॥ आंकणी ॥
तूं समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझ नइ दुत्तर तार । २ । कृ० ।
भवसागर भमतां थकां जी, दीठा दुख अनंत ।
भाग संजोगे भेटिया जी, भय भंजण भगवंत । ३ । कृ० ।
जे दुख भांजइ आपणा जी, तेहनइ कहियइ दुःख ।
पर दुख भंजण तूं सुण्यउ जी, सेवक नइ द्यो सुख । ४ । कृ० ।
आलोयण लीधां पखइ जी, जीव रुलै संसार ।
रूपी लखमणा महासती जी, एह सुण्यउ अधिकार । ५ । कृ० ।

दूसम काले दोहिलउ जी, सुधउ गुरु संयोग।
परमारथ मीछइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग । ६ । कृ०।
तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोवुं आज।
माय बाप आगल बोलवां जी, बालक केही लाज । ७ । कृ०।
जिनधर्म जिनधर्म सहु करइ जी,थापइ आपणी जी बात।
समाचारी जुइ जुइ जी, संसय पड्यां मिथ्यात । ८ । कृ०।
जाण अजाण पणइ करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल।
रतनइ काग उडावतां जी, हारयउ जनम निटोल । ६ । कृ०।
भगवंत भाख्यउ ते किहां जी, किहां मुझ करणी एह।
गज पाखर खर किम सहइ जी, सबल विमासण एह।१०।कृ०।
आप परूप्युं आकरउ जी, जाणइ लोक तहंत।
पण न करूं परमादियउ जी, मासाहस दृष्टांत ।११। कृ०।
काल अनंते मंइ लह्या जी, तीन रतन श्रीकार।
पण परमादे पाड़िया जी, किहां जइ करुं पुकार ।१२। कृ०।
जाणूं उत्कृष्टी करूँ जी, उद्यत करुंय विहार।
धीरज जीव धरइ नहीं जी, पोतइ बहु संसार ।१३। कृ०।
सहज पड्यउ मुझ आकरउ जी, न गमइ भूंडी बात।
परनिंदा करतां थकां जी, जायइ दिन नइ रात ।१४। कृ०।
किरिया करतां दोहिली जी, आलस आणइ जीव।
धरम पखइ धंधइ पड्यो जी, नरकइ करस्यइ रीव ।१५। कृ०।
अणहूंता गुण को कहइ जी, तो हरखूं निसदीस।
को हित सीख भली कहइ जी, तो मन आणूं रीस ।१६। कृ०।

वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस ।
मन संवेग धरयउ नहीं जी, किम संसार तरेस ।१७।कृ०।
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ।
खिण इक मन मांहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग ।१८।कृ०।
त्रिविध त्रिविध करि उचरुं जी, भगवंत तुम्ह हजूर।
वार वार भांजू वली जी, छूटक वारउ दूर ।१९।कृ०।
आप काज सुख राचनइ जी, कीधा आरंभ कोड़ ।
जयणा न करी जीवनी जी, देव दया पर छोड़ ।२०।कृ०।
वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंड ।
कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंड ।२१।कृ०।
अण दीधउ लीजइ तृणो जी, तोहि अदत्तादान ।
ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावै ज्ञान ।२२।कृ०।
चंचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप ।
काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणइ सरूप ।२३।कृ०।
माया ममता मंइ पड्यउ जी, कीधो अधिकउ लोभ ।
परिग्रह मेल्यउ कारमउ जी, न चढी संयम शोभ ।२४।कृ०।
लागा मुझ नइ लालचइ जी, रात्रि भोजन दोष ।
मैं मन मूं क्यउ मोकलो जी, न धरयउ धरम संतोष ।२५।कृ०।
इण भवपर भव दूहव्या जी, जीव चउरासी लाख ।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं जी, भगवंत ताहरी साख ।२६।कृ०।
करमादान पनरं कह्या जी, प्रगट अठारै जी पाप ।
जे मंइ सेव्या ते हवइ जी, बगस बगस माइ बाप ।२७।कृ०।

मुझ आधार छइ एतलउ जी, सदहणा छइ शुद्ध ।
जिन ध्रम मीठउ मनगमइ जी, जिम साकर नइ दूध।२८। कृ०।
ऋषभदेव तूं राजियउ जी, शेत्रुञ्ज गिरि सिणगार।
पाप आलोया आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ।२६। कृ०।
मरम एह जिन धरम नउजी, पाप आलोयां जाय ।
मनसुं मिच्छामि दुकडं जी, देतां दूर पुलाय ।३०। कृ०।
तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ।
आण धरुं सिर ताहरी जी, भव भव ताहरी सेव ।३१। कृ०।

॥ कलश ॥

इम चडिय सेत्रुञ्जि चरण भेव्या, नाभिनंदन जिनतणा।
कर जोड़ि आदि जिणंद आगल, पाप आलोया आपणा॥
श्री पूज्य जिनचंद्रसूरि सद्गुरु, प्रथम शिष्य सुजस घणइ।
गणि सकलचंद सुशीस वाचक, समयसुन्दर गुण भणइ ॥३२॥

—:o:—

शत्रुञ्जय मण्डन आदिनाथ भास

सामी विमलाचल सिणगारजी,
एक वीनतड़ी अवधार जी ।
सरणागत नइ साधार जी,
मुझ आवागमण निवारि जी ॥ सा० ॥१॥

सामी ए संसार असार जी,
बहु दुख तणउ भंडार जी।
तिण मइ नहीं सुख लगार जी,
हुं भम्यउ अनंती वार जी ॥ सा० ॥२॥
चिंतामणि जेम उदार जी,
मानव भव पाम्यउ सार जी।
न धरचउ जिन धर्म विचारजी,
गयउ आलि तेण प्रकार जी ॥ सा० ॥३॥
मुझ नइ हिव तूं आधार जी,
तुझ समउ नहिं कोय संसार जी।
तोरी जाऊँ हुं बलिहार जी,
करुणा करि पार उतारि जी ॥ सा० ॥४॥
आज सफल थयउ अवतार जी,
भेट्यउ प्रभु हरख अपार जी।
मरुदेवी मात मल्हार जी,
समयसुन्दर नइ सुखकार जी ॥ सा० ॥५॥

इति सेत्तुंजमंडन श्री आदिनाथ भास ॥ ४ ॥

श्री शत्रुंजय तीर्थ भास

म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी सुणि एक मोरी वात हे,
के सेत्रुञ्ज तीरथ चडी।

म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी पूज्या प्रथम जिणंद के,
मइ केसर भरिय कचोलड़ी । १ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी प्रणम्या श्री पुंडरीक हे,
देहरइ मांहि बिंब सोहामणा ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी गज चढि मरुदेवी माय हे,
रायण तलि पगला प्रभु तणा । २ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी खरतर वसही खांति हे,
मंइ चउमुख नयणे निरखिउ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी चउरी लागउ चित्त हे,
देखतां हियडउ हरखियउ । ३ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी अदबुद आदि जिणंद हे,
लाखीणो तोडर चाढीउ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी सिद्धसिला सिद्ध ठाम हे,
मुनइ सिद्धवड़ सुगुरु देखाड़ीउ । ४ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी धन धन श्री गुरुराज* हे,
मंइ देव जुहारचा जुगति स्युं ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी सफल कियउ अवतार हे,
भणइ समयसुन्दर इम भगति स्युं । ५ ।

इति श्रीशत्रुञ्जयतीरथभास ।

---

* गुजराति

शत्रुंजय मण्डन युगादिदेव गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

इया मो जनम की सफल घरी री।
शत्रुञ्जय शिखरि ऋषभ जिन भेटे,
पालीताना की पाज चरी री।इया०।१।
प्रभु के दरस पाप गये सब,
नरग त्रिजंच की भीति टरी री।
इया सिद्ध क्षेत्र ऊपरि शुभ भाव धरि,
मुनिवर कोरि मुगति कुं वरी री।इया०।२।
अद्भुत चैत्य मनोहर मूरति,
करुं हुँ प्रणाम प्रभु पाय परी री।
समयसुन्दर कहै आज आणंद भयउ,
श्री शत्रुञ्जगिरि जात्र करी री।इया०।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन

राग—तोड़ी

ऋषभ की मेरे मन भगति वसी री।ऋ०।
मालती मेघ मृगांक मनोहर,
मधुकर मोर चकोर जिसी री।ऋ०।१।
प्रथम नरेसर प्रथम भिक्षाचर,
[illegible] प्रथम [illegible]

प्रथम तीर्थंकर प्रथम भुवनगुरु,
नाभिराय कुल कमल ससी री। ऋ० ।२।
अंश ऊपर अलिकावलि ओपत,
कंचन कसवट रेख कसी री।
श्री विमलाचल मंडन साहिब,
समयसुन्दर प्रणमत उलसी री। ऋ० ।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन

क्यों न भये हम मोर विमल गिरि, क्यों न भये हम मोर।
क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर।
अहनिश जिनजी के अंग पखालत, तोड़त करम कठोर। वि० १।
क्यों न भये हम बावन चंदन, और केसर की छोर।
क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजी के मोर। वि०२।
क्यों न भये हम मृदंग झालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर।
जिनजी के आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर। वि० ३।
जग मंडल साचौ ए जिनजी, और न देखा राचत मोर।
समयसुन्दर कहै ये प्रभु सेवो, जन्म जरा नहीं और। वि०४।

श्री आबू तीर्थ स्तवन

आबू तीरथ भेटियउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर मेरे लाल।
सफल जन्म थयउ माहरउ, दुख दोहग गया दूर मेरे लाल।१।

विमल विहार प्रणमी जिन पूज्या, केशर चंदन कपूर मेरे लाल।
देव जुहारया रूड़ी देहरी, भाव भगति भरपूर मेरे लाल।२।
वस्तुग तेजल वसही वंद्या, राजुलवर जिनराय मेरे लाल।
मंडप मोह्यो मन माहरउ, जोतां तृप्ति न थाय मेरे लाल।३।
भाव सुं भीमग वसही भेट्या, आदीसर उल्हास मेरे लाल।
मंडलीक वसही मुख मंडण, चउमुख चरच्या पास मेरे लाल।४।
अचलगढे आदीसर अरच्या, चौमुख प्रतिमा च्यार मेरे लाल।
शांति कुंथु प्रतिमा अति सुंदर, प्रणमीं अवर विहार मेरे लाल।५।
संवत सोल सत्तावन वरसे, चैत्र वदि चौथ उदार मेरे लाल।
यात्रा करी जिनसिंहसूरि सेती, चतुर्विध संघ परिवार मेरे लाल।६।
आबू तीरथ चित्र अनुपम, काउसग्गिया अभिराम मेरे लाल।
समयसुन्दर कहइ नित २ माहरो, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम मेरे लाल।७

श्री आबू आदीश्वर भास

आबू परवत रूयडउ आदीसर,
उंचउ गाऊ सात रे आदीसर देव ।
पाजइ चढतां दोहिलउ आदीसर,
पणि पुण्य नी घणी वात रे आदीसर देव ॥१॥
आबू नी जात्रा करी आदीसर,
सफल कियउ अवतार रे आदीसर देव। आंकणी।

पहिला आदीसर पूजिया आदीसर,
विमल वसही सुजगीस रे आदीसर देव।
देव जुहारथा देहरी आदीसर,
अस चरचा विमल मंत्रीश रे आदीसर देव ॥२॥
श्री नेमीसर निरखिया आदीसर,
सोम मूरति सुकुमाल रे आदीसर देव।
आन्द कुण मंडती[१] कोरणी आदीसर,
धन वस्तपाल तेजपाल रे आदीसर देव ॥३॥
भीम लूणग वसही भली आदीसर,
खरतर वसही जिणंद रे आदीसर देव।
सगला बिंब जुहारिया आदीसर,
दूरि गयउ दुख दंद रे आदीसर देव ॥४॥
अचलगढइ पछइ आवियां आदीसर,
चौमुख प्रतिमा चार रे आदीसर देव।
श्री शांतिनाथ कुंथुनाथ नी आदीसर,
प्रतिमा पूजी अपार रे आदीसर देव ॥५॥
आबू नी यात्रा करी आदीसर,
आव्या सिरोही उलास रे आदीसर देव।
देव अनइ गुरु वांदया तिहां आदीसर,
सहु नी पूगी आस रे आदीसर देव ॥६॥

१ कुंण मंडप नी।

जात्रा करी आव्योतरइ आदीसर,
श्री संघ पूजा सनात्र रे आदीसर देव ।
समयसुन्दर कहइ सासती आदीसर,
भास भणया हुयइ जात्र रे आदीसर देव ॥७॥

इति श्री आबू तीरथ भास ॥ ६ ॥

—:o:—

अर्बुदाचलमण्डन-युगादिदेवगीतम्

राग—गुंड

सफल नर जन्म मनु आज मेरउ ।
श्री अर्बुदगिरि श्री युगादीसर,
देखियउ दरसण सामि तेरउ ॥ स० ॥१॥
जिनजी ताहरा गुण अपणइ मुखि गावत,
पावत परम सुख नव नवेरउ ।
तूं जगन्नाथ जग मांहि सुरतरु समउ,
अउर सब देव मानूं बहेरउ ॥ स० ॥२॥
जिनजी राज नवि मांगत ऋद्धि नवि मांगत,
मांगत ही नहीं कछु अनेरउ ।
समयसुन्दर कर जोड़ि इहु मांगत,
भांजि भगवंत भव भ्रमण फेरउ ॥ स० ॥३॥

—o—

श्री पुरिमताल मंडण आदिनाथ भास

ढाल—राती कांबलडी नी ।

भरत नइ द्यइ ओलंभड़ा रे ।
मरुदेवी अनेक प्रकार रे' म्हारउ वालूयड़उ ।
वालुयड़उ नयणि दिखाड़ि रे, म्हारउ नान्हड़ियउ । आंकणी ।
तूं सुख लीला भोगवइ रे, ऋषभ नी न करइ सार रे । म्हा० ।१।
पुरिमताल समोसरचा रे, ऋषभ जी त्रिभुवन राय रे । म्हा० ।
भरत कुंयर सुं परिवरी रे, मरुदेवी वांदण जाय रे । म्हा० ।२।
ऋद्धि देखी मन चींतवइ रे, एक पखउ म्हारउ राग रे । म्हा० ।
राति दिवस हूँ झूरती रे, ऋषभ नुं मन नीराग रे । म्हा० ।३।
पुत्र पहिली मुगतिं गयी रे, शिव वधू जोवा काज रे । म्हा० ।
समयसुन्दर सुप्रसन्न सदा रे, आदीसर जिनराज रे । म्हा० ।४।

श्री आदिदेवचंदगीतम्

राग—श्रीराग

नाभिरायां कुलचंद आदि जिणंद,
मरुदेवी नंदन विश्वगुरो ।
त्रिभुवन दिनकर जिनवर सुखकर,
वांछित पूरण कलपतरो ॥१॥ ना० ॥
जण मण रंजणो दुख गंजणो,
प्रणमति समयसुन्दर चरणो ॥२॥ ना० ॥

श्री राणपुर आदिजिन स्तवन

ढाल—रिषभ जिनेसर भेटिया रे लाल

राणपुरइ रलिश्रामणउ रे लाल,
श्री आदीसर देव मन मोह्यउ रे।
उत्तंग तोरण देहरउ रे लाल,
निरखीजइ नितमेव मन मोह्यउ रे।१। रा०।
चउवीस मंडप चिहु दिसइ रे लाल,
चउमुख प्रतिमा च्यार मन मोह्यउ रे।
त्रैलोक्य दीपक देहरउ रे लाल,
समवड़ि नहिं को संसार मन मोह्यउ रे।२। रा०।
दीठी वानन देहरी रे लाल,
मांड्यउ अष्टापद मेर मन मोह्यउ रे।
भलु रे जुहारयउ भुंहरउ रे लाल,
सूतां उठि सवेर मन मोह्यउ रे।३। रा०।
देश जिणइ ए देहरउ रे लाल,
मोटउ देस मेवाड़ मन मोह्यउ रे।
लाख निनाणुं लगाविया रे लाल,
धन धरणउ पोरवाड़ मन मोह्यउ रे।४। रा०॥
आज कृतारथ हु हुयउ रे लाल,
आज भयउ आणंद मन मोह्यउ रे।
जात्र करी जिनवर तणी रे लाल,
दूरि गयउ दुख दंद मन मोह्यउ रे।५। रा०।

खरतर वसही खांत सु रे लाल,
निरखंता सुख थाय मन मोह्यउ रे।
पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,
जोतां पातक जाय मन मोह्यउ रे ।६। रा०।
संवत सोल बिहुतरइ रे लाल,
मगसिर मास मझारि मन मोह्यउ रे।
राणपुरइ जात्रा करी रे लाल,
समयसुन्दर सुखकार मन मोह्यउ रे ।७। रा०।

इति श्री राणपुर तीर्थ भास ॥ ३ ॥

—:o:—

बीकानेर चौवीसटा—

चिन्तामणि आदिनाथ स्तवन

भाव भगति मन आणी घणी, समकित निरमल करवा भणी।
बीकानेर तणइ चउहटै, देव जुहारूं चउवीसटै। १।
पावड़ शाला पूंजी चढ़ूं, हिव हुं नरक गति नवि पढ़ूं।
दीठा पुण्य दशा परगटै, देव जुहारूं चउवीसटै। २।
निसही तीन कहूं तिण्ह ठोड़ि, जेहवइ सूरज काढइ मोटि।
पाप व्यापार न करवो घटै, देव जुहारूं चउवीसटै। ३।
भमती मांहे भमूं मन रली, तिण्ह प्रदिक्षणा देऊं वली।
देखे अजयणा नो थोहटै, देव जुहारूं चउवीसटै। ४।

पंचाभिगम विधि सु' करू', शक्रस्तव सूधो उच्चरू' ।
जयवीयराय कहता कर्म कटै, देव जुहारू' गउवीसटै । ५ ।
प्रभु आगल भावु' भावना, केवल मुगति तणी कामना ।
अंग अंग आणंद ऊलटै, देव जुहारू' चउवीसटै । ६ ।
श्रावक स्नात्र पूजा करै, भगवंत ना भगते भव तरै ।
नृत्य करै नाचै फिरगटै, देव जुहारू' चउवीसटै ।७।
पाषाण नै वलि पीतल तणी, गु'भारै प्रतिमा अति घणी।
प्रणमै सहु ए को पिण भटइ, देव जुहारू' चउवीसटै । ८ ।
मातर मांडी डावै पास, मां हुलरावै पुत्र उलासि ।
तप पहुँचाड़ै भव नै तटै, देव जुहारू' चउवीसटै । ६ ।
जिनदत्तसूरि कुशलसूरि तणी, सु'दर मूरति सुहामणी ।
दुख जायै प्रणम्यां दहवटै, देव जुहारू' चउवीसटै ।१०।
संख शब्द झालर झणकार, घणावली घंटा रणकार ।
कानि सुणि रु'कटै, देव जुहारू' चउवीसटै ।११।
छोह पंकति देहरउ नहीं भींति, राजै कांगरा रूड़ी रीति ।
सखर समारया सेलावटै, देव जुहारू' चौवीसटै ।१२।
दंड कलश ध्वज लहकै वली, कहै मुगति थई गोहली ।
मिथ्यामति दूरे आझटै, देव जुहारू' चौवीसटै ।१३।
श्री बीकानेर समौ नीपनौ, सोहइ जिम मोती सीपनौं ।
पूरव रात न का पालटै, देव जुहारू' चौवीसटै ।१४।

॥ कलश ॥

इम चैत्य चौवीसटौ अविचल, श्री बीकानेर विराज ए।
श्री संघ आणंद उदयकारी, भव तणा दुख भाज ए॥
संवत सोलइ अेयासीयइ, तवन कीधउ मगसिरै;
कहइ समयसुन्दर भणइ तेहना, मन वंछित (कारज) सरइ।१५।

—:o:—

श्री विक्रमपुर आदिनाथ स्तवन

श्री आदीसर भेटियउ, प्रह ऊगमतइ सूरो जी।
दुख दोहग दूरि टल्या, मगव्यउ पुण्य पडूरो जी।१।श्री०।
अदभुद मूरति अति भली, जोतां त्रिपति न थायो जी।
सेत्रुञ्ज तीरथ सांभरइ, आदीसर जिणरायो जी।२।श्री०।
जिम सेत्रुञ्जगिरि जागतउ, मूलनायक आदिनाथो जी।
जिम गिरनारइ गाजतउ, अदभुद शिवपुर साथो जी।३।श्री०।
गणधर वसही गुण निलउ, जिम प्रभु जेसलमेरो जी।
नगरकोट प्रभु निरखंता, आणंद हुय अविकेरो जी।४।श्री०।
अष्टापद जिम अरचियइ, भरत भराया बिंबो जी।
ग्वालेरइ गरुयड़ि निलउ, बावन गज परलंबो जी।५।श्री०
आबू आदीसर नमूं, विमल मंत्रि प्रासादो जी।
माणिकदेव दक्षिण मांहे, समर पञ्च प्रभु सादो जी

जिम ए तीरथ जागता, तिम ए तीरथ सारो जी।
मारुयाड़ि मांहे वडउ, सेत्रुञ्ज नउ अवतारो जी।७।श्री०।
संवत सोल बासठि समइ, चैत्र सातमि वदि जेहो जी।
युग प्रधान जिणचंद जी, बिंब प्रतिष्ठा एहो जी।८।श्री०।
मूलनायक प्रतिमा नमूं, आदीसर निसदीसो जी।
सुंदर रूप सोहामणा, बीजा बिंब चालीसो जी।६।श्री०।
नाभिराया कुल चंदलउ, मरुदेवी मात मल्हारो जी।
वृषभ लांछन प्रभु वांदियइ, मन वंछित दातारो जी।१०।श्री०।
एहवा आदि जिणेसरू, विक्रमपुर सिणगारो जी।
समयसुन्दर इम वीनवइ, संघ उदय सुखकारो जी।११।श्री०।

इति श्री विक्रमपुर मंडण अदबुद आदिनाथ स्तवनम्।

—०—

गणधर वसही (जेसलमेर) आदिजिन स्तवन

१ ढाल—गलियारे साजन मिल्या

प्रथम तीर्थंकर प्रणमियें हुँ वारी,
आदिनाथ अरिहंत रे हुं वारी लाल।
गणधर वसही गुण निलौ हुं वारी,
भय भंजण भगवंत रे हुं वारी लाल।प्र०।१।

२ ढाल—अलवेला नी

सच्चू गणधर शुभमती रे लाल,
जयवंत भवीज जास मन मान्या रे।

मिलि प्रासाद मंडावियो रे लाल,
आणी मन उल्लास मन मान्या रे । प्र० ।२।

३ ढाल—ओलगड़ी

ध्रमसी जिनदत्त देवसी, भीमसी मन उच्छाहो जी।
सुत चारे सच्चू तणा, ल्यै लक्ष्मी नो लाहो जी । प्र०।३।

४ ढाल—योगना री

फागुण सुदि पांचम दिने रे, पनरै सै छत्तीस।
जिनचंद्रसूरि प्रतिठिया रे, जगनायक जगदीश। प्र० ।४।

५ ढाल—

भरत बाहुबलि अति भला जिनजी,
काउसग्गिया विहुं पास ।
मरुदेवी माता गज चढी जिनजी,
शिखर मंडप सुप्रकाश । प्र० ।५।

६ ढाल—वेगवती ते वांभणी

विहुँ भमती बिंबावली, कोरणी अति श्रीकारो रे।
समोशरण सोहामणी, विहरमान विस्तारो जी। प्र० ।६।

७ ढाल—जलालिया नी

जिम जिम जिन मुख देखिये रे,
तिम तिम आनंद थाय म्हारा जिन जी।
पाप पुलावन पाछला रे,
जन्म तणा दुख जाय म्हारा जिन जी। प्र० ।७।

८ ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा

जिन प्रतिमा जिन सारखी जी,
ए कह्यउ मुगति उपाय ।
नयणे मूरति निरखतां जी,
समकित निरमल थाय । प्र० ।८।

६ ढाल—करम परीक्षा करण कुमर चाल्यो

आद्रकुमार तणी परै जी, सज्यंभव गणधार ।
प्रतिमा प्रतिबूझ्या थकी रे, पाम्या भव नो पार । प्र० ।६।

१० ढाल—चरणाली चामुंडा रण चढ़इ

नाभिराय कुल सिर तिलो, मरुदेवी मात मल्हारो रे ।
लंछन वृषभ सोहामणो, युगला धरम निवारो रे । प्र०।१०।

११ ढाल—कर जोड़ी आगल रही

आज सफल दिन माहरो, भेट्या श्री भगवंत रे ।
पाप सहु पराभव गया, हियड़ो अति हरखंत रे । प्र० ।११।

१२ ढाल—राग धन्याश्री

इण परि वीनव्यो जेसलमेर मझार ।
गणधर वसही मुख मंडण जिन सुखकार ॥
संवत सोलह सइ एव असी नभ मास ।
कहइ समयसुन्दर कर जोड़ि ए अरदास । प्र० ।१२।

—:०:—

सेत्रावा मंडन श्री आदिनाथ जिन स्तवनम्

मूरति मोहन वेलड़ी, प्रगटी पुण्य पड़ूर।
ऋषभ तणी रलियामणी, प्रणमंता सुख पूर। मू०। १।
संवत सोल पंचावनइ, फागुण सुदि रविवार।
प्रगट थई प्रतिमा घणी, सेत्रावा सिणगार। मू०। २।
ऋषभ शीतल शांति वीरजी, श्री वासुपूज्य अनूप।
सकल सुकोमल शोभती, प्रतिमा पांचे सरूप। मू०। ३।
श्री संघ रंग वधामणा, आणंद अंग न माय।
भाव भगति करि भेटियो, प्रथम जिणेसर राय। मू०। ४।
सुंदर मूरति स्वामि नी, ज्योति लग्गमति थाय।
जोतां तृपति न पामियइ, पातक दूर पुलाय। मू०। ५।
रूप अनुपम जिन तणो, रसना वरणयो न जाय।
भगति भणी गुण भावतां, सफल मानव भव थाय। मू०। ६।
प्रतिमा नो मुख चन्द्रमा, लोचन अमिय कचोल।
दीप सिखा जिसी नासिका, कंचण द्रपण कपोल। मू०। ७।
कुंद कली रदनावली, अद्भुत अधर प्रवाल।
सोवन देह सुहामणी, निर्मल शशि दल भाल। मू०। ८।
जिन प्रतिमा जिन सारखी, बोली सूत्र मझार।
भवियण नैं भव तारिवा, त्रिभुवन नैं हितकार। मू०। ९।
जिनवर दरसण देखतां, लहियै समकित सार।
आर्द्रकुमार तणी परइ, शय्यंभव गणधार। मू०। १०।

तूं प्रभु त्रिभुवन राजियो, वीनतड़ी अवधार।
पूरि मनोरथ माहरा, आवागमन निवार।मू०।११।
तूं गति तूं मति तूं धणी, तूं भवतारण हार।
तूं त्रिभुवन पति तूं गुरु, तूं मुझ प्राण आधार।मू०।१२।
मुझ मन मधुकर मोहियो, तुझ पद पंकज लीन।
सेव करूं नित ताहरी, जिम सागर जल मीन।मू०।१३।
तुम दर्शन सुख संपजे, तुम दरशन दुख जाय।
तुम दरसन संघ गहगहे, तुम दरसन सुपसाय।मू०।१४।
भगति भली परे केलवी, मीठी अमिय समान।
भक्ति वच्छल भगवंत जी, द्यो मुझ केवल ज्ञान।मू०।१५।

॥ कलश ॥

इय नाभिनंदन जगत वंदन, सेत्रावापुर मण्डणो।
वीनव्यो जिनवर संघ सुखकर, दुरिय दोहग खंडणो॥
गच्छराज युग प्रधान जिनचंद सूरि शिष्य शिरोमणि।
गणि सकलचंद विनेय वाचक, समयसुन्दर सुख भणी।१६।

श्री ऋषभदेव हुलरामणा गीतम्

राग—परजीयउ

रूड़ा ऋषभ जी घरि आवउ रे, हालरियु गाऊं रे गाउं।रू०।
मरुदेवी माता इण परि बोलइ, जीवन तोरी बलि जाउं रे।रू०।१।

पगि घूघरड़ी घमतां करतउ, इक दिन आंगणि आवइ रे।
मरुदेवी माता हियड़इ भीड़ी, आणंद अंगि न मावइ रे। रू०।२।
खोलइ मोरइ तूं कदे न खेलइ, सुर रमणी संग भावइ रे।
पुत्र मोरूं दूध कदे न पीयइ, तोरी मावड़ी किम सुख पावइ रे।३।
सोभागी सहु नइ तूं वाल्हउ, हरखइ मां हुलरावइ रे।
रिषभदेव तणा मन रंगइ, समयसुन्दर गुण गावइ रे। रू०।४।



सिन्धी भाषामय श्री आदि जिन स्तवनम्

मरुदेवी माता इंयें आखइ, इद्धर उद्धर कितनुं भाखइ।
आउ आसाड़इ कोल ऋषभ जी, आउ असाढइ कोल। १।
मिट्ठा वे मेवा तै कुं देवा, आउ इकट्ठे जेमण जेमां।
लावां खूब चमेल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। २।
कम्बी चीरा पैं बांधूं तेरे, पहिरण चोला मोहन मेरे।
कमर पिछेवड़ा लाल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ३।
काने केसरिया पैरे कड़िया, हाथे नंगा जवहर जड़िया।
गल मोतियन की माल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल। ४।
बांगा लाट्टू चकरी चंगी, अजब उस्तादां वहिस्र रंगी।
आंगण असाड़े खेल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ५।
नयण वे तैंडे कज्जल पावां, मन भावंदा तिलक लगावां।
रुठड़ा कैंदे कोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ६।

आवो मेरे बेटा दूध पिलानां, वही वेड़ा गोदी में सुख पानां।
मभ असाड़ा बोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ७ ।
तुं जग जीवन प्राण आधारा, तूं मेरा पुत्ता बहुत पियारा।
तैंयुं वंजा घोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ८ ।
ऋषभदेव कुं माय बुलावैं, खुसिया करेदा आपे आपे आवैं।
आणंद अम्मा अंग ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ६ ।
सचा वे साहिब तूं भ्रम घोरी, शिवपुर सुख दे मैं कुं भोरी।
समयसुन्दर मन रंग ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल ।१०।

—×—

श्री सुमतिनाथ बृहत्स्तवनम्

प्रह ऊठी नइ प्रणमुं पाय, सेवंता सुख संपति थाय ।
अरिहंत मुझ वीनति अवधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।१।
पुण्य संजोगइ तुं पामियउ, चरण कमल मस्तक नामियउ ।
सफल थयउ मानव अवतार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।२।
प्रभु पूजा ना लाभ अनंत, हित सुख मोक्ष क्ह्या भगवंत ।
ज्ञाता भगवती अंग मझार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।३
प्रथम करूं प्रभु अंग पखाल, पाप करम जायट तत्काल ।
उत्तम अंग लूहण अधिकार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।४
कनक कचोली केशर भरूं, नव अंगि प्रभु नी पूजा करूं ।
कुंडल मुकुट मनोहर हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।५

पंचवरण फूलां नी माल, प्रतिमा कंठि ठवुं सुविशाल।
मृदमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ६।
एगसाड़ि करि उत्तरासंग, शक्रस्तव पभणुं मन रंगि।
गीत गान गुण गाऊँ सार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ७।
प्रभु भजतां पुण्य पडूर, दुख दोहग नासइ सवि दूरि।
पुत्र कलत्र वाधइ परिवार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ८।
आरति चिन्ता अलगी टलइ, मन चिंतव्या मनोरथ फलइ।
राज तेज दीपइ दरबार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ९।
आज मनोरथ सगला फल्या, सुमतिनाथ तीर्थंकर मिल्या।
अरिहंतदेव जगत आधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१०।
सुमतिनाथ जिनवर पांचमउ, कल्पवृक्ष चिंतामणि समउ।
मंगला राणी मेघ मल्हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।११।
प्रतिमा अष्टकमलदल तणी, देहरासरि पूजूं सुख भणी।
अष्ट महानिधि रिधि दातार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१२।
सुमतिनाथ साचउ तूं देव, भवि भवि हुइज्यो तोरी सेव।
समयसुन्दर पभणइ सुविचार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१३।

—०—

पाल्हणपुरमण्डन-४४
द्व्यर्थरागगर्भित-चन्द्रप्रभजिनस्तवनम्

सेवो श्री चन्द्रप्रभ स्वामी,
भविक उठी परभाति[१] रे।

रिद्धि वृद्धि हुयइ रांन वेलाउल[२],
तइ-सारंग[३] दिन राति रे।से०।१।
भवसंतति[४] ना भय दुख भंजण,
पंचम[५] गति दातार रे।
त्रिभुवननाथ ललित[६] गुण तोरा,
गावइ देवगंधार[७] रे।से०।२।
के सेवइ गउरीवर[८] शंकर,
कै भजे कृष्ण भूपाल[९] रे।
के भयरव[१०] पणि हुँ भजु तुम्ह नइ,
करि कल्याण[११] कृपाल रे।से०।३।
नट[१२] विकट बहु कूड़ कपट केलवी,
परजीउ[१३] रंज्या कोड़ि रे।
पर सिरि[१४] राग धर्‍यो मंइ पापी,
परदउ[१५] राखि नइ छोड़ि रे।से०।४।
गउड़[१६] बंगाल[१७] तिलंग[१८] नइ सोरठ[१९],
मत भम्यउ देस प्रदेस रे।
चंद्र प्रभ सामी घर वइठां,
आसा[२०] पूरसि एस रे।से०।५।
भव सिंधुड़ो[२१] दूरि गमाड़ै,
त्तमारू[२२]-प तुझ ध्यान रे।
पुण्य दिसा-मेरी[२३] अब प्रगटी,
तुझ गुण धार[२४]-णि गान रे।से०।६।

सगली दिसि वास[२५]-ति नी,
हुयइ सगले देकार[२६] रे।
जइतसिरि[२७] पामइ तुझ सेवका,
तुम्हे प्रभु दुख केन्दार[२८] रे।से०।७।
पूरविअउ[२९] तुं मनोरथ मोरउ,
दुख तु-मेवारउ[३०] देव रे।
मरण जरा भय भीम-पलासी[३१],
करतां तोरी[३२] सेव रे।से०।८।
सुंदर वयराडी[३३] ललही करइ,
सुद्ध नाटक[३४] सुध भाख रे।
तुझ उलगूजरी[३५] दुखि न हुवै,
सगला लोक दे-साख[३६] रे।से०।९।
मनमथ मधु माधव[३७] चंद्रप्रभ,
लखमणा मात मल्हार[३८] रे।
पुण्यलता आ-रामगिरि[३९] सब,
धीर लो-कनरउ[४०] आधार रे।से०।१०।
करउ अलगुं ड[४१]-र पाप समीरण,
शंकराभरण[४२] ए काम रे।
तुझ प्रासाद हु-सेनी[४३] की मुझ,
धन्या सिरि[४४] सुख ठाम रे।से०।११।
इण परि श्री चन्द्रप्रभ स्वामी,
पाल्हणपुर सिणगार रे।

रंगे चौमालीसे रागै,
समयसुन्दर सुखकार रे। से०।१२।

इति श्रीपाल्हणपुरमण्डन ४४ द्वयर्थरागगर्भित
श्रीचंद्रप्रभस्वामि बृहत्स्तवनम्।
संवत् १६७१ भादवा सुदि १२ कृतम्।

—:o:—

चन्द्रवारि मण्डन श्री चन्द्रप्रभ भास

राग—वसंत

चन्द्रप्रभ भेट्यउ मंइ चंदवारि,
जमुना कइ पारि ॥ चन्द्र० ॥
सुन्दर मूरति अइसी नहीं संसारि। चन्द्र०।१।
निरमलदल फटिक रतन उदार,
दीपइ अति दीप शिखा प्रकार।
चित हरख्यउ चंद्रप्रभ जुहारि,
समयसुन्दर नइ भव समुद्र तारि। चन्द्र०।१।

इति श्री चन्द्रवारि मडण चन्द्रप्रभ भास,॥२७॥

श्री शीतलनाथ जिन स्तवनम्

मुख नीको, शीतलनाथ को मुख नीको।
उठि प्रभात जिके मुख देखत, जन्म सफल ताही को। मु०।१।
नयन कमल नीकी मधतारा, उपमा ताहि अली को।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, भाल ऊपर भल टीको। मु०।२।

शीतलनाथ सदा सुखदायक, नायक सकल दुनी को ।
समयसुन्दर कहै जनम जनम लग, मैं सेवक जिन जी को । मु० ।३।

श्री शीतल जिन गीतम्

राग-देशाख

कहउ सखि कउण कहीजइ,
तुम कुं अवधि वरस की दीजइ । क० ।
सुत हरि वाचि सबद प्रथमाक्षर,
जणणी जास भणीजइ । क० ।१।
आदि विना जलनिधि नवि दीसइ,
मध्य विना सलहीजइ ।
अंत विना सब कुं दुखकारी,
सब मिली नाम सुणीजइ । क० ।२।
हरि सोदर रमणी सुरभी सिसु,
दो मिली चिन्ह धरीजइ ।
समयसुन्दर कहइ अहनिशि उनके,
पद पंकज प्रणमीजइ । क० ।३।

—x—

ी अमरसर मण्डण श्री शीतलनाथ बृहत्स्तवनम्

ोजइ हे सखि फलवधि पास कि आसा पूरइ सुरमणी । एहनी ढाल ।

मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि,
वीनति सुणि एक मोरड़ी ।

दुख भांजइ हो तुं दीनदयाल कि,
वात सुणी मई तोरड़ी ।मो०।१।
तिण तोरइ हो हुँ आयउ पासि कि,
मुझ्फ मन आसा छइ घणी ।
कर जोड़ी हो कहुं मननी वात कि,
तूं सुणिजे त्रिभुवन धणी ।मो०।२।
हूँ भमियउ हो भव समुद्र मझारि कि,
दुख अनंता मई सह्या ।
ते जाणइ हो तूंहिज जिनराय कि,
मई किम जायइ ते कह्या ।मो०।३।
भाग जोगइ हो तारेउ श्री भगवंत कि,
दरसण नयणे निरखियउ ।
मन मान्यउ हो मोरइ तूं अरिहंत कि,
हीयड़उ हेजइ हरखियउ ।मो०।४।
एक निश्चय हो मंइ कीधउ आज कि,
तुझ्फ विण देव बीजउ नहीं ।
चिंतामणि हो जउ पायउ रतन,
तउ काच ग्रहइ नहीं को सही ।मो०।५।
पंचामृत हो जउ भोजन कीध,
तउ खलि खाना किम मन थियइ ।
कंठ सांइ हो जउ अमृत पीध,
तउ खारउ जल कहउ कुण पीयइ ।मो०।६।

मोती कउ हो जउ पहिरउ हार,
तउ चिरमठि कुण पहिरइ हियइ ।
जसु गांठि हो लाख कोड़ि गरथ,
ते व्याज काढी दाम किम लीयइ । मो० ।७।
घर मांहे हो जउ प्रगट्यउ निधान,
तउ देसंतरि कहउ कुण भमइ ।
सोना कउ हो जउ पुरुसउ सीध,
तउ धातुवादि नइ कुण धमइ । मो० ।८।
जिण कीधा हो जवहर व्यापार,
तउ मणिहारां मनि किम गमइ ।
जिण कीधउ हो सदा हाल हुकम्म,
तउ वे तूंकारयउ किम खमइ । मो० ।९।
तू साहिब हो मोरउ जीवन प्राण कि,
हूं सेवक प्रभु ताहरउ ।
मोरउ जीवित हो आज जन्म प्रमा कि,
भव दुख भागउ माहरउ । मो० ।१०।
तुझ मूरति हो देखंतां प्राय कि,
समोवसरण मुझ सांभरइ ।
जिन प्रतिमा हो जिन सारिखी जाण कि,
मूरिख जे सांसउ करइ । मो० ।११।
तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चंद चकोरड़ा ।

तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि,
मेह आगम जिम मोरड़ा ।मो०।१२।
तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि,
जिम दिन ऊगइ चोरड़ा ।
तुम नामइ हो सुख संपति थाय कि,
मन वंछित फलइ मोरड़ा ।मो०।१३।
हुं मांगूं हो हिव अविहड़ प्रेम कि,
नित नित करूंय निहोरड़ा ।
मुझ देज्यो हो सामी भव भवि सेव कि,
चरण न छोडूं तोरड़ा ।मो०।१४।

॥ कलश ॥

इम अमरसर पुर संघ सुखकर, मात नंदा नंदणो,
सकलाप शीतलनाथ सामी, सकल जाण आणंदणो।
श्रीवच्छ लंछण चरण कंचण, रूप सुंदर सोह ए।
ए तवन कीधउ समयसुन्दर, सुणत जण मण मोहए।१५।

इति श्रीअमरसरमंडनश्रीशीतलनाथबृहत्स्तवन संपूर्ण कृतं लिखितञ्च।

—o—

श्री मेडता मंडण विमलनाथ पंच कल्याणक स्तवनम्

विमलनाथ सुणौ वीनति, हूँ छुं तोरउ दासो जी।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, पूरि हमारी आसो जी। वि०। १।

तुम दरसन विन हूँ भम्यउ, काल अनादि अनंतो जी।
नाना विधि मंइ दुख सह्या, कहतां नावै अंतो जी। वि०। २।
पुण्य पसाये पामियउ, अरिहंत तूं आधारो जी।
मन वंछित फल्या माहरा, आणंद अंग अपारो जी। वि०। ३।
नगर कंपिल नरेसरू, राजा श्री कृतवरमो जी।
अद्‌भुत तासु अंतेउरी, श्यामा नाम सुधरमो जी। वि०। ४।
तासु उयरि प्रभु अवतर्या, सुदि बारस वैसाखो जी।
चवद स्वप्न राणी लह्या, सुपन पठिक सुत दाखो जी। वि०। ५।
जन्म कल्याणक जिन तणो, माह तणी सुदि त्रीजो जी।
दिन दिन वाधइ दीपता, चंद कला जिम बीजो जी। वि०। ६।
कंचन वरण कोमल तनु, क्रोड़ लांछन सुकुमालो जी।
साठि धनुष प्रभु शोभता, सुन्दर रूप रसालो जी। वि०। ७।
विमल थई मति मात नी, विमलनाथ तिण नामो जी।
राजलीला सुख भोगवै, पूरवे वंछित कामो जी। वि०। ८।
नव लोकान्तिक देवता, वस जंपे जयकारो जी।
माह तण चौथ चांदणी, संयम ल्यै प्रभु सारो जी। वि०। ९।
च्यार कर्म प्रभु चूरिया, धरिय अनुपम ध्यानो जी।
पौष शुक्ल छठि परगड़ा, पाम्यो केवल ज्ञानो जी। वि०। १०।
समवशरण प्रभु देशना, बैठी परषदा बारो जी।
संघ चतुर्विध थापना, सतावन गणधारो जी।

साठ लाख वरसां लगी, पाली सगली आयो जी।
सप्तमी वदि आषाड़ नी, सिद्ध थया जिनरायो जी। वि०।१२।
सुन्दर मूरति प्रभु तणी, निरखंतां सुख थायो जी।
हियड़ो हीसंइ माहरो, पातिक दूर पुलायो जी।वि०।१३।
प्रभु दर्शन सुख संपदा, प्रभु दरशन दुख दूरो जी।
प्रभु दरसन दौलति सदा, प्रभु दरसन सुख पूरो जी।वि०।१४।

॥ कलश ॥

इम पंच कल्याणक परंपर, मेदनी तट मंडणो,
श्रीविमल जिनवर संघ सुखकर, दुरिय दोहग खंडणो।
जिनचंद्रसूरि सुशिष्य पंडित, सकलचंद मुनीश ए,
तसु शिष्य वाचक समयसुन्दर, संथुण्योसु जगीश ए।१५।

—:o:—

श्री आगरा मंडण श्री विमलनाथ भास

देव जुहारण देहरइ चाली,
सहिय ससमाणी साथि री माई।
केसर चंदण भरिय कचोलड़ी,
कुसुम की माला हाथि री माई।१।
विमलनाथ मेरउ मन लागउ,
श्यामा कउ नंदन लाल रो माई॥ आंकणी॥

पग पूंजी चढ़ं पांवड़ साले,
अरिहंत देव दुवारि री माई।
निसही तीन करे विहुँ ठामे,
पांचे निगमन सार री माई।२। वि०।
त्रिणह प्रदक्षिण भमती देऊं,
त्रिणह करूं परणाम री माई।
चैत्य वंदन करि देव जुहारुं,
गुण गाऊं अभिराम री माई।३। वि०।
भमती मांहि भमवि जे भवियण,
ते न भमइ संसार री माई।
समयसुन्दर कहइ मन वंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई।४। वि०।

इति श्री आगरामण्डन श्री विमलनाथ भास ॥ २५ ॥

—:o:—

श्री शान्तिनाथ गीतम्

राग—केदारउ

शान्तिनाथं भजे शांतिसुखदायकं,
नायकं केवलज्ञानगेहम् ।
कर्ममलपङ्कादम्बिनीसन्नभं,
गगनसागरघनंमानदेहम् ।शां०।१।

कनकपङ्कजकदम्बेषु सञ्चारिणं,
कारिणं सम्पदां भागधेयम् ।
अत्रिसुत वाहनेनाङ्कितं जिनवरं,
पापकं भीनसे वैनतेयम् ।शां०।२।
विकटसंकटपयोराशिघटसंभव,
विश्वसेनाङ्गजं विश्वभूपम् ।
सौख्यसन्तानवल्लीविताने घनं,
समयसुन्दरसदानन्दरूपम् ।शां०।३।

श्रीपाटण–शांतिनाथपंचकल्याणकगर्भित देवगृहवर्णनयुक्तदीर्घस्तवनम्

..................मूरत सोवन वान ।
सुरत सोहती ए, जन मन मोहती ए ॥१७॥
पीतल पड़िमा पासि, भेव्यउ अधिक उलासि ।
संतीसर तणी ए, तिहुअण जण धणी ए ॥१८॥
प्रभु तोरण मझारि, सुन्दरि पूतलि च्यारि ।
प्रभु सेवा करि ए, दोइ दीवी धरी ए ॥१९॥
पंच वरण वर पाट, रचिय रसाल सुघाट ।
चिहुं दिसि चंदुआ ए, ऊपरि बांधिया ए ॥२०॥
जोवउ जण सब कोई, पीतल घंटा दोइ ।
रण रण रणझणइ ए, जिण जय जय भणइ ए ॥२१॥

॥ ढाल ॥

जसु मंडप चिहुं पासि नित नाटक करइ,
मिलि चउवीसे पूतली ए।
दोय वजावइ ताल दोय वीणा वंसी,
दोय वजावइ वांसली ए॥
दोइ करि धरि श्रबात्र तांत वजावए,
गीत गान जिन ना करइ ए।
दोय वजावइ सार धौं धौं मदला,
दोय करियलि चामर धरइ ए॥२२॥
दोय करि पूरण कुंभ जाणे जिणवर,
स्नान भणी पाणी भर्या ए।
एक वजावइ भेरि तिय मुहि करि,
धरि जोतां जिण जण मण हर्या ए॥
नव पूतलि नव वेप करिय नवे पदे,
नाचइ सोचइ मनि करी ए।
जाणे शांति जिणंद आगलि अहनिशि,
नृत्य करइ सुर सुन्दरी ए॥२३॥
चउदंती चउपासि रूप मणोहर,
पूर्ण कुंभ निय करि धरइ ए।
जाणे चउ दिगदंती सांमि सेवा थकी,
भवसागर लीला तरइ ए॥

नान्हा मोटा थंभ छोह पंक्ति भींति,
चारु चित्र वलि चिहुं दिसइ ए।
एहवउ जिणहर गेह अहनिशि निरखंता,
भवियण जण मण उल्हसइ ए ॥२४॥

इम थुणयउ जिणवर संति दिणयर, भरिय तिमिर विहंडणो।
अणहिल्ल पाटण माँहि श्री, त्रंबाड़वाड़ा मंडणो ॥
गच्छराय जिनचंद सूरि सीसय, सकलचंद्र मुणीसरो।
तसु सीस पभणइ समयसुन्दर, हवउ जिन सुह सुह करो ॥२५॥

इति श्रीशांतिनाथपचकल्याणकगर्भितदेवगृहवर्णनयुक्तदीर्घ स्तवनम् समाप्तम्।*

—०—

जेसलमेर मण्डन श्री शांति जिन स्तवनम्

अष्टापद हो ऊपरलो प्रासादक, थींदे जी संघवी करावियउ।
जिण सीधो हो लच्मी नो लाहक, पुण्य भंडार भरावियउ ॥१॥
मोरा साहिब हो श्री शांतिजिणंदक, मनोहर प्रतिमा सुंदरु।
निरखंता हो थाये नयणानंदक, वंछित पूरण सुरतरु ॥२॥
देहरइ में हो पेसंता दुवार क, सेत्रुञ्जे पाट सु देखियइ।
भमती मंइ हो बहु जिनवर बिंबक, नयणे देखि आणंदियइ ॥३॥

* जेसलमेर बड़ा ज्ञान भण्डार—द्वितीय पत्र से

सतरह से हो तीर्थंकर देवक, तिहुं पासे नमुं भ्रारणै ।
गज ऊपर हो चढिया माय ने बापक, मूरति सेवा कारणै ॥ ४ ॥
अति ऊँचा हो सोहै श्रीकारक, दंड कलश ध्वज लहलहै ।
धन्य जीव्यो हो तसु तो परमाणक, यात्रा करी मन गहगहै ॥ ५ ॥
जेसलमेर हो पनरै छत्रीसक, फागुण सुदि तीज जस लियो ।
खरतर गच्छ हो जिन समुद्र सुरिन्दक, मूल नायक प्रतिठियो । ६ ।
हित जाण्यो हो श्री शांति जिणंदक, तूं साहिब छइ माहरउ ।
समयसुंदर हो कहै बेकर जोड़क, हूं सेवक छुं ताहरउ ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवनम्

सुंदर रूप सुहामणो, श्री शान्ति जिणेसर सोहइ रे ।
त्रिभुवन केरउ राजियउ, प्रभु सुरनर ना मन मोहइ रे ॥ १ ॥
समवसरण सुरवर रच्यउ, तिहां बैठा श्री अरिहंतो रे ।
द्यै भवियण नै देसणा, भय भंजण भगवंतो रे ॥ २ ॥
त्रिण्ह छत्र सुरवर धरइ, चिहुं दिशि सुर चामर ढालइ रे ।
मोहन मूरति निरखतां, प्रभु दुरगति नां दुख टालइ रे ॥ ३ ॥
आज सफल दिन माहरउ, आज पाम्यउ त्रिभुवन राजो रे ।
आज मनोरथ सवि फल्या, जउ भेट्या श्री जिनराजो रे ॥ ४ ॥
बेकर जोड़ी वीनवुं, प्रभु वीनतड़ी अवधारो रे ।
मुझ ऊपरि करुणा करी, आवागमन निवारो रे ॥ ५ ॥
चिन्तामणि सुरतरु समउ, जगजीवन शांति जिणंदो रे ।
समयसुंदर सेवक भणइ, मुझ आपो परमाणंदो रे ॥ ६ ॥

श्री शान्तिनाथ हुलरामणा गीतम्

ढाल—१ गुण वेलड़ी नी
२ गुजराती सहेलड़ी नी

शांति कुंयर सोहामणउ म्हारउ वालुयड़उ,
त्रिभुवन केरो राय म्हारउ नान्हड़ियउ।
पालणड़इ पउढ्यउ रमइ म्हारउ वालुयड़उ,
हींडोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥१॥
सोभागी सहु ने वालहउ म्हारउ वालुयड़उ,
सुरनर नामइ सीस म्हारउ नान्हड़ियउ।
हुलरावइ हरखे घणइ म्हारउ वालुयड़उ,
जीवउ कोड़ि वरीस म्हारउ नान्हड़ियउ ॥२॥
पग घूघरड़ी घमघमइ म्हारउ वालुयड़उ,
ठम ठम मेल्हइ पाय म्हारउ नान्हड़ियउ।
हेजइ मां हियड़इ भीड़इ म्हारउ वालुयड़उ,
आणंद अंगि न माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥३॥
बलिहारी पुत्र ताहरी म्हारउ वालुयड़उ,
तूं मुझ प्राण आधार म्हारउ नान्हड़ियउ।
शांति कुंयर हुलरामणुं म्हारउ वालुयड़उ,
समयसुन्दर सुखकार म्हारउ नान्हड़ियउ ॥४॥

श्री शान्ति जिन स्तवनम्

सुखदाई रे सुखदाई रे,
सेवो शांति जिणंद चित लाई रे। सु०।
प्रभु नी भगति करूं मन भावइ रे,
म्हारा अशुभ करम जावइ रे।
एहवा भवियण भावना भावइ रे,
मन वंछित ते सुख पावइ रे। सु० ।१।
बारू केसर चंदन लीजइ रे,
प्रभु नी नव अंग पूजा रचीजइ रे।
पुष्पमाल कंठे ठवीजइ रे,
मानव भव सफल करीजइ रे। सु० ।२।
प्रभु मंइ काल अनंत गमायउ रे,
हिवणां तूं पुण्य संयोगइ पायउ रे।
तोरे चरण कमल चित्त लायउ रे,
सामी हूँ तुम शरणइ आयउ रे। सु० ।३।
हिव वीनतड़ी एक अवधारउ रे,
प्रभु शरणागत साधारउ रे।
दुरगति ना दुख निवारउ रे,
भव सागर पारि उतारउ रे। सु० ।४।
श्री शांति जिणेसर सामी रे,
नित चरण नमुं सिरनामी रे।

समयसुन्दर अंतरयामी रे,
प्रभु नामइ नव निधि पामी रे। सु० ।५।

—:०:—

श्री शान्ति जिन गीतम्

आंगण कल्प फल्यो री हमारे माई,
आंगण कल्प फल्यो री।
ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संपति दायक,
श्री शांतिनाथ मिल्यो री ॥ह०॥१॥
केशर चंदन मृगमद मेली,
मांहि बरास मिल्यो री ।ह०।
पूंजत शांतिनाथ की प्रतिमा,
अलग उद्वेग टल्यो री ॥ह०॥२॥
शरणे राख कृपा करि साहिब,
ज्यूं पारेवो पल्यो री ॥। ह० ॥
समयसुन्दर कहइ तुम्हरी कृपा ते,
हिव रहिस्यूं सोहिलो री ॥ह०॥३॥

—:०:—

श्री गिरनार तीरथ भास

श्री नेमीसर गुण निलउ, त्रिभुवन तिलउ रे।
चरण विहार पवित्त, जय जय गिरनार गिरे ॥१॥

त्रण कल्याण जिन तणा, उच्छव घणा रे।
दीक्षा ज्ञान निर्वाण, जय जय गिरनार गिरे ॥२॥
अंब कदंब केली घने, सहसावने रे।
समोसर्‌या श्री नेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥३॥
जदुपति वंदन जावती, राजीमति रे।
प्रतिबोध्या रहनेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥४॥
संब प्रद्युम्न कुमर वरा, विद्याधरा रे।
क्रीड़ा गिरि अभिराम, जय जय गिरनार गिरे ॥५॥
संघपति भरतेसरू, जात्रा करू रे।
थाप्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरे ॥६॥
फल अनंत सेत्रुञ्ज कह्या, शिव सुख लह्या रे।
तेह तणउ ए शृङ्ग, जय जय गिरनार गिरे ॥७॥
समुद्र विजय नृप नंदना, कृत वंदना रे।
समयसुन्दर सुखकार, जय जय गिरनार गिरे ॥८॥

इति श्री गिरनार तीरथ भास ॥ ८ ॥

—०—

श्री गिरनार तीर्थ नेमिनाथ उलंभा भास

दूरि थकी मोरो वंदणा, आणे ज्यो जिनराय। नेमिजी।
उमाहउ करि आवियउ, पणि कोई अंतराय। ने०। दू०।१।

कब गिरनार गढइ चढ़ूं, जपतउ अहनिशि जाप।
प्रापति विण किम पामिइं, मन मान्या मेलाप। ने० द०।२।
तुम सुं मांड्यउ नेहलउ, पूरउ नवि निरवाह।
आगे पणि राजिमती, नारी करी निरुच्छाह। ने० द०।३।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, अंतराय सवि मेटि।
समयसुन्दर कहइ नेमिजी, वेगी देज्यो भेटि। ने०।द०।४।

इति श्री गिरनार तीरथ नेमिनाथ उलंभा भास ॥ ६ ॥

(२)

परतिख प्रभु मोरी वंदना, आज चडी परमाण। नेमिजी।
भाग संजोगउ तूं भेटियउ, जादव प्रीति सुजाण। नेमिजी।१। प०।
परम प्रीति खरी प्रभु ताहरी, निरवाहइ निरवाण। नेमिजी।
नव भव नारि राजिमती, तारी आप समाण। नेमिजी।२। प०।
अंतरजामी आपणउ, तेहूं केही काणि। नेमिजी।
ओलंभा पिण आपीयइ, कीजइ कोडि वखाण। नेमिजी।३। प०।
उलंभउ उतारवियउ, आपणउ सेवक जाणि*। नेमिजी।
श्री गिरनार यात्रा करी, समयसुन्दर सुविहाण। नेमिजी।४। प०।

इति श्री नेमिनाथ उलंभा उतारण गिरनार भास ॥ ७ ॥

श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ भास

राग—गूजरी

सौरीपुर जात्र करी प्रभु तेरी।
जन्म कल्याणक भूमिका फरसी, मन आस्या फली मेरी। सौ०।१।

* श्री गिरनार जुहारियो जगजीवन जग भाण। ने०।

धन ध्यावउ नेमि जिइं जनमे, धन खेलण की सेरी ।
जरासंध विरताव वसावी, द्वारिका नगरी नवेरी ।सौ०।२।
नेमि अनि रहनेमि सहोदर, मूरति राजुल केरी ।
भाव भगति रिकरी मांहि भेटी, जिन प्रतिमा बहुतेरी ।सौ०।३।
जात्र जावत आवत हम वइठे, जमुना जल की वेरी ।
समयसुन्दर कहइ अठ नेमीसर, राखि संसार की फेरी। सौ०।४।

इति श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ भास ।

श्री नडुलाई मंडण नेमिनाथ भास

राग—सारग

नडुलाई निरख्यउ, जादवउ न०
ऊंचउ परवत उपरि उनयउ, मन मोरउ चातक हरख्यउ ।१। न०।
साम मूरति तेज वीजलि राजित, वसुधा जल वरख्यउ ।
समयसुंदर कहइ समुद्रविजय सुत, प्रभु जलधर समउ परख्यउ ।२।

इति श्री नडुलाई मडण नेमिनाथ भास ॥ १८ ॥

श्री नेमिराजुल गीतम्

ढाल—मेरी बहिनी सेतुंज भेटूंगी—आदिनाथ नी बहिनी नी ।

ांपा¶ ते रूपइ रूयडा*, परिमल सुगंध सरूप ।
ामरा मनि मान्या‡ नहीं, गुण जाणइ न अनूप ।१।

¶ चांपलउ * सूयड़उ ‡ मानइ

मेरी बहिनी मन मान्या नी वात, मकरउ को केहनी तात । मे०।
सहुनी एहीज धात । मे० । आंकणी ।
आक तणा अक डोडिया, खावंता खारा होय ।
ईसर देव नइ ते चडइ, मन मानी वात जोय । मे०।२।
रयणायर रयणे भरयउ, गंभीर सुंदर रीति ।
राजहंसा राचइ नहीं, मान सरोवर प्रीति । मे०।३।
आंबलउ उंठइ परिहरयउ, नींब सुं नेह सुचंग ।
कुमुदिनी सूरज परिहरयउ, चंद्र कलंकी सुं संग । मे०।४।
राजमती कहइ हुं सखी, गुणवंत रूप निधान ।
तउ ही नेमि परिहरी, निरगुण मुगति बहु मान । मे०।५।
जउ पणि नीरागी नेमि जी, तउ पणि न मूकुं तास ।
ऊजल गिरि राजुल मिली, समयसुन्दर प्रभु पास । मे०।६।

इति श्री नेमिनाथ गीतम् ॥ १५ ॥

श्री नेमि जिन स्तवनम्

दीप पतंग तणी परइ सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो।
हूं अत्यंत तोरी रागिणी सुपियारा हो,
तूं कांइ थै मुझ छेह; नेम सुपियारा हो ॥ १ ॥
संगत वेसुं कीजिये सुपियारा हो,

जल सरिखा हुवे जेह; नेम सुपियारा हो।
आवटणु आपणि सहै सुपियारा हो,
दूध न दाभण देय; नेम सुपियारा हो॥ २॥
ते गिरुया गुणवंत जी सुपियारा हो,
चंदन अगर कपूर; नेम सुपियारा हो।
पीड़ता परिमल करै सुपियारा हो,
आपइ आणंद पूर; नेम सुपियारा हो॥ ३॥
मिलतां सुं मिलीयै सही सुपियारा हो,
जिम बापीयड़ो मेह; नेम सुपियारा हो।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी सुपियारा हो,
आय मिले सुसनेह; नेम सुपियारा हो॥ ४॥
हूँ सोनी नी मुंदड़ी सुपियारा हो,
तूं हिव हीरो होय; नेम सुपियारा हो।
सरिखइ सरिखउ जउ मिलइ सुपियारा हो,
तउ ते सुंदर होय; नेम सुपियारा हो॥ ५॥
नव भव न गिणयउ नेहलउ सुपियारा हो,
धिक् धिक् ए संसार; नेम सुपियारा हो।
समयसुन्दर प्रभु कूं मिली सुपियारा हो,
राजुल ल्यै व्रत सार; नेम सुपियारा हो॥ ६॥

श्री नेमिनाथ राजिमती गीतम्

राग—परजियउ

नेम जी रे सामलियउ सोभागी रे,

नेमजी वान नियउ वयरागी रे। ने० ।१।
हूँ भव भव की दासी रे ने० हूँ०,
नेमजी अब क्युं करत उदासी रे। ने० ।२।
तूं भोगी तउ हूँ भोगिणी रे ने० तूं०,
नेमजी तूं योगी तउ हूं योगिणी रे। ने० ।३।
तूं छोड़इ तउ हूँ छोड़ूं रे ने० तू०,
नेमजी कतुयारी ज्युं हूँ जोड़ूं रे। ने० ।४।
नेमि राजीमती तारी रे ने० ने०,
नेमजी समयसुन्दर कहइ हूँ वारी रे। ने० ।५।

नेमिनाथ गीतम्

नेमिजी सुं जउ रे साची प्रीतड़ी, तउ सुं अवरां प्रीतो रे।
गुणवंत माणस सेती गोड़ी तउ सुं निरगुण रीतो रे।१। ने
भाग संजोगइ रे अमृत पीजियइ, तउ कुण पीनइ नीरो रे।
थावल कांबल धुंसइ को नहीं, जउ पामीजइ चीरो रे।२। ने०
मीठी द्राख चारोली चाखवी, नींबोली कुण खायो रे।
रतन अमूलख चिंतामणी लही, काच ग्रहण कुण जायो रे।३। ने०
राजुल कहइ सखि नेम सुहामणउ, मुझ मन मान्यो एहो रे।
अहनिशि एहना गुण मन मांहि वस्या, अवरां केहउ नेहो रे।४। ने०
राजुल उज्जल गिरि संयम लियउ, जपतां पिउ पिउ नेमो रे।
समयसुन्दर कहइ साचउ एहतउ, अविहड़ बिहुं नउ प्रेमो रे।५। ने०

नेमिनाथ फाग

राग वसंत—जाति फाग नी ढाल

मास वसंत फाग खेलत प्रभु, उडत अबल अबीरा हो।
गावत गीत मिली सब गोपी, सुन्दर रूप शरीरा हो।१। मा०।
एक गोपी पकड़इ प्रभु अंचल, लाल गुलाल लपेटइ हो।
केशर भरी पिचरके छांटत, राजुल हइ अति सारी हो।२। मा०।
रुक्मणी कहइ परणउ इकनारी, राजुल हइ अतिसारी हो।
जउ निर्वाह न होइ गउ तुम तइ तउ,करिस्यइ कृष्ण मुरारी हो।३मा०
नेमि हंसइ गोपी सब हरखी, नेमि विवाह मनाया हो।
छपन कोड़ यादव सु ं यदुपति, उग्रसेन तोरण आया हो।४। मा०।
गोख चढ़ी राजुल पिउ देखत, नव भव नेह जगावइ हो।
दाहिनी आंखि सखी मोरी फरुकी,रंग मंइ भंग जणावइ हो।५। मा०
पशुय पुकार सुणी रथ फेर्यउ, राजुल करत विलापा हो।
सरज्यां बिन सखी क्यु ं कर पाइयइ, मन मान्या मेलापा हो।६मा०।
हुं रागिणी पण नेमि निरागी, जोरइ प्रीति न होइ हो।
एक हथि ताली पिण न पड़इ मुझ, मन तरसइ तोइ हो।७। मा०।
राजुल नेमि मिले ऊजल गिरि, दूरि गए दुःख दंदा हो।
नेमि कुमार फाग गावत सुख, समयसुन्दर आनंदा हो।८। मा०।

नेमिनाथ सोहला गीतम्

नेमि परणेवा चालिया,म्हारी सहियर रूपड़ि जादव जान हे।
छप्पन कोड़ि यादव मिल्या म्हां०,अति घणा आदर मान हे।१ ने०।

गज चढ्या थी जिनराज हे, चांवर ढोलइ देवता म्हां० ।
मस्तक छत्र विराज हे ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ने० ॥
सुन्दर सेहरो सोहइ ए, सामल रूप सुहामणउ म्हां० ।
सुरनर ना मन मोहइ ए ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ने० ॥
इन्द्राणी गायइ गीत हे, बाजा बाजइ अति घणा म्हां० ।
रूयड़ी सगली रीत हे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ ने० ॥
आविया उग्रसेन बारि रे, तोरण थी पाछा वल्या म्हां० ।
पशुय सुनी पुकारि हे ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ ने० ॥
राजुल करत विलाप हे, प्रापति विन किम पामियइ म्हां० ।
मन मान्यो मेलाप हे ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ने० ॥
जइ चढ्या गढ गिरनारि हो, संयम केवल शिवसिरी ।
तिणह वरी तिहां नारी हो ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ ने० ॥
साचउ सोहलउ एह हे, समयसुन्दर कहइ मुझ हुज्यो म्हा० ।
नेमि वरी नारि तेह हे ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ ने० ॥

नेमिनाथ गीतम्

ढाल (भलुं थयुं म्हारइ पूज जी पधार्या)

मुगति धूतारी म्हांरउ उतार्यउइ,
धूतार्यउ, मुझ थी राग लहियइ ।१।
माई जोयउ रे मु० ॥ आंकणी ॥
कर्म कथा कहउ केहनइ कहियइ,

सुख दुख सज्युं लहियइ ।२। बा० ।
इणरे धूतारी बाई अनंत धूतार्या,
बीजा सुं बोलता निवार्या ।३। बा० ।
मुझ पिउड़उ बाई नहीं म्हारइ हाथि,
हुँ नहीं जाउं पिउ साथि ।४। बा० ।
राजुल पिउ थी पहिली गइ मुगति,
समयसुन्दर कहइ जुगति ।५। बा० ।

नेमिनाथ फाग

आहे सुन्दर रूप सुहामणउ, सिवादेवी मात मल्हार। सुं०।
आहे नव योवन भर आवियउ, लाडिलउ नेमकुमार। १। नव यो०।
आहे निरमल नीर खंडोखलि, खेलण नेमि सराग। नि०।
आहे हाव भाव विभ्रम करइ, गोपी गावइ फाग। २। हाव०।
आहे लाल गुलाल चिहु दिसइ, उडत अवल अबीर। ला०।
आहे केसर भरि भरि पिचरका, छांटत सामि शरीर। ३। के०।
आहे एक बजावइ बांसली, एक करइ गोपी नृच। ए०।
आहे एक देउर हासा करइ, एक हरइ प्रभु चित्त। ४। ए०।
आहे एक अंचल प्रभु गहि रही, एक कहइ परणउ नारि। ए०।
आहे जउ निरवाह न होइ तउ, करिस्यइ कंत मुरारि। ५। ज०।
आहे नेम हंस्या गोपि भणइ, देवर मान्यउ विवाह। नें०।
आहे रमलि करि घर आविया, शिवा देवि मात उछाह। ६। र०।

आहे प्रभु परणेवा चालिया, रूयड़ि यादव जान । प्र० ।
आहे छप्पन कोड़ि यादव मिल्या,सुरनर नउ नहीं गान ।७। छ०।
आहे नेमिजी तोरण आविया, सांभल्यउ पशुय पुकार । ने० ।
आहे तोरण थी रथ फेरियउ, जइ चड्या गढ गिरनार ।८। तो०।
आहे राजुल रोयइ रस वड़इ, भूंहि पड़इ करइ रे विलाप। रा०।
आहे नाह विहूणी किम रहुँ, किम सहुं विरह संताप ।९। ना०।
आहे मैं अपराध न को कियउ, किम गय कंत रिसाय । मैं०।
आहे मुगति वधु मन मोहियउ, दोप पशु दे जाय ।१०। मु० ।
आहे नव भव केरउ नेहलउ, छेहलउ दीधउ केम । न० ।
आहे नयण सलूणउ नाहलउ, नयणे न देखुं नेम ।११। न० ।
आहे वैरागे मन वालियउ, राजुल गइ गढ गिरनार । वै० ।
आहे पिउ पासइ संयम लियउ, पहुँता मुगति मंझार ।१२। पि० ।
आहे जे नरनारी रंग सुं गास्यइ नेमजी फाग । जे० ।
आहे ते मन वांछित पामस्यइ, समयसुन्दर सोभाग ।१३। ते० ।

नेमिनाथ बारहमासा

सखि आयउ श्रावण मास, पिउ नहीं मांहरइ पासि ।
कंत विना हुं करतार, कीधी किमा भणी नारि ॥१॥
भाद्रवइ वरसइ मेह, विरहणी धूजइ देह ।
गयउ नेमि गढ गिरनारि, निरवही न सकी नारि ॥२॥
आसु अमीझरइ चंद, संयोगिनी सुखकंद ।
निरमल थया सर नीर, नेमि विना हुं दिलगीर ॥३॥

कातियइ कामिनी टोल, रमइ रासड़इ रंग रोलि।
हुं घरि बइसी रहि एथि, मन माहरउ पिउ जेथि ॥४॥

मगसरइ वाजइ वाय, विरहणी केम खमाय।
मंइ किया के अंतराय, ते केवली कहिवाय ॥५॥

पापियउ आव्यउ पोष, स्यउ जीविवा नउ सोस।
दिन घड्या बाधी राति, ते गमुं केण संघाति ॥६॥

मोह मास विरही मार, शीत पड़इ सबल ठठार।
भोगी रहइ तन मेलि, मुझ नइ पिय्रु मन मेल ॥७॥

फूटरा फागुण बाग, नर नारी खेलइ फाग।
नेमि मिलइ नहीं जों सीम, तां सीम रमिवा नीम ॥८॥

चैत्र आम मउर्यां चंग, कोयली मिली मन रंग।
बाई माहरउ भरतार, की मेलस्यइ करतार ॥९॥

वैशाख वारु मास, नहीं ताढि तड़कउ तास।
उंची चढि आवास, वइसयइ कैहनइ पास ॥१०॥

जेठ मासि लू नउ जोर, मेहनइ चितारइ मोर।
हूं पिण चितारुं नेम, पणि नेमि नाणइं प्रेम ॥११॥

आषाढ उमस्या मेह, गया पंथि आपणि गेह।
हुं पणि जोउं प्रियु वाट, खांति बछाउं खाट ॥१२॥

बार मास विरह विलाप, कीधा ते पोतइ पाप।
मन वालिउं वैराग, साचउ करुं सोभाग ॥१३॥

राजुल गई पियु पास, सं..न लियु सुविलास ।
इम फलउ सहुनी आस, भणइ समयसुन्दर भास ॥१४॥

श्री नेमिनाथ गीत

राग—केदारउ

कांइ प्रीति तोड़इ हां नेमि जी हुं तोरी रागिणी ।
अष्ट भवन कउ तूं मेरऊ साहिब,
बिन अपराध कहां अब छोरइ ।हां।१।नें०।
मेरे मनि तुंही तेरे मनि कछु नहीं,
तउ कीजइ कहा प्रीति जोरइ ।
समयसुन्दर प्रभु आणि मिलावउ,
जउ मानइ कय कीनइ निहोरइ।हां ।२।नें०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—देसाख

देखउ सखि नेमि कत आवइ, चिहुं दिशि चामर ढुलावइ।दे०।
नील कमल दल सामल मूरति, सूरति सबहि सुहावइ।दे०।१
जय जयकार जपत्ति सुरासुर, हरि रमणी गुण गावइ।
सीस समारि पुहप कउ सेहरउ, शिवादेवि भामण भावइ।दे०।२
राधा रुकमणी घसि घसि नंदन, चंदन अंगि लगावइ।
समयसुन्दर कहइ जो जिन ध्यावइं, सो शिव पदवी पावइ।दे०।३

श्री नेमिनाथ गीत

राग—मुलतानी धन्याश्री

तोरण थी रथ फेरि चले, रथ फेरि चले दोष पशु दे जात।
प्यारउ लेहु मनाई, मुगति वधू मन मइं वसी,
मन मइं वसी हमहिं रहे विललात। प्या० ।१।
हा जादव तंइ कहा किया तंइ कहा किया,
नव भव तोर्यउ नेह । प्या० ।
लाल मोहन बिन क्युं रहुं बिन क्युं रहुं,
विरह संतापइ देह । प्या० ।२।
राजुल पिउ संग आवि मिली हां आई मिली,
ऊजल गढ गिरनार । प्या० ।
समयसुन्दर गणि इम भणइ गणि इम भणइ,
नेमि सुदा सुखकार । प्या० ।३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग—केदारा गौडी

मोकुं पिउ बिन क्युं सखि रयणि विहाइ ।
मोर किशोर बप्पीहा बोलत, खिण खिण विरह जगाई ।१। मो०।
गुनह नहीं सखि कोउ न मेरा, यदुपति गए क्यों रिसाई।
जाणयउ री मरम मुगति मधु मोहइ, दोष पशु दे जाई ।२। मो०।

दउरउ सखि पिउ पाय परउ तुम, मोहन लाल मनाई।
समयसुन्दर प्रभु प्रेम उदक करि, अंतर ताप बुझाई।३।मो०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—परजियउ

एक वीनति सुणउ मेरे मीत हो ललना रे,
मेरा नेमि सुं मोह्यां चीत हो।ल०।
अपराध विना तोरी प्रीति हो ल०,
इह नहीं सज्जन की रीति हो।ल०।१।
नेमि बिन क्युं रहुं बोलइ राजुल रे। आंकणी॥
मोरइ नेमि जी प्राण आधार हो ल०,
अब जाउंगी गढ गिरनारी हो।ल०।
नीकउ लेउंगी संयम भार हो ल०,
समयसुन्दर प्रभु सुखकार हो। ल०।२।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

यादव वंश खाणि जोवतां जी, लाधुं एक रतन्न नेमिजी हो।
जाति उत्तम कांति दीपतउ जी, करिस्युं कोडि जतन्न।१।नें०।
नेम नगीनउ मंइ पायउ सखिजी, एह अमूलिक नग!
गुण गुंफी प्रेमकुन्दन जड़ी जी, राखिसि हियड़लइ रंग।२।नें०।

मन गमतउ माणक मंइ लह्यु जी, कहि राजुल कुल नारि।
समयसुन्दर भगतें भणइ जी, शीलाभरण सुखकारि।३। ने०।

श्री गिरनार मंडन नेमिनाथ गीतम्

राग—जयतश्री

श्रौ देखत उंचउ गिरनारि । श्रौ०।
जिण गिरि आय रहे जोगीसर,
नेमि निरंजन बाल ब्रह्मचारी । श्रौ०।१।
शाम्ब प्रज्जुन कुमर क्रीड़ा गिरि,
अंबिका टुंक प्रमुख विस्तारी । श्रौ०।
समवशरण शोभित सहसावन,
राजिमती रहनेमि विचारी । श्रौ०।२।
नेमिनाथ मूरति अति मनोहर,
धन्य दिवस मंइ आज जुहारी । श्रौ०।
समयसुन्दर प्रभु समुद्र विजय सुत,
जात करत सुखकारी । श्रौ०।३।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरि

छपन कोड़ि यादव मिलि आए, नयणे नेमिं निहाल्यउ रे।
पशुय पुकार सुणी यदु नंदन, तोरण थी रथ वाल्यउ रे ।१। रा०।

राजुल नारि कहइ मृग नयणी, मृग कउ कह्यउ म मानउ रे।
नयण विरोध हमारइ इण सु', जादव ए मर्म जाणउ रे।२।रा०।
आगे पिण सीता नइ इण मृग, राम विछोहउ पाड्यउ रे।
रोहिणी कउ मन रंग गमाड्यउ, चंद कलंक दिखाड्यउ रे।३ रा०।
दोषी हुयइ ते देखि न सखइ, घात विचालइ घालइ रे।
समयसुन्दर प्रभु साजन सरिखा, पड़िवन्तउ पालइ रे।४।रा०।

नेमिनाथ गीत

राग—मारुणी

उग्रसेन की अंगजा, बोलति गदा गज वाणि ।
किण सु' ताणि न तोड़ियइ, जग जीवन चतुर सुजाणि।१। ह०।
हमारे मोहन विन अपराधि न छाड़ि ॥ आंकणी ॥
अष्ट भवन की प्रीतड़ी, नवमेंताणा ताणि ।
जल विन मछली किउं रहइ, कछु महरि हमारी आणि।२। ह०।
नेमिनाथ नंकी करी, तारी आप समानि ।
समयसुन्दर कहइ आपणि, प्रीत चाढी नेमि प्रमाणि।३। ह०।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

चंदइ कीधउ चानणउ रे, दीठउ मृग दुःख दाय ।
तु' दधि सुत तिण दाखवु', भलउ समुद्रविजय सुत भाइ।१।

चंदलिया चित्त विचारइ रे,तुं तउ मृग नइ घर मंइ म राखि।च०।
एतउ सीखलड़ो सयणा, एतउ वातलड़ी वयणा।चं०।आँकणी।
पापी विछोहउ पाड़ियउ, माहरउ भंभेरयउ भरतार।
सीता दुःख दिखाड़ियउ, चंदा हिव छइ ताहरी वार।चं०।२।
रोहिणी रंग गमाड़िस्यइ, कहिस्यइ लोक कलंक।
राजुल कहइ वात रूयड़ि, पछइ मानि म मानि मृगांक।चं०।३।
वइरागइ मन वालिउं रे, गई राजुल गिरनार।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ ए, सतियां मांहि सिरदार।चं०।४।

—

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—सुघड़ाइ

नेमि जी मन जाणइ के सरजण हारा,
तुं रे प्रीतम मुझ लागत प्यारा।१।
नव भव नेह न मुंक्या जावइ,
मुगति मुगति तुझ सेती भावइ।२।
राजुल नेमि मिले गिरनारी,
समयसुन्दर कहई बाल ब्रह्मचारी।३।

—

श्री नेमिनाथ गीत

राग - आसावरी

सामलियउ नेमि सुहावइ रे सखियां,
कालउ पणि गुण भरियउ रे लखियां।१

आंखि सोहइ नहीं अंजण पारवइ,
　　कालउ मरिच कपूर नइ राखइ ।२। सा०।
काली कीकी करइ अजुवालउ,
　　रक्षा करइ रूड़उ चंद्रलउ कालउ ।३। सा०।
कालउ कृष्ण वृन्दावनि सोहइ,
　　सोल सहस गोपी मन मोहइ ।४। सा०।
नर नारी सहुको वणु तरसइ,
　　कालउ मेह घटा करि वरसइ ।५। सा०।
राजुल कहइ सखि स्युं करुं गोरइ,
　　समयसुन्दर प्रभु मन मान्यउ मोरइ ।६। सा०।

श्री नेमिनाथ गूढा गीतम्

राग—आसावरी

सखि मोऊ मोहन लाल मिलावइ । स० ।
दधि सुत बन्धु सामि तसु सोदर, तासु नंदन संतावइ ।१। स०।
वृष पति सुत वाहन तसु वालिभ, मण्डन मोहि डरावइ ।
अगनि सखारिपु तसु रिपु खिणु खिणु, रवि सुत शब्द सुणावइ ।स०।
हिमगिरितनया सुत तसु वाहन, तास भखण मोहि भावइ ।
समयसुंदर प्रभु कुं मिलि राजुल, नेमि जिणंद गुण गावइ ।३। स०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—आशावरी

नेमि नेमि नेमि नेमि, जपत राजुल नारि हो । ने०।

नव भव कउ नेह न मूक्यउ, चालि गइ गिरनारी हो। ने०।१।

....

....

नेमि श्रृंगार वैराग्य

कृपा अमूलिक कांचली रे,
नेमिजी तउ सखर महाव्रत साड़ी रे। लाल ।
मुंनइ नेमि प्रीतम पहिरावी ।
सील सुरंगी चूनड़ी रे ने०,
आणी मुंनइ ओढाड़ी रे । लाल०।१।
जिन आज्ञा सिर राखड़ी रे ने०,
तउ काने कुंडल जिन वाणी रे । लाल०।
जिन गुण गान गलइ दूलड़ी रे ने०,
तउ मुझ मन अधिक सुहाणी रे । लाल०।२।
भाले तिलक सो भाण नौ रे ने०,
तउ जीव जतन कर चूड़ी रे । लाल०।
हार हियै वैराग नो रे ने०,
तउ राजुल कहइ हुं रूड़ी रे । लाल०।३।
जोग मारग में बे मिल्या रे ने०,
तउ नेम राजुल सुख पावउ रे । लाल०।
श्रृङ्गार ने वैराग नो रे ने०,
तउ समयसुन्दर गुण गावउ रे । लाल०।४।

चारित्र चूनड़ी

तीन गुपति ताणो तण्यो रे, वीणो रे वण्यो गुण वृंद रे।
रंग लागो वैराग नो रे, विच में वण्यो चारित चंद ।१।
लाखीणी चूनड़ी रे लाल, मोलवि सखि केताउ मूल।
चूनड़ी चित मानी अमूल, मूनें नेम उढाड़ी रे । आं० ।
अविहड़ रंग ए चूनड़ी रे, भल भल विच में भाँति।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, खरी पूगी राजुल खांति ।२।

गूढा गीत

लालण को लयुं री सखि समझाइ । ला०।
अगनि भखी प्रिय जनक तणो सुत, आणि मिलावो भाइ। ला०।१।
ईस भूषण च च सुत सामि रिपु,-बंधु प्रीया मइरा साइ। ला०।
भोजन इन्द्र सहोदर सुत रिपु, कंठाभरण सुहाइ । ला०।२।
अभिमानी पंखी भाषा विणु, खिण इक में न रहाइ । ला०।
राजुल नेमि मिले उज्वल गिरि, समयसुन्दर सुखदाई। ला०।३।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी (धन्याश्री जयतश्री मिश्र)

एतनी बात मेरे जीउ खटकइ री ।
विण अपराध छोरि गये जादु,
तोरी प्रीति तातण त्रटकइ री ॥१॥ ए०।

गिरिधर रामराय उग्रसेन हइ,
एसउ नहीं कोइ प्रियु हटकइ री ।
तोर तिहार दोर सब राजुल,
नाह विना कहा कीयइ भटकइ री ॥२॥ ए०।
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र बहुत हइ,
अउर ठौर मेरउ जीउ न टकइ री ।
समयसुन्दर प्रभु कोउ मिलावउ,
पाय परुं नीकइ लटकइ री ॥३॥ ए०।

—

नेमिनाथ गीत

सखी यादव कोड़िसुं परवरे, प्रीयु आए तोरण बारि रे ।
रथ फेरि सीधारे, पशु की सुणि पुकारि रे ।१।
मन मोहनगारो, कोइ आणी मिलावउ नेमि रे ।
मोहि विरह संतावइ, सखी पूरव भव कउ प्रेम रे । मन०। आं० ।
सखी मइ अपराध न को कियउ, यदुराय रीसणो केम रे ।
हां हां मरम पिछाणयउ, सिव नारि धूतारे नेमि रे ।२। मन०।
सखी नयण न देखुं नेमजी, मोहि चित पटि लागी चीत रे।
पर पीर न जाणइ नहि को, मेरइ एइसउ मीत रे ।३। मन०।
सखी अबहु मौन करूंगी, मोहि लागी मोटी सीख रे ।
गिरनारि चढुंगी, प्रभु पासि लेऊंगी दीख रे ।४। मन०।
सखी राजुल संयम आदर्यो, मन माहि वस्यो वइराग रे ।
परमाणंद पायउ, समयसुन्दर कउ सोभाग रे ।५। मन०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरी

निण अपराध तजि मुंनइ वालंभ,
नेमि गयउ गिरनारी रे वहिनी ।
सामलियउ सुहावइ रे वहिनी,
बीजउ कोइ दाय नावइ रे वहिनी ॥ आं० ॥
प्रियु छोड़ी पिण हूँ नवि छोडुं,
मइ आगमी इक त्यारी रे वहिनी ॥ १ ॥
पदक प्रियु तउ मोतिन माला,
हीरउ तउ हूँ मूंदरड़ी रे वहिनी ।
चंद्र प्रियु तउ हू रोहिणी थाऊं,
चंदन मलय डूंगरड़ी रे वहिनी ॥ २ ॥
प्रियु पासइ संयम लियउ राजुल,
पहिली मुगति सिधाई रे वहिनी ।
मूलगी परि मत मूकी जायइ ए,
समयसुन्दर मनि भाई रे वहिनी ॥ ३ ॥

सिन्धी भाषामय श्रीनेमिजिनस्तवनम्

साहिब मइडा चंगी सूरति, आ रथ चढीय आवंदा हे मइणा।
नेमि मइकुं भावंदा हे ।
भावंदा हे मइकुं भावंदा हे, नेमि असाड़े भावंदा हे ।१।

आया तोरण लाल असाढा, पसुय देखि पछिताउदा हे भइणा।२।
ए दुनिया सब खोटी यारो, धरमउ ते दिलु धाउंदा हे भइणा।३।
कूड़ी गल्ल जीवां दइ कारणि, जादु कितकु जावंदा हे भइणा।४।
मीनति कोनी नेमु न मणइ, माधउ बहुय मन भावंदा हे भइणा।५।
घोहु असाढइ संयम गिद्धा, सच्चा राह सुखावंदा हे भइणा।६।
इंवै राजुल राणी आखै, संयम मइकुं सुहावंदा हे भइणा।७।
नेमि राजीमति नेह निवाह्या, प्रीति मुक्ति सुख पावंदा हे भइणा।८।
समयसुन्दर सच्चा दिल रुती, गुण तेडइ नितु गावंदा हे भइणा।६।

— —

नेमिनाथ राजीमती सवैया

....

....

............प्रभु मुझ पियुडा नउ,
नबउ कोइ दीसइ छइ जोग ॥ ६ ॥

एजु राजुल नारि गई गिरनारि,
कहइ हित वात हकीकत की ।
नेमिनाथ कुं टाम म देजे इहां,
समझात नहीं इणके चित्त की ॥
छोड़ी जिम मुंनइ तुंनइ छोडस्यइ,
पछइ लोक में हांसी हुस्यै नित की ।

समयसुंदर के प्रभु मइ ओलखे,
सिवनारि सुँ वात कीनी हित की ॥१०॥

सुणि राजुल नारि कहइ गिरनार,
जिका वात तइ कही ते तउ खरी ।
पणि ए नेमिनाथ त्रिलोक कउ नाथ,
ताकुँ कहि ना कहुँ केण परी ॥
इण थी अधिकी महिमा वाधस्यइ,
गिरनार तीरथ हुँ होस्युँ गिरी ।
समयसुंदर कउ प्रभु दीधा नइ ज्ञान,
मुगति त्रिणहे वरिस्यइ सुंदरी ॥११॥

एजु ईसर सेती राची ऊमया,
पणि ते तउ धतूरउ नइ भांगि भखी ।
अरु. कृष्ट सेती तउ राची कामला,
पणि ते न रहइ महियारी पखी ॥
कहइ राजिमती रलियात थकी,
मुझ भाग वडउ महिला मइ सखी ।
समयसुन्दर कउ प्रभु मइ वर पायउ,
ते तउ ब्रह्मचारी आचार रखी ॥१२॥

एजु कीकी काली अजुयालउ करइ,
कसतूरी काली पणि महा महकइ ।
कालउ कृष्ण गोपांगना मन मोहइ,

काली कोयलि आंब बइठी टहुकइ ॥
कहइ राजुल गोरइ सुं काम नहीं,
नेमि नाम राखीसि लांबइ लहकइ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु नेमि नीकउ,
गुणवंत भणी हियडइ गहकइ ॥१३॥

एजु गोरी कउ रूप रूड़उ तबही,
जबही अणियाली अंजी अंखियां ।
बलभद्र महाबली कृष्ण करी,
आभला किसा मेघ घटा पखियां ॥
कपूर गोरउ कुंपलइ मांहि तउ,
जउ मिरची माहि हुयइ रखियां ।
समयसुन्दर कउ प्रभु गोरां थकी,
अधिकउ मुझ कंत सोहइ सखियां ॥१४॥

कोकिल कुल मधुर ध्वनि कूजति,
बोलति बप्पियारा प्रियु प्रियु रे ।
मलय वात वजति गयणंगणि,
गजति मेघ घटा कियु कियु रे ॥
रतिपति रयणि दिवस संतापति,
व्यापति विरह दुक्ख दियु दियु रे ।
राजुल कहइ सखि सामि सुन्दर विणु,
कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे ॥१५॥

ऊनई गगनि घटा नरपति मेघ छटा,
रयणि भई विकटा चित्त ही उदास रे ।
जोवन ऊलस्यउ जाइ प्रिउ विण क्युं रहाइ,
जादव गयउ रिसाइ, अब कैसी आस रे ॥
जपति राजुल नारि जाऊंगी हूँ गिरनारि,
लेउंगी संजमभार सुन्दर कहके पास रे ॥१६॥
गोपांगना मनावही आणंद अंगि पावही,
सुरिंद गुण गावही तोरणा तांइ आउ री ।
पसु पोकार वीनती सुणी प्रिया जदुपति,
छोड़ाइ मोहि वंघती फेराइ रत्थ द्वारती
कृपाल काहे लाउ री ॥
त्रटकि हार तोड़ती मटकि अंग मोड़ती,
छटकि चीर छोड़ती लटकि भुंहि लोड़ति
जपति राजु बाउरी ।
गुनह हम न को किया मुगति चित्त मोहिया,
सुजोग पंथ तें लीया मो ठउर क्युँ रहइ हिया
सामि सुन्दर कुं समझाउ रीं ॥१७॥
कोकिल कल कठ हंस गति हील्यां,
सुक नासा दृग हरिण चकोर ।
केसरि कटि लंक सुं यालिम सिसलउ,
मंगल चाप[1] वेणी दंड मोर ॥

१ अपर प्रातिरुप में चाप को एक मात्रा स्वर वाला पची लिखा है

जदुपति मइं सगला ए जीता,
सहु दुसमिण मिलि करइ तिण सोर।
समयसुन्दर प्रभु मुझ मुंकउ मां,
राजुल नारी करइ निहोर ॥१८॥

राजा उग्रसेन समुद्र विजय हरि,
कृष्ण गोपी भी मिली एकठी।
कर जोड़ि करइ वीनति वार वार,
म मानइ का वात हीया मंइ गठी।
सब राजनइ रिद्धि छोड़ी नीसर्यउ,
कुण जाणइ देखां हिव जाइ कठी॥
समयसुन्दर कउ प्रभु देखि सखी,
कहइ राजुल नेमि निपट्ट हठी॥१९॥

मन मान्या सेती एक वार की प्रीति,
जुड़ी जिका ते पि न जात लोपी।
मेरे तउ प्रीति नवां भव कीन,
छोडावि सकउ नर नारि कोपी॥
नेमिनाथ विना तुम्हे कां नाम ल्यउ,
सखि उप्परि राजमती कहइ कोपी।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि विना,
न वरुं वर हूं रही पग्ग रोपी॥२०॥

धनपति राय पिया वसु धनवति १,

देवमित्र २ चित्र हुं रत्नवती ३ ।
देवमित्र ४ अपराजित राजा,
प्रेम पात्र नारी प्रियमती ५ ॥
आरण सखा ६ तु संख जसोमति ७,
सुरमित्र ८ हुं नारी तुं पती ।
समयसुन्दर प्रभु नवमइ भवि तई,
किम मूंकी कहइ राजीमती ॥२१॥

चउसट्ठि कला चतुराई धरुं,
संजि सोल शृङ्गार रहुं सुघरी ।
भरतार कतार गिणु सरिखउ,
हुं मनावु रीझायइ तउ पायु परी ॥
एक नेमि मेरइ एक नेमि मेरइ,
अरु वीजउ नहीं मइ तउ स्रंस करी ।
समयसुन्दर के प्रभु कुं न गमी,
पणि मुं सरिखी कुण छइ सुन्दरी ॥२२॥

मद मच गंडस्थल मद झरइ,
भमरा भमरी चिहुं पासि भमइं ।
सिर लाल सिन्दूर कीयउ सिणगार,
सुंडा दंड उंचउ उलालइ नमइं ॥
घणणुं घणणुं गल घंट वगइं,
गज गर्ज करइ जाणें मेघ घुमइं ।

समयसुन्दर के प्रभु नेमि की जान,
हाथी हम देखे सनइ कुं गमइ ॥२३॥
नीलड़े पीलड़े कालुए धउलुए,
रातड़े चतुराई हुंती चेतड़े ।
रुसनी मुख मल्ल मोती मणि माणिक,
कंचण सेती पलाण जड़े ।
हांसले बांमले धूसरे दूसरे,
ही ही हीमते प्रभु पास खड़े ।
समयसुन्दर के प्रभु प्रभु की जान में,
हम तो सगि देखि हराण पड़े ॥२४॥
मणि माणक रत्न प्रवाल जड़्यउ,
सिर उप्पर पंच रंगो सेहरउ ।
काने कुंडल ते भलकइं नीजुरी,
बग पंकति हार मोती तेहरउ ॥
गाजतइ गजराज उंचइ चढ्यउ आवइ,
जगावइ नरा भर कउ नेहरउ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु नेमि देखउ,
जाणे स्याम घटा उमटयउ मेहरउ ॥२५॥
चली चतुरंग सेना सबली रज,
ऊडी जे जाइ लागी अरकइं ।
इन्द्र चामर ढालइ धरइ सिर छत्र,

मोती मणि माला लांबी लरकइ ॥
मेरइ तउ नेह नवां भव कउं,
तिण अंग उपांग सवइ थरकइ।
समयसुन्दर कउ प्रभु ओ सखि आवइ,
नीके पचरंगी नेजे फरकइ ॥२६॥
दादुर मोर करइ अति सोर,
प्रीयु प्रीयु बोलइ ए बप्पीउ रउ।
मेहरउ टवकइ विजुरी झबकइ,
कहउ क्यूं करि ठउर रहइ हियरउ ॥
गिरिनारि गए ओ जोगीन्द्र भए,
अब हूं भी हठकि राखुं जीउरउ।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि छोरी,
पणि हुं तउ न छोरुं मेरउ पीयरउ ॥२७॥
अथ अमोला वे, काली कोयल काहे री गोरी राजुल।
देख्या कहां, नेमि सरीर हइ जाका सामल ॥
वः हम देख्या गिरिनार, जोग मारग पणि लिया।
करइ तपस्या कष्ट, देह सुख छारी दीया ॥
पाया केवल न्यान, इन्द्र करइ आवी सेवा।
समयसुन्दर का सामि, देख्या ओ अरिहंत देवा ॥२८॥
वे बप्पीया भाई काहेरी,
राजुल बाई तुं प्रीयु कही केम सुणाई वः।

मेरा पिऊ तउ मेह हुं तिण कुं,
पोकारूँ मास आठ थया मुझ पाणी
पीधा तिण सारूँ ।
मन मान्या की नात हई,
लोक प्रेमइ लपटाणा,
समयसुन्दर प्रभु पासि जा,
तेरा मन तिहां लोभाणा ॥२६॥

वे मोर काहे री राजुल करइ जोर,
अरे मइ तउ करती हुं निहोर वः ।
कहि तेरा करूँ काम जहां मूं कइ तहां जाउं,
प्रीयु कउ काम कियां पछी,वेगि वधाइ पाउं॥
गिरिनार गुफा मइं नेमि,
हइ देखि केही तेरी दया ।
समयसुन्दर प्रभु का मामि,
मुझ गुनह निगरि छोरी गया ॥३०॥

अरे कारे कउया कहिरी राजुल मयुया,
वीर कछु नोलि नइ वधुया नः ।
सहु वोलुं हुं साच जाण को भाषा जाणइ,
कुशल खेम छइ कंत आरति मत काइ आणइ॥
पणि तुं जा प्रियु पासि,
चारित लीयां दुखच क्स्यिड ।

समयसुन्दर प्रभु तुज्ज नइ,
मुगति पहिली मूंकिस्यइ ॥३१॥
जादव भला भलेरा द्वारिका वसइं अनेरा,
तेवर करिस्यां तेरा सखि कहउ के मेरे ।
राजमती कहइ एम मइ ओ कीधा सात नेम,
बीजां सुं न बांधूं प्रेम मेरे इक नेमि रे॥
बव्वीहा के एक मेह बीजां सुं नहीं सनेह,
एक तारी भली एह मेरइ मनि तेम रे।
समयसुन्दर सामी संजम रमणी पामी,
मेरइ तउ अंतर जामी जिम हीरउ हेम रे ॥३२॥
धन ते मृगला पोकारू ते तउं हूया उपगारू,
तिण कीधुं अतिवारू छोडाव्या जीवाकरे।
धन नेमिनाथ सामि मुगति मानिनी पामि,
मदन हरामी जिण हणयउ मारी हाक रे॥
धन राजिमती नार सती में वड़ी सिरदार,
मन मंइ कीधउ विचार काम भोग खाकरे।
धन ते समयसुन्दर स्तवे नेमि तीर्थंकर,
समकित सुद्ध धर दिल पणि पाक रे ॥३३॥
नगरी मइ भली द्वारिका नगरी,
नेमिनाथ जहां धरती फरसे ॥
अरु वंश में जादव वंश भला,
....

श्री पार्श्वनाथ अनेक तीर्थ नाम स्तवन

राग—सोरठ

हो जग मंइ पास जिणंद जागइ।

साचउ देव प्रगट जिन शासन, भेटंतां दुख भाजइ । हो जग० ।
थंभण पास सेवक थिर थापइ, अजाहरउ नाम वंछित आपइ,
कलिकुंड दुख कापइ, अमीझरउ अम्मर आलापइ ।
जायइ पाप जीराउल रउ जापइ, पंचासरउ पास प्रगट प्रतापइ,
वाड़ीपुर जस व्यापइ ॥ हो जग मंइ पास जिणंद जागइ ।१।

महिमा आज घणी मुलताणइ, जेसलमेर जगत सहु जाणइ,
वारू वरकाणइ, जागती ज्योति नगर जोधाणइ ।
अंतरीख अचरज चित आणइ, परतिख गउड़ी पुण्य प्रमाणइ,
पालणपुर पहिचाणइ ॥ हो जग मइं पास जिणंद जागइ ।२।

हमीरपुर रावण करहेड़इ, नागद्रह नरन्याय निमेड़इ,
फलवर्द्धि दुख फेड़इ, तिमरीपुर सुख संपति तेड़इ ।
नवखण्ड मुक्ति पंथकरि नेड़इ, आरास आरति उथेड़इ,
पट् खंड जस खेड़इ ॥ हो जग मइं पास जिणंद जागइ ।३।

कलि मांहि पास कुशल चेलिका छौ तेवीस नाम जपत दुख पाछौ,
पाप गमउ पाछौ अरिहंत देव ध्यान धरउ आछौ ।
वामादेवी मात तणउ वाछउ मन सुधे प्रभु सेवा जल माछउ,
कहइ समयसुन्दर काछउ ॥ हो जग मंइ पास जिणंद जागइ ।४।

श्री जेसलमेर मण्डण पार्श्वजिन गीतम्

जेसलमेर पास जुहारउ ।
कुशलसूरि प्रतिमा प्रतिष्ठी, मांडि जेथि गुंभारउ । जे०।१।
धन्य जिके नर नारि निरंतर, प्रतिमा देखइ सवारउ ।
बेकर जोड़ी आगइ बइठी, शक्रस्तव करइ सारउ । जे०।२।
तूं साहिब हूँ सेवक तोरउ, दुर्गति दुख निवारउ ।
समयसुन्दर कहइ इण भव परभव, मुझ आधार तिहारउ । जे०।३।

श्री फलवर्द्धि पार्श्वनाथ स्तवनम्

फलवधि मंडण पास, एक करूं अरदास ।
कर जोड़ी करि ए, हरख हियड़उ धरि ए ॥१॥
मइ मन धरिय उमेद, यात्रा करुं (हुं) ध्रूवेद ।
पोष दसमी तणी ए, उत्कण्ठा घणी ए ॥२॥
आज घड़ी परमाण, भेट्या श्री जग भाण ।
मन वंछित फल्या [illegible], दख दोहग [illegible] ए ॥३॥

परता पूरइ पास, सामी लील विलास ।
तीरथ जागतउ ए, भव दुख भागतउ ए ॥६॥
आससेण कुल चंद, वामा राणी नंद ।
अहि लांछण भलउ ए, तूं त्रिभुवन तिलउ ए ॥७॥
समरथउ देजे साद, टाले मन विषवाद ।
सानिध सर्वदा ए, करज्यो संपदा ए ॥८॥
पास जिनेसर देव, भव भव देज्यो सेव ।
मुझ सेवक भणी ए, तूं त्रिभुवन धणी ए ॥०॥

कलश

फलवधी मंडण पासनाह,
वीनवियउ जिनवर मन उच्छाह ।
पोष मास जन्म कल्याणक जाण,
गणि समयसुन्दर जात्रा प्रमाण ॥१०॥

---

(२)

राग—परभाती

प्रभु फलवधी पास परभाति पूजउ,
दुनी मंइ नहीं को इसउ देव दूजउ ॥१॥
वडउ तीरथ एकलमल विराजइ,
नित आपणां सेवकां नइ निवाजइ ॥२॥

सदा सामलउ रूप सकलाप सोहइ,
　　मुख देखतां माहरुं मन मोहइ ॥२॥
कृपानाथ सेवक तणा कष्ट कापइ,
　　अरिहंत जी अष्ट महासिद्धि आपइ ॥४॥
प्रभो प्रणमतां परम आणंद पावइ,
　　गुण समयसुन्दर जोड़ि गावइ ॥४॥

इति श्री फलवधि पार्श्वनाथ भास ॥ १७ ॥

सप्तदश राग गर्भित

श्री जेसलमेर मण्डण पार्श्वजिन स्तवनम्

पुरिसादानी परगड़उ, जेसलमेर जिणंद ।
पंच कल्याणक तेहना, पभणिसुं परमाणंद ॥१॥
जिनवर ना गुण गावतां, लहियइ समकित सार ।
गोत्र तीर्थंकर बांधियउ, लहु तरियइ संसार ॥२॥
राग भेद रलियामणा, जाणइ चतुर सुजाण ।
भाव भगति गुण भाषतां, जीवित जन्म प्रमाण ॥३॥

१ राग—रामगिरि

जंबूदीप मांहइ भलुं भरतक्षेत्र,
　　नयरी वणारसी रिद्धि विचित्र ॥ जं० ॥४॥

नरपति अश्वसेन न्याय पवित्र,
रामगिरी मनोहरी वामा कलत्र ॥ जं० ॥५॥

२ राग—देसाख

दसम सुरलोक चवि भूरि सुख भोगवी ।
चैत्र वदि चउथ निशि गुण भरचउ ए ॥ स्वामी गुण०॥६॥
अश्वसेन राया घरइ माता वामा उरइ ।
हंस मानस सरइ, अवतरचउ ए ॥ स्वामी अव० ॥७॥
चवद सुपन लह्या, कंत आगलि कह्या ।
राय तिहां फल कह्या, मति विचारी ॥ अइयो मति०॥८॥
अम्ह कुल गुण निलउ, पुत्र होसइ भलउ ।
दस दिशा-खग ज्युं उद्योत कारी ॥ अइयो उद्योत०॥९॥

३ राग—सारङ्ग

सुत जायउ अश्वसेन राय के,
अश्वसेन राय के सुत जायउ ।
छप्पन दिशिकुमरी मिल गायउ,
नारकियइ सुख पायउ ॥ अश्व० ॥१०॥
पोष पढम दसमी दिन सामी,
वंश इक्ष्वाग सुहायउ ।
चउसठ इन्द्र मिली मन रंगइ,
मेरु शिखरि न्हवरायउ ॥ अश्व० ॥११॥

शुभ अनुकूल समीरण वायउ,
आनंद अंग न मायउ ।
थाल विशाल भरी मुक्ताफल,
सारंग वदनी वधायउ ॥अश्व०॥१२॥

४ राग—वसंत

सुपन पन्नग पेख्यउ, जननियइ सार ।
तिण प्रभु नाम दीधुं, पार्श्व कुमार ॥१३॥
स्वामी नवकर तनु, नील वरण सोहइ ।
भुजंग लांछन रूपइ, जगत्र मोहइ ॥१४॥
प्रभावती राणी वर, गुण अनंत ।
सुर नर नारी चित्त, मांहे वसन्त ॥१५॥

५ राग—वैराड़ी

कमठ कठिन तप करति कानन,
मठ पंचाग्नि साधइ चित्त वहइ अभिमान ।
कुमति देखाड़इ बहु जन कुं मिथ्यात्व पाड़इ,
तब प्रभु गज चढे आए री उद्यान ॥क०॥१६॥
जलतउ भुजंग लीधउ परमेष्ठि मंत्र दीधउ,
धरणेन्द्र कीधउ कृपानिधि शुभ ध्यान ॥क०॥१७॥
मिथ्यात्व मारग टाल्यउ कमठ कउ मान गाल्यउ,
लोक देवइ राड़ी तेरउ तप अज्ञान ॥क०॥१८॥

६ राग—श्री

लोकान्तिक सुद आये, जंपइ जयकार,
जिन नइ जणावइ, दीक्षा तणउ अधिकार । लो० ॥१६॥
इग्यारस वदि पोष तणी, त्रिभुवन धणी,
करम छेदन भणी, तजति संसार । लो० ॥२०॥
पंच मुष्टि लोच करि, प्रभु अणगार हुया,
संजम सिरी रा, गुणवंत भरतार ॥ लो० ॥२१॥

७ राग—काम्हरउ

अमम अमाय अमोह अमच्छर,
नहीं लवलेश लोभ मानरौ ।
अप्रतिबंध अकिंचन अमदन,
दायक सकल अभय दानरौ ॥२२॥
सुमति गुपति शोभित मुनि नायक,
उपयोग एक धरम ध्यान रौ ।
पंचेन्द्रिय विषया रस जीते,
फरसन रसन घाण चक्षु कान रौ ॥२३॥

८ राग—आसाउरी

पार्श्व जिन स्वामी हो तेरी अनंत क्षमा ।
सगति थकी तूं सहइ उपसर्गा,
ततखिण तोड़इ करम बंधन वर्गा ॥ पा० ॥२४॥

कमठ चढ्यउ कोपइ प्रभु ऊपरि,
मेघ घटा जल वरसइ बहु परि ॥ पा० ॥२५॥
धरणेन्द्र आवी कमठ धिक्कारयउ,
जिन आशातन करत निवारयउ ॥ पा० ॥२६॥

९ राग—गुंड

चैत्र पढम चउथी वासरइ, जिनवर अट्टम तप आदरइ।
प्रभु पास रे, पूरइ आस रे ॥२७॥
चार कर्म नउ क्षय करी, पामी निरमल केवल सिरी।
सुर आवइ रे, गुण गावइ रे ॥२८॥
माणिक हेम रूपा तणउ, विरचइ त्रिगडउ सुर जिन तणउ।
प्रभु सोहइ रे, मन मोहइ रे ॥२९॥
कुसुम वृष्टि वासंतिया, भागूं डर देख हसंतिया।
प्रभु संगी रे, मन रंगी रे ॥३०॥

१० राग—मारु

धन धन ते नर जी, तेहनउ जन्म प्रमाण ॥ ध० ॥
बारह परपदा मांहि बइसी नइ, श्रवण सुणइ तोरी वाण ॥३१॥
त्रिण छत्र सिर ऊपरि सोहइ, चामर ढोलइ इन्द्र जी।
गयणंगण सुर दुंदुभि वाजइ, पेखत परमाणंद ॥ ध० ॥३२॥
मालवकौशिक राग आलापति, अमृत वचन अनूप जी। ध०।
केवलज्ञानी धर्म प्रकासइ, जीव दया क्षमा रूप जी ॥ ध० ॥३३॥

११ राग—गउरी

मोह मिथ्यात्व निद्रा तजउ, जीव जागउ री ।
परिहरउ पंच प्रमाद, भविक जीव जागउ री ॥
राग द्वेष फल पाडुया, जीव जागउ री ।
मति करजो विषवाद, भविक जीव जागउ री ॥३४॥
घइ जिनवर उपदेस, धर्मध्यान लागउ री ॥ आंकणी॥
दाभ अणी जल बिन्दुयौ, जीव जागउ री ।
पड़त न लागइ वार, धर्म ध्यान लागउ री ॥
इण परे चंचल आउखो, जीव जागउ री ।
सकल कुटुंब परिवार, धर्म ध्यान लागउ री ॥३६॥

१२ राग—केदारउ

सउ वरस पाली आउखउ, तेत्रीस मुनि परिवार ।
वग्घारीपाणी प्रभु रह्या, मास संलेखण सार ॥३६॥
जिणंद राय चढ्यउ रे, समेत गिरिंद ।
तिहां पाम्यउ रे, परमाणंद ॥ जि० ॥
प्रभु श्रावण सुदि आठम दिनइ, श्री पार्श्व शिवपुर गामि
निज कर्म ततखिण चूरिया, जिके दारुण परिणामि। जि०।३७।

१३ राग—परदउ

तूं अरिहंत अकल अलख सरूपी,
तूं निराकार निरंजन ज्योति रूपी। तूं० ॥३८॥

ए पिंडस्थ पद रूपस्थ रूपातीत ध्यान हर री,
ए मन भृङ्ग भजि भगवंत यहु पर दउर यह री। तूं०॥३६॥

१४ राग—सूहव

संसार सागर दुख जल, निडवंत नर वोहित्थ।
शुभ भाव समकित वासना, शिव सुख करण समत्थ॥४०॥
जिन प्रतिमा जिन सरीखी वंदनीक, भक्ति करउ निर्भीक। जि०।
भगवती ज्ञाता प्रमुख मंइ, उपदिशि प्रतिमा एह।
ते पण जे मानइ नहीं, मूढ पसु हुवइ तेह ॥ जि० ॥४१॥

१५ राग—खंभायति

जेसलमेरु जीराउलइ रे, नागद्रह करहेड़इ रे।
सइरीसइ संखेश्वरइ रे, गउड़ी दुख फेड़इ रे॥४२॥
तोरी जागती जगनायक, महिमा जगि घणी रे।
तूं तो सुख संपति पूरण, सुरमणि रे॥४३॥
कलिकुंड आबू अमीझरइ रे, फलवधि पुर जोधाणइ रे।
नारंगपुर पंचासरइ रे, खंभायति वरकाणइ रे॥४४॥

१६ राग—कल्याण

जिनजी मेरउ मानव भव आज प्रमाण रे मेरो। मा०।
तुं त्रिभुवन पति थुण्यउ, जग भाण रे,
भाव भगति आणंद, मन आण रे॥ मे० ॥४५॥

च्यवन जन्म दीक्षा ज्ञान निर्वाण रे,
इण परि पंच कल्याणक जाण रे ॥ मे० ॥४६॥

१७ राग—धन्याश्री

इम थुणयउ जेसलमेरु मंडण, दुरित खंडण शुभ मनइ।
रस कर्ण दर्शन तरणि वरसइ, आदि जिन पारण दिनइ॥
जिनचंद-सूरति सकलचंदन, मृगमदा केसर करी।
अह समइ-सुंदर पार्श्व पूजइ, तेहनी धन्यासिरी॥४७॥

—:०:—

श्री लोद्रवपुर सहसफणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

लोद्रपुरइ आज महिमा घणी, यात्रा करउ श्री जिनवर तणी।
प्रणमंतां पूरइ मन आस, सहसफणा चिंतामणि पास ।१।
जूनो नगर हुंतउ लोद्रवो, सुन्दर पोल सरवर चउहटउ।
सगर राय ना सखर आवास, सहसफणा चिंतामणि पास ।२।
उगणीसम पाटइ जेहनइ, सीहमल साह थयउ तेहनइ।
जेसलमेरु नगर जस वास, सहसफणा चिंतामणि पास ।३।
सीहमल नइ सुत थाहरू साह, धरम धुरंधर अधिक उच्छाह।
जीर्ण उद्धार करायो जास, सहसफणा चिंतामणि पास ।४।
दंड कलस धज सोहामणा, रूड़ा नइ वलि रलियामणा।
निरखंतां थायइ पाप नो नास, सहफसणा चिंतामणि पास ।५।

नयणां दीठां नित आणंद, सेनंतां सुरतरु ना कंद ।
लहियइ लच्मी लील विलास, सहसफणा चिंतामणि पास ।६।
द्राविड़ वारिखेल मुन्नीपति, सत्रु जे सीधा दसक्रोड जती ।
काती पूनम पुण्य प्रकाश, सहसफणा चिंतामणि पास ।७।
संवत सोल इक्यासी समइ, यात्रा कीधी काती पूनमें ।
तीरथ महिमा प्रगटी जास, सहसफणा चिंतामणि पास ।८।
भवना संकट भांजो साम, प्रह ऊठी नइ करूं प्रणाम ।
समयसुन्दर कहइ ए अरदास, सहसफणा चिंतामणि पास ।९।

(२)

राग—कल्याण

चालउ लोद्रवपुरे ।
सहसफणा चिंतामणि स्वामी, भेटउ भाव धरे । चा० ॥१॥
भणसाली थिरु बिंब भराया, जेसलमेरु गिरे ।
समयसुन्दर सेवक कहइ हमकुं, प्रभु सानिध करे । चा० ॥२॥

——

श्रीस्तंभन–पार्श्वनाथ–स्तोत्रम्

नमिरसुरासुरखयररायकिंनरविज्जाहर ! ।
महुयराइविरायमाणपयपंकयसुंदर ! ॥
महिअलमहिमामेयमणवंछिअदायक ! ।

जय जय थंभण पासनाह ! भुवणचयनायग ॥
परुवयारपायवपवरसिंचणमुइरसमाण ।
पुरिसादाणिअ पासजिण, गुणगणरयणनिहाण ॥१॥
आससेणनररायवंशमाणससरहंसं ।
नायरलोअपओअराइपडिबोहणहंसं ॥
वम्महकाणणदलणदंतिसनिहमचिरेण ।
पणमह पासजिणिंददेवमेगग्गमणेण ॥
कलाकेलिवररूववर करुणाकेरवचंद ।
चरणिकमलसुंदरभमरपउमावइधरणिंद ॥२॥
वामादेवीउअरसुत्तिमंजुलमुत्ताहल ! ।
सयलकलावलिकलियकाय कलिमलिअसुहाहल ! ॥
मोहमहावलनीरपंकनिप्फेडणदिणयर ! ।
देहि दयापर परमदेव सेवं मह सुहयर ! ॥
अरिकरिनिअरिनिरागरणपंचाणण ! जय देव ! ।
थंभ(ण)पुरमंडणमउड सुरनरवंछिअसेव ॥३॥
कवडकडप्पकुडीरकुंठकमठासुरगंजण ! ।
सुललिअरयणसुहाछड्डलरिछोलीरंजण ! ॥
पावसुरासुर पुंडरीअ रमणीअगुणालय ।
कलिअंगालवलाहओह पहुमं पडिवालय ॥
भवसमुद्दतारणतरण ! तिहुअणजणआधार ! ।
पास जिणेसर ! गरिमगुरु गंभीरिमगुणसार ! ॥४॥

नवकरसुंदरभज्झरीअ भज्झरिसमलंकिअ ।
ससिदलविमलविसालभालमंजुलअयलंकिय ॥
तुह मुहचंदविलोयणेण मह नाह सुहंकर ! ।
करचरणमिव लोअणाणि विअसति विग्रंवर ॥
जगबंधव ! जगमाइपिअ ! जगजीवण ! जिणराय !
जगवच्छल ! जगपरमगुरु ! जय जय वंदिअपाय ! ।
धवलकमलकलकिंचिपूरधवलीकयमहिअल ! ।
पवलपमायकलावकुंभभंजणवणअविअल ॥
दुखदावानलसलिलवाह ! दोहग्गविहंडण ! ।
जय जय पास जिणंद ! देव ! थंभणपुरमंडण ! ॥
चउगइभयभंजणपवर, उपसामिअ दुहदाह ।
रोगसोगसंतावहर, जय जिण ! तिहुअणनाह ! ॥६
हिअयसरोवरसोहमाणगुणमुत्तिअसुत्ती ।
गल्लजुअलविलहिज्जमाणकुंडलकयदित्ती ॥
कयदाणवमाणवनरिंदकिन्नरपयभत्ती ।
पुरिसादाणिअ ! पासनाह ! रेहइ तुह मुत्ती ॥
केवलकमलासहसकर, सिवरमणीउरहार ।
सिद्ध ! बुद्ध ! निस्संग ! जिण ! सयलजीवसुहकार ! ॥
इय पास जिणवर भुवणदिणयर, थंभतित्थपुरट्ठिओ ;
संथुओ सामी सिद्धिगामी सिद्धिसोहपइट्ठिओ ॥
जिणचंदसूरिसुरिंदकिन्नरसयलचंदनमंसिओ ।
मह देहि सिद्धि सुहसमिद्धि समयसुन्दर संसिओ ।

इति श्रीस्तंभनकपार्श्वनाथस्य लघुस्तोत्रं प्राकृतभाषामयम्

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

सदा सयल सुख संपदा हेतु जाणी,
हिये परम आणंद कल्लोल आणी।
कर जोड़ि करि वीनवुं शीस नामी,
प्रभु पार्श्व श्री स्थंभणो मुक्ति गामी ॥१॥
जसु नयरी वाणारसी जन्म सार,
अश्वसेन नरराय वामा मल्हार।
अरिहंत अति सुन्दर रूप सोहइ,
प्रभु पास श्री स्थंभणो चित्त मोहइ ॥२॥
जिणे कमठ अज्ञान करतो निवारयउ,
कृपा करी अहि अग्नि बलतो उगारयउ।
कियउ पवर धरणिंद सुरपति समृद्ध,
प्रभु पास श्री स्थंभणो जग प्रसिद्ध ॥३॥
श्री खरतर गच्छ शृङ्गार सार,
अभयदेवसूरि नवांगी वृत्तिकार।
तिणे प्रगटियउ सेढिका नदीय तीरे,
प्रभु पास श्री स्थंभनो घन सरीरे ॥४॥
धन्य आज मुझ दीह भगवंत भेट्यउ,
चिरकाल नो संचित पाप मेट्यउ।
नव हत्थ तनु मान महिमा निधान,
प्रभु पास श्री स्थंभणो गुण प्रधान ॥५॥

जगि जागती ज्योति तीरथ उदार,
करै सुरनर कोड़ि प्रभु नइ जुहार ।
सदा सेवकां लोक सानिध्यकारी,
प्रभु पास स्तंभनो विघ्न वारी ॥६॥
इम श्रीजिनचंद्र गुरु सकलचंद्र,
सुपसाउलै समयसुन्दर मुणिंद ।
थुण्यो त्रिभुवनाधीश संताप चूरइ,
प्रभु पास स्थंभणो आस पूरइ ॥७॥

इति श्रीस्थंभणकपार्श्वनाथलघुस्तवनं ।
श्रीस्तंभतीर्थीयसंघसमभ्यर्थनया कृता संपूर्णा ।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

रागः—गुड

सफल भयउ नर जन्म, जो भेट्यउ थंभणो रे ।
उपजत परमानंद, मेरे मन अति घणो रे ॥१॥
साहिब के सेवो चरणा, घनाघन सरीखे वरणा।
दुनीमंइ दुख के हरणा, सेवक कु सुख के करणा॥
राखि संसार के फिरणा, भये अब स्वामि के शरणा॥ आंकणी॥
श्री खरतर गच्छ नायक, सुखदायक यति रे ।
अभयदेवसूरीश्वर, प्रकटित मूरति रे ॥२॥ सा० ॥

तुझ मुख जिनवर देखि, नयण मेरे उल्लसइ रे।
चंद चकोर तणी परि, तूं मेरे मन वसइ रे ॥३॥ सा०॥
जन मन मोहति सोहति, रूप अनोपमइ रे।
सुरपति नरपति गृहपति, पाय कमल रमइ रे ॥४॥ सा०॥
समयसुन्दर हूँ मांगत, थंभण पास जी रे।
साहिब पूरो मेरे मन की आस जी रे ॥५॥ सा०॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

बे कर जोड़ी वीनवुं रे, सुणिजो थंभण पास।
प्रभु परदेसइं चालतां रे, एक करूं अरदास ॥१॥
जीवन जी वेगी देज्यो भेट ॥ आंकणी ॥
ध्यान भलुं छइ ताहरुं रे, निरख्यां आणंद नेदि ॥२॥ जी०॥
पंखेरू परदेसियां रे, नवि सरज्यउ नित वास।
तनु छइ साथी माहरइ रे, मनु छइ तोरइ पास ॥३॥ जी०॥
वीछड़ियां मन माहरुं रे, दुख धरइ दिन दिन्न।
के तूं जाणइ केवली रे, के वलि मोरुं मन्न ॥४॥ जी०॥
दर्शन वहिलुं दाखिज्यो रे, सामी लील विलास।
समयसुन्दर इम वीनवइ रे, पूरउ मन नी आस ॥५॥ जी०॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ गीतम्

ढाल—नारिंग पुरवर पास जी ए०

भलइ भेट्यउ रे, पास जिणेसर थंभणउ रे।

सामी सीधा वंछित काज, आणंद अति घणउ रे ॥ भ०॥१॥
सामी तुं तउ त्रिभुवन केरउ राजियउ रे ।
सामी हूँ छूं तोरउ दास, करुणा करउ रे ॥
सामी माहरां रे, अलिय विघन दूरइ हरउ रे ॥भ०॥२॥
सामी तुम नइं रे, बेकर जोड़ी वीनवुं रे ।
सामी देज्यो भवि भवि सेव, तुम्हे आपणी रे ॥
इम बोलइ रे, वाचक समयसुन्दर गणी रे ॥भ०॥३॥

इति श्रीस्थंभण पार्श्वनाथ गीत संपूर्णम् ॥ १६ ॥

श्रीकंसारी-त्रंबावती मंडन भीड़भंजन पार्श्वनाथ भास

(१)

चालउ सखी चित्त चाह सुं, त्रंबावती नगरी तेथि रे ।
कंसारी केरउ जागतउ, तीरथ छइ जेथि रे ॥१॥
भीड़भंजन सामी भेटियउ, सखी प्रह उगमतइ सूरि रे ।
पारसनाथ भेटियइ, दुख दोहग जायइ दूरि रे ॥२॥ भी०॥
सखि आरति चिंता अपहरइ, विछरचा वाल्हेसर मेलइ रे ।
रोग सोग गमाडइ, कीनर[१] दुसमिण नइ ठेलइ रे ॥३॥ भी०॥
सखि स्नात्र कीधां सुख संपजइ,गुण गातां लाभ अनंत रे ।
समयसुन्दर कहइ सुणउ, भय भंजण श्री भगवंत रे ॥४॥ भी०॥

इति श्री कंसारीमंडण भीड़भंजण पार्श्वनाथ भास ॥२३॥

१ ठांभर

(२) राग—सवाब

भीड़ भंजण तूं श्री अरिहंत,
अलिय विघन टालइ अरिहंत ॥ भी० ॥१॥
सुन्दर मूरति कल्याण सोहइ,
मोहन रूप जगत मन मोहइ ॥ भी० ॥२॥
भविजन भक्ति सुं भावना भावइ,
परमाणंद लीला सुख पावइ ॥ भी० ॥३॥
पास कंसारी प्रगट प्रभावइ,
समयसुन्दर सबावति गावइ ॥ भी० ॥४॥

(३) राग—काफी

भीड़भंजन तुम पर वारि हो जिणंदा ।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, देखत परमाणंदा ॥१॥
तुम पर वारि हो जिणंदा ॥
मस्तक ऊपर मुकुट विराजइ, काने कुण्डल रवि चंदा ।
तेज प्रताप अधिक प्रभु तेरउ, मोहि रहे नर वृन्दा ॥२॥ तु०॥
पार्श्वनाथ प्रकट परमेसर, वामा राणी नंदा ।
समयसुन्दर कर जोड़ी तेरे, प्रणमत पाय अरविंदा ॥३॥ तु०॥

(४) राग—मारुणी

भीड़ भंजण रे दुखगंजण रे ।
रूड़ी मूरति जन मन रंजण रे,

निरखीजइ पास निरंजण रे ॥१॥ भी०॥
हरसइं मन वंछित दाता रे,
प्रणमीजइ उठि परभाता रे।
कंसारी नाम कहाता रे,
खंभायत मांहि विख्याता रे ॥२॥ भी०॥
ईति चिंता आरति सवि चूरइ रे,
प्रभु सहुना परता पूरइ रे।
दुख दोहिला टालइ दूरइ रे,
समयसुन्दर पुण्य पडूरइ रे ॥३॥ भी०॥

इति श्री खंभात मंडण भीड़भंजन पार्श्वनाथ भास ॥२६॥

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ स्तवनम्

आंपणे घर बेइठा लील करउ, निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरउ।
तुम्हे देस देसंतर कां द्रउड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।१।
मन वंछित सगली आस फलइं, सिर ऊपर चामर छत्र ढलइ।
आगलि चालइ जुलमति घोड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।२।
भूत प्रेत पिशाच वेताल वली, शाकिणी डाकिणी जाइ टली।
छल छिद्र न लागइ को भ्रउड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।३।
कण्ठमाला गड गुंबड़ सबला, व्रण क्रुरम रोग टलइं सगला।
पीड़ा न करइ क्रुण गलि फोड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।४।

एकंतर ताप सीयउ दाहू, उखध विण जायइ थइ माहू ।
दूखइ नहीं माथउ पग गोड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।५।
न पड़इ दुरभिख दुकाल कदा, शुभ वृष्टि सुभिख सुगाल सदा ।
ततखिन तुम्हें अशुभ करम तोड़उ, नितनाम जपउ श्री नाकउड़उ ।६।
तूं जागतउ तीरथ पास पहू, जाणइ ए वात जगत्र सहू ।
मुझ नइ भव दुख थकी छोड़उ, नितनाम जपउ श्री नाकउड़उ ।७।
श्रीपास महेवापुर नगरे, मंइ भेट्यउ जिनवर हरख भरे ।
इम समयसुन्दर कहइ गुण जोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउड़उ ।८।

इति श्री महेवा मंडण श्री नाकउड़ा पार्श्वनाथ लघु स्तवनं सम्पूर्णम् ।

——:०:——

श्री संखेश्वर पार्श्वजिन स्तवन्

(१) राग—मल्हार मिश्र

परचा पूरइ पृथ्वी तणा, यात्रा भणी लोक आवइ घणा ।
अति सुन्दर सोहइ देहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥१॥
आराधे जे नर इकमना, एह लोक नी कामना ।
तुरत फलै वंछित तेहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥२॥
सुन्दर मूरति सोहामणी, रूड़ी नइ वलि रलियामणी ।
काने कुंडल सिर सेहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥३॥
केसर चंदन पूजा करउ, ध्यान एक भगवंत नउ धरउ ।
संकट कष्ट नहीं केहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥४॥

संखेश्वरउ जायउ छउ तुम्हे, शक्ति नहीं किम आवुं अमें।
समयसुन्दर नी जयति करउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥५॥

(२)

सकलाप पर्श्व संखेसरउ ।
भाग संयोग भले परि भेट्यउ, देख्यो सुन्दर देहरउ ।१। स०।
वरण अठारै यात्रा करण कुं, आवैं हुंस ले आकरउ।
तूं तिण की मन कामना पूरइ, अब कृपाल मोहे उद्धरउ ।२। स०।
जागतउ तीरथ तुं जगनायक, संकट विपति सबै हरउ।
पाटण संघ सहित वच्छराज साह, समयसुंदर कहइ आणंद करउ।

(३) राग—धन्यासिरी

संखेसरउ रे जागतउ तीरथ जाणियइ रे,
हां रे जी जात्रा करइ सहु कोय।
आणंद अति घणउ रे, तुं तेहनउ रे,
संकट विकट सबे हरइ रे ॥१॥ सं०॥
सामी तुं तउ रे, परतिख परता पूरवइ रे,
हां रे मन वंछित दातार।
सुरतरु सारिखउ रे, पृथ्वी मांहे रे,
लोके लीधउ पारखउ रे ॥२॥ सं०॥
स्वामी तूं तउ रे, त्रिभुवन केरउ राजियउ रे,
हां रे वामा कूखि मल्हार।

रतन शोभा धरू रे, इम बोलइ रे,
समयसुन्दर सानिध करु रे ॥३॥ सं०॥

(४) राग—भयरव

साचउ देव तउ संखेसरउ, ध्यान एक भगवंत नउ धरउ ।१।
कां तुम्हे आरत चिन्ता करउ, संखेसरउ मुखि उचरउ ।२।
वादि विवाद न थायव उरउ, उपरि बोल आवइ आपरउ ।३।
आणंद लील करउ मत डरउ, दूनीए दीठउ पतउ खरउ ।४।
पारसनाथ पाय अणुसरउ, समयसुन्दर कहइ जिम निस्तरउ ।५।

इति श्रीसंखेश्वर पार्श्वनाथ भास ॥ ३० ॥

—:o:—

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवनम्

(१)

गौड़ी गाजइ रे, गिरुयउ पारसनाथ ।
भव दुख भांजइ रे, मेल्हइ सुगति नउ साथ ॥१॥
जागतउ तीरथ रे, लोक आवइ छइ जात्र ।
भावना भावइ रे, करइ पूजा नइ स्नात्र ॥२॥
परचा पूरइ रे, पारसनाथ प्रत्यक्ष ।
चिन्ता चूरइ रे, जेहनउ जागतउ यक्ष ॥३॥

नीलड़इ घोड़इ रे, चढि आवइ असवार ।
संघ नी रक्षा रे, करै मारग मझार ॥४॥
विषमी ठामइ रे, जइ रखा पारकर नइ पास ।
हुँ किम आवुँ रे, नहीं म्हारे गोडा नो वेसास ॥५॥
दूर थकी पण रे, तुमे जाणेज्यो देवा ।
मोरा स्वामी रे, मो मन सुधी सेवा ॥६॥
रंगे गायउ रे, रूड़उ गौड़ीचउ राया ।
भाव भगति सु रे, प्रणमै समयसुन्दर पाया ॥७॥

(२) राग—गौड़ी मिश्र

ठाम ठाम ना संघ आवै यात्रा,
सतर भेद करइ पूजा सनात्रा ॥१॥
गौड़ी जागतउ पारसनाथ प्रत्यक्ष ॥ गौ० ॥ आंकणी ॥
केसर चंदन भरिय कचोल,
प्रतिमा पूजइ मन रंग रोल ॥२॥ गौ० ॥
भावना भावइ बेकर जोड़,
स्वामी भव बंधन थी छोड़ ॥३॥ गौ० ॥
नटवा नाचइ शास्त्र संगीत,
गंधर्व गावइ सखरा गीत ॥४॥ गौ० ॥
निरखंतां धरइ नव नवा रूप,
स्वामी मूरति सकल स्वरूप ॥५॥ गौ० ॥

नीलडै घोडइ चढि असवार,
रक्षा करइ संघ नी यक्ष सार ॥६॥ गौ० ॥
गरुयड़ि गाजइ गौड़ी पास,
समयसुन्दर कहइ पूरउ आस ॥७॥ गौ० ॥

(३) राग—गउड़ी

परतिख पारसनाथ तु गउड़ी । प० ।
लोक मिलइ यात्रा लख कउड़ी,
चरण कमल प्रणमे कर जोड़ी ॥ प० ॥१॥
हुये इण देव तणी किण होड़ी,
और देव इण आगइ कौड़ी ॥ प० ॥२॥
दरशन दउलति आवइ दउड़ी,
समयसुन्दर गुण गावइ गौड़ी ॥ प० ॥३॥

(४) राग—श्री

तीरथ भेटन गई, सखि हुं हरषित भई ।
परतिख गउडो पास पूठउ, पूरवइ मन आस ।
सेवक ल्यउ री सेवक ल्यउ ।
नीलड़े घोड़े चढी आवइ, पूरवइ मन आस ॥ से० ॥१॥
अपुत्रियां पुत्र आपूं, दुखिया को दुख कापूं, अड़वड्यां आधार ।
निर्धनियां नइ धन आपूं, भरूं धन भण्डार ॥ से० ॥२॥

इसो मंइ अचरज दीठ, जागतो जिणंद पीठ, प्रवल पड्र ।
समयसुन्दर करो, स्वामी हाजरउ हजूर ॥ से० ॥३॥

(५) राग—आसावरी

गउड़ी पारसनाथ तुं वारु,एकलमल्ल विराजइ ॥ ग०॥१॥
दसो दिसथी संघ आवइ दिवाजइ,
ए प्रभुता प्रभु ताहरइ छाजइ ॥ ग०॥२॥
पूजा स्नात्र करइ प्रभु काजइ,
समयसुन्दर कहइ सहु नइ निवाजइ ॥ ग०॥२॥

(६)

गउड़ी पारसनाथ तूं गाजइ, वारु एकलमल्ल विराजई ॥१॥
दिसो दिस थी संघ आवइ दयाल, भय संकट मारग भांजइ ॥२॥
वाजित्र ढोल दमामा वाजइ, ए प्रभुता प्रभु ताहरी छाजइ ॥३॥

इति श्री गउड़ी मण्डण पार्श्वनाथ भास ।

—०—

श्री भाभा पार्श्वनाथ स्तवनम्

(१) राग आसाउरी

भाभउ पारसनाथ मंइ भेट्यउ, आमाउलि मांहि आज रे ।
दुख दोहग दूरि गयां सगलां, सीध्या वंछित काज रे । भा०।१।

श्रावक पूजा स्नात्र करे सहू, सपूरव ताल पखाज रे।
भगवंत आगल भावन भावइ, भय संकट जावइ आज रे। भा०।२।
अश्वसेन राजा कउ अंगज, तेवीसम जिनराज रे।
समयसुन्दर कहइ सेवक तोरउ, तूं मोरा सरताज रे। भा०।३।

(२) राग—भयरव

भाभा पारसनाथ भलु करे, भलूं करे भाभा भलूं करे। भा०।
अलिय विघन म्हारां अलगां हरे। भा०।१।
कुशल चेम करे मुझ घरे, ऋद्धि वृद्धि वाधे बहु परे। भा०।२।
समयसुंदर कहइ मत किहां डरे, ध्यान एक भगवंत नुँ धरे। भा०।३।

इति श्री तीरथ भास छत्तीसी समाप्ता।
संवत् १७०० वर्षे आषाढ बदि १ दिने लिखितं ॥ छः ॥ ३६ ॥

श्री सेरीसा पार्श्वनाथ स्तवनम्

सकलाप मूरति सेरीसइ,
पोस दसमी पारसनाथ भेट्यउ, देव नीमी देहरउ दीसइ। स०।१।
प्रतिमा लोडति जाइ पातालइ, धरणि आधीरइ सीसइ।
भाव भगति भगवंत नी करतां, हरख घणइ हीयउ हींसइ। स०।२।
पटणी पारिख सूरजी संघ सुँ, जात्र करी लाभ सुजगीसइ।
समयसुंदर कहइ साचउ मंइ जाण्यउ, वीतराग देव विसवा वीसइ।

इति श्री सेरीसा मंडन पार्श्वनाथ भास ॥ ३१ ॥

एह स्तोत्र जगत मन धरइ, तेहना काज सदाइ सरइ ।
आधि व्याधि दुख जावइ दूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥६॥
भव भव देज्यो तुम पय सेव, श्री चिंतामणि अरिहंत देव ।
समयसुंदर कहइ सुख भरपूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ॥७॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भास

राग—भयरव

चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि, पारसनाथ मुझ वंछित पूरि ।१।
जागतउ देव तूं हाजर हजूरि, दुख दोहग अलगां करि दूरि ।२।
सदा जुहारूं उगंतइ सूरि, समयसुंदर कहइ करि तूं पडूरि ।३।

इति श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भास ॥ ३५॥

—०※०—

श्री सिकन्दरपुर चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन

राग—धमाल, फागनी जाति

स्यामल वरण सुहामणी रे, मूरति मोहन वेल ।
जोतां तृप्ति न पामियइ रे, नयण अमी रस रेल ।१।
चिंतामणि पास जुहारियइ रे, सिकंदरपुर सिणगार । चिं.। आंकणी
तूं प्रभु त्रिभुवन राजियउ रे, हूँ प्रभु तोरउ दास ।
तिण पर शरणैं हूँ आवियउ रे, साहिब सुणि अरदास ।२। चिं०।

परता पूरइ रे पास जिणंद, दूरि करइ दुख दंद ।
चिंता चूरइ रे चित्त नी एह, वेलू मय छइ देह ॥३॥
तीरथ भेट्यउ रे अम्हे आज, सीधा वंछित काज ।
तीरथ जूनउ रे अजाहरउ जाणि, समयसुंदर सुख पाणि ॥४॥

श्री नारंगा पार्श्वनाथ स्तवनम्

पारसनाथ कृपा पर, पाप रहाउ मुज दूरि ।
निरखंता तुझ मूरति, मूं रति थाई भरपूरि ॥१॥
अति सुन्दर तुझ सूरति, सूर तिमिर हरइ जेम ।
अति सकलाप सुकोमल, को मल नहिं नहिं प्रेम ॥२॥
सुन्दर वदन विलोकन, लोकनइं तूं हितकार ।
वामा देवी नंदन, नंद नलिन पद चार ॥३॥
अलि कुल कजल नीलक, नील कमल सम देह ।
भव समुद्र तूं तारक, तार कला गुण गेह ॥४॥
भावइ सेवइ भुजंगम, जंगम पणि थिर थाय ।
न परइ भगत वैतरणी, तरणी लाधुं उपाय ॥५॥
जग बांधव जग वत्सल, वत्स लघु जिम पालि ।
श्री जगगुरु जगजीवन, जीव नउ तूं दुख टालि ॥६॥
वंश इखाग निशाकर, साकर सम तुझ वाणि ।
भव भव हूँ तुझ सेवक, सेव करूं तें जाणि ॥७॥

यइ दरिसण रलिआमणु, आमणु दमणु जाई ।
जिम मुझ पहुँचइ आखडि, आखड़ियां न उसाई ॥८॥
नारिंगपुर मंडण मणि, नमणि करइ नर नारि ।
समयसुन्दर एहवी नति, विनति करइ वार वार ॥६॥

(२)

राग—कल्याण

पाटण मांहि नारंगपुरउ री । पा० ।
चैत्यवंदन करि देव जुहारउ,
जिम संसार समुद्र तरउ री ॥ पा०॥१॥
आधि व्याधि चिंता सहु चूरइ,
वइरी कर न सकइ को बुरउ री ।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति,
हार हियइ मस्तकि सेहरउ री ॥ पा०॥२॥
वीतराग तणा गुण गावउ,
अरिहंत अरिहंत ध्यान धरउ री ।
समयसुंदर कहइ पास पसायइ,
कुशल कल्याण आणंद करउ री ॥ पा०॥३॥

श्री नारंगा पार्श्वनाथ स्तवनम्

पाटण मइं परसिद्ध धणी, नारंगपुर पारसनाथ तणी ।
आज जागतउ तीरथ एह खरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।१।

हाटे घर बइठा धन खाटउ, सखरइ व्यापार तणउ साटउ।
दरिय देसांतर कांइ फिरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।२।
राजा करइ तेहिज अंग घणउ, उपर सही बोल हुवइ आपणउ।
झगडउ कांटउ तुम कांइ डरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।३।
तुम दउ देवालय मति जावउ, मिथ्यात्त्व देव नइ मतिध्यावउ।
पुत्र रत्न लहिस्यउ अति सफरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।४।
नख आंख अनइ मुख कुख तणी, स्वास खास नइं ज्वर रोग घणी।
जायइ ते भाज्ञ तुरत अरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।५।
भील कोली मयणा मीर तणा, मारग में भय अत्यंत घणा।
मत बीहउ धीरज नित्य धरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।६।
व्यंतर नइ राक्षस वैताला, भूत प्रेत भमइ दग दग वेला।
साकण डाकण डर कांइ डरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।७।
परिवार कुटुम्ब सहु को मानइ, सौभाग्य सुजस वधते वानइ।
वलि न हुवइ वंक किसी वातरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।८।
आणंद घुरउ तुम इह लोकइ, शिव सुख पिण करइ परलोकइ।
भणै समयसुंदर भव समुद्र तरउ, नित समरउ श्री नारंगपुरउ।६।

श्री वाडी पार्श्वनाथ भास

चउमुख वाडी पास जी,
सुन्दर मूरति सोहइ मेरे लाल।
नित नित नयणे निरखतां,
भवियण ना मन मोहइ मेरे लाल।१। च०।

सोम चिंतामणि संपति आपइ,
अचिंत चिंतामणि आस पूरइ मेरे लाल।
विश्व चिंतामणि विघ्न विडारइ,
चउगति ना दुख चूरइ मेरे लाल।२।च०।
मोह तिमिर भर दूर निवारइ,
निरमल करइ प्रकाश मेरे लाल।
समयसुंदर कहइ सेवक जन नइ,
परतिख तूठा वाड़ी पास मेरे लाल।३।च०।

इति श्री वाड़ी पार्श्वनाथ भास ॥ २० ॥

श्री मंगलोर मंडण नवपल्लव पार्श्वनाथ भास

ढ़ाल—राजमती राणी इण परि बोलइ, नेम बिना कुण घूंघट खोलइ

नवपल्लव प्रभु नयणे निरख्यउ,
प्रगट्यउ पुण्य नइं हियड़उ हरख्यउ ॥१॥
वल्लभी भंगे मूरति आणी,
मारगि बे अंगुल विलंबाणी ॥२॥
वलीय नवी आवी ते जाणउ,
नवपल्लव ते नाम कहाणउ ॥३॥
मंगलोर गढ मूरति सोहइ,
भवियण लोक तणा मन मोहइ ॥४॥
जात्र करी श्रीसंघ संघाति,
समयसुन्दर प्रणमइ परभाति ॥५॥

इति श्री मंगलोर मंडण श्री नवपल्लव पार्श्वनाथ भास ॥१६॥

श्री देवका पाटण दादा पार्श्वनाथ भास

देवकइ पाटण दादउ पास, सखी मई जुहारउ म्हारी पूरी आस। दे.।१।
चंदन केसर चंपक कली, प्रतिमा पूजी मन नी रली। दे.।२।
जात्र करण संघ आवइ घणा, सनात्र करइ जिनवर तणा! दे.।३।
दउलित आपइ दादउ पास, सयमसुन्दर प्रभु लील विलास। दे.।४।

इति श्री देवका पाटण मण्डण दादा पार्श्वनाथ भास ॥२७॥

—०—

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ गीतम्

राग—सारंग

भले भेट्यउ पास अमीझरउ।
नयर वड़ाली मांहि, देख्यउ प्रभु देहरउ जी।१। पा०।
नव नव अंग पूज रचो मन रंगे, निर्मल ध्यान धरउ।
भगवंत नी भावना मन भावउ, जिम संसार तरउ जी।२। पा०।
ईडर संघ सहित यात्रा, हरख्यउ मो हियरउ।
समयसुंदर कहइ पास पसायइ, वंछित काज सरयउ।३। पा०।

श्री शामला पार्श्वनाथ गीतम्

राग—भयरव

साचउ देव तउ ए सामलउ, अलगउ टालइ जपलउ। सा.।१।
पूजा स्नात्र करउ सव मिलउ, जन्म मरण ना दुख थी टलउ। सा.।२।
समयसुंदर कहइ गुण सांभलउ, जिम समकित थायइ निरमलउ।३।

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ गीतम्

राग—वसंत

पार्श्वनाथ परतिख अंतरीख,
सकलाप सामी कुण ए सरीख। पा० ।१।
श्रीपाल राजा कीधी परीख,
कोढ रोग गयो हुंतो बहु बरीक। पा० ।२।
निरधार मूरति नयणे निरीख,
समयसुन्दर गुण गावइ हरीख। पा० ।३।

श्री बीबीपुर मण्डन चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन

राग-काफी

चिन्तामणि चालउ देव जुहारण जावां। चि०।
बीबीपुर मांहइ प्रभु बइठउ, दरसणि दउलति पावां। चि० ।१।
केसर चंदन भरिय कचोली, प्रतिमा पूज रचावां।
स्यामल मूरति सुन्दर सोहइ, मस्तक मुकुट धरावां। चि० ।२।
शक्रस्तव आगइ करां साचउ, गुण वीतराग ना गावां।
समयसुन्दर कहइ भाव भगति सुँ, भावना आपां भावां। चि० ।३।

श्री भड़कुल पार्श्वनाथ गीतम्

राग—वेलाउल

भड़कुल भेटियउ हो, पारसनाथ पड्डूर। भ०।
परतिख रूप धरणिंद पद्मावती, परता पूरइ हाजरा हजूर। भ०।१।

समरथां साद दियइ मेरउ साहिब, आरति चिंता करइ चकचूर ।
आसा सफल करत सेवक की, यात्रा आवइ सब लोक जरूर । भ०।२।
पोष दसमी दिन जन्म कल्याणक, यात्रा करी में ऊगमते सूर ।
समयसुन्दर कहइ तेरी कृपा ते, राग वेलाउल आणंद पूर । भ०।३।

श्री तिमरीपुर पार्श्वनाथ गीतम्

राग—काफी

तिमरीपुर भेट्या पास जिनेसर वेई । ति० ।
देश प्रदेश थकी नर नारी, जात्रा आवइ सँघ लेई । ति०।१।
सतर भेद पूजा करइ श्रावक, नृत्य करइ तता थेइ ।
समयसुंदर कहइ सूरियाभनी परि, मुक्ति तणा फल लेइ । ति०।२।

श्री वरकाणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

राग—सारंग

जागतउ तीरथ तूं वरकाणा । जा० ।
जात्रा करण को जग सब आवत,
सेव करइ सुर नर राय राणा । जा० ।१।
सकल सुन्दर मूरति प्रभु तेरी,
पेखत चित्त लुभाणा ।
मन वंछित कमना सुख पूरति,
कामिक तीरथ जिनकुं कहाणा । जा० ।२।

तूं गति तूं मति तूं त्रिभुवन पति,
तूं शरणागत त्राणा ।
समयसुन्दर कहइ इह भव पर भव,
पारसनाथ तूं देव प्रमाणा । जा० ।३।

श्री नागौर मण्डन पार्श्वनाथ स्तवनम्

पुरिसादानी पास, एक करूं अरदास ।
मुझ सेवक तणी ए, तूं त्रिभुवन धणी ए ॥१॥
दीठां अवरज देव, कीधी तेहनी सेव ।
काज न को सरचउ ए, भवसागर फिरचउ ए ॥२॥
हिव मुझ फलियउ भाग, मिलीयो तूं वीतराग ।
अशुभ करम गयउ ए, जन्म सफल थयउ ए ॥३॥
ज्ञाता भगवती सार, सूरीआभ अधिकार ।
जिन प्रतिमा सही ए, जिन सारखी कही ए ॥४॥
अश्वसेन कुल चन्द, वामा राणी नन्द ।
तूं त्रिभुवन तिलउ ए, भांजइ भव किलउ ए ॥५॥
अजरामर अरिहंत, भेट्यउ तूं भगवंत ।
दुख दोहग टल्या ए, मन वंछित फल्या ए ॥६॥
पास जिणेसर देव, भव भव तुम पय सेव ।
पास जिणेसरू ए, वंछित सुरतरू ए ॥७॥

॥ कलश ॥

इम नगर श्री नागौर मण्डण, पास जिणवर शुभ मनइ ।
मंइ थुणयउ संवत सोल इकसट्ठ, चैत्र वदि पंचमि दिनइ ॥
जिन चन्द्र रवि नक्षत्र तारा, सकल चन्द्र सुरी सुरा ।
कर जोड़ि प्रभु नी करइ सेवा, समयसुन्दर सादरा ॥८॥

—:o:—

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

देव जुहारण देहरइ चाली,
सखिय सहेली[1] साथि री माई ।
केसर चन्दन भरिय कचोलडी,
कुसुम की माला हाथि री माई ॥१॥
पारसनाथ मेरउ मन लीणउ[2],
वामा कउ नन्दन लाल री माई ॥आंकणी॥
पग पूंजी चढ़ूं पावड़ सालइ,
भगवंत धरम दुवार री माई ।
निस्सही तीन करूं तिहुं ठउड़े,
पंचाभिगमण सार री माई ॥२॥ पा० ॥
तीन प्रदक्षिणा भमती देसुं,
तीन करूं परणाम री माई ॥
चैत्यवंदण करूं देव जुहारूं,

१—सहिअ समाणी । २—मान्यउ

गुण गाऊं अभिराम री माई ॥३॥ पा० ॥
भमती मांहि भमइ जे भवियण,
ते न भमस्यै संसार री माई ।
समय सुन्दर कहइ मनवंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई ॥४॥ पा० ॥

—

संस्कृतप्राकृतभाषामयं पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

लसरणाण-विन्नाण-सन्नाण-मेहं,
कलाभिः कलाभिर्युतात्मीय देहम् ।
मणुण्णं कला-केलि-रूवाणुगारं,
स्तुवे पार्श्वनाथं गुण-श्रेणि-सारं ॥ १ ॥
सुआ जेण तुम्हाण वाणी सदेवं,
गतं तस्य मिथ्यात्व-मात्मीय-मेवम् ।
कहं चंद मज्झिल्ल-पीऊस-पाणं,
विपापोह-कृत्ये भवेत्र प्रमाणम् ॥ २ ॥
तुहप्पाय-पंके-रुहे जेअ भत्ता,
लभे ते सुखं नित्य-मेकाग्र-चित्ताः ।
कहं निप्फला कप्परुक्खस्स सेवा,
भवेत्प्राणिनां भक्तिभाजां सदेवा ॥ ३ ॥
तुहद्दंसणं जेअ पिक्खंति लोगा,
लसत्तोष-पोष लभंते सभोगाः ।

जहा मेह-रेहं पदट्ठूण मोरा,
यथा वा विधो दर्शनं सचकोराः ॥ ४ ॥
हवे जत्थ दिट्ठा जिणाणं पसन्ना,
गता तेभ्य आपन्नितान्तं निखिन्ना ।
पगासो सिया जत्थ सूरस्स सारं
कथं तत्र तिष्ठेत्कदाप्यन्धकारम् ॥ ५ ॥
तुमं नाम चिंतामणि जस्स चित्ते,
विभो कामितिस्तस्य संपत्ति-वित्ते ।
जओ पुप्फकालंमि पत्ते णणेया,
. वणस्सेणि पुप्फाग्र-माला-प्रमेया ॥ ६ ॥
मए वंदिया अज्ज तुम्हाण पाया,
नितान्त गता मेऽद्य सर्वेप्यपाया ।
जहा सुट्ठु दट्ठूण दुट्ठुं च मोरा,
भुजंङ्गा व्रजेयुर्भियात्यंत-घोरा ॥ ७ ॥
अहो अज्ज मे वंछिअत्थस्समाला, .
फलत्पार्श्वनाथ-प्रसादा-द्विशाला ।
जहा मेह-धाराभि-सित्ताण वीणा,
समृद्धा भवेत्किं न वल्ली न रीणा ॥ ८ ॥
इय पागय-भासाए संस्कृत-वाणया च संस्तुतः पार्श्वः ।
भत्तस्स समयसुंदर-गणेर्मनो-वांछितं देयात् ॥ ९ ॥

॥ इति अर्धप्राकृत-अर्द्ध संस्कृतमयं श्रीपार्श्वनाथलघुस्तवनम् ॥

अथ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर-गुरु नाम गर्भित

श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्

वृषभ धुरन्धर उद्योतन वर, अजित विभो शुचि भुवन दिनेश्वर,
वर्द्धमान गुणसार।
वामा सम्भव पार्श्व जिनेश्वर, सुजन दशा-मभिनन्दन शशिकर,
चन्द्र कमल पद चार ॥१॥

जय सुमति लता घन अभयदेव सूरीन्द्र।
पद्म प्रभु कर नत वल्लभ भक्ति मुनीन्द्र॥
वसु पार्श्व विगत मद दक्ष भविक जन भन्द्र।
चन्द्र प्रभु यशसा सुन्दर तर जिन चन्द्र ॥२॥

सुविधिनाथ जिनपति मुदार मति शीतल वचनं।
नौमि जिनेश्वर सूरि साधु कृत संस्तव रचनम्॥
श्रेयासं भविक प्रतिबोध निपुणं निस्तन्द्रं।
श्री पार्श्व दे वासुपूज्य मानं जिनचन्द्रम् ॥३॥

विमलभं कुशलाम्बुज-भास्करं
प्रशमनं तत्पद्म दशावरम्॥
नमत धर्म-सुलब्धि-विराजितं
जिनमशान्ति सुचंद्रविशोज्झितम् ॥४॥

कुंथु रत्नाकरं विहितधृजिनोदयं, अरतिचिताहरं राजमानासयम्।
मल्लिका सहितभद्रासनस्थायिनं, स्मरत मुनिसुव्रतं चंद्रहृदयं
जिनम् ॥५॥

जय नमित सुरासुर गुण समुद्र ।
जय नेमि भवापह हंस शुद्र ॥
जय पार्श्व कला माणिक्य गेह ।
जय वीर मनोहर चन्द्र देह ॥६॥

इत्थं नीरधिनेत्रतीर्थपगुरुस्पष्टाभिधागर्भितं ।
सूर्याचाररसेन्दुसंवति स्तुतिं श्रीस्तम्भनस्य प्रभो ! ।
चक्रे श्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुश्रीसिंहसूरिप्रभो !,
शिष्योऽयं समयादिसुन्दर गणिः सम्पूर्णचन्द्रद्युतेः ॥७॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर चतुर्विंशति गुरु नाम गर्भित
श्री पार्श्वनाथ स्तवनं समाप्तम् ।

इरियापथिकी मिथ्यादुःकृतविचारगर्भित श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

मणुयातिसय तिडुत्तर (३०३), नारय चउदसय (१४) तिरिय अडयाला (४८) ।
देव अड़नवइसयं (१९८), पणसयतेसट्ठि (५६३) जियं भेया ।१।
अभिहय-पमुह-पएहिं, दस गुणिया (५६३०) राग-दोस-कय-दुगुणा (११२६०) ।
जोगे (३३७८०) त्रिगुणा करणे (१०१३४०), काले त्रिगुणा (३०४०२०) छः गुणायसक्खिछगे (१८२४१२०) ।२।

ते सव्वे संजाया, लक्खा अठार सहस चौवीसं ।
इग सय वीसा मिच्छा, दुक्कड़या इरियपडिक्कमणे ।३।

इय परमत्थो एसो, परूवियं जेण भविय बोहत्थं ।
पणमामि समयसुंदर, पणयंतं पास जिणचंदं ।४।

इति इरियापथिकीमिथ्यादुःकृतविचारगर्भितश्रीपार्श्वनाथलघुस्तवनम्
श्री जेसलमेरु संघाभ्यर्थनयाकृतं सम्पूर्णम् ॥

xxxx

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम

प्रकृत्यापि विना नाथ, विग्रहं दूरतस्त्यजन् ।
केवल प्रत्यये नैव, सिद्धिं साधितवान् भवान् ॥१॥
निर्जितो वारिवाहोऽर्हन्, गम्भीरध्वनिना त्वया ।
वहत्यद्यापि पानीयं, प्रतिसभा सितानन ॥२॥
तव मित्र वदादेश, तथा शत्रु-रिवागमः ।
समीहित-कृते रौति, संहृते शब्द-वारिधे ॥३॥
नित्यं प्रकृति-मत्त्वेऽपि, नाना-विग्रह-वर्त्तिनि ।
अभव्ये व्यभिचारित्वात्सर्व-सिद्धि-करं कथम् ॥४॥
निर्दयं दलयामास, शक्त्या सत्वर-मङ्गजं ।
तद्भवं तं कथं नाथ, कृपालुं कथयाम्यहम् ॥५॥

एवं श्रीजिनचन्द्रस्य, पार्श्वनाथस्य संस्तवम्।
चक्रे हर्ष-प्रकर्षेण, समयादिम सुन्दरः ॥६॥

इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवन श्लेषादिभावमयं सम्पूर्णम् ॥
सं० १६६० वर्षे चैत्र सुदि १ दिने श्री अहमदाबाद नगरे लिखितम्।

[जेसलमेर-खरतराचार्यगच्छोपाश्रये यति चुन्नीलाल संग्रहे स्वय लिखित पत्रात्]

—φ—

श्री पार्श्वनाथ यमक बद्ध लघु स्तवनम्

पार्श्वप्रभुं केवलभासमानं, भव्याम्बुजे हंसविभासमानम्।
कैवल्यकान्तैकविलासनाथं, भक्त्या भजेहं कमला सनाथम् ।१।
विघ्नावलीवल्लिमतंगभीर, दिश प्रभो मेऽभिमतं गभीर।
जगन्मनः कैरवराजराज, नताङ्घ्रिना शान्तिकराज राज ।२।
ततान धर्मं जगनाहतार, मदीदह दुःखतती हतार।
अचीकरच्छर्म सतां जनानां, जहार दीप्तारशितां जनानाम् ।३।
वेगाद्धनीपी दरिका ममादं, श्रियापि नो यो भविकाममादम्।
नुत प्रभुं ते च नता रराज, शिवे यशः कैरवतारराज ।४।
यमलम् ॥
उवर्ष्टयेपामिह सेवकानां, त्वं मानसे पुष्टरसेवकानाम्।
सद्यो लभंते कमलां जिनेश, ते देव कान्ता कमला जिनेश ।५।
यन्नाम मन्दोपि तदा मुदारं, वदन् पदं याति विदा मुदारम्।

पोता पदंभस्तरणेऽवदातः, श्रियो जगद्देव मणेवदातः ।६।
चिन्तामणि मे चटिता ममाद्य, जिनेश हस्ते फलिता ममाद्य ।
गृहांगणे कल्पलता सदैव, दृष्टे तवास्ये ललिता सदैव ।७।
एवं स्तुतौ यमकवद्धनवीन काव्यैः,पार्श्व प्रभुर्ललित''वितानभव्यैः
कर्त्तु : करोतु कुलकैरवपूर्णचंद्रः,सिद्धांतसुंदररतिं विनमत्सुरेंद्रः।८।

इति श्री यमकवद्ध श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्लेषमय लघु स्तवनम्

उपोपेत तपो लक्ष्म्या, उदुज्ज्वल यशोभर ।
प्रप्रकृष्ट-गुण-श्रेणि, सं संश्रित जय प्रभो ॥१॥
दूरस्थमपि पार्श्व त्वां, यन्मे हृदभिधावति ।
यस्य येनाभिसम्बोधो, दूरस्थस्यापि तेन सः ॥२॥
एकधातोरनेकानि, रूपाणि किल तत्कथम् ।
एकमेवाऽभवद्रूप-मथितं सप्तधातुभिः ॥३॥
केवलागममाश्रित्य, युष्मद्व्याकरणे स्थिताः ।
सिद्धिं प्रकृतयः प्रापुः, पार्श्व चित्रमिदं महत् ॥४॥
एवं देव दयापर, चिन्तामणिनामधेय पार्श्वत्वाम् ।
गणि समयसुंदरेण, प्रसंस्तुतः देहि मुक्तिपदम् ॥५॥

इति श्लेषमयं चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ।

सं० १७०० वर्षे मार्गशीर्ष वदि ५ दिने श्री अहमदावादे हाजा पटेल पोलिमध्ये वृद्धोपाश्रये । उ० श्री समयसुन्दरलिखितं स्वस्य शिष्यार्थं च पठनार्थम् ॥

श्री पार्श्वनाथस्य शृंखलामय लघु स्तवनम्

प्रणमामि जिनं कमलासदनं, सदनंतगुणं कुलहारसमम् ।
रस मंदमदंमसुधानयनं, नयनंदित वैश्वजनं शमिनम् ॥१॥
युवनोन्मुखकेशरिशावरवं, वरवंशपदा न तदा सहितम् ।
सहितं समया रमया मदना, मदनाभि तिरस्कृतनीररुहम् ॥२॥
वदनरवि बोधितानेकजनपंकजं, पंकजं बालपाथोदसमसंचरम् ।
संचरंतं सरोजेषु सुतमोहरं, मोहरंभा गजे पार्श्वनाथं मुदा ॥३॥
त्रिभिः कुलकम् ॥

विहितमंगल मंगल सद्रवि नुत जिनं सदयं सदयं जनाः ।
विगत देव न देवनरोचितं, गतकजामरचामरराजितम् ॥४॥
जिन यस्य मनो भ्रमरो रमते, रमते पदपद्मयुगं सततम् ।
सततं नवनामकरंदमिना, दमिनावनिपीयमुदं दमिनः ॥५॥
महोदये वाम जिनं वसंतं, जिनं वसंतं शुभवल्लिकंदे ।
सस्मार पार्श्वं सुमनो विमानं, मनो विमानं स जगाम यस्य ॥६॥
कल्याणकंदे कमलं हरंतं, जिने जनानेकमलं हरंतम् ।
सतां महानंदमहं स पद्म, पार्श्वं ददौ यो दमहंस पद्मं ॥७॥
कल्पकल्पोपमं पूर्णसोमोदयं, मोदयंतं जनान् वंशहंसप्रभम् ।
सप्रभं पार्श्वनाथं वहे मानसे, मानसेवालवातूलमेनं जिनम् ॥८॥

एवं स्तुतो मम जिनाधिपपार्श्वनाथः,
कल्याणकंदजिनचंद्ररसा सनाथः ।

ज्ञानांबुधो सकलचंद्रसमः प्रसद्यः
सिद्धान्तसुंदररतिं वितनोतु सद्यः ॥ ६ ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

श्रीसंखेश्वरमण्डनहीरं, नीलकमलकमनीयशरीरं,
गौरवगुणगंभीरम् ।
शिवसहकारमनोहरकीरं, दूरीकृतदुःकृतशारीरं,
इन्द्रियदमनकुलीरम् ॥१॥
मदनमहीपतिमर्दनहीरं, भीतिसमीरणभरूणहीर,
मरणजरावनजीरम् ।
संसृतितप्तिगुडाश्रितजीरं, वचननिरस्तसिता गोक्षीरं,
गुणमणिराशिकुटीरम् ॥२॥
समतारसवनसिंचननीरं, विशदयशोनिर्जित डिण्डीरं,
त्रिभुवनतारणधीरम् ।
धीरिमगुणधरणीधरधीरं, सेवकजनसरसीरुहसीरं,
रागरसातलसीरम् ॥३॥
दुरितरजोभरहरणसमीरं, गजमिव भग्नकुपायकरीरं,
करुणानीरकरीरम् ।

अश्वसेननृपकुलकोटीरं, निर्मलकेवलकमलानीरं,
श्रीजिनचंद्ररतीरम् ।
सकलचंद्रमुखमनुपमहीरं, प्रणमत समयसुंदर गणि धीरं,
वन्देपार्श्वमभीरम् ॥५॥

इति श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥ २२ ॥

श्रीअमीझरापार्श्वनाथस्य पूर्वकविप्रणीतकाव्य-द्व्यर्थ करणमयं लघुस्तवनम्

अस्त्युत्तरास्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोय निधीवगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।१।
[कुमारसंभवे]

कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः ।
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्त्तुः ॥
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु ।
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।२।
[मेघदूत काव्ये]

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन् ददर्शाऽवतरं तमम्बरात्, हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः ।३।
[माघ काव्ये]

बालोपि यो न्यायनये प्रवेश-मल्पेन वांछत्यलसः श्रुतेन ।
संक्षिप्तयुक्तान्वितर्कभाषा, प्रकाश्यते तस्य कृते मयैषा ।४।

[तर्क भाषा]

—मित भाषिण्याम्

हेतवे जगतामेव, संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्वविद्यानां, शंभवे गुरवे नमः ।५।

[सप्त पदार्थी]

सुखसन्तानसिद्ध्यर्थं, नत्वा ब्रह्माच्युतार्चितम् ।
गौरीविनायकोपेतं, शंकरं लोकशंकरम् ।६।

[वृत्तरत्नाकरे]

एवं पूर्वकविप्रणीतविलसत्काव्यैर्नवीनार्थतः ।
आनंदेन अमीझराभिधविभु श्रीपार्श्वनाथस्तुतिम् ॥
श्रीमच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरोः शिष्याणुशिष्यो व्यधात् ।
सोल्लासं समयादिसुन्दरगणिश्चेतश्चमत्कारिणीम् ।७।

—x—

श्री पार्श्वनाथ यमकबन्ध स्तोत्रम्

प्रणत मानव मानव-मानवं, गतपराभव-राभव-राभवम् ।
दुरितवारण वारण-वारणं, सुजन-तारण तारण-तारणम् ।१।
अमर-सत्कल-सत्कल-सत्कलं, सुपदया मलया मलयामलम् ।
प्रबल-सादर ,सादर-सादरं, शम-दमाकर-माकर-माकरम् ।२।

भुवननायक-नायक-नायकं, प्रणितु नावज-नावज-नावजम् ।
जिन भवंत-मवंत-मवंतमं, स शिव-मापरमा-परमा-परम् ।३।
[त्रिभिः कुलकम्]
रविसमोदय-मोदय मोदय, कमल-नीरज-नीरज-नीरज ।
लसदु[१] मामय-मामय-मामय, व्यय कृपालय पालय पालयः ।४।
इति मया प्रभुपार्श्वजिनेश्वरः, समयसुन्दरपद्मदिनेश्वरः ।
यमकबन्धकविच्चभरैः स्तुतः, सकलऋद्धिसमृद्धिकरोस्त्वतः ।५।

इति यमकबन्धं श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।

—०—

श्रीपार्श्वनाथशृंगाटकबन्धस्तवनम्

कमन-कंद-निकंदन-कर्म्मदं, कठिन-कल-ममा नमति समम् ।
मदन-मंदर-मर्दन-नंदिरं, नयन-नंदन-नंदनि निर्द्धनम् ॥१॥
निखिल-निर्वृत-निश्चन-नर्दितं, नत जनं सम-नर्म्मद-दंममम् ।
दम-पदं विमदं वन-नव्यभं, नभ-वनं हससं शिवसंभवम् ॥२॥
सतत-सज्जन-नंदित-नव्यभं, नयधनं वरलब्धिधरं समम् ।
रदन-नक्रमन-श्वलन-प्रियं, नलिन-नव्यय-नष्ट-वनं कलम् ॥३॥
ललवलं सकलं शम-लाञ्छितं, ततमतं सततं निज जन्मतम् ।
जगदजं विरजं दम-मंदिरं, महित-मंगप पण्डित-पर्षदम् ॥४॥

१ स्फुर दुमामयमा मय मामय ।

पट्टुलपं शम-मञ्जुल-मण्डनं, मधव-नंदन-वर्यरवं ध्रुवम् ।
वदन-नर्जितम-प्रभु-धर्मतं, मदन-लब्ध-जयं गुण-बन्धुरम् ॥५॥
कपट-मंदिर-वचण-दर्प्पहं, रतत-तद्रु म-दंति-करं जुवे ।
नयवरं च भवंत-महं मुदा, त्रिभुवनाधिप पार्श्व-जिनेश्वरम् ॥६॥
सुजन-संस्तुत-विष्टप-सोदरं, मुख-विनिर्जित-वैधव-सम्पदम् ।
विगत-विड्वर-श्रीरम-मंदिरं, कज विलोचनयामल सद्‌गुणम् ॥७॥

संसार-रचक-कजानन-भाल-लष्टं,
सोल्लास-संहनन-वीततमोककष्टम् ।
निःकोप-पंक ललनं'''विधारिरिक्तं,
संताप-कत्यभिदं ललवंश-शक्तम् ॥ ८ ॥
विश्वेश-शस्त-ममता-ममथं विविधम्,
मंदार-रंग-ददयौघ-घनाव-वधम् ।
रोगाववर्यं गगनाय यशोविविक्तम्,
सन्नार-रंजन-कलंक-करंभ-भक्तम् ॥ ९ ॥

इति पार्श्व-जिनेश्वर-मीश्वर-मुतमचिरेण,
शृंगाटक-बंध-नवीन-कवित्त्व-भरेण ।
गणपति-जिनचंद्र-विनेय-सकल-विधु-शिष्य,
गणि-समयसुन्दर इममस्तावीत् सुविशिष्य ॥१०॥

॥ इति श्रीपार्श्वनाथशृंगाटकबन्धमय लघुस्तवनं समाप्तम् ॥

श्रीपार्श्वनाथ-हारबन्धचलच्छृंखला-गर्भितस्तोत्रम्

वन्दामहे वरमतं कृत-सात-जातं,
तं मान-कान्त-मनघं विपरीघ-कोपम् ।

पद्मामलं परम-मंग-कराऽमदाऽकं,
कष्टावली-कलिवनद्विप-हीन-पापम् ॥१॥
पद्माननं पवन-भत्वरं भवाऽवं,
वन्दारु-देव-मरुजं जिनराज-मानम् ।
नव्याजमान-मजरं धर सार-धीरं,
रम्याम्बकं रणवधं सुमनो-धरोमम् ॥२॥
मन्दार-काम-मरमं समधाम-रोम–
मर्हन्तमाऽमयतमस्तति सोमकान्तिम् ।
तिग्मो सतान्ति तरु-पशु-समं परासम्,
संतीति हास-मऽति-मर्दननाम-मानम् ॥३॥
गर्वाऽऽर-राग-हरमङ्ग्ज भीमराज,
जन्त्वाऽऽनतं जयिन-मंग सदाऽऽमदासम् ।
नष्टाऽशिवं नत शिवप्रद-मेव साद,
दंभाऽयुतं दम-युतं सुगताऽन्तरङ्गम् ॥४॥
संसार-वासधर-शम्ब-समं शवासं,
सदेव-दास-शिव-शर्म-करं शमैकम् ।
कम्रं कलाऽऽकर-कलं गल-भाल-शालं,
लब्धोदयं लसदनन्तमतिं नमामः ॥५॥
मञ्जूदयं मत-दयं शुभ-गेय शोभं,
भव्यं विदंम-कवि-वन्द्य-मदाऽवजापम् ।
पत्कंज-रूप-विजयं वर-काय-मारं,

रत्नाकरं रतिकरं नत सुर-जातम् ॥६॥
तुष्टः प्रभो गुण-गणान्तर-वृत्त वृत्त–
मुक्तावली-ग्रथित-माशु शिवैक-दानम् ।
देहीह मे त्वदभिधा स्फुट-नायकाग्रं,
दृष्ट्वा-भवत्स्तवन-हार-मुदार-मेनम् ॥७॥
इति हारबन्ध-काव्यैर्मनोमतं मेऽद्य संस्तुतः पार्श्वः ।
विदधातु पूर्णचन्द्रस्सकल-समयसुन्दराम्भोधौ ॥८॥
—(०)—

संस्कृत-प्राकृत-भाषामयं श्रीपार्श्वनाथाष्टकम्

भलूं आज भेट्यं प्रभोः पादपद्मम्,
फली आस मोरी नितान्तं विपद्मम् ।
गयूं दुःख नासी पुनः सौम्यदृष्ट्या;
थयुं सुख भाझुं यथा मेघवृष्ट्या ॥१॥
जिके पार्श्व केरी करिष्यन्ति भक्ति,
तिके धन्य वारु मनुष्या प्रशक्तिम् ।
भली आज वेला मया वीतरागाः,
खुशी मांहिं भेट्या नमद्देवनागाः ॥२॥
तुम्हे विश्व मांहे महा–कल्प–वृक्षा,
तुमे भव्य लोकां मनोभीष्ट–दक्षा ।
तुमे माय बाप प्रियाः स्वामि–रूपाः,
तुमे देव मोटा स्वयंभू स्वरूपाः ॥३॥

तुमारु सदाई पदाम्भोज—देशं,
नमइ राय राणा यथा भानि भेशम् ।
रली रंग हूआ सतां पूरितेहं,
तुम्हा देव दीठा सुरोमाञ्च-देहम् ॥४॥
इसी वाणि मीठी तवातीव[1]-मिष्टा,
घणी ठाम जोई मयानैव दृष्टा ।
सही वात साची विना चंद्र-विंबं,
कदे होइ नांही सुधायाः कदम्बम् ॥५॥
तुम्हारा गुणा री तुलां यो दधानः,
निको हूँ न देखूँ जगत्यां प्रधानः ।
डरै डूंगरे किं गुणैः सुन्दराणां,
धरी ओपमा एकदा मंदराणाम् ॥६॥
तुम्हारी वड़ाई नु को वक्तु-मीश,
कलिकाल माहे कवि-वागरीशः ।
कही एतली ए मया भूरि भक्त्या,
सदा पाय सेवूं तवातीव-शक्त्या ॥७॥
इति स्तुतिं सज्जन[2]-संस्कृताभ्यां,
तव प्रभो वार्निक-संस्कृताभ्याम् ।
त्वत्पादपद्मः प्रणमत्पुरन्दरः,
श्री पार्श्व चक्रे समयादि सुन्दरः ॥८॥

---

१ तवात्यन्त । २ प्राकृत

अष्ट महाप्रातिहार्य गर्भित पार्श्वनाथ स्तवनम्

कनक सिंहासन सुर रचिय, प्रभु बइसण अतिसार।
धरम प्रकासइ पास जिण, बइठी परपदा वार ॥१॥
सीस उपर अति सोहितउए, छत्र त्रय सुविशाल।
तिण प्रभु त्रिभुवन राजियउए, न्याय धरम प्रतिपाल ॥२॥
बिहुँ पासे उज्वल विमल, गंग प्रवाह समान।
चामर वींजत[1] देवता ए, वपु वपु पुण्य प्रमाण ॥३॥
अष्टोत्तर सउ कर रुचिर, ऊंचउ वृक्ष अशोक।
नव पल्लव छाया बहुल, टालइ सुरनर शोक ॥४॥
मोह तिमिर भर संहरण, भामंडल प्रभु पूठि।
झब झब तेजकइ भ.ाकतउए, जिम रवि जलधर चूठि ॥५॥
जानु प्रमाणइ जिन तणइए, जल थल भासुर जाति।
कुसुम वृष्टि विरचंति सुर, पंच वरण बहु भांति ॥६॥
वीणा वेणु मृदंग वर, सुर दुंदुभि संवाद।
दिव्यनाद जिनवर तणउए, अमृत सम आस्वाद ॥७॥
गुहिर गंभीर मधुर गगने, वाजइ वाजित्र तूर।
तीर्थंकर पदवी तणउए, प्रकट्यौ पुण्य पडूर ॥८॥

॥ क ल श ॥

इम पास जिनेसर परमेसर सुखकंद।
आठ प्रतिहारज शोभित श्री जिनचंद ॥
सेवै सुरनर किंनर सकलचंद मुनि वृंद।
नित समयसुंदर सुख पूरउ परमाणंद ॥ ६ ॥

---

१ ढालइ

श्री पार्श्वजिन पंचकल्याणक लघु स्तवनम्

श्री पास जिणेसर सुख करणो, प्रणमीजइ सुरपति नत चरणो ।
नील कमल सामल वरणो, निज सेवक सवि संकट हरणो ।१।
चैत्र मास वदि चउथि दिनइ, प्राणत सुरलोक थकी चवि नइ ।
वामसेण नरपति भवनइ, अवतरियउ जिन चउदस सुपनइ ।२।
पोष मास वदि दसमी तणइ, दिन जायउ जिण सुपुण्य दिनइ ।
जय जयकार सुखइ पभणइ, सेवइ दिशि कुमरी हरखि घणइ ।३।
इग्यारस वदि पोष तणइ, तिहुयण जण नइ उपकार भणइ ।
पामी शुभ संयम रमणी, सेवउ भवियण जण जगत धणी ।४।
वदि चउथि जिन मधुमासइ, निरमल केवल थानइ भासइ ।
पाप पडल टाली पासइ, जिम सूर करी तम भर नासइ ।५।
सावण सुदि अट्ठमी दिवसइ, निज जन्म थकी सउ मइं वरसइ ।
पामी शिव रमणी हरसइ, जसु जस विस्तरियउ दिश विदशइ ।६।
मुझ आंगणि सुरतरु वेलि फली, चिन्तामणि करियल आवि मिली ।
जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रंग रली ।७।

कलश

इय पण कल्याणक नाम भणि श्री पास ।
संथुण्यउ जिनवर निरुपम महिम निवास ।।
जिणचंद पसायइ लाभइ लील विलास ।
मुनि[1] समयसुन्दर नी पूरउमन नी आस ।।८।।

---

१ गणि

श्री पार्श्वजिन (प्रतिमा स्थापन) स्तवन

श्री जिन प्रतिमा हो जिन सारखी कही, ए दीठां आणंद ।
समकित निगड़इ हो संका कीजतां, जिम अमृत विष बिंद । श्री.१।
आज नहीं कोई तीर्थंकर इहां, नहीं कोई अतिशय वंत ।
जिन प्रतिमा हो एक आधार छइ, आपै मुगति एकांत । श्री.२।
सूत्र सिद्धान्त हो तर्क व्याकरण भण्या, पण्डित कहइ पण लोक ।
जिन प्रतिमा नइ हो जे मानइ नहीं, तेहनउ सगलो ही फोक । श्री.३।
जिन प्रतिमा हो आगइ णमुत्थुणं कहइ, पूजा सतर प्रकार ।
फल पिण बोल्या हो हित सुख मोक्खना, द्रौपदी नइ अधिकार । श्री.४।
रायपसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीवाभिगम नइ मांझ ।
ए सूत्र मानइ हो प्रतिमा मानै नहीं, महारी मां नइ बांझ । श्री.५।
साधुनइ बोल्या हो भावस्तव भला, श्रावक नइ द्रव्य भाव ।
ए बिहुं करणी हो करतां निस्तरउ, जिन प्रतिमा सुप्रभाव । श्री.६।
पार्श्वनाथ हो तुझ प्रसाद थी, सदहणा मुझ एह ।
भव भव होजो हो समयसुन्दर कहइ, जिन प्रतिमा सुं नेह । श्री.७।

श्री पार्श्वजिन दृष्टान्तमय लघु स्तवन

हरस धरि हियड़इ मांहि अति घणउ,
तुह पसाय लही तुह गुण भणुं ।
जलधि पारइ प्रवहण उतरइ,
तिहां समीरण सहि सानिध करइ ॥१॥

अहपवत्ति करण करि हूँ चल्यउ,
कर्मग्रन्थि थकी पाछउ वल्यउ ।
मयण निम्मिय दंत करी घणा,
किम चवायइ लोह तणा चणा ॥२॥

प्रभु तुम्हारी सेव समाचारी,
सयल सज्जन नंइ शिव सुह करी ।
तिस्यउ स्वाति नक्षत्रे जलहरू,
वरसतउ सवि मुक्ताफल करउ ॥३॥

हरि हरादिक देव तणी घणी,
भगति कीधी मुक्ति गमन भणी ।
नवि फलइ जिम जल सिंचावियउ,
उखर खेत्रइ ओदन वावियउ ॥४॥

सुगुरु संगे समकित पामियउ,
पणि कुदेव भणी सिर नामियउ ।
जिस्यो दूध संघाति एलियउ,
अहव अमृत सु विष मेलियउ ॥५॥

प्रभु तुम्हारउ धर्म लही करी,
वलि गमाड़्यउ मद मच्छर करी ।
भुवन नायक सुह दायक सही,
रयण रांक तणइ छाजइ नहीं ॥६॥

प्रभु चतुर्गति भमि बहु दुह सही,
　　हुयउ निर्भय तुह सरणउ लही।
भमिय चिहु खूणइ विचि मइं गयउ,
　　जिसउ सोगठ प्रभु निर्भय थयरउ ॥७॥

हिव अमीमय दृष्टि निहालियइ,
　　जिम चिरंगत पाप पखालियइ।
दुरिय दोहग दुख निवारियइ,
　　भव पयोनिधि पार उतारियइ ॥८॥

इम थुणयउ प्रभु पास जिणेसरू,
　　भविय लोय पयोय दिनेसरू।
सफल वीनतड़ी हिव कीजियइ,
　　समयसुन्दरि शिव सुह दीजियइ ॥९॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य दृष्टान्तमयं लघुस्तवनं सम्पूर्णम्।

—:०:—

श्री जेसलमेर मण्डन महावीर जिन विज्ञप्ति स्तवन

वीर सुणउ मोरी वीनती, कर जोड़ी हो कहुं मननी वात।
बालक नी परि वीनवुं, मोरा सामी हो तुं त्रिभुवन तात। वी.१।

तुम दरिसण विन हुं भम्यउ, भव मांहि हो सामी समुद्र मभार।
दुख अनंता मइं सह्या, ते कहितां हो किम आवइ पार। वी.२।

पर उपगारी तूं प्रभु, दुख भंजइ हो जग दीन दयाल।
तिण तोरउ चरणे हुँ आवियउ,सामी मुझ नई हो निज नयण निहाल
अपराधी पिण ऊधरया, तंइ कीधी हो करुणा मोरा साम।
हूँ तो परम भक्त ताहरउ,तिण तारउ हो नवि ढील नउ काम। वी.४।
सूलपाणि प्रति बूझव्या, जिण कीधा हो तुझ नई उपसर्ग।
डंक दियउ चंड कोसियइ,तंइ दीधउ हो तसु आठमउ स्वर्ग। वी.५।
गोसालो गुण हीन थयउ, जिण बोल्या हो तोरा अवरण वाद।
ते बलतउ तइं राखियउ, शीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद। वी.६।
ए कुण छइ इंद्र जालियउ, इम कहितां हो आयउ तुम तीर।
ते गौतम नइं तंइ कियउ, पोतानी हो प्रभुता नउ वजीर। वी.५।
वचन उथाप्या ताहरा, जे झगड़यउ हो तुझ साथि जमाल।
तेहनइ पणि पनरह भवे, शिव गामी हो तइं कीधो कृपाल।वी.७।
अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल मांहे हो बांधी माटी नी पाल।
तिरती मूकी काछली, तंइ तारया हो तेहनइ तत्काल। वी.८।
मेघकुमर रिषी दूहव्यउ, चित चूक्यउ हो चारित थी अपार।
एकावतारी तेहनइ, तें कीधउ हो करुणा भंडार। वी.१०।
बारे बरस वेश्या घरइ, रह्यउ मूकी हो सयम नउ भार।
नंदिषेण पण ऊधरयउं, सुर पदवी हो दीधी अति सार। वी.११।
पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसिया वरस चौबीस।
ते पिण आर्द्रकुमार नइ,तइं तारयउ हो तोरी एह जगीश। वी.१२।

राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखि हो चित चूका जेह।
समवशरण साधु साधवी, तइं कीधा हो आराधक तेह। वी.१३।
व्रत नहीं नहीं आखड़ी, नहीं पोसौ हो नहीं आदरी दीख।
ते पिण श्रेणिक राय नइ, तइं कीधा हो स्वामी आप सरीख। वी.१४।
इम अनेक तइं ऊधर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात
सार करउ हिव माहरी,मन आणउ हो सामी माहरी वात। वी.१५
सूधउ संजम नवि पलइ, नहिं तेहवउ हो मुज दरसण नाण।
पण आधार छइ एतलउ, एक तोरउ हो धरुं निश्चल ध्यान। वी.१६।
मेह महीतल वरसतउ, नवि जोवइ हो सम विसमी ठाम।
गिरुया सहिजे गुण करइ,सामी सारउ हो मोरा वंछित काम। वी.१७
तुम नामइं सुख संपदा, तुम नामइं हो दुख जावइ दूर।
तुम नामइं वंछित फलइ, तुम नामइ हो मुझ आणंद पूर। वी.१८।

॥ कलश ॥

इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चउवीसमउ
शासनाधीश्वर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समउ
जिनचंद्र त्रिशला मात नंदन, सकलचंद कलानिलउ
वाचनाचारज समयसुंदर संथुण्यउ त्रिभुवन तिलउ ॥१९॥

श्री साचोर तीर्थ महावीर जिन स्तवनम्

धन्य दिवस मइं आज जुहारयउ, साचोरउ महावीर जी।
मूलनायक अति सुंदर मूरति, सोवन वरण सरीर जी ।ध.१।
जूनउ तीरथ जगि जाणीजइ, आगम ग्रंथइ साख जी
जिन प्रतिमा जिन सारखी जाणउ, भगवंत इण परि भाखजी ।ध.२।
सत्रुंजइ जिम श्री आदीसर, गिरनारे नेमिनाथ जी।
मुनिसुव्रत स्वामी जिम भरु अच्छइ, मुक्तिनउ मेलइ साथ जी ।ध.३।
मूलनायक जिम मथुरा नगरी, पार्श्वनाथ प्रसिद्ध जी।
तिम साचोर नगर मंइ सोहइ, श्री महावीर समृद्ध जी ।ध.४।
तीर्थंकर नउ दर्शन देख्यउ, श्रह उगमते सूर जी।
निज समकित निर्मल थावइ, मिथ्यात्व जावइ दूर जी ।ध.५।
आर्द्र कुमारे समकित पाम्यउ, जिनवर प्रतिमा देख जी।
चउद पूरवधर भद्रबाहु स्वामी, तेहना वचन विशेष जी ।ध.६।
सज्यंभव गणधर प्रतिबूझयउ, प्रतिमा कारण तेथ जी।
परभव मुक्ति ना सुख पामीजइ, हित सुख संपति एथ जी ।ध.७।
चित्र लिखित नारी देखी नइ, उपजइ चित्त विकार जी।
तिम जिन प्रतिमा देखी जागइ, भक्ति राग अति सार जी ।ध.८।
जिन प्रतिमा नइं जुहारवा जातां, पग थयउ मुझ सुपवित्र जी।
मस्तक पण प्रणमंतां माहरउ, सफल थयउ सुविचित्र जी ।ध.९।

नयन कृतारथ आज थया मुझ, मूरति देखतां आप जी।
जीभ पवित्र थई वली माहरी, थुणतां श्री जिनराय जी ।ध.१०।

आज श्रवण सफल थया माहरा, सुणतां जिन गुण ग्राम जी।
मन निर्मल थयउ ध्यान धरंता, अरिहंत नउ अभिराम जी ।ध.११।

श्री अरिहंत कृपा करउ सामी, मांगूं वेकर जोड़ि जी।
आवागमन निवार अतुल वल, भव संकट थी छोड़िजी ।ध.१२।

शासनाधीश्वर तूं मुझ साहिब, चउवीसमउ जिणचंद जी।
इकवीस सहस वरस सीम वरते, तीरथ तुम आणंद जी ।ध.१३।

॥ कलश ॥

इस नगर श्री साचोर मंडण, सिंह लंछण सुख करउ।
सकलाप सुरति सकल मूरति, मात त्रिशला उरधरउ।
संवत सोलह सही सत्योतरइ, मास माह मनोहरउ।
वीनव्यउ पाठक समय सुंदर, प्रकट तूं परमेसरउ ॥१४॥

श्री मोढुया ग्राम मण्डन वीरजिन गीतम्

राग—नट्ट नारायण

महावीर मेरउ ठाकुर। म०।
मोढुयइ ग्राम भली परइ भेट्यउ, तेज प्रताप प्रभाकर ।१। म०।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, निरखित हरखित नागर।
सिद्धारथ राय मात त्रिशला सुत, सिंह लांछन सुख सागर ।२। म०।

तारि तारि तीर्थंकर मोक्ष, पर उपगारी कृपा कर।
समयसुंदर कहइ तू मेरउ साहिब, हूँ तेरइ चरण कउ चाकर।३। म०।

श्री महावीर देव गीतम्

ढाल—१ भलउ रे थयउ म्हारइ पूज्य जी पधारया
२ भलु रे कीधु सामी नेम कुमार।

सामी सुंनइ तारउ भव पार उतारउ।
साहिब आवागमण निवारउ, महावीर जी सा० ॥१॥ आंकणी ॥
सामी तुम्हे त्रिभुवन जनना आधार।
सेवक नी करउ हिंव सार ॥ महा०॥२॥
सामी मोरइ एक तुम्हे अरिहंत देवा।
भवि भवि देज्यो पाय सेवा ॥ महा०॥३॥
श्री वर्धमान नमुं सिर नामी।
समयसुन्दर चा स्वामी ॥ महा०॥४॥

इति श्रीमहावीर देव गीत सम्पूर्णम् ॥ १७ ॥

—×—

श्री महावीर गीतम्

राग—श्रीराग

नाचति सुरिआभ सुर वीर कइ आगइ
कुमरिय कुमर अट्ठोतर सउ रचि,
भगति जगति प्रभु चरण लागइ ॥१ ना०॥

ताल रबाप मृदंग सब वाजित्र,
घ्रणण घ्रणण पाय घूघरी वागइ ॥
तत तत्त थेई थेईथेई पद ठावत,
भमरी भमत निज मन के रागइ ॥२ ना०॥
जिन के गुण गावत सुख पावत,
भविक लोक समकित जागइ ॥
समयसुन्दर कहइ धन सुरियाभ सुर,
नाटक कउ फल मुगति मागइ ॥३ ना०॥

—×÷×—

श्री महावीर गीतम्

हां हमारे वीर जी कुण रमणि एह ।
पूछति गौतम सामि जी, हमकुं एह सन्देह ।१। हां०।
पुलकित तनु मोही रही, आणंद अंगि न माय।
दूध पाहुउ झरि रही, सम्मुख ऊभी आय ।२। हां०।
चित्र लिखित पूतली, न कसइ मेष निमेष ।
ललित कमल लोयणी, देखि रही तुम एष ।३। हां०।
वदति वीर गोयमा, ए हमारी अम्म ।
ब्यासी दिवस उरि धरे, त्रिशला के घरि जम्म ।४। हां०।
देवाणंदा ब्राह्मणी, ब्राह्मण ऋषभदत्त ।
मात पिता मुगति गए, वीर के वचन रत्त ।५। हां०।

वीर के वचन सुणत ही, हरखे गौतम सामि ।
समयसुन्दर गुण भणइ, वीर तणे अभिराम ।६। हां० ।

इति श्री ऋषभदत्त देवाणदा गीतम् ॥ ४२ ॥
[लींबड़ी प्रति]

श्री महावीरजिन सुरियाभ नाटक गीतम्

नाटक सुर विरचति सुरियाभ ।
कुमर कुमरी भमरी देवत, वीर कइ आगइ ॥
तार्थेग थई थई थई तत थेई त थेइ थेई, शब्द भाव भेद उचरति ।
धृमिंक धृमिंक धीधी कटता दों मृदंग वागइ ।१। ना० ।
अद्भुत रचि सोल शृङ्गार उरि, मनोहर मोतिणहार ।
गीत गान कंठि मधुर आलापति चरणि लागइ ॥
इया इया इया सुर की शक्ति, समयसुन्दर प्रभु की भक्ति ।
स्वर ग्रामे तान मूर्च्छना, स्वर मंडल भान नट गुंड रागइ ।२। ना० ।

श्री श्रेणिक विज्ञप्ति गर्भितं श्री महावीर गीतम्

राग—कल्याण

कृपानाथ तइं कुणहू नृघर्यउ री । कृ० ।
श्रेणिक राय वदति महावीर कुं,
हमारी वेर क्युं अरज कर्यउ री ॥१॥ कृ० ॥
चण्ड कोसियउ श्रहि प्रतिबोध्यउ,
जो तुम्ह कुं उरि आइ लर्यो री ।

मेघकुमार नन्दिषेण मुनीसर,
आद्रकुमार संजम आदरयउ री ॥२॥ कृ० ॥
ऋषभदत्त खंधक परिव्राजक,
अइमुत्तउ ऋषि मुगतिवर्यउ री।
श्री शिवराज महाबल धन्नउ,
राय उदायन दुक्ख हर्यउ री ॥३॥ कृ० ॥
पदमनाभ तीर्थंकर हुउगे,
वीर कहइ तुम्ह काज सर्यउ री।
समयसुन्दर प्रभु तुम्हारी भगति तइ,
इहु संसार समुद्र तर्यउ री ॥४॥ कृ० ॥

श्री सुरियाभसुर नाटक दर्शन महावीर गीतम्

राग—सारंग

रचति वेष करि विशेष, नयण अंजण नीकि रेख,
नाचति तत तत थेइ थेइ, थोंगिगिं थोगिगिं सुन्दरी। र०।
कुमर कुमरी अति अनूप, इक शत अठ रचत रूप।
वाजति वाजित्र सरूप, घृणण घृणण घूघरी। र०।१।
थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि बजाय।
झँ झँ झंझरिय लाय, रणण रणण नेउरी।
सुरियाभ सुर करि प्रणाम, मांगति अब मुक्तिधाम।
समयसुन्दर सुजस नाम, जय जय जय सांमरी। र०।२।

श्री महावीर देव षट् कल्य णक गर्भित स्तवनम्

परम रमणीय गुण रयण गण सायरं,
    चरण चिंतामणी धरण जण सायरं ।
सयल संसयहरं सामियं सायरं,
    चरम तीर्थंकरं थुणिसु हु सायरं ॥ १ ॥
दसम सुरलोय थी चविय परमेसरी,
    मास आसाढ सिय छट्ठि गुण सुन्दरो ।
अवतरयउ उसभदत्तस्स रमणी तणइ,
    उयरि वरि सरुवरे हंस जिम सवि सुणइ ॥ २ ॥
तत्थ समयंमि सुरराय आसण चलइ,
    अवहि नाणेण तसु सव्व संसय टलइ ।
निरखए भरह खेत्तंमि तीर्थंकरो,
    अवतरयउ अज्ज माहण कुले जिणवरो ॥ ३ ॥
तयणु सुरराय आएस वसि लसी,
    संहरइ गब्भ हरिणेगमेसी वसी ।
मास आसू कसिण तेरसी निसभरे,
    अवतरयउ मात त्रिसला तणइ उरवरे ॥ ४ ॥
चैत्र सुदी तेरसी जिणवर जाइउ,
    राय सिद्धत्थ आणंद मनि पाइओ ।
छपन दिस कुंयरी मिलि आवि नृप मंदिरे,
    स्नान मज्जन करइ स्वामि ने बहुपरं ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अवहि नाणि जाणी जिण जम्म,
ततखिण करिवा निय निय कम्म ।
आवइं सुरपति मनि गह गही,
सुर नर लोकां अंतर नहीं ॥ ६ ॥
द्यइ ओसोवणि त्रिसला पासि,
जिण पड़िबिंब ठवी उलासि ।
लेई जायइं सुर गिर नइ शृंगि,
पांडु कंबला नइ उच्छंगि ॥ ७ ॥
आणी नव नव तीरथ तोय,
कनक कुँभ भरइ सवि कोय ।
तिम वलि दूध तणा भृंगार,
स्नान भणी सुर झालइ सार ॥ ८ ॥
कनक कुंभ सुर ढालइ जस्यइ,
हरि संसय ऊपनउ तस्यइ ।
अति लहुड़उ ए जिणवर वीर,
किम सहस्यइ कलसा ना नीर ॥ ६ ॥
प्रभु हरि संसय भंजन भणी,
पग अंगुली चांपइ निज तणी ।
थरहर कांपइ भूधर राय,
महावीर तिहां नाम कहाय ॥ १० ॥

स्नान करावी विधि नव नवी,
जणणी नइ पासइ प्रभु ठवी ।
सवि सुर जायइ निय नियठामी,
हरख घणउ हियड़इ मांहि पामि ॥ ११ ॥
धण कण कंचण करि अतिघणुं,
घर वाधइ सिद्धारथ तणुं ।
तिण कारण जिणवर नुं नाम,
वर्द्धमान आप्युं अभिराम ॥ १२ ॥
पालणड़इ पउढइ जिणराय,
हींडोलइ हरसइ निय माय ।
गावइ गीत सुरलियामणा,
जिणवर ना लीजइ भामणा ॥ १३ ॥
पगि घूघरड़ी घमका करइ,
ठमि ठमि आंगणि पगला भरइ ।
रूपइ जगत्र तणा मण हरइ,
पेखंतां पातिक परिहरइ ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥

जोवन वय जब जिणवर आयउ, नारि जसोदा तब परणायउ;
गायउ गुणह उदार ।
रूप अनोपम जिणवर सोहइ, भवियण लोक तणा मण मोहइ;
थो हइ जगि आधार ॥१५॥

बांधव नी प्रभु अनुमति लेई, दान दयाल संवच्छर देई;
हेई सयल सनेह ।
मगसिर वदि दसमी दिन सामि, चरण रमणि मनि रंगइ पामि;
चांमीकर सम देह ॥१६॥

॥ ढाल ॥

तिहां थी करिय विहार, पड़िबोही अहि;
चंड कोसिय जिणवरू ए ।
सामि सहइ उवसग्ग, निय सगतिं थकी;
धरणीधर धीरिम धरू ए ॥१७॥
शुभ जोगइ वयसाख, सुदि दशमी दिनइ;
मोह तिमिर भ नासतउ ए ।
पाम्यउ केवल नाण, भाग समोपम;
लोयालोय प्रकाशतउ ए ॥१८॥
समवशरण सुरकोड़ि, रचइ अनोपमा;
सामी वइसइ तसु परी ए ।
सुर नर तिरिय समक्खि, धइ जिण देसण;
सयल लोय संसय हरी ए ॥१९॥
संचारइ सुरसार, सरसिज सुन्दर;
पाय कमल तलि प्रभु तणइ ए ।
सुरवर नी इग कोड़ि, जघन्य तणइ लेखइ;
सेव करइ हरखइ घणउ ए ॥२०॥

जिणवर काती मास, वदिहि अमावसी;
सिव रमणी रंगइ वरी ए।
गयणंगण सुरसार, वजिय दुन्दुभी;
महियलि महिमा विस्तरी ए ॥२१॥

ते नर नारी धन्न, नाम जपइ नित;
सामि तणा वलि गुण कहइ ए।
पामइ परमाणंद, नव निधि नइ सिधि;
मन वंछित फल ते लहइ ए ॥२२॥

॥ कलश ॥

इय पट् कल्याणक नाम आणी, वर्द्धमान जिणेसरो।
संथुएयउ सामी सिद्धि गामी, पवर गुण रयणायरो ॥
जिणचंद पय अरविंद सुन्दर, सार सेवा महुयरो।
गणि सकलचंद सुसीस जंपइ, समयसुन्दर सुहकरो ॥२३॥

इति श्री महावीरदेवपट् कल्याणक गर्भित बृहत्स्तवनम्।

—०)०(०—

श्रीवीतरागस्तव-छन्दजातिमयम्

श्रीसर्वज्ञं जिनं स्तोष्ये, छंदसां जातिभिः स्फुटम्
यतो जिन्हा पवित्रा स्यात्, सुश्लोकोपि भवेद्भुवि ॥ १ ॥

श्रीभगवन्तं भक्त्या, सुरनिर्म्मितसमवशरणमध्यथम्।
देवा देव्यो मनुजा, आर्या मुनयश्च सेवन्ते ॥ २ ॥

कथं नौम्यऽहं तं जिनस्तोतुमीशाः।
मुभामा सोमराजीव युक्तानेसेन्द्राः (?) ॥ ३ ॥

प्रमुदित-हृदहं स्तुति-गुण-निकरे ।
मधुकर इव ते मधुमति कुसुमे ॥ ४ ॥

भ्रमति भ्राजमान सुतरां सर्व्व-लोके ।
तव कीर्त्ति-विशाला धवला हंस माला ॥ ५ ॥

दृष्टो मया-ऽर्चिहतो भाग्याद्भवं भ्रमता ।
श्रीवीतराग-जग-च्चूडामणि स्त्वमहो ॥ ६ ॥

शुक्लध्याने-श्रे णी वार्हन्, शुभ्रा दभ्रा प्रौढ़स्फुर्त्ते ।
त्वन्मूर्त्ते का वा पुष्पाणां, रेजे रम्या विद्युत्माला ॥ ७ ॥

भव्यजीवकृतभावुकं, पापवृत्तवनपावकम् ।
सामजित जनत जिन, भद्रिका भवति या भृशम् ॥ ८ ॥

नाश्रयिति त्वां सद्गुणवन्तं, वञ्चित एवासौ गुणवृन्दा।
या मधुकृत प्राणी भगवन्तं, चम्पकमालायामृतवन्तम्॥ ९ ॥

चोभं नो प्रापयति कदाचित्सान्ते स्त्वाश्तव गिरिधीर (?)।
स्वर्गस्य स्त्री मदमदनेनोत्मत्ता क्रीड़ा करण विदग्धा॥ १० ॥

लोकप्रदीपो किल (?) लोकः, पापावलीपंकपयोदनाथ ।
जीयाज्जगज्जन्तुहितप्रदाता, नमेन्द्रवंशामरणे प्रभो त्वं ॥ ११ ॥

रूप्य-सुवर्ण-सुरत्न मयोच्चैः, वप्र-सुमध्य-चतुर्मुख-मूर्त्तेः ।
त्वं जन राजसि मानव-तिर्यग्, दिवस-दोधकर-प्रतिबोधैः ॥ १२ ॥

मम चेतसि तीर्थकरोस्ति तमो, वद-हर्ष्यति बिम्ब-रुचि-रुदये ।
अघ-पातक दतरं दयाया (?) सहितोटकरः सुमतेः सुगतेः ।१३।

अहिकुलं गरुडा-गमने यथा, तव जिनेश्वरसंस्तवने तथा ।
अरिकिरिज्वलनानल संभवं, द्रुत विलंवित-मुग्र-भयं भवेत् ।१४।

भव-भय-कानन-भेद-कुठारं, रतिपद सुन्दर-रूप-मुदारम् ।
प्रणमत तीर्थकरं सुखकारं, चरण नभर (?) संतति-सारं ॥१५॥

देवत्वदीय शरणं समुपागतं मां, संसार-सागर-भयादथ रक्ष रक्ष ।
स्नात भवेषु बहुशः सुख-वृक्ष-लक्ष-वल्ली वसंततिलकात्मकुले कृपालो ॥ १६ ॥

त्रिभुवनहितकर्त्ता दुःखदावाग्निहर्त्ता,
विषम-विषय-गर्त्ता संपतत्प्राणिधर्ता ।
जिनवर जयताच्चां देहि मे मोक्षतत्त्वं,
कलि-गह ? न कृशानो मालिनीहारमानो ॥ १७ ॥

अशरण-शरण-मरण-भय-हरण ।
सुरपति-नरपति-शिवसुख-करण ॥
जय जिनवर भव-जल-निधि-तरण ।
गुणमणि-निकर-चरण-मय-धरण ॥ १८ ॥

तिमिर-निकर-ध्वंश-सूर्य भवोदधि-तारणम् ।
हित-सुखकर-भव्य-प्राणि-प्रजा-सुख-वारणम् ॥

तव सुवचन पीयूषामं करिष्यति नान्यथा ।
नरकगतितो नश्येत् प्राणी यथा हरिणी हरेः ॥ १६ ॥
दुःखोत्यादि परिथाति (?) सहने नोत्साहभाजो भृशं ।
सत्सांसारिक-सौख्य-लक्ष-विषये व्यासक्तिमच्चेतसः ॥
संसाराम्बुधि-मज्जदंगिनिकरोद्धारे समर्थस्तवंतः (?) ।
साहाय्यं मम देहि संयमविधौ शार्दूलविक्रीडितम् ॥२०॥

ब्रह्माणं केपि देवं पुनरपि गिरिशं केपि नारायणं च ।
केचिच्छक्तिस्वरूपं पुनरपि सुगतं केचि दल्लाभिधानम् ॥
मुग्धाध्यायंत्यहं सद्गुणमणिजलधिं वीतरागं स्मरामि ।
को वांछेत्काचमालां यदि मिलति माहकांचिनी स्रग्धरायां।२१।

एवं छंदो जातिभिरभिष्टुतो वीतराग-गुण-लेश ।
इति वदति समयसुन्दरं, इह-पर-जन्मेस्तु जिनधर्म्मः ।२२।

—:(०):—

श्री शाश्वत तीर्थंकर स्तवनम्

शाश्वता तीर्थंकर च्यार, समरंतां संपति सुखकार ।१। शा०
वांदू ऋषभानन वर्द्धमान, चन्द्रानन वारिषेण प्रधान ।२। शा०
स्वर्ग मर्त्य अनइ पाताल, त्रिभुवन प्रतिमा नमुँ त्रिकाल ।३। शा०
पांचसउ धनुष छइ देह प्रमाण, कंचन वरणी कायाजाण ।४। शा०
अनादि अनंत सहिज नाम ठाम, समयसुन्दर करइ नित परणाम ।५।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

प्रभु तेरो रूप बण्यौ अति नीको । प्र० ।
पञ्च वरण के पाट पटम्बर, पेच बण्यो कमयी को । प्र०।१।
मस्तक मुकुट काने दोय कुंडल, हार हियइ सिर टीको ।
समकित निर्मल होत सकल जन, देख दरस जिनजीको । प्र०।२।
समवशरण विच स्वामी विराजित, साहिब तीन दुनी को ।
समयसुन्दर कहइ ये प्रभु भेटे, जन्म सफल ताही को । प्र०।३।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

राग—पूरवी

सरण ग्रही प्रभु तारी, अब मंइ सरण० ।
मोह मिथ्यामत दूर करण कुं, प्रभु देख्यां उपगारी । अ. स. ।१।
मोह सङ्कट से बौत उबारया, अब की वेर हमारी । अ. स. ।२।
समयसुन्दर की यही अरज है, चरण कमल बलिहारी। अ.स. ।३।

श्री अरिहंत पद स्तवनम्

राग—भूपाल

हां हो एक तिल दिल में आवि तुं, करइ करम नउ नाश ।
अनन्त शक्ति छइ ताहरी, जिम वनहिं दहइ घास ।। ए० ।।१।।
हां हो नाम जपइ हियइ तुं, नहीं तउ सिद्धि न होय ।
साद कीजइ ऊँचइ स्वरे, पण धरइ नहीं कोय ।। ए० ।।२।।

हां हो एक तूं एक तूं दिल धरूँ, नाम पण जपूं मूंहि।
समयसुन्दर कहइ माहरइ, एक अरिहंत तूंहि ॥ ए० ॥३॥

श्री जिन प्रतिमा पूजा गीतम्

राग—केदारा

प्रतिमा पूजा भगवंति भाखी रे,
मकरउ संका गणधर साखी रे ॥ प्र० १ ॥
द्रुपदि न ऊठि नारद देखी रे,
जिन प्रतिमा पूज्यां हरखीरे ॥ प्र० २ ॥
प्रतिमा पूजी सुर सुरियाभइरे,
रायपसेणीइ अक्षर लाभइरे ॥ प्र० ३ ॥
आणंद श्रावक पूजा कीधी रे,
गणधर देवे साख ते दीधी रे ॥ प्र० ४ ॥
सोहम सामी भगवती अंगइरे,
अक्षर लिपि नइ प्रथमइ रंगइरे ॥ प्र० ५ ॥
भद्रबाहु स्वामी कल्प सिद्धान्तइरे,
द्रव्य थिवर वंदइ खंतइ रे ॥ प्र० ६ ॥
चमरेन्द्र चित्त मइं उपयोग आणयउरे,
अरिहंत चेइ शरणउ जाणयउ रे ॥ प्र० ७ ॥
प्रतिमा पूजा श्रावक करणी रे,
भवदुख हरणी पार उतरणी रे ॥ प्र० ८ ॥

समयसुंदर कहइ जोज्यो विचारी रे,
प्रतिमा पूजा छइ सुखकारी रे ॥ प्र० ६ ॥

श्री पंच परमेष्ठि गीतम्

राग—परभाती

जपउ पंच परमेट्ठि परभाति जापं,
हरइ दूरि शोक संताप पापं ॥ १ ज० ॥
अठसट्ठि अक्खर गुरु सत्तमानं,
सुख संपदा अष्ट नव पद निधानं ॥ २ ज० ॥
महामंत्र ए चउद पूरव निधारं,
भण्यउ भगवती सूत्र धुरि तत्त्व सारं ॥ ३ ज० ॥
जपइ लाख नवकार जे एक चित्तं,
लहइ ते तीर्थंकर पद पवित्तं ॥ ४ ज० ॥
कहुँ ए नवकार केतुं वखाण,
गमइ पाप संताप पांच सार प्रमाणं (?) ॥ ५ ज० ॥
सदा समरतां संपजइ सर्व कामं,
भणइ समयसुंदर भगवंत नामं ॥ ६ ज० ॥

श्री सामान्य जिन गीतम्

राग—गुंड मल्हार

हरखिला सुरनर किन्नर सुन्दर,
माइ रूप पेखि जिनजी कउ ।१। चालि० ।

जिणिंद गुण गनि मन मोह्यु, जि०
समयसुन्दर प्रभु ध्याने मन मोह्यु ।२।म०।

सामान्य जिन विज्ञप्ति गीतम्

राग—केदारउ

जगगुरु तारि परम दयाल ।
जन्म मरण जरादि दुख जल, भव समुद्र भयाल ।१। ज०।
हां हुँ दीन अत्राण अशरण, तूं हि त्रिभुवन भुवाल ।
स्वामि तेरइ शरणि आयउ, कृपा नयण निहालि ।२। ज०।
कृपानाथ अनाथ पीहर, भव भ्रमण भय टालि ।
समयसुन्दर कहति सेवक, सरणागत प्रतिपालि ।३। ज०।

श्री सामान्य जिन आंगी गीतम्

राग—मारुणी

नींकी प्रभु आंगी बणी जो, तांता हो हीयइ हरख न माय
मणि मोतिरा हीरे जड़ी, तेजइ हो आंगी झगमगि था

श्री तीर्थंकर समवशरण गीतम्

विहरंता जिनराय, आव्या त्रिभुवन ताय ।
मिलिया चतुर्विध देवा, प्रभु नी भगति करेवा ॥ १ ॥
विरचइ समवसरणा, भव भय दुख हरणा ।
त्रिगढउ विविध प्रकार, रूप सोवन वसुसार ॥ २ ॥
च्यार धरम चक्र दीपइ, गगन मंडलि रवि जीपइ
अद्भुत वृक्ष अशोक, निरखइ भवियण लोक ॥ ३ ॥
छत्र त्रय सिरि छाजइ, विहुँ दिसि चामर राजइ ।
देव दुंदुमी प्रभु वाजइ, नादइ अंबर गाजइ ॥ ४ ॥
जानु प्रमाण पुष्प वृष्टि, विरचइ समकित दृष्टि ।
ऊंची इन्द्रधज लहकइ, प्रभु जस परिमल महकइ ॥ ५ ॥
सिंहासनि प्रभु सोहइ, त्रिभुवन ना मन मोहइ ।
भामंडल प्रभु भासइ, चिहुँ मुखि धर्म प्रकासइ ॥ ६ ॥
बइठी परषद बार, सांभलइ धरम विचार ।
निज भव सफल करंति, हियइ हरख धरंति ॥ ७ ॥
धन ते श्रावक जाण, तेहनुं जीव्युं प्रमाण ।
समवसरण जे मंडावइ, पुण्य भंडार भरावइ ॥ ८ ॥
एहवुं जिनवर रूप, सुंदर अतिहि सरूप ।
जोवंतां दुख जायइ, आणंद अंगि न माय ॥ ९ ॥
चिंता आरति चूरः, श्री संघ वांछित पूरइ ।
जिनवर जगत्र आधार, समयसुन्दर सुखकार ॥१०॥

चत्तारि-अट्ठ-दस-दोयपदविचारगर्भितस्तवनम्

जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमंचिय निय अंग ।
नाना विधि करि वरणवुं, आणी मनि उछरंग ॥ १ ॥
चार अट्ठ दस दोय जिन, वर्त्तमान चउवीस ।
अष्टापद प्रतिमा नमूं, पूरूँ मनह जगीस ॥ २ ॥
च्यार करीजइ अष्ट गुण, दस वलि दुगुणा हुंति ।
नंदीसर बावन भुवन, सुरवर खयर नमंति ॥ ३ ॥
चत्त-अरि चत्तारि तिके, अट्ठ अनइ दस दोय ।
विहरमान जिन वीस इम, समरंतां सुख होय ॥ ४ ॥
अरि गंजण चत्तारि तिम, दस गुण कीजइ अष्ट ।
ते वलि दुगुणा सट्ठि सम, वन्दूं विजय विशिष्ट ॥ ५ ॥
चार अनइ अठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार ।
विसय चालीस नमूं सयल, भरहैरवय मझार ॥ ६ ॥
चार अनुत्तर गेविज, कप्पिय जोइस जाणि ।
अठ वलि व्यंतर प्रतिमा, दस भुवणेसर ठाणि ॥ ७ ॥
दो सासय पड़िमा, महियलि जिन चौवीस ।
त्रिभुवन मांहि प्रशंसिय, नाम जपूं निशदीस ॥ ८ ॥
अठ अनइ दस दोय मिलिय, हुन्ति अठारह तेह ।
चार गुणा बहुतरि सयल, त्रण चउवीसी एह ॥ ९ ॥

चउ चउगुणिये सोलहुय, अठ अठ गुणि चउसट्ठि।
दस दस गुणिया एकसउ, अट्ठिसयं परमट्ठि ॥१०॥
दो उक्किट्ठ जहन्न पय, सचरि सय दस दिट्ठ।
पायकमल सवि प्रणमतां, दुख दोहग सवि नट्ठ ॥११॥
पूर्व विधि सहु एक सय, दुगुणा तिण सयसट्ठि।
पंच भरत जिन प्रणमियइ, त्रिण चउवीसि इगट्ठ ॥१२॥
चार गुणा दस अंक किय,अठ सय चालीस आणि।
पंच विदेहे खय दुग, तिण्हु काल जिन जाणि ॥१३॥
चार नाम जिन सासताए,अठ चउ अरय दु वंदि।
दस ठवणारिय नरय सुर, गइ आगय दुय भेदि ॥१४॥
चउ अठ दस बावीस इम, वंश इक्खाग जिणंद।
जग गुरु जग उद्योत कर, दो हरि वंश दिणंद ॥१५॥
अष्टापद गिरनार गिरे, पावा चंप चत्तारि।
अठ दस दोय समेत शिखर सिद्ध नमूं सुखकार ॥१६॥

॥ कलश ॥

इम थुण्या अरिहंत शास्त्र सम्मत, करिय तेरइ प्रकार ए।
चत्तारि अठ दस दोय वंदिय, पद तणइ विस्तार ए।
जिनचंद वंदन सकलचंदन, परम आणंद पाम ए।
कर जोड़ि वाचक समयसुंदर, करइ नित परणाम ए ॥१७॥

इति श्रीचत्तारिअट्ठदसदोयवंदिया—इति पदविचारगर्भित
सर्वतीर्थंकरवृहत्स्तवनम्
॥ श्रीजेसलमेरसंघसमभ्यर्थनया कृत सपूर्णम् ॥

---

१७ प्रकार जीव अल्प बहुत्व गर्भित स्तवनम्

अरिहंत केवल ज्ञान अनन्त, भव दुख भंजण श्री भगवंत ।
प्रणमुं बेकर जोड़ी पाय, जनम जनम ना पातक जाय ॥ १ ॥
मेरु मध्य आकाश प्रदेश, गोस्तनाकार रुचक समदेश ।
तिहां थी चारे दिशि नीसरी, शकट ऊधि सरिखी विसतरी ॥ २ ॥
सूक्ष्म जीव पांचा ना भेद, ते चिहुँ दिशि सरिखा ध्रुवेद ।
अल्प बहुत्व कहुं बादर तणा, किण दिशि थोड़ा किण दिश घणा ।३।
जिहां बहु पाणी तिहां जीव बहु, वनस्पति विगलादिक सहु ।
कृष्ण पक्षि बहु दक्षिण दिशे, एहवुं तीर्थंकर उपदिशे ॥ ४ ॥

ढाल दूसरी—आव्यउ तिहां नरहर एहनी.

सामान्य पखे पश्चिम दिशि थोड़ा जीव, ।
पूर्व दिशि अधिका तिहां, नहीं गौतम दीव ॥
दक्षिण अधिका नहीं, शशि रवि गौतमकोइ ।
उत्तर दिशि अधिका, मान सरोवर होई ॥ ५ ॥
मान सरोवर तिहां छइ मोटउ, तिण तिहां अधिकउ पाणी ।
जिहां पाणी तिहां वनस्पति, वह विगल सख्यादिक जाणी ॥

संख कलेवर कीटी वहुली, कमले भमर भमंत।
जलचर जीव मच्छ पिण बहुला, अरिहंत इम कहंत॥ ६ ॥
दक्षिण नै उत्तर थोड़ा माणस सिद्ध।
तेउ पिण थोड़ा, केवल निश्चय किद्ध॥
पूरव दिशि अधिका, मोटो महाविदेह।
पश्चिम दिशि अधिका, अधो ग्राम छै एह॥ ७॥
अधोग्राम अधिका तिण त्रिण्हे, अधिका जीव कहीजै
सिद्ध आकाश प्रदेशै सीझै, तिण प्रदेश रहीजै॥
सिद्ध शिला उपरि जोयण नै, चौवीसमंइ ते भागे।
सिद्ध रहइ तिण ठाम अनंता, अलोक छइ ते आगै ॥ ८ ॥
वाउ काय तिणो हिवइ, अल्प बहुत्व कहिवाय।
जिहां घन तिहां थोड़ो सुखिर तिहां बहु वाय॥
पूरव थोड़ो वाय नहीं पोलाड़ि प्रदेश।
पश्चिम दिशि अधिकउ, अधो ग्राम सुविशेष॥ ६ ॥
अधोग्राम सुविशेषइ, अधिकउ तेहथी उत्तर जाण।
नारक भवन तणा आवास तिहां छइ बहु परिणाम॥
तिहां थी दक्षिण दिशि ते अधिका निण बहु वायु कहीजे।
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, अनुक्रम अधिक लहीजै॥१०॥
हिव अल्प बहुत्व कहुँ नारक जीव नउ एह।
पूरव पश्चिम उत्तर दिशि सरिखउ तेह॥

दक्षिण दिशि अधिका, असंख्यात गुण एह।
तिहां पुष्फावकीरण, नारकि ना बहु गेह ॥११॥
नारकी ना बहु गेह तिहां छइ, असंख्यात गुण पहुला।
दक्षिण दिशि भगवन्तइ भाख्या, कृष्ण पक्षी पिण बहुला ॥
कुण जाणे ए जीव घणा किहां, थोड़ा पणि किण ठामइ।
वीतराग ना वचन तहत्ति करि, मानीजइ हित कामइ ॥१२॥

ढाल ३ वेकर जोड़ी ताम—एहनी

पृथ्वीकाय ना जीव दक्षिण दिशि,
थोड़ा नरकावास भवन घणा ए।
भवन नइ नरकावास ते थोड़ा तिणइ,
अधिका उत्तर दिशि तणाए ॥१३॥
लवण मंइ शशि रवि द्वीप तिण पूरब दिशि,
पृथ्वी जीव अधिक कह्या ए।
अधिकउ गोतम द्वीप पश्चिम दिशि कह्यउ,
तिण अधिका जीव सद्दह्या ए ॥१४॥
पूरब पश्चिम जाण भुवन पति देव थोड़ा,
भवन थोड़ा तिहां ए।
उत्तर अधिक असंख दक्षिण ते थकी,
बहु बहु भवन अछइ इहांए ॥१५॥
पूरब नहीं पोलाड़ि थोड़ा व्यंतर अधिक,
अधोग्राम परिचमइ ए।

ऊत्तर दक्षिण एम अधिक अधिक कह्या,
नगर अधिक छइ अनुक्रमइ ए ॥१६॥

पूरब पश्चिम सम वेउ ज्योतिषी,
देवता थोड़ा ते दीपइ रहइ ए ।
दक्षिण अधिक विमान कृष्ण पक्षी बहु,
अधिक तिण अरिहंत कहइ ए ॥१७॥

उत्तर अधिक विशेष मान सरोवर,
क्रीड़ा करण आवइ इहां ए ।
देखी मच्छ विमान जाति स्मरण,
नियाणउ करि हुइ तिहां ए ॥१८॥

प्रथम चार देवलोक ते थोड़ा कह्या,
पूर्व पच्छिम सरखा महु ए ।
उत्तर अधिक विमान पुष्पावकीरण,
दक्षिण कृष्ण पक्षी बहु ए ॥१६॥

पांचमा थी आठ सीम थोड़ा तिहुँ दिशे,
तिहां विमान सरिखा कह्या ए ।
दक्षिण अधिका देव कृष्ण पक्षी बहु,
समकित धारी सद्दह्या ए ॥२०॥

ऊपरलै देवलोक* सर्वार्थ सिद्ध सीम,
चिहुँ दिशि सरखा देवता ए ।

उपजइ एथ मनुष्य तप संयम करी,
सुख भोग वै भ्रम वेवता ए ॥२१॥

॥ कलश ॥

इम अल्प बहुत्व विचार चिहुँ दिशि,
सतर भेद जीवां तणउ।
श्री पन्नवणा सूत्र पदे तीजे,
तिहां विस्तार छइ घणउ॥
मंइ तुम्ह वचने स्तवन कीधो,
समयसुंदर इम भणइ।
मुझ कृपा करि वीतराग देव तुं,
जिम देखूं परतिख पणइ॥२२॥

—

गति आगति २४ दण्डक विचार स्तवनम्

श्री महावीर नमूं कर जोड़ि, दण्डक मांहिं फेरा छोड़ि।
चउवीसी दण्डक ना ए नाम, गति आगति करवाना ए ठाम॥१॥
नारिक साते दंडक एक, असुरादिक ना दस प्रत्येक।
पृथ्वी पाणी अग्नि नइ वायु, वनसपति वलि पांचमी काय॥२॥
ति चउरिन्द्री गर्भज वली, नर तिर्यंच कह्या केवली।
भवण जोतिष वैमानिक देव, चउवीस दंडक ए नित मेव॥३॥

नारक मरि नइ तिर्यंच थाइ, नरक गति नर तिर्यंच जाइ ।
असुरादिक दसनी गति एह, भू पाणी प्रत्येक वनस्पति जेह ॥४॥
तिर्यंच मनुष्य मंइ उत्पत्ति जोइ, आगति मनुष्य तिर्यंच नी होई ।
भूजल अग्नि पवन वण पंच, त्रिति चउरिन्द्री नर तिरजंच ॥५॥
ए दश पृथ्वी ना गति ना दीश, आगति नारकि विण ते वीस ।
जिम पृथ्वी तिम पाणी तणी, गति आगति बोले जग धणी ॥६॥
नर विण अग्नि नी गति नवपदे, आगति दस विघटै नवि कदे ।
जिम अग्नि तिम जाणउ वायु, गति आगति बेहुँ कहिवाय ॥७॥
पृथ्वी प्रमुख दसे दंड के, वनस्पति नी गति छड् तिके ।
आगति नारक विण तेवीस, दंडक बोल्या श्री जगदीश ॥८॥
बे ते चउरिन्द्री दंडक त्रिहुं, गति आगति दस बोलनी कहुँ ।
गति आगति गर्भज तिर्यंच, चउवीस दंडक सगले संच ॥९॥
गर्भज मनुष्य चउवीस नइ सिद्धि, अगनि वाय आगति प्रतिषिद्धि ।
वण ज्योतिषं वैमानिक तणी, गति गर्भज नर तिर्यंच भणी ।१०।
वली भूदग वण प्रत्येक सही, आवै नर नइ तिर्यंच वही ।
जीव तणी गति आगति कही, भगवंत भाखै संदेह नहीं ।११।
चौवीस दंडक नगर मझार, हूँ भम्यउ देव अनंती वार ।
दुख सहिया त्यां अनेक प्रकार, ते कहितां किम आवै पार ।१२।
वीनति करूं ए वारंवार, स्वामी आवागमण निवार ।
भगवती सूत्र तणइ अनुसार, समयसुन्दर कहै एह विचार ।१३।

श्री घंघाणी तीर्थ स्तवनम्

ढाल १—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो—

पाय प्रणमूं रे पद पंकज प्रभु पासना,
गुण गाइस रे मुझ मन सूधी आसना ।
घंघाणी रे प्रतिमा प्रगट थई घणी,
तसु उत्पत्ति रे सुणजो भविक सुहामणी ॥
सुहामणी ए वात सुणजो, कुमति शंका भांजस्यै ।
निर्मलो थास्यै शुद्ध समकित, श्री जिन शासन गाजस्यै ॥
भ्रम देश मण्डोवर महा, बल सूर राजा सोहए ।
तिहां गाम एक अनेक थानक, घंघाणी मन मोहए ॥१॥

दूधेला रे नाम तलाव छै जेहरउ,
तसु पूठइ रे खोखर नामइ देहरउ ।
तसु पाछै रे खिणंता प्रगट्यउ भुंहरौ,
परियागत रे जाण निधान प्रगट्यो खरउ ॥
प्रगट्यउ खरउ भूंहरउ, तिण मांहि प्रतिमा अति भली ।
जेठ सुदी इग्यारस सोल बासठ, बिंब प्रगट्यउ मन रली ॥
केतली प्रतिमा केहनी वलि, किण भराव्यउ भावसुँ ।
ए कउण नगरी किण प्रतिष्ठी, ते कहुँ प्रस्ताव सुँ ॥२॥

ते सगली रे पैंसठ प्रतिमा जाणियइ,
जिन शिवनी रे सगली विगत वखाणियइ ।

मूलनायक रे श्री पद्म प्रभू पासजी,
इक चौमुख रे चौवीसटउ सुविलास जी ॥
सुविलास प्रतिमा पास केरी, बीजी पणी ते वीस ए।
ते मांहि काउसग्गिया विहुं दिशि, बेउ सुन्दर दीसए ॥
वीतरागनी चउवीस प्रतिमा, वली बीजी सुन्दरु ।
सगली मिली नै जैन प्रतिमा, सैंतालीस मनोहरु ॥३॥
इन्द्र ब्रह्मा रे ईसर रूप चक्रेश्वरी,
इक अंबिका रे कालिका अर्द्ध नाटेश्वरी ।
विन्यायक रे जोगणी शासनदेवता,
पासे रहइ रे श्री जिनवर पाय सेवता ॥
सेविता प्रतिमा जिण भरावी, पांच पृथ्वी पाल ए।
चन्द्रगुप्त संप्रति बिन्दुसार, अशोकचन्द्र कुणाल ए ॥
कंसाल जोड़ी धूप धाणी, दीप संख भृंगार ए।
त्रिसठिया मोटा तदा काल ना, एह परिकर सार ए ॥४॥

ढाल—दूसरी

मूलनायक प्रतिमा भली, परिकर अभिराम ।
सुन्दर रूप सुहामणउ, श्री पद्म प्रभु स्वाम ॥१॥
श्री पदम प्रभु सेवियइ, पातक दूरी पुलावइ ।
नयणे मूरति निरखतां, समकित निर्मल थावइ ॥२॥
आर्य सुहस्ती सूरीश्वरू, आगम सुत विवहार ।
भोजन रंक भणी दियउ, लीधउ संयम भार ॥३॥

उजैनी नगरी धनी, ते थयउ संप्रति राय।
जातिस्मरण जाणियउ, ए रिद्धि पुण्य पसाय ॥४॥
पुण्य उदय प्रगट्यउ घणउ, साध्या भरत त्रिखण्ड।
जिण पृथ्वी जिन मंदिरे, मण्डित कीधी अखण्ड ॥५॥
वलि तिण गुरु प्रतिबोधियो, थयउ श्रावक सुविचार।
मुनिवर रूप करावियउ, अनार्य देश विहार ॥६॥
वेसै तिड़ोत्तर वीर थी, संवत प्रबल पड़ूर।
पद्म प्रभु प्रतिष्ठिया, आर्य सुहस्ती सूरि ॥७॥
माह तणी सुदि आठमी, शुभ मुहूरत विचार।
ए लिपि प्रतिमा पूठे लिखी, ते वांची सुविचार ॥८॥

ढाल—तीजी

मूलनायक प्रतिमा वली, सकल सुकोमल देहो जी।
प्रतिमा श्वेत सोना तणी, मोटो अचरज एहो जी ॥१॥
अर्जुन पास जुहारियइ, अर्जुन पुरि सिणगारो जी।
तीर्थंकर तेवीसमउ, मुक्ति तणउ दातारो जी ॥२॥ अ० ॥
चन्द्रगुप्त राजा थयउ, चाणिक्यइ दीधउ राजो जी।
तिण ए बिंब भरावियउ, सार्या उत्तम काजो जी ॥३॥ अ० ॥
महावीर संवत थकी वरस, सतर सउ वीतो जी।
तिण समै चवद पूरव धरू, श्रुत केवलि सुविदीतो जी ॥४॥ अ०॥
भद्रबाहु सामी थया, तिण कीधी प्रतिष्ठो जी।
आज सफल दिन माहरउ, ते प्रतिमा मंइ दीठो जी ॥५॥ अ०॥

श्री ज्ञान पंचमी वृहत्स्तवनम्

ढाल १—गौड़ी मढण पास एहनी

प्रणमूं श्री गुरु पाय, निरमल न्यान उपाय।
पांचमि तप भणुं ए, जनम सफल गणुं ए ॥ १ ॥
चउवीसमउ जिण चंद, केवल न्यान दिणंद।
त्रिगढइ गह गहइ ए, भवियण नइ कहइ ए ॥ २ ॥
न्यान वड़उ संसार, न्यान मुगति दातार।
न्यान दीवउ कह्यउ ए, साचउ सरदह्यो ए ॥ ३ ॥
न्यान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकास।
न्यान विना पशु ए, नर जाणइ किसुं ए ॥ ४ ॥
अधिक आराधक जाणि, भगवती सूत्र प्रमाण।
ज्ञानी सर्व तइ ए, किरिया देस तइ ए ॥ ५ ॥
न्यानी सासो सास, करम करइ जे नास।
नारकि नइ सही ए, कोड़ि वरस कही ए ॥ ६ ॥
न्यान तणउ अधिकार, बोल्यउ सूत्र मझार।
किरिया छइ सही ए, पणि पछइ कही ए ॥ ७ ॥
किरिया सहित जउ न्यान, हुयइ तउ अति प्रधान।
सोनउ नइ सुरहउ ए, सांख दूधइ भरयउ ए ॥ ८ ॥
महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार।
भगवंत भाखिया ए, गणधर साखिया ए ॥ ९ ॥

ढाल २— फाजहरा नी, वे बाधव वदण चल्या, एहनी

पांचमि तप विधि सांभलउ, पामउ जिम भव पारो रे ।
श्री अरिहंत इम उपदिसइ, भवियण नइ हित कारो रे । पां.।१०
मगशिर माह फागुण भला, जेठ आसाढ वइसाखो रे ।
इण षट मासे लीजियइ, सुभ दिन सद गुरु साखो रे । पा.।११।
देव जुहारी देहरइ, गीतारथ गुरु वादी रे ।
पोथी पूजइ न्यान नी, सकति हुवइ तउ नादी रे । पा.।१२।
बे कर जोड़ी भाव सुं, गुरु मुखि करइ उपवासो रे ।
पांचमि पडिकमणुं करइ, पढइ पंडित गुरु पासो रे । पा.।१३।
जिणि दिन पांचमि तप करइ, तिण दिन आरंभ टालइ रे ।
पांचमि तवन थुइ कहइ, ब्रह्मचरिज पणि पालइ रे । पां ।१४।
पांच मास लघु पंचमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे ।
पांच वरस पांच मास नी, पांचमी करइ सुभ दृष्टी रे । पां.।१५।

ढाल ३—पाय परामी रे जिणवर नइ सुपसाउलइ एहनी

हिव भवियण रे पांचमि उजमणउ सुणउ,
घर सारू रे वारु धन खरचउ घणउ ।
ए अवसर रे आवंता वली दोहिलउ,
पुण्य योगइ रे धन पामंता सोहिलउ ॥
सोहिलउ धन वलि पामतां, पणि धरम काज किहां वली ।
पंचमी दिन गुरु पासि आवि, कीजियइ काउसग रली ॥

त्रिण ज्ञान दरसण चरण टीकी, देई पुस्तक पूजियइ।
थापना पहिली पूजि केसर, सुगुरु सेवा कीजियइ ॥१६॥
सिद्धांत नी रे पांच परति वीटांगणा,
पांच पूठा रे मुखमल सूत्र प्रमुख तणा।
पांच दोरा रे लेखणि पांच मसीजणा,
वास कूँपी रे कांबी वारू वरतणा॥
वरतणा वारू वलिय कमली, पांच झलमलि अति भली।
थापनाचारिज पांच ठवणी, मुंहपती पुड़ पाटली॥
पट सूत्र पाटी पांच कोथलि, पांच नउकरवालि ए।
इण परि श्रावक करइ पांचमि, उजमणु उजुयालिए॥१७॥
वलि देहरइ रे स्नात्र महोछव कीजियइ,
वित सारू रे दान वलि तिहाँ दीजियइ।
प्रतिमा नइ रे आगलि ढोणउ ढोइयइ,
पूजा नां रे जे जे उपग्रण जोइयइ॥
जोइयइ उपग्रण देव पूजा, काजि कलस भिंगार ए।
आरती मंगल थाल दीवउ, धूप धाणउ सार ए॥
घनसार केसर अगर सूकड़ि, अंगलूहण दीस ए।
पांच पांच सगलो वस्तु ढोवइ, सगति सहु पंचवीस ए॥१८॥
पांचमिता रे साहमी सवि जीमाड़ियइ,
राती जागइ रे गीत रसाल गवाड़ियइ।

इण करणी रे करतां न्यान आराधियइ,
न्यान दरसण रे उत्तम मारग साधियइ ॥
साधियइ मारग एणि करणी, न्यान लहियइ निरमलउ ।
सुरलोक नइ नर लोक मांहइ, न्यानवंत ते आगलउ ॥
अनुक्रमइ केवल न्यान पामी, सासतां सुख ते लहइ ।
जे करइ पांचमि तप अखंडित, वीर जिणवर इम कहइ ॥१६॥

॥ कलश ॥

गउड़ी राग--

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ।
मइं थुण्यउ श्री भगवंत अरिहंत अतुलबल अलवेसरो ॥
जयवंत श्री जिण चंद सूरज, सकलचंद नमंसिउ ।
वाचनाचारिज समय सुन्दर, भगति भाव प्रसंसिउ ॥२०॥

इति श्री ज्ञानपंचमीतपोविचारगर्भित श्रीमहावीरदेववृहत्स्तवनं
सम्पूर्णं कृत लिखित च संवत १६६६ वर्षे ज्येष्टे ज्ञानपंचम्यां ॥

ज्ञान पंचमी लघु स्तवनम्

पांचमि तप तुमे करो रे प्राणी, निरमल पामो ज्ञान रे ।
पहिलं ज्ञान नइ पाछइ किरिया नहिं कोई ज्ञान समान रे ।पां० १।

नंदी सूत्र मइं ज्ञान वखाणयउ, ज्ञान ना पांच प्रकार रे।
मति श्रुति अवधि अनइ मन पर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे।पां० २
मति अठावीस श्रुति चउदे वीस, अवधि छइ असंख्य प्रकार रे
दोय भेद मन पर्यव दाख्यउं, केवल एक प्रकार रे।पां० ३
चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेह्न तेज आकास रे।
केवल ज्ञान समउ नहीं कोई, लोकालोक प्रकास रे।पां० ४
पारसनाथ प्रसाद करी नइ, माहरी पूरउ उमेद रे।
समयसुंदर कहइ हूँ पण पामूं, ज्ञान नो पांचमउ भेद रे।पां० ५

मौन एकादशी स्तवनम्

समवसरण बइठा भगवंत, धरम प्रकासइ श्री अरिहंत।
बारे परषदा बइठी जुड़ी, मगसिर सुदि इग्यारस बड़ी॥ १।
मल्लिनाथ ना तीन कल्याण, जनम दीक्षा नइ केवल ज्ञान।
अर दीक्षा लीधी रूअड़ी, मिगसर सुदि इग्यारस बड़ी॥ २।
नमि नइ उपनूं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान।
ए तिथिनी महिमा एवड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी॥ ३।
पांच भरत ऐरवत इम हीज, पांच कल्याणक हुवे तिम हीज।
पंचास नी संख्या परगड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी॥ ४।
अतीत अनागत गिणतां एम, दोढ सै कल्याणक थाये तेम।
कुण तिथि छइ ए तिथि जेवड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी॥ ५।

अनंत चौवीसी इण परि गिणो,लाभ अनंत उपवासां तणउ ।
ए तिथि सहु तिथि सिर राखड़ी,मिगसर सुदी ग्यारस वड़ी ॥ ६ ॥
मौन पणइ रह्या श्री मल्लिनाथ,एक दिवस संजम व्रत साथ ।
मौन तणी परिव्रत इम पड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ७ ॥
अठ पुहरी पोसउ लीजियइ, चउविहार विधि सुँ कीजियइ ।
पण परमाद न कीजइ घड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ८ ॥
वरस इग्यार कीजइ उपवास,जाव जीव पणि अधिक उलास ।
ए तिथि मोक्ष तणी पावड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ६ ॥
उजमणूं कीजइ श्रीकार, ज्ञान ना उपगरण इग्यार इग्यार ।
करो काउसग्ग गुरू पाये पड़ी,मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥१०॥
देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजइ मन रली ।
मुगति पुरी कीजइ ढूकड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥११॥
मौन इग्यारस म्होटो पर्व, आराध्यां सुख लहियइ सर्व ।
व्रत पचखाण करो आखड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥१२॥
जेसल सोल इक्यासी समइ, कीधूं भक्त सहू मन गमइ ।
समयसुन्दर कहइ करउ घ्याइड़ी,मिगसर सुदि इग्यारस वड़ी॥१३॥

सामायक पोसह पडिकमणा, धर्म विशेष कराए ।
साहमी भोजन भगति महोच्छव, दिन दिन होत सवाए । प०।२।
गीतारथ गुरु गुहिर गंभीर सरि, कल्प सिद्धांत सुणाए ।
नर भव सफल किए नर-नारी, समयसुन्दर गुण गाए। प०।३।

श्री रोहिणी-तप स्तवनम्

रोहिणी तप भवि आदरो रे लाल,
भव भमतां विश्राम हितकारी रे ।
तप विण किम निज आतमा रे लाल,
शुद्ध न थाय मन काम हितकारी रे। रो०।१।
दुरगंधा भव आदर्‌यो रे लाल,
जपियो वलि नवकार हितकारी रे।
तिहां थी रोहिणी ऊपनी रे लाल,
मघवा कुल जयकार हितकारी रे। रो०।२।
चित्रसेन मन भावती रे लाल,
सुख गमता निसदीस हितकारी रे।
वासपूज्य जिन बारमउ रे लाल,
समवसर्‌या जगदीस हितकारी रे। रो०।३।
चित्रसेन वलि रोहिणी रे लाल,
आठ पुत्र सुखकार हितकारी रे।
दीक्षा जिन हाथ सुं लइ रे लाल,
संयम सूं चितधार हितकारी रे। रो०।४।

करम खपाय मुगते गया रे लाल,
धन धन रोहिणी नार हितकारी रे।
समयसुन्दर प्रभु वीनवे रे लाल,
तप थी शिव सुखसार हितकारी रे। रो०।५।

उपधान (गुरु वाणी) गीतम्

वाणि करावउ गुरु जी वाणि करावउ,
पूज जी अम्हे आया तुम्ह पासि। म्हारा।१।
कपूर कस्तूरी परिमल जास,
सखर सुगंध आए घउ वास। म्हारा।२।
आपणइ मुखि मुझ वाचना देयउ,
नान तणउ लाभ लेयउ। म्हारा।३।
गुरु पग पूजूं ज्ञान लिखावुं,
गीत मधुर सरि गाऊं। म्हारा।४।
बिहुं वीसड़ नी बे बे वाणि,
छकड़ चउकड़ नी एक जाणि। म्हारा।५।
पांत्रीसड़े अठावीसड़ निहुं तप केरी,
त्रिण नवाणि करउ मेरी। म्हारा।६।
श्रीपूज्य जी नइ वांदू कर जोड़ि,
माल पहिरावनउं मुंनइ कोड़ि। म्हारा।७।

माल पहिरयां सुभ किरिया सूझइ,
चतुर हुयइ ते प्रतिबूझइ ।म्हारा।८।
समयसुन्दर कहइ उपधान वहियइ,
सुगति तणा सुख लहियइ ।म्हारा।९।

उपधान तप स्तवनम्

ढाल—एक पुरुष सामल सुकलीणउ, एहनी.

श्री महावीर धरम परकासइ, बइठी परखद बारजी ।
अमृत वचन सुनइ अति मीठा, पामइ हरख अपार जी ॥१॥
सुणो सुणो रे श्रावक उपधान वूहां, विन किम सूझइ नवकारजी ।
उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययन, एह भणयउ अधिकार जी ।२। सु.।
महानिशीथ सिद्धांत मांहे पणि, उपधान तप विस्तार जी ।
अनुक्रमि सुद्ध परंपरा दीसइ, सुविहित गच्छ आचार जी ।३। सु.।
तप उपधान वूहां विण किरिया, तुच्छ अल्प फल जाण जी ।
जे उपधान वहइ नर नारी, तेहनउ जनम प्रमाण जी ।४। सु.।
सूत्र सिद्धांत तणा तप उपधान, जोग न मानइ जेह जी ।
अरिहंत देव नी आण विराधइ, भमस्यइ बहु भव तेह जी ।५। सु.।
अघड्या घाट समा नर नारी, विण उपधानइ होइ जी ।
किरिया करतां आदेस निरदेस, काम सरइ नहीं कोइ जी ।६। सु.।
एक घेवर वलि खांड सुं भरियउ, अति घणउ मीठउ थाय जी ।७। सु.।
एक श्रावक नइ उपधान वहइ तउ, धन धन ते कहिवाय जी ।८। सु.।

ढाल २—आहे पोस पढम पखि दसमी निसि जिण जायउ, एहनी.

नउकार तणउ तप पहिलउ वीसइ जाणि,
इरियावही नउ तप बीजउ वीसइ आणि।
इण बिहुं उपधाने निश्चय नांदि मंडाण,
बारे उपवासे गुरु मुखी बे बे वाणि ॥८॥
पांत्रीसइ त्रीजउ णमुत्थूणं उपधान,
त्रि एह वायण उगणीस तप उपधान।
प्रधान अरिहंत चेइत चउथउ कहु एह,
उपवास अढाई वाणि एक गुण गेह ॥६॥
पांचमउ लोगस वय अट्ठावीसइ नाम,
साढा पनरह उपवास वायण त्रिण ठाम।
पुक्खर वरदी तप छट्ठउ छकइ सार,
साढा त्रिण उपवास वाणि एक सुविचार ॥१०॥
सिद्धाणं बुद्धाणं सातमउ उपधान माल,
उपवास करइ एक चउविहार ततकाल।
एक वाणी करइ वलि गुरु मुखि सरस रसाल,
गच्छ नायक पासइ पहिरइ माल विसाल ॥११॥
माल पहिरण अवसरि आणी मन उछरंग,
घर सारू खरचइ धन बहु भंगि।
राती जगइ आपइ ताजा तुरत तंबोल,
गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल ॥१२॥

श्री अनाथी मुनि गीतम्

ढाल—१ माल्हीयड़ा नी
२ चांद्रलिया नी

श्रेणिक रयवाड़ी चढ्यउ, पेखियउ मुनि एकांत ।
वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछइ कहउ रे विरतंत ॥ १ ॥
श्रेणिक राय हूँ रे अनाथि निग्रंथ ।
तिण मइं लीधउ रे साध नउ पंथ ॥ श्रे० ॥ आंकणी ॥
इणि कोसंबी नगरी वसइ, मुझ पिता परिघल धन्न ।
परिवार पूरइ परवरचउ, हुँ छूं तेहनउ रे पुत्र रतन्न । श्रे.२ ।
एक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी मंइ न खमाय ।
मात पिता सहु झूरी रह्या, पणि केणइ रे ते न लेवाय । श्रे.३ ।
गोरड़ी गुण मणि ओरड़ी, मोरड़ी अबला नारि ।
कोरड़ी पीड़ा मइं सही, न किणइ कीधी रे मोरड़ी सार । श्रे.४ ।
बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय ।

मुनिवर अनाथी गावतां, करम नी त्रूटइ कोड़ि।
गणि समयसुंदर तेहना पाय,वांदइ रे बे कर जोड़ि। श्रे.६।

श्री अयवंती सुकुमाल गीतम्

नयरि उजेयिनी मांहि वसइ, परियल जेहनउ आथो जी।
भद्रा सुत सुख भोगवइ, बतीस अंतेउर साथो जी।१।
धन धन अयवंती सुकुमाल नइ, न चाल्युं जेहनुं ध्यानो जी।
एकण राते पामियउ, नलिनि गुल्म विमानो जी।२।ध.।
सद्‌गुरु आवी समोसर्या, सांभलि नलणि अभ्रयणो जी।
जाति समरण पामियउ, संजम परम रयणो जी।३।ध.।
गुरु पूछी रे वन मांहि गयउ, काउसग्ग रह्यउ समसानोरे जी।
स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमानो जी।४।ध.।
ततखिण सुर पद पामियउ, एहवा अयवंती सुकुमालो जी।
समयसुन्दर कहइ वंदना, ते मुनिवर नइ त्रिकालो जी।५।ध.।

श्री अरहन्नक मुनि गीतम्

ढाल—काची कली अनार की रे हां सूयड़ा रह्या रे लोभाय मेरे ढोलणा। ए गीतनी.

वेहरण वेला पांगुरयउ हां, धूप तपइ असराल, मेरे अरहना।
भूख त्रिषा पीड़यउ घणुं हां, मुनिवर अति सुकुमाल मेरे अरहना।१।
माता करइ रे विलाप, भद्रा करइ रे विलाप। मे.॥ आंकणी॥

श्री अनाथी मुनि गीतम्

ढाल—१ भाछीयड़ा नी
२ चांदलिया नी

श्रेणिक रयवाड़ी चढ्यउ, पेखियउ मुनि एकांत ।
वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछइ कहउ रे विरतंत ॥ १ ॥
श्रेणिक राय हूँ रे अनाथि निग्रंथ ।
तिण मइं लीधउ रे साध नउ पंथ ॥ श्रे० ॥ आंकणी ॥
इणि कोसंबी नगरी वसइ, मुझ पिता परिघल धन्न ।
परिवार पूरइ परवरयउ, हुं छूं तेहनउ रे पुत्र रतन्न । श्रे.२ ।
एक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी मंइ न खमाय ।
मात पिता सहु झूरी रह्या, पणि केणइ रे ते न लेवाय । श्रे.३ ।
गोरड़ी गुण मणि ओरड़ी, मोरड़ी अबला नारि ।
कोरड़ी पीड़ा मइं सही, न किणइ कीधी रे मोरड़ी सार । श्रे.४ ।
बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोड़ि उपाय ।
बावना चंदन लावीया, पणि तउ ई रे समाधि न थाय । श्रे.५ ।
जग मांहि को केहनुं नहीं, ते भणी हुं रे अनाथ ।
वीतराग ना धम बाहिरउ, कोई नहीं रे सुगति नउ साथ । श्रे.६ ।
वेदना जउ मुझ उपसमइ, तउ हूं लेऊँ संजम-भार ।
इम चींतवतां वेदन गई, व्रत लीधउ रे हरष अपार । श्रे.७ ।
कर जोड़ि राजा गुण स्तवइ, धन धन ए अणगार ।
श्रेणिक समकित तिहां लहइ, वांदी पहुँचइ रे नयर मंझारि । श्रे.८ ।

मुनिवर अनाथी गावतां, करम नी त्रूटइ कोडि।
गणि समयसुंदर तेहना पाय,वांदइ रे बे कर जोडि। श्रे.६।

श्री अयवंती सुकुमाल गीतम्

नयरि उज्जयिनी मांहि वसइ, परिघल जेहनउ आथो जी।
भद्रा सुत सुख भोगवइ, बतीस अंतेउर साथो जी।१।
धन धन अयवंती सुकुमाल नइ, न चाल्यु जेहनु ध्यानो जी।
एकण रात्रे पामियउ, नलिनि गुल्म विमानो जी।२।ध.।
सद्गुरु आवी समोसरया, सांभलि नलणि अभयणो जी।
जाति समरण पामियउ, संजम परम रयणो जी।३।ध.।
गुरु पूछी रे वंन मांहि गयउ, काउसग रह्यउ समसानोरे जी।
स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमानो जी।४।ध.।
ततखिण सुर पद पामियउ, एहवा अयवंती सुकुमालो जी।
समयसुन्दर कहइ वंदना, ते मुनिवर नइ त्रिकालो जी।५।ध.।

श्री अरहन्नक मुनि गीतम्

ढाल—काचो कली अनार की रे हां सूयड़ा रह्या रे लोभाय मेरे ढोलणा। ए गीतनी.

विहरण वेला पांगुरयउ हां, धूप तपइ असराल, मेरे अरहना।
भूख त्रिखा पीड्यउ घणुं हां, मुनिवर अति सुकुमाल मेरे अरहना।१।
माता करइ रे विलाप, भद्रा करइ रे विलाप। मे.॥ आंकणी॥

धरती वलि ऊठी घणुं रे हां, मारग मांहि थईठ मेरे अरहना।
गउखि चड़ी किण विरहणी रे हां, नारी नयणे दीठ मेरे अरहना।२।
बोलावी ऊंचउ लीयउ रे हां, आण्यउ निज आवासि मेरे अरहना।
हाव भाव विभ्रम करी रे हां, पद्मनी पाड़यउ पासि मेरे अरहना।३।
मूक्यउ ओघउ मुंहपती रे हां, भोगवइ भोग सदीव मेरे अरहना।
करम थी को छूटइ नहीं रे हां, करम तणइ वसि जीव मेरे अरहना।४।
गउख ऊपरि वइठइ थकइ रे हां, दीठी अपणी मात मेरे अरहना।
गलियां मांहि गहिली भमइ रे हां, पूछइ अरहन वात मेरे अरहना।५।
विहरण वेला टलि गयी रे हां, आवउ म्हारा अरहन पूत मेरे अरहना।
चारित थी चित चूकीयउ रे हां, मोहनी मांहे खूत मेरे अरहना।६।
मइं माता दुखिणी करी रे हां, धिग धिग मुझ अवतार मेरे अरहना।
नारि तजी रिषि नीसर्यउ रे हां, आयउ गुरु पासि अपार मेरे अर.।७।
माता पणि आवी मिली रे हां, आणंद अंगि न माय मेरे अरहना।
पाप आलोया आपणा रे हां, पणि चरित्र न पलाय मेरे अरहना।८।
ताती सिला अणसण लियउ रे हां, चडते मन परिणाम मेरे अरहना।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे हां, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम मेरे अरहना।६।

इति अरहनक गीतम् ॥ ४५ ॥

श्री अरहन्ना साधु गीतम्

निहरण वेला रिषि पांगुर्यो, तड़ तड़तइ तावड़ि सांचर्यउ।
सेरी मांहि भमतउ पांतर्यउ, भूख तरस लागी तात सांभर्यउ।१।

म्हारउ अरहनउ, किहां दीठउ रे म्हारउ अरहनउ ॥आंकणी॥
गउखइ चढि दीठउ गोरड़ी, आवउ आ मंदिर ओरड़ी ।
काया कां सोखउ कोरड़ी, मन आशा पूरउ मोरड़ी ॥२ म्हां०॥
ऋषि चूकउ चारित थी पड़यउ, ऊंचो आवास जइ चड्यउ ।
भोगवइ काम भोग नारि नड़यउ, विघटइ किम घाट दैवइ घड्यउ
॥म्हां० ३॥
भद्रा माता इम सांभलि, गहिली थई जोयइ गलियं गली ।
आवउ विहरण वेला टली, हा हा मोहनी करम महाबली ॥म्हां०४॥
गउखइ बइठइ मां ओलखी, धिग धिग सुरस्यइ सुख पखी ।
मइं मूढइ मात कीधी दुखी, नव मास वस्यउ जेहनी कूखी ॥म्हां. ५॥
नारी तजि नीचउ उतरयउ, संवेग मारग स्वधउ धरयउ ।
सिला ऊपरि संथारउ करयउ, वेगइ सुरसुंदरि नइ वरयउ ॥म्हां०६॥
धन धन ए मुनिवर अरहन्नउ, अणसण ऊपरि थयउ इक मन्नउ ।
अधिकार भण्यउ मंइ एहनउ, समयसुंदर नइ ध्यान तेहनउ ॥म्हां.७॥

श्री अरहनक मुनि गीतम्

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड़कइ दाझइ सीसो जी ।
पाय उवराणइ रे वेलु परि जलइ,
तन सुकुमाल मुनीसो जी ॥ अर० ॥१॥
मुख कमलाणउ रे मालती फूल ज्युं, ऊभउ गोख नइ हेठो जी ।
खरइ दुपहरइ दीठउ एकलउ,
मोही मानिनी मीठो जी ॥ अर० ॥२॥

वयण रंगीली रे नयणे वेधियउ, रिषि थंम्यउ तिण वारो जी ।
दासी नइ कहइ जाय उतावली,
ल्यो मुनि तेड़ी आणो जी ॥ अर० ॥३॥
पावन कीजइ रिषि घर आंगणउं, वहिरउ मोदक सारो जी ।
नव यौवन रस काया कंइ दहउ,
सफल करउ अवतारो जी ॥ अर० ॥४॥
चंद्रा वदनी रे चारित चूकव्यउ, सुख विलसइ दिन रातो जी ।
इक दिन गोखइ रमतउ सोगठइ,
तव दीठउ निज मातो जी ॥ अर० ॥५॥
अरहनक अरहनक करती मां फिरइ, गलियइ गलियइ मझारोजी ।
कहो किण दीठउ रे म्हारउ अरणलो,
पूछइ लोक हजारो जी ॥ अर० ॥६॥
उतर तिहांथी रे जननी पाय नमइ, मन मइं लाज्यो तिवारो जी ।
धिक धिक पापी म्हारा रे जीवनइ,
एह मंइ अकारज धार्यो जी ॥ अर० ॥७॥
अगन तपंती रे सिला ऊपरइ, अरणक अणसण लीधो जी ।
समयसुंदर कहइ धन्य ते मुनिवरु,
मन वंछित फल सीधो जी ॥ अर० ॥८॥

इति अरहनक मुनि गीतम्

श्री आदीश्वर ९८ पुत्र प्रतिबोध गीतम्

शांतिनाथ जिन -सोलमउ, प्रणमु तेहना पाय।
दरसन जेहनुं देखतां, पातक दूरि पुलाय ॥१॥
सूगडांग सूत्रइ कह्या, ए बीजइ अध्ययण।
वैताली नामइ वली, वीतराग ना वयण ॥२॥
एहु तणि उतपति कहु, निर्युक्ति नई अणुसार।
भद्रबाहु सामी भणइ, चउद पूरबधर सार ॥३॥
श्री अष्टापद आविया, आदीसर अरिहन्त।
साध संघाति परिवरचा, केवल ज्ञान अनन्त ॥४॥
इण अवसरि आव्या तिहां, अट्ठाणू सउ पुत्र।
वांदी नइ करइ वीनति, तात सुणउ घर सूत्र ॥५॥
भरत थयउ अति लोभियउ, न गिणयउ बांधव प्रेम।
राज उदाल्या अम्ह तणा, हिव कहउ कीजइ केम ॥६॥
राज काज महिलां थणुं, थइ दुर्गति ना दुख।
-ते भणी ते उपदेस द्यु, जिम ए पामइ सुख ॥७॥
पुत्र भणी प्रतिबोधिवा, ए अध्ययन कहंति।
-अट्ठाणुं सुत सांभलइ, उपगारी अरिहन्त ॥८॥

ढाल—धन धन अयवंती सुकुमल,नाइ, एहनी ढाल।

आंदीसर इम उपदिसइ, ए संसार असारो जी।
अंगार दाहक नी परि, तृपति न पामइ लगारो जी ॥१॥ सं.॥

संबुज्झह किं बुज्झह, नहिं छइ राज नउ लागोजी।
वयर विरोध वारु नहीं, वालउ मन वयरागो जी ॥२॥ सं.॥
ए अवसर वलि दोहिलउ, माणस नइ अवतारो जी।
आरिज देस उत्तम कुल, पडवडी इंद्री अपारो जी ॥३॥ सं.॥
धरम सांभलिवुं दोहिलुं, सरदहणा वलि तेमो जी।
कां वांछउ राज कारिमउ, प्रतिबूझउ नहिं केमो जी ॥४॥ सं.॥
पुण्य कियां विण प्राणिया, परभवि पहुँचस्यइ जेहोजी।
बोधि बीज लहिस्यइ नहीं, भमस्यइ भव मांहि तेहोजी ॥५॥ सं.॥
राति दिवस जे जायइ छइ, पाछा नावइ तेहो जी।
खिण खिण त्रूटइ आउखुं, खीण पडइ वलि देहो जी ॥६॥ सं.॥
राज ना काज रूडा नहीं, तुच्छ छइ जेहना सुक्खो जी।
भेदन छेदन ताड़ना, नर तणां बहु दुखो जी ॥७॥ सं.॥
गरभ रह्यां माणस गलइ, बालक वृद्ध जुवाणो जी।
सींचाणउ झड़पइ चिड़ी, पणि चालइ नहीं प्राणोजी। ८ ।सं०।
अथिर जाणी इम आउखुं, किम कीजइ परमादो जी।
नरकां न राज्य न वांछियइ, ते मांहि नहिं को सवादो जी। ६ ।सं०।
कुटुंब सहु को कारिमुं, पुत्र कलत्र परिवारो जी।
स्वारथ विण विहडइ सहु, कुण केहनउ आधारो जी।१०।सं०।
भवनपती व्यंतर वली, जोतषी वैमानिक देवो जी।
चक्रवर्ती राणा राजवी, बलदेव नइ वासुदेवो जी।११।सं०।

ते पणि प्रभुता आंपणी, छोडइ पामता दुक्खो जी ।
भय मोटउ मरिवा तणउ,संसार मांहि नहि सुक्खो जी ।१२।सं०।
काम भोग घणा भोगवां, त्रिपति पूरी जिम थायो जी ।
ते मूरिख निज छांहड़ी, आपड़िवा नइ उजायो जी ।१३।सं०।
बंधण थी ताल फल पड़चउ,तेहनइ को नहीं त्राणो जी ।
तिम जीवित त्रूटइ थकइ,केहनइ न चालइ प्राणो जी ।१४।सं०।
परिगृह आरंभ पाडुया, पाडुया पाप ना कर्मो जी ।
पाडीजइ परभवि गयां, ते किम कीजइ अधर्मो जी ।१५।सं०।
ज्ञान दरसण चारित विना,मुगति न पामइ कोयो जी ।
कष्ट करइ अन्य तीरथी, मुगति न पामइ सोयो जी ।१६।सं०।
विरमउ पाप थकी तुम्हे, जउ पूरव कोड़ि आयो जी ।
धरम विना धंध ते सहु, सफल संजम सुयायो जी ।१७।सं०।
जे खूता काम भोगवइ, राग बंधण पास बंधो जी ।
ते भमिस्यइ संसार मंइ, दुख भोगवता अबुद्धो जी ।१८।सं०।
पृथिवी जीव समाकुली, तेहनइ न दीजइ दुक्खो जी ।
समिति गुपति व्रत पालियइ, जिम पामीजइ सुखो जी ।१९।सं०।
जे हिंसादिक पाप थी, विरम्यां श्री महावीरो जी ।
तिण ए धरम प्रकासियउ, पहुँचाड़इ भव तीरो जी ।२०।सं०।
गृहस्थावास मूकी करी, जे ल्यइ संजम भारो जी ।
बावीस परिसा जे सहइ, चालइ सुद्ध आचारो जी ।२१।सं०।

चण चण करम नो चय करी,संवेग शुद्ध धरंतो जी ।
भव सायर बोहामणउ, ते नर तुरत तरंतो जी ।२२।सं०।
लेपी भींति घसी जती, अनुक्रमि निर्लेप थायो जी ।
आकरा तप करतां थकां, निरमल थायइ कायो जी ।२३। सं०।
आवि तुं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तूँ आधारो जी ।
तुझ विण कुण वूढापणइ,करिस्यइ अम्हारी सारो जी ।२४।सं०।
विरह विलाप घणा करी, कुटंब चुकावइ साधो जी ।
पणि चूकइ नहीं साधु जी, जिण परमारथ लाधो जी ।२५।सं०।
मोहनी करम लीधां थकां, जे चूकइ अविकारो जी ।
ते संसार मांहे भमइ, देखइ दुक्ख अपारो जी ।२६।सं०।
ए संसार असार छइ, छोड़उ राज नइ रिद्धो जी ।
तप संजम तुम्हें आदरउ, शीघ्र लहउ जिम सिद्धो जी ।२७।सं०।
तात नी देसणा सांभली, वारू कीधउ विचारो जी ।
राज नइ रिद्धि छोड़ी करी, लीधउ संजम भारो जी ।२८।सं०।
कीधा तप जप आकरा, उपसर्ग परीसा अपारो जी ।
अष्टापद ऊपरि चड्या, अट्ठाणुं अणगारो जी ।२९।सं०।
श्री आदीसर सूँ सहु, सीधा करम खपावो जी ।
पाम्याँ शिव सुख सासता, सुध संजम परमावो जी ।३०।सं०।
सूगडांग सूत्र उपरि कीयउ, ए संबंध प्रधानो जी ।
वयराग आणी वांचज्यो, धरिज्यो साध नुं [illegible] ।३[illegible]।सं०।

हाथी साह उद्यम हूयउ, तिण ए करावी ढालो जी ।
समयसुन्दर करइ वंदणा, ते साधजी नइ त्रिकालो जी ।३२।सं०।
इति श्रीआदीश्वरप्रतिबोधितनिज १८ पुत्रसाधुगीतम् ॥ ३६ ॥

श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम्

राग—भूपाल, महरात् कालहरा गेवा ।

भावना मनि सुद्ध भावउ, धरम मांहि प्रधान रे ।
भरत आरीसा भवन मइं, लह्युं, केवल ज्ञान रे ।१।भा०
आदित्य नइ महाजसा अतिबल बलभद्र नइ बलवीर्य ।
दंडवीरिज जलवीरिज राज कीरतिवीरिज धीर्य रे ।२।भा०।
आठ राजा एण अनुक्रमि, इन्द्र थाप्या जाणि रे ।
रिषमदेव ना मुकुटधारी, अरध भरत मइं आणि रे ।३।भा०।
भरत नी परि भवन मांहि, पाम्युं केवल ज्ञान रे ।
समयसुन्दर तेह साधु नुं, धरइ निर्मल ध्यान रे ।४।भा०।
इति श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम् ॥ ३७ ॥

श्री इला पुत्र गीतम्

राग—मल्हार
ढाल-मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि
वीनति सुणउ एक मोरड़ी । एह गीतनी.

इलावरध हो नगरी नुं नाम कि,
सारथवाहि तिहां वसइ ।

क्षण क्षण करम नो क्षय करी,संवेग शुद्ध धरंतो जी ।
भव सायर वोहामणउ, ते नर तुरत तरंतो जी ।२२।सं०।
लेपी भींति धसी जती, अनुक्रमि निर्लेप थायो जी ।
आकरा तप करतां थकां, निरमल थायइ कायो जी ।२३। सं०।
आवि तुं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तूँ आधारो जी ।
तुझ विण कुण वूढापणइ,करिस्यइ अम्हारी सारो जी ।२४।सं०।
विरह विलाप घणा करी, कुटंब चुकावइ साघो जी ।
पणि चूकइ नहीं साधु जी, जिण परमारथ लाधो जी ।२५।सं०।
मोहनी करम लीधां थकां, जे चूकइ अविकारो जी ।
ते संसार मांहे भमइं, देखइं दुक्ख अपारो जी ।२६।सं०।
ए संसार असार छइ, छोड़उ राज नइ रिद्धो जी ।
तप संजम तुम्हें आदरउ, शीघ्र लहउ जिम सिद्धो जी ।२७।सं०।
तात नी देसणा सांभली, वारू कीधउ विचारो जी ।
राज नइ रिद्धि छोड़ी करी, लीधउ संजम भारो जी ।२८।सं०।
कीधा तप जप आकरा, उपसर्ग परीसा अपारो जी ।
अष्टापद ऊपरि चढ्या, अट्ठाणुं अणगारो जी ।२९।सं०।
श्री आदीसर सूँ सहु, सीधा करम खपावो जी ।
पाम्यां शिव सुख सासता, सुध संजम परमावो जी ।३०।सं०।
सूगडांग सूत्र उपरि कीयउ, ए संबंध प्रधानो जी ।
वयराग आणी वांचज्यो, धरिज्यो साध नुं ध्यानो जी ।३१।सं०।

वात मानी हो इलापुत्रइ एह कि,
ऐ ऐ काम विटम्बणा।
अस्त्री डोलइ हो अत्तर नइ भोलइ कि,
आगइ पणि चूका घणा।७।वं०।
मूँकी नइ हो कुटुम्ब परिवार कि,
विहारियउ नटुए भिल्यउ।
वित्त लेवा हो वीवाह निमित्त कि,
राजा रंजवा नीकल्यउ।८।वं०।
वंस मांड्यउ हो ऊंचउ आकाश कि,
ते ऊपरि खेलइ कला।
राय राणी हो सगला मिल्या लोक कि,
देखइ ते रहइ वेगला।६।वं०।
ते नटुइ हो करि सोल शृंगार कि,
गीत गायइ रलियामणा।
वलि वायइ हो डमरू ले हाथि कि,
विरुद बोलइ नटुया तणा।१०।वं०।
जिण वेला हो नटुयउ रमइ घात कि,
राजा ते जोयइ नहीं।
जोयइ नटुइ हो साम्ही दे दृष्टि कि,
नटुइ पणि जोयई रही।११।वं०।
इम जाणई हो कामातुर राय कि
नटुयउ पड़ि नई जउ मरई।

तेहनउ पुत्र हो इलापुत्र प्रधान कि,
माल धणउ मन ऊलसइ ।१।
वंस उपरि हो चड्यां केवल न्यान कि,
इला पुत्र नइ ऊपनउ ।
संसार नउ हो नाटक निरखंत कि,
संवेग सहु नइ संपनउ ।२।वं०।
वंस ऊपरि हो चड़ी खेलइ जेह कि,
ते नटुया तिहां आविया ।
भली रामति हो रमइ नगरी मांहि कि,
नर नारि मनि भाविया ।३।वं०।
नाटुया नइ हो महा रूप निधान कि,
सोल वरस नी सुन्दरी ।
गीत गायइ हो वायइ डमरू हाथि कि,
जाण प्रवीण जोवन भरि ।४।वं०।
इला पुत्र नउ हो मन लागउ तेथि कि,
कहइ कन्या द्यउ मुझ नइ ।
कन्या समउ हो सोनउ द्यु तोलि कि,
तुरत नायक हुं तुझ नइ ।५।वं०।
नायक कहइ हो आपूं नहीं एह कि,
कुटुम्ब आधार छइ कुंयरी ।
अम्हा मांहे हो आवि कला सीखि कि,
पछइ परणाविस सुंदरी । ६ ।वं०।

मस्त पर अराती रे ।४।मो.।
मगुरु वरद विहारो रे।
उद्यापन उपगारो रे । ६ ।मो.।
रतन नाम उचारो रे।
श्री मधमानो रे । ७ ।मो.।
रथ परिचारो रे।
शुविचारो रे । ८ ।मो.।
र संसारो रे।
ताण्ड रे । ९ ।मो०।
नेसी रे।
गी रे ।१०।मो०।

विचार।
पर ॥११॥

तउ नइइ हो हूँ लेउं एह कि,
ध्यान मुंडुं मन मइं धरइ ।१२। वं०।
इण अवसरि हो ऊंचइ चडन्यइ कोइ कि,
साध नइ नयणे निरखियउ ।
ए धन धन हो ए कृत पुण्य साध कि,
हियडइउ दरसण हरखियउ ।१३। वं०।
मंइ कीधूं हो ए अधम नुं काम कि,
इम आतमा समभावतां ।
इलापुत्र हो लह्युं केवल न्यान कि,
अनित भावना मनि भावतां ।१४। वं०।
इम राजा हो राणी पणि जाणि कि,
नइइ पणि केवल लह्युं ।
पोतानउ हो अवगुण मनि आणि कि,
समकित सघु सरदह्युं ।१५। वं०।
सोना नउ हो थयउ कमल ते वंस कि,
देवता आनि सानिधि करी ।
साध दीधउ हो ध्रम नउउपदेस कि..

[illegible] कि,

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] कि,

[illegible] ।

[illegible] कि,

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

(२) श्री [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ २ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ५ ॥

[illegible]

तउ नटुइ हो हूँ लेउं एह कि,
ध्यान मुंडुं मन मइं धरइ ।१२। वं० ।
इण अवसरि हो ऊंचइ चडचइ कोइ कि,
साध नइ नयणे निरखियउ ।
ए धन धन हो ए कृत पुण्य साध कि,
हियडउ दरसण हरखियउ ।१३। वं० ।
मंइ कीधूं हो ए अधम नुं काम कि,
इम आतमा समझावतां ।
इलापुत्र हो लह्युं केवल न्यान कि,
अनित भावना मनि भाववां ।१४। वं० ।
इम राजा हो राणी पणि जाणि कि,
नटुइ पणि केवल लह्युं ।
पोतानउ हो अवगुण मनि आणि कि,
समकित सहु सरदह्युं ।१५। वं० ।
सोना नउ हो थयउ कमल ते वंस कि,
देवता आवि सानिधि करी ।
साध दीधउ हो धम नउउपदेस कि,
परपदा ते पणि निस्तरी ।१६। वं० ।
इलापुत्र तउ हो गयउ मुगति मझारि कि,
सासती पामी संपदा ।

कर जोड़ी हो करूं चरण प्रणाम कि,
साध नुं ध्यान धरूं सदा ।१७।
कडुयामती हो भलउ रायसंघ साह कि,
थिरादरइ आग्रह[1] कियउ ।
अमदावाद हो ईदलपुर मांहि कि,
समयसुन्दर गीत करि दीयउ ।१८।

इति इलापुत्र गीतम् ॥११॥

(२) श्री इलापुत्र सज्झाय

नाम इलापुत्र जाणियइ, धनदत्त सेठ नउ पूत ।
नटवी देखी रे मोहियउ, ते राखइ घर सूत ॥ १ ॥
करम न छूटइ रे प्राणिया, पूरव नेह विकार ।
निज कुल छोड़ी रे नट थयउ, नाणी सरम लगार ।क०।
इक पुर आपउ रे नाचवा, उंचउ वंस विवेक ।
तिहां राय जोवा रे आवियउ, मिलिया लोक अनेक ।क०।
दोय पग पहिरी रे पावड़ी, वंश चढ्यो गज गेलि ।
निरधारा ऊपरि नाचतउ, खेलइ नव नवा खेलि ।क०।
ढोल वजावइ रे नाटकी, गावइ किन्नर साद ।
पाय तलि घूघरा घम घमइ, गाजइ अंबर नाद ।क०।

१ ...

ढाल—मधुकरनी

आडंबर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर ।
श्री वीर सइं हथि दीखियउ, सुधी पालइ सीख मुनिवर ॥१४॥
चरम राज ऋषि चिर जयउ, नाम उदायन राय, मुनिवर ।
गिरुयां ना गुण गावतां, पातक दूरि पुलाय, मुनिवर ॥१५॥
तप करि काया सोखवी, लीधा अरस आहार, मुनिवर ।
रोग सरीरइ ऊपनउ, साधजी न करइ सार, मुनिवर ॥१६॥
औषध वैद्य बतावियउ, दधि लेज्यउ रिषि राय, मुनिवर ।
वीतभय पाटणि आविया, गोचरि गोयलि जाय, मुनिवर ॥१७॥
राज लेवा रिषि आवियउ, पिशुन उपाड़ी वात, मुनिवर ।
केसी विष दिवरावियउ, कीधउ साध नउ घात, मुनिवर ॥१८॥
साधु परीसउ ते सह्यउ, आण्यउ उत्तम ध्यान, मुनिवर ।
कीधी मास संलेखना, पाम्यउ केवल न्यान, मुनिवर ॥१९॥
मुगति पहुँता मुनिवरु, भगवती अंग विचार, मुनिवर ।
समयसुंदर कहइ प्रणमता, पामीजइ भवपार, मुनिवर ॥२०॥

॥ इति श्री उदयन राजर्षि गीतम् ॥२८॥

श्री खंदक शिष्य गीतम्

ढाल—अरध मंडित नारी नागिला, एहनी.

खंदक सूरि समोसर्‌या रे,
पांच सइ मुनि परिवार रे ।

पालक पापी घाणी पीलिया रे,
पूरव वइर संभार रे ॥१॥ खं०॥
खंदग सीस नमुं सदा रे,
जिण सार्या आतम काज रे ।
सबल परिसहउ जिण सह्यउ रे,
पामियउ मुगति नउ राज रे ॥२॥ खं०॥
अनित्य भावना मनि भावतां रे,
साधु क्षमा भण्डार रे ।
मुनिवर अंतगड़ केवली रे,
पहुंता मुगति मझारि रे ॥३॥ खं०॥
रुधिर भर्यउ ओघउ लियउ रे,
समली जाण्यउ हाथ रे ।
वहिनी आंगण पड्यउ अलोरुयउ रे,
आदर्यो अरिहंत साथ रे ॥४॥ खं०॥
श्री मुनिसुव्रत सामिना रे,
जीव दया प्रतिपाल रे ।
समयसुन्दर कहइ एहवा रे,
वांदूँ वादूँ साधु त्रिकाल रे ॥५॥ खं०॥

इति श्री खदग शिष्य गीतम्–

—:०:—

श्री गजसुकुमाल मुनि गीतम्

ढाल—गजरा नी—

नयरि द्वारामती जाणियइ जी, कृष्ण नरेसर राय ।
नेमीसर तिहां विहरता जी, आव्या त्रिभुवन ताय ॥१॥
कुँयर जी तुम्ह विन घड़िय न जाय ।
बोलइ माता देवकी जी, तुम्ह दीठां सुख थाय ॥कुँ०॥आंकणी॥
प्रतिबूधउ प्रभु देसणा जी, जाण्यउ अथिर संसार ।
गयसुकुमाल मुनिसरू जी, लीधउ संजम भार ॥कुँ०॥२॥
रातिं देवकी चींतवइ जी, जउ किम ऊगइ रे सूर ।
तउ हूँ वांदूं वालहउ जी, गयसुकुमाल सनूर ॥कुं०॥३॥
प्रभु वांदी नइ पूछियूँ जी, किहां म्हारउ गयसुकुमाल ।
आतमारथ निज साधियउ जी, तिण मुनिवर ततकाल ॥कुं०॥४॥
समसाणइ उपसर्ग सही जी, पाम्युं केवल ज्ञान ।
मुगति पहुँता मुनिवरू जी, समयसुन्दर तसु ध्यान ॥कुं०॥५॥

इति श्री गजसुकुमाल गीतम् ॥३॥

श्री थावच्चा ऋषि गीतम्

ढाल—जननी मन आशा घणी, एहनी.

नगरी द्वारिकां निरखियइ, देवलोक समानो ।
थावचा सुत तिहां वसइ, पुण्यवंत प्रधानो ॥१॥

रिषि थावच्चउ रूयडउ, उत्तम अणगारो।
गिरुया ना गुण गावतां, हियडइ हरष अपारो ॥२॥रि०॥
बत्तीस अंतेउर परिवरयउ, भोगवइ सुख सारो।
नेमि समीपइ संजम लियउ, जाण्यउ अथिर संसारो ॥३ रि०॥
बत्तीस अंतेउर परिहरी, लीधउ संजम भारो।
तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारो ॥४। रि०॥
सेत्रुंजा[1] ऊपरि चढी, संथारा कीधा।
समयसुन्दर कहइ साधु जी, वांदूँ सहु सीधा ॥५। रि०॥

चार प्रत्येक बुद्ध—

श्री करकण्डू प्रत्येक बुध गीतम्

ढाल—गलियारे साजण मिल्या हुं वारी।

चंपा नगरी अति भलि हुं वारी,
　　दधिवाहन भूपाल रे हुं वारी लाल।
पद्मावती कूखि ऊपनउ हुँ वारी,
　　करमइ कीधउ चंडाल रे हुँ वारी लाल ॥१॥
करकंडू नइ करूं वंदना हुं वारी,
　　पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल। आंकणी।
गिरुया नां गुण गावतां हुं वारी,
　　समकित थायइ सुद्ध रे हुं वारी लाल ॥क०।२॥

---

१ सेत्रुंजइ

लाधी वांस नी लाकड़ी हु वारी,
थयउ कंचणपुर राय रे हुं वारी लाल।
बाप सुं संग्राम मांडियउ हुं वारी,
साधवी लियउ समझाय रे हु वारी लाल ।।क०।३।।
वृषभ सरूप देखी करी हुं वारी,
प्रतिबोध पाम्यउ नरेस रे हुं वारी लाल।
उत्तम संजम आदरचउ हुं वारी,
देवता दीधउ वेस रे हुं वारी लाल ।।क०।४।।
करम खपावी मुगति गयउ हुं वारी,
करकंडू रिषि राय रे हुं वारी लाल ।
समयसुंदर कहइ ए साधनइ हुं वारी,
प्रणम्यां पाप पुलाय रे हुं वारी लाल ।क०।५।।

इति श्री करकंडू प्रत्येक बुद्ध गीतम् ।।८०।।

श्री दुमुह प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—फिट जीव्युं थारू रामला रे ।

नगरी कंपिला नउ धणी रे, जय राजा गुण जाण ।
न्याय नीति पालइ प्रजा रे, गुणमाला पटराणि रे ।।१।।
दुमुह राय बीजउ प्रत्येक बुद्ध ।
वयरागइ मन वालियउ रे, संयम पलइ सुद्ध रे ।।दु०।।आंकणी।।
धरती खणतां नीसरचउ रे, मुगट एक अभिराम ।

बीजउ मुख प्रति बिंबियउ रे, दुमुह थयउ तिम नाम रे ॥२। दु०॥
मुगट लेवा भणी मांडियउ रे, चण्डप्रद्योत संग्राम ।
पखि अन्याय कुशीलियउ रे, किम सरइ तेहनउ काम रे ॥३। दु०॥
इंद्रधज अति सिणगारीयउ रे, जोतां तृप्ति न थाय ।
खलक लोक खेलइ रमइ रे, महुछ्व मांड्यउ राय रे ॥४। दु०॥
तेहीज इंद्रधज देखीयउ रे, पड़्यउ मल मूत्र मझार ।
हा ! हा ! शोभा कारिमी रे, ए सहु अथिर संसार रे ॥५। दु०॥
वयरागइ मन वालियुं रे, लीधउ संयम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार रे ॥६। दु०॥
बीजउ प्रत्येक बुद्ध ए रे, दुमुह नाम रिपिराय ।
समयसुँदर कहइ साधना रे, नित नित प्रणमुं पाय रे ॥७। दु०॥

इति दुमुह नाम द्वितीय प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥४१॥

' श्री नमि प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—नल राजा रइ देसि हो जी पूगल हुंती पलाणिया

नयर सुदरसण राय हो जी,
मणिरथ राज करइ तिहां ।
कीधउ सबल अन्याय हो जी,
जुगबाहु बंधव मारियउ लाल ॥जु०॥१॥
मयणरेहा गई नासि होजी,
जायउ पुत्र उजाड़िमइ ।

पड़ीय विधाधर पासि हो जी

पणि सील राख्यउ सान्तउ लाल ॥प०॥२॥

पद्मरथ भूपाल हो जी,

घोड़इ अपहरयउ आवियउ ।

तिण ते लीधउ बाल हो जी,

पुत्र पाली पोढउ कियउ लाल ॥पु०॥३॥

शत्रु नम्यां सहु आय हो जी,

नमि एहवउ नाम आपियउ ।

थयउ मिथिला नउ राय हो जी,

सहस अंतेउरि सुं रमइ लाल ॥स०॥४॥

दाह ज्वर चड्यउ देह हो जी,

करम थी को छूटइ नहीं ।

अथिर सहु रिधि एह हो जी,

नमि राजा संजम लीयउ लाल ॥न०॥५॥

इंद्र परीख्यउ आय हो जी,

चडते परिणामे चड्यउ ।

प्रणम्यां जायइ पाप हो जी,

समयसुंदर कहइ साधनइ ॥न०॥६॥

इति श्री तृतीय प्रत्येकबुद्ध नमि गीत ॥४८॥

श्री नमि राजर्षि गीतम्

जी हो मिथिला नगरी नउ राजियउ,
जी हो हय गय रथ परिवार।
जी हो राज लीला सुख भोगवइ,
जी हो सहस रमणी भरतार ॥ १ ॥

नमि राय धन धन तुम अणगार।
इन्द्र प्रशंसा इम करी जी हो,
पाय प्रणमइ वार वार ॥ नमि०॥ आंकणी

जी हो एक दिवस तिहां ऊपनउ,
जी हो पूरब करम संयोग।
जी हो अगनि तणी परि आकरो,
जी हो सबल दाह ज्वर रोग ॥नमि०॥ २ ॥

जी हो चंदन भरिय कचोलड़ी,
जी हो कामिनी लगावइ काय।
जी हो खलकइ चूड़ी सोना तणी,
जी हो शब्द काने न सुहाइ ॥नमि०॥ ३ ॥

जी हो एक वलय मंगल भणी,
जी हो राख्या रमणी बांहि।
जी हो इम एकाकी पणउ भलउ,
जी हो दुख मिल्यां जग मांहि ॥नमि०॥ ४ ॥

जी हो जाति समरण पामियउ,
जी हो लीधउ संजम भार ।
जी हो राज रमणी सवि परिहरी,
जी हो मणि माणिक भंडार ॥नमि०॥ ५ ॥
जी हो रूप करी ब्राह्मण तणउ,
जी हो इन्द्र परीख्यउ सोय ।
जी हो चढते परिणामे चढ्यउ,
जी हो सोनउ श्याम न होय ॥नमि०॥ ६ ॥
जी हो उत्तराध्ययनइ एह छइ,
जी हो नमि राजा अधिकार ।
जी हो समय सुंदर कहइ वांदतां,
जी हो पामीजइ भव पार ॥नमि०॥ ७ ॥

श्री नग्गइ चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—लाल्हरे नी

पुंडवधन पुर राजियउ म्हांकी सहियर,
सिंहरथ नाम नरिंद हे ।
एक दिन घोड़इ अपहर्यउ म्हांकी सहियर,
पड्यउ अटवी दुख दंद हे ॥ १ ॥
परवत उपरि पेखियउ म्हांकी सहियर,
सात भूमियउ आवास हे ।

कनकमाला विद्याधरी म्हांकी सहियर,
परणी प्रेम उल्लास हे ॥ २ ॥
नगर भणि राजा नीसरचउ म्हांकी सहियर,
नग्गई नामि कहाय हे ।
मारग मंइ आंबउ मिल्यउ म्हांकी सहियर,
मांजरि रही महकाय हे ॥ ३ ॥
कोइल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहियर,
सुंदर फल फूल पान हे ।
राजा एक मांजरी ग्रही म्हांकी सहियर,
तिम मंत्री परधान हे ॥ ४ ॥
वलतइ राजा ते वली म्हांकी सहियर,
वृक्ष दीठउ ते वीछाय हे ।
सोभा सगली कारिमी म्हांकी सहियर,
खिण मांहे खेरु थाय हे ॥ ५ ॥
जाती समरण पामियउ म्हांकी सहियर,
संजम पालइ सुद्ध हे ।
समयसुंदर कहइ साध जी म्हांकी सहियर,
चउथउ परतेक बुद्ध हे ॥ ६ ॥

इति नग्गई चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥ ४३ ॥

—:०:—

चार प्रत्येक बुद्ध संलग्न गीतम्

ढाल—साहेली हे आंबलउ मउरीयउ, एह गीतनी ।

चिहुं दिशि थी चारे आवीया,
समकालइ हे यत्त देहरा मांहि ।
सहेली हे वांदउ रूड़ा साधजी,
जिण वांद्या हे जायइ जनमना पाप ॥ सहे०॥
यच्च चउमुख थयउ जाणि नइ,
मत आवइ हे मुझ पूठि के वांहि ।
करकंडु तिरणउ काढीयउ,
काना थी हे खाजि खणवा काजि । स० ।
दुमुख कहइ माया अजी,
राखी कां हो छोड्यउ सगलउ राज ॥स०।२॥
नमि कहइ निंदा कां करइ,
निंदा ना हो बोल्या मोटा दोप ।
नगगई कहइ निंदा नहीं,
हित कहितां हो हुवइ परम संतोप ॥स०।३॥
समकाले च्यारे चव्या,
समकाले हे थया कुल सिणगार ॥ स० ॥
समकालइ संयम लीयउ,
समकाले हे गया मुगति मझार ॥स०।४॥

उत्तराध्ययने   ए   कह्यउ,
सूत्र मांहे हे च्यारे प्रत्येक बुद्ध । स० ।
समयसुन्दर कहइ मइ साधना,
गुण गाया हे पाटण पर सिद्ध ॥स०।५॥

श्री चिलातीपुत्र गीतम्

पुत्री सेठ धन्ना तणी, सुसुमा सुन्दर रूपो रे ।
चिलातीपुत्र करइ कामना, जाणयउ सेठ मरूपो रे ॥१॥
चिलातीपुत्र चित मांहि वस्यउ, उपसम रस भंडारो रे ।आं०।
निश्चल मेरु तणी परइ, सूर धीर सुविचारो रे ॥२।चि०॥
सेठ नगर थी काढियउ, पल्लीपति थयउ चोरो रे ।
पांचसइ चोरां सुँ परिवरयउ,करम करइ कठोरो रे ॥३।चि०॥
एक दिवस मारी सुसुमा, मस्तक हाथ मां लीधउ रे ।
साधु समीपे धर्म सुणी, मस्तक नांखी दीधउ रे ॥४।चि०॥
उपसम विवेक संवर धरयउ,काउसग मांहे कीधी परोल्यउ रे।
काया कीधी चालणी, तो पण मन नवि डोल्यउ रे ॥५।चि०॥
दिवस अढी वेदना सही, आठमउ देवलोक पावइ रे।
चिलातिपुत्र जगि चिर जीवउ, समयसुंदर गुण गावइ रे॥६।चि०॥

—:०:—

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

नगरी राजगृह मांहि वसइ रे, सेठ ऋषभदत्त सार।
धारणी माता जनमियउ रे, जंबू नाम कुमार ॥ १ ॥
जीवन जी अमनइ तूं आधार।
बेकर जोड़ी वीनवइ रे, अबला आठे वार ॥ जी.॥ आंकणी ॥
यौवन भर मांहि आवियुं रे, मेल्युं वेवीसाल।
आठ कन्या अति रूयड़ी रे, पूरवौ प्रेम रसाल ॥ जी.॥ २ ॥
तिण अवसर तिहां आविया रे, गणधर सोहम साम।
चतुर चौथुं व्रत आदरयउ रे, कीधउ उत्तम* काम ॥ जी.॥ ३ ॥
गुरु वांदी घर आवियउ रे, मांगइ व्रत आदेश।
मात पिता परणावियउ रे, जोरे करिय किलेस ॥ जी.॥ ४ ॥
आठ कन्या ले आपणी रे, आव्यउ निशि आवास।
हाव भाव विभ्रम करइ रे, बोलइ वचन विलास ॥ जी.॥ ५ ॥
आ जोवन आ संपदा रे, आ अम अद्भुत देह।
भोग पनोता भोगवउ रे, निपट न दीजइ छेह ॥ जी.॥ ६ ॥
तन धन यौवन कारमुं रे, खण मा खेरू थाय †।
काम भोग फल पाड़ुया रे, दुर्गति ना दुख दाय ॥ जी.॥ ७ ॥
प्रश्नोत्तर करि परगड़उ रे, प्रतिबोधी निज नार।
प्रभवो चोर प्रतिबूझव्यउ रे, पांच सयां परिवार ॥ जी.॥ ८ ॥

---

* दुक्कर। † खिण मांहि विणसी जाय।

आठ अंतेउर परिहरि रे, कनक निवाणु कोड़ ।
संयम मारग आदरयउ रे, माया बंधन छोड़ ॥ जी.॥ ६ ॥
मात पिता कन्या मिली रे, प्रभवो आप जगीस ।
दीक्षा लीधी सामठी रे, पांच सउ अठावीस ॥ जी.॥१०॥
जंबू सामि नी जोड़ली रे, को नइ इण संसार ।
ब्रह्मचारी चूड़ामणि रे, नाम तणइ बलिहार ॥ जी.॥११॥
जंबू केवल पामियउ रे, पाम्यउ अविचल ठाम ।
समयसुन्दर कहइ हूँ सदा रे, नित नित करुंय प्रणाम ॥जी.।१२॥

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

जाऊं बलिहारी जंबू स्वामि नी रे, जिण तजी कनक नी कोड़ि रे।
आठ अंतेउरी परिहरी रे, चरण नमुं कर जोड़ि रे । जा. ।१।
यौवन भर जिण जाणियउ रे, एह संसार असार रे ।
संयम रमणी आदरी रे, मुनिवर बाल ब्रह्मचारि रे । जा. ।२।
जिण प्रभवो प्रतिबूझियउ रे, पांचसइं चोर परिवार रे ।
केवल ज्ञान पामी करी रे, पहुंतइ भव तणउ पार रे । जा. ।३।
जंबू सौभागी जोयउ तुम्हे रे, मुगति नारी वरयउ जोय रे।
मन गमतउ वर पामियउ रे, अवर न वांछइ बीजउ कोय रे। जा. ।४।
धारिणी माता कुंयरू रे, सुधरम स्वामि नो सीस रे ।
समयसुन्दर कहइ साधुना रे, हुं नाम जपूं निशदीस रे । जा. ।५।

इति श्री जंबू स्वामी गीतम् ॥ ३४ ॥

श्री ढंढण ऋषि गीतम्

ढाल—धन धन अयवंती सुकुमाल नइ—ए गीतनी.

नगरी अनोपम द्वारिका, लांबी जोयण बारो जी।
देव नीमी अति दीपति, सरगपुरी अवतारो जी। १।
धन धन श्री ढंढण रिषि, नेमि प्रशंस्यउ जेहो जी।
अलाभ परिसउ जिण सह्यउ, दुरबल कीधी देहो जी। २। ध.।
राज करइ तिहां राजियउ, नवमउ श्री वासुदेवो जी।
बत्तीस सहस अंतेउरी, सुख भोगवइ नित मेवो जी। ३। ध.।
ढंढणा राणी जनमियउ, नामइ ढंढण कुमारो जी।
राजलीला सुख भोगवइ, देवकुंयर अवतारो जी। ४। ध.।
नेमि जिणिंद समोसरया, वांदिवो गयउ वासुदेवो जी।
ढंढण कुमर साथि गयउ, सहु वांदी करइ सेवो जी। ५। ध.।
द्यइ नेमीसर देसणा, ए संसार असारो जी।
जनम मरण वेदन जरा, दुखु तणउ भंडारो जी[1]। ६। ध.।
ढंढण कुमर हलूकमउ, प्रतिबूधउ ततकालो जी।
नेमि समीपि संजम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी। ७। ध.।
नगरी मांहि विहरण गयउ, पणि न मिल्यउ आहारो जी।
बेकर जोड़ी वीनवइ, कहउ सामी कुण प्रकारो जी। ८। ध.।

[1] कुटुम्ब सहु को कारिमुं, एक छइ धरम आधारो जी (पाठां०).

·झनइ आहार मिलइ नहीं,द्वारिका रिद्धि समृद्धो जी ।
साधना भगत जादव सहू, मुझ गुरु बाप प्रसिद्धो जी । ६ । ध.।
सुणि ढंढण रिषि साध तुं, भाखइ श्री भगवंतो जी ।
कीधा करम न छूटियइ, विण भोगव्यां नहीं अंतो जी ।१०। ध.।
पाछिलइ भवि तुं बांभण हुतउ, अधिकारी दुख दायो जी ।
पांचसइ हाली नइ तइं कीयउ,अन्न पाणी अंतरायो जी ।११। ध.।
ढंढण रिषि भणइ हुँ हिव, पारकी लबधि आहारो जी ;
लेसुं नहीं भमस्युं सदा, करमनउ करिस्यु संहारो जी ।१२। ध.।

(२) ढाल बीजी—नेमि समीपइ रे संजम आदरयउ, एहनी.

इण अवसरि श्री कृष्ण नरेसरु,
प्रसन करइ कर जोड़ो जी ।
अढारह सहस मइं कुण अधिक जती,
जेहनी नहिं कोई जोड़ो जी ॥१॥
अढारह सहस मांहि अधिक ढंढण जती,
भाखइ श्री भगवंतो जी ।
सबल अलाभ परीसउ जिण सह्यउ,
करिव करम नो अंतो जी ॥२॥ अढा० ॥
वासुदेव प्रभु वांदि नइ चल्यउ,
द्वारिका नगरी मझारो जी ।
मारग मइं ढंढण मुनिवर मिल्यउ,
गोचरी गयउ अणगारो जी ॥३॥ अढा० ॥

हरि वांदउ हाथी थी ऊतरी,
त्रिण्ह प्रदिक्षण दीधो जी ।
कृष्ण महाराज परसंसा करी,
जन्म सफल तइं कीधो जी ॥४॥ अढा० ॥

त्रैलोक्यनाथ तीर्थंकर ताहरूं,
श्री मुखं करइ वखाणो जी ।
तूं धन्य तूं कृतपुण्य मोटो जती,
जीवित जन्म प्रमाणो जी ॥५॥ अढा० ॥

कृष्ण नी मनियावट देखि करी,
भद्रक नइ थयो भावो जी ।
सिंह केसरिया मोदक सूझता,
पडिलाभ्या प्रस्तावो जी ॥६॥ अढा० ॥

ढंढण रिषि पूछ्युं भगवंत नइ,
अभिग्रह पूगउ मुज्झो जी ।
कृष्ण तणी ए लब्धि कहीजियइ,
लब्धि नहीं ए तुज्झो जी ॥७॥ अढा० ॥

पारकी लबधि न लेऊं लाडुया,
परिठवतां घरचउ ध्यानो जी ।
चूरंतां च्यारे क्रम चूरियां,
पाम्युं केवल न्यानो जी ॥८॥ अढा० ॥

सुगति पहुँता अनुक्रमि मुनिवरु,
श्री ढंढण रिषि रायो जी।
समयसुन्दर कहइ हूँ ए साधना,
प्रतिदिन* प्रणमुं पायो जी ॥६॥ अढा० ॥

इति श्री ढंढण ऋषि गीतम् ॥ ६ ॥ सर्वगाथा २१

श्री अमदावाद पार्श्ववर्तिनि ईदलपुरे नगरेमध्ये चतुर्मासीं कृत्वा मासकल्पस्थितैः श्रीसमयसुंदरोपाध्यायैः कृतं लिखितं च सं० १६६२ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १ दिने ॥४५॥ †

—:०:—

श्री दशारण भद्र गीतम्

राग—रामगिरी; जाति—कड़खानी।

मुगध जन वचन सुणि राय चित चमकियउ,
अहो अहो देव नउ राग देखउ।
हूँ महावीर नइ तेम वांदीसि जिम,
किण न वांद्या तिका परठि पेखउ ॥१॥
धन्य हो धन्य हो राजा दसणभद्द तूँ,
आपणउ बोल परमाण चाड्यउ।

* नित नित। †(लींबड़ी भंडार प्रति)

लोच करि आप सूर वीर संजम लीयउ,
इंद्र नइ आणि पाये लगाड्यउ ॥२॥घ०॥
नगर सिणगार चतुरंग सेना सजी,
पांच सइ महुल परिवार सेती ।
आप आगइ बतीस बद्ध नाटक पड़इ,
तूर वाजइ कहू वात केती ॥३॥घ०॥
आवियउ इंद्र अभिमान उतारिवा,
अनंत गुण श्री अरिहंत एहइ ।
इन्द्र चउसट्ठि एकठा मिली संस्तवइ,
पार न लहइं तउ गान केहइ ॥४॥घ०॥
एक हाथी तणइ आठ दंतूसला,
दंत दंत आठ आठ वावि सोहइ ।
वावि-वावि आठ आठ कमल तिहाँ,
आठ आठ पांखड़ी पेखतां मन्न मोहइ ॥५॥घ०॥
पत्र पत्रइ बतीस बद्ध नाटक पड़इ,
कमल विचि इंद्र बइठउ आणन्दइ ।
आठ वलि आगलि अग्र महिषी खड़ी,
वीर नइं एण विधि इंद्र वांदइ ॥६॥घ०॥
इन्द्र नी रिद्धि देखी करी एहनी,
हूँ किसइ गोनि राजा विचारयउ ।
राज नइ रिद्धि सहु छोड़ि संजम लीयउ,
इन्द्र महाराज आगइ न हारयउ ॥७॥घ०॥

इन्द्र वादी प्रसंसा करी एहवी,
धन्य कृतपुण्य तूं साध मोटउ।
आंपणउ जन्म जीवितव्य सफलउ कीयउ,
आंगम्यउ बोल कीधउ न कोटउ ॥८॥ध०॥

दसणभद करम त्तय करिय मुगति गयउ,
एह अभिमान साचउ कहीजइ !
समयसुन्दर कहइ उत्तराध्ययन मइं,
साधना नाम थी निस्तरीजइ ॥९॥ध०॥

श्री धन्ना (काकंदी) अणगार गीतम्

सरसति सामण वीनवुं, मागूं एकज सार।
एक जीभे हुं किम कहूँ, एहना तप नो नहीं पार ॥ १ ॥
गुणवंत ना हुँ गुण स्तवुं, धन धन्नउ अणगार ॥ आंकणी ॥
निरदोष नांखीजतो लीइं, पट काया आधार ॥ गु०॥ २ ॥
सुख संयम बीजो नहीं, जग मांहि तत्त्व सार।
जन्म मरण दुख टालवा, लीधउ संजम भार ॥ गु०॥ ३ ॥
बत्तीसइ रंभा तजी, जीत्यउ यौवन वेस।
त्रिकट वइरी दोय वश कर्या, श्री जिनवर उपदेश ॥ गु०॥ ४ ॥
मयण दंत लोह ना चणा, किम चावस्यै कंत।
मेरु माथइ करी चालवूं, खड्गधार हो पंथ ॥ गु०॥ ५ ॥

शरीर सुश्रुषा नवि करइ, वाध्या नख नइ केस ।
मुनिवर आठे मद गालिया, विषय नहीं लवलेस ॥ गु०॥ ६ ॥
हाड हींडतां खड़ खड़इ, काया काग नी जंघ ।
सरीर संतोषे सूकयूं, न कीधउ व्रत भंग ॥ गु०॥ ७ ॥
नसा जाल सवि जूजुई, सूकयउ लोही नइ मांस ।
बावीस परिसह जीपवा, रहवुं वन वास ॥ गु०॥ ८ ॥
आंखि ऊंडी तारा जगमगइ, सुरतरु सुरुआं कान ।
सूकी आंगली मग नी फली, पग जिम सूकू पान ॥ गु०॥ ९ ॥
श्रेणिक श्री जिन वांदनइ, प्रश्न पूछइ जे एह ।
कुण तपसी तप आगला, मुझ नइ कहउ तेह ॥ गु०॥ १० ॥
साधु शिरोमणि जाणस्यउ, धन धनउ अणगार ।
आठ खाण करमे भरी, काढी नांखइ छइ बाहर ॥ गु०॥ ११ ॥
श्रेणिक हींडइ वन सोझतो, देखूं भूलो रूप ।
सूकुं खोखुं जेहवुं सर्प नुं, तेहवुं दीठ सरूप ॥ गु०॥ १२ ॥
ऊठ कोड़ी रोम ऊलस्या, हुई सफल ते यात्र ।
त्रिण प्रदक्षिणा देइ करी, भावे वंदूं हो पात्र ॥ गु०॥ १३ ॥
मास एक अणसण करी, ध्ययउ शुक्र ते ध्यान ।
नव मासे कर्म खपेवी, पाम्यूँ अनुत्तर विमान ॥ गु०॥ १४ ॥
करि काउसग्ग कर्म खपेवी, यति तारण हो तरण ।
समयसुंदर कहइ एतलुं, मुझ नइ साधु जी नउ शरण ॥ गु० १५ ॥

धन्ना (काकंदी) अणगार गीतम्

वीर जिणंद समोसरचा जी, राजगृही उद्यान।
समवशरण सुरवर रच्यउ जी, बइठा श्री व्रधमान ॥१॥
जग जीवन वीरजो, कउण तुमारउ सीस।
आप तरइ अउर तारवइ जी, उग्र तप धरइ निशदीस। आं.। ज.।
प्रभु आगमन सुणी करी जी, श्रेणिक हरष अपार।
प्रभु पय वंदन आवियउ जी, हय गय रथ परिवार ॥२॥ ज०॥
श्रेणिक प्रभु देसना सुणी जी, प्रसन करइ सुविचार।
चउद सहस अणगार मंइ जी, कउण अधिक अणगार॥३। ज०॥
काकंदी नगरी वसइ जी, भद्रा मात मल्हार।
संयम रमणी आदरी जी, जाणी अथिर संसार ॥४॥ ज०॥
छठ तप आंबिल पारणइ जी, उज्झित लियइ आहार।
माया ममता परिहरि जी, देह दीधइ आधार ॥५॥ ज०॥
सील दुविध पालइ भली जी, शम दम संयम सार।
तप जप प्रमुख गुणे करी जी, अधिक धन्नउ अणगार ॥६॥ज०॥
धन्नउ नाम सुणी करी जी, हरख्यउ श्रेणिक राय।
त्रिण प्रदिक्षणा देई करी जी, वांदइ मुनिवर पाय ॥७॥ ज०॥
नवमंइ अंगइ ए अछइ जी, धन्ना नउ अधिकार।
सोहम सामी उपदिस्यउ जी, जंबू नइ हितकार ॥८॥ ज०॥

श्रेणिक नइ समझावियउ रिषी रूड़उ रे,
अशुभ मनइ शुभ ध्यान रिषीसर रूड़उ रे ॥ ४ ॥
प्रसन्नचंद्र सरिखउ मिलइ रिषी रूड़उ रे,
तउ हूँ तरूं ततकाल रिषीसर रूड़उ रे ।
दूसम कालइ दोहिलउ रिषी रूड़उ रे,
समय सुंदर मन वालि रिषीसर रूड़उ रे ॥ ५ ॥

इति श्री प्रसन्न चद्र रिषीसर गीतम् ॥ ४६ ॥

श्री प्रसन्न चंद्र राजर्षि गीतम्

ढाल—वेगि विहरण आव्यो घरे ।

प्रसन्न चंद प्रणमुं तुम्हारा पाय, तुम्हे अति मोटा रिषीराय ।
॥प्र०॥ आंकणी ॥
राज छोड्यउ रलियामणो तुम जाणयउ अथिर संसार ।
वयरागे मन वालियुँ तुमे लीधउ संयम भार ॥प्र.॥१॥
वन मांहे काउसग्ग रह्या पग ऊपर पग चाढ़इ ।
बांह बेऊं ऊंची करी सूरिज सामी दृष्टि देइ ॥प्र.॥२॥
दुरमुख दूत वचन सुणी तुम कोप चढ्या तत्काल ।
मन सुं संग्राम मांडियउ तुम जीव पड़यउ जंजाल ॥प्र.॥३॥
श्रेणिक प्रश्न करयुं तिसे स्वामी एहनइ कुण गति थाइ ।
भगवंत कहइ हियणां मरइ तउ सातमी नरके जाइ ॥प्र.॥४॥

एहवा मुनिवर वांदियइ जी, चरण कमल चित्त लाय ।
समयसुंदर गरुइ[1] भणइ जी, निरुपम शिव सुख थाय ॥६॥ ज०॥

इति धन्ना अणगार गीतं संपूर्ण ।

श्री प्रसन्न चंद्र राजर्षि गीतम्

ढाल—तपोधन रूड़ा रे, भमरा ना गीतनी ।

मारग मइं मुझनइ मिल्यउ रिषि रूड़उ रे,
　　सुधउ साधु निग्रंथ रिषीसर रूड़उ रे ।
उत्कृष्टी रहणी रहइ रिषि रूड़उ रे,
　　साधतउ मुगति नउ पंथ रिषीसर रूड़उ रे ॥ १ ॥
एकइ पग ऊभउ रह्यउ रिषि रूड़उ रे,
　　सूरिज सामी दृष्टि रिषीसर रूड़उ रे ।
बोलायउ बोलइ नहीं रिषि रूड़उ रे,
　　ध्यान धरइ परमेष्टि रिषीसर रूड़उ रे ॥ २ ॥
कहइ श्रेणिक सामी कहउ रिषि रूड़उ रे,
　　जउ मरइ तउ जाइ केथि रिषीसर रूड़उ रे ।
सामी कहइ जाइ सातमी रिषि रूड़उ रे,
　　तीव्र वेदना छइ तेथि रिषीसर रूड़उ रे ॥ ३ ॥
देव की वाणी दुंदुभि रिषि रूड़उ रे,
　　उपनूं केवल ज्ञान रिषीसर रूड़उ रे ।

---

१ भगति

श्रेणिक नइ समझावियउ रिषी रूड़उ रे,
अशुभ मनइ शुभ ध्यान रिषीसर रूड़उ रे ॥ ४ ॥
प्रसन्नचंद्र सरिखउ मिलइ रिषी रूड़उ रे,
तउ हूँ तरूं ततकाल रिषीसर रूड़उ रे ।
दूसम कालइ दोहिलउ रिषी रूड़उ रे,
समय सुंदर मन वालि रिषीसर रूड़उ रे ॥ ५ ॥

इति श्री प्रसन्न चद्र रिषीसर गीतम् ॥ ४६ ॥

श्री प्रसन्न चंद्र राजर्षि गीतम्

ढाल—वेगि विहरण आव्यो घरे ।

प्रसन्न चंद प्रणमुं तुम्हारा पाय, तुम्हे अति मोटा रिषीराय ।
॥प्र०॥ आंकणी ॥
राज छोड्यउ रलियामणो तुम जाणयउ अथिर संसार ।
वयरागे मन वालियुँ तुमे लीधउ संयम भार ॥प्र.॥१॥
वन मांहे काउसग्ग रह्या पग ऊपर पग चाढ़इ ।
बांह बेऊं ऊंची करी सूरिज सामी दृष्टि देइ ॥प्र.॥२॥
दुरमुख दूत वचन सुणी तुम कोप चढ्या तत्काल ।
मन सुं संग्राम मांडियउ तुम जीव पड्यउ जंजाल ॥प्र.॥३॥
श्रेणिक प्रश्न करयुं तिसे स्वामी एहनइ कुण गति थाइ ।
भगवंत कहइ हियणां मरइ तउ सातमी नरके जाइ ॥प्र.॥४॥

खण इक अंतर पूछियउ सर्वार्थ सिद्ध विमान।
वागी देव की दुंदुभी ए पाम्यउ केवल ज्ञान ॥प्र.॥५॥
प्रसन्न चंद्र मुगते गयो श्री महावीर नउ शिष्य।
समयसुंदर कहइ धन्य ते जिण दीठा प्रत्यक्ष ॥प्र.॥६॥

श्री बाहूबलि गीतम्

तखिसिला नगरी रिषभ समोसर्‍या रे,
सांझ समइ वन मांहि।
वनपालक दीधी वद्धामणी रे,
बाहूबलि अधिक उच्छाहि ॥ १ ॥
वांदूँ वादूँ रिषभजी रिद्धि विस्तार सुं रे,
प्रह उगमतइ सूर।
बाहूबलि रयणी इम चिंतवइ रे,
अति घणउ आणंद पूर ॥ २ ॥ वां० ॥
पवन तणी परि प्रतिबंध को नहीं रे,
आदि जिन विचर्‍या अनेथि।
बाहूबलि आव्यउ आडंबर करी रे,
नयण न देखइ केथि ॥ ३ ॥ वां० ॥
मणिमय पीठ मनोहर कर्युं रे,
तात भगति अभिराम।
समयसुन्दर कहइ तीरथ तिहां थयुं रे,
चोवा अदिम नाम ॥ ४ ॥ वां० ॥

इति श्री बाहूबलि गीत ॥ २६ ॥

(२) श्री बाहूबलि गीतम्

राग—कालहरउ

ज वणा अति लोभिया, भरत बाहूबलि जूझइ रे ।
ठि उपाड़ी मारिवा, बाहूबलि प्रतिबूझइ रे ॥१॥
धव गज थी उतरउ, ब्राह्मी सुन्दरी भासइ रे ।
रभदेव ते मोकली, बाहूबलि नइ पासइ रे ॥२॥वां.॥आंकणी॥
ोरा म्हारा गज थकी उतरउ, गज चढ्यां केवल न होइ रे वी.]
ाच करी संजम लीयउ, आयउ बलि अभिमानो रे ।
घु बांधव वांदूँ नहीं, काउसग्ग रह्यउ शुभ ध्यानो रे ॥३॥वां.॥
स सीम काउसग रह्यउ, वेलड़िए वींटाणउ रे ।
ी माला मांडिया, सीत तावड़ सोखाणउ रे ॥४॥वां.॥
धवी वचन सुणीकरी, चमक्यउ चित्त विचारइ रे ।
गय रथ सवि परिहर्या, पणि चड़्यउ हूँ अहंकारो रे ॥४॥ वां.॥
रागइ मन वालियउ, मूँक्यउ निज अभिमानो रे ।
उपाड़्यइ वांदिवा, पाम्यउ केवल न्यानो रे ॥६॥वां.॥
ता केवलि परषदा, बाहूबलि रिपिराया रे ।
जरामर पदवी लही, समयसुन्दर वांदइ पाया रे ॥७॥वां.॥

इति भरत बाहूबलि गीतम् ॥ २७ ॥

———

चंद वदनी मृग लोयणी रे,
विल विलती मुंकी नारि रे ॥५॥ अ० ॥
भवदेव भागइ चित आणियउ,
विण ओलख्यां पूछइ वात रे ।
कहउ कोई जाणइ नारि नागिला रे,
किहां वसइ केही छइ धात रे ॥६॥ अ० ॥
नारि कहइ सुणि साध जी,
वम्यउ न लेयइ कोई आहार रे ।
गज चढी खर कोई नवि चडइ,
तिम व्रत छोड़ी नइ नारि रे ॥७॥ अ० ॥
नागिला नारि प्रति बूझव्यउ,
वयराग धरचउ मुनिराय रे ।
भवदेव देवलोक पामियउ,
समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥८॥ अ० ॥

इति भवदेव गीतम् सपूर्णम् ॥ २८ ॥

श्री मेतार्य ऋषि गीतम्

नगर राजगृह मांहि वसउ जी, मुनिवर उग्र विहार ।
ऊंच नीच कुल गोचरी जी, सुमति गुपति पण सार ॥१॥
मेतारज मुनिवर बलिहारी हूँ तोरइ नामि ।
उत्तम करणी तइं करी जी, त्रिकरण करूं रे प्रणाम ॥मे.।आंकणी।

श्री भवदत्त-नागिला गीत

ढाल—साधु नइ वहिराव्युं कडवुं तुंबड़ा रे।

भवदत्त भाई घरि आवियउ रे,
प्रतिबोधिवा मुनिराय रे।
नव परणी मूंकी नागिला रे,
भवदेव वांदइ मुनि पाय रे ॥१॥

अरध मंडित नारी नागिला रे,
खटकइ म्हारा हियड़ला मांहि रे।
भवदत्त भाइयइ सुंनइ मोलव्यउ,
लाजइ लीधउ संजम भार रे ॥२॥ अ० ॥

हाथे दीधुं घी नुं पातरुं,
मुझनइ आवेरउ वउलावि रे।
इम करि गुरु पासि लेई गयउ,
गुरुजी पूछ्युं संजम नउ छइ भाव रे ॥३॥ अ०॥

लाजइ नाकारउ नवि कर्यउ,
दीक्षा लीधी भाई बहु मानि रे।
बार वरस व्रत मांहि रह्यउ,
हीयड़इ धरतउ नागिला नउ ध्यान रे ॥४॥ अ०॥

हा ! हा ! मूरिख मई स्युं कर्युं,
कांय पड़्यउ कष्ट मझारि रे।

चंद वदनी मृग लोयणी रे,
विल विलती मुंकी नारि रे ॥५॥ अ० ॥
भवदेव भागइ चित आनियउ,
विण ओलख्यां पूछइ वात रे ।
कहउ कोई जाणइ नारि नागिला रे,
किहां वसइ केही छइ धात रे ॥६॥ अ० ॥
नारि कहइ सुणि साध जी,
वम्यउ न लेयइ कोई आहार रे ।
गज चढी खर कोई नवि चडइ,
तिम व्रत छोड़ी नइ नारि रे ॥७॥ अ० ॥
नागिला नारि प्रति बूझव्यउ,
वयराग धरयउ मुनिराय रे ।
भवदेव देवलोक पामियउ,
समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥८॥ अ० ॥

इति भवदेव गीतम् सपूर्णम् ॥ २८ ॥

श्री मेतार्य ऋषि गीतम्

नगर राजगृह मांहि वसउ जी, मुनिवर उग्र विहार ।
ऊंच नीच कुल गोचरी जी, सुमति गुपति पण सार ॥१॥
मेतारज मुनिवर बलिहारी हूँ तोरइ नामि ।
उत्तम करणी तइं करी जी, त्रिकरण करूं रे प्रणाम ॥मे.॥आंकणी॥

सोवनकार घर आंगणइ जी, मुनिवर पहुतउ जाम ।
आहार भणी ते मांहि गयउ जी, क्रौंच गल्या जव ताम ।।मे. ।।२।।
सोवनकार कोपइ चढ्यउ जी, घइ मुनिवर नइ दोष ।
नाना विध उपसर्ग करइ जी, ऋषि मनि नाणइ रोप ।।मे. ।।३।।
वाध्र सुं मस्तक वींटीयउ जी, निविड़ वंधने भड़ भीड़ ।
त्रटकि आंख त्रूटी पड़ी जी, प्रवल प्रकट थई पीड़ ।।मे. ।।४।।
क्रौंच जीव करुणा भणी जी, उपशम धरचउ शुभ ध्यान ।
अनित्य भावना भावतां जी, पाम्यउ केवल ज्ञान ।।मे. ।।५।।
अंतगड़ पाली आउखउ जी, पाम्यउ भव नउ पार ।
अजरामर पदवी लही जी, सासता सुक्ख अपार । मे. ।।६।।
श्री मेतारज मुनिवरू जी, साध गुणे अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ माहरो जी, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम ।। मे. ।।७।।

इति मेतार्य ऋषि गीतम्, प० जयसुदन्र लि० श्राविका माता पठ

श्री मृगापुत्र गीतम्

सुग्रीव नगर सोहामणु रे, बलभद्र राजा बाप ।
मिरगां माता जनमियउ रे, मृगापुत्र सुप्रताप ।। १ ।।
कुयर कहइ कर जोड़ि नइ रे, हुँ हिव दीक्षा लेम ।।मा. ।।आं.।।
गउख उपरि बइठइ थकइ रे, एक दीठउ अणगार ।
जाती समरण जाणियु रे, ए संसार असार ।। मा. ।।२।।

तन धन जोवन कारिमुं रे, खिण मांहि खेरू थाइ ।
कुटुंब सहु को कारिमुं रे, जीवित हाथ मई जाइ ॥ मा. ॥३॥
दीक्षा छइ पुत्र दोहिली रे, तूँ तउ अति सुकुमाल ।
किम करिस्यइ ए कामिनी रे, वापड़ी अबला बाल ॥ मा. ॥४॥
कारिमि ए छइ कामिनी रे, हुं शिव रमणी वरीसि ।
सूर वीर नइ सोहिलुं रे, हु मृग चरिजा वरीसि ॥ मा. ॥६॥
माता नउ आदेस ले रे, लीधउ संजम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार ॥ मा. ॥६॥
मृगापुत्र मुगति गयउ रे, उत्तराध्ययन मझार ।
समयसुन्दर कहइ हूँ नमुं रे, ए मोटउ अणगार ॥ मा. ॥७॥

इति मृगापुत्र गीतम् ॥ ४६ ॥

मेघरथ (शांतिनाथ दसम भव) राजा गीतम्

दसमइ भव श्री शांति जी,
　　मेघरथ जिवड़ा राय, रूड़ा राजा ।
पोसहशाला मंइ एकला,
　　पोसह लियउ मन भाय, रूड़ा राजा ॥१॥
धन धन मेघरथ राय जी,
　　जीय दया सुख खाण, धर्मी राजा ॥आंकणी॥
ईशानाधिप इन्द्र जी,
　　वखाणयउ मेघरथ राय, रूड़ा राजा ।

धरमे चलायउ नवि चलइ,
मासुर देवता आय रूड़ा राजा ॥ २ ॥ध०॥
पारेवउ सींचाणा मुखे अवतरी,
पड़ियुं पारेवउ खोला मांय रूड़ा राजा ।
राख राख मुझ राजवी,
मुझनइ सींचाणउ खाय रूड़ा राजा ॥ ३ ॥ध०॥
सींचाणउ कहइ सुणि राजिया,
ए छइ माहरउ आहार रूड़ा राजा ।
मेघरथ कहइ सुण पंखिया,
हिंसा थी नरक अवतार रूड़ा रंखी ॥ ४ ॥ध०॥
सरणइ आव्युं रे पारेवड़उ,
नहीं आपूँ निरधार रूड़ा पंखी ।
माटी मंगावी तुज्झ नइ देवुं,
तेहनउ तूं कर आहार रूड़ा पंखी ॥ ५ ॥ध०॥
माटी खपइ मुझ एहनी,
कां वली ताहरी देह रूड़ा राजा ।
जीव दया मेघरथ वसी,
सत्य न मेले धरमी तेह रूड़ा राजा ॥ ६ ॥ध०॥
काती लेई पिण्ड कापी नइ,
ले मांस तू सींचाण रूड़ा पंखी ।
त्राजुए तोलावी मुझ नइ दियउ,
एह पारिवा प्रमाण रूड़ा राजा ॥ ७ ॥ध०॥

त्राजू मंगावी मेघरथ राय जी,
काषी काषी मइ मूकइ मांस रूड़ा राजा ।
देव माया धारण समी,
नावइ एकण अंस रूड़ा राजा ॥ ८ ॥ध०॥
भाई सुत राणी विल-विलइ,
हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा ।
एक पारेवइ नइ कारणइ,
स्यूं कापउ छउ देह गहिला राजा ॥ ९ ॥ध०॥
महाजन लोक वारइ सहु,
मकरउ एवड़ी बात रूड़ा राजा ।
मेघरथ कहइ धरम फल भला,
जीव दया मुझ घात रूड़ा राजा ॥१०॥ध०॥
तराजुए बइठउ राजवी,
जे भावइ ते खाय रूड़ा पंखी ।
जीव थी पारेवउ अधिकउ गिणयउ,
धन्य पिता तुझ माय रूड़ा राजा ॥११॥ध०॥
चढते परिणामे राजवी,
सुर प्रगट्यउ तिहां आय रूड़ा राजा ।
समावइ बहु विधे करी,
ललि ललि लागइ छइ पाय रूड़ा राजा ॥१२॥ध.॥
इन्द्रे प्रशंसा ताहरी करी,
जेहवउ तूं छइ राय रूड़ा राजा ।

मेघरथ काया साखी करी,
सुर पहुंतो निज ठाय रूड़ा राजा ॥१३॥ध०॥
संयम लियउ मेघरथ राय जी,
लाख पूरब नउ आयु रूड़ा राजा।
वीस स्थानक वीसे सेविया,
तीर्थंकर गोत्र बंधाय रूड़ा राजा ॥१४॥ध०॥
ग्यारमइं भव मंइ श्री शांति जी,
पहुँता सरवारथ सिद्ध रूड़ा राजा।
तेतीस सागर नउ आउखउ,
सुख विलसइ सुर रिद्धि रूड़ा राजा ॥१५॥ध०॥
एक पारेवा दया थकी,
बे पदवी पाम्या नरिंद रूड़ा राजा।
पंचम चक्रवर्त्ती जाणियइ,
सोलमां शांति जिणंद रूड़ा राजा ॥१६॥ध०॥
बारमइ भवे श्री शांति जी,
अचिरा कूखइ अवतार रूड़ा राजा।
दीक्षा लई नइ केवल वर्या,
पहुँता मुगति मझार रूड़ा राजा ॥१७॥ध०॥
तीजइ भव शिव सुख लह्यउ,
पाम्या अनंतो नाग रूड़ा राजा।
तीर्थंकर पदवी लही,
लाख वरस आयु जाण रूड़ा राजा ॥१८॥ध०॥

दया थकी नव निधि हुवइ,
दया ए सुखनी खाण रूड़ा राजा।
भव अनंत नी ए सगी,
दया ते माता जाण रूड़ा राजा ॥१९॥ध०॥
गज भव ससलउ राखियउ,
मेघकुमार गुण जाण रूड़ा राजा।
श्रेणिक राय सुत सुख लह्यउ,
पहुँता अनुचर विमान रूड़ा राजा ॥२०॥ध०॥
इम जाणी दया पालजो,
मन मइं करुणा आण रूड़ा राजा।
समयसुंदर इम वीनवइ,
दया थी सुख निर्वाण रूड़ा राजा ॥२१॥ध०॥

——

श्री मेघकुमार गीतम्

धारणी मनावइ रे, मेघकुमार नइ रे;
तु तउ मुझ एक ज पूत।
तुझ विन जाया रे, दिनड़ा किम गमूँ रे;
राखउ राखउ घर तणा सूत ॥धा० ।१।
तुझ नइ परणावि रे, आठ कुमारिका रे;
ते वहू अति सुकुमाल।
मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे;
मयणा वयण सुविसाल ॥धा० ।२।

बहुली संपद हूँती छांडि नइ रे,
कहो किम कीजइ वीर ।
स्त्री धन रे, भोला भोगवी रे;
पछइ व्रत लेज्यो तुमे धीर ॥धा०।३।
मुझ नइ आशा रे, पुत्र हुंती घणी रे;
रमाड़िस बहुअर तणा बाल ।
देव अवटारउ रे, देखी नवि सकइ रे;
ऊपायउ जंजाल ॥धा०।४।
मेघकुमरइ रे, माता प्रति चूझवी रे;
दीक्षा लीधी वीर नइ पास ।
समयसुंदर कहइ धन्य ते मुनिवरू रे;
छूटे छूटे भव तणा पास ॥धा०।५।

श्री रामचंद्र गीतम्
राग—मारुणी

प्रियु मोरा तइं आदरयउ वइराग,
प्रियु मोरा कोटि शिला काउसग रह्यउ हो ।
प्रियु मोरा कहइ सीता वचन सराग,
प्रियु मोरा देवलोक थी आवी करी हो ॥१॥
प्रियु मोरा तंइ कीधी वे पास,
प्रियु मोरा धीज कीधा पछी अति घणी हो ।

प्रियु मोरा मुझ नइ पहुचउ वरांस,
प्रियु मोरा अवसर चूकउ आवइ नहीं हो ॥२॥
प्रियु मोरा करि तुं नियाणउ कंत,
प्रियु मोरा आवि अम्हां सु करि साहिवी हो।
प्रियु मोरा आणंद करिस्यां अत्यंत,
प्रियु मोरा प्रीति पारेवा पालिस्यां हो ॥३॥
प्रियु मोरा अचरिज पाम्यउ राम,
प्रियु मोरा अहो अहो काम विटंबणा हो।
प्रियु मोरा हिव हुं सारूं काम,
प्रियु मोरा ध्यान सुकल हियड़इ धरचउ हो ॥४॥
प्रियु मोरा पाम्यउ केवल ज्ञान,
प्रियु मोरा सेत्रुंज शिव सुख पावियउ हो।
प्रियु मोरा समयसुन्दर धरइ ध्यान,
प्रियु मोरा राम रिषीसर साधनउ हो ॥५॥

इति श्री रामचन्द्र गीतम् ॥ ३६ ॥

श्री राम सीता गीतम्

सीता नइ संदेसउ राम जी मोकल्यउ रे,
कांइ मुंदरड़ी दे मूक्यउ हनुमंत वीर रे।

जइ नइ संदेसउ कहिज्यो माहरउ रे,
तुम्हे हियड़इ हुइज्यो साहस धीर रे ॥१॥ सी०॥
मत तुम्हे जाणउ अम्हनइ वीसरचा रे,
तुम्हे छउ माहरा हीयड़ला मांहि रे ।
तुम्ह नइ संभारूं सास तणी परिं रे,
तुम्ह नइ मिलवा तणउ मन उच्छाहि रे ॥२॥ सी०॥
जे जेहनइ मन मांहि वस्या रे,
ते तउ दूरि थकां पणि पास रे ।
किहां कुमुदिनी किहां चंद्रमा रे,
पणि दूरि थी करइ परकास रे ॥३॥ सी०॥
सीता नइ संदेसउ हनुमंत जइ कह्यउ रे,
वलतुं सीता पणि मोकल्युं सहिनाण रे ।
समयसुन्दर कहइ राम जी रे,
जयत पाम्युं सीता शील प्रमाणि रे ॥४॥ सी० ।

इति श्री राम सीता गीतम् ॥ २५ ॥

—: :—

॥ धन्ना शालिभद्र सज्झाय ॥

प्रथम गोवाल तणइ भवे जी, मुनिवर दीधुं रे दान ।
नगर राजगृह अवतरचा जी, रूपे मयण समान ॥ १ ॥

सोभागी शालिभद्र भोगी रह्यो ॥ आंकणी ॥
बत्तीस लक्षण गुण भर्‌चो जी, परण्यउ बत्तीस नार।
मानव नइ भव देवना जी, सुख विलसइ संसार ॥ सो. ॥२॥
गोभद्र सेठ तिहां पूरवइ जो, नित नित नवला रे भोग।
करइ सुभद्रा उवारणा जी, सेव करइ बहु लोग ॥ सो. ॥३॥
इक दिन श्रेणिक राजियउ जी, जोवा आव्यउ रूप।
देखी अंग सुकोमला जी, हर्ष थयउ बहु भूप ॥ सो. ॥४॥
वच्छ वैरागी चिन्तवइ जी, मुझ सिर श्रेणिक राय।
पूरव पुण्य मइं नवि कर्‌या जी, तप आदरस्युं माय ॥ सो. ॥५॥
इण अवसर श्री जिनवरू जी, आव्या नगर उद्यान।
शालिभद्र मन ऊजम्यउ जी, वांद्या वीर जी ने ताम ॥ सो. ॥६॥
वीर तणी वाणी सुणी जी, बूठो मेह अकाल।
एकाकी दिन परिहरइ जी, जिम जल छंडइ पाल ॥ सो. ॥७॥
माता देखी टलवलइ जी, माछलड़ी विनुं नीर।
नारी सगली पाय पड़ी जी, मत छंडो साहस धीर ॥ सो. ॥८॥
बहुअर सगली वीनवइ जी, सांभलि जिणसुं विचार।
सर छंडी पालइ चढ्यउ जी, हंसलउ उडण हार ॥ सो. ॥९॥
इण अवसर तिहां न्हावतां जी, धन्ना सिर आंसू पड़ंत।
कउण दुख तुझ सांभर्‌यउ जी, ऊंचउ जोइ नइ कहंत ॥ सो. ॥१०॥
चंद्रमुखी मृग लोचनी जी, बोलावी भरतार।
बंधव वात कही तिसइ जी, नारी नउ परिहार ॥ सो. ॥११॥

धन्नो कहइ सुण गहेलड़ी जी, शालिभद्र पूरउ गमार ।
जो मन आशा छांडिया जी, तो विलंब न कीजइ लगार ॥ सो. ॥१२॥
कर जोड़ी कहइ कामिनी जी, बंधव सम नहीं कोइ ।
कहिता वात सोहिली जी, करतां दोहिली होय ॥ सो. ॥१३॥
जारे तो तइं इम कह्युं जी, तो मइं छोड़ि रे आठ ।
पिउड़ा मइं हंसतां कह्युं जी, कुणसुं करस्युं वात ॥ सो. ॥१४॥
इण वचने धन्नउ नीसरयो जी, जाणे पंचानन सींह ।
साला नइ जइ साद करयउ जी, गहेला उठ अबीह ॥ सो. ॥१५॥
काल आहेड़ी नित भमइ जी, पूठ म जोइस जाय ।
नारी बंधन दोरड़ो जी, धव धव छंडइ निरास ॥ सो ॥१६॥
जिम धीवर तिम माछलो जी, धीवरे नांख्यो जाल ।
पुरुष पड़ी जिम माछलो जी, तिम अचिंत्यो काल ॥ सो. ॥१७॥
जोवन भर विहुँ नीसरया जी, पहुँता वीर जी पास ।
दीक्षा लीधी रूवड़ा जी, पालइ मन उल्हास ॥ सो. ॥१८॥
मासखमण नइ पारणइ जी, पूछइ श्री जिनराज ।
अमनइ शुद्ध गोचरी जी, लाभ देस्यइ कुण आज ॥ सो. ॥१९॥
माता हाथइ पारणउ जी, थास्यइ तुम्ह नइ आहार ।
वीर वचन निश्चय करी जी, आव्या नगरी मझार ॥ सो. ॥२०॥
घर आव्या नहीं ओलख्या जी, फिर आव्या ऋषि राय ।
मारग मिलतां महियारड़ी जी, सामी मिली तिण ठाय ॥ सो. ॥२१॥
मुनि देखी मन उल्लसइ जी, विकसित थइ तनु देह ।
मस्तक गोरस सूझतउ जी, पड़िलाभ्यउ धरि नेह ॥ सो. ॥२२॥

मुनिवर विहरी चालिया जी, आव्या श्री जिन पास।
मुनि संसय जइ पूछयउ जी, माय न दीधुं दान ॥ सो. ॥२३॥
वीर कहइ ऋषि सांभलउ जी, गोरस वहेरयउ रे जेह ।
मारग मिली महियारड़ी जी, पूर्व जनम नी माय तेह ॥ सो. ॥२४॥
पूरब भव जिन मुख लही जो, एकत्र भावइ रे दोय ।
आहार करी मन धारियउ जी, अणसण योग ते होय ॥ सो. ॥२५॥
जिन आदेश लेइ करी जो, चढिया मुनि गिरि वैभार।
शिल उपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार ।सो.।२६।
माता भद्रा संचरया जी, साथइ बहु परिवार ।
अंतेउर पुत्र ज तणउ जी, लीधउ सगलउ साथ ॥ सो. ॥२७॥
समोसरण आवी करी जी, वांद्या वीर जग तात ।
सकल साधु वांदी करी जी, पुत्र नइ जोवइ निज मात ॥ सो. ॥२८॥
जोइ सगली परषदा जी, नवि दीठा दोय अणगार ।
कर जोड़ी नइ वीनवइ जी, तब भाखइ श्री जिनराज ॥ सो. ॥२९॥
वैभार गिरि जइ चड्या जी, मुनिवर दर्शन उमंग ।
सहु परिवारइ परिवरी जी, पहुँती गिरिवर शृंग ॥ सो. ॥३०॥
दोय मुनि अणसण उच्चरइ जी, झीलइ ध्यान मझार।
मुनि देखी विलखी जी, नयणे नीर अपार ॥ सो. ॥३१॥
गद गद शब्द जो बोलतां जी, मिली छइ बत्रीसे नार।
पिउड़ा बोलउ बोलड़ा जी, जिम सुख पामुं अपार ॥ सो. ॥३२॥
अमे तो अवगुण भरया जी, तुम छउ गुण ना भंडार।
मुनिवर ध्यान चूक्या नहीं जी,तेह नइ विलंब न लगार॥ सो. ॥३३॥

वीरा नयण निहाल जो जी, ज्यूँ मन थाय प्रमोद ।
नयण उघाडि जोवउ सही जी, माता पामइ मोद ॥ सो. ॥३४॥
शालिभद्र माता मोहिनी जी, पहुंता अमर विमान ।
महाविदेहे सीझस्यइ जी, पामी केवल ज्ञान ॥ सो. ॥३५॥
धन्नउ धरमी मुक्ति गयउ जी, पामी शुक्र ध्यान ।
जे नर नारी गावस्यइ जी, समयसुन्दर नी वाण ॥ सो. ॥३६॥

श्री शालिभद्र गीत

ढाल—लाछा फूलाणी नी.

धन्नउ सालिभद्र बेइं, भगवंत नउ आदेस ले जी हो । हो मुनिवर ध.।
संवेग सुद्ध धरेइ, वैभार गिरि उपरि चढ्या जी हो । हो मुनि.। सं.।१।
अणसण करि अणगार,सूना सिलातल उपरइ जी हो । हो मुनि. अ.।
ए संसार असार,ध्यान भलउ हियडइ धरयउ जी हो । हो मुनि. ए.।२।
आखी मनि उछरंग, आवी सुभद्रा वांदिवा जी हो । हो मुनिवर आ.।
पेखी पुत्र निसंग, रोवा लागी हूबके जी हो । हो मुनिवर पेखी.।३।
सालिभद्र तुं सुकुमाल, एह परीसा पुत्र आकरा जी हो । हो मुनि. सा.।
बतीस अंतेउरी बाल, निरधारी तजि नीसरयउ जी हो । हो मुनि. ब.।४।
मंदिर महुल मझार, सेज तलाई महं पउढतउ जी हो । हो मुनि. मं.।
कठिन सिला संथारि,सबल परीसा पुत्र तूँ सहइ जी हो । हो मुनि.क.।५।
साम्हउ जो इकवार, मन वालइ थारी मावडी जी हो । हो मुनि. सा.।
नाणयउ नेह लगार,सालिभद्र साम्हउ जोयउ नहीं जी हो । हो मु.ना.।

चडते मन परिणाम, कीधी मास संलेखणा जी हो । हो मुनि. च.।
सारचा आतम काज, सर्वारथ सिद्धि गया जी हो । हो मुनि. सा.।७।
महाविदेह मझारि[1], मुगति जास्यइ मुनिवरु जी हो । हो मुनि. महा.।
वंदना करूं वार वार, समयसुदर कहइ हुं सदा जी हो । हो मुनि.वं.।८।

इति श्री धन्ना शालिभद्र गीतम् ।।४६।।
सं. १६६१ वर्षे मगसिरस्यामावास्यां जोडग्राड़ा ग्रामे पं. हरिराम लिखितम् ।

श्री शालिभद्र गीतम्

राग—भूपाल

शालिभद्र आज तुम्हानइ अपणी माता,
पड़िलामस्यइ सु सनेहा रे ।
श्री महावीर कहइ सुणि शालिभद्र,
मत मनि धरइ संदेहा रे ।। सा. ।।१।।
वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ,
सालिभद्र मन संतोषी रे ।
आयउ घरि ओलख्यउ नहीं माता,
तप करि काया सोषी रे ।। सा. ।।२।।
विन विहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर,
मन मांहि संदेह आयउ रे ।

१ उत्तम लहि अवतार

मारग मांहि मिला महिआरा
तिण गोरस विहरायउ रे ॥ सा. ॥३॥
वेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ,
प्रश्न करूं स्वामी तुझ नइ रे ।
विरहण बात तो दूरी रही पणि,
मां ओलख्यउ नहीं मुझनइ रे ॥ सा. ॥४॥
पूरब भव माता पड़िलाम्यउ,
भगवंत संदेह भाजउ रे ।
समयसुंदर कहइ धन धन सालिभद्र,
वीर चरणे जाइ लागउ रे ॥ सा. ॥५॥

इति श्री सालिभद्र गीतम् ॥ ४७ ॥

श्री शालिभद्र गीतम्

ढाल— कपूर हुयइ अति ऊजलुं रे, वली अनोपम गंध । ए गीतनी

राजगृही नउ विवहारियउ रे, गोभद्र तणउ रे मल्हार ।
भद्रा माता कूँयरु रे, सालिभद्र गुण भण्डार ॥१॥
मुनीसर धन सालिभद्र अवतार, जिण लीधउ संजम भार ।
मुनीसर धन० जिण पाम्यउ भव नउ पार ॥मु० ध०॥आंकणी॥
बत्रीस अंतेउरि परिवरयउ रे, भोगवइ लील विलास ।
मन वंछित सुख पूरवइ रे, गोभद्र सगली आस । मु०॥ २ ॥

रतन कंबल आव्यां घणां रे, पणि श्रेणिक न लेवाय ।
सालिभद्र नी अंतेउरी रे, लूही नाख्यां पाय ॥मु०॥ ३ ॥
श्रेणिक आव्यउ आंगणइ रे, पुत्र सुणउ सुविचार ।
श्रेणिक क्रियाणुं मेलवी रे, मात जी मेल्हउ वखारि ॥मु०॥ ४ ॥
श्रेणिक ठाकुर आपणउ रे, जेहनी वसियइ छत्र छांय ।
चमकयउ सालिभद्र चिंतवइ रे, मुझ माथइ पणि राय॥ मु०॥ ५ ॥
तृण जिम रमणी परिहरी रे, जाण्यउ अथिर संसार ।
महावीर पासि मुनीसरू रे, लीधउ संजम भार ॥मु०॥ ६ ॥
तुम नइं मां पड़िलाभयइ रे, इम बोलइ महावीर ।
घरि आव्यउ नवि ओलख्यो रे, तप करी सोख्युँ सरीर ॥मु०॥ ७ ॥
पड़िलाभ्यउ गोवालणी रे, पूरव भवनी माय ।
वीर वचन साचां थया रे, धन धन श्री जिनराय ॥ मु०॥ ८ ॥
वैभार परवत ऊपरी रे, ले अणसण शुभ ध्यान ।
मास संलेखण पामियुँ रे, सरवारथ सिद्धि विमान ॥ मु०॥ ९ ॥
सालिभद्र ना गुण गावतां रे, सीझइ वंछित काम ।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम ॥ मु०॥१०॥

इति श्री शालिभद्र गीतम् ॥ १० ॥

श्री श्रेणिक राय गीतम्

प्रभु नरक पड़ंतउ राखियइं, तउ तूं पर उपगारी रे ।
श्रेणिक राय वदति वीर तेरउ, हूं तउ खिजमति कारी रे ॥प्र.॥१॥

कालकसूरियउ महिप न मारइ, कपिला दान दिराय रे।
वीर कहइ सुण श्रेणिक राया, तउ तूँ नरक न जाय रे। प्र.।२।
कालकसूरियउ किम ही न रहइ, कपिला भगति न आइ रे।
कीधउ हो करम न छूटइ कोइ, हिंसा दुरगति जाइ रे। प्र.।३।
दुख न करि महावीर कहइ तोरी, प्रकट हुसी पुण्याई रे।
पद्मनाभ तीर्थंकर होस्यइ, समयसुंदर गुण गाई रे। प्र.।४।



श्री स्थूलिभद्र गीतम्

मनड़उ ते मोह्यउ मुनिवर माहरूं रे,
कहइ इम कोश्या ते नारि रे।
आठे ते पहुर उपांपलउ रे,
चट पट चित्त मझार रे। मन०।१। आं०।
पांजरड़उं ते भूलउ भमइ रे,
जीव तमारे पासि रे।
तमस्युं बोल्यइ विण माहरइ रे,
पनरह दिन छमासि रे। मन०।२।
पर दुक्ख जाणइ नहीं पापिया रे,
दुसमण घालइ विचइ घात रे।
जीव लागउ जेहनउ जेहस्युं रे,
किम सरइ कीधां विण वात रे। म०।३।

त्रोड़ी नवि प्रीति त्रूटइ नहीं रे,
त्रोटतां ते त्रूटइ माहरा प्राण रे।
कहउ केही परि कीजीयइ रे,
तुम्हे जउ चतुर सुजाण रे। म० ।४।

संवत सोल नव्यासीयइ रे,
मीर मोजा नुं राज रे ।
अकबरपुर मांहि रही रे,
भाद्रवइ जोड़ी छइ आज रे। म० ।५।

स्थूलिभद्र कोश्या प्रति बूझवइ रे,
धरम ऊपरि धरइ राग रे ।
प्रेम बंधन नेटि पाड़ीयां रे,
समयसुंदर सुखकार रे । म० ।६।

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

प्रियुड़उ आव्यउ रे आगा पाली,
बोलइ कोसा नारी ।
प्रीति पनउता पालियइ,
हुं छुं दासि तुम्हारी ।१।

हुं प्रियुड़ा तुम्ह रागिणी,
तूं को हृदय कठोर रे।
चंद चकोर तणी परि,
मान्यउ मूं मन मोर रे।

साजण सरसी[1] प्रीतड़ी,
कीजइ धुरि थकी जोय रे।
कीजीयइ तउ नवि छोड़ियइ,
कंठइ प्राण जां होय रे। ३। प्रि०।
चउमासु चित्रसालीयइ,
रह्या मुनिवर राय रे।
नयण अणीयाले निरखती,
गोरी गीत गुण गाय रे। ४। प्रि०।
कोसा वचन सुणी करी,
मुनिवर नवि डोलइ रे।
समयसुन्दर कहइ कलियुगइ,
थूलिभद्र न को तोलइ रे। ५। प्रि०।

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम्

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

प्रीतड़ी प्रीतड़ी न कीजइ हे नारि परदेसियां रे,
खिण खिण दाझइ देह।
बीछड़ियां बीछड़ियां वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ रे,
सालइ अधिक सनेह ।।प्री.।१।
आजनइ आजनइ आव्या रे काल्हि चालस्यइ रे,

१ सेतो

भमर भमंता जोइ ।
साजणिया साजणिया वउलावी वलतां चालतां रे,
धरती भारणि होय ॥श्री.॥२॥
कागलियउ कागलियउ लिखतां भीजइ आंसुए रे,
आवइ दोषी हाथि ।
मनका मनका मनोरथ मन मांहे रहइ रे,
कहियइ केहनइ साथि ॥प्री.॥३॥
इण परि इण परि कोसा थूलभद्र बूझवी रे,
पाली पूरव प्रीति ।
सीयल सीयल सुरंगी ओढाड़ी चूनड़ी रे,
समयसुंदर प्रभु रीति ॥प्री.॥४॥

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम् ॥ ४३ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

राग—सारंग

प्रीतड़िया न कीजइ हो नारि परदेसियां रे,
खिण खिण दाझइ देह ।
वीछड़िया वाल्हेसर मलवो दोहिलउ रे ।
सालइ सालइ अधिक सनेह ॥प्री.॥१॥
आज नइ तउ आव्या काल उठि चालवुं रे,

भमर भमंतां जोई ।
साजनिया बोलावि पाछा वलतां थकां रे,
धरती भारणि होइ ।प्री.।२।
राति नइ तउ नावइ वाल्हा नींदड़ी रे,
दिवस न लागइ भूख ।
अन्न नइ पाणी मुझ नइ नवि रुचइ रे,
दिन दिन सबलो दुख ।प्री.।३।
मन ना मनोरथ सवि मन मां रह्या रे,
कहियइ केहनइ रे साथि ।
कागलिया तो लिखतां भीजइ आंसुआं रे,
आवइ दोखी हाथि ।प्री.।४।
नदियां तणा व्हाला रेला वालहा रे,
ओछा तणा सनेह ।
वहता वहइ वालह उंतावला रे,
झटकि दिखावइ छेह ।प्री.।५।
सारसड़ी चिड़िया मोती चुगइ रे,
चुगे तो निगले कांइ ।
साचा सद्गुरु जो आवी मिलइ रे,
मिले तो विछुड़इ कांइ ।प्री.।६।
इण परि स्थूलिभद्र कोशा प्रतिबूझवी रे,
पाली पाली पूरव प्रीति सनेह ।

शील सुरंगी दोधी चूनड़ी रे,
समयसुंदर कहइ एह ।प्री.।७।

इति स्थूलिभद्र गीतं ॥ २७॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम

राग–जयतश्री-धन्या श्री मिश्र

आवत मुनि के भेखि देखि दासी सासीनी ।
कोशि वेशि कुं आइ इसी जु वधाई दीनी ॥
पियु आये सखि आपुने सुनि हर्षित भई नारि ।
तवहि उतारी अंग हो दीनउ मोतिण हार ॥ १ ॥
स्थूलिभद्र आये भलइ ए माइ जोवत जोवत माग के ॥ आंकणी ॥
चित्रशालि चउमास रहे लहे गुरु आदेसा ।
कोशि कामिनी नृत्य करइ सुरसुंदरी जैसा ॥
हाव भाव विभ्रम करइ कुं भये निठुर निटोल ।
पूरब प्रेम संभाल प्रियु तूं मान हमारो बोल के ॥ २ ॥
काम भोग संयोग सवइ किंपाक समाने ।
पेखत कूपइ कुण पड़इ सुणि कोश सयाने ॥
मेरु अडिग मुनिवर रहे ध्यान धरम चित लाय ।
समयसुंदर कहइ साध जी हो धन धन स्थूलिभद्र रिषिराय ।।३।।

—:※:—

स्थूलिभद्र गीतम्

थूलभद्र आव्यउ रे आसा फली, बोलइ कोस्या नारि।
प्रीति पनउता पालियइ, हूँ छुं दासि तुमारि ॥१॥ धू.।
हूं प्रीयुड़ा तुझ रागिणी, तूँ का हृदय कठोर।
चंद चकोर तणी परि मान्यउ तूँ मन मोर ॥२॥ धू.।
साजण सेती प्रीतड़ी, कीजइ धुरि थकी जोड़।
कीजियइ तउ नवि छोडियइ, कंठइ प्राण जां होइ ॥३॥ धू.।
चउमासुं चित्र सालियइ, रह्या मुनिवर राय।
नयण अंणियाले निरखती, कोस्या गीत गुण गाय ॥४॥ धू.।
कोस्या वचन सुणी करी, मुनिवर नवि डोलइ।
समयसुंदर कहइ कलिजुगइ, थूलिभद्र न को तोलइ ॥५॥ धू.।

— o —

स्थूलिभद्र गीतम्

राग—केदारउ गउड़ी

तुम्हे वाट जोवंतां आव्या, हूँ जाऊं बलिहारी रे।
कहउ मुझनइ कांइ तुम लाव्यां, हूँ जाऊं बलिहारी रे ॥ १ ॥
इम बोलइ कोस्या नारि, हुं जाऊं बलिहारी।
एतला दिन क्युं वीसारी, हू जाऊं बलिहारी ॥ आं० ॥
बहुं बखत म्हारुं जे संभारी, हूँ जाऊं बलिहारी।
रहउ चित्रशाली छइ तुम्हारी, हुं जाऊं बलिहारी रे ॥ २ ॥

कंता विण नारि किसी एकली,
थोड़इ पाणी छीजइ मछली ।
कहउ वात कहुँ प्रियुड़ा केतली,
प्रीतड़ी संभारउ प्रियु पिछली ॥३॥ र०॥
विलसी धन कोड़ी ते वात टली,
तजी नारी तणी संगति सगली ।
परभव दुरगति वेदन दुहिली,
बोलइ मत कोसा ते वात वलि ॥४॥ र०॥
प्रतिबोधी कोरया प्रीति पली,
मनमथ तइं जीतउ अतुल बली ।
थूलभद्र मुनिवर तेरी जाऊं बली,
समयसुन्दर कहइ मेरी आस फली ॥५॥ र०॥

—:•:—

स्थूलिभद्र गीतम्

म्हाला स्थूलिभद्र हो स्थूलिभद्र म्हाला,
एक करूं अरदास हो हां॰
प्रीति संभालउ पाछली ।
तुम्ह विण खिण न रहाय हो,हां॰
ज्यूँ जीवइ जल विण माछली ॥१॥म्हा.थू.॥
मिलतां सुं मिलियइ सही हो,हां॰
चित अंतर जेम चकोरड़ा । वा० ।

म करिस खांचा ताणि हो, हां०
 तूं पूरि मनोरथ मोरड़ा ॥२।वा.थू.॥
लाख टका नी प्रीति हो, हां०
 मन मान्या सूँ किम तोड़ियइ । वा० ।
कीजइ प्रीत न होइ हो, हां०
 त्रूटी पिण सांधी जोड़ियइ ॥३।वा.थू.॥
जोरइ प्रीत न होइ हो, हां०
 दे शील सुरंगी चूनड़ी । वा० ।
साचउ धर्म सनेह हो, हां०
 आपे करस्यां सुंदर वातड़ी ॥४।वा.थू.॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

ढाल— सुण मेरी सजनी रजनी जानइ, एहनी ।

पिउड़ा मानउ बोल हमारउ रे,
 आपणी पूरव प्रीति संभारउ रे ॥ १ ॥
आ चित्रशाला आ सुख सेज्यां रे,
 मान मानइ तउ केही लज्या रे ॥ २ ॥
वरसइ मेहा भींजइ देहा रे,
 मत दउ छेहा नवल सनेहा रे ॥ ३ ॥
कहइ मुनि म करि वेश्या आदेशा[1] रे,
 सुण उपदेसा अमृत जैसा रे ॥ ४ ॥

---

१ अदेशा

पाल तूँ निर्मल शील सुरंगा रे,
पामसी परभव शिवसुख अभंगा रे ॥ ५ ॥
धन धन थूलभद्र तुं रिषिराया रे,
समयसुन्दर कहै प्रणमुं पाया रे ॥ ६ ॥

—×—

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती गीतम्

सांभलि सनतकुमार हो राजेश्वर जी,
अबला किम मेल्ही हो राजेन्द्र एकली जी।
अम्हनइ कवण आधार हो राजेश्वर जी,
राखइ किम धीरज राजन राणियां जी ॥१॥
ए संसार असार हो राजेश्वर जी,
काया ते· दीठी हो राजन कारमी जी।
लीधो संजम भार हो राजेश्वर जी,
छांडी राजरिद्धि तृण जिम ते छती जी ॥२॥
मन वसियो वइराग हो राजेश्वर जी,
मूकी हो माया ममता मोहनी जी।
तिं कीधउ पट खंड त्याग हो राजेश्वर जी,
इम किम निठुर हुआ नाहला जी ॥३॥
एकरस्यउ पियु पेखि हो राजेश्वर जी,
अम्हनइ मन वाल्हो राजन आपणुं जी।

राखी ऋषि नी रेखा हो राजेश्वर जी,
योगीन्द्र फिरि पाछउ जोयउ नहीं जी ॥४॥
वरस सातसह सीम हो राजेश्वर जी,
बहुली हो वेदन सही साध जी।
निरवाह्या व्रत ताम हो राजेश्वर जी,
देवलोक तीजइ हुवउ देवता जी ॥४॥
साधु जी सनतकुमार हो राजेश्वर जी,
चक्रवर्ती चौथउ तिहां थी चवी जी।
उत्तम लहि अवतार हो राजेश्वर जी,
शिव सुख लेस्यइ मुनिवर सास्वता जी ॥६॥
इंद्र परीच्या श्राय हो राजेश्वर जी,
हुँ बलिहारी जाऊं एहनी जी।
प्रणम्यां जायइ पाप हो राजेश्वर जी,
समयसुन्दर कहइ सुख सदा जी ॥७॥

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती गीतम्

जोवा आव्या रे देवता, रूप अनोपम सार।
गरव थकी विणसी गयउ, चक्रवर्ति सनतकुमार ॥१॥
नयण निहालउ रे नाहला, अबला करइ अरदास।
एकरस्यउ अवलोइयइ, नारी न मूंकउ नीरास ॥२॥न०॥
काया दीठी रे कारिमी, जाणयउ अथिर संसार।
राज रमणि सवि परिहरी, लीधउ संजम भार[१] ॥३॥न०॥

१ मणि माणिक भंडार

अम्हे अपराध न को कियउ, सांभलि तूँ भरतार ।
निपट न दीजइ रे छेहलउ, अबला कुण आधार ॥४॥न०॥
सनतकुमार मुनिसरू, नाण्यउ नेह लगार ।
काज समारचउ रे आपणउ, समयसुन्दर कहइ सार ॥५॥न०॥

इति श्री सनतकुमार चक्रवर्ती गीतम् ॥ २४ ॥

श्री सुकोशल साधु गीतम्

साकेत नगर सुखकंद रे, सहदेवी माता नंद रे ।
गढ़ मांहे कीधउ फंदरे, सुकोसलउ बाल नरिंद रे ॥ १ ॥
साधु सुकोसलउ रे, उपसम रस नउ भंडार ।
जिण लीधउ संजम भार, जिण पाम्यो भव नउ पार ॥ आं० ॥
कीर्तिधर नउ कियउ घात रे, सहदेवी पापिणी मात रे ।
सुकोसलइ जाणी वात रे, मुझ गइ भलउ तात संघात रे ॥२॥सा.॥
व्रत लीधउ तात नइ पास रे, चितउड़ रह्यउ चउमासि रे ।
तप संजम लील विलास रे, तोड़इ क्रम बंधण पास रे ॥३॥सा.॥
वागणि आवी विकराल रे, सवि लूरचुं तनु सुकुमाल रे ।
मुनि वेदन सही असराल रे, केवल पाम्यउ ततकाल रे ॥४॥सा.॥
सोना ना दीठा दांत रे, जाण्यउ पूरब विरतांत रे ।
अणसण लीधउ एकांत रे, वाघण पण थइ उपसांत रे ॥५॥सा.॥
सुकोशलउ कर्म खपाय रे, मुगति पहुँतउ मुनिराय रे ।
नाम लेतां नवनिधि थाय रे, समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥६॥सा.॥

श्री संयती साधु गीतम्

ढाल—वे बांधव वांदण चल्या, एहनी

कंपिल्ला नगरी धणी, संजती राजा नामो रे।
चतुरंग सेना परिवरचउ, गयउ मृगचरिजा कामो रे॥ १॥
संजती नइ खत्री मिल्यउ,दृष्टान्त कही दृढ़ कीधउ रे।
राज रिधि छोड़ी करी, इए राजा व्रत लीधउ रे॥ २॥
मृग देखि सर मूंकियउ, ते पड़चउ साध नइ पासो रे।
हा मन साध हएयउ हुवइ,तिण उपनउ मुनि त्रासउ रे॥ ३॥
साध कहइ मत बीहजे, मुझ थी अभया दानों रे।
अभय दान हिव आपि तुं, सुख दुख सहु नइ समानो रे॥ ४॥
प्रतिवूधउ रिधि परिहरी, आएयउ मनि उल्लासो रे।
संजम मारग आदरचउ, गइ मिलि गुरु पासो रे॥ ५॥
मारग मइं खत्री मिल्यउ, सुणि संजत सुविचारो रे।
हूं मोटउ रिधि मइं तजी, मत करइ तुं अहंकारो रे॥ ६॥
बीजे पण बहु राजवी, छोड़ी रिधि अपारो रे।
तप संजम करी आकरा पाम्यउ भव नउ पारो रे॥ ७॥
भरत सगर मघवा भला, चक्रवर्ती सनत कुमारो रे।
शांति कुंथु अरनाथ ए, तीर्थंकर अवतारो रे॥ ८॥
महा पदम हरिषेण जय, दसारणभद्द करकंडू रे।
दुमुह नमी नइ नगगई, उदायन राय अखण्ड रे॥ ९॥

सेऊ कामी नउ राजवी, विजय महाबल रायो रे ।
ए ·········· मुनीसरे, राज छोड्या कहिवायो रे ॥१०॥
ए सहु साध संबन्ध छइ, उत्तराध्ययन मझारो रे ।
समयसुंदर कहइ साधनइ, नामथी हुयइ निस्तारो रे ॥११॥

इति सयती साधु गीत ॥ ५० ॥
[पत्र १४ फूलचंद जी झाबक सं०]

श्री अंजना सुन्दरी सती गीतम्

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ एहनी ।

वन मांहे हनुमंत वेटउ जायउ,
मामउ मिल्यउ घर तेड़ि सिधायउ ।। अं० ।।७।।
पवनंजय आयउ अपणइ घरि,
दुख करि अंजना नउ बहु परि ।। अं० ।।८।।
काष्ट भक्षण करिवा ते लागउ,
मित्र मेली अंजणा दुख भागउ ।। अं० ।।९।।
सुख भोगवि संजम पणि लीधउ,
अंजणा सुंदरि वंछित सीधउ ।। अं०।१०।।
अंजणा सुंदरि सती रे शिरोमणि,
गुण गायउ श्री समयसुन्दर गणि ।। अं०।११।।

श्री नरमदा सुंदरी सती गीतम्

ढाल—साधजी न जाए रे पर घर एकलउ ।

नरमदा सुंदरी सतिय सिरोमणि,
चाली समुद्र मझारि ।
गीत गायन ना अंग लक्षण कह्या,
भरम पड़यउ भरतारि ।।१।।न०।।
राक्षस दीपइ मूँकी एकली,
कीधा विरह विलाप ।
बब्बर कूलइ काढउ ले गयउ,
प्रगट्या तिहां वलि पाप ।।२।।न०।।

वेश्या नइ राजा नइ वसि पड़ी ,
मुहकम दीधी मारि ।
गहिली काली थइ गलिए भमइ,
पणि राख्यउ सील नारी ॥३॥न०॥
भरुयच्छ वासी जिणदास श्रावकइ,
पीहर मूँकी आणि ।
धरम सुणी नइ संजम आदर्यउ,
कठिन क्रिया गुण खाणि ॥४॥न०॥
अवधी न्यान साधवी नइ ऊपनूँ,
पहुँती सासू पासि ।
रिषिदत्ता दीधउ उपासरउ,
धइ उपदेस उलासी ॥५॥न०॥
स्वर लक्षण नउ भेद सुणावियउ,
प्रियउ करइ पश्चाताप ।
निरपराध मूँकी मइं नरमदा,
मइ कीधउ महापाप ॥६॥न०॥
दुक्ख म करि तु देवाणुप्पिया,
तुम्ह दूषण नहीं तेह ।
तेहनइ करमे ते दुखिणी थई,
तेहू नरमद एह ॥७॥न०॥

प्रियु प्रतिबोधउ नरमदासुंदरी,
पहुँती सरग मझारि ।
समयसुंदर कहइ सील वखाणतां,
पामीजइ भव पारि ॥८॥न०॥

इति नरमदा सुन्दरी सती गीतं ॥६॥

श्री ऋषिदत्ता गीतम्

ढाल—जिणवर सु' मेरउ मन लीणउ, ए गीतनी

रुक्मणी नइ परणवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ नाम रे ।
रिसिदत्ता तापस नी पुत्री,
दीठी अति अभिराम रे ॥ १ ॥
रिसिदत्ता रूपइ अति रूयड़ी,
सील सुरंगी नारि रे ।
नित उठी नइ नाम जपंता,
पामीजइ भव पारि रे ॥ २ ॥ रि० ॥
रिषिदत्ता परणी घरि आव्यउ,
सुख भोगवइ सुविवेक रे ।
रुक्मणी पापिणी रीस करीनइ,
मूंकी जोगणी एक रे ॥ ३ ॥ रि० ॥

माणस मारि मांस ले मूँकइ,
रिषिदत्ता नइ पासि रे ।
लोही सुं मूँहडउ वलि लेपइ,
आवी निज आवासि रे ॥ ४ ॥ रि० ॥
राक्षसणी जाणी राय कोप्यउ,
गद्दह ऊपरि चाडि रे ।
कलंक दई नइ वाहिर काढी,
सारउ नगर भमाड़ि रे ॥ ५ ॥ रि० ॥
मारण खड्ग देखि नइ महिला,
धरती पड़ी अचेत रे ।
मुँइ जाणी चंडालइ मूँकी,
चरम सरीरी हेत रे ॥ ६ ॥ रि० ॥
सीतल वाय सचेतन कीधी,
पहुँती वाप नइ ठाम रे ।
पुरुष थई औषधि परभावइ,
रिषिदत्त तापस नाम रे ॥ ७ ॥ रि० ॥
वलि रुकमणी परणेवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ तेइ रे ।
तिण ठामइ तापस मिल्यउ तेडजि,
प्रगट्यउ परम ससनेह रे ॥ ८ ॥ रि० ॥

तापस साथि लीयउ वीनति करि,
परणी रुकमणी नारि रे ।
एक दिन कहइ रिपिदत्ता सुं प्रियु,
केहवउ हूतउ प्यार रे ॥ ६ ॥ रि० ॥
जीवन प्राण हुंती ते माहरइ,
तव रुकमणी कहइ एम रे ।
पणि राचसणी दोस देइनइ,
मइ दुख दीधउ केम रे ॥१०॥ रि० ॥
रुकमणि नइ निभ्रंछि नांखी,
काष्ट भक्षण करइ राय रे ।
मुई पणि मेलुं रिपिदत्ता,
कहइ मुनि करउ जउ पसाय रे ॥११॥ रि० ॥
कहइ राजा मांगइ ते आपुँ,
राखउ थांपणि सुझ रे ।
आप मरी नइ रिपिदत्ता नइ,
देई मूँकिसि तुज्झ रे ॥१२॥ रि० ॥
इम कहिनइ परियछि मांहि पइठउ,
ऊपधि कीधी दूर रे ।
रिपिदत्ता रमझमती आवी,
प्रगट्यउ पुण्य पडूर रे ॥१३॥ रि०।
रिपिदत्ता लेई घरि आव्यउ,
पणि मित्र नं करड टस रे ।

रिपिदत्ता कहइ ते मित्र आ हूं,
भेद कह्यउ थयउ सुक्खु रे ॥१४॥ रि० ॥
रिपिदत्ता मांगइ थांपणि वर,
रुकमणि सुं करउ रंग रे।
रिपिदत्ता नीं देखउ रूड़ाई,
देखउ सील सुचंग रे ॥१५॥ रि० ॥
रिपिदत्ता प्रिय सुं सुख भोगवी,
लीधउ संजम भार रे।
केवल न्यान लह्युं तप जप करी,
पाम्यउ भव नउ पार रे ॥१६॥ रि० ॥
रिपिदत्ता राणी रूड़ी परि,
पाल्युं निरमल सील रे।
समयसुंदर कहइ मुगति पहूँती,
लांधां अविचल लील रे ॥१७॥ रि० ॥

॥ इति रिपिदत्ता गीतम् ॥

श्रीदवदंती सती भास

हो सायर सुत सुहामणा, सुहामणा रे,
हो सांभलि सुगुण संदेस।
हो गगन मंडल गति ताहरी, ताहरी रे,
हो देखइ सगला तूँ देस ॥१॥

चांदलिया संदेसउ रे, कहे म्हारा कंतइ रे,
थारी अबला करइ रे अंदेश। अ०
नाहलिया विहूणी रे नारि हूं क्युं रहुं रे। आंकणी॥
हो वालिभ मइं तुंनइ वारियउ, वा० रे,
हो जूयटइ रमिवा तूँ म जाइ।
हो राज हारी तूँ निसरचउ, नी० रे,
वन मांहि गयउ विलखाइ ॥२।व०।चा०॥
हो नल तुझ सुं हूं नीसरी सुं, नी० रे,
हो आंगमि लीधउ दुख आध।
हो तूं मुझ नइ मूँकी गयउ, मु० रे,
हो इवड़उ किसउ अपराध ॥३।इव.।चा.॥
हो सती मूँकी कांइ सती, कांइ सती रे,
प्रमदा न जाणी तइं पीर।
हो हाथे जिण परणी हुँती, परणी हुँती रे,
हो चतुर कपाणउ किम चीर ॥४।च.।चां.॥
हो झबकि जागी लगी झूरिवा, झूरि वा० रे,
हो प्रिउ तूं न दीठउ रे पासि।
हो वनि वनि जोयउ तूं नइ वालहा, वा० रे,
हो साद किया सउ पंचास ॥५।सा.।चां.॥
हो निरति न पामी थारी नाहला, ना० रे,
हो पग पग मृगली रे पूठि।

हो रोई रोई मुंह हूं रान० मइं, रान० रे,
हो महियलि पड़ी हूं मूरछि ॥६॥म.॥चां.॥
हो कीधुं ते न को करइ, न को करइ रे,
पुरुषां गमाड़ि परतीति ।
हो वेसास भागउ हिव वालहा रे, हो० रे,
हो पुरुषां सुं केही प्रीति ।७॥पु.।चां.॥
हो दृष्टान्त थारउ नल दाखिस्यइ रे, दा० रे,
हो कवियण केरी रे कोड़ी ।
हो पुरुष कूड़ा घणुँ कपटिया रे, हो क० रे,
हो खरो लगड़ी तइं खोड़ि ॥८॥ख.।चां.॥
हो वस्त्र अक्षर वांच्या वालहा रे, हो वा० रे,
हूं पीहरि चाली परभाति ।
हो कंत विहूणी कामणी रे, हो कामणो रे,
हो पीहरि भली पंच राति ॥६। पी.।चा.॥
हो वलण वेगी करे वालहा रे, हो वा० रे,
हूँ राखीसि सील रतन्न ।
हो लेख मिटइ नहीं विहि लिख्या, हो० रे,
हो झूठा कीजइ ते जतन्न ॥१०॥झू.।चां.॥
हो वारै वरसे बे मिल्या हो, बे मिल्या रे,
नल दवदंती नर नारि ।
हो भावना समयसुंदर भणइ,सुंदर भणइ रे,
हो सीयल वडउ संसार ॥११॥सी.।चां॥

श्री दमयन्ती सती गीतम्

ढाल—धन सारथवाह साधु नइं, एहनी

नल दवदंती नीसरचा,
जूयढइ हारचउ देस नल राजा ।
वन मांहि राति वासउ वस्या,
सूता भूमि प्रदेस नल राजा ॥१॥
मुझ नइ मुंकी तूं किहां गयउ,
अबला कुण आधार नल राजा ।
साद करइ सगलो दिसइ,
दवदंती निज नारि नल राजा ॥२॥मु०॥
दवदंती सूती थकी,
मूकी गयउ नल राय नल राजा ।
वस्त्र ऊपरि अक्षर लिख्या,
सासरइ पीहरि जाय नल राजा ॥३॥मु०॥
दवदंती देखइ नहीं,
नयण सलूणउ नाह नल राजा ।
द्यइ ओलंभा दैव नइ,
दुख करइ मन मांहि नल राजा ॥४॥मु०॥
हे हे पुरुष कठिन हिया,
पुरुष नउ केहउ वेसास नल राजा ।

इम अबला नइ एकली,
कुण तजइ वन वास नल राजा ॥५॥मु०॥
दवदंती पीहर गई,
पाल्यउ निरमल शील नल राजा ।
समयसुंदर कहइ पियु मिल्यउ,
लाधा अविचल लील नल राजा ॥६॥मु०॥

इति नल दवदंती गीतम् ॥ ३४ ॥

श्री कलावती सती गीतम्

बांधव मूंकया बहिरखा रे, बहिनइ पहिरया बांहि ।
आसीस दीधी एहवी रे, चिरजीवे जग मांहि ॥१॥
कलावती सती रे सिरोमणि जाण ।
काप्या हाथ आव्या नवा रे, सील तणइ परमाणि ॥आं॥
संखे आसीस सांभली रे, भरम पड़्यउ भरतार ।
एहनउ अनेरउ वालहउ रे, मूंको दंडाकार ॥क०॥२॥
चंडाले हाथ कापिया रे, जायउ पुत्र रतन्न ।
हाथ नहीं हुई वेदना रे, जीव नी हिंसा अधन्न ॥क०॥३॥
सूड़ा नी पांख खोसी हुँती रे,आव्या उदय ते कर्म ।
कर्म थी को छूटइ नहीं रे, जीवनी हिंसा अधर्म ॥क०॥४॥
सीलइ सुर सानिधकरी रे, तुरत आव्या ते हाथ ।
पुत्र सोनानइ पालणइ रे, पउढाड़यउ सुख साथ ॥क०॥५॥
राजा वात ए सांभली रे, अचरज थयउ मन एह ।
आणी आडंबर सु घरे रे, वाध्यउ अधिक सनेह ॥क०॥६॥
जीवदया सहु पालज्यो रे, पालज्यो सुधूं सील ।
समयसुंदर कहइ सील थी रे,लहिस्यउ आणंद लील ॥क०॥७॥

श्री मरुदेवी माता गीतम्

मरुदेवी माताजी इम भणइ,
सुणि सुणि भरत सुविचार रे ।

तूँ थयउ सुख तणउ लोभियउ,
न करइ म्हारा रिषभ नी सार रे ॥ म. ॥ १ ॥
सुरनर कोड़ि सुं परिवरयउ,
हींडतउ वनिता मझार रे ।
आज भमइ वन एकलउ,
ऋषभजी जगत आधार रे ॥ म. ॥ २ ॥
राज लीला सुख भोगियउ,
म्हारउ रिषभ सुकुमाल रे ।
आज सहइ ते परिसहा,
भूख तृषा नित काल रे ॥ म. ॥ ३ ॥
हस्ति ऊपर चढ्यउ हींडतउ,
आगलि जय जय कार रे ।
आज हींडइ रे अल वाहणउ,
चिहुं दिसि भमर गुंजार रे ॥ म. ॥ ४ ॥
सेज तलाइ में पउढतउ,
वर पट फूल विछाइ रे ।
आज तउ भूमि संथारड़उ,
बइठड़ां रयणी विहाइ रे ॥ म. ॥ ५ ॥
मस्तकि छत्र धरावतउ,
चामर वींजता सार रे ।
आज तउ मस्तकइ रवि तपइ,
डांस मसक भयकर रे ॥ म. ॥ ६ ॥

इम मुझ दुख करंतड़ा,
रोवंता रात नइ दीसरे।
नयणे अंध पडल वल्या,
मोहनी विषम गति दीस रे ॥ म. ॥ ७ ॥

तिण समइ आवि वधावणी,
ऋषभ नइ केवल नाण रे।
सांभलि भरत नरेसरू,
वांदिवा जायइ जगभाण रे ॥ म. ॥ ८ ॥

मरुदेवी गज चड्या मारगइ,
सांभल्या वाजित्र तूर रे।
देव दुंदुभि प्रभु देसना,
झटकि पडल गया दूर रे ॥ म. ॥ ९ ॥

प्रभु तणी रिधि देखी करी,
चिंतवइ मरुदेवी मात रे।
हूतउ आवइउ दुख करू,
रिषभ नइ मनि नहीं वात रे ॥ म. ॥ १० ॥

एतला दिवस मइं मुझ भणी,
नवि दियउ एक संदेश रे।
कागल मात्र नवि मोकल्यउ,
नवि करचउ राग नउ लेश रे ॥ म. ॥ ११ ॥

धिग धिग एह संसार नइ,
आवियउ परम वइराग रे।
किम प्रतिबंध जिनवर करइ,
ए अरिहंत नीराग रे ॥ म. ॥ १२॥
गज चढ्यां केवल ऊपनुं,
पाम्यउ मुगति नउ राज रे।
सुरनर कोड़ि सेवा करइ,
भरत वंद्या जिनराज रे ॥ म. ॥ १३॥
नाभिरायां कुल चंदलउ,
मरुदेवी मात मल्हार रे।
समयसुंदर सेवक भणइ,
आपजो शिव सुख सार रे ॥ म. ॥ १४॥

श्री मृगावती सती गीतम्

चंद सूरज वीर वांदण आव्या,
निरति नहीं निसदीस ।
मृगावती तिण मउड़ी आवी,
गुरुणी कीधी रीस ॥ १ ॥
मृगावती खामइ वे कर जोड़ि ।
चंदना गुरुणी हुँ चरणे लागुं,
ए अपराध थी छोड़ि ॥मृ० ।२॥आंकणी॥

मिच्छामि दुक्कड़ दइ मन सुद्धे,
    मूकी निज अभिमान ।
पोतानउ दूषण परकास्यउ,
    पाम्यउ केवल ज्ञान ॥ मृ०॥३॥
चंदन बाला केवल पाम्यउ,
    करती परचाताप ।
समयसुंदर कहइ बे मुगति पहुँती,
    नाम लियां जायइ पाप ॥ मृ० ॥४॥

श्री चेलणा सती गीतम्

वीर वांदी वलतां थकां जी,
    चेलणा दीठउ रे निग्रंथ ।
वन मांहि काउसग रह्यउ जी,
    साधतउ मुगति नो पंथ ॥१॥
वीर वखाणी राणी चेलणा जी,
    सतिय सिरोमणि जाण ।
चेडा नी साते सुता जी,
    श्रेणिक सील प्रमाण ॥२॥ वी०॥
सीत ठंठार सबलउ पड़इ जी,
    चेलणा प्रीतम साथि ।

चारित्रियउ चित मांं वस्यउ जी,
सोवड़ि बाहिर रह्यउ हाथि ॥३॥वी०॥
भबकि जागी कहइ चेलणा जी,
किम करतउ हुस्यइ तेह ।
कुसती नइ मन कुण वस्यउ जी,
श्रेणिक पड़चउ रे संदेह ॥४॥वी०॥
अंतेउर परिजालज्यो जी,
श्रेणिक दियउ रे आदेस ।
भगवंत सांसउ भांगियउ जी,
चमक्यउ चित्त नरेस ॥५॥वी०॥
वीर वांदी वलतां थकां जी,
पइसतां नगर मझार ।
धूंआ नउ धोर देखी करी जी,
जा जा रे अभयकुमार ॥६॥वी०॥
तात नउ वचन पाली[1] करी जी,
व्रत लीयउ हरष[2] अपार ।
समयसुन्दर कहइ चेलणा जी,
पाम्या भव तणउ पार ॥वी० ॥ ७॥

---

१ पालयउ तिहां जी. २ अभयकुमार

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजमती मन रंग, चाली जिण वंदन हे राजुल चाह सूँ ।
साधवी सील सुचंग, गिरनारि पहुंता हे राजुल गहकती । १ ॥
मारगि वूठा मेह, चीवर भीना हो राजुल चिहुँ गमा[1] ।
गईय गुफा मांहि गेह, [2]साड़लउ उतारचउ हे राजुल सुंदरी ॥२॥
देखि उघाड़ी देह, प्रारथना कीधा हो रहनेमि पाड़ई ।
अद्भुत जोवन एह, सफल करीजइ हे राजुल सुन्दरी ॥ ३ ॥
साधवी कहइ सुण साध, विषय तणा फल हो रहनेमि विषसमा ।
आपइ दुख अगाध, दुर्गति वेदन हो रहनेमि दोहिली ॥ ४ ॥
चतुर तुं चित्त विचार, आपे केहवइ कुलि हो रहनेमि ऊपना ।
इण वातइ अणगार, लौकिक न लहियइ हो रहनेमि लोकमइ ॥ ५॥
साधवी वचन सुणि एम, पाछउ मन वाल्यउ हो रहनेमि पाप थी।
कुवचन कह्या मइं केम,अति पछताणउ हो रहनेमि आप थी ।६।
अरिहंत चरणे आवि,पाप आलोया हो रहनेमि आपणा[3] ।
खिण मांहि करम खपावि, मुगति पहुंतउ हो रहनेमि मुनिवरु ।७।
राजमती रहनेमि, सील सुरंगा हो सहु को सांभलउ ।
जायइ पातक जेम, भाव भगति हो समयसुन्दर भणइ ।८।

॥ इति रहनेमि गीतम् ॥

---

१ दिसा. २ माथवी उतारयउ हे राजुल साड़लउ. ३ पाछिल्या.

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राग-रामगिरी

रूडा रहनेमि म करिस्यउ म्हारी ख्यालि ।
मुहडइ बोलि संभालि रे,
हुं नहीं छुं भे (? ने) वाली रे । र० । म० ।
सुणि एहवी वात जउ सांभलस्यइ,
गुरु देस्यइ तुझ नइ गालि रे । र० ॥ १ ॥
जोरइ प्रीति न होयइ जादव,
एक हथि न पडइ तालि रे ।
समयसुन्दर कहइ राजुल वचने,
रहनेमि लीधुं मन वालि रे । र० ॥ २ ॥

इति राजुल रहनेमि गीतम् ॥

पं० रंगविमल लिखितम् ॥ शुभंभवतु ॥ छः ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम

ढाल-किहां गयउ नल किहां गयउ; एह दमयंती ना गीत नी ।

यदुपति वांदण जावतां रे, मारगि वूठा मेहो रे ।
गुफा मांहि राजुल गई रे, वस्त्र ऊगविवा देहो रे ।१।
दूरि रहउ रहनेमि जी रे, वचन संभाली बोलउ रे ।
राजमती कहइ साधजी रे, मारग थी मत डोलउ रे ।२। दू.।

अंग उघाड़ा देखिनइ रे, जाग्यउ मदन विकारो रे।
मुनिवर प्रारथना करइ रे, ल्यउ जोवन फल सारो रे।३। दू.।
राजमती कहइ आंपणउ रे, उत्तम कुल संभारउ रे।
विषय तणां फल पाडुया रे, साधजी चित्त विचारउ रे।४। दू.।
सतिय वचन इम सांभलि रे, वइरागइ मन वाल्यउ रे।
समयसुन्दर रहनेमि जी रे, सील अखंडित पाल्यउ रे।५। दू.।

इति श्री रथनेमि गीतम् सं० ॥ ४ ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजुल चाली रंगसुं रे लाल, यदुपति वंदण जाइ सुकुलीणी रे।
मेह सुं भीनी मारगे रे लाल, ऊभी गुफा मांहे आइ सुकुलीणी रे।१।
राजुल कहइ रहनेमि जी रे लाल, मत कर म्हारी आलि सुकुलीणी रे।
आपां कया कुले उपन्या रे लाल, चतुर तुं चारित पाल सुकुलीणी रे २।
अंग उघाड़ा देखि नइ रे लाल, चूक्यउ रहनेमि चित्त सुकुलीणी रे।
आव आपे सुख भोगवां रे लाल, पालस्यां पूरव प्रीत सुकुलीणी रे।३।
लौकिक न रहइ लोकमां रे लाल, विषय थकी मन वाल सुकुलीणी रे।
काम भोग भुंड्या कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु० रे।४।
दूध उफाणे दूर कियउ रे लाल, राख्यउ नइ रहनेमि शील सुकु०।
समयसुंदर साबास घइ रे लाल, ... सुकुलीणी रे।५।

श्री सुभद्रा सती गीतम्

मुनिवर आव्या विहरता जी, झरती दीठी आंखि।
जीभ संवाति काढियउ जी, तरणुं ततखिण नाँखि ॥१॥
जग मांहे सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जाण।
विनयवंत श्रावक सुणउ जी, सील रयण गुण खाण ॥ज.॥आं.॥
तिलक रंग लागउ तिहां जी, मुनिवर भाल विसाल।
दुसमण लोक कलंक दियउ जी, काउसग्गि रही ततकाल ।ज.।२।
सासण देवत इम कहइ जी, म करे चिंत लगार।
ताहरउ कलंक उतारिस्युं जी, जिन सासन जयकार ॥ज. ॥३॥
काचे तांतण ध्रत्र नइ जी, चालणी काढ्युं नीर।
चंपा बार उघाड़ियउ जी, सीले साहस धीर ॥ज. ॥४॥
मन वचने काया करउ जी, सील अखंड संसार।
समयसुंदर वाचक कहइ जी, सती रे सुभद्रा नार ।ज. ॥५॥

श्री द्रौपदी सती भास

ढाल—मांगी तूंगी रे बलभद्र जइ रह्या रे, एहनी.

पांच भरतारी नारी द्रुपदी रे, तउ पणि सतीय कहाय रे।
नारी नियाणुं कीधुं भोगवइ रे, करम तणी गति कांइ रे ।१। पं.।
जुधिष्टिर नइं पासइ हुंती रे, देवता आणी दीध रे।
पदमनाभइ घणुं प्रारथी रे, पणि सत साहस कीध रे ।२। पं.।

छम्मास सीम आंबिल किया रे, राख्यु सील रतन्न रे।
पाछी आणी वलि पांडवे रे, पणि श्रीकृष्ण जतन्न रे।३।पं.।
सील पाली संजम लियउ रे, पाँचमइ गई देवलोकि रे।
माहविदेह मइ सीझस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे।४।पं.।
द्रूपद रायतणी तणया रे, पांच पांडव नी नारि रे।
समयसुन्दर कहइ द्रूपदी रे, पहुँती भव तणइ पारि रे।५।पं.।

(१) श्री गौतम स्वामी अष्टक

प्रह ऊठी गौतम प्रणमीजइ, मन वंछित फल नउ दातार।
लबधि निधान सकल गुण सागर,श्रीवद्धमान प्रथम गणधार।प्र.१।
गौतम गोत्र चउद विद्यानिधि, पृथिवी मात पिता वसुभूति।
जिनवर वाणी सुणया मन हरखे, बोलाव्यो नामे इन्द्रभूति।प्र.२।
पंच महाव्रत ल्याइ प्रभु पासे, धै त्रिपदी जिनवर मनरंग।
श्री गौतम गणधर तिहां गूंथ्या, पूरव चउद दुवालस अंग।प्र.३।
लब्धे अष्टापद गिरि चडियउ, चैत्यवंदन जिनवर चउवीस।
पनरेसै तीड़ोत्तर तापस, प्रतिबोधि कीधा निज सीस।प्र.४।
अद्भुत एह सुगुरु नो अतिसय, जसु दीखइ तसु केवल नाण।
जाव जीव छठ छठ तप पारणइ,आपण पइ गोचरीय मध्यान्ह।प्र.५।
कामधेनु सुरतरु चिन्तामणि, नाम मांहि जस करे रे निवास।
ते सदगुरु नो ध्यान धरंता, लाभइ लच्मी लील विलास।प्र.६।

लाभ घणो विणजे व्यापारइ, आवे प्रवहण कुशले खेम।
ए [१]सदगुरु नो ध्यान धरंता, पामइ पुत्र कलत्र बहु प्रेम।प्र.७।
गौतम स्वामि तणा गुण गातां, अष्ट महासिद्धि नवे निधान।
समयसुन्दर कहइ सुगुरु प्रसादे, पुण्य उदय प्रगट्यो परधान।प्र.८।

(२) श्री गौतम स्वामी गीतम्

ढाल—भीली नी

मुगति समय जाणी करी जी रे जी,
वीरजी मुझ नइ मूंक्यउ दूरि रे।
मइ अपराध न को कियउ जी रे जी,
वीरजी रहतउ तुम्ह हजूरि रे॥ वी०॥१॥
वीर जी वीर जी किहां गयउ जी रे जी,
वीर जी नयणे न देखूं केम रे।
तुम पाखे किम हूं रहूं जी रे जी,
वीरजी साचउ तुम्ह सुं प्रेम रे॥ वी०॥२॥
जाण्युं आडउ मांडस्यइ जी रे जी,
वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे।
विलवलतां मूकी गयउ जी रे जी,
वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे॥ वी०॥३॥

१ श्री गौतम गुरु.

वीर वीर केहनइ कहूं जी रे जी,
वीरजी हिव हू प्रश्न करूँ किण पासि रे।
कुण कहस्यइ मुझ गोयमा जी रे जी,
वीरजी कुण उत्तर देस्यइ उल्हासि रे ॥ वी०॥४॥

हा हा वीर तइं स्युं करयुं जी रे जी,
गौतम करत अनेक विलाप रे।
जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी,
जिवड़ा तेतलउ हुयइ पछताप रे ॥ वी०॥५॥

जगि मांहे को केहनुं नहीं जी रे जी,
गौतम वाल्युं मन वइराग रे।
मोह पडल दूरे करचा जी रे जी,
गौतम जाण्युं जिन नीराग रे ॥ वी०॥६॥

गौतम केवल पामियुं जी रे जी,
त्रिभुवन हरख्या सुरनर कोडि रे।
पाय कमल गौतम तणा जी रे जी,
प्रणमइ समयसुन्दर कर जोड़ि रे ॥ वी०॥७॥

(२) श्री गौतम स्वामी गीतम्

राग—परभाती

श्री गौतम नाम जपउ परभाते, रलिय रंग करउ दिन राते ॥१॥

भोजन मिष्ट मिलइ बहु भांते, शिष्य मिलइ सुविनीत सुजाते ॥२॥
वाधइ कीरति जग विख्याते, समयसुन्दर गौतम गुण गाते ॥३॥

एकादश गणधर गीतम्

राग—वेलाउल

प्रात समइ उठि प्रणमियइ, गिरुया गणधार ।
वीर जिणंद वखाणिया, अनुपम इग्यार ॥ प्रा०।१।
इन्द्रभूति श्री अग्नि भूति, वायुभूति कहाय ।
व्यक्त सुधरमा स्वामि स्युं, रहियइ चित लाय ॥ प्रा०।२।
मंडित मौरिपुत्र ए, अकंपित उल्हास ।
अचलभ्राता आखियइ, मेतार्य प्रभास ॥ प्रा०।३।
ए गणधर श्री वीर ना, सुखकर सुविशाल ।
थाज्यो माहरी वंदना, समयसुन्दर तिहुँ काल ॥ प्रा०।४।

गहूँली गीतम्

प्रभु समरथ साहिब देवा रे, माता सरसति नी करुं सेवा रे।
सुध समकित ना फल लेवा रे, हुं तो गाइस गुरु गुण मेवा रे।१।
मुनिराया रे ॥
गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, शुद्ध किरिया मांहि धूरा रे।
तप बारे भेदे शूरा रे, शियल व्रत सनूरा रे। मु.।२।
गुरु जीवदया प्रतिपालइ रे, पंच महाव्रत सूधा पालइ रे।
बेंतालीस दोष निवारइ रे, गुरु आतम तत्त्व विचारइ रे। मु.।३।

श्रीजिनपति सूरीसर राय, सूरि जिणेसर प्रणमुं पाय ।
जिन प्रबोध गुरु समरूं सदा, श्रीजिनचंद्र मुनीसर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री कुशल मुणिंद, श्रीजिनपदमसूरि सुखकंद ।
लब्धिवंत श्री लब्धि सूरीश, श्री जिनचंद नमूं निशदीस ॥५॥
सूरि जिनोदय उदयउ भाण,श्री जिनराज नमूं सुविहाण ।
श्री जिनभद्रसूरीसर भलउ, श्री जिनचंद्र सकल गुण निलउ ।६।
श्री जिनसमुद्रसूरि गच्छपती, श्री जिनहंससूरिसर यती ।
जिनमाणकसूरि पाटे थयउ, श्रीजिनचंद सूरीसर जयउ ॥७॥
ए चौवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट ।
ते पामइ मन वंछित कोड़, समयसुंदर पभणइ कर जोड़ि ॥८॥

इति श्रीखरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिता च पं० समयसुन्दरेण ।
(जयचदजी भडार गु० न० २५)

गुर्वावली गीतम्

राग—नट्टनारायण जाति कड़खा

उद्योतन वर्द्धमान जिनेसर, जिनचंदसूरि अभयदेवसूरि ।
जिनवल्लभसूरि जिनदत्त जिनचंद,श्री जिनपतिसूरि गुण भरपूरि ॥१॥
ए जु श्रीजिनपतिसूरि गुण भरपूर नइ,
श्रीगुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ॥
जिनेसरसूरि प्रबोधसूरि जिनचंदसूरि, कुशलसूरि पदमसूरिंद ।
लब्धिसूरि जिनचंद जिनोदय, श्री जिनराजसूरि सुखकंद ॥

भद्रसूरि जिणचंद समुद्रसूरि, हंससूरि चोपड़ा कुलचंद ।
जिन माणिकसूरि श्रीजिनचंदसूरि, श्रीजिनसिंघसूरि चिर नंद ॥२॥
एजु श्रीजिनसिंहसूरि चिर नंदइ,
श्री गुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ॥
सुधरम सामि परंपरा चंद कुल, वयर सामि नी साखा जाण ।
खरतर गच्छ भट्टारक गिरुया, परगच्छि ए पण क्रिया प्रमाणि ।
पाखी आठमि नी चउमासइ, गुरावलि गीत सुणो वखाणि ।
श्रीसंघ नइ मंगलीक सदाइ, समयसुन्दर बोलति मुख वाणि ॥३॥

दादा श्री जिनदत्तसूरि गीतम

दादाजी वीनती अवधारो । दा० ।
वड़ली नगर श्री शांति प्रासादे, जागतउ पीठ तुम्हारो ॥ दा. ।१॥
तूँ साहिब हूं सेवक तोरो, वंछित पूर हमारो ।
प्रारथियाँ पहिड़इ नहीं उत्तम, ए तुमे वात विचारो ॥ दा. ।२॥
सेवक सुखियां साहिब सोभा, ते भणी भक्त संभारो ।
समयसुंदर कहइ भगति जुगति करि, जिनदत्तसूरि जुहारो ॥दा. ।३॥

दादा-श्रीजिनकुशलसूरिगुरोरष्टकम्

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा-प्रवरकेशरचर्चितपत्कजम् ।
मरुधुमुख्यगडालयमण्डनं, कुशलसूरिगुरुं प्रयत स्तवे ।१।

कति न सन्ति कियद्वरदायिनो, भुवि भवात् सुगुरुर्मयकाश्रितः।
सुरमणिर्यदि हस्तगतो भवेत्, किमपरैः किल काचकपर्दकैः ।२।
कठिनकष्टसमाकुलवर्त्मने, प्रवरसौख्यसमन्वितसद्मने ।
मम हृदि स्मरणं तव सर्वदा, भवतु नाम जयस्तु मुदास्पदे ।३।
विकटसङ्कटकोटिषु कल्पिता, तनुभृतां विषमा नियमा समा ।
सुगुरुराज तवेप्सित दर्शना–दनुभवन्ति मनोरथपूर्णता ।४।
नृपसभासु यशो बहुमानतां, विवदमानजने जयवादताम् ।
सुपरिवार-सुशिष्य-परम्परा–स्तव गुरो सुदृशस्फुरवेतराम् ।५।
न खलु राजभयं न रणाद्भयं, न खलु रोगभयं न विपद्भयम् ।
न खलु बन्दिभयं न रिपोर्भयं, भवतु भक्तिभृतां तव भूस्पृशाम् ।६।
अपर-पूर्व-सुदक्षिण-मण्डले, मरुषु मालवसन्धिषु जङ्गले ।
मगध-माथुमतेष्वपि गूर्जरे, प्रति पुरे महिमा तव गीयते ।७।
मम मनोरथकल्पलता मता, कुशलसूरिगुरो फलिताऽधुनाम् ।
प्रबलभाग्यबलेन मया रयात्, यदमृतं ददृशे तव दर्शनम् ।८।

शशधरस्मरबाणरसक्षिति (१६५१),
अमितविक्रमभूपतिसंवति ।
समयसुन्दरभक्तिनमस्कृति,
कुशलसूरिगुरोर्भवताच्छ्रिये ॥९॥

दादा वरसे मेह नै रात अंधारी, वाय पिण सबलौ वायौ ।
पंच नदी हम बइठे बेड़ी, दरिये हो दादा दरिये चित्त डरायो जी ।२।।
दादा उच्च भणी पहुँचावण आयो, खरतर संघ सवायो ।
समयसंदर कहे कुशल कुशल गुरु, परमानंद सुख पायो जी। स.३।

—

देरावर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

देरावर दादो दीपतो रे,
डिग मिग कांइ डम डोल रे जात्रीड़ा ।
परचा दादो पूरवे रे लो,
तीरथ को इण तोल रे जात्रीड़ा ॥ १ ॥
बोहथ तारे दादो डूबतो रे लो,
अड़वड़ियां आधार रे जात्रीड़ा ।
समरथां दादो साद दचै रे लो,
सेवक अपणा संभाल रे जात्रीड़ा ॥ २ ॥
पुत्र पिण आपे अपुत्रियां रे लो,
निरधनियां नइ धन्न रे जात्रीड़ा ।
दुखियां ने भाजे दुख सही रे लो,
परतिख दादो प्रसन्न रे जात्रीड़ा ॥ ३ ॥
चिंता चूरे चित्तनी रे लो,
ए गुरु अंतरजामी रे जात्रीड़ा ।

कति न सन्ति किमद्धरदायिनो, भुवि भवाद् सुपुरुर्मयकाश्रितः।
सुरमणिर्यदि हस्तगतो भवेत्, किमपरैः किल काचकपर्दकैः ।२।
कठिनकष्टसमाकुलवर्त्मने, प्रवरसौख्यसमन्वितसद्मने ।
मम हृदि स्मरणं तव सर्वदा, भवतु नाम जपस्तु मुदाप्तये ।३।
विकटसङ्कटकोटिषु कल्पिता, तनुभृतां विषमा नियमा समा ।
सुगुरुराज तवेप्सित दर्शना-दनुभवन्ति मनोरथपूर्णता ।४।
नृपसभासु यशो बहुमानतां, विवदमानजने जयवादताम् ।
सुपरिवार-सुशिष्य-परम्परा-स्तव गुरो सुदृशस्फुरतेतराम् ।५।
न खलु राजभयं न रणाद्भयं, न खलु रोगभयं न विपद्भयम् ।
न खलु वन्दिभयं न रिपोर्भयं, भवतु भक्तिभृतां तव भूस्पृशाम् ।६।
अपर-पूर्व-सुदक्षिण-मण्डले, मरुषु मालवसन्धिषु जङ्गले ।
मगध-माथुमतेष्वपि गूर्जरे, प्रति पुरे महिमा तव गीयते ।७।
मम मनोरथकल्पलता मतां, कुशलसूरिगुरो फलिताऽधुनाम् ।
प्रबलभाग्यबलेन मया रयात्, यदमृतं ददृशे तव दर्शनम् ।८।

शशधरस्मरबाणरसक्षिति (१६५१),
- प्रमितविक्रमभूपतिसंवति ।
समयसुन्दरभक्तिनमस्कृति,
कुशलसूरिगुरोर्भवताच्छ्रिये ॥९॥

दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

आयौ आयो जी समरंता दादौ आयौ ।
संकट देख सेवक कुं सदगुरु, देराउर तें धायो जी ॥स.॥ १॥

समयसुंदर कहइ भावसुं रे,
नित प्रणमु सिर नामी रे जात्रीड़ा ॥ ४ ॥

दादा श्री जिन कुशल सूरि गीत

राग—वसंत

आज आणंदा हो आज आणंदा ।
भाव भगति परभाते भेट्या,
श्री जिन कुशल सूरीन्दा ॥ आ० ॥ १ ॥
आरति चिन्ता टालइ अलगी,
गुरु मेरो दूर करे दुख दंदा ।
जागतो पीठ आवे लोग जातर,
नर नारी ना वृंदा ॥ आ० ॥ २ ॥
साहिब हूँ तोरी करुं सेवा,
आठ पहर अरज बंदा ।
समयसुंदर कहइ सानिध करजो,
चंद कुलंबर चंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥

अमरसर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—मारुणी

दाखि हो मुझ दरिसण दादा, श्रीजिनकुशल करि सुप्रसादा।
सेवक नइ समरथउ थइ सादा, जग सिगलउ जंपइ जसवादा। दा.।१।

असपति गजपति नृपति उदारा, इंद्र तणा दीसइ अवतारा।
पुत्र कलत्र अनइ परिवारा, ते सब तेज प्रताप तुम्हारा। दा.।२।
नर नारी आपद निस्तारा, अड़वड़ियां नइ तूं आधारा।
परतिख परता पूरणहारा, मनवंछित फल पूरि हमारा। दा.।३।
नयर अमरसर थुंभ निवेशा, प्रसिद्धि घणी प्रगटी परमेसा।
सेव करइ सद्गुरु सुविशेषा, एह समयसुन्दर उपदेसा। दा.।४।

उग्रसेनपुर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

पंथी नइ पूछूं वातड़ी रे, तुमे आया उग्रसेनपुर थी आज रे।
तिहां दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्रीजिनकुशल सूरिराज रे ॥१॥
सुणो नइ गोरी तुम गुरु राजीया, अमे दीठा मारवाड़ मेवाड़ देस रे।
धर्म मारग परकास रे, आणंद लील विलास रे ॥२॥
संघ सहु सेवा करइ, राय राणा सहु द्यइ मान रे।
आइ नमइ सहु नर नार रे, महिमा मेरु समान रे ॥३॥
मेरो मन घणो ऊमह्यो रे, वांदूं मेरे गुरु ना पाय रे।
समयसुन्दर सेवता रे, श्री जिनकुशलसूरि गुरु राय रे ॥४॥

नागोर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम

उलट धरि अमे आविया दादा, भेटण तोरा पाय।
बे कर जोड़ी वीनवुं दादा, आरति दूरि गमाय ॥१॥

इण रे जगत्र मइं, नागोर नगीनइ दादो जागतउ।
भाव भगति सुं भेटंतां, भव दुख भागतउ ॥ इण रे०॥
को केहनइ को केहनइ, दादा भगत आराधइ देव।
मइं इक तारी आदरी दादा, एक करूँ तोरी सेव ॥ इण.॥२॥
सेवक दुखिया देखतां दादा, साहिब सोभ न होय।
सेवक नइ सुखिया करइ दादा, साचो साहिब सोय ॥ इण. ॥३॥
श्री जिनकुशल सूरीसरु दादा, चिंता आरति चूरि।
समयसुन्दर कहइ माहरा दादा, मन वंछित फल पूरि ॥ इण.॥४॥

श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—भैरव

पाणी पाणी नदी रे नदी, सांनिध करो दादा सदी रे सदी। पा.।१।
ध्यान एक दादइ जी रो धरतां, कष्ट न आवइ कदी रे कदी। पा.।२।
समयसुंदर कहइ कुशल कुशल गुरु,समरयां साद द्यै सदी रे सदी।३।

पाटण मंडन श्री जिनकुशलसूरि गीतम

राग—मल्हार

उदउ करो संघ उदउ करो, विनती करइ श्री संघ दादाजी।उ.।
ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, द्रव्य भरो भंडार दादाजी।
मणि माणक मोती बहु, पुत्र कलत्र परिवार दादाजी।उ.।१।

आधि व्याधि आरति चिंता, संकट विकट विकार दादाजी।
दुख दोहग दूरइ हरउ, तुम्हे अड़वड़ियां आधार दादाजी।उ.।२।
सदगुरु समरयां साद द्यउ, सेवक नी करउ सार दादाजी।
परतिख परता पूरवउ, तुम्हे जागती ज्योत उदार दादाजी।उ.।३।
पूजउ गुरु पगला भला, पूनिम दिन बुधवार दादाजी।
केसर चंदन मृगमदा, अगर कुसुम अधिकार दादाजी।उ.।४।
गीत गावे तान मान सुं, मादल ना धौंकार दादाजी।
दान मान आपउ घणा, भावना भावउ उदार दादाजी।उ. ५।
श्रीजिनकुशलसूरीसरु, मन वंछित दातार दादाजी।
पाटण संघ पूरउ रली, भणइ समयसुन्दर सुविचार दादाजी।उ.।६।

अहमदाबाद मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादो तो दरसण दाखइ, दादो मोहिला सुखिया राखइ हो।
दादाजी दौलत दौ ॥
दादो तो चिंता चूरइ, दादो परतिख परता पूरइ हो।दा.।१।
दादो तो बिछड़ियां मेलइ, दादो ठींभर दुसमण ठेलइ हो।दा.।२।
दादो तो समरयां आवइ, दादो परघल लच्छमी लावइ हो।दा.।३।
दादो तो दुसमण दाटइ, दादो विघन हरइ वाट घाटइ हो।दा.।४।
दादो तो साचो जाणइ, दादो बोल ऊपर पिण आणइ हो।दा.।५।
दादो तो हाजरा हजूरइ, दादो अहमदाबाद पडूरइ हो।दा.।६।
दादो तो कुशल कहावइ, इम समयसुन्दर गुण गावइ हो।दा.।७।

दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादाजी दीजइ दोय चेला ।
एक भणइ एक करइ वेयावच्च, सेवक होत सोहेला ।दा०।१।
श्रीजिनकुशलसूरीसर सानिध, आज के काल वहेला ।
समयसुन्दर कहइ सीरणी बांटूं, गुन्दवड़ा गुल मेला ।दा०।२।

भट्टारक त्रय गीतम्

राग—आसावरी

भट्टारक तीन हुए बड़ भागी ।
जिण दीपायउ श्री जिन शासन, सबल पडूर सोभागी । भ०।१।
खरतर श्री जिनचंद सूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी ।
विधि पक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी । भ०।२।
मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक, पुण्य दशा हम जागी ।
समयसुंदर कहइ तत्त्व विचारउ, भरम जायइ जिम भागी । भ०।३।

—:o:—

जिनचंद्रसूरि कपाटलोहशृंखलाऽष्टकम्

श्रीजिनचन्द्रसूरीणां, जयकुञ्जरशृङ्खला ।
शृङ्खलो धर्मशालायां चतुरे किमसौ स्थिता ॥ १ ॥
शृङ्खला धर्म शालायां, भासितां पापनाशिनाम् ।
शिवसद्मसमारोहे, किमु सोपानसन्तति ॥ २ ॥

या पठ्यमानं मुनिभिः प्रकामं
श्रीपार्श्वनाम–प्रगुण–प्रकामम्।
श्रुत्वा स्वनाथोऽत्र ततः समागात्
सेवाकृतेहिः किल श्रृङ्खलाच्छलात् ॥ ३ ॥

वर्यसंयमसुन्दर्याः, केशपाशः किमङ्गतः ।
वराङ्गस्थितिराभाति, श्रृङ्खला श्यामलद्युतिः ॥ ४ ॥

कपाटे कृष्णवल्लीव, श्रृङ्खला शुशुभेतराम् ।
स्थापितेयं महामोह–नागनाशाय नित्यशः ॥ ५ ॥

पापपाश चरातङ्क–रक्षार्थं साधुमन्दिरे ।
ध्रुवं धर्म मरुद्धेनोरियं वन्धनश्रृङ्खला ॥ ६ ॥

महामोहमृगादीनां, पाशपाताय मण्डिता ।
श्रृङ्खलापाश लेखेन, धर्म शब्दातियोपणात् ॥ ७ ॥

सर्वतः छेद्यभेद्यादि–भीत्यैषा लोहश्रृङ्खला ।
धर्मस्थानस्थ साधूनां, शरणं समुपागता ॥ ८ ॥

इति कपाट लौह श्रृखलाष्टक सम्पूर्णम् ॥

यु० जिनचन्द सूरि गीतम्

आर्या ३

पणमिय पासजिणंदं, साणंदं सयललोयणाणंदं ।
श्रीजिणचंदमुणिंदं थुणामि भो भविय भावेण ॥१॥

सा धन्ना कयपुन्ना, जणणी जीवम्मि सयललोयम्मि ।
जं कुच्छीए पवरो, उप्पन्नो एरिसो पुत्तो ॥२॥
जह चंदस्स चकोरा, मोरा मेहस्स दंसणं पवरं ।
इच्छंति जस्स गुरुणो, सो सुगुरु आगउ इत्थ ॥३॥

छन्द गीता

सिरिवंत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नंदणो ।
वइरागि लहुवय लिद्ध संजम, भविय जण आणंदणो ॥
शुभ भाव समकित ध्यान समरण, पंच श्री परमिट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ४ ॥
श्री जैनमाणिकसूरि सद्गुरु, पाटि प्रगट्यउ दिनकरो ।
सुविहित खरतर गच्छनायक, धर्म भार धुरंधरो ॥
तप जप सुजयणा जुगति पालइ, मात प्रवचन अट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ५ ॥
जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महच्छव कियं ।

आरत्ति चिंता सयल चूरइं, पूरइं मन इट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ७॥
जो चउद विद्या पारगामी, सयल जण मण मोह ए।
अति मधुर देसण अमृत धारा, अबुह जिय पड़िबोह ए॥
कलिकाल गोयम सामि समवड़ि,वयण अमृत मिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ॥ ८॥
पुर नयर गामइं ठाम ठामइं,गुरु महोच्छव अति घणा।
कामिनी मंगल गीत गावइ, रलिय रंगि वधामणा॥
गुरुराज चरणे रंग लागउ, जाणि चोल मजिट्ठओ।
सो गुरु श्रीजिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ६॥
इक दियइ पाठक पद प्रधानं, वलिय वाचक गणि पदं।
इक दियइ दीक्षा सुगुरु शिक्षा, एक कुं सुख संपदं॥
इक माल रोहण भविय बोहण,जाणि सुरतरु तुट्ठओ।
सो गुरुं श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥१०॥

दोहा

इक दिन अकब्बर भूपति इम भाखइं,
मंत्रीसर कर्मचंद सु दाखइ।
तुम्ह गुरु सुणियइ गुज्जर खडइ,
सिद्ध पुरुप सुप्रताप अखंडइ॥ ११॥
वेगि बोलायउ लिखि फुरमाणं,
आदर अधिक देइ बहु माणं।

सुणि जिणचंद सूरि सुवखाणं,
जिम हम जैंन धरम पहिछाणं ॥ १२ ॥
तब मंत्रीसर वेगि बुलाए,
आडंबर मोटइ गुरु आए।
नर नारी मन रंगि वधाए,
पातिसाहि अकबर मनि भाए ॥ १३ ॥

छंद गीता

आवतां आदर अधिक दिद्धउ, पातिसाहि पर सिद्धओ।
लाहोर नयरि महा महोच्छव, सुजस श्री संघ लिद्धओ ॥
श्री पूज्य आया हुया आणंद, जाणि जलधर वुट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १४ ॥
प्रति दिवस अकबर साहि पुच्छइ, जैन धरम विचारओ।
प्रति बूझवइ गुरु मधुर वाणी, दया धरमह सारओ ॥
प्राणातिपातादिक महाव्रत, रात्रि भोजन छट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १५ ॥
रंजियउ अकबर साहि बगसइ, दिवस सात अमारि के।
वलि मच्छ छोरे नगर खंभाइत्त दरिया वारि के ॥
जो कियउ जुगह प्रधान पद दे, सब्बहि महं उकिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १६ ॥

जिण जाणि जुगतउ शिष्य जिणसिंघ,सूरि पाटइ थप्पिओ।
सइं हत्थि आचारिज्ज पद दे, सूरि मंत समप्पिओ ॥
अवलिया अकबर साहि हुकमइ हुयउ सुजस गरिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिनचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १७ ॥
संग्राम संभ्रम मंत्रि कर्मचन्द, कुल दिवाकर दीप्पिओ।
गुरु राज पद ठवणउ करायउ, सवा कोड़ि समप्पिओ ॥
आणंद वरत्या हुया उच्छव, वसुह मांहि वरिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १८ ॥

॥ कलश ॥

आज हुया आणंद, आज मन वंछित फलिया,
आज अधिक उछरंग, आज दुख दोहग टलिया।
श्री जिणचंद मुणिंद, सूरि खरतर गच्छ नायक,
रीहड़ कुलि सिणगार, सार मन वंछित दायक ॥
लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहुँ खंडि जस विथारिया।
कर जोड़ि समयसुंदर भणइ,श्री पूज्य भलइं पधारिया ॥१९॥

—:o:—

युगप्रधान-श्रीजिनचन्द्रसूर्यष्टकम्

ए जी संतन के मुख वाणि सुणी,
जिणचंद मुणींद महंत जती।

तप जप करइ गुरु गुर्ज्जर में,
प्रतिबोधत है भविकुं सुमति ॥
तब ही चित चाहन चूँप भई,
समयसुन्दर के प्रभु[1] गच्छपति ।
पठइ[2] पतिसाहि अजब्ब[3] की छाप,
बोलाए गुरु गजराज गति ॥१॥
एजी गुर्ज्जर तें गुरुराज चले,
बिच में[4] चौमास जालोर रहे ।
मेदिनीतट मंत्रि मंडाण कियो,
गुरु नागोर आदर मान लहै ॥
मारवाड़ रिणी गुरु वंदन को,
तरसै सरसै बिच वेग वहै ।
हरख्यो संघ लाहोर आये गुरु,
पतिसाह अकब्बर पांव गहै ॥२॥
एजी साहि अकब्बर बब्बर के,
गुरु सूरत देखत ही हरखे ।
हम योगी यति सिद्ध साधु व्रती,
सब ही षट दर्शन को[5] निरखे ॥
तप जप्प दया धर्म धारण को,
जग कोई नहीं इनके सरखे ।

१ गुरु, २ भेजे, ३ अकब्बरी, ४ अधबिच, ५ में,

समयसुन्दर के प्रभु धन्य गुरु,
पतिसाहि अकब्बर जो परखे[६] ॥३॥
एजी अमृत वाणि सुणी सुलतान,
ऐसा पतिसाहि हुकम्म किया।
सब आलम मांहि अमारि पलाइ,
बोलाय गुरु फुरमाण दिया॥
जग जीव दया धम दाखण तैं,
जिन शासन मइं जु सोभाग लिया।
समयसुन्दर कहे गुणवंत गुरु,
हग देखो हरखित होत हिया ॥४॥
एजी[९] श्री जी गुरु धम गोठ[१०] मिले,
सुलतान सलेम अरज करी।
गुरु जीवदया नित चाहत[११] हैं,
चित अन्तर प्रीति प्रतीति धरी॥
कर्मचन्द बुलाय दियो फुरमाण,
छोड़ाइ खंभाइत की मच्छरी।
समयसुन्दर कहइ सब लोगन मइं,
जु खरतर गच्छ की ख्यात खरी ॥५॥

---

६ टोपी बस ऽमावस चन्द उदय अज तीन बताय [illegible] [illegible] (मुद्रित में पाठां[illegible] एवं पक्ति ऊ[illegible] नीचे) ७ गुरु, ८ [illegible] ९ [illegible]
१० ध्यान, ११ प्रेम धरे,

एजी श्री जिनदत्त चरित्र सुणी,
पतिसाहि भयौ गुरु राजिय रे ।
उमराव सबै कर जोड़ि खड़े,
पभणै अपणै मुख हाजिय रे ॥
युग प्रधान किये गुरु कुं[१२],
गिगड़दू धूँ धूँ बाजिय रे ।
समयसुन्दर तूं ही जगत गुरु,
पतिसाहि अकब्बर गाजिय रे ॥६॥
एजी ज्ञान विज्ञान कला सकला,
गुण देखि मेरा मन रीझिये जी ।
हिमायुं को नन्दन एम अखे,
मानसिंह पटोधर कीजिये जी ॥
पतिसाहि हजूरि थप्यो सिंहसूरि,
मंडाण मंत्रीसर वींजिये[१३] जी ।
जिनचन्द्र अने[१४] जिन सिंह सूरि,
चन्द्र सूरिज ज्युं अतपीजियेजी ॥७॥
एजी रीहड वंश विभूषण हंस,
खरतर गच्छ समुद्र ससी ।
अतप्यो जिन माणिक सूरि के पाट[१५],
प्रभाकर ज्युं प्रणमुं उलसी ॥

१२ चामर छत्र सुरातन भेट, १३ कीजिये १४ पट्टे १५ पट्ट ।

मन सुद्ध अकब्बर मानतु है,
जग जाणत है परतीति इसीं।
जिणचन्द मुणिंद चिरं प्रतपो,
समयसुन्दर देत आसीस इसी ॥८॥

—:o—

६ राग ३६ रागिणी नामगर्भित श्रीजिनचंद्रसूरि गीतम्

कीजइ ओच्छव संता सुगुरु केरउ,
सुललित वयण सुणि सखिमेरउ।
कहउ री सदेसा खरा गुरु आवतिया,
तिण वेला उलसी मेरी छतिया ॥ १ ॥
आए सखी श्रीवंत मल्हारा,
खरतर गच्छ शृंगार हारा ॥ आंकणी ॥
अइसा रंग वधावन कीजइ,
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ।
अइसे गुरु कुं नित उलगउरी,
सुंदर शिरीरा गच्छपति अउरी ॥ २ ॥
दुख के दार मुगुरु तुम हउ री,
गाऊं गुण गुरु केदारा गउरी।

सोरठगिरि की जात्रा करण कुं,
आपण री गुरु पाय नरञो,
भाग्य फल्यो आच्छत्र लोकपरयो ॥ ३ ॥
तूँ कृपा पर दउलति दे मोहि सुं तेरउ भगत हुं री।
गुरु जी तूँ ऊपर जीउ राखी रहुँ री।
इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी,
हूँ चरण लागुं डर डमर वारी ॥ ४ ॥
अहो निकेत नट नराइण के आगइ,
अइसइ नृत्य करत गुरु के रागइ।
अइसे शुद्ध नाटक होता गावत सुंदरी,
वेणु वीणा मुरज बाजत घुमर घुघरी ॥ ५ ॥
रास मधु माधवइ देति रंभा,
सुगुरु गायंति वायंति भंभा।
तेज पुँज जिम सोभइ रवि,
जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि ॥ ६ ॥
सबहि ठउर वरी जयत सिरी,
गुरु के गुण गावत गुजरी।
मारुणी नारी मिली सब गावत,
सुंदर रूप सोभागी रे,
आज सखी पुण्य दिसा मेरी जागी रे ॥७॥

तोरी भक्ति मुझ मन मां वसी रे,
साहि अकबर मानइ जस बामर वंसी।
गुरु के वंदथि तरसइ सिंधुया,
इया सारी गुरु की मूरतिया ॥ ८ ॥
गुरु जी तूँहिज कृपाल भूपाल,
कलानिधि तुँहिज सबहि सिरताज,
आवइ ए रीतइ गच्छराज।
संकराभरण लंछन जिन सुप्रसन्न,
जिनचन्दसूरि गुरु कु नति करुं ॥ ६ ॥
तेरी सूरत की वलिहारी तू पूरग,
आस हमारी तूँ जगि सुरतरु ए।
गुरु प्रणमइ री सुरनर किन्नर घोरणी रे,
मन वांछत पूरण सुरमणी रे ॥१०॥
मालवी गउड़ मिश्री अमृत थई,
वचन मीठे गुरु तेरे हइ ताथइ।
करउ वंदणा गुरु कुं त्रिकालइ हरउ पंच प्रमाद रे।
सबइ कुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे ॥११॥
बहु पर भांति वउ उच्छव सार,
पंच महाव्रत धर गुरु उदार।
हूं आदेस कार प्रभु तेरा,

जुगप्रधान जिनचन्द मुनीसरा,
तूँ साहिब मेरा ॥१२॥
दुरित मे वारउ गुरु जी सुख करउ रे,
श्री संघ पूरउ आशा।
नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे,
लाभइ लील विलासा ॥१३॥
धन्या सरी रागमाला रची उदार,
छः राग छतीसे भाषा भेद विचार। ध०।
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरु वार,
थंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार ॥१४॥ध०॥
जुगप्रधान जिनचंद सूरींद सार,
चिरजयउ जिनसिंहसूरि सपरिवार। ध०।
सकलचंद मुणीसर सीस उन्नतिकार,
समयसुंदर सदा सुख अपार ॥ध०॥१५॥

इति श्री युगप्रधान श्री जिनचंद्र सूरीणा रागमाला सम्पूर्णा कृता च समयसुन्दर गणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे कार्तिक सुदि ४ दिने श्रीस्तमतीर्थनगरे।

श्री जिनचन्द्रसूरि चन्द्राउला गीतम्

ढाल—चन्द्राउला नी

श्री खरतर गच्छ राजियउ रे, माणिक सूरि पटधारो
सुन्दर साधु सिरोमणि रे, विनयवंत परिवारो

विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
ए चन्द्राउलउ छइ अति सारउ,
श्री पूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ॥१॥
जिन चन्द सूरि जी रे, तुम्हे जगि मोहन वेलि
सुणिज्यो वीनति रे, तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि,
गिरुया गच्छपति रे ॥ आंकणी ॥
वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारी रे ।
संघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मंगलाचारो ॥
घरि घरि मंगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ बहिनी मोरी ।
ए चंद्राउलउ सांभलज्यो री, हुँ बलिहारी पूज जी तोरी ॥२॥
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतां सुख थायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जायो ॥
अलिय विघन सवि जाय रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदं उगमते सूरइ ।
ए चंद्राउलउ गाउं हजूरइ, तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ॥३॥
जिण दीठां मन ऊलसइ रे, नयणे अमिय झरंति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति सदाई, श्री जिण चंद सूरि वांदउ माई ।
ए चंद्राउला भास मइं गाई, प्रीति समयसुन्दर मनि पाई ॥४॥
इति श्री युगप्रधान जिनचंद्रसूरीणां चंद्राउला गीतं संपूर्णम् ॥१६॥

श्रीजिनचन्द्रसूरिस्वप्नगीतम्

सुपन लह्यु साहेलड़ी रे, निसि भरि सूती रे आज।
सुंदर रूप सुहामणा रे, दीठा श्री गच्छराज ॥१॥
सुगुरु जी मूरति मोहनवेलि,
श्रीपूज्य जी चालइ गजगति गेलि ॥आंकणी ॥
गाम नगर पुर विहरता रे, आव्या जिण चंद सूरि।
श्री संघ साम्हउ संचरइ रे, वाजइ मंगल तूरि ॥सु०॥२॥
आव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखाणि।
संग सहु भ्रम सांभलइ रे, धन जीव्यं परमाण ॥सु०॥३॥
संख सबद सखि मइं सुणयउ रे, ऊभी जोऊँ रे वाट।
आंगणि मोरी आविया रे, परिवरया मुनिवर थाट ॥सु०॥४॥
धवल मंगल गायइ गोरडी रे, हीड़इ हरख न माय।
नारि करइ गुरु न्युंछणा रे, पडिलाभइ मुनिराय ॥सु०॥५॥
सुपन एह साचउ हुज्यो रे, सीभइ वंछित काज।
श्रीजिन चंद्र सूरि वांदियइ रे, समयसुंदर सिरताज ॥सु०॥६॥

—:o:—

(गौड़ी जी का भंडार उदयपुर)

श्री जिनचंद्रसूरि छंद

अवलियउ अकबर तास अंगज, सबल साहि सलेम।
सेख अबुल आजम खान खाना, मानसिंह सुँ प्रेम ॥

रायसिंघ राजा भीम राउल, सूर नये सुरतान ।
बड़ा वड़ा महीपति वयण मानइ, देय आदर मान ॥
गच्छपति गाइये जी, जिनचंदसूरि मुनि महिराण ।
अकबर थापियो जी, युगप्रधान गुण जाण ॥ग०॥१॥
काश्मीर काबुल सिंध सोरठ, मारवाड़ मेवाड़ ।
गुजरात पूरब गौड़ दक्षिण, समुद्रतट पयलाड़ ॥
पुर नगर देश प्रदेश सगले, भमइ जेति भ ण ।
आषाढ मास अमीय वरसे, सुगुरु पुण्य प्रमाण ॥ग०॥२॥
पंच नदी पांचे पीर साध्या, खोड़ियउ खेत्रपाल ।
जल वहइ जेथ अगाध प्रवहण, थांभिया ततकाल ॥
.... कित किता कहू वखाण ।
परसिद्ध अतिशय कला पूरण, रीझवण रायाण ॥ग०॥३॥
गच्छराज गिरुयो गुणे गाढो, गोयमा अवतार ।
बड़ वखतवंत बृहत्खरतर, गच्छ कौ सिणगार ॥
चिरजीवउ चतुर विध संघ सानिध, करइ कोडि कल्याण ।
गणि समयसुंदर सुगुरु भेटया, सफल आज विहाण ॥ ४ ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी.

भले री माई श्री जिन चंद्र सूरि आए ।
श्रीजिनधर्म मरम बूझण कुं, अकबर साहि बुलाये ॥भ.॥१॥

सदगुरु वाणि सुणी साहि अकबर, परमानंद मनी पाए।
इफतह रोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमाण पठाए ॥भ.॥२॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूरि पुलाए।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनचंद सूरि, सब जन के मन भाए ॥भ.॥३॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी.

सुगुरु चिर प्रतपे तूँ कोड़ि वरीस।
खंभायत बंदर मांछलड़ी, सब मिलि देत आसीस ॥सु.॥१॥
धन धन श्री खरतर गच्छ नायक, अमृत वाणि वरीस।
साहि अकबर हमकुं राखण कुं, जासु करी बकसीस ॥सु.॥१॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचंद्र मंत्रीश।
समयसुंदर प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥सु.॥३॥

श्री जिनचंद सूरि गीतम्

राग—आसावरी

पूज्य जी तुम चरणे मेरउ मन लीणउ,
ज्यूं मधुकर अरविंद।
मोहन वेलि सबइ मन मोहिउ,
पेखत परमाणंद रे ॥ पू० ॥ १ ॥

सुललित वाणि वखाण सुणावति,
श्रवति सुधा मकरंद रे।
भविक भवोदधि तारण वेरि,
जन मन कुमुदनी चंद रे॥पू०॥२॥
रीहड़ वंश सरोज दिवाकर,
साह श्रीवंत कउ नंद रे।
सम्यसुंदर कहइ तूँ चिर प्रतपे,
श्री जिणचंद मुणिंद रे॥पू०॥३॥

श्री जिनचंद्र सूरि छंद

सुगुरु जिणचंद सौभाग सखरो लियो,
चिहूं दिसे चंद नामो सवायो।
जैन शासन जिके डोलतउ राखियो,
साखियो जगत सगलइ कहायो॥१॥
एक दिन पातिसाह आगरइ कोपियो,
दर्शनी एक आचार चूकउ।
शहर थी दूरि काढो सवइ सेवड़ा,
मेवड़ां हाथ फुरमाण मूकचउ॥२॥
आगरइ सहरि नागोर अरु मेड़तइ,
महिम लाहोर गुजरात मांहइ।

देस दंदोल सबलउ पड़यउ तिहां किणे,
तुरत ना पंथिया तुंब वाहइ ॥ ३ ॥
दरसनी केइ पर दीप मइं चढि गया,
केइ नासी गया कच्छ देसे ।
केइ लाहोर केइ रह्या भूंहि मां,
दरसनी केइ पाताल पैसे ॥ ४ ॥
तिण समइ युग प्रधान जगि राजियो,
श्री जिनचंद तेजे सवायो ।
पूज अणगार पाटण थकी पांगुर्या,
आगरइ पातिसाह पासि आयो ॥ ५ ॥
तुरत गुरु राय नइ पातिसाह तेड़िया,
देखि दीदार अति मान दीधा ।
अजन की छाप फुरमाण करि अखिया,
केडला गुनह सहु माफ कीधा ॥ ६ ॥
जैन शासन तणी टेक राखी करी,
ताहरइ आज कोई न तोलइ ।
खरतर गच्छ नइं सोभ चाढी खरी,
समयसुंदर विरुद साच बोलइ ॥ ७ ॥

श्री जिनचंद्र सूरि आलिजा गीतम्

आसू मास वलि आवियउ पूजजी,
आयो दीपाली पर्व ।

काती चौमासो आवियउ पूज जी,
आया अवसर सर्व ॥पू०॥ १ ॥
तुमे आवो रे सिरियादे का नंदन पू०,
तुम बिन घड़िय न जाय।
तुम बिन अलजउ जाय पू० तु० ॥आंकणी॥
साहि सलेम अने वलि उमरा पू०,
संभारइ सहु कोय ॥पू०॥
धर्म सुणावो आवि नइ पू०,
जीव दया लाभ होय ॥पू०॥ २ ॥ तु० ॥
श्रावक आया वांदिवा पू०,
ओसवाल नइ श्रीमाल ॥पू०॥
दरसण द्यउ एक वार तउ पू०,
वाणी सुणावो रसाल ॥पू०॥ ३ ॥ तु० ॥
बाजोट मांडयउ बइसणे पू०,
कमली मांडी सुघाट ॥पू०॥
वखाण नी वेला थई पू०,
श्री संघ जोवइ वाट ॥पू०॥ ४ ॥ तु० ॥
श्राविका मिली आवी सहु पू०,
वांदण वे कर जोड़ि ॥पू०॥
वंदावी ध्रमलाभ द्यउ पू०,
जिम पहुँचे मन कोड़ि ॥पू०॥ ५ ॥ तु० ॥

युग प्रधान जगि जागतउ पू०,
श्री जिणचंद मुणिंद ॥पू०॥
सानिध करजो संघ नइ पू०,
समयसुँदर आणंद ॥पू०॥ ११ ॥ तु० ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि आलिजा गीतम्

राग—आस्या सिंधुड़ो

थिर अकबर तूँ थापियउ, युगप्रधान जग जोइ।
श्री जिनचंद सूरि सारिखउ सारि०, कलि मइं न दीसइ कोइ।१।
ऊमाह धरी नइ तात जी हूं आवियउ रे, हो एकरसउ तूँ आवि।
मन का मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहिं दिखाउ।२।ऊ.
जिन शासन राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल।
समझायउ श्री पातिसाह सदगुरु खाव्यउ तइं सुबोल।३।ऊ.।
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिंध थी एथ।
नगर गाम सहु निरखिया, कहो क्यूं न दीसइ पूज केथ।४।ऊ.।
साहि सलेम सहु अम्बरा, भीम सूर भूपाल।
चीतारइ तुनइ चाह सुं हो, पूज्य जी पधारउ किरपाल।५।ऊ.।
बाबा आदिम बाहूबलि, वीर गौतम ज्यूं विलाप।
मेलउ न सरज्यउ माहरो मा०, ते तउ रह्यउ पछताप।६।ऊ.।
साह बडउ हो सोम जी, राख्यउ कर्मचंद राज।
अकबर इंद्रपुरि आणियउ, आस्तिक वादी गुरु आज।७।ऊ.।

श्राविका उपधान सहु वहइं पू०,
मांडयउ नंदि मंडाण ॥पू०॥
माला पहिरावो आवि ने पू०,
जिम हुवे जनम प्रमाण ॥पू०॥ ६ ॥ तु० ॥
अभिग्रह वांदण ऊपरइ पू०,
कीधा हुँता नर नारि ॥पू०॥
ते पहुँचाओ तेहना पू०,
वंदावो एक वार ॥पू०॥ ७ ॥ तु० ॥
पर्व पजूसण वहि गयउ पू०,
लेख वांछे सहु कोय ॥ पू० ॥
मन मान्या आदेश द्यउ,
शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥ ८ ॥ तु० ॥
तुम सरिखउ संसार महं पू०,
देखु नहीं को दीदार ॥पू०॥
नयण तृप्ति पामइ नहीं पू०,
संभारुं सौ वार ॥पू०॥ ९ ॥ तु० ॥
मुझ मिलवा अलजउ घणो पू०,
तुम तो अकल अलक्ष ॥पू०॥
सुपनि में आवि वंदावजो पू०,
हुँ जाणिस परतक्ष ॥पू० ॥१०॥ तु० ॥

युग प्रधान जगि जागतउ पू०,
श्री जिणचंद मुणिंद ॥पू०॥
सानिध करजो संघ नइ पू०,
समयसुँदर आणंद ॥पू०॥ ११ ॥ तु० ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि आलिजा गीतम्

राग—आसया सिंधुड़ो

थिर अकबर तूं थापियउ, युगप्रधान जग जोइ ।
श्री जिनचंद सूरि सारिखउ सारि०, कलि मइं न दीसइ कोइ ।१।
ऊमाह धरी नइ तात जी हूं आवियउ रे, हो एकरसउ तूं आवि ।
मन का मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ ।२।ऊ.
जिन शासन राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल ।
समझायउ श्री पातिसाह सदगुरु खाव्यउ तइं सुबोल ।३। ऊ.।
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिंध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखिया, कहो क्यूं न दीसइ पूज केथ ।४। ऊ.।
साहि सलेम सहु अम्बरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तुनइ चाह सु हो, पूज्य जी पधारउ किरपाल ।५। ऊ.।
बाबा आदिम बाहूबलि, वीर गौतम ज्यूं विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरो मा०, ते तउ रह्यउ पछताप ।६। ऊ.।
साह वडउ हो सोम जी, राख्यउ कर्मचंद राज ।
अकबर इंद्रपुरि आणियउ, आस्तिक वादी गुरु आज ।७। ऊ.।

मूयइ कहइ ते मूढ़ नर, जीवइ जिण चन्द सूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ जेह० हो पुहवि कीरत पड़ूरी ।८। ऊ.।
चतुरविध संघ चीतारस्यइ, ज्यां जीविस्यइ तां सीम ।
वीसार्‌या किम वीसरइ वीस० हो निरमल तप जप नीम ।९। ऊ.।
पाटि तुम्हारइ प्रगटियउ, श्री जिन सिंह सूरीश ।
शिष्य निवाज्या तइं सहु तइं० रे, जतीयां पूरी जगीश ।१०।ऊ.।

(अपूर्ण)

श्री जिनसिंहसूरि गीतानि

(१) राग—मेवाड़उ

श्री गौतम गुरु पाय नमी, गाऊं श्री गच्छराज[1] ।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू, पूरवइ वंछित काज ॥
पूरवइ वंछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोह ए ।
मुनिराय मोहन वेलि नी परि, भविक जन मन मोह ए ॥
चारित्र पात्र कठोर किरिया, धरम कारिज उद्यमी ।
गच्छराज[2] ना गुण गाइस्युं जी, श्री गौतम गुरु पय नमी ॥ १ ॥
गुरु लाहोर पधारिया, तेड़ाव्या कर्मचन्द ।
श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्यउ परमाणंद ॥
पामीयउ परमाणंद ततखण, हुकम दिउढी नउ कियउ ।
अत्यंत आदर मान गुरु ने, पादसाह[3] अकबर दियउ ॥
ध्रम गोष्ठि[4] करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया ।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥ २ ॥

श्री अकबर आग्रह करी, कास्मीर कियो रे विहार ।
श्रीपुर नगर सोहामणुं, तिहां वरतावी अमार ॥
अमारि वरती सर्व धरती, हुओ जय जय कार ए ।
गुरु सीत तावड ना परिसह, सह्या विविध प्रकार ए ॥
[4]महालाभ जाणी हरख आणी, धीर पणुं हियड़े धरी ।
कास्मीर देश विहार कीधो, श्री अकबर आग्रह करी ॥ ३ ॥
श्री अकबर चित रंजियो, [5]पूज्य नइ करइ अरदास ।
आचारिज मानसिंह करउ, अम मनि परम[7] उल्लास ॥
अम्ह मनि आज उलास अधिकउ, फागुण सुदि बीजइ मुदा ।
सइंहत्थि जिणचंदसूरि दीधी, आचारिज पद संपदा ॥
करमचंद मंत्रीसर महोच्छव, आडंबर मोटउ कियो ।
गुरुराज ना गुण देखि गिरुया, श्री अकबर चित रंजियउ ॥ ४ ॥
संघ सहू हरखित थयउ, गुरु नइ द्यइ आसीस ।
श्री जिनसिंह सूरीसरु, प्रतपे तूं कोड़ि वरीस ॥
प्रतपे तूं कोड़ि वरीस, सहगुरु चोपड़ां चड़ती कला ।
चांपसी साह मल्हार, चांपल देवि माता धन इला ॥
पादसाह अकबर साहि परख्यो, श्री जिनसिंघसूरि चिर जयउ ।
आसीस पभणइ समयसुंदर, संघ सहु हरखित थयउ ॥ ५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां जकड़ी गीत समाप्तम् ॥

१-२ गुरुराज, ३ पातिसाहि, ४ गोठि, ५ गुरु, ६ गुरु, ७ अधिक, ८ वेलि

(२) श्री जिनसिंहसूरि हींडोलणा गीतम्

हींडोलना नी ढाल

सरसति सामिणी वीनवूं, आपज्यो एक पसाय।
श्री आचारिज गुण गाइस्युं हींडोलना रे, आणंद अंगि नमाय।हीं.२।
वांदउ जिणसिंघसूरि हींडोलणा रे, प्रह ऊगमतइ सूरि।हीं.।
शुभ मन आणंद पूरि हींडोलणा रे, दरसण पातिक दूरि।आ.।
मुनिराय मोहन वेलड़ी, महियलि महिमा जास।
चंद जिम चड़ती कला हींडोलणा रे, श्रीसंघ पूरवइ आस।हीं.२।
सोभागी महिमा निलो, निलवट दीपइ नूर।
नरनारी पाय कमल नमइ हींडोलणा रे, प्रगट्यो पुण्य पडूर।हीं.३।
चोपड़ा वंशइ परगड़उ, चांपसी साह मल्हार।
मात चांपलदे उरि धरचा हींडोलणा रे, खरतरगच्छ सिणगार[1]।हीं.४।
चउरासी गच्छ सिरतिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं हींडोलणा रे, समयसुन्दर द्यइ आसीस[2]।

(३)

चालउ सहेली सहगुरु वांदिवा जी,
सखि शुभ वांदिवा नी कोड़ रे।
श्री जिनसिंह सूरि आविया जी,
सखि करूं प्रणाम कर जोड़ रे॥ चा.॥१॥

---

१ प्रगट्यउ पुण्य प्रकार। २ पूरवइ मनह जगीस

मात चांपलदे उरि धरचो जी,
सखि चांपसी साह मल्हार रे।
मन मोहन महिमा निलउ जी,
सखि चोपड़ा साख शृङ्गार रे॥चा.॥२॥
वइरागइ व्रत आदरचो जी,
सखि पंच महाव्रत धार रे।
सकल कलागम सोहता जी,
सखि लब्धि विद्या भण्डार रे॥चा.॥३॥
श्री अकबर आग्रह करी जी,
सखि कास्मीर कियउ विहार रे।
साधु आचारइ साहि रंजियउ जी,
सखि तिहां वरताबि अमारि रे॥चा.॥४॥
श्रीजिनचंद्र सूरि थापिया जी,
सखि आचारिज निज पटधार रे।
संघ सयल आस्या फली जी,
सखि खरतरगच्छ जयकार रे॥चा.॥५॥
नंदि महोच्छव मांडियउ जी,
सखि श्री कर्मचंद मंत्रीस रे।
नयर लाहोर वित्त वावरइ जी,
सखि कवियण कोडि वरीस रे॥चा.॥६॥
गुरु जी मान्या रे मोटे ठाकुरइ जी,
सखि गुरु जी मान्या अकबर साहि रे।

गुरु जी मान्या रे मोटे ऊंवरे जी,
सखि जसु[१] जस त्रिभुवन मांहि रे। चा.॥७॥
मुझ मन मोह्यो गुरु जी तुम्ह गुणे जी,
सखि जिम मधुकर सहकार रे।
गुरु जी तुम्ह दरसण नयणे निरखताँ जी,
सखि मुझ मनि हरख अपार रे॥ चा.॥८॥
चिर प्रतपउ गुरु राजियउ जी,
सखि श्री जिनसिंघ सूरीश रे।
समयसुन्दर इम वीनवइ जी,
सखि पूरउ माहरइ मनहि जगीस रे॥ चा.॥९॥

(४)

आज मेरे मन की आस फली।
श्री जिनसिंह सूरि मुख देखत, आरति दूर टली।
श्री जिनचंद्र सूरि सइं हत्थइ, चतुरविध संघ मिली।
साहि हुकम आचारिज पदवी, दीधी अधिक भली॥ २॥
कोडि वरीस मंत्री श्री करमचंद, उत्सव करत रली।
समयसुँदर गुरु के पद पंकज, लीनो जेम अली॥ ३॥

---

[१] ३ ए

(५)
राग—सारङ्ग

आज कुं धन दिन मेरउ ।
पुण्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥आ.॥१॥
श्री जिनसिंघसूरि तुंहि तुंहि मेरे जिउ में, सुपन में नहिंय अनेरउ ।
कुमुदिनी चंद जिसउ तुम लीनउ, दूर तुहि तुम्ह नेरउ ॥आ.॥२॥
तुम्हारे दरसन आनंद मोपइ उपजति, नयन को प्रेम नवेरउ ।
समयसुन्दर कहइ सब कुं वल्लभ जिउ,तूँ तिन थइ अधि केरउ।आ.३।

(६) वधावा गीतम्

आज रंग वधामणा, मोतियडे चउक पूरावउ रे ।
श्री आचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे । आ०।१।
युगप्रधान जगि जाणियइ, श्रीजिनचंदसूरि सुणिंद रे ।
सइं हत्थि पाटइ थापिया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे । आ०।२।
सुर नर किन्नर हरखिया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे ।
पातिसाहि प्रतिबोधियउ[१],श्री अकबर साहि सुजाण रे। आ०।३।
बलिहारी गुरु वयणडे, बलिहारी गुरु मुख चंद रे ।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखइतां परमाणंद रे । आ०।४।
धन चांपलदे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे ।
पुण्य रत्न जिहां ऊपना, श्री चोपड़ा साख शृङ्गार रे । आ०।५।

१ प्रतिबूजव्यउ

श्री खरतरगच्छ राजियउ, जिन सासन मांहि दीवउ रे।
समयसुन्दर कहइ गुरु मेरउ,श्रीजिनसिंघसूरि चिरजीवउ रे।६।

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्।
श्री हर्षनन्दन मुनिना लिपि कृतम्॥

(७)

राग—पूरवी गउड़उ

अरी मोकूं देहु वधाई।
देहु वधाई देहु वधाई री ॥ अरी मोकुं० ॥
युग प्रधान जिनसिंघ यतीसर, नगर निजीक पधारे।
देखि गुरु ········ खबर करण कुं हुं आई ॥ अरी० ॥ १ ॥
मन सुध साहि सिलेम मानतु है, मन मोहन गुरु माई।
समयसुंदर कहइ श्री गुरु आये, प्रीति परम मनि पाई ॥अरी०॥२॥

(८) चौमासा गीतम्

श्रावण मास सोहामणो, महियलि वरसे मेहो जी।
बापियड़ा रे पिउ पिउ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यउ, मेदिनी हरियालियां।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां॥
सुध खेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति घणउ।
जिनसिंघसूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणउ॥ १ ॥

मलइ आयउ भाद्रवउ, नीर भरया नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिहि वखाणो जी॥
वखाण कल्प सिद्धांत वांचे, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरखइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरड़ी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंघसूरि मुणींद गातां, मलइ रे आयो भाद्रवउ॥ २॥
आसू आसा सहू फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपसम रस भरया, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुणमणि सोह ए।
अति रूप सुन्दर मुनि पुरंदर, भविय जण मण मोह ए॥
गुरु चंद्र नी परि भरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सहगुरु, आसू मास आसा फली॥ ३॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
धरतियइ रे धान नीपना, जन मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा।
वलि परव दीवाली महोच्छव, रलिय रंग वधामणा॥
चउमास चारे मास जिनसिंह सूरि संपद आगला।
वीनवइ वाचक 'समयसुन्दर' काती गुरु चढती कला॥ ४॥

(९)

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेली रे।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि रे। आ०॥१॥

गय राणा सत्र मोहिया, मोह्यो अकबर साहि रे।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल मांहि रे। आ०।२
कामण मोहन नवि करउ, सूधा दीसउ छो साधु रे।
मोहनगारा गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ लाध रे। आ०।३
गुण देखी राचइ स को, अवगुण राचइ न कोई रे।
हार स को हियड़इ धरइ, नेउर पायतलि होय रे। आ०।४।
गुणवंत रे गुरु अम्ह तणा, जिनसिंहसूरि गुरराज रे।
ज्ञान क्रिया गुण निरमला, समयसुन्दर सरताज रे। आ०।५।

(१०)

ढाल—नणदल री.

चिहुँ खंडि चावा चोपड़ा, तिण कुलि तुम्ह अवतार हो। पूज्य जी।
वइरागइ व्रत आदर्यउ, उत्तम तुम आचार हो पूज जी ॥१॥
तुम्हे करतार वड़ा किया, कुण करइ तुम होड़ हो पूज जी।
सोभागी महिमा निलउ, लोक नमइ लख कोड़ि हो पूज जी ॥२॥
सबल खमा गुण ताहरउ, साधु धरम नउ सार हो पूज जी।
जाण पणुं पण अति घणुं, आगम अरथ भंडार हो पूज जी ॥३॥
आचारिज पद थापियउ, सइं हथि जिणचंद सूर हो पूज जी।
पद ठवणउ क्रमचंद कियउ, अकबर साहि हजूर हो पूज जी ॥४॥
मानइ मोटा उंबरा, मानइ राणा राय हो पूज जी।
तेज घणउ जगि ताहरउ, पिशुन लगाड़्या पाय हो पूज जी ॥५॥

गिरुयउ गच्छ खरतर अछइ, तेह तणउ तूँ राय हो पूज जी।
श्रीजिनसिंह सूरीसरू, समयसुन्दर गुण गाय हो पूज जी ॥६॥

(११)

प्रह ऊठी प्रणमुं सदा रे, चरण कमल चित्त लाइ।
देऊँ तीन प्रदक्षिणा रे, पातक दूरि पुलाइ।१।
म्हारा पूज जी, तुम सुं धरम सनेह।
मुख दीठां सुख ऊपजे रे, जिम बापियउ मेह।आंकणी।
सुह राई सुह देवसी रे, पूछूं वे कर जोड़ि।
विनय करी गुरु वांदियइ रे, तूटइ करम नी कोड़ि।म्हा.।२।
सुणतां सुललित देसणा रे, आणंद अंग न माइ।
देव धरम गुरु जाणियइ रे, समकित निर्मल थाइ।म्हा.।३।
भात पाणी अति सूझता रे, पड़िलाभूं वार वार।
ज्यूं लाहउ लखमी तणउ रे, सफल करूं अवतार।म्हा.।४।
गुरु दीवउ गुरु चंद्रमा रे, गुरु देखाड़इ वाट।
गुरु उपगारी गुरु वड़ा रे, गुरु उतारइ घाट।म्हा.।५।
श्रीजिनसिंघ सूरीसरू रे, चोपड़ा कुल सिणगार।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, श्री संघ नइ सुखकार।म्हा.।६।

(१२)

मुझ मन मोह्यो रे गुरु जी,तुम्ह गुणे जिम बाबीहड़उ[1] मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चंद चकोर सनेहो जी।मु.।१।

---

१ बापीयडउ

मानसरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोही भरतारो जी। मु.।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी। मु.।३।
सकल सोभागी सहगुरु राजियउ, श्रीजिनसिंघसूरीसो जी।
समयसुंदर कहइ गुरु गुण गावतां, पूजइ मनह जगीसो जी। मु.।४।

(१३)

राग—मारुणी धन्याश्री

अमरसर अब कहउ केती दूर।
पगि पगि पगि पंथियन कूँ पूछत, आये आणंद पूर।अ.।१।
पातसाह अकबर के माने, जिहां श्री जिनसिंहसूरि।
मास कल्प राखे आग्रह करि, थानसिंह साहि सनूरि।अ.।२।
गुरु के पद पंकज प्रणमत ही भाजि गये दुख भूरि।
समयसुन्दर कहइ आज हमारे, प्रगट्यइ पुण्य पडूरि।अ.।३।

(१४)

सुंदर रूप सुहामणउ रे,
जोतां तृपति न थाय म्हारा पूज जी।
मुख पूनम कउ चांदलउ रे लाल,
कंचन वरणी काय म्हारा पूज जी॥ १॥

तइं मोरो मन मोहियउ रे लाल,
श्री जिनसिंह सूरीश म्हारा पूज जी।
मूरति मोहन वेलड़ी रे,
मीठी अमृत वाणि म्हारा पूज जी।
नर नारी मोही रह्या रे लाल,
सुणतां सरस वखाणि ॥म्हा०॥२॥
गुण अवगुण जाणइ नहीं रे,
ते तउ मूरख होय म्हा०।
मइं गुण जाण्या ताहरा रे लाल,
तुझ सम अवर न कोय ॥म्हा०॥३॥
मन रंग लागउ माहरो रे,
जेहवउ चोल मजीठ म्हा०।
ऊतास्यो नवि ऊतरइ रे लाल,
दिन दिन दस गुण दीठ ॥म्हा०॥४।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू रे,
खरतर गच्छ कउ राय म्हा०।
सूरिज जिम प्रतपउ सदा रे लाल,
समयसुन्दर गुण गाय ।म्हा०। ५॥

(१५)

राग—वयराड़ी

सुणउ री सुणउ मेरे, सदगुरु वयणा ।सु०।

अमृत मीठे अत्यन्त, सरस वांचे सिद्धांत ।
भंजत मन की भ्रंति, चित्त होत चयणा ॥सु०॥१॥
गावत वयराड़ी रागइ, आलापइ श्री संघ आगइ ।
वांसुरी मधुरी वागइ, सुख पावइ सयणा ॥सु०॥२॥
श्री जिन सिंघसूरि, देख्यां दुख गये दूरि ।
समयसुन्दर सनूरि, हरखे नयणा ॥सु०॥३॥

(१६)

सदगुरु सेवउ हो शुभ मतियां ।
श्री जिनसिंघसूरि सुखदायक, गच्छनायक गज गतियां ॥स.॥१॥
सूत्र सिद्धान्त वखाण सुणावत, वलि वयराग की वतियां ।
समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, दिन दिन बहु दउलतियां ।स.॥२॥

श्रीजिनसिंहसूरि सपादाष्टक

एजु लाहोर नगर वर, पातिसाहि अकब्बर;
दया ध्रम चितधर, बूझइ ध्रम वतियां ।
कर्मचंद्र मंत्री अ(ह)सी, गुरु चित वात वसी;
अभयकुमार जसी, माचुं जाकी मतियां ॥
वाचक महिमराज, करत उत्तम काज;
बोलाए जु मंत्रिराज, लिखि करी पतियां ।

समयसुन्दर तब, हरखित होत सब;
अधिक आणंद अब, उलसति छतियां ॥१॥
एजु प्रणम्यां श्री शांतिनाथ, गुरु सिर धरचउ हाथ;
समयसुंदर साथ, चाले नीकी वरियां।
अनुक्रमि चलि आए, सीरोही मइं सुख पाये;
सुलताण मनि भाए, पेखत अंखरियां॥
जालोर मेदनीतट, पइसारउ कियउ प्रगट,
डिडवाणइ जीते भट, जयसिरि वरियां।
रिणी तें सरसपुर, आवत पीरोजपुर;
लंघत नदी कसूर, मानुं जइसी दरियां ॥२॥
एजु आवत जु शोभ लीनी, लाहोर वधाई दीनी;
मंत्री कुं मालुम कीनी, कहइ ऐसो पंथिया।
मानसिंघ गुरु आए, पातिसाहि कुं सुणाए;
वाजित्र गृधुं वजाए, दान दियइ दुखियां॥
समयसुन्दर भायउ, पइसारउ नीकउ वणायउ;
श्रीसंघ साम्हउ आयो, सज्ज करि हथियां।
गावत मधुर सर, रूपइ मानुं अपछर;
सुन्दर सूहव करइ, गुरु आगइ सथियां।.३॥
एजु तबही श्री जी कुं मिले, पूछ्या री गुरु हउभले;
दूरि देसि आए चले, वखत संजोग री।
हरखित होत हीया, अत्यंत आदर दीया;
दउढी का हुकम कीया, जानइ सब लोग री॥

जीवदया धरमसार, बूझत सदा विचार;
भरत चक्री उदार, कइसें लीनउ जोग री।
मानसिंह मान्यउ साहि, जश भयउ जग मांहि;
समयसुन्दर ताहि, सुख को प्रयोग री ॥४॥
एजु अकबर जहांगीर, साथइ चले कासमीर;
सुगुरु साहस धीर, दृढ करि हइया री।
परत बरफ पूर, मारग विषम दूर;
चरत डरत सूर, कहा कीजइ दइया री॥
श्रीपुरनगर आई, अमारि गुरु पलाई;
मछरी सबइ छोराइ, नीकउ भयउ भइया री।
समयसुन्दर तस, गावत सुगुरु जस;
अकबर कीनउ वस, अइसे गुरु अइया री ॥५॥
एजु जिनचंदसूरि ज्ञानी, गच्छ की उन्नति जानी;
साहि कउ हुकम मानी, साहि के हजूरि री।
लाभपुर आए जाम, सिंह सम जान्यउ ताम;
पातिसाहि दीनउ नाम, जिनसिंघसूरि जी॥
पाठक वाचक दोय, सब मिल पंच होय;
जुगह प्रधान जोय थापे गुण पूर री।
आचारिज वड़ भागी, सुन्दर कहइ सोभागी;
पुण्य दिसा जसु लागी, प्रबल पडूर री ॥६॥
एजु मसंजर मुखमल, कसमी की भ(ल)मल;
सूप रूप निरमल, कथीपे की भतियां।

विचित्र तंबू वणायउ, उपाश्रउ नीकउ वणायउ;
इंद्र भी देखण आयउ, सुन्दर सोभतियां।
नांदि कउ उच्छव कीनउ, कर्मचंद जस लीनउ;
सवा कोड़ि दान दीनउ, सुगुरु गावतियां॥
समयसुन्दर कहइ, श्रीसंघ गहगहइ;
दान मान सव लहइ, वाजत नोवतियां॥७॥
एजु चोपड़ा वंश दिणिंद, चांपसीह साह नंद;
अदभुद रूप इंद, मुख जइसो चंद री।
सुविहित खरतर, गच्छ भार धुरंधर;
सेवतां ही सुरतरु, सुख केरउ कंद री॥
जिणचंद सूरि सीस, छाजत गुण छत्तीस;
पूरवइ मन जगीस, भवियण वृन्द री।
समयसुन्दर पाय, प्रणमी सुजस गाय,
जिनसिंह सूरिराय, जगि चिर नंद री॥८॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां सपादाष्टकं सम्पूर्णम्।

(१७)

बे मेवरे काहे री सेवरे, अरे कहां जात हो उतावरे, टुक रहो नइ खरे। वे.।
हम जाते बीकानेर साहि जहांगीर के भेजे,
हुकम हुया फुरमाण जाइ मानसिंघ कुं देजे।
सिद्ध साधक हउ तुम्ह चाह मिलणे की हम कुं,
वेगि आयउ हम पास लाभ देऊंगा तुम कुं।१। बे मेवरे

वे साहूकार काहे खुनकार, अरे हमकुं बतावइ नइ कहां जिनसिंघसूरि का दरबार ।वे.।

वीकानेर के वीचि चैत्य चउवीसटा कहियइ,
उस तइ उत्तर कूणि वाम दिसि वेगा लहियइ।
पावड़ साले पांच थार दोऊं वइठण त्रक्रिया,
.........जाओ मानसिंघ का ग्रक्रिया ।२। वे साहूकार।

वे महाजन काहे दीवाण, अरे बोलायउ नइ काजी के मुला वचायउ फुरमाण ।वे.।

हाजरि काजी एइ खूब भली परि वांचइ,
सुणइ लोक सहु कोउ मेघ धुनि मोर ज्युं माचइ।
पातसाह जहांगीर वहुत करी लिखी वड़ाई;
करउ तपास तुम आई तपां कइ होत लड़ाई ।३। वे महाजन।

पूँजि जी सलामत काहे मीयां जी, अजुँ क्यूँ नहीं चलते बणइ नहीं ढीलि कियां ।वे.।

ढिल्ली का पातसाह गढ मंडप मइं गाजइ,
कबजि किये सब देस फतह की नोवति वाजइ।
ओ तुम कुं करे 'याद जइसइं चंद कुं चकोरा,
रेवा कुं गजराज मेघ आगम कुं मोरा ।४। पूजि जी सिलामत.।

जीवइ गुरु जी इहु भी ल्यउ कतावत, मियां जी किस की इहु जी अणीराय के दसखत ।वे.।

अणीराय उंनराउ पातिसाह का निजी की,
तुम सुं हइ इकलास प्रीति श्रो पालइ नीकी।
पातिसाह कइ पासि आयां तुम कुं फायदा,
खुदा करइ तउ खूब किसा वधारूं काइदा ।५। वे पूजजी.।

—०:※:०—

(१८)

श्री आचारिज कइयइ आवस्यइ, जोसी जोय विचारो रे।
सुंदर वात कहइ सोहामणी, लगन तणइ अनुसारो रे ।१। श्री.।
अहनिसि जोऊं रे सद्‌गुरु वाटड़ी, मो मनि वांदिवा खांति रे।
धर्म राग भेद्यउ चिर भीतरइ, पडीय पटोलइ भांति रे ।२। श्री.।
सोभागी गुरु सहु नइ वालहा, मुनिवर मोहण वेलि रे।
विनयवंत श्रावक सहु सांभलइ, वचन अमीरस रेलि रे ।३। श्री.।
गुरु उपरि जे राचइ नहिं, ते माणस. तिरजंचो रे।
परवाली मोती नुं पारखुं, चतुर लहइ परपंचो रे ।४। श्री.।
श्रीखरतर गच्छ केरउ राजियउ, जुगप्रधान पटधारो रे।
श्रीजिनसिंघसूरीसर वांदतां, समयसुन्दर जयकारो रे ।५। श्री.।

(१९)

राग—रामगिरि

सूयटा सोभागी, कहि किहां सगुरु दीठा।
साकर दूध सेती, मुख कराउं मीठा रे ॥ वीर सू०॥१॥

जउ तूँ रे वधामणि आणइ सुगुरु केरी ।
तउ हूं सोवन चांच मंढावूं सुयटा तेरी री ॥ वीर सु०॥२॥
सुणि सखि मारग मांहि मलपंता आवइ ।
श्रीय जिनसिंघसूरि महा प्रभावइ रे ॥ वीर सु०॥३॥
सुगुरु आगम सुणि आणंद पाया ।
सुरनर किन्नर नामीरी वधाया रे ॥ वीर सु०॥४॥
आचारिज आव्या मन कामना फली ।
समयसुन्दर गुण गावइ मन नी रली रे ॥ वीर सु०॥५॥

(२०)

मारग जोवंतां गुरु जी तुम्हे भलइ आए रे । गु० ।
मोहन मूरति पेखी आणंद पाए ॥
हियरा हीं सतगुरु नी देखी मुख तोरा रे ।
मेघ के आगमि जइसइ माचत मोरा ॥१॥ मा०॥
नयण तुम्हारे गुरु जी मोहण गारे । गु० ।
छोरण न जाते हम कुं बहुत प्यारे ॥
तुम्हारे चरण गुरु जी मेरा मन लीणा । गु० ।
वचन सुणंता चित अंतर भीणा ॥१॥ मा०॥
किहा कुमुदिनी किहाँ गगनि चंदारे । गु० ।
दूर थी करत तउ भी परम आणंदा ॥
जे नर जाके चित मइ ते दूर थइ नेरे जी । गु० ।
अहनिसि लेउं गुरु-जी भामणा तेरे ॥३॥ मा०॥

मन सुधि अकबर तुम कुं मानइ रे। गु०।
तुम्ह चिर जीवउ गुरु जी वधतइ वानइ ॥
जिनसंघसूरि अइसा मेरइ मनि भाया रे। गु०।
समयसुन्दर प्रभु प्रणमइ पाया ॥४॥ मा०॥

(२१)

राग—भयरव

मोर भयउ भविक जीव, जागि जागि जागि री;
जिनसिंघसूरि उदय भाण, तेजपुञ्ज राज माण।
ऊठि अइसे धरम मारगि, लागि लागि लागि री।१। मो०।
भविक कमल वन विकासन, दुरित तिमिर भर विनासन;
कुमति उलूक दूरि गए, भागि भागि भागिरी।
श्रीजिनसिंघसूरि सीस, पूरवइ सन मन जगीस;
समयसुन्दर गावत भयरव, रागि रागि रागि री।२। मो०।

इति श्रीजिनसिंघसूरीणा चर्चरी गीतम्।

(२२)

राग—सारग

गुरु के दरस अंखियां मोहि तरसइ।
नाम जपत रसना सुख पावत,
सुजस सुणत ही श्रवण सरसइ।१। अं.।

प्रणमत होत सफल सद्गुरु कुं,
ध्यान धरत मेरउ चितु हरसइ ।
सुगुरु वंदण कुं चलत हीं चरण युग,
पतियां लिखत हीं कर फरसइ ।२। श्रं.।
श्री जिनसिंहसूरि आचारिज,
वचन सुधारस मुखि वरसइ ।
समयसुंदर कहइ अबहु कृपा करि,
नयण सफल करउ निज दरसइ ।३। श्रं.।

(२३)

राग—नट्ट नरायण

तुम चलहु सखि गुरु वंदण ।
श्रीजिनसिंघसूरि गुरु दरसण, सब जण कु आणंदण।१। तु.।
पातिसाहि अकबर मण रंजण, वचन सुधारस वंदण ।
चोपड़ां वंस सुशोभ चढावत, चांपसी साह के नंदण ।२। तु.।
तेज प्रताप अधिक गुरु तेरउ, दुरमति दुख निकंदण ।
समयसुन्दर प्रभु के पद पंकज, प्रणमति इंद नरिंदण ।३। तु.।

(२४)

राग—मालवी गउड़ड

आज सखी मोहि धन्य जीया री ।
श्रीजिनसिंघसूरीसर दरसण,

देखत हरखित होत हीया री ॥१॥ आ०॥

कठिन विहार करिउ कसमीरइ,
साहि अकबर बहु मान दीया री।

श्रीपुर नगर अमारि पलावइ,
सब जग महं सोभाग लीया री ॥२॥ आ०॥

गुहिर गंभीर सर मधुर आलापति,
देसणा सुणत मानुं अमृत पीया री।

समयसुन्दर प्रभु सुगुरु वांदत तइं,
इहु भइ मानव भव सफल कीया री ॥३॥ आ०॥

(२५)

राग—कल्याण

श्रीजिनसिंघसूरिंद जयउ री। श्री०।
जुगप्रधान जिणचंद सुरीसर, पाटि प्रभाकर ज्युं उदयउ री।१।श्री.।
अकबर साहि हजूरि हरख भरि, आचारिज पद जासु दयउ री।
मोहन वेलि भविक मन मोहन, दरसण तइ दुख दूरि गयउ री।२।श्री.।
चोपडां वंश चांपसी नंदण, वंदण कुं मेरउ मन उमयउ री।
समयसुंदर कहइ श्रीगुरु आए, श्रीसंघ कुं आणंद भयउ री।३।श्री.।

(२६)

राग—केदारउ

जिनसिंघसूरि की बलिहारि।
बूझव्यउ पातिसाहि अकबर, दया धरम दिखारि।१।जि०

सूरि गुण छत्रीस शोभित, वचन अमृत धार।
श्री जिन शासन मांहि दिनकर, खरतर गच्छ सिणगार।२। जि०।
जुगप्रधान सुसीस जगि मइं, प्रगटियउ पटधार।
समयसुन्दर सुगुरु प्रतपउ, श्री संघ कुं सुखकार।३। जि०।

(२७)

राग—गउड़ी

पंथियरा कहियो एक संदेश।
जिनसिंघसूरि तुम्हे वेगि पधारउ, इण री हमारइ देश।१। पं.।
भगत लोग इतु भाव वहुत हइ, मानत सब आदेस।
चंद चकोर तणी परि चाहत, नाम जपत सुविशेस।२। पं.।
पातिसाहि अकबर तुम माने, जानत लोक असेस।
समयसुन्दर कहइ धन्य जीया मेरउ, जब नयणे निरखेस।३। पं.।

(२८)

राग—ललित

ललित वयण गुरु ललित नयण गुरु,
ललित रयण गुरु ललित मती री ॥ ल०॥
ललित करण गुरु ललित वरण गुरु,
ललित चरण गुरु ललित गती री ॥ ल०॥१॥
ललित पूरति गुरु ललित सूरति गुरु,
ललित मूरति गुरु ललित जती री।

ललित वयराग गुरु ललित सोभाग गुरु,
ललित पराग गुरु ललित व्रती री ॥ ल०॥२॥
ललित खरतर गुरु ललित सुरतरु गुरु,
ललित गणधर गुरु ललित रती री।
समयसुन्दर प्रभु जिनसिंहसूरि कुं
साहि अकबर मानइ छत्रपती री ॥ ल०॥३॥

(२९)

राग—धन्यासिरी

बलिहारी गुरु वदन चंद बलिहारी।
वचन पीयूप पान कुं आए, नयन चकोर अनुसारी री।१। गु.।
भविक लोक लोचन आणंदण, दुरित तिमिर भरवारी।
अकलंक सकल कला संपूरण, सौम्य कांति मनुहारी री।२। गु.।
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधक, युगप्रधान पटधारी।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनसिंघसूरि, सब जन कुं सुखकारी री।३।गु.।

(३०)

राग—पचम

आवउ सुगुण साहेलड़ी, मिलि वेलड़ी रे;
गायउ जिनसिंघसूरि मोहन वेलड़ी।१। आ०।
श्रवण सुधारस रेलड़ी, घुड़ भेलड़ी रे;
मीठी सहगुरु वाणि जाणे सेलड़ी।२। आ०।

चालइ गज गति गेलड़ी, धन ए घड़ी रे;
समयसुन्दर गुरुराज महिमा एवड़ी ।३। श्रा०।

(३१) श्री जिनसिंघसूरि-तिथिविचारगीतम्

राग—प्रभाती

पड़िवा जिम मुनि वड़उ साहेलड़ी ए,
बीज बेऊ ध्रम पालइ गुण वेलड़ी ए ।
त्रीजइ त्रिणह गुपति धरइ साहेलड़ी ए,
चउथि कषाय च्यार टालइ ॥ गु० ॥ १ ॥
पांचमि व्रत पालइ पांचे साहेलड़ी ए,
छट्ठि छजीव निकाय ॥ गु० ॥
सातमि भय साते हरइ साहेलड़ी ए,
आठमि प्रवचन माय ॥ गु० ॥ २ ॥
नवमि आपइ नवनिधि साहेलड़ी ए,
दसमि दसे ध्रम सार ॥ गु० ॥
इग्यारसि अंग इग्यार धरइ साहेलड़ी ए,
बारसि प्रतिमा बार ॥ गु० ॥ ३ ॥
तेरसि तेर क्रिया तजइ साहेलड़ी ए,
चउदसि विद्या जाण ॥ गु० ॥
पुनिमचंद तणी परि साहेलड़ी ए,
सकल कला गुण खाण ॥ गु० ॥ ४ ॥

पनरे तिथि गुण पूरण साहेलड़ी ए,
थी जिनसिंघसूरीश ॥ गु० ॥
समयसुन्दर गुरु राजियउ साहेलड़ी ए,
पूरवइ मनह जगीस ॥ गु० ॥ ५ ॥

(३२)

चतुर लोक राचइ गुणे रे, अवगुण कोइ न राचइ रे।
परमारथ तुम्हे प्रीछज्यो रे, सहु को पतीजइ साचइ रे।१।
मन माहरउ गच्छनायक, मोह्यउ तुम्ह गुणे रे।
जाणुं जे रहुँ आचारिज, चरणे तुम्ह तणे रे॥ आं०॥
सुन्दर रूप सोहामणउ रे, बोलइ अमृत वाणी रे।
नर नारी मोही रह्या रे, मुझ मनि अधिक सुहाणी रे।२। मन.।
सोम गुणे करि चन्द्रमा रे, सायर जेम गंभीरो रे।
समति घणी पूज ताहरी रे, संयम साहस धीरो रे।३। मन.।
सोभागी महिमा निलउ रे, सकल कला गुण सोहइ रे।
मानइ राणा राजिया रे, भवियण ना मन मोहइ रे।४। मन.।
श्रीजिनसिंघसूरीसरु रे, प्रतिपउ सूरिज जेमो रे।
... .

श्री जिनराजसूरि गीतानि

(१)

राग—श्री

भट्टारक तुझ भाग नमो ।
तूं अतुलीबल असम साहसी, सूर नहीं को तुझ समो ॥ भ.॥१॥

भागइ भट्टारक पद पायउ, भागइ दुरिजन दूरि गमउ ।
भागइ संघ कियउ वसि सगलउ, देस प्रदेसि विहार क्रमउ ॥ भ.॥२॥
तूठी अंबिका परतिख तुम्हनइ, अमीझरउ तीरथ उतमउ।
श्रीजिनराजसूरि अब मोनइ,समयसुंदर कहइ तुम्ह सरमउ॥ भ.॥३॥

(२)

राग—आसावरी

भट्टारक तेरी बड़ी ठकुराई।
तखत बइठ करि हुकम चलावत, मानत सब लोगाई ॥ भ.॥१॥
विंब प्रतिष्ठा अमीझरइ प्रतिमा, ए तेरी अधिकाई।
घंघाणी लिपि बांची बचाई, अंबिका परतिख आई ॥ भ.॥२॥
श्रीजिनराजसूरि गच्छनायक, जाण प्रवीण सदाई।
समयसुंदर तेरे चरण शरण किए,अब करि अपणी बड़ाई ॥ भ.॥३॥

(३)

ढाल—नाहलिया म जाए गोरी रावण हरइ

तूं तूठउ घइ संपदा पूज जी, घइ संघवी पद सार।
पाठक वाचक पद भला पूज जी, इंद्र इंद्राणी सार ॥१॥
अकल सरूपी तूं गुरु जीयउ, एह अचंभो थाई।
अमृत अमृत वसइ के विष नयण वसइ,निरति पडइ निहि काय।अ.२
तूं रूठउ घइ आपदा पूज जी, राय थका करइ रांक।
मेर थको सरसव करइ पूज जी, वांका काढइ वांक। अ.।३।

शीतल चंदन सारिखउ पूज जी, तेज तपइ त्तकि वार ।
हँसि करी हेजइ मिलइ पूज जी, कदि न आणइ अहंकार । अ.।४।
श्री जिनराजसूरीसरू पूज जी, तू कहियइ करतार ।
सोम निजर करि निरखजो पूज जी, समयसुन्दर कहइ सार । अ. ५।

(४)

राग—नट्ट नारायण

श्री पूज्य सोम निजर करउ ।
चूँप करी आयउ तेरइ सरणे, अभिग्रह ले सबलउ आकरउ । श्री.।१।
भट्टारक जोइयइ भारी खम, पड़इ चाकर नइ पांतरउ ।
नमतां कोप करइ नहीं उत्तम, वांक हुवइ जो घणी वातरउ । श्री.।२।
अति ताणयउ न खमइ अलवेसर, आज विषम पांचमउ अरउ ।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनराजसूरि, अब अपणउ करि ऊधरउ । श्री.।३।

(५)

ढाल—सूंबरा ना गीत नी

श्री पूज्य तुम्ह नइ वांदि चलतां हो,
चलता हो पाछा पग पड़इ माहरा हो ।
धरती भारणी होइ ध०,
चालइ हो चा० वेधक सुवचन ताहरा हो ॥१॥
अउलुं आवइ एम अउ०,
जाणूँ हो जाणुं हो पाछो वलि जाउं वली हो ।

सिण निरहउ न समाय सिण०,
जीवइ हो जीवइ पाणी विण किम माछली हो ॥२॥
हसितइ बोलइ बोल ह०,
ते बोल हो ते बोल थारा मुझ नइ सांभरइ हो।
एहवा चतुर सुजाण ए०,
कहउ कुण हो कहउ कुण हो कहियउ पूज्य पटंतरइ हो ॥३॥
हेजइ हियडइ भीड़ि हे०,
द्यइ तुं हो द्यइ तु हो गांभिसि मीठइ बोलड़इ हो।
सकल करइ बगसीस स०,
अवर हो अवर हो लाभइ जे बहुमोलड़इ हो ॥४॥
श्री जिनराजसूरींद श्री०,
तूठो हो तूठो हो साहिब सुरतरु सारिखउ हो।
समयसुन्दर कहइ एम स०,
परतिख हो परतिख हो दीठउ ए मइं पारिखउ हो॥५॥

इति श्रीजिनराजसूरीश्वराणां वियोगनसमये गीतम्।

—o—

श्रीजिनसागरसूर्यष्टकम्

श्रीमज्जेसलमेरुदुर्ग नगरे, श्रीविक्रमे गूर्जरे।
थट्टायां भटनेर-मेदिनी तटे, श्रीमेदपाटे स्फुटम् ॥
श्रीजावालपुरे च योधनगरे, श्रीनागपुर्यां पुनः।
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्रीसत्यपुर्यामपि ॥१॥

मूलत्राणपुरे मरोट्टनगरे, देराउरे पुगले।
श्रीउच्चे किरहोर-सिद्धनगरे, धींगोटके संबले॥
श्रीलाहोरपुरे महाजन रिणी, श्रीआगराख्ये पुरे।
सांगानेरपुरे सुपर्नसरसि, श्रीमालपुर्यां पुनः॥२॥

श्रीमत्पत्तननाम्नि राजनगरे, श्रीस्तंभतीर्थेस्तथा।
द्वीपश्रीभृगुकच्छवृद्धनगरे, सौराष्ट्रके सर्वतः॥
श्रीवाराणपुरे च राधनपुरे, श्रीगूर्जरे मालवे।
..................................॥३॥

सर्वत्र प्रसरी सरीति सततं, सौभाग्यमाद्याल्पतः।
वैराग्यं विशदामतिः सुभगता भाग्याधिकत्वं भृश॥
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता, येषां यशोवादता।
सूरिश्रीजिनसागरा विजयिनोभूयासुरेते चिरम्॥४॥

आचार्या शतशश्च संति शतशो, गच्छेषु चाज्ञा परां।
त्वं त्वाचार्य पदार्थयुग् युगवरः प्रौढः प्रतापाकरः॥
भव्यानां भवसागरप्रतरणे, पोताय मानो भुवि।
श्रीमच्छ्रीजिनसागरः सुखकरः सर्वत्रशोभाकरः॥५॥

सौम्यश्रीहिम दीधितौ सुरगुरौ बुद्धिर्धरायां क्षमा।
तेजः श्रीस्तरणौ परोपकृतिघोः श्रीविक्रमे भूपतौ॥
सिद्धि गोरखनाथ योगिनि वहुलाभाश्च लम्बोदरे।

श्रीबोहित्थकुलांबुधिप्रविलसत्प्रालेयरोचिप्रभा ।
भास्वन्मातृमृगांसुकुक्षिसरसि श्रीराजहंसोपमा ॥
श्रीमद्विक्रमवासि विश्वविदितः श्रीवत्सराजङ्गजाः ।
सन्तुश्री जिनसागराः खरतरे गच्छे चिरं जीविनः ॥७॥

इत्थं काव्यकदम्बकं प्रवरकं मुक्ता पुरः प्राभृतम् ।
विज्ञप्तं समयादिसुन्दरगणि र्भक्त्या विधत्ते भृशम् ॥
युष्मत्प्रौढतमप्रतापतपनो देदीप्यतां सत्त्वरः ।
यूयं पूरयत स्वभक्तयतिनां शीघ्रं मनोवांछितम् ॥८॥

[अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर]

श्री जिनसागरसूरि गीतानि

(१) राग—कनड़ी

सखि जिनसागर सूरि साचउ । स० ।
श्री खरतर गच्छ सोह चड़ावइ, जाणइ हीरउ जाचउ । स०।१।
सुललित वाणि वखाण सुणावइ, कहइ मत माया राचउ । स० ।
ए संसार असार अथिर छइ, ज्यूं माटी घट काचउ । स०।२।
शांत दांत सोभागी सदगुरु, वड़े वड़े विरुदे वाचउ । स० ।
समयसुन्दर कहइ ए गुरु ऊपरि, चतुर हुवइ ते राचउ । स०।३।

(२) राग—शुद्ध नाट

धन दिन जिन सागर सूरि निरखी नयणा । एए आं ।
सुललित सिद्धान्त वाचइ अमृत वयणा ॥ ध०॥१॥

गुहिर गंभीर मेघ जिम गाजति गयणा। ए ए आ।
नवतत्व भेद नीर पावइ चातक सयणा॥ ध०॥२॥
वच्छराज साह वंश विभूषण गुण मणि रयणा। ए ए आ।
समयसुन्दर गुरु के दरशि चित्त होत चयणा॥ ध०॥३॥

(३) राग—हमीर कल्याण

जिन सागर सूरि गच्छपति गिरुयउ। जि०।
कुण कहूं ए सदगुरु सरिखउ,
किहां कंचणि किहां पीतल तरुयउ॥ जि० ॥१॥
श्री जिन शासन सोह चढावइ,
जिम सुगंध वाड़ि मांहि मरुयउ।
समयसुन्दर कहि ए गुरु उत्तम,
किणहि ऊपरि चितइ नहीं वरुयउ॥ जि० ॥२॥

(४) राग—भूपाल

ढाल—शालिभद्र आज तुम्हानइ आपणी माता

जिनसागर सूरि गच्छपति गरुयउ,
खरतर गच्छ मांहि सोहइ रे।
तप जप संयम कठिन क्रिया करि,
भवियण ना मन मोहइ रे॥ जि० ॥१॥
युगप्रधान जिनचंद सूरीसरि,
पात्र जोग [illegible] औं [illegible] रे।

श्री जिनसिंह सूरि पाटोधर,
कहउ सामल सम को हइ रे ॥ जि० ॥२॥
वयरागी संवेगी सदगुरु,
वयर विरोध निपोहइ रे ।
समयसुन्दर कहइ देस विदेसे,
सहु श्रावक पड़िबोहइ रे ॥ जि० ॥३॥

(५) राग—गुन्ड

अइओ नंद नंदना, नंद नंदना; साह वच्छराज के नंदना ।
अइओ चंद चंदना, चंद चंदना; वचन अमीरस चंदना ॥१॥
अइओ फंद फंदना, फंद फंदना; नहिं माया मोह फंदना ।
अइओ कंद कंदना, कंद कंदना; दुख दारिद्र निकंदना ॥२॥
अइओ इंद इंदना, इंद इंदना; जिनसागरसूरि इंदना ।
अइओ वंद वंदना, वंद वंदना; समयसुन्दर कहइ वंदना ॥३॥

(६) राग—तोड़ी

गुरु कुण जिनसागर सूरि सरिखउ री[१] । गु० ।
शीलवंत अनइ सोभागी[२], पांच माणस पंडित परखउ री। गु.।१।
किहां काच[३] किहां पांच अमूलिक, किहां अरहट कातण चरखउ री ।
किहां करीर किहां सुरतरु सुंदर, किहां मेर कंचन करखउ री। गु.।२।

---

१ कुण सुगुरु जिनसागर सरिखउ री, २ संवेगी, ३ कचकि,

सुगुरु कुगुरु नउ एह पटंतर, निर्विरोध[४] नयणे निरखउ री।
समयसुंदर कहइ एह धर्म पच, साचउ जाणी सहु[५] हरखउ री। गु.।३।

(७) राग—धन्याश्री

वंदउ वंदउ रे श्री जिनसागर सूरि वंदउ री।
शांत दांत दर्शन गुरु देखी, अधिक अधिक आनंदउ री। श्री.।१।
श्रीजिनसिंघ सूरि पटोधर, साह वच्छराज कुलचंद।
सूत्र सिद्धांत वखाण सुणावत, जाणी अमृत रस विंदो जी। श्री.।२।
मन वंछित पूरवइ ए मुनिवर, जिम सुरतरु नो कंदो री।
समयसुँदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, चतुर्विध संघ चिर नंदउ री। श्री.।३।

(८) ढाल—आवउ रे सहियर सवि मिली जी.

वहिनी आवउ मिलि वेलड़ी जी, सजि करि सोल शृङ्गार।
पहिरी पटोली ओढउ चूनड़ी जी, तिलक करो तुमे सार।१।
सुगुरू वधावउ सखि मोतिये जी, श्री जिनसागर सूरि।
आणंद हुयइ घरि आपणइ जी, अलिय विघन जायइ दूरि। सु. ।२।
सखर करउ तुमे साथियउ जी, कूँकूँ भरिय कचोल।
चौक पूरउ तुम्हे चाउलइ जी, गीत गायउ रमझोल। सु. ।३।
नारि करउ तुम्हे लूँछणा जी, लटकितइ हाथि उलास।
विधि सुं करउ गुरू वंदणा जी, वास ल्यउ सदगुरु पास। सु. ।४।
खरतर गच्छ केरउ राजियउ जी, जिनसिंहसूरि पटधार।
जिनसागर सूरि चिरजयउ जी, समयसुन्दर सुखकार। सु. ।५।

४ गुण समुद्र, ५ हियइ। [अनूप संस्कृत लाइब्रेरी से

(६) ढाल—भरत यात्रा भणी ए, अथवा-वाहण सिलामती ए

जिनसागर सूरि गुरु भला ए, मोटा साधु महंत ॥ जि०॥
रहणी अति रूड़ी रहइ ए, सौम्य मूरति शांत दांत ॥ जि०॥१॥
लघु वय जिण संजम लियउ, सूत्र सिद्धांत ना जाण ॥ जि०॥
वचन कला भली केलवी ए, सुललित करइ रे वखाण ॥ जि०॥२॥
शीलवंत शोभा घणी ए, सहु को आपइ साख ॥ जि०॥
नींबोली सुं मन नहीं ए, मिली मुझ मीठी द्राख ॥ जि०॥३॥
अम्हारइ सखि गुरु एहवा ए, अम्हे राचुं नहीं काच ॥ जि०॥
जिनसागरसूरि चिरजयउजी, समयसुन्दर सुखकार ॥ जि०॥४॥

(१०) ढाल—भलुं रे थयुं म्हारा पूज जी पधार्या

पुण्य संजोगइ अम्हे सद्गुरु पाया, नहीं ममता नहीं माया ।१।
जिनसागर सूरि मिरगादे जाया, संघसूरि पाट सवाया ।
खरतर गच्छ केरा राया, जिनसागरसूरि मिरगादे जाया । आं. । पु.।
वयरागी गुरु सुललित वाणी, अम्ह मनि अमिय समाणी । जि.।२।
चालइ ए गुरु पंचाचारइ, आप तरइ बीजां तारइ । जि.।३।
बाई रे अम्हारा गुरु थोड़ा मुख बोलइ, रतन चिंतामणि तोलइ । जि.४।
बाई रे अम्हे लह्या ए गुरु साचा, समयसुन्दर नो वाचा । जि.।५।

(११) ढाल—नयण निहालो रे नाहला, अथवा
पोपट चाल्यो रे परणवा एहनी.

मनडुं मोह्युं रे माहरूं, गुरु ऊपरि गुणराग ।
जिनसागर सूरि गुरु भला, साचउ जेहनउ सोभाग । म.।१।

मधुकर मोह्यउ रे मालती, कोइल जिम सहकार।
महिगल मोह्यउ रेवा नदी, सतीय मोही भरतार। म.।२।
मानस मोह्यउ रे हंसलउ, चंद सु मोह्यउ चकोर।
मृगलउ मोह्यउ रे नाद सुं, मेह सुं मोह्यउ रे मोर। म.।३।
जिनसागर सूरि सारखा, उत्तम ए गुरु दीठ।
मन रंग लागो बाई माहरउ, जेहो चोल मजीठ। म.।४।
तारइ ते गुरु आपणा, जे हवा दरियइ जिहाज।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ, सहु ना जिम सरइ काज। म.।५।

(१२) ढाल—दुमुह नाम राजा घरः रे गुणमाला पटराणि
(बीजा प्रत्येक बुद्ध ना खड नी)
अथवा, फिट जीव्यु थारु रामला रे जसूड़ी लूखउ खाय, एहनी.

न्याति चउरासी निरखतां रे, ओसवाल उत्तम न्याति।
बुद्धिवंत कुल बोथरा रे, बीकानेर विख्यात रे ॥ १ ॥
अम्हारा गुरु जिनसागर सूरि एह।
शांत दांत शोभा घणी रे, कठिन क्रिया करइ तेह रे। अ.।२।
मात मृगादे उरि धरयउ रे, वच्छराज साह मल्हार।
जिनसिंह सूरि पटोधरु रे, खरतरगच्छ सिणगार। अ.।३।
बोलइ थोड़ूँ बइठा रहइ रे, वाचइ सूत्र सिद्धान्त।
राति ऊभां काउसग्ग करइ रे, ध्यान धरइं एकान्त। अ.।४।
फरस भला अति फूटरा रे, आउलि चांपा फूल।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ रे, तिहुं माहें कुण बहु मूल। अ.।५।

(१३) श्री जिनसागरसूरि सवैया*

सोल शृङ्गार करइ सुन्दरी, सिर ऊपर पूरण कुम्भ धरइ ।
पिहिउं पिहिउं पहकइ नफेरी, गृधुं धु दमामा की धूँस परइ ॥
गायइ गीत गान गुणी जन दान, पटंबर चीर पगे पघरइ ।
समयसुन्दर कहइ जिनसागरसूरि कउ, श्रावक ऐसो पैसारउ करइ ॥१॥

(१४) ढाल—साहेली हे आंबलउ मोरीयउ, ए गीतनी.

साहेली हे सागर सूरि वांदियइ,
जिण वांद्या हे हुवइ हरख अपार ।
साहेली हे सोम मूरति सोभा घणी,
साहेली हे उत्तम आचार ॥ सा.॥१॥
साहेली हे वयरागी गुरु वालहा,
साहेली हे वांचइ सूत्र सिद्धांत ।
साहेली हे तप जप किरिया आकरी,
साहेली हे दरसण शांत दांत ॥ सा.॥२॥
साहेली हे जिणचंदसूरि कह्युं जेहु तुं,
साहेली हे सामल सिरदार ।
साहेली हे तेह वचन विमाहिज थयुं,

*[जेसलमेरु नगरे आचार्य खरतरोपाश्रये यति चुन्नीलाल समहे स्वयं लिखित पत्रात्]

साहेली हे पूज्य थया पटधार ॥ सा.॥३॥
साहेली हे उठि प्रभाते एहनइ,
साहेली हे प्रणम्यां जायइ पाप।
साहेली हे समयसुन्दर कहइ अति घणउ,
साहेली ए हुज्यो तेज प्रताप ॥ सा.॥४॥

(१५) राग—प्रभाती

सिणगार करउ रे साहेलड़ी रे,
वहिनी आवउ मिली वेलड़ी रे ॥ सि०॥१॥
वांदउ गुरु मोहन वेलड़ी रे,
सांभलतां जाणे मीठी सेलड़ी रे ॥ सि०॥२॥
पाटू नी पूजि ओढउ पछेवड़ी रे,
पाटण नी नीपनी सखरी दोपड़ी रे ॥ सि०॥३॥
कठिन तुम्हारी क्रिया केवड़ी रे,
तुम्हे तो पदवी पामी तेवड़ी रे ॥ सि०॥४॥
जिनसागर सूरि नी महिमा जेवड़ी रे,
समयसुन्दर कहइ एवड़ी रे ॥ सि०॥५॥

इति श्रीजिनसागरसूरि गीतानि।

संघपति सोमजी वेलि

संघपति सोम तणउ जस सगलइ,
वरण अठारह करइ वखाण।

मूयउ कहइ तिके नर मूरिख,
जीवइ जगि जोगी सुत जाण ॥ सं० ॥ १ ॥
दीपक वंश मुंडायउ देहरउ,
अद्भुत करण धरयउ अधिकार ।
नलिनि गुल्म विमान निरखवा,
सोम सिधायउ सरग मझार ॥ सं० ॥ २ ॥
मोटा सबल प्रासाद मंडायउ,
करिवा मांड्यउ सोम सुकाज ।
पृथिवी मांहि तिसउ नही परिकर,
इन्द्र पास लेण गयउ आज ॥ सं० ॥ ३ ॥
आख्यउ जुगप्रधान साहि अकबर,
जिनचन्द सूरि गुरु वड़उ जतीश ।
सोम गयउ पूछण सुर लोके,
वासव कहस्यइ विसवा वीस ॥ सं० ॥ ४ ॥
भामउ अनइ करमचंद भाखइ,
राज काज तणी सवि रीति ।
हरि तेड्यउ सोम तुं हिवणां,
पूछण धरम तणी परतीति ॥ सं० ॥ ५ ॥
नास्तिक मत थापइ गुरु नित नित,
सभा मांहि पोपइ सिणगार ।
इन्द्र धरम धुरंधर आण्यउ,
सत्यवादी साहां सिरदार ॥ सं० ॥ ६ ॥

पुण्य कृतूत किया अति परिघल,
सुरपति सबल पड़ी मन सांक।
पहुँतउ सोम इन्द्र परिचात्रा,
वरस्युं मुगति नहीं तुझ वांक ॥ सं० ॥ ७ ॥
वड़ दातार दान गुण विक्रम,
संघपति जोगी साह सुतन्न।
सोम गयउ धनद समझावा,
धरमइ कायन खरचइ धन्न ॥ सं० ॥ ८ ॥
विंब प्रतीठ संघ करि बहुला,
लाहणि साहमी सगले लाहि।
ख्याति घणी खरतर गच्छि कीधी,
वड़ हथ लीधउ वारउ वाहि ॥ सं० ॥ ९ ॥
प्राग वंश बिहुँ पखि पूरउ,
रूड़उ गुरु गच्छ उपरि राग।
सानिध करे सोम सदगुरु नइ,
सुंदर जस दीपइं सोभाग ॥ सं० ॥१०॥

इति सोमजी निर्वाण वेलि गीत संपूर्णम्।
कृत विक्रमनगरे समयसुन्दर गणिना ॥ शुभं भवतु॥

गुरुदुःखितवचनम्

क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीता अपवादतः।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ १ ॥

वंचयित्वा निजात्मानं, पोषिता मृष्टशुक्तितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यै किं तैर्निरर्थकैः ॥ २ ॥
लालिताः पालिताः पश्चान्मातृपित्रादिवद् भृशं ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ३ ॥
पाठिता दुःख पापेन, कर्मबन्धं विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ४ ॥
गृहस्थानामुपालम्भाः, सोढा वाढं स्वमोहतः ।
यदि ते न गुरोर्भचाः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ५ ॥
तपोपि वाहितं कष्टात्कालिकोत्का लिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ६ ॥
वाचकादि पदं प्रेम्णा, दायितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ७ ॥
गीतार्थ नाम धृत्वा च, बृहत्क्षेत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ८ ॥
तर्क-व्याकृति-काव्यादि, विद्यायां पारगामिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ९ ॥
सूत्र–सिद्धान्त–चर्चायां, याथातथ्यप्ररूपकाः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१०॥
वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥११॥

ज्योतिर्विद्या—चमत्कारं, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१२॥
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्याश्च महिमा महान् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१३॥
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छहृच्चितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१४॥
गच्छस्य कार्यकर्त्तारो, हर्त्तारो तेंश्चऽभूस्पृशाम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१५॥
गुरुर्जानाति वृद्धत्वे, शिष्याः सेवाविधयिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१६॥
गुरुणा पालिता नाऽऽज्ञा-ऽर्हतोऽतोऽतिदुःखभागऽभूत् ।
एषामहो गुरुर्दुःखी, लोकलज्जापि चेन्नहि ॥१७॥
न शिष्य-दोषो दातव्यो, मम कर्मैव तादृशम् ।
परं भद्रकभावेन, लोला लोलायते मम ॥१८॥
संवत्यष्टनवत्यग्रे, राजधान्यां स्वभावतः ।
स्वरूपं प्रकटीचक्रे, गणिः समयसुन्दरः ॥१९॥*

(२)

चेला नहीं तउ म करउ चिंता,
दीसइ घणे चेले पण दुक्ख ।
संतान करंमि हुया शिष्य बहुला,
पणि समयसुन्दर न पायउ सुक्ख ॥ १ ॥

*[स्वय लिखित पत्र १ मं मा भक्ति भंडार]

केई मुया गया परिण केई,
केई जूया रहइ परदेस ।
पासि रहइ ते पीड़ न जाणइं,
कहियइ घणउ तउ थायइ किलेस ॥ २ ॥
जोड़ घणी विस्तरी जगत मइं,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यंत ।
पणि एकणि वात रही अणूरति,
न कियउ किण चेलइ निश्चिन्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सांभलिज्यो,
देतउ नहीं छुं चेलां दोस ।
जिन आज्ञा न पाली जमंतरि,
तउ शिष्यां दिसि किसउ करूं सोस ॥ ४ ॥
समयसुन्दर कहइ कर जोड़ि,
ऊपरला सुणिजे अरदास ।
मनोरथ एक धरूं छुं ध्रम 'रउ,
ए तूँ पूरि अम्हारी आस ॥ ५ ॥

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—मारुणी.

जागि जागि जंतुया तुँ, कांइ निचिंतउ सोवइ री ।जा.।
तनु छाया मिस मरण तोकुँ, आपणी घात जोवइ री ।जा.।१।

माया मोह मांहि लपटाणउ, काइं जमारउ खोवइ री ।जा.।
समयसुन्दर कहति एक ध्रम, तेही सुख होवइ री ।जा.।२।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—आसाउरी

रे जीव वखत लिख्या सुख लहियइ ।
झूरि झूरि काहे होत पांजर, दैव दीना दुख सहियइ ।रे.।१।
अइसउ नहीं कोऊ अंतरजामी, जिण आगलि दुख कहियइ।
जोर नहीं परमेसर सेती, ज्यूं राखइ त्यूं रहियइ ।रे.।२।
कुल की लाज प्रजाद मेटत कुण, जिम तिम करि निरवहियइ ।
समयसुंदर कहइ सुख कउ कारण, एक धरम सरदहियइ ।रे.।३।

जीव प्रतिबोध गीतम्

ढाल—कपूर हुवउ अति ऊजलो एहनी.

जिवड़ा जाणे जिन धर्म सार, अवर सहु रे असार ।जि.।
कुटुंब सहु को कारमुं रे, को केहनउ नवि होय ।
नरक पडंतां प्राणिया तूं नइ राखणहार कोय ।जि.।१।
कूड़ कपट नवि कीजियइ रे, पापे पिण्ड भराय ।
पहिले पुण्य न कीजियइ रे, तउ पछइ पछतावो थाय ।जि.।२।
काया रोग समाकुली रे, खिण खिण तूटइ आयु ।
सनतकुमार तणी परइ रे, खिण मांहे खेरू थाय ।जि.।३।

कीधा पाप न छूटियइ रे, पाप थकी मन वाल।
काने विहुं खीला ठव्या रे, तउ वीर तणइ गोवाल।जि.।४।
मरण सहु नइ सारखउ रे, कुण राजा कुण रांक।
पणि जायइ जीव निसंबलउ रे, एहिज मोटउ वांक।जि.।५।
जे पाखइ सरतुं नहीं रे, जे साथइ प्रतिबंध।
ते माणस उठि गया रे, तउ धरम पखइ सहु धंध।जि.।६।
जन्म मरण थी छूटियइ रे, न पड़ीजइ गर्भावास।
समयसुन्दर कहइ ध्रम थकी रे, लहियइ लील विलास।जि.।७।

जीव प्रति बोध गीतम्

राग—आसाउरी-सिंधुड़उ

जीवड़ा रे जिन ध्रम कीजियइ, ए छइ परम आधारो रे।
अवर सहु को अथिर छइ, सकल कुटुंब परिवारो रे।जी.।१।
दस दृष्टांते दोहिलउ, वलि मनुष्य भव सार।
ते पुण्य जोगे पामियउ, जीव जन्म आलि म हारो रे।जी.।२।
अति अथिर चंचल आउखउ, रमणीक यौवन रूप।
चक्रवर्त्ती सनतकुमार ज्युं, जीव जोई देह सरूपो रे।जी.।३।
चक्रवर्त्ती तीर्थंकर किहां, किहां गणधर गुण पात्र।
ते पण विधाता अपहर्‌या, तो अवर केही मात्रो रे।जी.।४।
जीव रात्रि दिवस जे जाइ छै, वलि नवि आवै तेह।
तप जप संजम आदरी, करी सफल आतम देहो रे।जी.।५।

अति तुच्छ सुख संसार नो, मधु लिप्त खड्गनी धार ।
किंपाक ना फल सारिखा रे, द्यै दुख अनेक प्रकारो रे ।जी.।६।
विश्वास म कर स्त्री तणउ ए, मुगधजन मृग पास ।
अति कूड़ कपट तणी कूँडी वलि, दियइ २ दुर्गति वासो रे ।जी.।७।
जीव अत्यंत प्रमादियउ, दूषम काल दुरंत ।
तिण शुद्ध क्रिया नहीं पलइ, आधार एक भगवंतो रे ।जी.।८।
मन मेरु नी परइ दृढ करी, स्थिर पाली निरतिचार ।
भव भ्रमण थी जिम छूटियइ, पामियइ भवनो पारो रे ।जी.।९।
जग मांहि ते सुखिया थया, वलि हुयइ हुइस्यइ जेह ।
ते वीतराग ना धरम थी रे, इहां नहीं कोई संदेहो रे ।जी.।१०
जिन धर्म सूधो आदरे ए, सीख अमृत धार ।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिम लहै भवनो पारो रे ।जी.।११।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—गउड़ी

ए संसार असार छइ, जीव विमासी जोय ।
कुटुंब सहु को कारमउ, स्वारथ नउ सहु कोय ।ए०।१।
खिण खिण इन्द्रिय बल घटइ, खिण खिण ट्रूटै आय।
वृद्ध पणइ परवश पड्या, कहि किम धर्म कराय ।ए०। २ ।
जाल जंजाल मांहि पड्यउ, आलि जमारउ म खोय।
कर तप जप एकै साधना, साचउ संबल जोय ।ए०। ३ ।

सांभलि सीख सोहामणी, ममता थी मन वाल ।
समयसुन्दर कहइ जीव नइ, सुधउ संजम पाल ।ए०। ४ ।

जीव प्रतिबोध गीतम्

ऐसारा जाण असार संसार, करि धर्म आलि म हारि जमारा ।१।ऐ.।
मात पिता प्रिय कुटुंब सनेहा, स्वार्थ विनु दिखरावइ छेहा ।२।ऐ.।
धन यौवन सब चंचल होइ, राख्या न रहइ कबहीं सोई ।३।ऐ.।
जीर्ण पात परे ज्युं समीरा, तइसा री जीवत अथिर सरीरा ।४।ऐ.।
जिण शिर चामर छत्र धराते, वो भी रे छोरि गये चिल्लाते ।५।ऐ.।
बहुत उपाय किये क्या होई है है, मरण न छूटइ कोई ।६।ऐ.।
पाप करी पिछताणा भारी, हाऱ्या रे हाथ घसै ज्युं जुआरी ।७।ऐ.।
किणही की जियु बात न करणी, अपनी करणी पार उतरणी ।८।ऐ.।
मृगनयणी नयणे म लुभाये, ध्यान धर्म सुं जीव चित लाये ।६।ऐ.।
समयसुंदर कहइ जीव सुं विचारी, या हित सीख करे सुखकारी ।१०।ऐ.।

धर्म महिमा गीतम्

रे जीया जिन धर्म कीजियइ, धरम ना चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, जग मइं एतलउ सार ।रे.।१।
वरस दिवस नइ पारणइ, आदीसर सुखकार ।
इक्षुरस दान वहिरावियउ, श्री श्रेयांस कुमार ।रे.।२।
चंपा बार उघाड़ियउ, चालणी काढ्यउ नीर ।
सती सुभद्रा यश थयउ, शीले सुर गिरि धीर ।रे.।३।

तप करि काया सोखवी, सरस निरस आहार ।
वीर जिणंद वखाणियउ, ते धन्नउ अणगार ।रे.। ४।
अनित्य भावना भावतां, धरतां निर्मल ध्यान ।
भरत आरीसा भवन मइं, पाम्यउ केवल ज्ञान ।रे.। ५।
श्री जिन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छांहि।
समयसुन्दर कहइ सेवता, मुक्ति तणां फल पाहि ।रे.। ६।

जीव नटावा गीतम्

राग—नट नारायण

देखि देखि जीव नटावइ, अइसउ नाटक मंड्यउ री ।
कर्म नायक नृत्य करायउ, खेलत ताल न खंड्यउ री ॥दे.।१।
कबहि राजा कबहि रंक, कबहि भेख त्रिदण्ड्यउ ।
कबहि मूरिख कबहि पंडित, कबहि पुस्तक पंड्यउ री ॥दे.।२।
चउरासी लख भेख बनाए, कोउ भेख न छंड्यउ ।
समयसुंदर कहइ धर्म विना सब, आप वृथा कर भंड्यउ री ॥दे.।४।

आतम प्रमोद गीतम्

राग—कालहरउ

बूझि रे तूँ बूझि प्राणी, वालि मन वइराग रे ।
अथिर नर आउखुं दीसइ, जाणि संध्या राग रे ॥१॥बू०॥
माणुषो भव लही दुर्लभ, पापे पिंड म भार रे ।
आल काग उडावणै कुं, मूढ रत्न म हार रे ॥२॥बू.॥

कारिमा एह कुटुंब काजइ, म कर करम कठोर रे ।
एकलउ जीव सहीस परभव, नरक ना दुख घोर रे ॥३॥वू.
काम भोग संयोग सगला, जाण फल किंपाक रे ।
दीसतां रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे ॥४॥वू.
गर्व गरथ तणउ न कीजइ, थिर न रहस्यै कोय रे ।
राय फीटी रंक थावइ, राय हरिचंद जोय रे ॥५॥वू०
ए असार संसार मांहे, जाणि जिण ध्रम सार रे ।
नरक पड़तां थकां राखइ, परम हित सुखकार रे ॥६॥वू.
इम जाणी जीव जिन धर्म कीजइ, लीजियै कछु सार रे ।
समयसुन्दर कहत जीव कुं, पामियै भव पार रे ॥७॥वू०

वैराग्य शिक्षा गीतम

म कर रे जीउड़ा मूढ, म माया सब मेरा मेरा ।
आप स्वारथ सब मिले, नहीं को जग तेरा ॥म०॥१॥
एक आवै चलै एकला, कुछ साथ न आवइ ।
भली बुरी करणी करी रे, पीछे सुख दुख पावइ ॥म०॥२॥
धर्म विलंबन कीजियइ रे, एहु अथिर संसारा ।
देखत देखत बाजता रे, घड़ी में घड़ियारा ॥म०॥३॥
एक के उदर भी दोहिला, एक के छत्र धरीजइ ।
आपणे कीने कर्मड़े रे, किस कुं दोष न दीजइ ॥म०॥४

आप समउ और लेखिपइ, तुझे बहुत क्या कहणा।
समयसुन्दर कहइ जीव कुं रे, ऐसी सीख में रहणा ॥म०॥५॥

घड़ी लाखीणी गीतम्

राग—आसावरी

घड़ी लाखीणी जाइ वे, कछु धरम करउ चित लाइ वे ।घ.।१।
इहु मानव भव दोहिला लाधा,रमत खेलत माल्हन गया आधा ।घ.।२।
कुण जाणइ आगइ क्या होई, मरण जरा मिलि आवत दोई ।घ.।३।
वरसां सौ जीवण की आसा, पण एक घड़िय नहीं वेसासा ।घ.।४।
समयसुंदर कहइ अथिर संसारा, जनमि २ जिन ध्रम आधारा ।घ.।५।

सूता जगावण गीतम्

राग—भैरव

जागि जागि जागि भाई जागि रे तुं जागि।
भोर भयो ध्रम मारगि लागी ॥जा०।१।
सूता रे तेह विगूता सही ।
जागंतां कोउ डर भय नहीं ।.जा०।२।
देव जुहारी गुरु वांदण जाइ ।
सुणि रे वखाण तोरा पाप पुलाई ॥जा०।३।
देहु दान कछु कर उपगार ।
समयसुन्दर कहइ ज्युं पामइ भव पार ॥जा०।४।

प्रमाद त्याग गीतम्

प्रातः भयउ प्रात भयउ, प्राणी जीउ जागि रे ।
आलस प्रमाद तज, धर्म ध्यान लागि रे ॥
खोटी माया जाल एह, प्रभु गुण गावो रे ।
कछुक उपगार करो, जेह थी सुख पावो रे ॥प्रा०॥१॥
हाथ दीने पांव दीन्हे, बोलवै कुं वैण रे ।
सुणवै कुं कान दीने, देखवै कुं नैण रे ॥प्रा०॥२॥
दिन दिन आए एह, ते तो घटतउ आयु रे ।
तेरो जन्म सरानो जात, लोहा कैसे ताउ रे ॥प्रा०॥३॥
केतो धन माल एतो, स्वारथियउ संसार रे ।
करणी तुं विन नहीं, पावे भव पार रे ॥प्रा०॥४॥
अंतर विचार करउ, समयसुंदर कहइ ।
अंतर प्रकाश विना, शिवसुख कुण लहै ॥प्रा०॥५॥

प्रमाद त्याग गीतम्

जागौ रे जागौ रे भाई परभात थयउ ।
धरम सूरज उग्यउ अंधारउ गयउ ॥भा०जा०॥१॥
आलस प्रमाद ऊंघ कीधा क्युं जुड़े ।
चवद पूरवधर निगोद पड़ै रे ॥भा० जा०॥२॥
रूड़ी परि राई प्रायश्चित पड़िकमणौ करो ।
किरीया करी पूँजी पूछी काजउ ऊधरौ ॥भा० जा०॥३॥

देहरइ जाइ नइ तुमे देव जुहारो।
सुगुरु वांदी नइ सूत्र संभारो रे ॥भा० जा०॥४॥
मनुष्य जमारउ कांइ आलि गमाड़उ।
समयसुन्दर कहइ प्रमाद छांडउ रे ॥भा० जा०॥५॥

मन सज्झाय

मना तने कई रीते समझावुं।
सोनुं होवे तो सोगी रे मेलावुं, तावणी ताप तपावुं।
लई फूँकणी ने फुंकवा बेसूँ, पाणी जेम पिगलावुं। म०।१।
लोढुं होवे तो एरण मंडावूं, दोय दोय धमण धमावुं।
ऊपर घणा री घमसोर उडावूं, जांतली तार कढावुं। म०।२।
घोड़ो रे होवे तो ठाण बंधावुं, खासी जन मंडावुं।
अस्वार होइ करि माथे बैठावुं, केइ केइ खेल खेलावुं। म०।३।
हस्ती होवे तो ठाण बंधावुं, पाय घुघरी घमकावुं।
मावत होइ कर माथे बेठावुं, अंकुश दइ समझावुं। म०।४।
शिला होवे शिलावट मंगावुं, टांकणे टांक टंकावुं।
विध विध देवकी प्रतिमा निपजाऊं, जगत ने पाये नमावुं। म०।५।
चचल चोर कठिन है तुं मनवा, पल एक ठौर न आवे।
मना तने मुनिवर समझावे, जोत में जोत मिलावे। म०।६।
जोगी जोगेसर तपसी रे तपिया, ज्ञान ध्यान से ध्यावो।
समयसुंदर कहइ मंइ पण ध्यायो, ते पण हाथ न आयो।

मन धोबी गीतम्

धोबीड़ा तूँ धोजे रे मन केरा धोतिया, मत राखे मैल लगार।
एण मइले जग मैलो करचउ रे, विण धोयां तूँ मत राखे लगार। धो.।१।
जिन शासन सरोवर सोहामणो रे, समकित तणी रूड़ी पाल।
दानादिक चारु ही वारणा, मांहे नवतत्त्व कमल विशाल। धो.।२।
त्यां झीलइ रे मुनिवर हँसला, पीवै छइ तप जप नीर।
शम दम आदि जे शीला रे, तिहां पखाले आतम चीर। धो.।३।
तपवजे तप नइ तड़के करी रे, जालवजे नव ब्रह्मवाड़।
छांटा उडाडे रे पाप अढार ना रे, जिम उजलो हुवे ततकाल। धो.।४।
आलोयण साबुड़ो सुद्धि करी रे, रखे आवे नी माया सेवाल।
निश्चय पवित्र पणो राखजे, पछइ आपणो नेम संभाल। धो.।५।
रखे तूं मूके तो मन मोकलो रे, चाल मेली नइ संकेल।
समयसुन्दर नी आ छइ सीखड़ी, सीखड़ली मोहन वेल। धो.।६।

माया निवारण सज्झाय

माया कारमी रे माया म करो चतुर सुजाण।
काया माया जन विशुद्धि, दुखिया थाइं जाण ॥ १ ॥
माया कारण देश देसांतर, अटवी वन मां जावै रे।
प्रवहण बइसी धीर द्विपांतर, सायर मां झपावै रे ॥ २ ॥
माया मेली करी बहु भेली, लोभे लक्षण जाय रे।
भीतें धन धरती में घाले, ऊपर विषहर थाय रे ॥ ३ ॥

जोगी जंगम तपसी सन्यासी, नगन थइ परवरीया रे।
ऊंधे मस्तक अगन धखंती, माया थी न ओसरिया रे ॥ ४ ॥
नाहना मोटा नर ने माया, नारी नै अधिकेरी रे।
वली विशेषे अधिकी व्यापइ, गरढा नइं झाझेरी रे ॥ ५ ॥
शिवभूति सरिखो सत्यवादी, ससमें घोपें वाइ रे।
रतन देखि मन तेहनउ चलियउ, मरी नइ दुरगति जाइ रे॥ ६ ॥
एहवुं जाणी भवियण प्राणी, माया मूकउ अलगी रे।
समयसुन्दर कहइ सार छइ जगमें, धरम रंग सुं विलगी रे॥ ७ ॥

माया निवारण गीतम्

राग—रामगिरी

इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा।
जीव तुं विमासि नहीं कुछ तेरा ॥ इ०॥१।
सासतां सोस करइ बहु तेरा, आंखि मीची तब जग अंधेरा।इ.।२।
माल मलूक तंबू का डेरा, सब कछु छोरि चलइगा इकेरा।इ.।३।
समयसुंदर कहइ कहुँ क्या घणेरा, माया जीतइ तिणका हू चेरा।४।

लोभ निवारण गीतम्

राग—रामगिरी

रामा रामा धनं धनं,
भमतउ रहइ तूं राति दिनं, भाई रा.।

पुण्य विना कहि क्युँ धन पाइयइ,
पूछि न मानइ तउ पंच जनं, भाई रा. ।१।
घर धंधइ सब धरम गमायउ,
वीसरि गयउ देव गुरु भजनं ।
पोटि उपाड़ि गये कुण परभवि,
म करि म करि जीव लोभ घनं, भाई रा. ।२।
पग मांहे मरण वहइ रे मूरिख,
माया जाल म पड़ि गहनं ।
समयसुंदर कहइ मान वचन मेरउ,
ध्रम करि ध्रम करि एक मनं, भाई रा. ।३।

पारकी होड निवारण गीतम्

राग—गुण्ड मिश्र

पारकी होड तूँ म करि रे प्राणिया,
पुण्य पाखइ म करि हूंसि खोटी ।
वापड़ा जीव वावी तइं जउ बाजरी,
कहि किम लुणिसि तुं सालि मोटी ॥पा०॥१॥
जउ तंइ सोनार नइं जसद घड़िवा दियउ,
तउ तूँ मांगइ किम कनक त्रोटी ।
देखि हनुमंत की हूंसि मांहे रली,
राम बगसीस कीनी कछोटी ॥पा०॥२॥

पुण्य तइं राज नइं रिद्धि सुख पामियइ,
पुण्य पाखइ न रोटी न दोटी।
समयसुँदर कहइ पुण्य कर प्राणिया,
पुण्य थी द्रव्य कोटान कोटी ॥पा०॥३॥

मरण भय निवारण गीतम्

राग–आसावरी

मरण तणउ भय म करि मूरिख नर, जिण वाटे जग जाइ रे।
तीर्थंकर चक्रवर्त्ती अतुल बल, तिण पणि खिण न रहाइ रे।म.।१।
तप जप संजम पालि तूं सूधुं, ध्यान निरंजन ध्याइ रे।
समयसुंदर कहइ जिम तु जिवड़ा, परभव सुखियउ थाइ रे।म.।१।

आरति निवारण गीतम्

राग–गूजरी

मेरी जीउ आरति कांइ धरइ।
जइसा वखत मइं लिखति विधाता, तिण मइं कछु न टरइ।मे.।१॥
केइ चक्रवर्त्ती सिर छत्र धरावत, किइ कण मांगत फिरइ।
केइ सुखिए केइ दुखिए देखत, ते सब करम करइ।मे.।२॥
आरति अंदोह छोरि दे जीयुरा, रोवत न राज चरइ।
समयसुंदर कहइ जो सुख वंछत, तउ करि ध्रम चित खरइ।मे.।३॥

मन शुद्धि गीतम्

एक मन सुद्धि बिन कोउ मुगति न जाइ ।
भावइं तूँ केस जटा धरि मस्तकि, भावइ तुं मुंड मुंडाइ ।ए.।१॥
भावइ तूँ भूख तृषा सहि वन रहि, भावइ तूँ तीरथ न्हाइ ।
भावइ तूँ साधु भेख धरि बहु परि, भावइ तूँ भसम लगाइ ।ए.।२॥
भावइ तूँ पढि गुणि वेद पुराणा, भावइ तूँ भगत कहाइ ।
समयसुंदर कहि साच कहूं सुण, ध्यान निरंजन ध्याइ ।ए.।३॥

कामिनी-विश्वास-निराकरण-गीतम्

राग—सारङ्ग

कामिनी का कहि कुण विसासा । का० ।
खिण राचइ विरचइ खिण मांहे,
खिण विनोद खिण मेलै निसासा ॥ का० ॥१॥
वचनि अउर अउर चित अंतर,
अउर सुं करइ हांसा ।
चंचल चित्त कूड अति कपटिनि,
मुग्ध लोग मृग बंधनि पासा ॥ का० ॥२॥
धन जे साध तास संगति तजी,
जाइ रहे वन वासा ।
समयसुन्दर कहइ सील अखंडित,
पालइ ताके चरण कउ हूं दासा ॥ का० ॥३॥

स्वार्थ गीतम्

राग—आसाउरी

स्वारथ की सब हइ रे सगाई,
कुण माता कुण बहिन रि भई ॥ स्वा० ॥१॥
स्वारथ भोजन भगति सजाई,
स्वारथ विण कोऊ पाणी न पाई ॥ स्वा० ॥२॥
स्वारथ मां बाप सेठ बड़ाई,
स्वारथ विण नित होत लड़ाई ॥ स्वा० ॥३॥
स्वारथ नारी दासी कहाई,
स्वारथ विण लाठी ले धाई ॥ स्वा० ॥४॥
स्वारथ चेला गुरु गुरुहाई,
स्वारथ सब लपटाणा भाई ॥ स्वा० ॥५॥
समयसुन्दर कहइ सुणउ रे लोगाइ,
साचा एक हइ धरम सखाई ॥ स्वा० ॥६॥

अंतरंगबाह्यनिद्रानिवारणगीतम्

नींद्रड़ी निवारो रहो जागता, वालिभ म करि विश्वास रे।
सांप सिरहाणै सूतो ताहरइ रे, चोर फिरइ चिहुँ पास रे। नी.।१।
जिण पूठइ दुसमण फिरइ, गाफिल किम रहइ तेह रे।
सूतां री पाडा जिणइ, दृष्टान्त कहइ सहु एह रे। नी.।२।

कहइ काया जीव कंत नइ, जागता रहउ मोरा स्वाम रे ।
ध्यान धरम सुख भोगवउ, ल्यउ भगवंत रउ नाम रे । नी.।३।
धन आपणउ रहइ सावतउ[1], हुसियारी भली होइ रे ।
समयसुन्दर कहइ जागता, छेतरी न सकइ कोई रे । नी.।४।

निद्रा गीतम्

सोइ सोइ सारी रयणि गुमाई,
वैरण निद्रा तुं कहां से आई । सो० ।
निद्रा कहइ मइं तउ बाली रे भोली,
बड़ेबड़े मुनिजन कुं नाखुं रे ढोली ॥ सो०॥१॥
निद्रा कहइ मइं तउ जमकी रे दासी,
एक हाथ मूकी एक हाथ फांसी ॥ सो०॥२॥
समयसुन्दर कहइ सुनो भाई वनिया,
आप डूबे सारी डूब गई दुनिया ॥ सो०॥३॥

पठन प्रेरणा गीतम्

राग—भयरव

भणउ रे चेला भाई भणउ रे भणउ,
भण्या रे माणस नइ आदर घणउ ॥ भ.॥१॥

---

१ धरम करम सगली परइ

भणयां नइ हुयइ भलउ विहारवणउ,
सखर वस्त्र पहिरण ओढणउ ॥ भ.॥२॥
पद हुयइ वाचक पाठक तणउ,
बाजउठइं चड़ी नइसणउ ॥ भ.॥३॥
भणयां पाखइ दुख पाप देखणउ,
कांधइ झोली हाथ मइ दोहणउ ॥ भ.॥४॥
समयसुन्दर कउ सबद मानणउ,
इह लोक परलोक सोहामणउ ॥ भ.॥५॥

क्रिया प्रेरणा गीतम्

राग—भयरव

क्रिया करउ चेला क्रिया करउ,
क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ । क्रि० ।१।
पड़िलेहउ उपग्रण पातरउ,
जयणा सुं काजउ ऊधरउ । क्रि० ।२।
पड़िकमतां पाठ सुध ऊचरउ,
सहु अधिकार गमा सांभरउ । क्रि० ।३।
काउसग करता मन पांतरउ,
चार आंगुल पग नउ आंतरउ । क्रि० ।४।
परमाद नइ आलस परिहरउ,
तिरिय निगोद पड़ण थी डरउ । क्रि० ।५।

क्रियावंत दीसइ फूटरउ,
क्रिया उपाय करम छूटरउ । क्रि० ।६।
पांगलउ ज्ञान किस्यउ कामरउ,
ज्ञान सहित क्रिया आदरउ । क्रि० ।७।
समयसुन्दर यह उपदेश खरउ,
मुगति तणउ मारग पाधरउ । क्रि० ।८।

जीव-व्यापारी गीतम्

राग—देव गंधार

आये तीन जणे व्यापारी । आ० ।
सदा सुत करण कुं लागे, बइठे मांहि वखारि । आ०।१।
मूल गमाइ चल्या एक मूरिख, एक रह्या मूल धारी ।
एक चल्या लीन लाभ बहुत ले, अब देखो अरथ विचारी;
श्री उत्तराध्ययन विचारी । आ०।२।
लाभ देख सउदा सब करणा, कुव्यापार निवारी ।
समयसुंदर कहइ इण कलजुग मइं, सब रहिज्यो हुसियारी ।आ०।३।

घड़ियाली गीतम्

राग—मिश्र

चतुर सुणउ चित लाइ कइ, कहा कहइ घरियारा ।
जीवित मांहि जायइ घरी, न कोइ राखणहारा । च.।१।

पहुर पहुर कइ आंतरइ, राति दिवस मझारा ।
वाजा रे वाजइ जम तणा, सब रहु हुसियारा । च.।२।
तनु छाया छड़िया फिरइं, गाफिल म रहउ गमारा ।
समयसुन्दर कहइ ध्रम करउ, एहीज आधारा । च.।३।

उद्यम भाग्य गीतम्

राग--गूजरी

उद्यम भाग्य विना न फलइ ।
बहुत उपाय किये क्या होई, भवितव्यता न टलइ । उ०।१।
पूरब रवि पच्छिम दिस ऊगत, अविचल मेरु चलइ ।
तउ भी लिखित मिटइ नहीं कबही, उद्यम क्या एकलइ । उ०।२।
सुख दुख सब कुं सरज्या होवत, उद्यम भाग्य मिलइ ।
समयसुन्दर कहइ धर्म करउ जिम, मन अभीष्ट मिलइ । उ०।३।

सर्वभेषमुक्तिगमनगीतम्

राग—नटनारायण

हां माई हर कोउ भेख मुगति पावइ, ध्यान निरंजण जो ध्यावइ । मा.।
सैव सेतांबर बौध दिगम्बर, सेख कलंदर समभावइ । मा.।१।
हां भाई ब्राह्मण श्रमण तापस सन्यासी, सिंगीनाद सबद वावइ ।
नगन जटाधर कोउ करपात्री, के जोगीन्द्र भसम लावइ । मा.।२।

हां माई स्त्री पुरुष नपुंसक सब कोउ,जोग मारग नइ मुगति जावइ।
समयसुन्दर कहइ सो गुरु साचउ,जोग मारग मोकुं समझावइ।मा.३।

कम गीतम्

राग=नटनारायण

हां माई करम थी को छूटइ नहीं । क० ।
मल्लिनाथ अस्त्री पणइ ऊपना, वीरइ कुण वेदन सही ।हा.।१।
हरिचंद राय पाणी सिर आणयउ, नंदिषेण वेश्या संग्रही ।
घरि घरि भीख मांगी मुंज राजा, द्वारिका जादव कोड़ि दही ।हां.।२।
लखमण राम भये वनवासी, रावण कुण विपति लही ।
समयसुंदर कहै करम अतुलबल,करम की वात न जात कही।हां.।३।

नावी गीतम्

राग—कनड़उ अडाणउ

नावा नीकी री चलइ नीर मझार, जाजरि नहीं य लगार ।ना०।
रुंधे हैं आश्रव द्वार, भरचउ हइ संजम भार ।
आउला पांच आचार, धीरिज हइ झूझार ॥ ना० ॥१॥
थिर मन कूया थभउ, नांगर दया उठ भउ;
समकित भावना सुवाय ।
मालमी आगम भाखइ, जतने जिहाज राखइ;
समयसुन्दर नाउयउ, कुशले शिवपुर पाय ॥ ना० ॥२॥

जीव काया गीतम्

जीव प्रति काया कहइ, सुनइ मुक्ति कां समझावइ रे ।
मइ अपराध न को कियउ, प्रियु को समझावइ रे ॥जी०॥१॥
राति दिवस तोरी रागिणी, राखुं हृदय मझारि रे ।
सीत तावड़ हूँ सहु सहूं, तूँ छइ प्राण आधार रे ॥जी०॥२॥
प्रीतड़ी वालंभ पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे ।
कठिन हियुं नवि कीजियइ, कीजइ सुगुण सनेह रे ।जी०॥३॥
जीव कहइ काया प्रति, अम्ह को नहीं दोस रे ।
खिण राचइ विरचइ खिण तेहनउ किसोय भरोस रे॥जी०॥४॥
कारिमउ राग काया तणउ, कूट कपट निवास रे ।
गुण अवगुण जाणइ नहीं, रहइ चित्त उदास रे ॥जी०॥५॥
जीव काया प्रतिबूझवी, भागो मन मो संदेह रे ।
समयसुन्दर कहइ सुगुण सुं, कीजइ धरम सनेह रे ॥जी०॥६॥

काया जीव गीतम्

राग—केदारउ गउड़ी

रूड़ा पंखीड़ा, पंखीड़ा मुन्हइ मेल्ही नइ म जाय ।
धुर थी प्रीति करी मइं तो सुँ, तुझ विण खण न रहाय ॥ रू.॥१॥
चतुर अमृत रस मोरउ तइं चाख्यउ, कीधी कोडि विलास ।
जाण्युं नहीं इम उडी जाइस, हुंती मोटी आस ॥रू.॥२॥
काया कमलनी जायइ कुमलानी, न रहइ रूप नइ रेख।

विन अपराध तजइ को वालंभ, पंच राति वलि देख ॥ रू.॥३॥
हंस कहइ हूं न रहूं परवश, संवल द्यै मुझ साथ,।
समयसुन्दर कहै ए परमारथ, हंस नहीं किण हाथ ॥ रू.॥४॥

जीव कर्म संबन्ध गीतम्

राग—भूपाल

जीव नइ करम माहो मांहि संबंध,
अनादि काल नउ कहियइ रे।
ए पहिलउ ए पछइ न कहियइ,
धातु उपल भेद लहियइ रे ॥जी० ॥१॥
तप जप अगनि करी नइ एहनउ,
दुष्ट करम मल दहियइ रे।
समयसुन्दर कहइ एहिज आतमा,
सिद्ध रूप सरदहियइ रे ॥जी० ॥२॥

सन्देह गीतम्

राग—भूपाल

करम अचेतन किम हुयउ करता, कहउ किम सकियइ थापी रे।
परमेसर पिण किम हुयइ करता, द्यइ दुख तउ ते पापी रे।क.।१।
आरीसा मांहि मुहड़उ दीसइ, कहउ ते पुदगल केहा रे।
जीव अरूपी करम सरूपी, किम संबंध संदेहा रे।क.।२।

ोन सासन शिव सासन प्रच्छूं, पुस्तक पाना वांचुं रे।
समयसुन्दर कहइ सांसउ न भागउ, भगवत कहइ ते सांचुं रे।क.।३।

जग सृष्टिकार परमेश्वर पृच्छा गीतम्

राग—वेलाउल

पूछूं पंडित कहउ का हकीकत,
आ जगत सृष्टि किण कीधी रे।
जउ जाणउ तउ जुगति कहउ कोइ,
नहिं तरि ना कहउ सीधी रे ॥ पू०॥१॥
बांभण वांचउ वेद पुराणा,
काजी वांचउ कुराणा रे।
सूत्र सिद्धांत वांचउ जिण शासखि,
पणि समझावइ ते सुजाणा रे ॥ पू०॥२॥
जनम मरण दीसइ अति बहुला,
प्राणी सुख दुख पावइ रे।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ केवलि,
तउ सहु विध समझावइ रे ॥ पू०॥३॥

करतार गीतम्

कबहु मिलइ मुझ जउ करतारा, तउ पूछुं दोइ बतियां रे।
तूं कृपाल कि तूं हइ पापी, लखि न सकूं तोरी गतियां रे।क०।१।

मन मान्या माणस जउ मेलइ, तउ कि विछोहा पाड़इ रे ।
विरह वेदन उनकी ओ जाणइ, रोइ गेइ जनम गमाड़इ रे ।क०।२।
देवकुमर सरखा पुत्र देइ, अधविच ल्यइ कुं उदाली रे ।
पुरुष रतन घड़ी घड़ी किम भांजइ, यौवन अबला वाली रे ।क०।३।
जो तूं छत्रपति राजा थापइ, तउ रंक करी कुं सलावइ रे ।
जिण हाथइ करि दान दिरावइ, सो कुं हाथ उडावइ रे ।क०।४।
के कहइ ईश्वर के कहइ विधाता, सुख दुख सरजन हारा रे ।
समयसुन्दर कहइ मइं भेद पायउ, करम जु हइ करनारा रे ।क०।५।

दुपमा-काले संयम-पालन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो कहो संयम पथ किम पलइ, ए दुपमा काल ।
किसण पाखी जीव इहां घणा, वलि गच्छ जंजाल ॥ १ ॥
हां हो तप संयम नी खप करउ, जिन आज्ञा निहालि ।
समयसुन्दर कहइ श्रम करउ, राग नइ द्वेष टालि ॥ २ ॥

श्री परमेश्वर भेद गीतम्

राग—सबाव मिश्र

एक तुं ही तुं ही, नाम जुदा मूहि मूहि । १ ।एक तुं ही.।
बाबा आदिम तुं ही तुं ही, अनादि मते तुं ही तुं ही । २ ।एक तुं ही.।
पर ब्रह्म ने तुं ही तुं ही, पुरुषोत्तम ते तुं ही तुं ही । ३ ।एक तुं ही.।
ईसर देव ते तुं ही तुं ही, परमेसर ते तुं ही तुं ही । ४ ।एक तुं ही.।

राम नाम ते तुंही तुंही, वहीनाम ते तुंही तुंही । ५ ।एक तुंही.।
सांईं पण ते तुंही तुंही, गोसांइ ते तुंही तुंही । ६ ।एक तुंही.।
विल्ला इल्ला तुंही तुंही, आंप एकल्ला तुंही तुंही । ७ ।एक तुंही.।
जती जोगी तुंही तुंही, भुगत भोगी तुंही तुंही । ८ ।एक तुंही.।
निराकार ते तुंही तुंही, साकार पणि ते तुंही तुंही । ९ ।एक तुंही.।
निरंजण ते तुंही तुंही, दुख भंजण ते तुंही तुंही ।१०।एक तुंही.।
अलख गति ते तुंही तुंही, अकल मति ते तुंही तुंही ।११।एक तुंही.।
एक रूपी तुंही तुंही, बहुय रूपी ते तुंही तुंही ।१२।एक तुंही.।
घट घट भेदी तुंही तुंही, अंतर जामी तुंही तुंही ।१३।एक तुंही.।
जगत व्यापी तुंही तुंही, तेज प्रतापी तुंही तुंही ।१४।एक तुंही.।
पापीयां दूरि ते तुंही तुंही, धरमी हजूरी ते तुंही तुंही।१५।एक तुंही.।
अंतरजामी तुंही तुंही, सहसनामी तुंही तुंही ।१६।एक तुंही.।
एक अरिहंत तुंही तुंही, समयसुन्दर तुंही तुंही ।१७।एक तुंही.।

इति श्री परमेश्वर भेद गीतम् ।

परमेश्वर स्वरूप दुर्लभ गीतम्

राग—वयराड़ी

कुण परमेसर सरूप कहइ री । कु० ।
गगन भमत खर खोज पंखी का,
मीन का मारग कुण लहइ री । कु० । १ ।
कुण समुद्र पसली करि पीयइ,
कुण अंबर कर मांहि ग्रहइ री ।

कुण गंगा वेलु कण कुं गिणइ,
कुण माथइ करि मेरु वहइ री।कु०।२।
क्रोध मान माया लोभ जीपइ,
जो तपस्या करि देह दहइ री।
समयसुन्दर कहइ ते लहइ तिणकुं,
जे जोग ध्यान की जोति रहइ री।कु०।३।

निरंजन ध्यान गीतम्

राग—वयराड़ी

हां हमारइ परब्रह्म ज्ञानं।
कुण माता कुण पिता कुटुम्ब कुण, सब जग सुपन समानं।हां।१।
तप जप किरिया कष्ट बहुत इइ, तिण कुं तिल भी न मानं।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एक निरंजन ध्यानं।हां।२।

परब्रह्म गीतम्

राग—वयराड़ी

हुं हमारे परब्रह्म ज्ञानं।
कुण देव कुण गुरु कुण चेला, अउर किसी कुं न मानं रे।हुँ०।१।
कुण माता कुण पिता कुटुंब कुण, सब जग सुपन समानं।
अलख अगोचर अकल सरूपी, पर ब्रह्म एक पिछानं।हुँ०।२।
इंद्रजाल इंद्रधनुष ज्युँ, तन धन अनित्य हुं जानं।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एह निरंजन ध्यानं रे।हुँ०।३।

जीवदया गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जीवदया धरम वेलड़ी, रोपी श्री जिनराय।
जिन सासण थाणुँ जिहां, ऊगी अविचल आइ। हां०जी०।१।
हां हो समकित जल सीची थकी,वाधी जयणा सुहाय।
गुपति मंडपि ऊंची चडी, सुख शीतल छाय। हां०जी०।२।
हां हो व्रत साखा तप पानड़ा, रूड़ि रिद्धि ते फूल।
समयसुन्दर कहइ सुगति ना, फल आपइ अमूल। हां०जी०।३।

वीतराग सत्य वचन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जिन ध्रम जिन ध्रम सहु कहइ, थापइ आपइ अपणी वात।
समाचारी जूजुई, कहउ किम समझात। जि० ।१।
हां हो चंद्रगुपत राजा हुयउ, सुहणउ दीठउ एम।
चंद्र थयउ जाणु चालणी, जिण सासण तेम। जि० ।२।
हां हो अम्हे साचा भूठा तुम्हे, ए मूकउ टेव।
समयसुन्दर कहइ सत्य ते, वदइ वीतराग देव। जि० ।३।

कर्म निर्जरा गीतम्

ढाल—जगणी मन आस्या घणी

कर्म तणी कही निर्जरा, थाये त्रिहुं ठामे।
श्रमणोपासक नइ कही, रूड़े परिणामे। क०

छती रिद्धि कदि छोड़सुं, थोड़ी घणी जेह ।
आरंभ नउ मूल ए कही, तीर्थंकरे तेह । क० । २ ।
गृहस्थावास छोड़ी करी, होस्युँ हूं अणगार ।
संयम सुधुं पालसुं, पामिसी भव पार । क० । ३ ।
अंत समय संलेखना, कदि करस्युं शुद्ध ।
इह पर······························ । क० । ४ ।
ठाणांग सूत्र मांहे कही, ए तीजे ठाणे ।
सुधर्मा स्वामी कहै जंबू ने, समयसुन्दर वखाणे । क० । ५ ।

वैराग्य सज्झाय

मोक्षनगर मारुं सासरूं, अविचल सदा सुखवास रे ।
आपणा जिनवर नइ भेटियइ, त्यां करउ लील विलास रे । मो.।१।
ज्ञान दर्शन आणे आविया, करो करो भक्ति अपार रे ।
शील सिणगार पहरो पदमणी, उठि उठि जिन समरो सार रे । मो.२।
विवेक सोवन टीलुँ तप तपे, साचो साचो वचन तंबोल रे ।
संतोष काजल नयणे भर्यां, जीवदया कुंकुम घोल रे । मो.।३।
समकित वाट सोहामणी, संयम वहेल उजमाल रे ।
तप जप बलदिया जोतर्या, भावना रास रसाल रे । मो.।४।
कारमो सासरो परिहरो, चेतो चेतो चतुर सुजाण रे ।
समयसुन्दर मुनि इम भणइ, त्यां छइ भवि निरवाण रे । मो.।५।

———

औपदेशिक गीत

क्रोध निवारण गीतम्

राग—केदारउ

जियुरा तु ं म करि किण सु ं रोस । जि० ।
जु कछु जीय तु ं दुखु पामइ, देहु करम कु ं दोस । जि.।१।
हां पारकी निंदा पाप हइ वहु, म कहि मरम नइ मोस ।
आप स्वारथ मिले सब जण, किण ही का न भरोस । जि.।२।
हां हो चमा गयसुकमाल कीनी, सासता सुख ओस ।
समयसुन्दर कहइ क्रोध तजि करि, धरे धरम संतोस । जि.।३।

हुंकार परिहार गीतम्

राग—तोड़ी

जहां तहां ठउर ठउर हूं हूं हूं । ज० ।
कहा अति मान करइ तूं । ज० ॥
इण जगि कुण कुण आइ सिधारे,
तूं किस गान में हइ रे गमारे ॥ ज० ॥ १ ॥
इहु संसार असार असारा ।
समयसुन्दर कहइ तजि अहंकारा ॥ ज० ॥ २ ॥

मान निवारण गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

मूरख नर काहे तु ं करत गुमान ।
तन धन जोवन चंचल जीवित, सहु जग सुपन समान ।मू.।१।

कहां रावण कहां राम कहां नल, कहां पांडव परधान ।
इण जग कुण कुण आइ सिधारे, कहि नइं तूं किस थान ।मू.।२।
आज के कालि आखर अंत मरणा, मेरी सीख तूं मान ।
समयसुन्दर कहइ अथिर संसारा,धरि भगवंत कउ ध्यान ।मू.।३।

मान निवारण गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

किसी के सब दिन सरिखे न होई ।
ग्रह ऊगत अस्तंगत दिनकर, दिन मइं अवस्था दोई । कि.।१।
हरि बलभद्र पांडव नल राजा, रहे वन खंड रिधि खोई ।
चंडाल कइ घरि पाणी आएयउ, राजा हरिचंद जोई । कि.।२।
गरब म करि रे तूं मूढ गमारा, चढत पड़त सब कोई ।
समयसुन्दर कहइ ईरत परत सुख, साचउ जिन धर्म सोई । कि.।३।

यति लोभ निवारण गीतम्

राग—रामगिरि

चेला चेला पदं पदं, पुस्तक पाना लोभ मदं । चे. ।
भार भूत म मेलि परिग्रह, संयम पालहु साच वदं ।भाई चे.।१।
मन चेला पद साध की पदवी, पुस्तक धरि शुभ ध्यान मुदं ।
समयसुदर कहइ अपणे जिय कुं,अविचल एक मुगति संपदं ।भा.चे.२

विषय निवारण गीतम्
राग—केदारउ

रे जीव विषय थी मन वालि।
काम भोग संयोग भूंडा, नरक दुख निहाल ॥ रे० ॥१॥
अल्पकाल विषय तणा सुख, दुख थइ बहु काल।
बलवंत विषय नइ लोभ बेहुँ, टालि जीव जंजाल ॥ रे० ॥२॥
मानखौ भव लही दुरलभ, मत गमाडइ आलि।
समयसुन्दर कहइ आपनइ, सूधुं संयम पाल ॥ रे० ॥३॥

निंदा परिहार गीतम्
राग—सबाब

निंदा न कीजइ जीव पराई,
निंदा पापइ पिंड भराई ॥ निं० ॥१॥
निंदक निश्चय नरगइ जाई,
निंदक चउथउ चंडाल कहाई ॥ निं० ॥२॥
निंदक रसना अपवित्र होई,
निंदक मांस भक्षक सम दोई ॥ निं० ॥३॥
समयसुन्दर कहइ निंदा म करिज्यो,
परगुण देखि हरख मनि धरज्यो ॥ निं० ॥४॥

निंदा वारक गीतम्

निंदा म करजो कोइ नी पारकी रे,
निंदा ना बोल्या महा पाप रे।

वेर विरोध वाधइ घणा रे,
निंदा करतां न गिणइ माय बाप रे। निं०।१।
दूर बलंती कां देखो तुमे रे,
पग मां बलती देखो सहु कोइ रे।
पर ना मल मांहि धोयां लूगड़ा रे,
कहो किम उजला होइ रे। निं०।२।
आपुं संभालो सहु को आपणुं रे,
निंदा नी मूंको परि टेव रे।
थोड़े घणइ अवगुणे सहु भर्या रे,
केहना नलिया चूये केहना नेव रे। निं०।३।
निंदा करइ ते थायइ नारकी रे,
तप जप कीधुं सहु जाय रे।
निंदा करउ तउ करज्यो आंपणी रे,
जिम छूटक बारउ थाय रे। निं०।४।
गुण ग्रहजो सहु को तणउ रे,
जेह मां देखउ एक विच्यार रे।
कृष्ण परइ सुख पामस्यउ रे,
समयसुन्दर कहइ सुखकार रे। निं०।५।

दान गीतम्

राग—रामगिरि

जिनवर जे मुगतइ गामी, ते पिण आपइ दान।
वरह वरं घोसइ जग वच्छल, वरसइ मेह समान ॥१॥

रूड़ा प्राणिया दान समउ नहीं कोइ रे, तूँ हृदय विमासी नइ जोइ रे। आं.
सालिभद्र नी रिद्धि संगमइं लाधी, ते दान तणउ परमाण रे।
बलदेव दान थकी रथकारइ, पाम्युं अमर विमाण ॥ रू. ॥२॥
अलिय विघन सव दूर पुलायइ, दानइ दउलति होइ रे।
इह भवि सुजस कीरति वाधइ, पर भवि संबल सोइ ॥ रू. ॥३॥
दान तणा फल परतिख देखो, दानइ जगत वसि थायइ रे।
समयसुन्दर कहइ दान धरम ना, रामगिरी गुण गाइ ॥ रू. ॥४॥

शील गीतम्

राग—मेवाड़उ

सील व्रत पालउ परम सोहामणउ रे, सील वड़उ संसार।
सील प्रमाणइ शिव सुख संपजइ रे, शील आभरण उदार। सी.।१।
कलावती कर नवपल्लव थया रे, सीता अगनि थयउ नीर।
सुदरसण सूली सिंहासण थयउ रे, द्रूपदी अखंडित चीर। सी.।२।
स्थूलिभद्र जंबू सील वखाणियइ रे, नवि डोल्या मुनिराय।
समयसुन्दर भाव भगति धरी रे, प्रणमइ तेहना पाय। सी.।३।

तप गीतम्

राग— कालहरउ

तप तप्या काया हुई निरमल, तपतपंग इंद्री वसि थाइ।
तप तप्या परमार्थ सीझइ, तप तप्या प्रणमइ पाइ। त. ।१।
ऋषभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वर्धमान।
तप तपी मुगतिइ जे पहुता, ते मुनिवर नुं नहिं को गान। त. ।

आतम वस्त्र करम मल मइलो, तप जल धोई निरमल करउ ।
समयसुंदर कहइ जेम भविक तुमइ,मुगति रमणी सुख लीला वरउ।६।

भावना गीतम्

राग—अधरस

भावना भावज्यो रे भवियां, जिम लहउ भवनउ पार ।
गयवर चढिया केवल पाम्युं, जोवउ मरुदेवी अधिक र । भा.।१।
वंस उपरि इला पुत्र नइ, भरत नइ भवन मझारि ।
भावना मन मांहिं भावतां, उपन्यउ केवल उदार । भा.।२।
दान शील तप तउ भला रे, भावना हुयइ जो उदार ।
भाव रसायण जोग अछइ रे, समयसुन्दर कहइ सार । भा.।३।

दान-शील-तप-भावना गूढा गीतम्

राग—गूजरी

ग्रहपति पुत्र कतूत करउ ।
दशमुख बंधु निवाज क नारी, अग्नि धरचउ मूधरउ । ग्र. ।१।
ज्योतिष जाण सहोदर नामे, तसु यत्त पिशुन खरउ ।
तसु प्रिय रति आगलि रति रवि कउ, अधिक निकउ आदरउ ।ग्र.२।
दधितनया मिथु लघु बांधव चित, चिंतव्यउ ते आदरउ ।
समयसुन्दर कहइ क।क गलइ जिम, ते लहि तुरत तरउ । ग्र.।३।

तुर्य वीसामा गीतम्

ढाल—श्री नवकार मन ध्याइये

भार वाहक नइ कह्या भला, वीसामा वीतरागो जी ।
माथा थी मूकइ कंधे लहइ, मारग मांहि लागो जी ॥
लहि मारग मांहि चलतां, मल नइ मूत्र तजइ जिहां ।
नाग यत्त देहरे रहे राते, भार उठारइ तिहां ॥
जाव जीव जिण थानक वसै, तिहां भार मूकी रहै सुक्खे ।
ए द्रव्य थकी चारे वीसामा, महावीर कहै मुखे ॥१॥
श्रमणोपासक ते सुणो, वीसामा सुविवेको जी ।
शील व्रत गुण व्रत सहु, उपवास करति अनेको जी ॥
............................देसावगासियइ ।
वलि पर्व दिवसे करइ पोसउ, ए भगवंते भाषियइ ॥
संलेखना करे सुद्ध छेहडे, भाव वीसामा कह्या ।
ठाणांग सूत्र में चौथे ठाणइ, समयसुन्दर सरदह्या ॥२॥

—:o:—

प्रीति दोहा

कागद थोड़ो हेत घणउ, सो पिण लिख्यो न जाय ।
सायर मां पाणी घणउ, गागर में न समाय ॥१॥
प्रीत प्रीत ए सहु को कहइ, प्रीति प्रीति में फेर ।
जब दीवा बड़ा किया, तब घर में भया अंधेर ॥२॥

त्रीकम त्रिया न धरणि जो, सिर रूदी देह।
नदी किनारे रूंखड़उ, कदीक समूलो लेह ॥३॥
कंठालो कालो कठण, ऊँची देखी जाड़।
समयसुन्दर कहइ गुण विना, ते सुं करे ते जाड़ ॥४

अन्तरंग शृंगार गीतम्

हे वहिनी महारउ जोयउ सिणगार हे, वहिनी नीकउ सिणगार;
हे वहिनी साचउ सिणगार, जिण आज्ञा सिर राखड़ी रे हां।
सिर समथउ व्रत आंखड़ी रे हां ॥१॥ हे वहिनी० ॥

कानइ उगनियां भ्रम वातड़ी रे हे व०,
सरवर सामाई चुनी रातड़ी रे। २। हे०।
कनक कुंडल गुरु देसना रे हां व०,
दान चूड़ा पर देशना रे। ३। हे०।
माल मोरइ हियइ हारड़उ रे हां० व०,
पदकड़ि पर उपमारड़उ रे हां०। ४। हे०।
मुखि तंबोल सत्य बोलणउ रे हां० व०,
पड़िकमणउ अंगि लोलणउ रे हां। ५। हे०।
जिण प्रणाम भालि चंदलउ रे हां० व०,
नकफूली लाज विंदलउ रे हां०। ६। हे०।
नवकार गुणनउ वीटी गोलनी रे हां० व०,
ज्ञान अंगूठी वहु मोलनी रे हां०। ७। हे०।

कहि मेखल सोहइ क्षमा रे हां० व०,
गुपति वेखी दंडोपमा रे हां० । ८ । हे०।
नयण काजल दया देखणी रे हां० व०,
किरिया हाथे मंहदी रेखणी रे हां० । ६ । हे०।
इरिजा समिति पाये वींछिया रे हां० व०,
साधु वेयावच बांहे पुणछिया रे हां० ।१०। हे०।
देव गुरु गीत गलइ दुलड़ी रे हां० व०,
शील सुरँगउ ओढइ चूनड़ी रे हां० ।११ हे०।
जीव जतन पाए नेउरी रे हां० व०,
समकित चीर पहिरी नीसरी रे हां० ।१२। हे०।
नर नारी मोही रह्या रे हां० व०,
समयसुन्दर गीत ए कह्या रे हां० ।१३। हे०।

—:o:—

फुटकर सवैया

दीक्षा ले खधी पालीजइ, सुख साता न अउला कांइ ।
कर्म खपानी केवल लहियइ, भणना गुणना रउला कांइ ॥
इवड़ी बात आज नहीं छइ, जीव थायइ तूं गउला कांइ ।
समयसुन्दर कहइ वांछा कीजइ, मन लाड़ तेउ मउला कांइ ॥१॥
खाधूं पीधूं लीधूं दीधूं, वसुधा मांहि वधारउ वान ।
गुरु प्रसादे खाता सुखपाम्यौ, जिनचंद्रसूरि ते जुग परधान ॥ ,

सकलचंद्र गुरु सानिध कीधी, सतासियइ न थयउ तन ज्यान।
समयसुंदर कहइ हिव तूं रे मन, करि संतोष नइ धरि ध्रम ध्यान ॥२॥
आधि व्याधि रोग को उपजइ, जीव जंजाले जायइ कही।
कुण जाणे कही अणुपूर्वी, जीवे बांधी मूकी अहीं॥
धर्म करउ ते पहिली करजो, छेहली वेला थास्यइ नहीं।
समयसुन्दर कहे हूँ तो माहरै, बे घड़ी ध्यान धरुं छूँ सही ॥३॥

नव-वाड़-शाल गीतम्

ढाल—तुङ्गिया गिरि सिखर सोहइ

नव वाड़ि सेती शील पालउ, पामउ जिम भव पार रे।
भगवंत विस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। नव.।१।
पसु पडंग नइ नारि जिहां रहइ, तिहां न रहइ ब्रह्मचारि रे।
पहली वाड़ ए तुमे पालउ, शील बड़उ संसार रे। नव.।२।
कहइ सराग कथा कदे नहीं, स्त्री सुं एकांत रे।
बीजी वाड़ ए एम बोली, मानइ लोक महांत रे। नव.।३।
बइयरि जिण बइसणे बइसे, बे घड़ी न बइसे तेथ रे।
तीजी वाड़ि ए कही तीर्थंकरे, आज्ञा मोटी एथ रे। नव.।४।
स्त्री अंग उपांग सुन्दर, देखत नहीं धरि राग रे।
चउथी वाड़ि ए चतुर पालउ, पामइ जस सोभाग रे। नव.।५।
कुण्डी नइ अंतरइ पुरुष स्त्री, रमइ खेलइ रंगि रे।
पंचमी वाड़ि ए तुम्हे पालउ, टालउ तेह प्रसंगि रे। नव.।६।

पहिलुं काम नइ भोग भोगव्या, संभारइ नइ तेह रे ।
छठी वाड़ ए छइ भली पणि, जतनइ पालिस्यइ जेह रे । नव.।७।
चूत्रते कवलिए घी सुं, जिमइ नहीं ब्रह्मचारि रे ।
सातमी वाड़ि ए घणुं सखरी, पणि विगय थी विकार रे । नव.।८।
बत्रीस अट्ठावीस कवलिया, नारी नर नउ आहार रे ।
आठमी वाड़ ए कही उत्तम, अधिको न ल्यइ निरधार रे । नव.।६।
सरीर नी शोभा करइ नहीं, न करइ उद्भट वेस रे ।
नवमी वाड़ ए नित्य पालउ, सुयश देश प्रदेश रे । नव.।१०।
कल्पवृक्ष ए शील कहियइ, रोप्यउ श्री जिनराज रे ।
वाड़ रखा भणी भाखी, सेवज्यो सुखकाज रे । नव.।११।
पानड़ा प्रत्यक्ष प्रभुता, फूटरा सुख फूल रे ।
मुक्ति ना फल घणा मीठा, आपइ ए अमूल रे । नव.।१२।
संवत सत्तर मास आसू, नगर अहमदाबाद रे ।
समयसुन्दर वदइ वाणी, सकलचंद प्रसाद रे । नव.।१३।

बारह भावना गीतम्

ढाल—तुङ्गिया गिरि सिखर सोहइ

भावना मन वार भावउ, तूटइ करम नी कोड़ि रे ।
तप संजम तउ छइ भला, पण नहीं भावना नी जोड़ि रे । भा.। १ ।
पहली भावना एम भावउ, अनित्य आयुर दाय रे ।
तन धन यौवन कुटुम्ब सहु ते, क्षण मांहे खेरु थाय रे । भा.। २ ।

बीजी भावना एम भावउ, जीव तुं शरणउ म जोइ रे ।
मातां पिता प्रियु कुटुम्ब छइ पण, राखणहार न कोइ रे । भा.। ३ ।
तीजी भावना एम भावउ, चउगति रूप संसार रे ।
धर्म विना जीव भम्यउ भमस्यइ, वलि अनंती वार रे । भा.। ४ ।
चौथी भावना एम भावउ, जीव छइ तूं अनाथ रे ।
एकलउ आव्यउ एकलउ जाइसि, नहिं को आवइ साथ रे । भा.। ५ ।
पंचमी भावना एम भावउ, जीव जुदउ जुदी काय रे !
जीव न जाणइ केथ जासइ, काय कलेवर थाय रे । भा.। ६ ।
छट्ठी भावना एम भावउ, अशुचि अपवित्र देह रे ।
काया मूत्र मल तणउ कोथलउ, नाणउ तेह सु नेह रे । भा.। ७ ।
सातमी भावना एम भावउ, आश्रव रुंध अपाय रे ।
आतमा सरोवर आपणउ जिम, पाप पाणी न भराय रे । भा.। ८ ।
आठमी भावना एम भावउ, संवर सत्तावन्न रे ।
समिति गुपति सहु भला छइ, जीव तुं करिजे जतन्न रे । भा.। ९ ।
नवमी भावना एम भावउ, निर्जरा तप बार रे ।
छव छइ बाह्य छव छइ अभ्यंतर, पहुँचावइ भव पार रे । भा.।१०।
दसमी भावना एम भावउ, लोक सरूप संथान रे ।
जिम विलोवणउ विलोवतां थकां, सरीर नउ संस्थान रे । भा.।११।
इग्यारमी भावना एम भावउ, बोधि बीज दुलभ रे ।
इण विन जीव को मोक्ष न जावइ, ए धरम नउ उट्टंभ रे । भा. १२।
बारमी भावना एम भावउ, अरिहंत वीतराग देव रे ।

धरम ना ए खरा आराधक, नाम जपउ नितमेव रे। भा.।१३।
भावना भावतइ चक्री भरतइ, पाम्यउ केवल ज्ञान रे।
इम बीजा पणि जीव अनंता, धरता निर्मल ध्यान रे। भा.।१४।
भावना ए भली कीधी, मइ तउ म्हारइ निमित्त रे।
समयसुन्दर कहइ सहु भणउ जिम, पायइ जीव पवित्त रे। भा.।१५।

देव गति प्राप्ति गीतम्

बारे भेद तप तपइ गति पामइ जी,
संजम सतर प्रकार देवगति पामइ जी।
साते खेत्रे वित वावरइ गति पामइ जी,
पाचइ पंचाचार देव गति पामइ जी ॥१॥
गति पामइ जी पुण्य करइ जे जीव,
देव गति पामइ जी ॥ आंकणी ॥
प्रतिदिन पडिकमणउ करइ गति पामइ जी,
सामायिक एकंत देव गति पामइ जी।
आहार विहरावइ सूझतउ गति पामइ जी,
सांभलइ सूत्र सिद्धांत देवगति पामइ जी ॥२॥
भद्रक जीव गुणे भला गति पामइ जी,
जीवदया प्रति पाल देवगति पामइ जी।
सद्गुरु नी सेवा करइ गति पामइ जी,
देव पूजइ त्रिहुं काल देवगति पामइ जी ॥३॥

अणसण नइ आराधना गति पामइ जी,
आखड़ी नइ पचखाण देवगति पामइ जी ।
सुधँ समकित सरदहइ गति पामइ जी,
अरिहंत देव प्रमाण देवगति पामइ जी ॥४॥
पंच महाव्रत जे धरइ गति पामइ जी,
श्रावक ना व्रत बार देवगति पामइ जी ।
ध्यान भलुं हियडइ धरइ गति पामइ जी,
पालइ शील उदार देवगति पामइ जी ॥५॥
पुण्य करइ जे एहवा गति पामइ जी,
आणी अधिक उल्लास देवगति पामइ जी।
समयसुन्दर पाठक भणइ गति पामइ जी,
पामइ लील विलास देवगति पामइ जी ॥६॥

नरक गति प्राप्ति गीतम्

ढाल—सीखि नइ सीखि नइ चेतणा—एहनी

जीव तणी हिंसा करइ, बोलइ मिरपावाद ।
प्राणसमा परधन हरइ, सेवइ पंच प्रमाद ॥ १ ॥
नरक जायइ ते जीवडउ, पामइ दुख अनंत ।
छेदन भेदन ते सहइ, भाखइ श्री भगवंत ॥ न०॥ २ ॥
परदारा सुं पापियउ, भोगवइ काम भोग ।
विषयारस लुब्धउ थकउ, न बीहइ पर लोग ॥ न०॥ ३ ॥

मदिरा मांस माखरण भखइ, बहु आरंभ निवास।
पार नहीं परिग्रह तणउ, इच्छा जेम आगास ॥ न०॥ ४ ॥
देव द्रव्य गुरु द्रव्य वलि, साधारण द्रव्य खाय।
दीन हीन निर्धन थकउ, दुखियउ ते थाय ॥ न०॥ ५ ॥
साध अनइ वलि साधवी, धरमी नर नार।
तेह तणी निंदा करइ, न गिणइ उपगार ॥ न०॥ ६ ॥
कृतघ्न क्रूर प्रकृति करइ, परवंचन द्रोह।
कूड़ कपट नित केलवइ, माया नइ मोह ॥ न०॥ ७ ॥
आल पंपाल मुखइ भखइ, हियइ वज्र कठोर।
धसमसतउ धंधइ फिरइ, करइ पाप अघोर ॥ न०॥ ८ ॥
जोयउ चक्रवर्ती आठमउ, संभूम नउ जीव।
सातमियइ नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव ॥ न०॥ ६ ॥
पाप तणा फल पाडुया, आपइ अति दुखु।
समयसुन्दर कहइ ध्रम करउ, जिम पामउ सुखु॥ न०॥१०॥

व्रत पच्चक्खाण गीतम्

राग—वीलावर

बूढा ते पिण कहियइ बाल,
व्रत बिना जे गमावइ काल।
जीमइ पोहर बि पोहर प्रमाण,
पण न करइ नोकारसी पचखाण ॥ बू० ॥१॥

पाणी न पीवइ राते इकि वार,
पण न करइ रात्रे चउविहार ॥ चू० ॥२॥
नीलवण खावे नहीं दस के वार,
पिण भायइ पाप भार अढोर ॥ चू० ॥३॥
नवरा रहइ न करइ को काम,
पण न लियइ परमेसर नुं नाम ॥ चू० ॥४॥
गांठ रुपइया त्रण के चार,
पिण न करइ सुंस पचास हजार ॥ चू० ॥५॥
चउपद मांहे घरि छाली नहीं,
हाथी नुं सुंस न सके ग्रही ॥ चू० ॥६॥
विनय विवेक ने जाणे मरम,
श्रावक होइ नइ न करे धरम ॥ चू० ॥७॥
पोषउ करइ ने दिवसे सूवै,
ते धर्म फल पोषह नो खूवै ॥ चू० ॥८॥
क्रिया न करइ कहावइ साध,
नाम रतन दाम न लहइ आध ॥ चू० ॥९॥
मनुष्य जन्म नवि हारो आल,
तमे पाणी पहली बांधो पाल ॥चू०॥१०॥
जे करइ व्रत आखड़ी पचखाण,
समयसुन्दर कहइ ते चतुर सुजाण ॥चू०॥११॥

—:०:—

सामायिक गीतम्

सामायिक मन शुद्धे करउ, निंदा विकथा मद परिहरउ ।
पढउ गुणउ वांचउ उपगरउ, जिम भवसागर लीला तरउ ॥१॥
दिवस प्रते कोई दियइ सुजाण, सोनारी कंडी लाख प्रमाण ।
तेहनउ पुण्य हुवइ जेतलउ, सामायक लीधे तेतलउ ॥२॥
काम काज घर ना चिंतवइ, निंदा कपट करी खीजवइ ।
आर्त रौद्र ध्यान मन धरइ, ते सामायिक निष्फल करइ ॥३॥
आप परायउ सरखउ गिणइ, साचुं थोडुं गमतूं भणइ ।
कंचन पत्थर समवड धरइ, ते सामायक सूधूँ करइ ॥४॥
चंदवतंसक राजा जेम, सामायक व्रत पाल्युं तेम ।
कहइ श्री समयसुन्दर सीस, सामायिक व्रत पालउ निशदीस ॥५॥

गुरु वंदन गीतम्

हां मित्र म्हारा रे, चालउ उपासरइ जइयइ ।
संवेगी सदगुरु वांदी नइ, आपे कृतारथ थइयइ रे ॥१॥ हां.॥
श्री जिन वचन वखाण सुणीजइ, आपणि श्रावक थइयइ रे ।
समयसुन्दर कहइ ध्रम साचउ, हियइ मां सरदहियइ रे ॥२॥हा.॥

श्रावक बारह व्रत कुलकम्

श्रावक ना व्रत सुणजो बार, संसार मांहे एतउ सार ।
धुर थी समकित सूधउ धरइ, पणि मिथ्यात भणी परिहरइ ॥ १ ।

बेन्द्रिय प्रमुख जीव जे बहू, रूड़ी परि राखइ ते सहु।
जीव एकेन्द्री जयणा सार, व्रत पहिला नउ एह विचार। २।

कन्यादिक बोलइ नहीं कूड़, ते बोलइ तो जासइ बूड़।
सांचू बोलइ ते श्रीकार, ए बीजा व्रत नउ आचार। ३।

अणदीधी चोरी नी आथि, हासइ पणि झालइ नहीं हाथि।
जूठउ बोलि न लीजइ जेह, तीजउ व्रत कहीजइ एह। ४।

पर स्त्री नउ कीजइ परिहार, नियत दिवस पोता नी नारि।
रागदृष्टि राखीजइ साहि, चउथउ वरत धरउ चित मांहि। ५।

नव विध परिग्रह नउ परिमाण, यावज्जीव करइ हित जाणि।
आकास सरीखी इच्छा गमउ, पालउ ए अणुव्रत पांचमउ। ६।

आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊँ निज वसइ।
मन मान्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी अरगला। ७।

भोग अनइ उपभोगउ बेउ, आपणइ अंगइ लागइ जेउ।
तेह विगति जे लेवा तणी, सातमउ वरत कह्यउ जगधणी। ८।

आपणा अरथ विना उपदेस, पाप नउ दीजइ नहीं आदेश।
पाड़ुया ध्यान तणउ परिहार, ए आठमा व्रत नउ अधिकार। ९।

आलावउ गुरु मुखि ऊचरइ, सावद्य जोग सहु परिहरइ।
समता भावइ बि घड़ी सीम, नवमउ सामायक व्रत नीम। १०।

सगला वरत तणउ संखेव, निरारंभ रहइ नितमेव।
जां लगि अटकल कीजइ जेह, दसमउ देसावगासिक तेह। ११।

चौपरवी पज्जूसण परब, वलि कल्याणक तिथि पण सर्व ।
सावद्य नउ ज कीजइ समउ, ए पोसउ व्रत इग्यारमउ ।१२।
पोसउ पारी नइ अहसमइ, जतियां नइ दीधउ ते जिमइ ।
गुरु ऊपरि आणी भ्रमराग, ए बारमउ व्रत अतिथि संभाग ।१३।
बोल्या श्रावक ना व्रत बार, मूल सूत्र सिद्धांत मझार ।
आणंद नी परि पालउ एह, जिम पामउ भवसागर छेह ।१४।
सोलइ सइ नइयासी समइ, बीकानेर रह्या अनुक्रमइ ।
कीधउ बारां व्रत नउ कुलउ, समयसुन्दर कहइ नित सांभलउ।१५।

श्रावक दिनकृत्य कुलकम्

श्रावक नी करणी सांभलउ, नित समकित पालउ निरमलउ।
अरिहंत देव अनइ गुरु साध, भगवंत भाख्यउ धरम अबाध। १ ।
जागइ पाछली रात विचार, निचल चित्त गुणइ नउकार ।
काल वेला पडिक्कमणउ करइ, पाप करम दूरि परिहरइ । २ ।
पछइ करइ गुरु मुख पचखाण, जयणा सुं पडिलेहण जाण।
देव जुहारइ देहरइ जाय, चैत्यवंदन करइ चित्त लगाय । ३ ।
वलि गुरु वांदी सुणइ वखाण, सूत्र ना पूछइ अरथ सुजाण।
जतियां नइ विहरावी जिमइ, ते भव मांहि थोडउ भमइ । ४ ।
सांझइ वलि सामाइक लेइ, मन मान्यउ पचखाण करेइ ।
थापना ऊपर थिर मन ठवइ, सूधा आवश्यक साचवइ । ५ ।
अणसण सागारी उचरइ, सूतउ चारे सरणा करइ ।

राति दिवस इण रहणी रहइ, उठतउ वइसतउ अरिहंत कहइ। ६।
व्यवहार सुद्ध करइ व्यापार, वलि ल्यइ श्रावक ना व्रत बार।
वलि संभारइ चउदह नीम, मांगइ नहीं य सरइ तां सीम। ७।
निंदा पणि न करइ पारकी, ते करतउ थायइ नारकी।
सीख भली तउ द्यइ सुविचार, पछइ न मानइ तउ परिहार। ८।
मिथ्यात तउ मानइ नहीं मूल, वलि विकथा न करइ वातूल।
देव द्रव्य थी दूरि रहइ, नहि तरि नरक तणा दुख लहइ। ६।
साहमी नइ संतोषउ घणु, सगपण ते जे साहमी तणु।
धरणउ देतां त रहइ धर्म, माणस नउ बोलइ नहीं मर्म।१०।
अनंत अभव तणी आखड़ी, जीवदया पालइ जगि वड़ी।
वलि वहइ साते ही उपधान, सुद्ध करइ किरिया सावधान।११।
गोती हरइ सरिखउ ग्रह वास, प्रमदा बंधण छांडइ पास।
संजम कदि हुँ लेइसि सार, इसउ मनोरथ करइ अपार।१२।
करणी ए श्रावक जे करइ, ते भवसागर हेलां तरइ।
वीतराग ना एह वचन, नर नइ नारि करइ ते धन्न।१३।
परभाते पड़िकमणउ करइ, धर्म बुद्धि हीयइ में धरइ।
गुणइ कुलउ ते सिव सुख लहइ, समयसुन्दर तउ साचउ कहइ।१४।

——:o:——

शुद्ध श्रावक दुष्कर मिलन गीतम्

राग—आसाउरी-सिंधुड़ड.
ढाल—कइयइ मिलस्यइ मुनिवर एहवा–एहनी।
पाठांतर नव गीत जाणियउ.

कइयइ मिलस्यइ श्रावक एहवा,
सुणिस्यइ आवि वखाणो जी।
धरम गोष्ठी चरचा करिस्यां,
वीतराग वचन प्रमाणो जी ॥ १ ॥ क. ॥
धुरि थी सूधूँ समकित जे धरइं,
मानइ नहिं य मिथ्यातो जी।
साहमी सुं धरणइ बइसइ नहीं,
नहि राग द्वेष नी वातो जी ॥ २ ॥ क. ॥
बारह व्रत सीखइ रूड़ी परि,
जां जीवइ तां सीमो जी।
सूधइ मन किरिया नी खप करइ,
साचवइ चउदह नीमो जी ॥ ३ ॥ क. ॥
काल वेलागइ जे पडिकमणउ करइ,
सूत्र अरथ पाठ सूधो जी।
बार अधिकार गमा त्रिण साचवइ,
गुरु वचने प्रतिबूधो जी ॥ ४ ॥ क. ॥
व्यवहार (१) सुध पणुं पालइ सदा,
प्रथम वडउ गुण एहो जी।

रोग रहित पंचेन्द्री परगड़ा (२),
सोम प्रकृति (३) सुसनेहो जी ॥ ५ ॥ क. ॥
लोग प्रिय उत्तम आचार थी (४),
वंचना रहित अक्रूरो (५) जी ।
पाप करम थी जे डरता रहइ (६),
कपट थकी रहइ दूरो (७) जी ॥ ६ ॥ क. ॥
ओटउ आप खमी जइ पारका,
काम समारइ जेहो जी (८) ।
चोरी परदारादिक पाप थी,
करता भाजइ तेहो जी (९) ॥ ७ ॥ क. ॥
जीवदया पालइ जतना करइ (१०),
रहइ मध्यस्थ सुदखो जी (११) ।
सोमदृष्टि (१२) गुणरागी (१३) सतकथा,
(१४) मात पिता सुद्ध पखो जी ॥ ८ ॥ क. ॥
दीरघ दरसी (१५) जाण विशेषता (१६),
उत्तम संगति एको जी (१७) ।
विनय करइ (१८) उपकार कियउ गिणइ (१९),
हित वच्छल सुविवेको जी (२०) ॥ ९ ॥ क. ॥
लब्ध लच अंगित आकारना,
जाण प्रवीण अपारो जी (२१) ।
एकवीस गुण श्रावक ना ए कह्या,
सूत्र सिद्धांत मझारो जी ॥१०॥ क. ॥

निंदक थायइ निचइ नारकी,
लोक कहइ चंडालो जी।
श्रावक न करइ निंदा केहनी,
घइ नहीं कूड़उ आलो जी ॥११॥ क. ॥
साध तणा छल छिद्र जोयइ नहीं,
भाखइ भगवान भाखो जी।
अम्मा पिउ सरिखा श्रावक कह्या,
ठाणांग सूत्र नी साखो जी ॥१२॥ क. ॥
विण विहराव्या आप जिमइ नहीं,
दाखीजइ दान सूरो जी।
आहार पाणी विहरावइ सूझतउ,
वस्त्र पात्र भरपूरो जी ॥१३॥ क. ॥
एक टंक जिमइ एकासणइ,
सचित तणउ परिहारो जी।
चारित लेवा उपरि खप करइ,
पालइ सील उदारो जी ॥१४॥ क. ॥
न्यायोपार्जित वित्तइ नीपनउ,
श्रावक घइ जु आहारो जी।
तउ अम्ह थी सूध संजम पलइ,
आहार जिसउ उदगारो जी ॥१५॥ क. ॥
उत्तम श्रावक नी संगत्ति करी,
साव नइ पणि गुण थायो जी।

कूल अमूलिक संग थकी,
जिम तेल सुगंध कहायो जी ॥१६॥ क. ॥
ए नहिं साध सिथल दीसइ घणुं,
मूँड मिला पाखंडो जी ।
एहवी संका मनि आणइ नहीं,
साधु छइ लीजइ खंडो जी ॥१७॥ क. ॥
तरतम जोगइ साध इहां अछइ,
दुपसह सीम महंतो जी ।
महावीर नउ सासन वरतस्यइ,
एहवी वात कहंतो जी ॥१८॥ क. ॥
तुंगिया नगरी श्रावक सारिखा,
आणन्द नउ कामदेवो जी ।
संख सतक नइ सुदरसण सारिसा,
करणी करइ नित मेवो जी ॥१९॥ क. ॥
दूसम कालइ संजम दोहिलउ,
दोहिलउ श्रावक धर्मो जी ।
गुण भीजइ नइ अवगुण गाडियइ,
जिन धर्म नउ ए मर्मो जी ॥२०॥ क. ॥
तप जप किरिया नी जे खप करइ,
कुण श्रावक कुण साधो जी ।
समयसुन्दर कहइ आराधक तिके,
सफल जनम तिण लाधो जी ॥२१॥ क. ॥

अंतरंग विचार गीतम्

राग—भैरव

कहउ किम तिण घरि हुयइ भलीवार,
को कहनी मानइ नहीं कार ॥१॥ क० ॥

पांच जन कुटुम्ब मिल्यउ परिवार,
जूजुइ मति जूजुयउ अधिकार ॥२॥ क० ॥

आप संपा हुयइ एक लगार,
तउ जीव पामइ सुख अपार ॥३॥ क० ॥

समयसुन्दर कहइ सु नर नारि,
अंतरंग छइ एह विचार ॥४॥ क० ॥

ऋषि महत्त्व गीतम्

वइठि तखत हुकम्म करइ, परभाति जाणे पातसाह वड़ा;
मध्याह्न समइ हाथि ठूठइ लीयइ, भीख मांगइ फकीर ज्युं वारि खड़ा।
न मर्द न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुंडित कन्न फड़ा;
अचरिज भया मोहि देख नहीं एहु, कुण दुकाण देखउ रिखड़ा।१।व.।

मध्याह्न समइ गज भिक्षा भमइ, लोक मृष्टान्न पान घइ आगइ खड़ा;
धम आप तरइ तारइ अउरण कुं, नमइ लोक खलक वड़ा लहुड़ा।
दुख पाप जायइ सुख देखत ही, एहु खूब दुकाण भला रिखड़ा।२।

——❀——

गच्छ वास छोडइ नहीं गुणवंत, वकुश कुशील पंचम आरइ।
समयसुंदर कहइ सो गुरु साचउ, आप तरइ अवरां तारइ। ति०।३।

साधु गुण गीतम्

राग—आसावरी

धन्य साधु संजम धरइ सुधउ, कठिन दूषम इण काल रे।
जाव जीव छज्जीव निकायना, पीहर परम दयाल रे। ध.।१।
साधु सहै बावीस परिसह, आहार ल्यइ दोष टालि रे।
ध्यान एक निरंजन ध्याइ, वइरागे मन वालि रे। ध.।२।
सुद्ध प्ररूपक नइ संवेगी, जिन आज्ञा प्रतिपाल रे।
समयसुंदर कहइ म्हारी वंदना, तेहनइ त्रिकाल रे। ध.।३।

हित शिक्षा गीतम्

राग—सोरठ

पुण्य न मूँकइ विनय न चूकउ, रीस न करिज्यो कोई।
देव गुरु नउ विनय करीजइ, काने सुणउ भलाई रे।१।
जिवड़ा घड़ी दोइ मन राखउ ॥ आंकणी ॥
बूढा ते किम बाल कहीजइ, विरत नहीं जाणउ कोई।
एक रुपइयउ खोटउ बांध्यउ, दौड़चउ करैय दगाई रे। जी.।२।
मांकर ज्युं जीव हालइ डोलइ, थांभ्यउ किही नी जावइ।
नावा ऊपरि आयज बइठउ, आपण आपणइ छदइ रे। जी.।३।
लेखे बइठउ लोभे पईठउ, चार पहुर निश जागइ।
दोय घड़ी सामाइक वेला, चोखउ चित्त न राखइ रे। जी.।४।

कीरति कारण उपगरण मांड्यउ, लाख लोक घरि लूँटइ।
एक फूँदीकउ फड़कउ वांधइ, धरम तणी गांठ खोलइ रे। जी.।५।
रावल लातउ देवलि जातउ, ऊपरि मारज सहितउ।
दोय घड़ी नउ भूखउ रहितउ, सोइ दिन वहि जातउ रे। जी.।६।
घरि साम्ही धरमशाला हुँता, बीस विमासण धावइ।
दोय.................................. । जी.।७।
पंच अंगुलिया वेल ज पहिरइ, ऊँचउ पहिरइ वागउ।
घर घरिणी नइ घाट घड़ावइ, निहचइ जासी नागउ। जी.।८।
साचौ अखर मस्तक मांडी, वदन कमल मुख दीपड़उ।
मारग चालइ सुधइ चालइ, पान फूल मूल कंदो। जी.।९।
ना उतरियइ उठ चलेगो, जु सीचाणउ वंदउ।
समयसुंदर कहइ सुणउ रे भाई, धरम करइ तेहनइ वंदो। जी.।१०।

श्री संघ गुण गीतम्

राग—धन्याश्री

संघ गिरुयउ रे, श्री संघ गुणे करि गिरुयउ रे।
मात पिता सरिखउ हित वल्लभ[1], किमही करई नहीं विरुयउ रे।श्री.१।
चंद्र सूरज पथ नगर समुद्र चक्र, मेरु नी उपमा धरुयउ रे।
तीर्थंकर देवे पणि मान्यउ, दुखिया नउ दुख हरुयउ रे।श्री.२।
संघ मिल्यउ करइ[2] काम उलट पट, कनक पीतल रूप तरुयउ रे।
समयसुँदर कहइ श्रीसंघ सोहइ, वाड़ी मांहे जिम मरुयउ रे।श्री.३।

१ वच्छल। २ चिंतवइ ते करइ काम।

सिद्धान्त श्रद्धा सज्झाय

आज आधार छइ सूत्र नउ, आरइ पांचमइं एह ।
सुधरम सामी संइं मुखइ, कह्यउ जंबू नइ तेह ॥ आ०॥१॥
तीर्थंकर हिवणा नहीं, नहीं केवली कोई ।
अतिशयवंत इहां नहीं, संशय भांजइ सोई ॥ आ०॥२॥
भरत मइं जीव भारी कर्मा, मत खांचे गमार ।
पणि सूत्र में कह्यउ ते खरउ, ए छइ मोटी कार ॥ आ०॥३॥
आज सिद्धान्त न हुँत तउ, किम लोक करंत ।
पणि वीतराग ना वचन थी, भ्रम बुद्धि धरंत ॥ आ०॥४॥
इकवीस सहस वरस इहां, जिन धर्म जयवंत ।
सूत्र तणइ बलि चालस्यां, भाख्यौ भगवंत ॥ आ०॥५॥
श्री महावीर प्ररूपियउ, धरम नउ मरम एह ।
समयसुन्दर कहइ सहु, कह्यउ तीर्थंकर तेह ॥ आ०॥६॥

अध्यात्म सज्झाय

राग—आसाउरी

इण योगी ने आसन दृढ कीना, पवन बंधि परब्रह्म सुं लीना । इ.।१।
नासा अग्र नयन दोऊ दीना, भीतरि हंस ढुंढत मन भीना । इ.।२।
अपनि पवन दसमें द्वार आएया, प्राणायाम का भेद पिछाएया । इ.।३।
चार अंगुल जल पवने पइसार्‍या, पूरक ध्यान पवन सवार्‍या । इ.।४।

नाभि कमल थी पवन निसार्या, रेचक ध्यान चपल मन मार्या। इ.।५।
घट भीतरि किया घट आकारा, नाभि पवन कुंभक आकारा। इ.।६।
पवन जीत्या तिण मन भी जीत्या, सो योगना मेरा सच्चा प्रीता। इ.।७।
ज्ञान की वात लहेगा ज्ञानी, समयसुंदर कहइ आतम ध्यानी। इ.।८

—:o:—

श्रावक मनोरथ गीतम्

श्री जिन शासन हो मोटउ ए सहु, जीवदया जिन धर्म।
पृथ्वी प्रमुख हो जीव कह्या जुदा, वलि कह्यउ करता कर्म। श्री.।१।

देव कहीजइ अरिहंत देव नइ, गुरु तउ सूधउ साधु।
धर्म कहीजइ केवलि भाखियउ, सूधउ समकित लाध। श्री.।२।

पंच महाव्रत हो पालइ जे सदा, ल्यइ सूझतउ आहार।
आप तरइ और नइ तारवइ, एहवा जिहां अणगार। श्री.।३।

समकित धारी हो श्रावक जिहां कह्या, मानइ नहीं मिथ्यात।
व्यवहार सुद्धे हो करइ आजिविका, न करइ पर नी वात। श्री.।४।

अभक्ष्य न खावइ हो लड्डो वडउ, अनंत काय नउ सूँस।
सांझ सवारइ हो पड़िकमणउ करइ, वलि करइ संजम हूस। श्री.।५।

पारसनाथ हो इम प्ररूपियउ, जिन शासन जयकार।
भव भव होज्यो हो समयसुंदर कहइ, इहां म्हारइ अवतार। श्री.।६।

मनोरथ गीतम्

ते दिन क्यारे आवसइ, श्री सिद्धाचल जासूँ ।
ऋषभ जिणंद जुहारि नइ, सूरज कुण्ड मइं न्हासूँ ॥ ते०॥१॥

समवसरण मां बइसी नइ, जिनवर नी वाणी ।
सांभलसुं साचे मनइ, परमारथ जाणी ॥ ते०॥२॥

समकित शुद्ध व्रत धरी, सद्गुरु नइ वंदी ।
पाप सकल आलोय नइ, निज आतम निंदी ॥ ते०॥३॥

पडिकमणउ बे टंक नउ, करसुं मन कोडै ।
विषय कषाय निवार नइ, तप करसुं होडै ॥ ते०॥४॥

व्हाला नइ वइरी विचइ, नवि करवउ वैरो ।
पर ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ चेरो ॥ ते०॥५॥

धर्म स्थानक धन वावरी, छ काय नी हेते ।
पंच महाव्रत लेय नइ, पालसुं मन प्रीते ॥ ते०॥६॥

काया नी माया मेल्हि नइ, जिम परिसह सहसुं ।
सुख दुख सगला विसार नइ, समभावइ रहसुं ॥ ते०॥७॥

अरिहंत देव ने ओलखी, गुण तेहना गासुं ।
समयसुन्दर इम वीनवइ, क्यारे निरमल थासुं ॥ ते०॥८॥

नाभि कमल थी पवन निसार्या, रेचक ध्यान चपल मन मार्या। इ.।५।
घट भीतरि किया घट आकारा, नाभि पवन कुंभक आकारा। इ.।६।
पवन जीत्या तिण मन भी जीत्या, सो योगना मेरा सचा प्रीता। इ.।७।
ज्ञान की बात लहेगा ज्ञानी, समयसुंदर कहइ आतम ध्यानी। इ.।८

—:०:—

श्रावक मनोरथ गीतम्

श्री जिन शासन हो मोटउ ए सहु, जीवदया जिन धर्म।
प्रथ्वी प्रमुख हो जीव कह्या जुदा, वलि कह्यउ करता कर्म। श्री.।१।

देव कहीजइ अरिहंत देव नइ, गुरु तउ सूधउ साधु।
धर्म कहीजइ केवलि भाखियउ, सूधउ समकित लाध। श्री.।२।

पंच महाव्रत हो पालइ जे सदा, ल्यइ सूझतउ आहार।
आप तरइ और नइ तारवइ, एहवा जिहां अणगार। श्री.।३।

समकित धारी हो श्रावक जिहां कह्या, मानइ नहीं मिथ्यात।
व्यवहार सुद्धे हो करइ आजिविका, न करइ पर नी वात। श्री.।४।

अभक्ष्य न खावइ हो लड्डुडो बडउ, अनंत काय नउ सूँस।
सांझ सवारइ हो पड़िकमणउ करइ, वलि करइ संजम हूस। श्री.।५।

पारसनाथ हो इम प्ररूपियउ, जिन शासन जयकार।
भव भव होज्यो हो समयसुंदर कहइ, इहां म्हारइ अवतार। श्री.।६।

मनोरथ गीतम्

ते दिन क्यारे आवसइ, श्री सिद्धाचल जासूँ।
ऋषभ जिणंद जुहारि नइ, सूरज कुण्ड मइं न्हासूँ॥ ते०॥१॥

समवसरण मां बइसीं नइ, जिनवर नी वाणी।
सांभलसुं साचे मनइ, परमारथ जाणी॥ ते०॥२॥

समकित शुद्ध व्रत धरी, सद्गुरु नइ वंदी।
पाप सकल आलोय नइ, निज आतम निंदी॥ ते०॥३॥

पडिकमणउ बे टंक नउ, करसुं मन कोडे।
विषय कषाय निवार नइ, तप करसुं होडे॥ ते०॥४॥

व्हाला नइ वइरी विचइ, नवि करवउ वैरो।
पर ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ चेरो॥ ते०॥५॥

धर्म स्थानक धन वावरी, छ काय नी हेते।
पंच महाव्रत लेय नइ, पालसुं मन प्रीते॥ ते०॥६॥

काया नी माया मेल्हि नइ, जिम परिसह सहसुं।
सुख दुख सगला विसार नइ, समभावइ रहसुं॥ ते०॥७॥

अरिहंत देव ने ओलखी, गुण तेहना गासुं।
समयसुन्दर इम वीनवइ, क्यारे निरमल थासुं॥ ते०॥८॥

मनोरथ गीतम्

राग—आसावरी

धन धन ते दिन मुझ कदि होसइ, हुँ पालिस संजम सूधोजी।
पूरव ऋषि पंथे चालीसुं, गुरु वचने प्रति बूझो जी। ध.।१।
अनियत भिक्षा गोचरी, रन्न वन्न काउसग लेस्युं जी।
समभाव शत्रु नइ मित्र सुं, संवेग शुद्ध धरस्युं जी। ध.।२।
संसार नो संकट थकी, छूटिस जिण अवतार जी।
धन्य समयसुन्दर ते घड़ी, पामिस भव नउ पार जी। ध.।३।

मनोरथ गीतम्

ढाल—नगर सुदरसन अति भलउ

अरिहंत देहरइ आविनइ, प्रतिमा नइ हजूर।
चारित फेरी ऊचरूं, आणी आणंद पूर ॥१॥
ते दिन मुझ नइ कदि हुस्यइ, थाऊँ साधु निग्रंथ।
चारित फेरी ऊचरूँ *, पालुं साधु नउ पंथ ॥२॥ ते०॥
आपण पइ जाऊँ विहरवा, सूझतउ लूं आहार।
ऊँच नीच कुल गोचरी, लेऊँ नगर मझार ॥३॥ ते०॥
माया ममता परिहरी, करूं उग्र विहार।
उपगरण कांधे आपणइ, न लूं नफर कि वार ॥४॥ ते०॥
आपउ निंदूं आपणउ, न करूँ परताति।
चारित ऊपर खप करूँ, दिन नइ वलि राति ॥५॥ ते०॥

* परिगहउ सगलउ परिहरूँ।

लालच लोभ करूँ नहीं, छोड़ँ जीभ नउ स्वाद।
सूत्र सिद्धान्त भणूँ गणूँ, न करूँ परमाद ॥६॥ ते०॥
दूषम कालइ दोहिलउ, अधिकउ पंथ एह।
वर्ष मास दिन जो पलई† तो पण भलउ तेह ॥७॥ ते०॥
एह मनोरथ माहरउ, फलीजो करतार।
समयसुन्दर कहइ जिम करूं, हूं सफलउ अवतार ॥८॥ ते०॥

-चार मंगल गीतम्

अम्हारइ हे आज वधामणा,
सहेली हे गावउ मंगल च्यार। अम्हा०।
पहिलउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ अरिहंत देव। अम्हा०।
तित्थंकर त्रिभुवन तिलो,
कर जोड़ी हे करि सुरनर सेव। अम्हा०।१।
बीजउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ सिद्ध सुहाग। अम्हा०।
सिद्ध शिला ऊपर रह्या,
जोयण नइ हे चउवीसमइ भाग। अम्हा०।२।
तीजउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ साधु निग्रंथ। अम्हा०।

† मास पाख दिन जउ पलउ।

ज्ञान दर्शन चारित करी,
जे साधइ हे मुगति नउ पंथ ! अम्हा०।३।
चउथउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ श्री जिन धर्म। अम्हा०।
भगवंत केवलि भाखियउ,
भवियण ना हे भांजइ मन ना मर्म। अम्हा०।४।
च्यारे मंगल चिरजया,
सहेली हे करइ कोड़ कल्याण। अम्हा०।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ,
पणि गायइ हे ते तो चतुर सुजाण। अम्हा०।५।

चार मंगल गीतम्

ढाल—महावीर जी देसणा ए, एहनी

श्री संघ नइ मंगल करउ ए, मंगल चार परम के।
अरिहंत सिद्ध सुसाध जी ए, केवलि भाषित धरम के। श्री०।१।
पहिलुं मंगल मनि धरु ए, विहरंता अरिहंत के।
भविक जीव प्रतिबोधता ए, केवल ज्ञान अनंत के। श्री०।२।
बीजउ मंगल मनि धरु ए, सिद्ध सकल सुविचार के।
आठ करम नउ क्षय करी ए, पहुँता मुगति मझारि के। श्री०।३।
त्रीजुं मंगल मन धरु ए, सुधा साध निग्रंथ के।
निर्मल ज्ञान क्रिया करी ए, साधई मुगति नउ पंथ के। श्री०।४।
चउथुं मंगल मन धरु ए, श्री जिनधर्म उदार के।
चिंतामणि सुरतरु समउ ए, समयसुन्दर सुखकार के। श्री०।५।

चार शरणा गीतम्

राग—आसाउरी सिधुड़ड

मुझ नइ चार शरणा हो जो, अरिहंत सिद्ध सुसाधो जी।
केवली धर्म प्रकासियउ, रतन अमोलिक लाधो जी। मु०।१।
चिहुँ गति तणा दुख छेदिवा, समरथ सरणा एहो जी।
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेण किया सरणा तेहो जी। मु०।२।
संसार मांहे जीवसुं, तां सीम सरणा चारो जी।
गणि समयसुँदर इम कहइ, कल्याण मंगलकारो जी। मु०।३।

अठारह पाप स्थानक परिहार गीतम्

राग—आसाउरी

पाप अठारह जीव परिहरउ, अरिहंत सिद्ध सुसाखो जी।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवंत इणि परि भाखो जी। पा०।१।
आश्रव कषाय दुबंधना, वलि कलह अभ्याख्यानो जी।
रतिअरति पेसुन निंदा, माया मोस मिथ्या ज्ञानो जी। पा०।२।
मन वच काये किया सहु[1], मिच्छामि दुक्कडं तेहो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिन धरम मरमो एहो जी। पा०।३।

चोरासी लक्ष जीव योनि क्षामणा गीतम्

राग—आसाउरी

लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेको जी।
मिच्छामि दुक्कडं दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येको जी। ल०।१।

---

१ इण भव परभव जे किया।

सात लाख भू दुग तेउ वाउ, दस चउद वन ना भेदो जी।
षट विगल सुर तिरि नारकी, चार चार चउद नर वेदो जी। ल०।२
मुझ वइर नहीं छई केह सुँ, सहु सुं जई मैत्री भावो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, पामिय पुण्य प्रभावो जी। ल०।३

अंत समये जीव निर्जरा गीतम्

राग—आसावरी

इण अवसर करि रे जीव सरणा,
ध्यान एक भगवंत का धरणा ॥ इ० ॥१॥
माया जाल जंजाल न परणा,
अरिहंत अरिहंत नाम समरणा ॥ इ० ॥२॥
वलि दोहिला नर भव अवतरणा,
समकित विन संसार मइ फिरणा ॥ इ० ॥३॥
माल मलूक महल मन हरणा,
साथइ नहीं आवइ इक तरणा ॥ इ० ॥४॥
साते खेत्रे नित वावरणा,
अथिर आथि एता उगरणा ॥ इ० ॥५॥
त्रूटी नाड़ि न को काज सरणा,
करि सकइ तउ करि पहिली सवरणा ॥ इ० ॥६॥
मरण तणा मत आणे डरणा,
ए जायइ देखि लघु वृद्ध तरुणा ॥ इ० ॥७॥

अणसण अपणइ मुखि उचरणा,
सूरवीर साहस आदरणा ॥ इ० ॥८॥
पाप अठार दूर परिहरणा,
सहु सु मिच्छामि दुकड़ करणा ॥ इ० ॥९॥
समयसुन्दर कहइ पंडित मरणा,
संसार समुद्र थी पार उतरणा ॥ इ० ॥१०॥

आहार ४७ दूषण सज्झाय

ढाल—चउपई नी

साध निमित्त छजीव निकाय,
हणतां आधा करमी (१) थाय।
एहवउ ल्यइ नहीं जे आहार
ते कहियइ सुधा अणगार । १ ।
लाडू चूरण अगनि तपावि,
आपइ उद्देसक (२) प्रस्तावि । ए० । २ ।
आधा करमी नउ कण मिलइ,
ते अनपूति दूषण (३) अटकलइ । ए० । ३ ।
साध असाध निमित्त रंधाय,
एकठउ अन्न ते मिश्र (४) कहाय । ए० । ४ ।
साध आया विहरविसि एह,
राखी मूंकइ थापना (५) तेह । ए० । ५ ।

वसीकरण (३०) नइ चूरण (३१) देइ,
अन पाणी मन वंछित लेइ । ए०।२७।
गरभ पाड़इ ते तउ मूल कर्म्म (३२),
अन पाणी ल्यइ महा अधर्म्म । ए०।२८।
ए सोलह उपजावइ जती,
संजम नी खप नहीं छइ रती ।
पणि ते आगलि थास्यइ दुखी,
टालइ दोष ते थायइ सुखी । ए०।२९।
आधाकरमी संकित (३३) ग्रहइ,
जल प्रमुख म्रक्षित (३४) लहई । ए०।३०।
सचित ऊपरि मूक्यु अन्न पाण,
विहरइ ते निक्खित्त (३५) अजाण । ए०।३१।
फासु ऊपरि धरचउ सचित्त,
ते पिण्ड पिहित (३६) दूषण निच्च । ए०।३२।
एक ठाम थी बीजइ ठामि,
घाल्यउ ल्यइ साहरिय (३७) सुनाम । ए०।३३।
बालवृद्ध अयोग्य नउ दत्त,
दायक दूषण (३८) कह्यउ अजुत्त । ए०।३४।
सचित अचित बे भेला कीया,
मिश्र दोष (३९) लागइ ते लीयां । ए०।३५।
फासु पूरु प्रणम्यु नहीं,
अपरिणत (४०) दूषण जाणउ सही । ए०।३६।

वसादि के करि खरडचुं अन्न,
विहरइ लिप्त दोष (४१) धरमउ मन्न। ए०।३७।
विहरतां थी कण भूमि नखाय,
ते छर्दित दूषण (४२) कहिवाय। ए०।३८।
दस एषणा ना दूषण कह्या,
साध तीए सूधा सरदह्या।
संकादिक विहुँ नइ उपजइ,
दायक ग्राहक नइ ते···जइ।३६।
खीर खंड घृत संजोजना (४३),
धनु करि नइ जीमइ जे एक मना।४०।
संजम नउ निरवाहण थाय,
तेह थी अधिक प्रमाण (४४) कहाय।४१।
सखर आहार वखाणइ घणुं,
जिम तउ दूषण अंगार (४५) तणुं।४२।
कत्र खोड़इ भुंडउ आहार,
धूम दोष (४६) तणउ अधिकार।४३।
वेयण प्रमुख छ कारण विना,
लेतां दोष अकारण (४७) तणा।४४।
मांडलि ना ए दूषण पंच,
तेह तणउ बोल्यउ पर खंच।
स्वाद तणउ जे करिस्यइ त्याग,
जेहनइ मनि साचउ वयराग।४५।

उद्गम दोष ए सोलह कह्या,
अपादान पणि सोलह लह्या ।
दस एपणा ना कह्या केवली,
पांच दूपण मांडलि ना वली ।४६।
सगला मिलि सइंतालीस दोस
जिण सासण मांहें परिघोप ।
साधनइ जोइयइ सुध आहार,
श्रावक नइ साचउ व्यवहार ।४७।
वत्तचार सुरा गो मंम,
ए दृष्टांत कह्या अप्रशंस ।
भद्रबाहु स्वामी नी किद्ध,
पिण्ड निर्युक्ति मांहे प्रसिद्ध ।४८।
रूप वर्ण बल पुष्टि नइ काज,
आहार निषेध्यउ जु श्री जिनराजि ।
ज्ञान दर्शन चारित्र निमित्त,
देह नइ अउठंभ द्यइ समचित्त ।४६।
तर्या तरइ नइ तरिस्यइ तेह,
सूभता नी खप करिस्यइ जेह ।
तेहनइ वंदना करुं त्रिकाल,
जे श्री जिन आज्ञा प्रतिपाल ।५०।
संवत सोल एकाणुं समइ,
सज्झाय कीधी सहु नइ गमइ ।

श्री खंभायत नगर मझारि,
खारुयावाड़इ वसति अपार ।५१।
दीवाली दिन आणंद पूर,
श्री खरतर गच्छ पुण्य पडूर ।
मेघ विजय शिष्य नइ आग्रहइ,
समयसुन्दर ए सझाय कहइ ।५२।

इति श्री आहार ४७ दोष सज्झाय।

——:०:——

हीयाली गीतम्

कहिज्यो पंडित एह हियाली, तुम्हे छउ चतुर विचारी ।
नारी एक त्रण अक्षर नांमे, दीठी नयर मझारी रे । क.।१।
मुख अनेक पण जीभ नहीं रे, नर नारी सुं राचइ ।
चरण नहीं ते हाथे चालइ, नाटक पाखे नाचइ रे । क.।२।
अन्न खायइ पानी नहीं पीवइ, तृप्ति न राति दिहाड़इ ।
पर उपगार करइ पणि परतिख[1], अवगुण कोडि दिखाड़इ । क.।३।
अवधि आठ दिवस नी आपी, हियइ विमासी जोज्यो ।
समयसुंदर कहइ समझी लेज्यो,पणि ते सरिखा मत होज्यो।क.।४।

हीयाली गीतम्

पंखि एक वनि ऊपनउ, आव्यउ नयर मझार ।
आंखड़ली अणियालड़ी जी हो, देखइ नहिंय लगार ।१।

१ पापीण

हरियाली रे चतुर नर हरियाली रे, सुंदर नर जी हो कहिजो हियइ विमासि ।
साचा पांच कारण कह्या जी हो, कहइ तेहनइ साबासि । ह.।२।
चोंचा सदा चरतउ रहइ जी हो, वमन करइ आहार ।
राति दिवस भमतउ रहइ जी हो, न चढइ नर वर धार । ह.।३।
भूखउ बोलइ अति घणु' जी हो, बोल्यु' नवि समभाय ।
नारी संघातइ नेहलउ जी हो, विनु अपराध बंधाय । ह.।४।
ते पखि पंखी बापड़उ जी हो, प्रमदा पाड्यउ पास ।
समयसुंदर कहइ ते भणी जी हो, नारी नउ म करिस्यउ विश्वास[२]। ह.।५।

हीयाली गीतम्

राग—मिश्र

एक नारी वन मांहि उपन्नी, आवी नयर मझारि ।
पातलड़ी रूपइ अति रूयड़ी, चतुर लोक लेइ धारी रे ।१।
कहिज्यो अरथ हियाली केरउ, पहिलउ हियइ विमासी ।
विनतवंत गुणवंत तुम्हारी, नहिं तउ थास्यइ हांसी रे । आं.।क.।
काज पियारइ देह कमावइ, नयण विना अखियाली ।
सामल वरण सदा मुख सोहइ, जल पीवइ तृप टाली रे । क. ।२।
मुखि नवि बोलइ मस्तकि डोलइ, वचन शुभाशुभ जास ।
साजण दूजण पासि रमंती, दीठी लील विलास रे । क. ।३।
ए हीयाली हियइ विमासी, कहज्यो चतुर सुजाण ।
समयसुन्दर कहइ जेम तुम्हारु, कीजइ घणु' वखाण । क. ।४।

२ वेसास

सांझी गीतम्

ढाल—गुरु जी रे वधामणड़ं—एहनी

सांझि रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया रंगरोल रे।
संघ सहु को हरखिदउ, वारु दीधा नवल तंबोल रे। सां.।१।
गुण गाया अरिहंत ना, वलि साध तणा अधिकार रे।
गुणतां भणतां गावतां, सांभलतां हरख अपार रे। सां.।२।
घरि घरि रंग वधामणा, कोइ घरि घरि मंगलाचार रे।
घरि घरि आणंद अति घणा, श्री जिन शासन जयकार रे। सां.।३।
सांझी गीत सोहामणा, ए मई गाया एकवीस*-* रे।
समयसुंदर कहइ संघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे। सां.।४।

राती जागो गीतम्

राग—धन्याश्री

गायउ गायउ री राती जगउ रंगइ गायउ।
मन गमती मिलि सहिय समाणी, मन गमतउ गवराव्यउ री। रा.१।
देव अनइ गुरु ना गुण गाया, दोहग दूरि गमायउ।
सफल जनम समकित थयउ निरमल, भवियण के मन भायउ री। रा.२।
चतुर सुजाण सुण्यउ इक चित्ते, भलउ भलउ भेद सुणायउ।
पुण्यवंत श्रावक परिघल चित, तुरत तंबोल दिवायउ री। रा.३।
गीत पंचास अनोपम गाय, आणंद अंगि न मायउ।
चतुर्विध संघ थयउ अति हर्षित, समयसुन्दर गुण गायउ री। रा.४।

* पंचवीसो रे * जगदीशो रे।

हरियाली

साचा ।
चांचा ६
राति दि
भूखउ बो
नारी संघ
ते पणि ५
समयसुंदर क

एक नारी वन
पातलड़ी रूपइ
कहिज्यो अरथ हि
विनतवंत गुणवंत
काज पियारइ देह क
सामल वरण सदा मुर
मुखि नवि बोलइ
साजण दूजण प
ए हीयाली
समयसुन्दर कहइ
२ बेसास

(१) तृणाष्टकम्

अच्छंदकविवादे त्वं भज्यमानं तु
वीरोक्तिं कृतवान् सत्यां तद्न्यं
साधुचतुर्थ्योद्भूत—पापशुद्धिकृ
पुनः पुनर्ज्वलन्याशु कृशानौ
राज्यर्द्धिं त्यक्तवान् सर्वां निःस्पृह
परं स्वां तृण नामो च ढ्रासमं
अहो ते तृण माहात्म्यं कि
सत्याप मस्तके न्यस्ते तन्व
कृते पंचामृत भोज्ये
वक्त्रशुद्धिकरन्तु त्वं
अहो ते तृण सौभाग्यं
अन्तरालिन्यसे स्त्रीभि
न्तृण
तृणादि

(२) रजोष्टकम्

देवगुर्वोरिव येषां शीर्षच्चां स्थापयन्त्यमी ।
हस्तेन हस्तिनो हर्षादहो ते धूलि मान्यता ॥१॥
स्वस्ति श्रीमति लेखेपि यत्नतः प्रेषितेपि च ।
परं सिद्धिस्तवाधीना शक्तिस्ते रज ईदृशी ॥२॥
जगदाधारभूतेन जलदेन पुरस्कृताम् ।
वातेनोढां निरीक्ष्य त्वां धनाशा जायते नृणां ॥३॥
सर्वसहा प्रभृतिस्यात्मद्यमानं पदैरधः ।
न कुप्यसि कदापि त्वं रजस्ते चांतिरुत्तमा ॥४॥
यस्या नाम पदाधस्त्थां त्वां लात्वा रविवासरे ।
मस्तके क्षिप्यते मंत्रात् सा स्त्री वश्या रजो नृणाम् ॥५॥
गालिदाने न रुड् लज्जे यत्र स्वेच्छा कृतं सुखम् ।
रजः पर्व यतो जज्ञे तन्मान्यं कस्य नो रजः ॥६॥
रथ्यासु रममाणानां शिशुनां पांसुशालिनाम् ।
धूले त्वं स महर्घ्यापि शृङ्गारादतिरिच्यसे ॥७॥
अप्राप्यप्यनभीप्सापि सुलभापि पदे पदे ।
अहो ते धूलि माहात्म्यं[१] लक्ष्मीरित्यभिधीयसे ॥८॥
श्रीमद्विक्रम सद्रङ्गे विद्वद्गोष्टिषु नोदितः ।
रजोष्टकमिदं चक्रे शीघ्रं समयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृतं रजोष्टकम् ।

---

१ सौभाग्य

(१) तृणाष्टकम्

अच्छंदकविवादे त्वं भज्यमानं तु नाऽभनक् ।
वीरोक्तिं कृतवान् सत्यां तद्धन्यं जन्म ते तृण ॥१॥
साधुचक्षुर्व्यथोद्भूत--पापशुद्धिकृते तृणम् ।
पुनः पुनर्ज्वलत्याशु कृशानौ जनसाक्षिकम् ॥२॥
राज्यर्द्धिं त्यक्तवान् सर्वां निःस्पृहः करकण्डुराट् ।
परं त्वां तृण नामो च द्वालभ्यं भुवि ते महत् ॥३॥
अहो ते तृण माहात्म्यं विवादे पतिते त्वयि ।
सत्याय मस्तके न्यस्ते तत्क्षणं भज्यते कलिः ॥४॥
कृते पंचामृते भोज्ये ताम्बूले भक्षिते तृण ।
वक्त्रशुद्धिकरन्तु त्वं वरांगस्थिति तन्महत् ॥५॥
अहो ते तृण सौभाग्यं शर्कराभः समं ततः ।
अन्तरालिंग्यसे स्त्रीभिर्यथा सौभाग्यवान् नरः ॥६॥
तृणशक्तिरहोदर्भ--तृणझाटेन मन्त्रतः ।
दुष्टस्फोटकभूतादि दोषा यांति यतः क्षयं ॥७॥
छाया सद्मोपरिस्थस्त्वं दंतस्थं युधि जीवनम् ।
गो-जग्ध-मसि-दुग्धं तदुपकारि महत् तृण ॥८॥
विद्वद्गोष्टिविनोदेषु तृणाष्टकमचीकरत् ।
श्रीविक्रमपुरे रंगाद्गणिः समयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृत तृणाष्टकम् ।

(२) रजोष्टकम्

देवगुर्वादिन शेषां शीर्षच्चां स्थापयन्त्यमी ।
हस्तेन हस्तिनो हर्षादहो ते धूलि मान्यता ॥१॥
स्वस्ति श्रीमति लेखेपि यत्नतः प्रेषितेपि च ।
परं सिद्धिस्तनाधीना शक्तिस्ते रज ईदृशी ॥२॥
जगदाधारभूतेन जलदेन पुरस्कृताम् ।
वातेनोढां निरीक्ष्य त्वां घनाशा जायते नृणां ॥३॥
सर्वंसहा प्रभृतिश्चात्मर्द्यमानं पदैरधः ।
न कुप्यसि कदापि त्वं रजस्ते क्षांतिरुत्तमा ॥४॥
यस्या नाम पदाधस्थां त्वां लात्वा रविवासरे ।
मस्तके क्षिप्यते मंत्रात् सा स्त्री वश्या रजो नृणाम् ॥५॥
गालिदाने न रुङ् लज्जे यत्र स्वेच्छा कृतं सुखम् ।
रजः पर्व यतो जज्ञे तन्मान्यं कस्य नो रजः ॥६॥
रथ्यासु रममाणानां शिशुनां पांसुशालिनाम् ।
धूले त्वं स महर्घ्यापि श्रृङ्गारादतिरिच्यसे ॥७॥
अप्राप्यर्प्यनभीष्टापि सुलभापि पदे पदे ।
अहो ते धूलि माहात्म्यं[1] लक्ष्मीरित्यभिधीयसे ॥८॥
श्रीमद्विक्रम सद्द्रगे विद्वद्रोष्टिषु नोदितः ।
रजोष्टकमिदं चक्रे शीघ्रं समयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृत रजोष्टकम् ।

---

१ सौभाग्य

(२) उद्गच्छत्सूर्यबिम्बाष्टकम्

चतुर्यामेषु शीतार्चायामिनी कामिनी किमु ।
तापाय तपनोद्गच्छद्बिम्बमङ्गेष्टिकां व्यधात् ॥१॥
दिनश्रीधिकृता यांती रुष्टा रात्रि निशाचरी ।
वन्हिज्वालावलीमुञ्चतीव भानुप्रकाशतः ॥२॥
प्राचीदिग्प्रमदा चक्रे विशाले भालपट्टके ।
बालारुणरवेर्बिम्बं चारुसिन्दूरचन्द्रकम् ॥३॥
पश्यन्त्या वदनं प्राची पद्मिन्यां दर्पणेऽरुणः ।
प्रवालाधररागेण रविबिम्बमिव प्रगे ॥४॥
प्रतीच्याऽभिमुखं क्रीडोच्छालनाय नवाऽरुणः ।
प्राचीकन्याकरस्थः किं रक्तद्युतरत्नकंदुकः ॥५॥
जगद्ग्रसित्वा पापिष्ठः क्व गतोद्यांत राक्षसः ।
तं द्रष्टुमिति बालार्को दीपिका दिन भूभुजः ॥६॥
प्राचीदिग्नर्त्तकीव्योमवंशाग्रमधिरोहति ।
कृतरक्ताम्बराशीर्ष न्यस्तार्कस्वर्णकुम्भभृत् ॥७॥
त्वत्कीर्त्ति कान्तया दध्रे बालार्कस्तप्तगोलकः ।
दिव्याय स्वेच्छया भ्रान्त्या कुसतीत्वहृते नृप ॥८॥
रवेः प्रकाशं बिंबं चारक्तं दृष्ट्वा प्रगे रयात् ।
कौतुकादष्टकं चक्रे गणिसमयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृत उद्गच्छत्सूर्यबिम्बाष्टकम् ॥२॥

(४) समस्याऽष्टकम्

प्रभुस्नात्रकृते देवा नीयमानान् नभे घटान् ।
रौप्यान् दृष्ट्वा नराः प्रोचुः शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ १ ॥
रामया रममाणेन कामोद्दीपनमिच्छता ।
प्रोक्तं तच्चारु यद्येवं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ २ ॥
सर्वज्ञेन समादिष्टं सार्द्धद्वीपद्वयेध्रुवम् ।
द्वात्रिंशताधिकं भाति[1] शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ३ ॥
हस्त्यारोहशिरस्त्राणश्रेणिमालोक्य संगरे ।
पतितो विह्वलोऽवादीत् शतचन्द्र नभस्तलम् ॥ ४ ॥
दीपान् दीपालिकापर्वे कृतानुच्चैस्तरं निशि ।
वीक्ष्य विस्मयतो ज्ञानं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ५ ॥
भुक्तधत्तूरपूरत्वाद्भ्रान्तदृष्टिरितस्ततः ।
अपश्यत्कोऽपि सर्वत्र शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ६ ॥
दर्पणश्रेणिमालोक्य सौधाभ्रंलिहतोरणे ।
स्माह सुप्तोत्थितः कोपि शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ७ ॥
नभः प्रकाशवद्भाति यथाऽनेन खरांशुना ।
तथा सखि कदापि स्यात् शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ८ ॥
यत्र तत्र जलस्थाने दृश्यते जलचन्द्रमाः ।
तत्किं सखि संजातं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ६ ॥

१ इदं द्वात्रिंशदायुक्त

परस्परं बुधोल्लापे शतचन्द्रनभस्तलम् ।
समस्यामिति सम्पूर्णां चक्रे समयसुन्दरः ॥१०॥

इति समस्याष्टकम् ।

—:०:—

ग्रस्यते राहुणा नित्यमेक एकहि मत्प्रियः ।
सृष्टमासात्तदा श्रेष्ठं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१४॥
हीनाधिककलाभेदाद्विविधो दृश्यते विधुः ।
वर्त्तेत सुभगं तत्के शतचंद्रनभस्तलम् ॥१५॥
न पश्येत्पुण्यहीनो हि निधानं पुरतः स्थितम् ।
किमन्धः शतसूर्यं वा शतचंद्रनभस्तलम् ॥१६॥

[स्वयं लिखित अन्य प्रति में अधिक]

× × × × ×

नेमिस्नात्रांबुकल्लोलैः चणं मोरोस्तदाऽभवत् ।
रामबोधितसिंहेण शशशृङ्गे पयोनिधिः ॥३॥

× × × × ×

पृथ्वीकुक्षि भवा वयं बिलगृहास्त्वं चासिपृथ्वीपतिः ।
तस्माद्विज्ञपयाम इत्यनुदिनं संत्राशिनः शौण्डिकाः ॥
निर्नाथा इव नाथमन्तु रहिता मार्यामहे भिल्लकैः ।
तस्माद्राउलभीमभूपकृपयाऽस्मान् रक्ष रक्ष प्रभो ! ॥१॥

नास्माभिर्विदधे कदापि किमपि चेत्रादिविध्वंशनं ।
नो चौर्य्यं न च सार्थलुण्ठनमपि त्याज्यं पुनर्नेतरत् ॥
नीरक्षीरविवेचके नरपते रामावतारे त्वयि ।
ग्रीशामीटनमारणं किमिति नः पूत्कर्म हे शौण्डिकाः ॥२॥
प्रजायां नीनितो धर्मो धर्माद्राज्यसमुन्नति ।
ततस्त्वं वसुधाधीश ! नीतिधर्मं प्रपालय ॥३॥

× × × × ×

रघुवंशोद्भवत्वेन रामचन्द्र इवाद्भुतः ।
श्रीशाहे न्यायधर्माभ्यां राज्ये पालयसि प्रभो ! ॥३॥

× × × × ×

जय जयेति वदन्ति तवाशिप, शुकमयूरपिकप्रमुखाः प्रभो !
जगति जीवदयाप्रतिपालनात् यदिह जंतुगणाः सुखिनः कृताः ॥५॥
श्रीशाहे सूर्यदेवस्य पाणिनार्थं प्रयच्छतः ।
तव हस्तार्कयोगोयं सर्वसिद्धिकरोऽभवत् ॥६॥
सौम्यदृष्टिस्त्वं स्वामिन् क्रूराक्रान्तेपि चेद्भवेत् ।
तथापि सर्वकार्यस्य सिद्धिः साधयति स्फुटम् ॥७॥

× × × × ×

चतुर्मुखोपि नो ब्रह्मा जटाभृन्न च शङ्करः ।
श्रीधरो न च दाशार्हः स श्रीआदिजिनोऽवतात् ॥१॥
चतुरशीतिगणोपि यदीश्वरः, स्मरहरोपि च यत्पुरुषोत्तमः ।
विलसदेकमुखोपि भवान्तकृत्,तदतिचित्रमिदं प्रथमप्रभो ॥२॥

त्वद्यशःपुञ्जशुभ्रश्रियाः शुद्धया पश्चिमांभोधिनीरे निमज्जनमपि।
सम्प्रमाप्तुं निजं नीलिमानं प्रगे पूर्णिमेन्दुः प्रभोद्या तत्तुलम्।
मेरु धैर्य्यात् चमातः चितिरहमपि गाम्भीर्य्यतस्ते. यं ।
सूर्यो जिग्ये यथेह त्वमपि सुत तथा तेन वक्रश्रियाः (?) ॥
प्राकाहंर्मधेहि (?) दुःखादुदधिरिति विधु गर्जितैः प्रीणयत्युत् ।
प्रेचे यन्नोरत्नाय्यं विदितमिदमिमा पंचभिर्नैव दुःखाम् ॥४॥

× × × ×

आदित्यो[१] निजतेजसा सुवचसा चन्द्रोरि[२]दृष्ट्या कुजो[३] ।
ज्ञानाधिक्यवशाद् बुधो[४] गुरुरपि स्पष्टं सुतच्चोक्तितः[५] ॥
शुक्रो[६] विक्रमतः शनि[७] प्रकुपितो राहुश्च केतुर्ग्रहः ।
अप्यात्मा जिन·········सर्वे ग्रहात्मा चासि तत् (?) ॥१॥
- लक्ष्मी वाचि पदं विभक्तिरहितं किं तद्विशिष्टार्थकृत् ।
जेता रंजनमाह्वय प्रमुदिता नारायणं का गताः ॥
कः कंसं यमसद्मनि प्रहितवान् किं वष्टि शिष्टं नरः ।
के संत्यत्र तपोनिधौ गणधराः सौभाग्यभाग्याधिकाः ॥२॥

श्रीविक्रमसा मंवस्त वपशः।
मज्याभिधादि पद मन्मथ पत्तिजातसा।
हर्ष सुष्टुपदशंकररिप्रयोगाः ॥
द्वन्द्वं विधाय वद कोविद कीदृशास्ते।
के सन्ति सम्प्रति यया जनभाषमुख्याः ॥

इदं पद्यद्वयं पराभ्यर्थना कृत्वा दत्तमस्ति ।

——:o:——

सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी

गरूई[1] श्रीगुजरातदेश, सगलां मांहे दाखो;
धरम करम परधान[2], लोक मुख मीठु' भाखी।
सुखी रहइ सरीर, साग तो सखरा भावइ;
ऊँचा करइ आवास, लाख कोडि द्रव्य लगावइ।
गेहणी देह गहणै भरइ, हुँसी[3] लोकतणो हीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ, सत्यासीयउ इसड(इ[4]) पड्यउ अभागीयउ।१।

जोयउ टीपणउ जांण, साठि संवच्छरि साथइ;
गुराचार शनिचार, हुंता ते लीधा हाथइ।
कपूरचक्र पिण काढी, जांण ज्योतिपीए जोयउ;
आराधक थया अंध, खिजमति फल सगलउ खोयउ।
निपट किणइ जाण्यउ नहीं, खरो शास्त्र खोटो कीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीयउ, पड्यो अजांण्यउ[5] पापीयउ।२।

महियलि न हुवा मेह, हुवा तिहां थोडा हूआ;
खड्या पड्या रह्या खेत्र, कलंबी जोतरिया कूआ।
कदाचि निपनो कंथ, कोली ते लीधु' कापी;
घटा करी घनघोर, पिण चूठो नहीं पापी।
खलक लोक सहु खलभल्या, जीवइं किम जलमाहिरा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते क्रतूत सहू[6] ताहरा।३।

पाठ भेद:—१ रूडी, २ सुविवेक, ३ हौंसि, ४ असइ, ५ अचिंत्यो, ६ सहि

गद्दह गाइ नइ भैंइसि, ऊँट छाली नइ[7] एवड;
अम्हनइ ए आधार, तियां धणीयां नै[8] त्रेवड ।
चरिवा मूक्या[ ]च्यारि[9], निजीक निज नगरनी सीमइ;
खड अणा पिण खाइ, कदाचि ते जीवइ कीमइ ।
तेहवइ धाडि कोलीतणी, सगला लेइ[10] सामठा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया; तुं तो पच्यउ जठा तठा ।४।

लागी लुंटालूंट, भयै करि मारग भागा;
लतो न मूकइ लंठ, नारी नरनिं[11] करइ नागा ।
बइयर[12] झाले बंदि[13], मांटीनइ मुह कडा मारइ;
बंदीखानइ बंधि ऊन्हीं[14], घिसी उपरि झारइ ।
दोहिलउ दंड माथइ करी, भीख मंगावि भीलड़ा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, थारो कालो मुंह पग नीलड़ा।५।

भला हुंता भूपाल, पिता जिम पृथ्वी पालइ;
नगरलोक नर-नारी, नेहसु नजरि निहालइ ।
हाकिमनइ हुवो लोभ, धान ले पोतइ धारइ;
महामुंहगा करि मोल, देखि वेचइ दरबारइ ।
मसकीन लोक पामइ नहीं, लेतां धान[15] लागइ धका;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तइं कुमति दीधी तिका ।७।

---

७ ना, ८ नीआत्रेवडु, ९ चारि, १० लेगया, ११ नै, १२ बइरनि, १३ बंद, १४ उन्हां (उभी) थी (थइ), १५ धकना,

धान्यादि के भाव

सूँठि रूपइयै सेर, मुंग अढी सेर माठाः
साकर घी त्रिण सेर, गुणडाँ गुलमाहि माठा ।
चोखा गोहुं च्यार सेर, तूँअर तो न मिले तेही;
बहुला बाजरि बाड[16], अधिक ओछा हुवै एही ।
शालि दालि घृत घोल, जे नर जीमता सामठउः
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तइं खवराव्यो बाबठउ[17] ।७।

अध पा न लहै अन्न, भला नर थया भिखारी;
मूकी दीधउ मान, पेट पिण भरइ न भारी ।
पमाडीयाना[18] पांन, केइ बगरौ नइं कांटी;
खावै खेजड छोड, शालितूस सबला वांटी ।
अन्नकण[19] चुणइ के अइंठिमें, पीयइ अइंठि पुसली भरी;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, एह अवस्था तइं करी ।८।

मांटी मुंकी बइर[20], मुक्या बइरै पणि मांटी;
बेटे मुक्या बाप, चतुर देता जे चांटी ।
भाइ मुंकी भइण, भइणि पिण मूक्या भाइ;
अधिको व्हालो अन्न, गइ सहु कुटुम्ब सगाइ ।
घरबार मुकी माणस घणा, परदेशइ गया पाधरा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तेही[21] न राख्या आधरा ।९।

---

१६ पाड, १७ बाथठो, १८ पमाडिया, १९ धुण, २० बैरि (भार्या), २१ तइ इहां नय राया आधरा ।

आपणा वाल्हा अांत्र[२२], पञ्चा जे आपणां पेटा;
नाण्यो नेह लिगार, बापइ पिण वेच्या वेटा ।
लाधउ जतीए लाग, मूँडिनइं मांहइ लीधा;
हुंती जितरी[२३] हुंस, तीए तितराहिज कीधा ।
कूकीया[२४] घणुं श्रावक किता, तदि दीचा लाभ देखाडीया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तइं कुटुम्ब विछोहा पाडीया।१०।

खातां खूटा गरथ, पछइ घर वेच्या परगट;
वलि ग्रहणा दीया वेचि, किमही रहइ परनी कुलवट ।
पणि पसर्यो दुरभिच, कहउ केहीपर कीजइ;
आपइ न को उधारि, सत्त नही सगइ सुणीजइ[१] ।
लाजते[२] भीख लीधी नहीं, मुंहडइं[३] पग सूजी मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते हवाल[४] ताहरा हूआ ।११।

तइं हींदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या;
वणिके गइ विगत्ति, रांक करि लंगरि राल्या ।
दरसणी दुखिया कीध, जती जोगी सन्यासी;
जटाधारि जलधारि, प्रगट जे पवन अभ्यासी ।
अन्न मात्रइ ए [५]अपामेत, आगां सुंस भूखालूए[६];
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते तुझ पाप त्रिकालूए ।१२।

---

२२ अन्न, अन्नो. २३ जितांनि. २४ कूक्या.

१ सणेजइ, सणीजे. २ लाजैते. ३ मुंदइ. ४ तेह चाल ५ अणपामते. ६ भूपालूए.

दुखी थया दरसणी, भूख[7] आधी[8] न खमावइ;
श्रावक न करी सार, खिण[9] धीरज किम[10] थायइ।
चेले कीधी चाल, पूज्य परिग्रह परहउ छांडउ;
पुस्तक[11] पाना वेचि, जिम तिम ग्रम्हनइं जीवाडउ।
वस्त्र[12] पात्र वेची करी, केतौक तो काल काढीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तुनइ निपट[13] निरघाटीयउ।१३।

घर तेडी घणीवार, भगवानना पात्रा भरता।
भागा ते सहू भाव, निपट थया वहिरण निरता।
जिमता जडइ किमाड, कहै सवार छै केई;
घइ फेरा दस पांच, जती निठ[14] जायइं लेई।
आपइ दुखइ अणछूटतां, ते दूषण सहु तुझ तणउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, विहरण नहीं विगुचणउ[15]।१४।

पडिकमणउ पोसाल, करण को श्रावक नावइ;
देहरा सगला दीठ, गीत गंधर्व न गावइ।
शिष्य भणइ नहीं शास्त्र, मुख भूखइ मचकोडइ;
गुरुवंदण गइ रीति, छती प्रीत माणस छोडइ।
वखाण[1] खाण माठा पड्या गच्छ चौरासी एही गति;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, कांइ दीधी तइं ए कुमति।१५।

---

७ क्षुधा. ८ आधी. ९ थिर. १० नहीं. ११ उद्यत करउ विहार, मांड काइ बीजी मांडो. १२ पुस्तक पाना. १३ तीए. १४ नेढि. १५. विगोवणउ। १ पछइ माण.

पाटण अम्हदावाद, खरो[2] सूरत खंभाइत;
लाइक लखपति लोक, वणिक पिण हुँता विलाइत ।
जगड़ भीमो[3] शाह, उठ्यो को नाम उगारइ;
सबलउ सत्रूकार, मांडि महियलि साधारइ ।
केतेक दिवस दीधउ कीए, पिण थिर थोभ न को थयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तेतइं तूँ व्यापी गयउ ।१६।

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया;
सोजो वल्यउ सरीर, पछइं पाज मांहे पडिया ।
कालइ[4] कवए वलाइं, कुण उपाडइ किहां काठी;
तांणी नाल्या तेह, मांडि[5] थइ सगली माठी ।
दुरगंधि दशोदिशि ऊछली, मर्डा पड्या दीसइ मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, किण घरि न पड्या कुकुआ ।१७।

जैनाचार्य जो स्वर्गवासी हुए—

श्रीललितप्रभु सूरि, पाटण पूनमिया सुगुरु[6];
प्रभु लहुडीपोसाल, पूज्य बे पींपलिया-खरतर ।
गुजराती गुरु बेउ, वडउ जसवंत नइ केसव;
शालिवाडीयउ सूरि, कहूं किती पूरो हिसब ।
सिरदार घणेरा संहर्या, गीतारथ गिणती नहीं;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तुं हतियारउ सालो सही ।१८।

२ पूरो. ३ शाहनी जोडी. ४ बालक. ५ मांढ. ६ सद्गुरु ।

कवि की आप बीती कथा—

पछि आव्यउ मो पासि, तु आवतउ मइं दीठउ;
दुरबल कीधी देह, म करि कहाउ भोजन मीठउ।
दूध दही घृतघोल, निपट जिमिवा न दीधा;
शरीर गमाडि शक्ति, केई लंघण पणि कीधा।
धर्मध्यान अधिका धर्या, गुरु दत्त गुणणउ पिण गुणयउ;
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया,तुं नै हाक मारिनइ मइं हणयउ।१९।

पाटण थकी पांगुरी, इहां अहमदाबाद आयउ;
देखी माहरी देह, माच्छ गलबंध[1] गमायउ।
गरढउ गीतारत्थ, गच्छ चउरासी चावउ;
श्रावक न करी सार, पिण रहिस्यइ पछतावउ।
श्रावक दोष न को सही, मत जांणउ वांक माहरउ।
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते दूषण[2] सहु ताहरउ।२०।

सहायकर्त्ता-दानी श्रावक—

साबास शांतिदास, परवल अपणा गुरु पोष्या;
पात्रा भरि भरपूर, साधनइ घणा संतोष्या।
उसा पाणि आंणि, वस्त्र पिण भला वहराव्या;
सखर कीया लघु शिष्य, गच्छ पिण गरुयडि पाया।

१ बंध. २ करतूत.

सागर जिके साहमी हूया[३], सहु तेहनइ[४] संतोषिया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तैं सागरनै न संतापिया ।२१।

कुंयरजी करमसी रतन, वच्छराज ऊदो वखिपाइत;
जीवउ सुखीयो जाण, वलि वीरजी विख्याइत[५] ।
मनजी केसव मेल, साह सूरजी सवायउ;
पंचपरवी कीयउ पुन्न, मास च्यार पांच चलायउ ।
जिनसागर† समवाय जस, हाथीशाह‡ उद्यम हूयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तौं सीम साहमी न को हूअउ ।२२।

नागोरी नामजाद, शाहलटूको[६] सुणीयइ;
वस्यउ ते अहमदावाद, भलउ प्रतापसी भणीयइ ।
वडउ पुत्र वर्द्धमान, भलउ तिलोकसी भाई;
कीजइ पुन्य करतूत, इण परि एह वडाई ।
सांभले बात सत्यासीया, तुं म करे केहनइं आकुला;
प्रतापसीसाहरी पोलमइं, दीजई रोटी वाकुला ।२३।

पाटणमाहि प्रसिद्ध, मोटउ सांमलदास मारू;
जयतारणियउ जाण, विरा तिण वावर्यो वारू ।
तपा जतीनइ तेडि, अन्न बे टंक वहिराव्यउ;
सो-सवासो साधु सको, शाता सुख पायउ ।
दोहिला दुखीया दूबला, सत्रूकार दीयउ सदा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ताहरो बल न चाल्यउ तदा ।२४।

---

३ किया. ४ जिहनी ५ वि छ्याइत ६ सादुलटूककउ.
† सं० १६८६ में इनसे गच्छभेद हुआ । ‡ इनके आग्रह से कविवर ने १८ नात्रक सझाय रची है ।

श्रीमाली श्रावक, गच्छ कड़आमती गिरुयउ;
पूजा करइ प्रधान, चढावइ[1] चांपउ नै मरूयउ।
दानबुद्धि दातार, पञ्यउ ने दुरभिक्ष पेखी;
खोल्या धानभंडार, अन्न घइ अवसर देखी।
दरसणी सहूनइ अन्न घइ, थिराद्रे[2] थोभी लीया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तिहां तु नइ धका दीया।२५।

सत्यासीये संहार, कीयउ नरनारी केरउ;
आणदाण वरतावि, ढुंढ टंढेरउ फेरयउ।
महावीरथी मांडी, पड्या त्रिण वेला पापी;
बारवरपी दुःकाल, लोक लीधा संतापी।
पणि एकलइ एक तइं ते कीयउ, स्युं न र वरसी नापडा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तारे[3] लोके न लह्या लाकडा।२६।

अठ्यासीया आगमन—

इसइ प्रस्तावइं इंद्र, सभा सुधर्मा बइठउ;
दीठउ अवधि दुःकाल, पाप भरतमइं पइठउ।
गिरूड श्रीगुजराति, निपट दुखी करि नांखी;
सीदाणा सहु[4] साध, सही हुं न सकुं सांखी।
तुरत अठ्यासीयउ तेडिनइ, ए हुकम इंद्रइ कीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ अठ्यासीया, तुं मार काढि सत्यासीयउ।२७।

---

१ चाटइ २ थारै ३ वणु।

इंद्रनुं लेइ आदेश, आयउ अठ्यासीयउ इहां;
अहमदाबाद आवि, पूछइ कासिमपुरउ किहां।
मांहि वरसाव्या मेह, धान धरती निपजाव्यउ;
आणी नदी अथाग[१], प्रजा लोक धीरज पायउ।
गुल खांड चावल गोहुँ तणा, पोठ[२] आणि परगट[३] किया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीयउ, तुं परहो जा हिव पापीया।२८।

आव्या पोठी ऊँट, धान भरि यूँना गाडा;
भरचा खंभाइत भार, आंण्या इहां परठी भाडा।
सबल थयउ संग्राम, भिडतउ[४] रण माहे भागउ;
सत्यासीयउ सत्त छोडि, लालच करि चरणे लागउ।
घी तेल मूँग थाइस घणा, द्यौ मुझनै एतउ दूयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, कहइ पडि रहिस अधमूयउ।२६।

अठ्यासीयइ इहां[५] वेढि, सजी सत्यासीयइ सेती;
सत्यासीया सुणि वात, कहिहिक जाइस केती।
इंद्र तणउ ए खेत्र, भरत दक्षिण ए भणीयइ;
निरपराध नर नारि, हा हा पापी किम हणीयइ।
निंदा करइ गुरुनी निपट, दया दान मुकी दिया;
पापीया पाप पच्या पछी, मइ कतूत माहरा किया।३०।

---

१ अतार. २ पोढ. ३ परघलि. ४ ति रिण माहेवलिभागउ.
५ इहां बहिवेढ; हिवबेढि

सत्यासीयउ साहसी, ऊठि वलि सामउ[६] थावइ;
पञ्यउ न रहइ पापीयउ, धांन मुहगउ करि धावइ ।
अठ्यासीयउ अन्न[७] आंणि, करइ वलि सुंहगा कांई;
लागी[८] लत्थापत्थि, किस्युं थास्यइ हो सांइ ।
अन्न [९]पुण्यतणउ संचउ अधिक, लोक जिके करस्यइ लही;
'समयसुन्दर' साचउ कहइ, सुखी तिको थास्यइ सही ।३१।

सगलइ हुवउ सुगाल, अन्न[१०] चिहुँ दिसिथी आयउ;
आप आपणइ व्यापारी, सको अधिकारइ लायउ ।
बाजरी चउंला मउठ, के के धान सुंहगा कीधा;
सुंहगा-मुंहगा सर्व, लोक ते आणी लीधा ।
नर-नारी नूर वाध्यउ नगरि, चहल-बलाई चहुटइ थई ।
'समयसुँदर' कहइ अठ्यासीया, हिव चितनी चिंता गई ।३२।

मरगी नइ मंदवाडि, गया गुजरातथी नीसरि;
गयउ सोग संताप, घणो हरख हुयउ घरिघरि ।
गोरी गावइ गीत, वली विवाह मंडाणा;
लाडू खाजा लोक, खायइ थालीभर भांणा ।
शालि दालि घृत घोलसुं भला पेट काठा भर्या;
'समयसुंदर' कहइ अठ्यासीया,साध तउ अजे न सांभर्या ।३३।

६ उभउ. ७ इहां. ८ काइ लागी लछापछि स्युं. ९ पुत्र. १० धान ।

श्रावक कहइ सुगाल, सहु धान थया सुहगा;
दरसणी कहै दुकाल, अम्हे जाणां छां मुंहगा।
आदरसुं को अन्न, अजी आपै नही अम्हनैः
श्रावक पिता समान, तिण कहीछइ तुम्हनैं।
दया मया दिल धर्म धरी, श्रावक सार सहु करइ;
'समयसुंदर' कहै अठ्यासीया, धीरज तउ सहू को धरइ।३४।

अठ्यासी कहै एम, म करो तुम्ह चिंता मुनिवर;
करो क्रिया अनुष्ठान, तप जप संजम तत्पर।
वांचो सूत्र-सिद्धांत, भलउ धरम मारग भाखउ;
महावीरनो वेश, रीति रूडीपरि राखउ।
वखाण खाण थास्यै वली, श्रावक सार सहु करैं;
'समयसुंदर' कहै सत्यासीया, धीरज तउ सहु को धरैं।३५।

दुरभिख महादुकाल, वरस सत्यासीयउ बूरो;
दीठा घणा दुकाल, पणि एहवउ को न हूवो।
सत्यासीया-सरूप, दीठउ मइ तेहवो दाखयउ;
गया मूआ गइंद, रह्यौ भगवंत तौ राख्यउ।
रागद्वेष नहो को माहरइ, मइ ख्याल-विनोदइ ए कीयउ;
'समयसुंदर' कहइ सहु सुखी, करि कल्लोल आणंद करउ।३६।

——:०:——

[२] 'पंचश्रेष्ठि चौपाई' के दूसरे खंड की छठी ढाल में अकाल का इस प्रकार वर्णन किया है :—

तिण देसइ हिव एकदा रे, पापी पड्यउ दुकाल ।
बार बरस सीम बापड़ा रे, कीधो लोक कराल । १ ।
वली मत पडिज्यो एहवो दुकाल,
जिणैं बिछोह्या माबाप बाल, जिणैं भागा सबल भूपाल ।
खातां अन्न खूटी गया रे, कीजइ कवण प्रकार ।
भूख सगी नहो केहनी रे, पेट करइ पोकार । २ ।
सगपण तउ गिणैं को नही रे, मित्राइ गई भूल ।
को कदाचि मांगै कदी रे, तौ माथे पिडइ त्रिशूल । ३ ।
मांन मूकि वडे मांणसे रे, मांगवा मांडी भीख ।
तउ पिण को आपइ नहीं रे, दुखीए लीधी दीख । ४ ।
केई वईयर मूंकी गया रे, के मूँकी गया बाल ।
के मा-बाप मूँकी गया रे, कुण पडइ जंजाल । ५ ।
परदेसे गया पाधरा रे, सांभल्यउ जेथ सुकाल ।
मांणस संबल विण मूआ रे, मारग मांहि विचाल । ६ ।
बापे बेटा वेचिया रे, माटी वेची बयर ।
बयरे मांटी मूँकीया रे, अन्न न द्यइ ए वयर । ७ ।
गुखे बैठी गोरड़ी रे, वींजणे ढोलति वाय ।
पेटनै काजै पदमणी रे, जाचै घर घर जाय । ८ ।

जे पंचामृत जीमता रे, खाता द्राख अखोड ।
कांटी खायै कोरणी रे, के खेजडना छोड । ६ ।
जतीयांनै देई जीमता रे, ऊभा रहता आडि ।
ते तउ भाव तिहां रह्या रे, जीमता जड़े किमाडि । १० ।

दांन न द्यै के दीपता रे, सहु बैठा सत छांडि ।
भोख न द्यइ को भावसुं रे, द्यै तो दुख दिखाडि । ११ ।
देव न पूजे देहरै रे, पडिकमइ नही पोसाल ।
सिथल थया श्रावक सहू रे, जती पड्या जंजाल । १२ ।
रडवडता गलीए मूआ रे, मडा पड्या ठांम ठांम ।
गलिमांहे थइ गंदगी रे, द्यै कुण नांखण दांम । १३ ।
संवत सोल सत्यासीयां रे, ते दीठैं ए दीट ।
हिव परमेसर एहनइ रे, अलगां करे अदीठ । १४ ।
हाहाकार सबल हूओ रे, दीसै न को दातार ।
तिण वेला उठ्यौ तिहां रे, करवा काल उद्धार । १५ ।
अवसर देखो दीजियै रे, कीजै पर उपगार ।
लखमीनो लाहो लीजीयें रे, 'समयसुंदर' कहै सार । १६ ।

विशेषशतक ग्रन्थलेखन प्रशस्ति में इस दुष्काल का स्मरणोल्लेखः—

मुनिवसुषोडशवर्षे (१६८७) गूर्जरदेशे च महति दुःकाले ।
मृतकैरस्थिग्रामे जाते श्रीपत्तने नगरे ॥ १ ॥

भिक्षुभयात् कपाटे जटिते व्यवहारिभिर्भृशं बहुभिः ।
पुरुषैर्माने मुक्ते सीदति सति साधुवर्गेऽपि । २ ।
जाते च पंचरजतैर्धान्यमणे सकलवस्तुनि महर्घ्ये ।
परदेशगते लोके मुक्त्वा पितृमातृबन्धुजनान् । ३ ।
हाहाकारे जाते मारिकृतानेकलोकसंहारे ।
केनाप्यदृष्टपूर्वे निशि कोलिकलुंठिते नगरे । ४ ।
तस्मिन् समयेऽस्माभिः केनापि च हेतुना च तिष्ठद्भिः ।
श्रीसमयसुंदरोपाध्यायैर्लिखिता च प्रतिरेषा । ५ ।
मुनिमेघविजयशिष्यो गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्ती च ।
तस्मै पाठनपूर्वं दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा । ६ ।
प्रस्तावोचितमेतत्तु श्लोकषट्कं मया कृतम् ।
वाचनीयं विनोदेन गुणग्राहिविदांवरैः । ७ ।

—:o:—

प्रस्ताव सवैया छत्तीसी

परमेसर परमेसर सहु कहइ, पणि परमेसर दीठउ किणइ;
तेहनइ आघउ तेडि पूछि जइ, परमेसर दीठउ हुयइ जिणइ।
अलख अगोचर लख्यउ न जायइ, निराकार निरंजन पणइ;
'समयसुन्दर' कहइ जे जोगीसर, परमेसर दीठउ छइ तिणइं । १ ।
के कहइं कृष्ण के कहइ ईसर, के कहइं ब्रह्मा किया जिण वेद;
के कहइं अल्ला महज कहइ के, परमेसर जूदे बहु भेद

जगति सृष्टि करता उपगारी, संहरता पणि नाणइ खेद;
समयसुन्दर कहइ हुँ तो मानुं, करम एक करता ध्रू वेद।२।
पंखी उडि भमइ आकासइ, मीन कउ मारग कुंण ग्रहई;
तारा मंडल कुण गिणइ कहउ, माथइ करि कुण मेरु वहइ।
वेड़ी विण बाहां करि दरियउ, कुंण तरइ भाखी कुण कहइ;
समयसुन्दर कहइ भेद भली परि, परमेसर कउ कुण लहइ।३।
वरण अढार छत्रीस पवन छइ, सहुनइं गुरु निगुरउ नहि कोइ;
पणि आरंभ करइ अगन्यांनी, जीव दया विण धरम न होइ।
गुरु तउ ते जे सुद्ध परूपइं पग मुंकइ जइणा सुं जोइ;
आप तरइं अवरां नइ तारइं, समयसुन्दर कहइ सद्गुरु सोइ।४।
कष्ट करइ पंचागनि साधइ, जाग होम करइ बहु कर्म;
जाणइं अम्मे मुगति पणि जास्यां, ए तउ सगलउ खोटउ भर्म।
आगन्या सहित दया पाली जइ, सगलां धर्मनउ एहिज मर्म;
समयसुदर कहइ दुरगति पडतां यइ आडी वांहि श्रीजिन धर्म।५।
गच्छ चउरासी दीसइ गिरुया पिण ते (हुना) भिन्न २ आचार;
कहउ केहा गच्छनी कीजइ विधि, नाणी विण न हुयइं निरधार।
आंप आंपणा गच्छनी करउ किरिया, पणि म करो परतात लगार;
समयसुंदर कहइ हुँ इम जाणुं, इण वात मांहइं गणउ सकार।६।
चंद्रगुपत राजा लह्या सुहणा, तिहां चंद्र दीठउ चालणी समांय;
ते तउ वात साची दीसइ छइ भद्रबाहू सामी नउ न्यांन।
जिण सासण मइ गच्छ गछांतर, हुया घणा वली हुस्यइ तोफान;
समयसुंदर कहै आंप आंपणउ, गच्छ काठउ ग्रह्यउ जाणि निधान।७।

कुण जाणइ साचउ कुण भूठउ, पूछ्यउ नहीं परमेसर पास;
सूत्र सिद्धांत अक्षर तउ एहीज, पणि जू जूया थया वचन विलास।
रागद्वेष किया अरथ मरोड्या किणही कि अरथ न मीछ्या तास;
समयसुंदर कहइ ए परमारथ सहु को जोज्यो हीयइ विमास। ८
जे भ्रम करिस्यइ ते निस्तरिस्यइ पणि पारकी को मकरउ वात,
आंपणी करणी पारि उतरणी, पुण्य पाप आवस्यइ संघात।
साची भूठी मन सरदहणा दीपावइ सहु को दिन रात,
समयसुंदर कहइ वीतराग वचनइं मिलइ तिका जइ साची वात। ९।
संका कंखा सांसउ मकरउ कियउ धरम सहु धुडि मिलइ;
सउकि मात साचउ दीयउ ओखध पणि सांसइं सुत देह गलइ।
अमृत जाणि पांणी पणि पीधइ सर्प तणउ विषवेगि टलइ;
समयसुंदर कहइ आस्ता आंणी धर्म कर्म कीजइ ते फलइ ।१०।
तपां कहइं डरियानही पहिली खरतर कहइ पडि कमियइं पछइ,
मुंहपति आंचलिया गुरु कडुआ, लुका कहइ जिन प्रतिमा न छइ।
स्त्रीनइं मुगति न मांनइ ढुंढक एहवा बोल घणा ही अछइ;
पणि समयसुंदर कहै सांसउ भांजइ, जउ को केवली पासइ गछइ।११।
खरतर तपा आंचलिया पासचंद आगमीया पुंनमिया सार;
कडुयामती दिगंबर लुका चउरासी गछ अनेक प्रकार।
आंप आंपणउ गछ¹ थापइ भगला खरउं ठोकि आंणी अहंकार;
समयसुंदर कहइ कह्या ज करउ पणि, भगवंत भाखइ ते श्रीकार।१२।
मोटउ गछ अम्हारउ केरउ माणस नरसइं घणां वखाणि;
गर्व म करि रे मूढ गमारा समय समय अणंती हांणि।

---

१ मत

सूत्र मांहि एक दसवैकालिक ज¹ती मांहि दुपसह सूरि जांणि।
समयसुंदर कहइ कुण जांणइ रे कहउ गछ रहिस्यइ परमांणि।१३।
गछनायक हुयइं अति गिरुया भारी खमानइ अति गंभीर;
चालइं आप भलइं आचारइं तउ को गिणइ हटक नइं हीर।
फाडि ओड़ि नइ गछ गमाड़इ दिन नइ राति रहइं दिलगीर;
समयसुंदर कहइ ते गछनायक, तरकस मांहे थोथा तीर।१४।
आसा तना सूतरनी उपजइ कथक अप्रीति ते कही नी जात²;
परमारथ एक आंपन प्रीछइं वीजानइं पणि करइं व्याघात।
रली रोहिणी विकथा करती, वारंता करनी परतात;
समयसुंदर कहइ सहुको सुणिज्यो वखांण मांहि मत करिज्यो वात १५
कोलो करावउ मुंड मुंडावउ, जटा धरउ को नगन रहउ;
को तप्प तपउ पंचागनि साधउ कासी करवत कष्ट सहउ।
को भिक्षा मांगउ भस्म लगावउ मौन रहउ भावइ³ कृष्ण कहउ;
समयसुंदर कहइ मन⁴ सुद्धि पाखइ, मुगति सुख किमही न लहउ।१६।
आव्यां ऊठि ऊभी थइयइं दीजइ आदर मांन घणां;
भली परिं भोजन पाणि दीजइं, कीजइं पाय कमल नमणां।
कुटंब कारिमां लह्यां अनंता, स्वारथ नां सहु प्रेम पणां,
समयसुदर कहइ सही करि जाणउ सगपण ते जे साहमी तणां।१७।
काम काज विणजइं व्यापारइं, सारउ दिन सगलइ हांढ़िवउ;
धरम नियम विहांथी थायइ थायइ⁵ पणि जउ मन आंढिवउं।

१ साध एक. २ ग्रात. ३ को. ४ भाव विनातउ. ५ ऊनइ थायइ।

जे ध्रम करिस्यइं ते निस्तरस्यइं, केहनउ पाड़ काँई चाढ़िवउ;
समयसुंदर कहइ जे[1] ध्रम दीजइ ते चलतइ मांहि दांडउ[2] काढ़िवउ।१८
च्याव्या विना खेत्र किम लुणियइ, खाधां पाखइ भूख न जाइ;
आंप मुयां विण सरग न जइयइं, वाते पापड़ किमही न थाइ।
साधु साधवी श्रावक[3] श्राविका एतउ खेत्र सुपात्र कहाइ;
समयसुंदर कहइ तउ सुख लहियइ, जउ घर सारउ दत्त दिवाइ।१६।
मस्तिकि मुगट छत्र नइं चामर वइंसउ सिंहासन नइं रोकि;
आण दांण वरतावइ अपणी आइ नमइ नर नारी लोक।
राजरिद्धि रमणी घरि परिघल जे जोयइ ते सगला थोक;
पणि समयसुंदर कहइ जउ ध्रम न करइ,तउ ते पाम्युं सगलुं फोक।२०।
सीस फूल स मथउ नकफूली, कानइ कुन्डल हीयइ हार;
भालइं तिलक भली कटि मेखल, बांहे चूड़ि पुणछिया सार।
दिव्य रूप देखंती अपछर, पगि नेउर झांझर झणकार;
पणि समयसुंदर कहइ जउ ध्रम न करइ,तउ भार भूत सगलौ सिणगार
मांस म खायउ मदिरा म पीयउ म करउ भांगि नइ घुंटाघुंटि;
चोरी म करउ वाट म पाड़उ, म करो झांझी झूठा झूठि।
पर स्त्री मत भोगवउ पापी, म करउ लोक नइ लूंटा लूंटि;
समयसुंदर कहइ नरगइ पड़िस्यइ वधारा जिम कूटा कूटि।२२।
मनुष्य तणुं आउखुं जायइं धरम विना वैइसी रह्या केम;
जम नीसाण चडत रा वरजइं पहुर पहुर तिहां किहां थी खेम।

---

१ ज धरम। २ दांड। ३ साहमी साहमिणी।

वागी घड़ी ते पाछी नावइं करउ धरम तप जप नइं नेम;
समयसुंदर कहइ सहु को सुणिज्यो,घड़ियालउ बोलइ छइ एम ।२३।
धरम अतूत करिउ ते करिज्यो, ताणी तूँणी नइं ततकाल;
मन परिणाम अनित्य आउखु, पापी जीव पड़इ जंजाल ।
मत विलंब करउ श्रम करता आवी पड़इ अंतराय विचाल;
समयसुंदर कहइ सहु को समझउ, घड़ी मांहि वाजइ घड़ीयाल ।२४।
केहनइं पुत्र अस्त्री नहि केहनइं केहनइ अन्न तरणी नहि चूणि;
केहनइं रोग सोग घर केहनइं,केहनइं गरथनी ताणां तूँणि ।
के विधवा के विरहिणी दीसइ, माथइं भार वहइं के गूँणि;
समयसुंदर कहइं ससार मांहइं, कहउ नइ आज सुखी छइ कूँणी।२५।
बेटा बेटी बइयरि भाई बहिनी तणउ नहि क्लेस लगार;
विणज व्यापार मसाकति का, नहि उपाड़िवउ माथइ नहि भार ।
सखर उपासरै बइसी रहिवउं, नमणि करइं मोटा नर नारि;
समयसुंदर कहइ जउ जाणइ तउ आज सुखी कोइक अणगार।२६।
सूरिज कोढ़ी चंद कलंकी मंगल तणी उटंगल रूक्ख;
बुध तउ जड विरोध गुरु सुं नास्तिक गुरु तिहां केहउ सुक्ख ।
सनि पांगलउ पितानइं वयरी राहु देह पराइ धरइं मुक्ख;
समयसुंदर कहइ सुक्र कहइ हुँ काणउ पणि पंचसु नहिं दुक्ख ।२७।
महावीर नइं काने खीला, गोवालिए ठोक्या कहिवाय;
द्वारिका दाह पाणी सिर आण्यउ, चंडाल नइं घरि हरिचंद राय।
लखमण राम पाडव वनवासि, रावण वध लंका लूँटाय;
समयसुंदर कहइ कहउ ते कहु पणि,करम तणी गति कही न जाय।२८।

वखत मांहि लिख्यउ ते लहियइ, निश्चय वात हुयइ हुणहार;
एक कहइं काछड़ बांधीनइं, उद्यम कीजइ अनेक प्रकार।
नीखण करमां वाद करंतां, इम झगड़उ भागउ पहुतौ दरबारि;
समयसुंदर कहइ बेऊ मानउं, निश्चय मारग नइं व्यवहार।२६।
विषम काल अरउ पणि पांचमउ, कृष्ण पाखी पणि जीव घणा;
मत चउरासी गच्छ मंडाणा ते पणि ताणा ताणि तणा।
संघयण नहीं मनो बल माठा, चरित्र ऊपरि किहां चालणा;
पणि समयसुंदर कहइ खप तउ कीजइं पंचाचार पछइ पालणा।३०।
आप वखाणइं पर नइ निंदइ, ते तउ अधम कह्या नर नारि;
सहु को भलउ पणि हुं कांई, नहीं इम बोलइ तेहनइं बलिहारि।
गुण लीजइ अवगुण गाडीजइ समकित जू ए लक्षण सारि;
समयसुंदर कहइ इण अधिकारइं दृष्टांत कह्यो श्रीकृष्णमुरारि।३१।
देवतउ अरिहंत गुरु सुसाधनइं केवलि भाषित सूधउ धर्म्म;
सूधुं सरदहियइ ते समकित जिनसासन नु एहीज मर्म्म।
सात आठ भव माहइं सीझइ संजम सुं मत आंणउ भर्म्म;
समयसुंदर कहइ सर्व धर्म नउ, मूल एक समकित सुभकर्म्म।३२।
अपणी करणी पारि उतरणी पारकी वात मइ कांइ पड़उ;
पूठि मांस खाउ परनिंदा लोकां सेती कांइ लड़उ।
(निंदा म करौ कोइ केहनी तात पराई मैं मत पड़उ)
निंदक नर चंडाल सरीखउ, एहनइ मत कोई आभड़उ;
समयसुंदर कहइ निंदक नर नइं नरक मांहि वाजिस्यइ दड़उ।३३।
भूठ बोलइ ते नरकइं जायइं पड़इ तिहां जई मोटी खाड;

चाड़ चुगल नइं राजा रूठउ, जीभ छेदि द्यइ डांभ निलाड़ि।
झूठानउ वेसास को न करइ बाहिर काढ़िनइं जड़इ कंवाड़;
समयसुंदर कहइ झूठा माणस नइ सहु को कहइ ए महा लबाड़ ।३४।

ए संसार असार जांणिनइं छोड़ी दीधउ सगलउ रज्ज;
पंच महाव्रत पालइ सुधा सील वरत पणि धरइ सलज्ज।
तप जप किरिया करइ उतकृष्टी एहवा पिण केइक छइ अज्ज;
समयसुन्दर कहै मइं तउ न पलइ, पणि हुँ छुं तेहना पगनी रज्ज ।३५।

खाधूं पीधूं लीधूं दीधूं वसुधा मांहि वधारयउ वांन।
गुरु प्रसादि साता सुख पायउ जिण चंद सूरि ते जुगपरधान।
सकलचंद गुरुसांनिधि कीधी सत्यासियइ तन थयउ ज्यांन;
समयसुन्दर कहइ हिवहुँ[1] करिस्युं उत्कृष्टी करणी धरम ध्यान ।३६।

संवत सोलनेउया वरषें श्री खंभाइत नयर मझारि;
कीया सवाया ख्याल विनोदइं सुख मंडण श्रवणे सुखकारि।
साचउ एक धरम भगवंत नउ दुरगति पड़तां द्यइ आधार;
समयसुन्दर कहइ जैन धरम जिहां तिहां हइज्यो माह अवतार ।३७।

[संशोधिता प्रतिरियं पत्र ४ स्वयं कविलिखिता:—

इति प्रस्ताव सवायाछत्रीसी समाप्ता । सं० १६४८ वर्षे भाद्रवद सुदि २ दिने । श्रीअहमदावादपार्श्ववर्त्ति श्रीअहम्मदपुरे श्रीपासचंदावाश्रये चतुर्मास्यां स्थितैः श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः स्वपरार्थं लिखिता । शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ।]

---

१ हिव तुं रे मन करि संतोष नइ धरि धर्मध्यान।

क्षमा छत्तीसी

आदर जीव क्षमा गुण आदर, म करि राग नइ द्वेप जी।
समताये शिव सुख पामीजे, क्रोधे कुगति विशेप जी। आ.। १।
समता संयम सार सुणीजे, कल्पसूत्र नी साख जी।
क्रोध पूर्व कोडि चारित वाले, भगवंत इण परि भाख जी। आ.। २।
कुण कुण जीव तर्या उपशम थी, सांभल तूँ दृष्टांत जी।
कुण कुण जीव भम्या भव मांहे, क्रोध तणइ विरतंत जी। आ.। ३।
सोमल ससरे सीस प्रजाल्यउ, बांधी माटी नी पाल जी।
गज सुकुमाल क्षमा मन धरतउ, मुगति गयउ ततकाल जी। आ.। ४।
कुलवालुओ साधु कहातउ, कीधो क्रोध अपार जी।
कोणिक नी वेश्या वसि पड़ियउ, रड़वड़ियउ संसार जी। आ.। ५।
सोवनकार करी अति वेदन, वाध्र सुं वींटयुं सीस जी।
मेतारज मुनि मुगते पहुँता, उपशम एह जगीश जी। आ.। ६।
कुरुड़ अकुरुड़ बे साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी।
क्रोध करी कुगते ते पहुँता, जन्म गमायो आल जी। आ.। ७।
करम खपावी मुगते पहुँता, खंधकसूरि ना सीस जी।
पालक पापीए घाणी पील्या, नाणी मन मां रीस जी। आ.। ८।
अच्चंकारी नारि अच्चंकी, तोड्यो पियु सुं नेह जी।
बब्बरकूल सह्या दुख बहुला, क्रोध तणा फल एह जी। आ.। ९।
वाघणे सरव सरीर विलूर्यो, ततखिण छोड्या प्राण जी।
साधु सुकोशल शिवसुख पाम्या, एह क्षमा ना जाण जी। आ.।१०।

कुण चंडाल कहीजइ विहुँ मइं, निरति नहीं कहइ देव जी।
ऋषि चडाल कहीजइ विढतो, टालइ वेढ नी टेव जी। आ.।११।
सातमी नरक गयउ ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आंख जी।
क्रोध तणा फल कडुआ जाणी, राग द्वेष द्यो नांखजी। आ.।१२।
खंधक ऋषि नी खाल उतारी, सह्यउ परिसह जेण जी।
गरभावास ना दुख थी छूट्यउ, सबल चमा गुण तेण जी। आ.।१३।
क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अगनिकुमार जी।
दंडक नृप नउ देश प्रजाल्यउ, भमसे भवह मझार जी। आ.।१४।
चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी।
चमा करंता केवल पाम्यउ, नव दीक्षित अणगार जी। आ.।१५।
पांच वार ऋषि नइं संताप्यउ, आणी मन मां द्वेष जी।
पंच भव सीम दह्यो नंदनादिक, क्रोध तणा फल देख जी। आ.।१६।
सागरचंद नउ सीस प्रजाली, निशि नभसेन नरिंद जी।
समतां भाव धरी सुरलोके, पहुँतो परमानंद जी। आ.।१७।
चंदणा गुरुणीए घणी निभ्रन्छी, धिक धिक तुझ आचार जी।
मृगावती केवल सिरी पामी, एह चमा अधिकार जी। आ.।१८।
सांब प्रद्युम्न कुमार संताप्यउ, कृष्ण द्विपायन साह जी।
क्रोध करी तप नउ फल हार्यउ, कीधउ द्वारिका दाह जी। आ.।१६।
भरत नइ मारण मूठि उपाड़ी, बाहूबलि बलवंत जी।
उपशम रस मन मांहे आणी, संयम ले मतिमंत जी। आ.।२०।
काउसग्ग मइं चढियउ अति कोपे, प्रसन्नचंद्र रिषिराय जी।
सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कडुया तेणे कषाय जी। आ.।२१।

आहार मांहि क्रोधे रिपि थूक्यउ, आएयउ अमृत भाव जी।
कूरगड्डए केवल पाम्यउ, क्षमा तणइ परभाव जी। आ.।२२।
पार्श्वनाथ नइ उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठ जी।
नरक तिर्यंच तणा दुख लाधां,क्रोध तणा फल दीठ जी। आ.।२३।
क्षमावंत दमदंत मुनीसर, वन मां रह्यउ काउसग्ग जी।
कौरव कटक हएयउ इंटाले, त्रोड्यउ करम ना वग्ग जी। आ.।२४।
सज्यापालक काने तरुत्र्यो, नाम्यो क्रोध उदीर जी।
निहुं काने खीला ठोकणा, नवि छूटा महावीर जी। आ.।२५।
चार हत्या नो कारक हुंतो, दृढ प्रहारी अतिरेक जी।
क्षमा करी नइ मुगति पहुंता, उपसर्ग सही अनेक जी। आ.।२६।
पहुर मांहि उपजंतो हारयो, क्रोधे केवल नाण जी।
देखो श्री दमसार मुनीसर, सूत्र गएयो उट्ठाण जी। आ.।२७।
सिंह गुफा वासी ऋषि कीधउ,थूलिभद्र उपर कोप जी।
वेश्या वचने गयउ नेपाले, कीधउ संजम लोप जी। आ.।२८।
चंद्रावतंशक काउसग्ग रहियउ, क्षमा तणउ भंडार जी।
दासी तेल भरयउ निमि दीवउ,सुर पदवी लहि सार जी। आ.।२६।
एम अनेक तरया त्रिभुवन मे, क्षमा गुणे भवि जीव जी।
क्रोध करी कुगते ते पहुंता, पाडंता मुख रीव जी। आ.।३०।
विष हलाहल कहियइ विरुयउ, ते मारइ इक वार जी।
पण कषाय अनंती वेला, आपइ मरण अपार जी। आ।३१।
क्रोध करंता तप जप कीधा, न पडइ कांइ ठाम जी।
आप तपे पर नइ संतापइ, क्रोध सु के हो काम जी। आ.।३२।

चमा करंता खरच न लागइ, भांगे कोड़ कलेस जी ।
अरिहंत देव आराधक थावइ, व्यापइ सुयश प्रदेस जी। आ.।३३।
नगर मांहि नागोर नगीनउ, जिहां जिनवर प्रासाद जी।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया, धर्म तणइ परसाद जी। आ.।३४।
चमा छत्तीसी खांते कीधी, आतमा पर उपगार जी ।
सांभलतां श्रावक पण समज्या, उपसम धरयउ अपार जी। आ.।३५।
युगप्रधान जिणचंद सूरीश्वर, सकलचंद तसु सीस जी ।
समयसुंदर तसु शिष्य भणइ इम, चतुर्विध संघ जगीशजी। आ.।३६।

——:०:——

कर्म छत्तीसी

करम थी को छूटइ नहीं प्राणी,
कर्म सबल दुख खाण जी ।
कर्म तणइ वस जीव पड़्या सहु,
कर्म करइ ते प्रमाण जी ।क०। १ ।
तीर्थंकर चक्रवर्त्ति अतुल बल,
वासुदेव बलदेव जी ।
ते पणि कर्म विटंब्या कहिये,
कर्म सबल नित मेव जी ।क०। २ ।
मुक्ति भणी उठ्या जे मुनिवर,
तेह तणा कहुँ नाम जी ।

कर्म विपाक घणा अति कडुआ,
धर्म करो अभिराम जी ।क०। ३ ।
कुण कुण जीव विटंब्या कर्मे,
तेह तणा कहुँ नाम जी ।
कर्म विपाक घणा अति कडुआ,
धर्म करो अभिराम जी ।क०। ४ ।
आदीश्वर आहार न पाम्यउ,
वर्ष सीम कहिवाय जी ।
खातां पीतां दान देवतां,
मत को करउ अंतराय जी ।क०। ५ ।
मल्लिनाथ तीर्थंकर लाधउ,
स्त्री तणउ अवतार जी ।
तप करतां माया तिण कीधी,
करमे न गिणी कार जी ।क०। ६ ।
गोसाले संगम गोवाले,
कीधा उपसर्ग घोर जी ।
महावीर नइ चीस पड़ावी,
कर्म सु केहो जोर जी ।क०। ७ ।
साठ सहस सुत नो समकाले,
लागो सबलो दुख जी ।
सगर राय थयो मूर्छागत,
कर्म न सांसे सुख जी ।क०। ८ ।

वलि सुभूम अति सुख भोगवतो,
छः खंड लील विलास जी ।
सातमी नरक मांहे ले नांख्यउ,
कर्म नउ किसउ विसास जी ।क०।६।

ब्रह्मदत्त नइ आंधउ कीधो,
दीठा दुख अपार जी ।
कुरु मती कुरु मती खड्यो पुकारे,
सातमी नरक मझार जी ।क०।१०।

इंण वखाण्यो रूप अनोपम,
ते विणस्यो तत्काल जी ।
सात से वरस सही वहु वेदन,
सनत्कुमार कराल जी ।क०।११।

कृष्णे कोण अवस्था पामी,
दीठउ द्वारिका दाह जी ।
माता पिता पण काढी न सक्या,
आप रह्यउ वन मांह जी ।क०।१२।

राणउ रावण सबल कहातो,
नवग्रह कीधउ दास जी ।
लक्ष्मण लंका गढ लूंटायो,
दस सिर छेद्या तास जी ।क०।१३।

दसरथ राय दियो देसवटउ,
रांम रह्यउ वनवास जी ।
वलि वियोग पड्यउ सीतानउ,
आठे पहर उदास जी ।क.।१४।

चिर प्रतिपाल्यउ चारित छोड़ी,
लीधो बांधव राज जी ।
कंडरीक नइ कर्म विटंब्यउ,
कोइ न सर्यउ काज जी ।क.।१५।

कोणिक कठ पंजर मंइ दीधउ,
श्रेणिक आपणो वाप जी ।
नरग गयउ नाड़ी मारंतउ,
प्रगट्यउ हिंसा पाप जी ।क।१६।

जसु अठार मुकुट बद्ध राजा,
सेव करइ कर जोड़ जी ।
कोणिक थी बीहतउ राय चेड़उ,
कूप पड्यउ वल छोड़ जी ।क.।१७।

लुब्धो मुंज मृणालवती सुं,
उज्जैनी नउ राय जी ।
भीख मंगावी खली दीधर,
कर्णाट राय कहाय जी ।क.।१८।

वाचना पांचसे साधु ने देतो,
योगी वटे थयो गृद्ध जी ।
अनारज देशे सुमंगल उपनो,
जोगी वड़े सम्नद्ध जी । क.।१६।

कृष्ण पिता नइ गुरु नेमीश्वर,
द्वारिका ऋद्धि समृद्ध जी ।
ढंढण ऋषि तिहां आहार न पामइ,
पूर्व कर्म प्रसिद्ध जी । क.।२०।

आर्द्र कुमार महंत मुनीसर,
वृत लीधउ वैराग जी ।
श्रीमती नारि संघाते लुब्धउ,
एह करम विपाक जी । क.।२१।

सेलग नाम आचारज मोटउ,
राज पिण्ड थयउ गृद्ध जी ।
मद्य पान करी रहे सूतउ,
नहीं पड़िकमणा सुद्धि जी । क.।२२।

कुवलप्रभ उत्सूत्र थकी थयउ,
सावद्याचारिज जी ।
तीर्थंकर दल मेलि गमाड़्या,
एह देखउ अचरिज जी । क.।२३।

नंदिषेण श्रेणिक नउ बेटउ,
महावीर नउ शिष्य जी ।
बार बरस वेश्या सुं लुब्धउ,
कर्म नो वात अलद्य जी ।क.।२४।

भगवंत नउ भाणेज जँवाई,
वीर सुं कीधी वेढि जी ।
तीर्थंकर ना वचन उथाप्या,
हुयउ जमालि सुर ढेढ जी ।क.।२५।

रजा साधवी रोग ऊपनो,
त्रिणठो कोढ सरीर जी ।
भव अनंत भमी दुख सहती,
दोष दिखाड़यउ नीरि जी ।क.।२६।

सील सन्नाह घणु समझावी,
तोहि न मूक्यां साल जी ।
रूपी राय रुली भव मांहे,
भंडै घणु हवाल जी ।क.।२७।

लख भव रुली वलि लखमणा,
कुवचन बोल्या एम जी ।
तीर्थंकर परपीड़ न जाणी,
मैथुन वारयउ केम जी ।क.।२८।

मुइ जाणी मूकी वन मांहे,
सुकुमालिका सरूप जी ।
सार्थवाह घर घरणी कीधी,
कर्म नउ अकल सरूप जी ।क.।२६।

रोहिणी साधु भणी वहरायो,
कडुओ तूंबो तेडि जी ।
भव अनंत भमी चउ गति मइं,
करम न मूँके केडि जी ।क.।३०।

इम मृगांकलेखा मृगावती,
सतानीक नी नार जी ।
कष्ट पड़ी कमला रति सुंदरी,
कहता न आवइ पार जी ।क.।३१।

कर्म विपाक सुणी इम कडुआ,
जीव करइ जिन धर्म जी ।
जीव अछइ करमे तूं जीतो, .
पिण हिव जीपि तूं कर्म जी ।क.।३२।

श्री मुलतान नगर मूलनायक,
पार्श्वनाथ जिन जोय जी ।
वासुपूज्य श्री सुमति प्रसादे,
लोक सुखी सहु कोय जी ।क.।३३।

श्री जिनचंद्रसूरि जिनसिंहसूरि,
गच्छपति गुण भरपूर जी ।
सिंधी जेसलमेरी श्रावक,
खरतर गच्छ पडूर जी । क.।३४।
सकलचंद सदगुरु सुपसाये,
सोलह सइ अड़सट्ठ जी ।
करम छत्रीसी ए मइं कीधी,
माह तणी सुदी छट्ठ जी । क.।३५।
करम छत्तीसी काने सुणि नइ,
करजो व्रत पच्चखाण जी ।
समयसुंदर कहइ सिव सुख लहिस्यउ,
धर्म तणे परमाण जी । क.।३६।

—०)※(०—

पुण्य छत्तीसी

पुण्य तणा फल परतिख देखो,
करो पुण्य सहु कोय जी ।
पुण्य करंतां पाप पुलावे,
जीव सुखी जग होय जी ॥ पु०॥ १ ॥
अभयदान सुपात्र अनोपम,
वलि अनुकंपा दान जी ।

साधु श्रावक धर्म तीरथ यात्रा,
शील धर्म तप ध्यान जी ॥ पु०॥ २ ॥
सामायिक पोपह पड़िकमणो,
देव पूजा गुरु सेव जी ।
पुण्य तणा ए भेद परूप्या,
अरिहंत वीतराग देव जी ॥ पु०॥ ३ ॥
सरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरव भव परसिद्ध जी ।
शांतिनाथ तीर्थंकर पदवी,
पाम्या चक्रवर्त्ती रिद्ध जी ॥ पु०॥ ४ ॥
गज भवे ससलउ जीव उगार्‌यो,
अधिक दया मन आणिजी ।
मेघ कुमार हुयो महा भोगी,
श्रेणिक पुत्र सुजाण जी ॥ पु०॥ ५ ॥
साधु तणउ उपदेश सुणी नइ,
मूक्यउ मछली जाल जी ।
नलिनी गुल्म विमान थकी थयो,
अयवंती सुकमाल जी ॥ पु०॥ ६ ॥
पंच मच्छ राख्या मालि भवि,
पंच यत्त दियउ राज जी ।
राजकुमर लीला सुख लीधा,
सुभट कटक गया भाज जी ॥ पु०॥ ७ ॥

धन्य धन्य सार्थवाहज धन्नउ,
दीधउ घृत नउ दान जी।
तीर्थंकर पदवी तिण पामी,
आदीश्वर अभिधान जी ॥ पु०॥ ८ ॥
उत्तम पात्र प्रथम तीर्थंकर,
श्री श्रेयांस दातार जी।
सेलड़ी रस सूधउ वहरायो,
पाम्यउ भव नउ पार जी ॥ पु०॥ ६ ॥
चंदन बाला चढते भावे,
पड़िलाम्या महावीर जी।
देव तणी दुंदुभी तिहां वाजी,
सुन्दर थयउ सरीर जी ॥ पु०॥१०॥
सुमुख नाम गाथापति सुमियइ,
दीघउ साधु नइ दान जी।
हुओ सुबाहुकुमर सोभागी,
वधता सुख विमान जी ॥ पु०॥११॥
संगमे साधु भणी वहिराव्यउ,
खीरखांड घृत सार जी।
गोभद्र सेठ तणे घरि लाधउ,
सालिभद्र नउ अवतार जी ॥ पु०॥१२॥
मूलदेव मुनिवर पड़िलाम्यउ,
मास खमण अणगार जी।

राज ऋद्धि ततखण पामी इहां,
को नहीं उधार जी ॥ पु०॥१३॥
मोटो ऋषि वलदेव मुनीसर,
प्रतिबोध्या पशु वर्ग जी ।
दान सुपात्र दियो रथकारक,
पाम्यउ पांचमउ स्वर्ग जी ॥ पु०॥१४॥
चंपक सेठ कीधी अनुकम्पा,
दीधुं दान दुकाल जी ।
कोड़ि छन्नु सोनइया केरी,
विलसइ रिद्धि विसाल जी ॥ पु०॥१५॥
सुव्रत साधु समीपे कार्तिक,
लीधउ संजम भार जी ।
बत्तीस लाख विमान तणो धणी,
इन्द्र हुयउ ए सार जी ॥ पु०॥१६॥
सनतकुमार सही अति वेदन,
सात सौ वरसां सीम जी ।
देवलोक तीजइ सुख दीठा,
निश्चल पाल्यो नीम जी ॥ पु०॥१७॥
रूप थकी अनरथ देखी नइ,
गयो वलभद्र वनवास जी ।
तप संयम पाली नइ पहुंतउ,
पांचमइ स्वर्ग आवास जी ॥ पु०॥१८॥

भद्रबाहु स्वामी पूरवधर,
सज्जंभव यशोभद्र जी ।
साधु आचार थकी सुख लाधा,
वयर स्वामी थूलभद्र जी ॥ पु०॥१६॥
महावीर थी नवसै असीयां,
सकल सूत्र सिद्धान्त जी ।
पुस्तकारूढ किया देवर्द्धि गणि,
मोटा साधु महंत जी ॥ पु०॥२०॥
आनंद कामदेव सुश्रावक,
व्रत रूड़ी परि राख जी ।
प्रथम देवलोक सुख पाम्या,
सूत्र उपासक साख जी ॥ पु०॥२१॥
साढी बारै सत्रुंजे यात्रा,
कीधी इण कलिकाल जी ।
संघपति थई सुरलोक सिधाया,
वस्तुपाल तेजपाल जी ॥ पु०॥२२॥
पाल्यउ शील कष्ट पणि पड़ियउ,
कुलधज नाम कुमार जी ।
इरत परत लाधा सुख उत्तम,
सलहीजे संसार जी ॥ पु०॥२३॥
चंपानगरी पोल उग्घाड़ी,
सती सुभद्रा नार जी ।

काचे तांतण पाणी काढ्यउ,
जिन शासन जयकार जी ॥ पु०॥२४॥
काकंदी नगरी नउ वासी,
धन धन्नउ अणगार जी ।
श्रेणिक आगइ वीर वखाण्यउ,
अति उग्र तप अधिकार जी ॥ पु०॥२५॥
हुँ त्रियंच किसुं वहरावुं,
रथकार नइ सहु थोक जी ।
मृगलउ भावना मन भावंतउ,
गयो पंचम देवलोक जी ॥ पु०॥२६॥
थिर सामायिक कीधउ थविरा,
राजकुमारी थइ रंग जी ।
भोग संजोग घणा तिहां भोगवी,
शिव सुख लाधा संग जी ॥ पु०॥२७॥
संख श्रावक पोपह सुद्ध पाल्यउ,
वीर प्रशंस्यो तेह जी ।
तीर्थंकर पदवी ते लहिस्यइ,
पुण्य तणा फल एह जी ॥ पु०॥२८॥
सागरचंद कियउ वलि पोपह,
रह्यउ काउसग्ग राय जी ।
निसि नभसेण तणो सह्यउ उपसर्ग,

लाधी ऋद्धि अथाह जी ॥ पु०॥२६॥
तुंगिया नगरी श्रमणोपासक,
सुध क्रिया सावधान जी ।
उभय काल पड़िकमणो करता,
पामी गति परधान जी ॥ पु०॥३०॥
पूरव भव तीर्थंकर पूज्या,
लाधा अठारह राज जी ।
पद्मनाभ ना गणधर थास्ये,
कुमारपाल सारचा काज जी ॥ पु०॥३१॥
राणे रानेण श्रेणिक राजा,
अरच्या अरिहंत देव जी ।
चेहुं गोत्र तीर्थंकर बांध्या,
सुरनर करस्यै सेव जी ॥ पु०॥३२॥
केसी गुरु सेव्यउ परदेसी,
सुर उपनो सुरिआभ जी ।
चार हजार वरस एक नाटक,
आगे अनंतां लाभ जी ॥ पु०॥३३॥
इम अनेक विवेक धरंतां,
जीव सुखिया थया जाण जी ।
संप्रति छै सुखिया वलि थास्यै,
पुण्य तणै परमाण जी ॥ पु०

संवत निधि दरसण रस ससिहर,
सिधपुर नगर मझार जी ।
शांतिनाथ सुप्रसादे कीधी,
पुण्य छत्तीसी सार जी ॥ पु०॥२५॥
युगप्रधान जिनचंद सवाई,
सकलचंद तसु शिष्य जी ।
समयसुन्दर कहइ पुण्य करो सहु,
पुण्य तणा फल परतक्ष जी ॥ पु०॥२६॥

—(:o:)—

संतोष छत्तीसी

साहमी सुं संतोष करीजइ, वयर विरोध निवार जी ।
सगपण ते जे साहमी केरउ, चतुर सुणो सुविचार जी । सा.। १ ।
राय उदायन मोटउ राजा, कीधो सबल संग्राम जी ।
चंड प्रद्योतन मूकी खाम्यउ, सांभल्यौ साहमी नाम जी । सा.। २ ।
कोणिक चेडइ संग्राम कीधा, माणस मार्या कोड़ि जी ।
असी लाख वलि ऊपरि कहियइ, वैर विरोध थउ छोड़ि जी । सा.। ३ ।
उदायन दीधउ केसी नइ, भाणेजो नइ राज भार जी ।
वैर वहंतउ थयउ विराधक, अभीचि असुर कुमार जी । सा.। ४ ।
संखे कीधउ पोसौ सखरउ, पक्खलि कीधी तात जी ।
मिच्छामि दुक्कडं श्री महावीरे, दिवरायो परभात जी । सा.। ५ ।
दाविड़ वारिखिल्ल बे भाई, पंच पंच कोड़ि परिवार जी ।

जैन तापस ऋषि विहता राख्या, सेत्रुंजइ सीधा अपार जी। सा.। ६।
भरत बाहूबलि बेहूँ भाई, आदीसर अंगजात जी।
वार बरस बहु जन संहारचा, एह विरोध नी वात जी। सा.। ७।
अरिहंत साधु विना प्रणमे नहीं, वज्रजंघन भ्रम धीर जी।
सिंहोदर सु संतोष करायो, रामचंद्र करि भीर जी। सा.। ८।
सागरचंद्र अन्याये परणी, कमला मेला वइर जी।
माथइ सिगड़ी मूकी मारचो, नभसेन वाल्यो वैर जी। सा.। ९।
आप थकी जे अधिका जाणइ, तेहनइ तूं जीमाड़ि जी।
भरते साहमी वच्छल कीधउ, तात वचन सिरवाड़ि जी। सा.।१०।
उदायन राय बंधावी ले गयउ, चंड प्रद्योतन राय जी।
वासवदत्ता नइ तिण अपहरी, इण विरोध न कराय जी। सा.।११।
सिंहोदर पासे दिवरायो, रामे आधउ राज जी।
वज्रजंघन स्वामी जाणी नइ, सखर समारचउ काज जी। सा.।१२।
कोणिक कीधी ते को न करइ, चेडो पाम्यउ रूप जी।
नगरी विशाला भांजी नांखी, एह विरोध सरूप जी। सा.।१३।
विजउ विखमी चोरी पइठउ, मूंक्यउ कुंडल नाग जी।
वज्रजंघन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहमी राग जी। सा.।१४।
मांहो मांही नगर विध्वंस्या, पांडव दवदंत राय जी।
मुनि दवदंत ईंटाले मारचो, कौरव न तज्यो कषाय जी। सा.।१५।
रुक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, सउकी नउ सबल संताप जी।
खमत खामणा किया खरे मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी। सा.।१६।

रेवती ऊपर रीस करी बहु, महाशतक श्रवहीर जी ।
गौतम मूकी नइ मिच्छामि दुकड़, दिवरायो महावीर जी । सा.।१७।
सारंग साह धरी मद मच्छर, बांध्यउ कोचर साह जी ।
पणि देपाल नइ वचने मूक्यउ, साहमी जाणि उच्छाह जी । सा.।१८।
लखमण राम नइ घर थी काढ्या, कपिले भूँडो कीध जी ।
पणि साहमी भणी राम संतोष्यउ, श्रादर मान धनदीधजी । सा.१६।
वरस वरस मांहे त्रिण वेला, वस्तुपाल तेजपाल जी ।
साहमी वच्छल सवला कीधा, भक्ति जुगति सुविसाल जी । सा.।२०।
वेउ इंद्र बुलाया कोणिक, मारो चेडो राय. जी ।
इंद्र कहै सुण अम्हे किम मारूं, साहमी सगपण थायेजी । सा.।२१।
साहमी सगपण नवउ करी नइ, प्रीति संतोष विशेष जी ।
आद्रकुमार भणी प्रतिबोध्यउ, अभयकुमारे देख जी । सा.।२२।
खमत खामणा करउ खरे मन, मूकी निज अभिमान जी ।
मृगावती नइ चंदनबाला, पाम्यउ केवलज्ञान जी । सा.।२३।
पण कुंभार ने चेला वाला, मिच्छामि दुकडं टालि जी ।
मन शुद्ध विन कदि मुक्ति न होइ, निश्चय दृष्टि निहालि जी । सा.२४।
सासू जंवाई वाला कीजइ, अलिया गलिया जाण जी ।
सामायिक पड़िकमणो सूजइ, जीवत जन्म प्रमाण जी । सा.।२५।
सामायक पोसो पड़िकमणो, नित सज्झाय नवकार जी !
राग द्वेष करतां सूझइ नहीं, न पड़ै ठाम लगार जी । सा.।२६।
समता भाव धरी नइ करतां, सहु किरिया पड़ै ठाम जी ।
अरिहंत देव कहइ आराधक, सीझइ वंछित काम जी । सा.।२७।

राग द्वेष कियां रडवडियइ, पडियइ नरक मभार जी।
दुख अनंता लहियइ दुरगति, तेह तणउ नहीं पार जी। सा.।२८।
जिहां जीव जायइ तिहां कणि पामइ, सकल कुटुंब परिवार जी।
पण साहमी नउ सगपण किहां थी, ए दुर्लभ अवतार जी। सा.।२९।
दूषम काल तणैं परभावे, हुइ मांहो मां विषवाद जी।
तो पणि तुरत खमावी लीजइ, पंडित गुरु परसाद जी। सा.।३०।
सुगुरु वचन मानइ ते उत्तम, श्रावक सुजस लहंत जी।
भद्रक जीव आसन्न सिद्धिगामी, अरिहंत एम कहंत जी। सा.।३१।
जिम नागोर क्षमा छत्रीसी, कर्म छत्रीसी मुलतान जी।
पुण्य छत्रीसी सिद्धपुर कीधी, श्रावक नइ हित जाण जी। सा.।३२।
तिम संतोष छत्तीसी कीधी, लूणकरणसर मांहि जी।
मेल थयउ साहमी मांहो मांहि, आणंद अधिक उच्छाह जी। सा.३३।
पाप गयउ पांचां वरसां नउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर जी।
प्रीति संतोष वध्यउ मांहो मांहे, वाज्या मंगल तूर जी। सा.।३४।
संवत सोल चउरासी वरसइ, सर मांहे रह्या चउमास जी।
जस सोभाग थयउ जग मांहे, सहु दीधी साबास जी। सा.।३५।
युगप्रधान जिनचंद सूरीसर, सकलचंद तसु शिष्य जी।
समयसुन्दर संतोष छत्रीसी, कीधी संघ जगीस जी। सा.।३६।

—:०:—

आलोयणा छत्तीसी

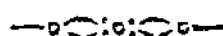
ढाल—ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, एहनी

पाप आलोय तूँ आपणां, सिद्ध आतम साख ।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवंत इणि परि भाख ॥ पा.॥ १ ॥
साल हिया थी काढियइ, जिम कीधा तेम ।
दुख देखिस नहीं सर घणा, रूपी लक्ष्मण जेम ॥ पा.॥ २ ॥
बृद्ध गीतारथ गुरु मिले, आतम सुद्ध कीध ।
तो आलोयण लीजियइ, नहीं तर स्पुंस लीध ॥ पा.॥ ३ ॥
ओछो अधिकउ द्यै जिके, पारका ल्यइ पाप ।
लेणहार छूटइ नहीं, साहमौ ल्यइ संताप ॥ पा.॥ ४ ॥
कीधा तिम को कहइ नहीं, जीभ लड़ थड़ भूठ ।
कांटो भांगो आंगुली, खोत्रीजइ अंगूठ ॥ पा.॥ ५ ॥
गाडर प्रवाह तूं मूंकिजे, दूषम काल दुरंत ।
आतम साख आलोइजे, छेद ग्रंथ कहंत ॥ पा.॥ ६ ॥
कर्म निकाचित जे किया, ते भोगव्यां छूट ।
सिथल बंध बांध्या जिके, ते तो जायइ त्रूट ॥ पा.॥ ७ ॥
पृथ्वी पाणी आगिना, वाउ वनस्पति जीव ।
तेहनउ आरंभ तूं करइ, स्वाद लीधउ सदीव ॥ पा.॥ ८ ॥
आंधउ बोलउ बोबड़उ, मृगापुत्र ज्यूं देख ।
अंगोपांगे तेहनइ, मारइ लोह नी मेख ॥ पा.॥ ९ ॥

बोलइ नहीं ते बापड़उ, पिण पीड़ा होय।
तेहवी तीर्थंकर कहइ, आचारांग जोय ॥पा.॥१०॥
आदौ मूलौ आदि दे, कंद मूल विचित्र।
अनंत जीव सूई अग्र में, पन्नवणा सूत्र ॥पा.॥११॥
जीभ नइ स्वाद मारयाजिके, ते मारस्यइ तुज्झ।
भव मांहे भमता थकां, थास्यै जिहां तिहां गुज्झ॥पा.॥१२॥
झूठ बोल्या घणा जीभड़ी, दीधा कूड़ कलंक।
गल जीभी थास्यै गलै, हुस्यइ मुंहड़ो त्रिवंक॥पा.॥१३॥
परधन चोरया लूटिया, पाड़यउ ध्रसकउ पेट।
भूल्यो भमि संसार मां, निर्धन थकउ नेट॥पा.॥१४॥
परस्त्री नइ भोगवी, तुच्छ स्वाद तूं लेसि।
पिण नरके ताती पूतली, आलिंगन देसि॥पा.॥१५॥
परिग्रह मेल्यो कारमो, इच्छा जिम आकास।
काज सर्यो नहीं ते थकां, उत्तराध्ययन प्रकाश॥पा.॥१६॥
घाणी घट्टी ऊखले, जीव जे पीड़ेसि।
स्वामिस तूं नहिं तरि नरक मइं, घाणी मांहि पीलेसि॥पा.॥१७॥
छाना अकारिज करि पछइ, गर्भ नांख्या पांड़ि।
परमाधामी ते तुज्झ ने, नित नांखिस्यै पांड़ि॥पा.॥१८॥
गोधा ना नाक बींधीया, खासी कीधा वत्तध।
आरंभी उठाड़िया, राते ऊँचे सबद॥प.॥१९॥
बाला वढाव्या टांकता, मांकण खाटला कूटि।
विरेच लेइ कृमि पाड़िया, गलणी गयउ छूटि॥पा.॥२०॥

राग द्वेष खाम्या नहीं, जां जीव्यउ तां सीम ।
अनंतानुबंधी ते थया, कहि करिस तूं केम ॥ पा.॥२१॥
तड़ तड़ते नांख्या तावड़े, सुल्या धान जिवार ।
तड़ फड़ नइ जीव ते मूआ, दया न रही लगार ॥ पा.॥२२॥
अणगल पाणी लूगड़ा, धोया नदी तलाव ।
जीव संहार कियो घणउ, साबू फरस प्रभाव ॥ पा.॥२३॥
वैरी निप दे मारिया, गलै फांसी दीध ।
ते तुझ नइ पिण मारस्यै, मूकस्यै वैर लीध ॥ पा.॥२४॥
कोऊ अंगीठी तइं करी, थाप्यौ सिगड़ी कुंड ।
रातें दीवो राखियो, पापे भर्‌या पिंड ॥ पा.॥२५॥
मां थी विछोड़्या वाछड़ा, नीरी नहीं चारि ।
ऊनालै तिरस्या मूआ, कीधी नहीं सारि ॥ पा.॥२६॥
मां बाप नइं मान्या नहीं, सेठ सुं असंतोष ।
धर्म नो उपगार नवि धर्‌यो, ओसिंकल किम होस ॥ पा.॥२७॥
आंधो टूंटो पांगलो, कोढियो जार चोर ।
मरि फीट जाइ बोल तुं, कह्या वचन कठोर ॥ पा.॥२८॥
मद्य नइ मांस अभक्ष जे, खाधा हुस्यइ हुँसि ।
मिच्छामि दुकडं देइ नैं, पछइ लेजे तूँ सूसि ॥ पा.॥२९॥
सामाइक पोसह कीया, लीधा साधु ना वेस ।
मन संवेग धर्‌यो नहीं, कहि तूं केम करेस ॥ पा.॥३०॥
सूत्र नै प्रकरण समझता, वह्या विपरीत कोय ।
जण जण मति छइ जूजुइ, सुणतां भ्रम होय ॥ पा.॥३१॥

वचन जिके वीतरागना, ते तो सही साच।
भगवती सूत्र धुरे भर्यो, वीर नी ए वाच ॥ पा.॥३२॥
करमादान पनरै कह्या, वलि पाप अढार।
खिण खिण ए सहु खामिज्यो, संभारी संभारि ॥ पा.॥३३॥
इण भव परभव एहवा, कीधा हुवे जे पाप।
नाम लेइ तूं खामजे, करिजे पछताप ॥ पा.॥३४॥
खरच कोई लागस्यै नहीं, देह नें नहिं दुख।
पण मन वैराग वालजे, सही पामिस सुख ॥ पा.॥३५॥
संवत सोल अट्ठाणूए, अहमदपुर मांहि।
समयसुन्दर कहइ मइं करी, आलोयणा उच्छाहि ॥ पा.॥३६॥



पद्मावती-आराधना

हिव राणी पदमावती, जीव रासि खमावइ।
जाण पणुं जगि ते भलुं, इण वेला आवइ ॥ १ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंत नी साख।
जे मइं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते०॥ २ ॥
सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय।
सात लाख तेऊकाय ना, साते वलि वाय ॥ ते०॥ ३ ॥
दस प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार।
बि ति चउरिन्द्री जीव ना, बि बि लाख विचार ॥ ते०॥ ४ ॥

देवता तिरियंच नारकी, च्यार च्यार प्रकासी।
चउदह लाख मनुष्य ना, ए लाख चउरासी ॥ते०॥ ५ ॥
इणि भवि परभवि सेविया, जे पाप अढार।
त्रिविध त्रिविध करि परिहरूं, दुरगति दातार ॥ते०॥ ६ ॥
हिंसा[१] कीधी जीवनी, बोल्या मिरषावाद[२]।
दोष अदत्तादान[३] ना, मैथुन[४] उनमाद ॥ते०॥ ७ ॥
परिग्रह[५] मेल्यउ कारिमउ, कीधउ क्रोध[६] विशेष।
मान[७] माया[८] लोभ[९] मई किया, वलि राग[१०] नइ द्वेष[११]। ते.।८।
कलह[१२] करी जीव दूहव्या, दीधा कूड़ा कलंक[१३]।
निंदा[१४] कीधी पारकी, रति अरति[१५] निसंक ॥ते०॥ ६ ॥
चाडी खाधी चउतरइ[१६], कीधउ थांपण मोसउ[१७]।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नउ, भलउ आण्यउ भरोसउ[१८]ते ।१०।
खाटकि नइ भवि मइं किया, जीव ना वध घात।
चिड़ीमार भवि चिड़कला, मारया दिन रात ॥ते०॥११॥
मच्छीगर भवि माछला, झाल्या जल वास।
धीवर भील कोली भवे, मृग मांड्या पास ॥ते०॥१२॥
काजी मुल्ला नइं भवे, पढी मंत्र कठोर।
जीव अनेक जबह किया, कीधा पाप अघोर ॥ते०॥१३॥
कोटवाल नइं भवि किया, अकरा कर दंड।
बंदिवाण मराविया, कोरड़ा छड़ि दंड ॥ते०॥१४॥
परमाहम्मी नइ भवे, दीधा नारकि दुक्ख।
छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ते०॥१५॥

कुंभार नइ भवि जे किया, नीमाह पजावा।
तेली भवि तिल पीलिया, पापी पेट भराव्या ॥ ते०॥१६॥
हाली नइ भवि हल खड़्या, फाड़्या पृथिवी पेट।
ऊड़ निंदाण किया घणा, दीधी बलद . चपेट ॥ ते०॥१७॥
माली नइ भवि रोपिया, नाना विधि वृक्ष।
मूल पत्र फल फूल ना, लागा पाप लक्ष ॥ ते०॥१८॥
अद्धोवाई आंगमी, भरथा अधिका भार।
पोठी ऊंठ कीड़ा पड़्या, दया न रही लगार ॥ ते०॥१६॥
छींपा नइ भवि छेतरथउ, कीधा रांगणि पास।
अगनि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते०॥२०॥
सूरपणइ रण जूझता, मार्या माणस वृन्द।
मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला नइ कंद ॥ ते०॥२१॥
खाणि खणावी धातु नी, पाणी उलिंच्या।
आरंभ कीधा अति घणा, पोतइ पाप सच्या ॥ ते०॥२२॥
अंगार कर्म किया वली, घरमइ दव दीधा।
सुंस कीधा वीतराग ना, कूड़ा कोस पीधा ॥ ते०॥२३॥
बिल्ली भवि उंदरि लीया, गलोई हतियारी।
मूढ गमार तणइ भवे, मइं जूं लीख मारी ॥ ते०॥२४॥
भाभड़-भूंजा नइ भवे, एकेन्द्री जीव।
ज्वारि चिणा गोहुं सेकिया, पाडंता रीव ॥ ते०॥२५॥
खांडण पीसण गारि ना, आरंभ अनेक।
रांधण इंधण आगि ना, किया पाप उदेक ॥ ते०॥२६॥

विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पड्यां किया, रोदन विषवाद ॥ ते०॥२७॥
साध अनइ श्रावक तणा, व्रत लेई भांगा ।
मूल अनइ उत्तर तणा, मुझ दूषण लागा ॥ ते०॥२८॥
सांप विच्छू सींह चीतरा, सकरा नइ समली ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते०॥२९॥
सुयावड़ि दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ।
जीवाणी ढोल्या घड़ा, सील वरत भंजाया ॥ ते०॥३०॥
भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुम्ब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते०॥३१॥
भव अनंत भमतां थकां, कीया देह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिण सुँ प्रतिबंध ॥ ते०॥३२॥
भव अनंत भमतां थकां, किया परिग्रह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करो वोसरू, तिण सुँ प्रतिबंध ॥ ते०॥३३॥
इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ते०॥३४॥
राग वयराडी जे सुणइ, ए त्रीजी ढाल[१] ।
समयसुन्दर कहइ पाप थी, छूटइ ते ततकाल ॥ ते०॥३५॥

इति आराधना संपूर्णा । (स्वय लिखित पत्र से)



१ वास्तव में यह स्वतन्त्र कृति न होकर चार प्रत्येक बुद्ध चौपई की एक ढाल है ।

वस्तुपाल तेजपाल रास

—:×:—

सारसति सामिणि मनि धरुं, प्रणमुं सुह गुरु पाय ।
वसतपाल तेजपाल नउ, रास कहुं सुपसाय ॥१॥
पोरुयाड़ वंसइ प्रगट, जिण सामण सिणगार ।
करणी मोटी जिण करी, सहु जाणइ संसार ॥२॥
चंड प्रचंड अनुक्रमइ, सोम अनइ आसराज ।
वस्तपाल तेजपाल बे, तसु नन्दन सिरताज ॥३॥
माता कुंयरि उरि रतन, पाटण नगर निवास ।
वीरधवल राजा तणा, मुहुता पुण्य प्रकास ॥४॥
वरय अढार गया पछी, वरस अठारह सीम ।
वस्तपाल तेजपाल बे, भ्रम करणी कर ईम ॥५॥

ढाल पहिली—भरत नृप भावसुं ए, एहनी ढाल

धरम करणी करइ ए, वस्तराज तेजपाल साह । ध.।
साते खेत्रे वित वावरइ ए, ल्यइ लछमी नउ लाह । १ । ध. ।
जैन प्रासाद करावीया ए, तेरइ सइ नइ च्यार । ध.।
त्रिसहस त्रिणसइ करावीया ए, जीरण चैत्य उद्धार । २ । ध. ।
भगवंत बिंब भरावीया ए, सवा लाख अतिसार । ध.।
अढार कोड़ि द्रव्य लगाडीया ए, त्रिणह भराया भंडार । ३ । ध. ।
पांचसइ सिंहासन दांत ना ए, नव सइ चउरासी पोसाल । ध.।
समोसरण पटकूलना ए, पांचसइ पांच रसाल । ४ । ध. ।

सेत्रुंजइ द्रव्य सफल कीयउ ए, अढार कोडि छन्नुं लाख। घ.।
गिरिनारि द्रव्य सफल कीयउ ए, अढार कोडि असीलाख। ५। घ.।
आबू द्रव्य सफल कीयउ, लाख त्रेपन कोडि बार। घ.।
नेमि प्रासाद मंडावीयउ ए, लूणगवसही उद्धार। ६। घ.।
ब्राह्मणसाला सातसइ ए, सातसइ सत्रूकार। घ.।
प्रासाद कराव्या महेसरा ए, ते पणि त्रिणहे हजार। ७। घ.।
तापसना मठ सातसइ ए, चउसठि करावी मसीति। घ.।
जिन बिंब नी रचा भणी ए, म्लेछ तणइ मनि प्रीति। ८। घ.।
पाषाण बद्ध करावीया ए, सरोवर चउरासीय। घ.।
वारू सयंवर[१] वावड़ी ए, च्यार-सइ चउसठि कीय। ६। घ.।
मोटा गढ़ मंडावीया ए, छत्रीस[२] पाखाण बद्ध। घ.।
ए सहुँ संघ रचा भणी ए, परिमल पाणि किद्ध। १०। घ.।
परब मंडावी च्यारसइ ए, पर उपगार निमित्त। घ.।
चालती चरम तलावड़ी ए, चारसउ चउरासी नित्त। ११। घ.।
तोरण त्रिण चढावियाए, शत्रुंज १ हुज २ गिरनार ३। घ.।
सोनहियां त्रिहुँ लाख नउ ए, एकेकउ श्रीकार १२। घ.।
वि लाख सोनहियां तणउ ए, खंभायत व्यय कीध। घ.।
वस्तपाल तेजपालना ए, सकल मनोरथ सीध। १३। घ.।
उदयप्रभसूरि प्रमुख ना ए, पदठवणां एकवीस। घ.।
महुछन्न सेती करावीया, जाचकां पूरी जगीस। १४। घ.।
जैन ना रथ नीपजावीया ए, दांत तणा चउवीस। घ.।
जैन देहरासर सागना ए, ते पणि एकसउ बीस। १५। घ.।

१ चारसय घर. २ बत्तीस

वेदीया ब्राह्मण पांचसइ ए, वेद भणइ दरबारि । ध.।
गछवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार ।१६। ध. ।
एक सहस नइ आठसइ ए, विहरइ एकल विहार । ध.।
एक हजार तापस वली ए, मठवासी अधिकार ।१७। ध. ।
परिघल सहु नइ पोखीयइ ए, अन पाणी भरपूर । ध.।
दय दयकार दीसइ सदा ए, प्रगट्यउ पुण्य पड्डर ।१८। ध. ।
संघ पूजा वलि कीजीयइ, वरस माहे त्रिण वार । ध.।
साहमीवछल कीजीयइ ए, आभरण वस्त्र अपार ।१९। ध. ।
सेत्रुँजना संघवी थई ए, साढ़ी बारह जात्र । ध.।
वस्तपाल तेजपाल करी ए, निरमल कीधा गात्र ।२०। ध. ।

सर्वगाथा २५

दूहउ—१ ।

संवत बार सत्योतरइ, पहिली सेत्रुञ्ज जात्र ।
कीधी सबल पड्डर सुं, ते कहियइ लव मात्र ॥१॥

सर्वगाथा २६

ढाल—त्रीजी

तिमरी पासइ वडलुं गाम, एहनी ढाल.

वस्तपाल तेजपाल बेहु भाई, सेत्रुञ्ज जात्र नी कीधी सजाई।
पांच सहस पांचसइ सेजवाली, वलीय अढारसइ वहिली रंगाली।१।
सातसइ वलि सिंहासन सोहइ, पांचसइ पालखी जन मन मोहइ।
उगणीस सइ सीकरी अतिसार, चपल तुरंगम च्यार हजार। २ ।
करहलां कोटइ घूघरमाल, त्रि सहस सोहइ संघ विचाल ।
जैन गायन च्यार सइ चउरासी, तेत्रीस सइ बंदीजन भासी। ३ ।
तेत्रीसइ वलि वादी भट्ट, सातसइ आचारिज गह गट्ट ।
इग्यारह सइ दिगंबर साध, एकवीस सइ सेतंबर बाध।

चालता साथि पाणी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव ।
तेत्रीस सइ दांतना देवाला, बारह सउ सागना सुनिसाला । ५ ।
सघ मांहे माणस सात लाख, ए सहूना परबंधे साख ।
सरसती कंठाभरण विरुद, चउवीस बोलइ भट्ट सुसद । ६ ।
दल बादल डेरा तंगोटी, फरहर नेजा धजा अति मोटी ।
सबल आडंबर रायनी रीति, संघ चालइ सहु संतोष प्रीति । ७ ।
जयत पताका तेत्रीस वार, संग्राम करि नइ पामी सार ।
एहवी साढ़ा बारह जात्रा कीधी, सेत्रुञ्ज संघवी पदवी लीधी । ८ ।
हिव सहू पुण्यवरानी वात, जे द्रव्य खरच्या तेह कहात ।
तेत्रीसइ कोडि चउदह लाख, अढार सहस आठसइ सहु साख । ९ ।
त्रिहु लोहडि़ ए ऊणा सोनहिया, पुण्यवरइ खरच्याते कहिया।
जिण सासण मांहे सोह चड़ावी, बारसइ अठाणुं देवगति पावी।१०।
वस्तपाल तेजपाल पुण्य प्रधान, जेह नइ पगि २ प्रगटचा निधान।
पुण्य थी पामी तेजम तूरी, दक्षिणभरत संघ आसा पूरी।११।
इम जाणी सहु को नित सारू, धन खरचउ बिलहारी वारू।
सफल करउ अपणउ अवतार, जिम तुम्हे पामउ भवनउ पार।१२।
श्री खरतरगच्छ श्री जिणचंद, शिष्य सकलचंद नाम मुणिंद ।
समयसुन्दर पाठक तसु सीस, रास भण्यउ श्री संघ जगीस।१३।
संवत सोल सइ ब्यासीया वरषे, रास कीधउ तिमिरीपुरी हरषे।
वस्तपाल तेजपाल नऊ ए रास, भणतां सुणतां परम हुलास ।१४।

इति श्रीवस्तपाल तेजपाल रास सम्पूर्ण ।

पुंजरत्न ऋषि रास

श्री महावीर ना पाय नमूं, ध्यान धरुं निशदीश ।
तीरथ वर्ते जेहनो, वरस सहस इकवीस ॥ १ ॥

साधु साध सहु को कहै, पिण साधु छै विरला कोइ ।
दुःषम काले दोहिलो, सबल पुण्य मिलइ सोय ॥ २ ॥

पण तप जप नी खप करै, पालइ पंचाचार ।
सूत्रे बोल्यो साधु ते, वंदनीक व्यवहार ॥ ३ ॥

भला दान शील भावना, पिण तप सरिखो नहीं कोय।
दुःख दीजइ निज देह नैं, 'घाते घड़ा न होय' ॥ ४ ॥

मुनिवर चउद हजार मइं, श्रेणिक सभा मझार ।
वीर जिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ ५ ॥

वासुदेव करै वीनति, साधु छै सहस अढार ।
कुण अधिको जिनवर कहै, ढंढण ऋषि अणगार ॥ ६ ॥

ए तपसी आगइ हुआ, पणि हिवे कहुँ प्रस्ताव ।
आजनइ कालइ एहवा, पुञ्जा ऋषि महानुभाव ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वचंद ना गच्छ मांहे, ए पुञ्जो ऋषि आज ।
आप तरे नैं तारवै, जिम वड़ सफरी जहाज ॥ ८ ॥

पुञ्जै ऋषि पृच्छा धरम, संयम लीधो सार ।
कीधा तप जप आकरा, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ९ ॥

ढाल

गुजरात मांहि रातिज गाम, करडुआ पटिल गोत्र नो नाम।
बाप गोरो माता धन बाई, उत्तम जाति नहीं खोट कांइ ॥१०॥
श्रीपार्श्वचंदसूरि पाट समरिचंद्रसूरि, श्रीराजचंद्रसूरि विमलचंद सनूरि
तेहना वचन सुणि प्रतिबुद्धो, असार संसार जाण्यो अति सुद्धो ॥११॥
वैरागइ आपणौ मन वाल्यौ, कुटुंब माया मोह जंजाल टाल्यो।
संवत् सोलइसे सित्तरा वर्षे, संयम लीनो सदगुरु परखइ ॥१२॥
दिक्षा महोत्सव अहमदाबादइ, श्रावक कीधौ नवलै नादे।
पुञ्जो ऋषि सुद्धो व्रत पालइ, दूषण सघला दूरइ टालइ ॥१३॥
ए ऋषि पुञ्जो सूझतो ल्ये आहार, न करै लालच लोभ लिगार।
ऋषि पुञ्जो अति रूड़ो होवइ, जिन शासन मांहे शोभ चढावइ ॥१४॥
तेहना गुण गातां मन मांहि, आनंद उपजे अति उच्छाहे।
जीभ पवित्र हुवे जस भणतां, श्रवण पवित्र थाये सांभलतां ॥१५॥

ढाल

ऋषि पुंजे तप कीधौ ते कहुं, सांभलजो सहु कोई रे।
आज नइ कालै करइ कुण एहेवा, पणि अनुमोदन थाइ रे ॥१६॥
आठ उपवास कीधा पहिली, आठ अति चोवीहार रे।
मासखमण कीधा दोइ मुनिवर, वीस वीस वे वार रे ॥१७॥
पख-खमण पैंतालीस कीधा, सोल कीधा सोलह वार रे।
चउद चउद चवदे बारइ कीधा, तेर तेर करचा तेरह रे ॥१८॥

बार बार बारह बार कीधा, दस दस चउ चौवीस रे।
बे सै पंचास अठाइ कीधी, मन संवेग सुँ मेल रे ॥१९॥
छट्ठ कीधा वलि सित्तर दिन लगै, पारणै छासि आहार रे।
ते मांहि पिण एक अठाइ, कीधी इण अणगार रे ।२०॥
बासठ दिन तांइ छठि कीधी, पारणइ छासि आहार रे।
बार वरस लगि विगय न लीधी, ऋषि पुंजा नै साबासरे ॥२१॥
वरस पांच लग वस्त्र न ओढ्यो, सह्यो परिसह सीत रे।
साढा पांच वरस सीम आठो, सूतो नहीं सुविदीत रे ॥२२॥
अभिग्रह एक कीधो वलि एहवो, चिठी लिखी तिहां एम रे।
च्यार जणी पूजा करि इहां, तो घी वहिरावइ सुप्रेम रे ॥२३॥
तौ पुंजो ऋषि लै नहीं तर, जावजीव ताइं सुंस रे।
ते अभिग्रह तीजै वर्षे फलीयो, श्री संघ नी पहुँची हुंस रे ॥२४॥
इण परि तेह अभिग्रह पहुतो, ते सांभलज्यो वात रे।
अहमदाबादी संघ नरोड़इ, वांदवा गयो परभात रे ॥२५॥
तिण अवसर फूलां गमतांदे, जीवी राजुलदे च्यार रे।
पूजा करि वांदी विहरायो, सूझतो घी सुविचार रे ॥२६॥
मोटो लाभ थयो श्राविका ने, टाल्यौ तिहां अंतराय रे।
इण चिहुँ नै मन वंछित वस्तु नो, अंतराय नवि थाय रे ॥२७॥
वलि धन्ना अणगार तणो तप, कीधो नव मासी सीम रे।
ते मांहि वी अठाइ उपवास, च्यार अठम च्यार सीम रे ॥२८॥
छमास सीम अभिग्रह कीधा, कोई फल्यो उपवास च्यार रे।
उपवास सोल फल्यो कोइ, एह तप नौ अधिकार रे ॥२९॥

छट्ठम अट्ठम आकरा तप कीधा, ऋषि पुंजे वलि जेह रे।
तेह तणी कहुँ वात केती, कहतां नावैं छेह रे ॥३०॥
अठावीस वरस लगि तप कीधा,ते सघला कह्या एम रे।
आगलि वलि करिस्यै ऋषि पुंजो, ते आणिस्यइ तेम रे॥३१॥

ढाल

पुंजराज मुनिवर वंदो, मन भाव मुनीसर सोहै रे।
उग्र करइ तप आकरौ, भवियण जन मन मोहइ रे ॥३२॥
धन कुल कलंबी जाणीयइ, बाप गोरो ते पिण धन्न रे।
धन धना बाइ कुखड़ी तिहां, उपनो एह रतन्न रे ॥३३॥
धन विमलचंद सूरि जिणै, दीख्या दीधी निज हाथ रे।
धन श्री जयचंद्र गच्छ धणी, जसु साहु रहै ए पास रे ॥३४॥
आज तो तपसीएहवो, पुंजा ऋष सरीखो न दीसइ रे।
तेहनै वंदता विहरावतां, हरखै करि हियड़ी हींसइ रे ॥३५॥
एक वे वैरागी एहवा, श्री पासचंद गच्छ मांहिं सदाई रे।
गरुअड़ वाडइ गच्छ मांहि, श्री पासचंदसूरि नी पुण्याइ रे॥३६॥
संवत सोल अठाणुअइ, श्रावण पंचमी अजुआलइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाइ रे ॥३७॥

——०:——

केशी प्रदेशी प्रबन्ध

धन धन अयवंती सुकुमालनइ एहनी, ढाल ।

श्री सावत्थी समोसर्या, पांचसइ मुनि परिवारो जी ।
चउनाणी चारित्तिया, केशी श्रमण कुमारो जी ।१।
केशी नइ करु' वंदना, पारसनाथ संतानो जी ।
परदेशी प्रतिबोधियउ, मिथ्यामति अज्ञानो जी ।२। के.। श्रां.
श्रावक थयउ चित्र सारथी, ते लेइ गयउ तेथोजी ।
परदेशी पापी हुतउ, कहइ जीव जुदउ न केथो जी ।३। के.।
केशी प्रदेशी भेला थया, चित्र प्रपंच थी दोयो जी ।
प्रश्न उत्तर थया परगड़ा, ते सुणजो सहु कोयो जी ।४। के.।

ढाल बीजी—नींदड़यानी

प्रश्न करइ परदेशी एहवउ, परलोक मानु' केमो जी ।
जीव नइ काया ते नहीं जूजुआ, इह लोक ऊपरि प्रेमो जी । १ प्र.।
दादउ हुँतउ माहरइ दीपतउ, करतउ पाप अघोरो जी ।
तुम्हारइ वचने ते नरके गयउ, जिहां वेदन छइ जोरो जी । २ प्र.।
हुँ पणि तेहनउ अति वल्लभ हुँतउ, ते आविनइ कहंतउ जी ।
पाप म करिजे तुं माहरी परि, दुःख देखिस दुर्दन्तो जी । ३ प्र.।
केशी गुरु उत्तर कहइ एहवउ, सुणि परदेशी रायउ जी ।
जीव काया छइ बेउ जूजुआ, जुगति थकी समझायउ जी । ४ प्र.।
केशी गुरु उत्तर द्यइ एहवउ ॥ आंकणी ॥
सुणि परदेशी ताहरी भारजा, सूरिकंता नामो जी ।
भोगवतउ देखइ तुं तेहनइ, नरनइ स्युं करइ तामो जी । ५ के.।

तउ हुँ बांधूं मारूं तेहनइ, ते कहे मूकि लगारो जी ।
कुटंब नइ कहि आवु हुँ एहवुं, मत करउ एह प्रकारो जी । ६ के.।
तउ तुं मूकइ ना मूकुं नहीं, तिण परि नारकी जीवो जी ।
परमाहम्मी तिण मूकइ नहीं, तिहां पच्छउ ते करइ रीवो जी । ७ के.।
वलि प्रदेशी कहइ दादी हुँती, करती तुमारउ धर्मो जी ।
तुम्हारे वचने ते थई देवता, सुखी हुस्यइ शुभ कर्मो जी । ८ प्र.।
हुँ पणि दादी नइ वल्लभ हुँतउ, तिण पणि न कह्यउ मुज्झो जी।
जीवदया पाले जिन धर्म करे, सुख संपति छइ तुज्झो जी । ६ प्र.।
सुणी नृप स्नान करि तुं नीसर्यउ, देहरा भणी सुपवित्तो जी ।
विष्ठा घर मांहि बइठउ आदमी, तेडइ तुं आवि तुरंतो जी ।१० के.।
तिहां तुं जायइ कहइ जाउं नहीं, तउ ते आवइ केमो जी ।
काम भोग लपटाणा ते रहइ, इहां दुर्गन्ध छइ एमो जी ।११ के.।
कोटवाल चोर झाली आणी दियउ, मइं ते परीक्षा निमित्तो जी ।
लोह कुंभी मांहि घाली काठउ, जड्यउ व्युं घउ वार विछित्तो जी।१२।
वलि कुंभी उघाडी एकदा, मूयउ दीठउ तिवारउ जी ।
कहउ ते जीव हुंतउ तउ किहां गयउ, छिद्र न दीसइ लगारउ जी।१३।
कूडागार शाला जिहां छिद्र नहीं, ते मांहि बइठउ कोयो जी ।
जउ ते भेरि वजाडइ जोर सुं, शब्द सुणइ तुं सोयउ जी ।१४ के.।
कहि ते शब्द किहां थी नीसर्यउ, छिद्र पड्यउ नहीं कोयउ जी ।
तिम ए जीव सरूप तुं जाणिज्ये, अप्रतिहत गति होयोजी ।१५ के.।
चोर कुंभी मांहि घाल्यउ मारिनइ, वलि एकदा ते दीठउ जी ।
जीवाकुल दीठी देही तिहां, छिद्र विण किम ते पइठउ जी ।१६ प्र.।
लोह नउं गोलउ धमणी मांहइ, धम्यउ लाल थयउ तत्कालउ जी।

छिद्र विण अगनि पइठी कहि किम इहां, तिम तुं जीव निहालउजी।१७ के.।
जीवतउ गइ मुंयउ चोर मइं तोलियउ, लाकड़ि घाली तंतो जी।
बेउ बरावरि सरखा उतर्या, विण जीव ओछउ हुँतउ जी।१८ प्र.।
दइड़ी धाय भरी ठाली थकी तोलीजइ जउ वेयो जी।
वधइ घटइ नहीं बे तोली थकी, ए दृष्टान्त कहेयो जी।१९ के.।
चोर एक मइं तिल तिल चीरनइ, जोयउ जीव छइ केथो जी।
पणि ते जीव न दीठउ मइं किहां, जीव जुदउ नहीं एथो जी।२० प्र.।
अगनि लेइ नइ केइ गया काननइ, काष्ट लेवा नइ काजो जी।
भोजन भणी ते सहु मेला थया, सगलउ मेल्यउ साजो जी।२१ के.।
आगि ओल्हाइ गई ते एहवइ, कहि कुण करिस्यइ चालो जी।
अरणी नउ सरियउ घसि लाकड़इ, अगनि पाड़ी तत्कालो जी।२२ के.।
काष्ट मांहि ते अगनि न दीसती, पण ते प्रगटी प्रत्यचो जी।
तिम ते जीव जुदउ काया थकी, अमूरत एह अलचो जी।२३ के.।
तरुण पुरुष कोई सबल पराक्रमी, सकल कला नउ जाणो जी।
तिम ते बालक मंद पराक्रमी, नांखी न सकइ बाणो जी।२४ प्र.।
तिण काया वे(बि?)ज जीव जाणिवउ, जउ जुदउ जीव हुँतउ जी।
तउ जीव तरुण बालक बिहुँ मइं हुँतउ, बालक नांखि सकंतउ जी।२५ प्र.
तरुण नांखइ बालक नांखइ नहीं, प्रबल मंद बल हेतो जी।
जीवनइ काया तिण जुदी नहीं, सरदहणाए फेरो जी।२६ प्र.।
तरुण पुरुष अति सबल पराक्रमी, पणि धनुष घण खाधो जी।
पणच जुनी नइ घण खाधी वली, तीर सल्यउ नइ आधो जी।२७ के.।
तरुण तिकउ तीर को नांखइ नहीं, नृप कहइ नहं काज कोयो जी।
तिम ते बालक मांहि सगति नहीं, पण जुदउ जीव होयो जी।२८ के.।

इहां वलि बीजउ दृष्टांत दाखव्यउ, भारवाहक नउ विचारो जी।
भारवाहइ तणउ कावड़ी भली, साज विना नाकारो जी ।२६ के.।
सूत्र वांची नइ सगलु समझज्यो, तिहां विस्तर संबंधो जी।
केशी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबन्धो जी ।३० के.।

ढाल तीजी--राजिमती राणी इण परि बोलइ, नेमि विना कुण घुंघट खोलइ।

इत्यादिक प्रश्नोत्तर करतां, हेतु जुगति हिया मांहि धरतां।
परदेशी राजा प्रतिबोध्यउ, केशी गुरु श्रावक कियो सूघउ। २। प.।
मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सद्दहणा मन धारी। ३। प.।
हिंसा दुर्गतिना दुख खाणी, जीव दया साची करि जाणी। ४। प.।
जूदउ जीव नइ जूदो काया, परलोकगामी जीव जणाया। ५। प.।
जड़ तणी बात जाणी जिवारइ, मइं जाणुं तुमे ज्ञानि तिवारइ। ६ ।प.।
पणि जाणतउं हूँ बांकउ बोल्यउ, हेतु जुगति करतां हिय उ खोल्यउं ।७।
आपणउ सगलउ अपराध खामइ, केशी गुरु नइ निज शीस नामइ।
श्रावक ना बारह व्रत लीधा, जन्म जीवित सफला सहु कीधा। ६ प.।
उतपति सातसै गामनी कीधी, त्रिहुं बाटे बांटी नइ दीधी ।१० प.।
राज, अंतेउर, पुण्य नइ खातइ, इण परिठी रहइं दिन रातइं ।११।प.।
रमणिक पणुं रूडो परि राख्युं, भली परि मान्युं गुरु भाख्युं ।१२।प.।
त्रीजी ढाल थई ए पूरी, समयसुन्दर कहि बात अधूरी ।१३। प.।

ढाल ४–राग धन्याश्री—पास जिन जुहारियइ, एहनी ढाल

परदेशी श्रावक थयउ, बारह व्रत सूधा पालइ रे।
मूल अनइ उत्तर तणा, दूषण ते सगला टालइ रे। १। प.।

पोषउ पड़िकमणउ करइ, साध साधवी नइ घइ दानो रे ।
शीलव्रत सधु धरइ, रात दिवस करइ ध्रमध्यानो रे । २ । प.।
निज स्वारथ अन-पहुचतां, निज सूरिकन्ता नारो रे ।
पापिणी पति नइ विप दियउ, पिण देसस्यइ दुःख भारो रे । ३ । प.।
अणसण नइ आराधना छेहडइ, करि सद्गुरु शाखि रे ।
पाप आलोइ पड़िकमी, वलि मिच्छामि दुक्कडं दाखि रे । ४ । प.।
काल करीनइ ऊपनउ, पहिलइ देवलोक मझारो रे ।
सूरिआभ नामइ देवतां, आउखु पल्योपम चारो रे । ५ । प.।
आमलकप्पा आविनइ, श्री महावीर नइ आगइ रे ।
छत्तीस बद्ध नाटक कियउ, रूडि परि मन नइ रागिइ रे । ६ । प.।
भगवंत नइ भव पूछिया कह्यउ, तुं छइ चरम शरीरी रे ।
सूरियाभ वार्ता सहु, गौतम पूछी कहि वीरो रे । ७ । प।
सूरियाभ तिहां थी चवी, उपजस्यइ महा-विदेहो रे ।
उत्तमकुल ते पामिस्यइ, पणि नहीं करइ कुटम सनेहो रे । ८ । प.।
थविर पासि संजम धरी, तप आम आदरस्यइ रे ।
केवलज्ञान लही करी, आठ कर्म तणउ अंत करिस्यइ रे । ६ । प.।
रायपसेणी सूत्र थी, केशी प्रदेशी प्रबन्धो रे ।
समयसुन्दर कहइ मैं कियउ, सज्झाय भणी संबंधो रे ।१०। प।

सर्वगाथा ५७ ॥ इति श्री केशी प्रदेशी प्रबन्ध. समाप्त ।
स० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने कृतोलिखितश्च श्री अहमदाबाद नगरे श्रीहाजापटेल पोल मध्यवर्त्ती श्रीवृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक श्रीजिनसागरसूरि विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः प० हर्षकुशलगणि सहाय्ये ।

क्षुल्लक ऋषि रास

राग—गउड़ी । इकदिन महाजन आवए अथवा श्री नवकार मनि ध्याइयइ, ए गीता छन्द नी ढाल

पारसनाथ प्रणमी करी, जालोर ज्योति प्रकाशो जी ।
भाव भगति सुं हुँ भणुँ, ऋषि चुल्लक नउ रासो जी ॥
ऋषि चुल्लक नउ रास हुं भणुँ, गिरुयानां गुण गावतां ।
आंपणी जीभ पवित्र थायइ, श्रावक नइं संभलावतां ॥
ए भरत क्षेत्र मइं अति मनोहर, अयोध्या नामइ पुरी ।
तिहां लोक ऋद्धि समृद्धि सहु को, पारसनाथ प्रणमी करी ॥ १ ॥

राज करइ तिहां राजियउ, पुण्डरीक नाम नरिंदो जी ।
गुणसुन्दरी तसु भारिजा, पामइ परमाणंदो जी ॥
पामइ परमाणंद तेहनइ, कंडरीक भाई भलउ ।
भारिजा तेहनइ जसोभद्रा, रूप शील कला निलउ ॥
एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ ।
भोगवुं जिम तिम करो भउजाई, राज करइ तिहां राजियउ ॥ २ ॥

कामातुर न करइ किसुं, क्रोधी किसुं न करेउ जी ।
लोभी पिण न करइ किसुं, आप मरइ मारेवउ जी ॥
आपण मरइ न मारेउ कांइ, अकारिज कारिज किसुं ।
करतो न जाणइ पछ्यउ परवसि, मद पीधइ माणस जिसुं ॥
पापियउ प्राणी इम न जाणइ, नरग ना दुख देखिसुं ।
इह लोक मांहे हुस्यइ अपजस, कामातुर न करइ किसुं ॥ ३ ॥

भल भला करइ रात्र भेटणा, चंदन चोवा अबीरो जी ।
माणिक मोती मूँगिया, चोली चरणा चीरो जी ॥
चोली मइ चरणा चीर सखरा, सुंखड़ा सुसबद ए ।
रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, जाणइ जेठ प्रसाद ए ॥
उपाय मांड्यउ राय एहवा, मन धीरिज ना मेटणा ।
पुण्डरीक कामातुर थयउ घणुं, भल भला करइ भेटणा ॥ ४ ॥

एक दिन एकान्ते आव ए, प्रारथना करइ राजो जी ।
भोग भोगवि भला मुज्झ सुं, मन सेती मन लायो जी ॥
मन सेती मन लाय मुझ सुं, मकरिस ताणा ताण ए ।
ताहरउ जोवन जाइ लहरे, तुं छइ चतुर सुजाण ए ॥
एहवइ धीरिज रहइ ते धन, परलोक सुख पाव ए ।
पणि करम नइ वसि पड्यउ प्राणी, एक दिन एकांत आवए ॥ ५ ॥

एह सराग वचन सुणी, मुहड़इ आंगुली देयो जी ।
भउजाई कहइ मत भणइ, लोक मइं लाज मरेयो जी ॥
लोक मइं लाज मरेय बांधव, थको इम किम बोलियइ ।
धीरिज धरंता धरम थायइ, धरम थी नवि डोलियइ ॥
उपाय मांड्यउ अधम राजा, भाई नउ मारण भणी ।
कामान्ध माणस किसुं न करइ, ए सराग वचन सुणी ॥ ६ ॥

भाई मारि भूँडउ कियउ, हुयउ हाहाकारो जी ।
शील राखण नारी सती, शील वड़उ संसारो जी ॥
शील वड़उ जाणी जसोभद्रा, साथ मइं भेली थई ।
हा दैव ! स्युं थयुं दुःख करती, सारथी संगि गई ।

पाधरी पहुँती धरमसाला, साधवी धरम सुणावियउ ।
चारित लीधउ चतुर नारी, भाई मारि भुंडउ कीयउ ॥ ७ ॥

ढाल बीजी । राग—कालहरउ, तुङ्गिया गिरि शिखरि सोहइ
अथवा—बूझि रे तूं बूझि प्राणी ए गीत नी ढाल.

भली साधवी यशोभद्रा, पालइ पंचाचार रे ।
विनय वेयावच वरइ चारू, गिणइ गुरुणी नी कार रे । १ । भ.।
एक दिन पेट नउ गरभ दीठउ, गुरुणी पूछ्यउं स्युं एह रे ।
पति नउ गरभ ए हुतउ पहिलउ, नहिं पछिलउ निसंदेह रे ।२। भ.।
बाई तुं बाहिर म जाई, करिस्यां अम्हे सहु काज रे ।
गुरु गुरुणी मा बाप सरिखा, राखै छोरू लाज रे । ३ । भ.।
पूरे मासे पुत्र जायउ, नामइ खुल्ल कुमार रे ।
सज्यातरी श्राविका पाल्यउ, पड़दा पोश प्रकार रे । ४ । भ.।
आठ वरस नउ थयउ एहवइ, माता नी मानी सीख रे ।
आचारिज श्री अजितसूरि नइ, पासइ लीधा दीख रे । ५ । भ.।
सूत्र सिद्धांत भण्या भली परि, बार वरस थया जाम रे ।
हरिहर ब्रह्मा जिण हराव्या, ते तसु जाग्यउ काम रे । ६ । भ.।
मा पास जइ कहइ मुनिवर, मन नहीं माहरुं ठाम रे ।
आ ल्यइ ओघउ मुंहपती तुं, को नहीं माहरइ काम रे । ७ । भ.।
कठिन लोचनइ कठिन क्रिरिया, कठिन मारग जोग रे ।
सील पालिवउ नहीं सोहिलउ, हुँ भोगविसुं काम भोग रे। ८ । भ.।

साधवी माता कहइ सांभलि, भुंडा ए काम भोग रे।
आलिंगन लोह पूतली सुं, परमाइम्मी प्रयोग रे। ६। भ.।
कुण जाणइ आगल किस्युँ छइ, प्रत्यक्ष मीठउप्रेम रे।
गुरुणी कीर्तिमती छइ माहरइ, ते कहइ तुं करि तेम रे।१०। भ.।
सीख द्यउ मुझ शील न पलइ, मुझ तुमे मात समान रे।
बार वरस रह्यो मां नइ आग्रहइ, बार वरस मुझ मान रे।११। भ.।
क्षुल्लक मांहि दाक्षिण्य भलउ, ते पणि मानी बात रे।
बार वरस जिम तिम रह्यौ, पणि धुरिली न गई धात रे।१२। भ.।
गुरुणी कहइ गुरु पासि जा तुं, जिणि तुँनइ दीधी दीख रे।
गच्छनायक पासि जइ कहइ, सामी द्यउ मुझ सीख रे।१३। भ.।
गच्छनायक प्रतिबोधि दीधउ, पणि लागउ नहीं कोई रे।
करम विवरउ न द्यइ त्यां सीम, जीव नउ जोर न होइ रे।१४। भ.।
आचारिज कहइ गच्छ अम्हारउ, उपाध्याय नइ हाथि रे।
एकला अम्हे कांइ न करुं, सहु उपाध्याय साथि रे।१५। भ.।
मन विना पणि वचन मानी, पहुँतउ उपाध्याय पासि रे।
उपाध्याय कहइ परखि इणि परि, वलि सउ तिम पंचास रे।१६। भ.।
बार वरस लगि रह्यउ अबोलउ, दाखिण गुण निसदीस रे।
ऊचल चिच चिच रह्यउ इसी परि, वरस अठतालीस रे।१७। भ.।
आंपणी माता पासि आव्यउ, बोलइ बेकर जोडि रे।
आ ओघउ हुं रहि न सकुं, जाउं छुं व्रत छोडि रे।१८। भ.।
मोहनी वसि कहइ माता, संपति विणुं नहीं सुख रे।
पीतरिया पासि जा तुं पाधरउ, देखिस नहीं तरि दुःख रे।१९। भ.।

रतन कंबल मुंद्रड़ी ल्यइ, करिस्यइ ए सहु काज रे।
इण दीठइ आपस्यइ तुझ नइ, आधउ आपणउ राज रे।२०। म.।
रिपड़उ रमतउ थकउ, चाल्यउ चंचल चित्त रे।
उतावलउ आव्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे।२१। म.।

ढाल त्रीजी, जाति परिया नी। सखि जादव कोडि सुं परिवरे प्रियु
आये तोरण बारि रे एह गीत नी ढाल॥

तिणि अवसर नाटक तिहां राजा, आगला पड़इ राति रे।
मिली खलक लोगाई, बयरो मांटी बहु भांति रे। १।
नड़ई नाटक करइ, मुखि गायइ मीठा गीत रे।
नर नारी मोही रह्या, पणि रीझइ नहीं चित्त रे। २। न.।
राति सारी नड़ई रमी, पणि द्यइ नहीं राजा दान रे।
नड़ई नीरस थइ भमती, भांजइ तान मान रे। ३। न.।
दिलगीर दान विना थई, ऊँघ सेती आंखि घोलाई रे।
नड़यउ गाथा कही, रंग मइ भंग म करे काई रे। ४। न.।

गाथा यथा—सुट्ठु गाईयं सुट्ठु वाइयं सुट्ठु नच्चिय साम सुन्दरि
अणुपालियं दीह रायं सुमिणं ते मास मास माय ए॥१॥

रतन कंबल चुल्लक दीयउ, कुमरइ दिया कुण्डल दोइ रे।
मुहतइ कड़्यो आपियउ, राजा निजरि जोय रे। ५। न.।
अंकुश पीलवाण आपियउ, सार्थवाही दीयउ हार रे।
ए पांचे अति रंजिया, तिण दीधउ दान अपार रे। ६। न.।

लाख लाख मोल पांचनउ, नट्टइ हुई सबल निहाल रे।
बीजे पणि लोके, मन मान्यउ दीधो माल रे।७।न.।
रीस करी राय ऊठियउ, परभाते तेड्या पंच रे।
पहिलउ दान किम दियउ खरइ, कहइं ते नहिं खल खंच रे।८।न.।
कुमर कहइ राजि सांभलउ, मुझनइ तुम्हे द्यउ नहीं राज रे।
नाटक उठतां पछी, राजा मारी लेउं आज रे।९।न.।
एहवइ नाटकणी दियउ, मुझ नइ प्रतिबोध अपार रे।
घणउ काल गयउ हिव थोड़इ, लियइ जनम म हारि रे।१०।न.।
मंत्रि कहइ राजि संभलउ, मुझ नइ न धउ वाडी ग्रास रे।
आज वयरी वेढ़ि नइ, राज तणउ करूँ नास रे।११।न.।
क्षुल्लक ऋषि बोल्यउ खरउ, दोक्षा मांहि दीठा दुक्ख रे।
आज आथउ राज लेईनइ, संसार ना भोगवुं सुक्ख रे।१२।न.।
मीठ कहइ राजि मुझनइ, तुं द्यइ नहीं पूरउ ग्रास रे।
हाथी नइ अपहरी, जाएयुं जासुं बीजा पासि रे।१३।न.।
सार्थवाही साचूँ कहउ, आज लोपसि कुलाचार रे।
बार बरस पूरा थया, अजी नाव्यउ मुझ भरतार रे।१४।न.।
राजा कहइ पांचां प्रति, हूँ पूरूं सगली आस रे।
पणि ते पांचइ कहइ अम्हे, न पडुं पाप नइ पासि रे।१५।न.।
अम्हे काम भोग थी ऊभगा, जाणयउ संसार असार रे।
जोवन धन कारिमुं, अम्हे संजम लेस्युं सार रे।१६।न.।

—:o:—

ढाल चउथी—नीबड़ियानी अथवा चरण करण धर मुनिवर वंदियइ
ए—श्री पुण्यसागर उपाध्याय नी कीधी साधु वंदना नी ढाल।

ए पांच जणे संजम आदर्यउ, श्री सद्गुरु नइ पासो जी।
अचरिज लोक सहू नइ उपनउ, सहु आपइ साबासो जी। १ ए.।
पाप थकी पाछा वल्यां, सफल कियउ अवतारो जी।
तप जप किरिया कीधी आकरी, पाम्यउ भव नउ पारो जी। २ ए.।
चुल्लक कुमर मांहे सबलउ हुंतउ, दाक्षिण गुण अभिरामो जी।
पाप करंतां विचमें विलंब करी, आणयउ शुभ परिणामो जी। ३ ए.।
परमादइ पहिलुं हुयइ पापिया, पछइ आणयउ मन ठामो जी।
दशवैकालिक सूत्र मांहे कह्यौ, ते उत्तम गति पामो जी। ४ ए.।
ते पांचे प्रतिबूधा देखि नइ, प्रतिबूधा बहु लोको जी।
समकित श्रावक ना व्रत आदर्या, जीवदया यथा योगो जी। ५ ए.।
श्रावक श्राविका सहु को सांभलउ, तुम्हे छउ चतुर सुजाणो जी।
जन्म जीवित सफल ऊ करउ आपणउ, करउ आखड़ी पचक्खाणो जी
संवत सोलइ सइ चउराणुयइ, श्री जालोर मझारो जी।
समयसुन्दर चउमासउ इहां रह्या, जाणयउ लाभ जिवारो जी।७ ए.।
लूणीए कमले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासो जी। ।
रूड़ी रहणी देखी रंजिया, सहु को कहइ साबासो जी। ८ ए
लूणिया कमला दृढ़ साउंसखा, सकज कांकरिया साहो जी।
जिनसागरसूरि श्रावक थया, आणी मनि उल्लासो जी। ६ ए.।
रिषि मंडल टीका थकी उद्धर्यो, चुल्लक कुमर नउ रासो जी।
समयसुंदर कहइ सामग्री सदा, लहिज्यो लील विलासो जी।१० ए.।

सर्वगाथा ५४ इति श्री क्षुल्लक रासः समाप्तः।

श्री शत्रुंजय तीर्थ रास[†]

श्री रिसहेसर पय नमी, आणी मनि आणंद ।
रास भणुं रलियामणउ, सत्रुञ्ज नउ सुखकंद ॥१॥
संवत च्यार सत्योतरइ, हुयउ धनेसरसूरि ।
तिण सेत्रुंज महातम कीयउ, सिलादित्त हजूरि ॥२॥
वीर जिणिंद समोसर्या, सेत्रुंज उपरि जेम ।
इंद्रादिक आगइ कह्यउ, सेत्रुंज महातम एम ॥३॥
सेत्रुंज तीरथ सारखउ, नहीं छइ तीरथ कोय ।
सर्ग* मृत्य पाताल मइ, तीरथ सगला जोय ॥४॥
नामइ नवनिध संपजइ, दीठां दुरित पलाय ।
भेटंता भवभय टलइ, सेवतां सुख थाइ ॥५॥
जंबू नामइ दीप ए, दक्षिण भरत मझार ।
सोरठ देस सोहामणउ, तिहां छइ तीरथ सार ॥६॥

† १८वीं शती के भक्तिविशाल के ओसियां में लिखित प्रति में प्रारम्भ में निम्नोक्त दो श्लोक अधिक हैं—

श्री शत्रुञ्जय तीर्थस्य संति रासा अनेकशः ।
प्रवर्त्तमानास्सर्वत्र नाना कवि विनिर्म्मिताः ॥१॥
परं मया स्वजिह्वायाः पवित्र करणार्थिना ।
ग्रन्थानुसारतश्चक्रे रासः स्वपरहेतवे ॥२॥ युग्मम्
कृतं श्री समयसुन्दरैः ।

* स्वर्ग मृत्यु

ढाल पहिली—नयरी द्वारामती कृष्ण नरेस एहनी, राग रामगिरि ।

सेत्रुञ्ज[1] नइ श्री पुण्डरीक[2], सिद्धक्षेत्र[3] कहुं तहतीक ।
विमलाचल[4] नइ करूँ प्रणाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥१॥
सुरगिरि[5] नइ महागिरि[6] पुण्यरासि[7], श्रीपद पर्वत इंद्रप्रकासि ।
महातीरथ[8] पूरवइ सुखकाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥२॥
सासतउ पर्वत नइ दृढशक्ति, मुक्ति निलउ तिण कीजइ भक्ति ।
पुष्पदंत महापद्म सुठाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥३॥
पृथिवीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ।
सर्व कामद कीजइ गुण गाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥४॥
ए सेत्रुञ्ज नां एकवीस नाम, जपइ जे बइठइ[¶] अपणी ठाम ।
सेत्रुञ्ज यात्रा नउ फल लहइ, महावीर भगवंत इम कहइ ॥५॥

सर्व गाथा ११

दूहा

सेत्रुञ्जउ पहिलइ अरइ, असी जोयण परिमाण ।
पहिलउ मूलइ ऊँच पणि, छब्बीस जोयण जाणि ॥१॥
सत्तरि जोयण जाणिवउ, बीजइ अरइ विसाल ।
वीस जोयण ऊँचउ कह्यउ, मुझ वंदणा त्रिकाल ॥२॥
साठ जोयण त्रीजइ अरइ, पिहुलउ तीरथराय ।
सोल जोयण ऊँचउ सही, ध्यान धरूँ चितलाय ॥३॥

¶ बैठी आपणी ।

पंचास जोयण पहिलपणि, चउथइ अरइ मझारि ।
उंचउ दस जोयण अचल, नित प्रणमइ नरनारि ॥४॥
बार जोयण पंचम अरइ, मूल तणउ विस्तार ।
दो जोयण उंचउ अछइ, सेत्रुञ्ज तीरथ सार ॥५॥
सात हाथ छइ अरइ, पहिलउ परवत एह ।
उँचउ होस्यइ सउ धनुष, सासतउ तीरथ तेह ॥६॥
सर्वगाथा १७

ढाल बीजी—जिणवर सूं मेरो मन लीणउ, राग आसावरी

केवलज्ञानी प्रमुख तिर्थंकर, अनंत सीधा इण ठाम रे ।
अनंत वली सीझस्यइ इण ठामइ, तिण करूँ नित्य परणाम रे । १ ।
सेत्रुञ्ज साध अनंता सीधा, सीझस्यइ वलिय अनंत रे ।
जिण सेत्रुञ्ज तीरथ नहिं भेट्यउ, ते गभवास कहंत रे । २ । से. ।
फागुण सुदि आठमिनइ दिवसइ, ऋषभदेव सुखकार रे ।
राइखि रूंखि समोसरचा सामी, पूरव निवाणूँ वार रे । ३ । से. ।
भरतपुत्र चैत्री पुनिम दिन, इण सेत्रुञ्ज गिर आई रे ।
पांच कोडि सूं पुंडरीक सीधा, तिण पुंडरीक कहाइ रे । ४ । से. ।
नमि विनमी राजा विद्याधर, बि बि कोडि संगाति रे ।
फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमूँ परभाति रे । ५ । से. ।
चेत्रमास वदि चउदस नइ दिन, नमि पुत्र चउसट्ठि रे ।
अणसण करि सेत्रुञ्जगिरि ऊपरि, ए सहु सीधा एकट्ठि रे । ६ ।

पोतरा प्रथम तिर्थंकर केरा, द्राविड नइ [1]वालखिल्ल रे।
काती सुदि पुनिम दिन सीधा, दस कोडि मुनि सुं निसल्ल रे। ७। से.।
पांचे पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद रिषीराय रे।
संब प्रजूण गया इहां मुगति, आठे करम खपाय रे। ८।से.।
नेमि विना तेवीस तिर्थंकर, समोसरचा गिरि शृङ्गि रे।
अजित शांति तिर्थंकर बेऊ, रह्या चौमासउ रंगि रे। ९।से.।
सहस साधु परिवार संघाति, थावच्चा सुत साध रे।
पांचसइ साध सूं सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्ज शिवसुख लाधरे।१०।से.।
असंख्यात मुनि सेत्रुञ्ज सीधा, भरतेसर नइ पाट रे।
राम अनै भरतादिक सीधा, मुगति तणी ए वाट रे।११।से.।
लालि मयालि अनै उवयालि, प्रमुख साधुनी कोडि रे।
साध अनंता सेत्रुञ्ज सीधा, प्रणमूं बेकर जोडि रे।१२।से.।
सर्वगाथा २६

ढाल त्रीजी चउपई नी

सेत्रुञ्जना कहूँ सोल उद्धार, ते सुणिज्यो सहु को सुविचार।
सुणतां आणंद अंगि न माइ, जनम जनम ना पातक जाइ॥ १॥
रिषभदेव अयोध्यापुरी, समोसरचा सामी हित करी।
भरत गयउ वंदणनइ काजि, ए उपदेस दियउ जिनराजि॥ २॥
जग मांहि मोटा अरिहंत देव, चउसट्ठि इंद्र करउ जसु सेव।
तेथी मोटउ संघ कहाय, जेहनइ प्रणमइ जिणवर राय॥ ३॥

---

[1] बार

तेथी मोटउ संघवी कहयउ, भरत सुणी नइ मन गह गह्यउ ।
भरत कहइ ते किम पामियइ, प्रभू कहइ सेत्रुञ्ज यात्र कीयइ ॥ ४ ॥
भरत कहइ संघवी पद मुज्झ, ते आपउ हूं अंगज तुज्झ ।
इंद्रइ आएया अक्षत वास, प्रभु आपइ संघवी पद तास ॥ ५ ॥
इंद्रइ तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहूँ नइ माल ।
पहिरावी घरि संप्रेडिया, सखर सोना ना रथ आपिया ॥ ६ ॥
रिषभदेव नी प्रतिमावली, रतन तणी दीधी मन रली ।
भरतइ गणधर घर तेड़िया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥
कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेड़ाया संघ असेस ।
आया संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथयात्रा करी ॥ ८ ॥
संघ भगत कीधी अति घणी, संघ चलायउ सेत्रुञ्ज भणी ।
गणधर बाहुबलि केवली, मुनिवर कोडि साथि लिया वली ॥ ९ ॥
चक्रवर्ती नी सगली रिद्धि, भरतइ साथि लीधी सिद्धि ।
हय गय रथ पायक परिवार, ते तउ कहतां न आवइ पार ॥१०॥
भरतेसर संघवी कहिवाय, मारगि चैत्य उधरतउ जाय ।
संघ आयउ सेत्रुञ्जा पासि, सहु नी पूगी मन नी आस ॥११॥
नयणे निरख्यउ सेत्रुञ्जराय, मणि माणिक मोती सूँ वधाय ।
तिण ठामइ रहि महुछव कियउ, भरतइ आणंदपुर वासियउ ॥१२॥
संघ सेत्रुंजा ऊपरि चढ्यउ, फरसंतां पातक झड़ि पड्यउ ।
केवलज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्या रायण रूँख छइ जिहां ॥१२॥
केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईसानेंद्र आणि सुपवित्त ।
नदी सेत्रुंजी सुहामणि, भरतइ दीठी कौतुक भणि ॥१४॥

गणधर देव तणइ उपदेस, इंद्रइ वलि दीधउ आदेस ।
आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि सेहरउ ॥१५॥
सोना नउ प्रासाद उचङ्ग, रतन तणी प्रतिमा मन रंग ।
भरतइ श्री आदीसर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥
मरुदेवी नी प्रतिमा वली, माही पुनिम थापी रली ।
ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्रासाद, भरतइ थाप्या नवल* निनाद ॥१७॥
इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद ।
भरत तणउ पहलउ उद्धार, सगलउ ही जाणइ संसार ॥१८॥
सर्वगाथा ४७

ढाल चौथी-राग आसाउरी-सिंधुडउ ।
(जीवड़ा जिन ध्रम कीजयइ, एहनी ढाल)

भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडवीरज थयउ रायो जी ।
भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ।१।
सेत्रुंज उद्धार सांभलउ, सोल मोटा श्रीकारो जी ।
असंख्यात बीजा वली, तेनहि† कहूँ अधिकारो जी ।२। से. ।
चैत्य करायउ रूपा तणउ, सोना नउ विंब सारो जी ।
मूलगउ विंब भंडारियउ, पछिम दिस तिण वारो जी ।३। से. ।
सेत्रुंज नी यात्रा करी, सफल कीयउ अवतारो जी ।
दंडवीरज राजा तणउ, ए बीजउ उद्धारो जी ।४। से. ।
सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जिवारो जी ।
ईसानेंद्र करावियउ, ए त्रीजउ उद्धारो जी ।५। से. ।

---

* नवलइ नाद † तेहना

चउथा देवलोक नउ धणी, माहेन्द्र नाम उदारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ कराविउ, ए चउथउ उद्धारो जी।६। से.।
पांचमा देवलोक नउ धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ कराविउ, ए पांचमउ उद्धारो जी।७। से.।
भवनपती इंद्र नउ कियउ, ए छट्ठउ उद्धारो जी।
चक्रवर्त्ती सगर तणउ कियउ, ए सातमो उद्धारो जी।८। से.।
अभिनंदन पासइ सुणयउ, सेत्रुंज नउ अधिकारो जी।
व्यंतर इंद्र कराविउ, ए आठमउ उद्धारो जी।९। से.।
चंद्रप्रभ सामि नउ पोतरउ, चंद्रशेखर नांउ मल्हारो जी।
चंद्रजसराय कराविउ, ए नवमउ उद्धारो जी।१०। से.।
शान्तिनाथ नी सुणि देशणा, शांतिनाथ सुत सुविचारो जी।
चक्रधर राय कराविउ, ए दसमो उद्धारो जी।११। से.।
दशरथ सुत जगि दीपतउ, मुनिसुव्रत सामि वारो जी।
श्री रामचन्द्र कराविउ, ए इग्यारमउ उद्धारो जी।१२। से.।
पंडव कहइ अम्हे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी।
कहइ कुंती सेत्रुंज तणी, जात्रा कियां पाप जायो जी।१३। से.।
पांचे पांडव संघ करि, सेत्रुंज भेट्यउ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बिंब लेपनउ, ए बारमो उद्धारो जी।१४। से.।
मम्माणी पाषाण नी, प्रतिमा सुन्दर रूपो जी।
श्री सेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपो जी।१५। से.।
अट्ठोतर सउ वरस गयां, विक्रम नृपथी जिवारो जी।

पोरुयाड* लावड़ करावियउ, ए तेरमो उद्धारो जी ।१६।से.।
संवत बार तिरोतरइ, श्रीमाली सुविचारो जी ।
वाहडदे मुँहतइ करावियउ, ए चवदमउ उद्धारो जी ।१७।से.।
संवत तेर इकोतरइ[†], देसलहर अधिकारो जी ।
समरइ साह करावियउ, ए पनरमउ उद्धारो जी ।१८।से.।
संवत पनर सित्यासियइ, वैसाख वदि सुभ वारो जी ।
करमइ दोसी करावियउ, ए सोलमउ उद्धारो जी ।१९।से.।
संप्रति कालइ सोलमउ, ए वरतइ छइ उद्धारो जी ।
नित नित कीजइ वंदना, पामीजइ भव पारो जी ।२०।से.।

सर्वगाथा ६७

दूहा

वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांभलउ जिम छइ तेम ।
सूरि धनेसर इम कहइ, महावीर कहइ एम ॥१॥
जेहवउ तेहवउ दरसणी, सेत्रुंजइ पूजनीक ।
भगवंत नउ वेस वांदता[¶], लाभ हुवइ तहतीक ॥२॥
श्री सेत्रुंजा ऊपरइ, चैत्य करावइ जेह ।
दल परमाणू समलहइ[‡], पल्योपम सुख तेह ॥३॥
सेत्रुञ्ज ऊपरि देहरउ, नवउ नीपावइ कोय ।
जीरणोद्धार करावतां, आठ गुणउ फलहोय ॥४॥
सिर ऊपर गागरि धरि, स्नात्र करावइ नारि ।
चक्रवर्ति नी अस्त्रीं थई, सिव सुख पामइ सार ॥५॥

---

* पोरवाड़, † एकोतरइ, ¶ मानता, ‡ समो

काती पुनिम सेत्रुञ्जइ, चडि* नइ करइ उपवास ।
नारकी सउ सागर समउ, नर करइ करमनउ नास ॥६॥
काती परब मोटउ कह्यउ, जिहां सीधा दस कोडि ।
ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पाप थी नांखइ छोडि ॥७॥
सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेखि ।
सेत्रुँज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि ॥८॥
सर्वगाथा ७५

ढाल पांचमी—धन धन अवंती सुकुमाल नइ, एहनी
राग—बइराड़ी

सेत्रुंज गया पाप छूटियइ, लीजइ आलोयण एमो जी ।
तप जप कीजइ तिहां रही, तीर्थंकर कह्यउ तेमो जी ।१। से. ।
जिण सोना नी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ।
चैत्री दिन सेत्रुंज चडी, एक करइ उपवासो जी ।२। से. ।
वस्त्र तणी चोरी करी, सात आंबिल सुध थायो जी ।
काती सात दिन तप कीयां, रतन हरण पाप जायो जी ।३। से. ।
कांसी पीतल त्रांबा रजतणी, चोरी कीधी जेणो जी ।
सात दिवस पुरमढ करइ, तउ छूटइ गिरि एणो जी ।४। से. ।
मोती प्रवाली मुंगिया, जिण चोर्या नरनारो जी ।

* चढी

अंबिल करी पूजा करइ, तिण[१] टंक सुध[२] आचारो जी ।५। से. ।
धांन पाणी रस चोरिया, ते[३] भेटइ सिध[४]खेत्रो जी ।
सेत्रुंज तलहटी साध नइं, पडिलाभइ सुध[५] चितो जी ।६। से. ।
वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटइ इण मेलो जी ।
आदिनाथ नी पूजा करइ, प्रहऊठी त्रिहुँ वेलो जी ।७। से. ।
देवगुरु नउ धन जे हरइ, ते सुध थायइ एमो जी ।
अधिक द्रव्य खरचइ तिहां, पात्र पोषइ बहु प्रेमो जी ।८। से. ।
गाइ भइंसि घोडा मही, गज गृह चोरणहारो जी ।
द्यइ ते ते वस्तु तीरथइ, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ।९। से. ।
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखइ आंपणउ नामो जी ।
छूटइ छम्मास[६] तप कीयां, सामायिक तिण ठामो जी ।१०। से. ।
कुमारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारो जी ।
व्रत भांजइ तेहनइ कह्यउ, छम्मासी तप सारो जी ।११। से. ।
गो विप्र स्त्री बालक रिषी, एहनउ घातक जेहो जी ।
प्रतिमा आगइ आलोयतउ*, छूटइ तप करि तेहो जी ।१२। से. ।

सर्वगाथा ८७

ढाल छट्ठी—रिषभप्रभु पूजीयइ, एहनी
राग—धन्यासिरी

सांप्रत† कालइ सोलमउ ए, भरतइ छइ उद्धार ।
सेत्रुँज जात्रा करूँ ए, सफल करूँ अवतार । १ । से. ।

---

१ तिण, २ शुद्ध, ३ जे, ४ सिद्ध, ५ शुभ, ६ छमासी
* आलोयतां, † सम्प्रति

छआरी[¶] पालतां चालीयइ, सेत्रुञ्ज केरी वाट । से.।
पालीताणइ पहुँचीय ए, संघ मिल्या बहु थाट । २ । से.।
ललित सरोवर पेखीयइ ए, वली सत्ता नी वावि । से.।
तिहां वीसामउ लीजीयइ ए, वड नइ चउतर आवि । ३ । से.।
पालीताणा पाजडी ए, चडियइ ऊठि परभाति । से.।
सेत्रुञ्ज नदीय सोहामणी ए, दूरि थकी देखात । ४ । से.।
चडियइ हींगुलाज नइ हडइ ए, कलि कुँड नमियइ पास । से.।
बारी माहे पइसीयइ ए, आणी अंगि उल्हास । ५ । से.।
मरुदेवी टूँक मनोहरु ए, गज चडी मरुदेवी माय । से.।
सांतिनाथ जिण सोलमउ ए, प्रणमीजइ तसु पाय । ६ । से.।
वंस पोरुयाडइ परगडउ ए, सोमजी साह मल्हार । से.।
रूपजी संघवी करावीयउ ए, चउमुख मूल उद्धार । ७ । से.।
चउमुख प्रतिमा चरचीयइ ए, भमती मांहि भला बिंब । से.।
पांचे पांडव पूजीयइ ए, अदबुद आदि प्रलंब । ८ । से.।
खरतर वसही खांति सुँ ए, बिंब जुहारूं अनेक । से.।
नेमिनाथ चउरी* नमुँ ए, टालुं अलग उदेक[†] । ९ । से.।
धरमद्वार मांहि नीसरुं ए, कुगति करुं अति दूर । से.।
आबुं आदिनाथ देहरइ ए, करम करूँ चकचूर । १० । से.।
मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत । से.।
देव जुहारूँ देहरी ए, भमती मांहि भमंत । ११ । से.।

¶ छहरी, * चवरी, † उदेगउ

सेत्रुञ्ज ऊपरि कीजीयइ ए, पांचे ठामे सनात्र। से.।
कलस अट्ठोतर सउ करी ए, निरमल नीर सुगात्र।१२ से.।
प्रथम आदीसर आगलइ ए, पुण्डरीक गणधार। से.।
रायणि नइ पगलां वली ए, शांतिनाथ सुखकार।१३। से.।
रायणि तलि पगलां नमुँ ए, चउमुख प्रतिमा च्यार। से.।
बीजी भूमि विंबा* वली ए, पुण्डरीक गणधार।१४। से.।
सूरज कुण्ड निहालीयइ ए, अति भलि उलखी‡ झोल। से.।
चेलणा तलाई सिधसिला ए, अंगि फरसुँ उल्लोल।१५। से।
आदिपुर पाज ऊतरूँ ए, सिधवड लुं विश्राम। से.।
चेत्र परिवड इण परि करी ए, सीधा वंछित काम।१६। से.।
जात्रा करी सेत्रुञ्ज तणी ए, सफल कीयउ अवतार। से.।
कुसल खेमसुँ आवीयउ ए, संघ सहु सपरिवार।१७। से.।
सेत्रुञ्ज रास सोहामणउ, सांभलजो सहु कोय। से.।
घरि बइठां भणइ भाव सुं ए, तसु जात्रा फल होय।१८। से.।
संवत सोलसइ ब्यासीयइ ए, श्रावण वदि सुखकार। से.।
रास भणयउ सेत्रुंज तणउ, नगर नागोर मझार।१९। से.।
गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, श्री जिणचंद सूरीस से.।
प्रथम शिष्य श्री पूज्य ना ए, सकलचंद सुजगीस।२०। से.।
तासु सीस जगि परगडा ए, समयसुन्दर उवझाय। से.।
रास रच्यउ लिख रूयडउ ए, सुणतां आणंद थाय।२१। से.।

* बिंब, ‡ उलखा

परवर्ती प्रति में अंत में निम्नोक्त दो गाथाएँ अधिक हैं —

भणसाली थिरु अति भलो ए, दयावंत दातार। से.।
सेत्रुञ्ज संघ करावीयउ ए, जेसलमेर मझार।२२। से।
सेत्रुञ्ज महातम ग्रन्थ नइ ए, रास रच्यो अनुसार। से.।
भाव भगति सुणतां थकां ए, पामीजइ भवपार।२३। से.।

सर्वगाथा १०८ इति श्री शत्रुञ्जय रास सम्पूर्णः।

सं० १६८३ वर्षे बीकानेर मध्ये शिष्य पंचाइण लिखतं।



दानशील तप भाव संवाद शतक

प्रथम जिणेसर पय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद।
दान सील तप भावना, वोलिसि वहु संवाद ॥१॥
वीर जिणिंद समोसर्या, राजगृह उद्यान।
समोवसरण देवे रच्युँ, वयठा श्री व्रधमान ॥२॥
बइठी वारह परषदा, सुणिवा जिणवर वाणि।
दान कहइ प्रभु हूं वडउ, मुझ नइ प्रथम वखाणि ॥३॥
सांभलिज्यो सहु को तुम्हे, कुण छइ मुझ समान।
अरिहंत दीक्षा अवसरइं, आपइं पहिलुँ दान ॥४॥
प्रथम पहरि दातार नुँ, ल्यइ सहु कोई नाम।
दीधां री देवल चडइं, सीझइ वंछित काम ॥५॥

तीर्थंकर नइ पारणे, कुण करसइ मुझ होडि ।
वृष्टि करूँ सोवन तणी, साढी वारह कोडि ॥६॥
हुँ जग सगलउ वसि करुं, मुझ मोटी छइ बात ।
कुण कुण दान थकी तर्या, ते सुणिज्यो अवदात ॥७॥

ढाल—मधुकर नी

धनसारथवाहे साधु नइ, दीधुं घृत नुं दान । ललना ।
तीर्थंकर पद मइं दीउं, तिण मुझ ए अभिमान। ल.। १ ।
दान कहइ जगि हुँ वडउ, मुझ सरिखउ नही कोय । ल.।
रिद्धि समृद्ध सुख संपदा, दानइ दउलति होइ । ल.।२ दा.।
सुमुख नाम गाथापती, पडिलाभ्यउ अणगार । ल.।
कुमर सुबाहु सुख लहइ, ते तउ मुझ उपगार । ल.।३ दा.।
पांचसइ मुनि नइ पारणइ, देतउ विहरी आणि । ल.।
भरत थयउ चक्रवति भलउ, ते तउ मुझ फल जाणि । ल.।४ दा.।
मासखमण नइ पारणइ, पडिलाभ्यउ रिषीराय । ल.।
सालिभद्र सुख भोगवइ, दान तणइ सुपसाय । ल.।५ दा.।
आप्या उडद ना बाकुला, उत्तम पात्र विशेष । ल.।
मूलदेव राजा थयउ, दान तणा फल देखि । ल.।६ दा.।
प्रथम जिणेसर पारणइ, श्री श्रेयांस कुमार । ल.।
सेलडि रस विहराविथउ, पाम्यउ भवनउ पार । ल.।७ दा.।
चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर । ल.।

पंच दिव्य परगट थया, सुन्दर रूप सरीर।ल.।८दा.।
पूरव भव पारेवडउ, सरणइ राख्यउ सूर।ल.।
तीर्थंकर चक्रवति तणउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर।ल.।९दा.।
गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार।ल.।
श्रेणिक नइ घरि अवतर्यउ, अंगज मेघकुमार।ल.।१०दा.।
इम अनेक मइ ऊधर्या, कहतां नावइ पार।ल.।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पहिलउ मुझ अधिकार।ल.।११दा.।

दूहा

सील कहइ सुणि दान तुं, किसउ करइ अहंकार।
आडंबर आठे पहुर, याचक सुं विवहार ॥१॥
अंतराय वलि ताहरइ, भोग्य करम संसार।
जिणवर कर नीचो करइ, तुम्ह नइ पडउ धिकार ॥२॥
गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठइ सहु कोय।
चाकर चालइ आगलि, तउ स्युं राजा होइ ॥३॥
जिन मंदिर सोना तणउ, नवउ नीपावइ कोय।
सोवन कोडि को दान यइ, सील समउ नहि कोय ॥४॥
सीलइ संकट सवि टलइ, सीलइ जस सोभाग।
सीलइ सुर सानिध करइ, सील वडउ वइराग ॥५॥
सीलइ सर्प न आभडइ, सीलइ सीतल आगि।
सीलइ अरि करि केसरी, भय जायइ सब भागि ॥६॥

जनम मरण ना दुख थकी, मई छोडाव्या अनेक ।
नाम कहु हिव तेहना, सांभलिज्यो सुविवेक ॥७॥

ढाल—पास जिणंद जुहारीयइ एहनी

सील कहइ जगि हुं वडउ, मुझ वात सुणउ अति मीठी रे।
लालच लावइ लोक नइ, मइ दाण तणी वात दीठी रे।१ सी०।
कलिकारक जगि जाणियइ, वलि विरति नही पणि काइ रे।
ते नारद मइ सीझव्यउ, मुझ जोवउ ए अधिकाइ रे।१ सी०।
बांहे पहिर्यां बहिरखा, संख राजा दूषण दीधा रे।
काप्या हाथ कलावती, पणि मइ नवपल्लव कीधा रे।३ सी०।
रावणि घरि सीता रही, तउ रामचंद्र कां आणी रे।
सीता कलंक उतारीयउ, मइ पावक कीधुं पाणी रे।४ सी०।
चंपा बार उघाडीयां, वलि चालणि काढ्युं नीरो रे।
सती सुभद्रा जस थयउ, ते मइं तस कीधी भीरो रे।५ सी०।
राजा मारण मांडीयउ, राणी अभया दूषण दाख्यउ रे।
सूली सिंहासन थयु, मइ सेठ सुदरसण राख्यउ रे।६ सी०।
सील सनाह मंत्रीसरइं, आवंता अरिदल थंभ्या रे।
तिहां पणि सानिध मइं कीधी, वलि धरम कारज आरंभ्या रे।७ सी०।
पहिरण चीर प्रगट कीआ, मइ अट्ठोतर-सइ वारो रे।
पांडव हारी द्रूपदी, मइं राखी माम उदारो रे।८ सी०।
ब्राह्मी चंदनबालका, वलि सीलवंती दवदंती।
चेडा नी साते सुता, राजीमती सुन्दरि कुन्ती रे।९ सी०।

इत्यादिक मइ ऊधर्या, नरनारी केरा ‍ंदो रे।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलउ करउ आणंदो रे।१० सी०।

दूहा

तप बोल्यउ त्रटकी करी, दान नइ तु अवहीलि।
पणि मुझ आगलि तुं किस्यउ रे, तुं सांभलि सील ॥१॥
सरसा भोजन तइ तज्या, न गमइ मीठी नाद।
देह तणी सोभा तजी, तुझ नइ किस्यउ सवाद ॥२॥
नारि थकी डरतउ रहइ, कायरि किस्यउ वखाण।
कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखइ प्राण ॥३॥
को विरलउ तुझ* आदरइ, छांडइ सहु संसार।
एक आपतुं भाजतउ, बीजा भांजइ च्यार ॥४॥
करम निकाचित ओडवुं, भांजुं भव भड भीम।
अरिहंत तुझ नइ आदर्यउ, वरस छमासी सीम ॥५॥
रुचक नंदीसर पर्वतें, मुझ लवधइ मुनि जाय।
चैत्य जुहारइ सासतां, आणंद अंग न माय ॥६॥
मोटा जोयण लाखनां, लघु कंथुक आकार।
हय गयरथ पायक तणां, रूप करइ अणगार ॥७॥
मुझ कर फरसइ उपसमइ, कुष्टादिक ना रोग।
लवधि अट्ठावीस ऊपजइ, उत्तम तप संयोग ॥८॥
जे मइं तार्या ते कहुं, सुणिज्यो मन उल्लास।
चमतकार चित पामस्यउ, देस्यउ मुझ साबासि ॥९॥

* मुझ

ढाल—नणदल नी

दृढप्रहारि अति पापीयउ, हत्या कीधी च्यारि हो। सुन्दर।
ते मइं तिण भवि ऊधर्यउ, मुंक्यउ मुगति मझारि हो। सु. ।१।
तप सरिखउ जगि को नहीं, तप करइ करम नउ खड हो। सु.।
तप करतां अति दोहिलउ, तप मांहि नही को कूड हो। सु. ।२। त.।
सात माणस नित मारतउ, करतउ पाप अघोर हो। सु.।
अरजुन माली मइं ऊधर्यो, छेद्या करम कठोर हो। सु. ।३। त.।
नंदिसेण नइ मइ कीयउ, स्त्री वल्लभ वसुदेव हो। सु.।
बहुतरि सहस अंतेउरी, सुख भोगवइ नित मेव हो। सु. ।४। त.।
रूप कुरूप कालउ घणुं, हरिकेसी चंडाल हो। सु.।
सुर नर कोडि सेवा करइ, ते मइं कीधी चाल हो। सु. ।५। त.।
विष्णुकुमार लबधि कीयउ, लाख जोयण नउ रूप हो। सु.।
श्री संघ केरइ कारणइ, ए मुझ सकति अनूप हो। सु. ।६। त.।
अष्टापदि गौतम चड्या, वांद्या जिन चउवीस हो। सु.।
तापस पिण प्रतिबूझव्या, तिहि मुझ अधिक जगीस हो। सु. ।७। त.।
चउदस सहस अणगार मइं, श्री धन्नउ अणगार हो। सु.।
वीर जिणंद वखाणीयउ, ए पणि मुझ अधिकार हो। सु. ।८। त.।
कृष्ण नरेसर आगलइ, दुक्कर कारक एह हो। सु.।
ढंढण नेम प्रसंसीयउ, मुझ महिमा सवि तेह हो। सु. ।९। त.।
नंदिषेण विहरण गयउ, गणिका कीधुं हास हो। सु.।
वृष्टि करी सोनातणी, मइं तसु पूरी आस हो। सु.।१०।त.।

इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपसी जाव हो। सु.।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पहिलउ मुझ प्रस्ताव हो। सु.।११।त.।
सर्वगाथा ५५

दूहा

भाव कहइ तप तुं कीस्युं, छेह्यउ* करइ कषाय।
पूरव कोडि तप तुं तप्यउ, खिण मांहि खेरू थाय ॥१॥
खंदक आचारिज प्रतइं, तइं बालाव्यउ देस।
असुभ नित्राणउ तुं करइ, क्षमा नहीं लवलेस ॥२॥
दीपायन रिषि दूहव्यउ, संब प्रजूने साहि।
तइं तप क्रोध करी तिहां, कीधउ द्वारिका दाह ॥३॥
दानसील तप सांभलउ, म करउ जूठ गुमान।
लोक सहू बड़े साखि थइ, धरमइं भाव प्रधान ॥४॥
आप नपुंसक सहु त्रिण्हे, थइ व्याकरणी साखि।
काम सरइ नहीं को तुम्हे, भाव भणइ मो पाखि ॥५॥
रस विण कनक न नीपजइ, जल विण तरुवर वृद्धि।
रसवती रस नहीं लवण विण, तिम मुझ विण नहिं सिद्धि ॥६॥
मंत्र तंत्र मणि औषधि, देव धरम गुरु सेव।
भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलइ नित मेव ॥७॥
दानसील तप जे तुम्हे, निज निज कह्या वृतांत।
तिहां जउ भाव न हूत हु, तउ को सिद्धि न जांत ॥८॥
भाव कहइ मइं एकलइ, तार्या बहु नर नारि।
सावधान थइ सांभलउ, नाम कहुँ निरधारि ॥९॥

*छोयेद

ढाल चउथी—कपूर हुयइ अति ऊजलुं रे, एहनी

कांनन मांहि काउसग रह्यउ रे, प्रसनचंद रिपिराय।
ते मइं कीधउ केवली रे, ततखिण करम खपाय।१।
सोभागी सुन्दर भाव वडउ संसारि, एतउ बीजा मुझ परिवार।
दानादिक विण एकलउ रे, पहुँचाडुं भवपार।२।सो.।
वंस उपरि चड्यउ खेलतउ रे, इलापुत्र अपार।
केवलज्ञानी मइं कीयउ रे, प्रतिबोध्यउ परिवार।३।सो.।
भूख खमा वेउ अतिघणी रे, करतउ कूर आहार।
केवल महिमा सुर करइ रे, कूरगडू अणगार।४।सो.।
लाभ थी लोभ वाधइ घणउ रे, आणयउ मन वयराग।
कपिल थयउ ते केवली रे, ते मुझ नइ सोभाग।५।सो.।
अन्निका सुत गछ नउ धणी रे, खीण जंघा बल जाणि।
कीधउ अंतगड केवली रे, गंगाजलि गुण खाणि।६।सो.।
पनरहसइं तापस भणी रे, दीधी गोतम दीख।
ततखिण कीधी केवली रे, जउ मुझ मानी सीख।७।सो.।
पालक घाणी* पीलीआ रे, खंदक सूरि† ना सीस।
जनम मरण थी छोडव्या रे, आपउ मुझ आसीस।८।सो.।
चंडरुद्र निमि चालतइ रे, दीधा दण्ड प्रहार।
नव दीक्षित थयउ केवली रे, ते गुरु पणि तिणवार।९।सो.।
धन धन रथकार साधु नइ रे, पडिलाभइ उल्लासि।
मृगलउ भावन भावतउ रे, पहुतउ सुर आवास।१०।सो.।

*घाणी, †सु

निज अपराध खमावतो रे, मुंकी मन थी मान।
मृगावती नई मई दीयुं रे, निरमल केवलज्ञान।११।सो.।
मरुदेवी गज चडी मारगई रे, पेखी पुत्र नी रिद्धि।
मुझ नइ मनमांहे धर्यउ रे, ततखिण पामी सिद्धि।१२।सो.।
वीर वांदण चाल्यउ मारगइं रे, चांप्यउ चपल तुरंगि।
ददुर नामइं देवता रे, तेह थयउ मुझ संगि।१३।सो.।
प्रभु पाय पूजण नीसरी रे, दुर्गता नामइ नारि।
काल-धरम विचि मई करी रे, पहुती सरग मझारि।१४।सो.।
काया सोभा कारमी रे, मुंक्यउ मन अभिमान।
भरत आरीसा भवन मइं रे, पाम्युं केवलज्ञान।१५।सो.।
आषाढ भूति कला निलउ रे, प्रगट्यउ भरत सरूप।
नाटक करतां पामीयुं रे, केवलज्ञान अनूप।१६।सो.।
दीचा दिन काउसगि रह्यउ, गयसुकमाल मसाणि।
सोमिल सीम प्रजालीउं रे, सिद्धि गयउ सुह झाणि।१७।सो.।
गुणसागर थयउ केवली रे, सांभल्यउ पृथिवीचंद।
पोतइ केवल पामीयुं रे, सेव करइ सुरवृन्द*।१८।सो.।
इम अनंत मइं ऊधर्या रे, मुंक्या सिवपुर वासि।
समयसुन्दर प्रभु वीर जी रे, मुझ नइ प्रथम प्रकासि।१९।सो.।

दूहा

वीर कहइ तुम्हे सांभलउ, दानसील तप भाव।
निंदा छइ अवि पाइई, धरम करम प्रस्तावि ॥१॥

*१८

परनिंदा करतां थकां, पापइं पिंड भराइ ।
वेढि राढि वाधइं घणी, दुर्गति प्राणी जाइ ॥२॥
निंदक सरिखउ पापीयउ, भुंड उकोइ न दीठ ।
वलि चंडाल समउ कह्यउ, नंदक मुख अदीठ ॥३॥
आप प्रसंसा आपणी, करता इंद नरिंद ।
लघुता पामइ लोक मइ, नासइ निज गुणवृन्द ॥४॥
को केहनी म करउ तुम्हे, निंदा नइ अहंकार ।
आप आपणो ठामइ रह्यउ, सहु को भलउ संसार ॥५॥
तउ पणि अधिकउ भाव छइ, एकाकी समरत्थ ।
दानसील तप त्रिण भला, पणि भाव विना अकयत्थ ॥६॥
अंजन आंखे आंजतां, अधिकी आणि ए रेख ।
रज मांहे तज काढतां, अधिकउ भाव विशेष ॥७॥
भगवंत हठ भांजण भणी, च्यारे सरिखा गणंति ।
च्यार करी मुख आंपणा, चतुर्विध धरम भणंति ॥८॥

दुर्गति पडत्तां प्राणियां रे, राखइ श्री जिन धर्म ।
कुटंब सहू को कारिमुँ रे, मति भूलउ भव मर्मो रे ।४। ध०।
जीव जिके सुखीआ हूवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह ।
ते जिणवर ना धर्म थी रे, मति को करज्यो संदेहो रे ।५। ध०।
सोलइ सइ छासठि समइ रे, सांगानयर मझारि ।
पद्म प्रभु सुपसाउ लइ रे, एह भणयउ अधिकारो रे ।६। ध०।
सोहम सामि परंपरा रे, खरतरगछ कुलचंद ।
जुगप्रधान जगि परगडा रे, श्री जिनचंद सूरिंदो रे ।७। ध०।
तास सीस अति दीपतां रे, विनयवंत जशवंत ।
आचारिज चडती कला रे, श्री जिनसिंघसूरि महंतो रे ।८। ध०।
प्रथम शिष्य श्रीपूजना रे, सकलचंद तसु सीस ।
समयसुन्दर वाचक भणी रे, संघ सदा सुजगीसो रे ।९। ध०।
दानसील तप भावना रे, सरस रच्यउ संवादो रे ।
भणतां गुणता भावसुं रे, रिद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ।१०।ध०।

इति श्री दानसील तप भाव संवाद शतकं संपूर्णम् ।
सर्वगाथा १०१ ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक १३५ ।



पौषध-विधि गीतम्

जेसलमेरु नगर भलउ, जिहां श्री पास जिणंद ।
प्रह उठी नइ प्रणमतां, आपइ परमाणंद ॥ १ ॥
तासु चरण प्रणमी करी, पोषध विधि विस्तार ।
पमणुं श्रावक हित भणी, आगम नइ अनुसारि ॥ २ ॥
पोसउ पोसउ सहु कहइ, पोसउ करइ सहु कोइ ।
पण पोसा विधि सांभलउ, जिम निस्तारउ होइ ॥ ३ ॥

ढाल पहिली—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणउ, एहनी ढाल.

पहिलइ दिन रे, सांझ समइ उपग्रहण सहु।
पडिलेही रे, रुड़ी परि राखइ बहु ॥
पहिली रातइं रे, साधु समीपि आवी करी ।
राइ प्राछित रे. प्रथम करइ मन संवरी ॥
संवरी श्रावक करइ पोसउ, आठ पुहरि गुरु मुखइ ।
उचरइ दंडक त्रिण्ह वेला, सामाइक पणि तिणि रुखइ ॥
पछइ करइ पडिकमणउ आंतरणी, साधु वांदइंता गिणइ ।
कमभूमि अठावयंमि उसभो मंगलीक कुलक भणइ ॥ ४ ॥
पडिलेहण रे, अंग उही सगली करइं ।
उपासरउ रे, पुंजी काजउ ऊधरइं ॥
इरियावही रे, थापना आगइं पडिकमइं ।
करि सज्झाय रे, साधु सहुना पाय नमइ ॥

पाय नमइं सगला साधु केरा, सुणइं सुगुरु वखाण ए।
ध्यान करइ अथवा गुणइ, प्रकरण कहइ अरथ सुजाण ए॥
पुँण पहुर पडिलेहण करीनइ, मातरा पडिलेह ए।
जल घड़ा लोटी वाटका, पडिलेहवा वलि तेह ए॥ ५॥

गुरु सांथइ रे, चैत्य प्रवाडि करइ खरी।
देव वांदइ रे, शक्र स्तव पांचे करी॥
उपासिरइ रे, आवी इरिया पडी कमी।
आगमणउ रे, आलोयइ नीचउ नमी॥
नीचउ नमी बइसणइ भइसइ, मिच्छामि दुकड देहि नइं।
त्रिविहार हुयइ तउ पाणी पारइ, मुहपत्ती पडिलेह नइं॥
नउकार गुणतां पाठ भणतां, पहुर त्रीजइ दिवस रइ।
पडिकमी इरियावही पहिली, बेउ पडिलेहण करइ॥ ६॥

ध्रमसाला रे, पुंजी इरिया पडिकमी।
थे पालउ रे, थापना पडिलेही समी॥
मुहपत्ती रे, पडिलेही उभउ थई।
करइ गुरु मुखि रे, पच्चखाण मनि गह गई॥
गह गई आठे दे खमासण, वस्त्र सगला आंपणा।
पडिलेहिवा मातरा तिण परि, चलवला पुंजण तणा॥
देहनी चिता काजि जातां, कहइ भगवन आवस्सही।
मारगइं इरिया समिति सोभइ, आवता कहै निस्सही॥ ७॥

ढाल—श्रीजी, बीसामा रो गीतनी ढाल.

हिव भवियण तुम्हें सांभलउ जी, गुरु नइं नामी सीस ।
सामाइक पोसा तणा जी, दूषण टालउ बत्रीस ॥
बत्रीस दूषण बारह तनुना, मारि बइसइ पालठी ।
अति अथिर आसण दिष्टि चंचल, करइ काया एकठी ॥
करइ काम सावद्य ल्यइ उटिंगण आलस करडक मोड ए।
खणइ खाजि वीसामण करावइ उंघ करइ मल छोड ए ॥ ८ ॥
वचन तणा दूषण दसे जी, जाणउ एणि प्रकार ।
कुवचन बोलइ लोकनइ जी, घइ दोष सहसातकार ॥
सहसातकार कलंक घइ वलि आप छंदइ बोल ए ।
संखेप सूत्र कहइ आलावउ करइ कलह निटोल ए ॥
विकथा करइ उपहास मांडइ न राखइ पद संपदा ।
जा आवि बइठि तुं ऊठि एहवी कहइ भाषा सरवदा ॥ ६ ॥
दस दूषण हिव मन तणा जी, सांभलिज्यो चित एक ।
नून अधिक न लहइ क्रिया जी, मन मांहि नहीं य विवेक ॥
सुविवेक जस धन लाभ वांछइ करइ पोसउ बीहतउ ।
पोसउ करीनइ करइ नियाणउ पुत्र प्रमुख नइं ईह तउ ॥
अभिमान रीसइ करइं पोसउ धरइ फल संदेह ।
वलि विनय भगति सगार न करइ मन दूषण दस एह ॥१०॥
काया वचन नइ मन तणा जी, दूषण एह बत्रीस ।
जे टालइं दोष तेहनउ जी, पोसउ विसवा बीस ॥

वीस विसा बोलइ नहीं वलि उघाडइ मुखि आंपरइ ।
छूटी ग्रही सुं वात न करइ पांच दूषण परिहरइ ॥
उपवास करिनइ दिवस पोसउ कीधउ नहि निस करइ ।
एक पत्त छोडइ नहीं उत्तराध्यन अक्षर अनुसरइ ॥११॥
चउपरवी पोसउ कह्यउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि ।
हरिभद्र सूरि विवरउ कीयौजी, बावीस सहस्री सार ॥
बावीस सहस्री सार बोलै दिवस प्रति करिव्यौ नही ।
पोसहउ अथिति संविभाग वेऊ परव दिन करि वासही ॥
उद्दिष्ट सबद् तणउ अरथ हिव, सीलांगा-च्यारिज करइ ।
पोसउ पजूसण परव कल्याणक तिथि पणि आदरइ ॥१२॥
उपधाने पोसउ कह्यउ जी, सूत्र निसीथ प्रमाणि ।
त्रिविहार चउविहार जीमणइ जी, एक विगय घृतजाणि ॥
घृत जाण आचरणा परंपर पूरवाचारिज कही ।
भगवंत भाष्यउ सत्य तेहिज खांचा-ताण करिवी नहीं ॥
त्रिविहार पोसउ च्यार पहुरी पुण पहुर सीमा करी ।
ए त्रिएह गछ तणी आचरणा अविधि छइ पणि आदरी ॥१३॥

ढाल त्रीजी—(सोभागी सुन्दर भाव वइउ संसारि, एहनी ढाल)
सांझ समइ थंडिला करइ रे, बारे बाहिर मांहि बार ।
इरियावहि वलि पडिकमी रे, जइ तिहुअण कहइ सार ।१४।
सोभागी श्रावक साचउ पोसउ एह, एतउ भगवंत भाख्यउ तेह ।
त्रिकरण सुद्ध करउ तुम्हे रे, जिम पामउ भव छेह ।१५।सो.।

अरथ विंब रवि आथम्यौ रे, सूत्र कहइ सुविचार ।
तवन कहइ तेहवइ समइं रे, तारा दीसइ वि च्यार ।१६।सो.।
काल वेलायई पडिकमइं रे, लांबी खमासण देइ ।
सुध क्रिया नी खप करइ रे, मन संवेग धरेइ ।१७।सो.।
जिणदत्तसूरि काउसग करइ रे, पडिकमणा नइ छेह ।
पडिकमणउ पूरउ थयोरे, खरतरनी विधि एह ।१८।सो.।
मधुरइ सरि रातइं करइ रे, पोरस सीम सझाय ।
गीत गायइ बहरागना रे, पातक दूरि पुलाइ ।१९।सो.।

ढाल चौथी—(चेति चेतन करो, एहनी ढाल)

बहु पडिपन्ना पोरसी रे, वांदइ देव उल्लास ।
संथारा गाथा सुणइ रे, खामइ जीवनी रासो रे ॥२०॥
धन धन ते नर-नारि, सफल करइं अवतारो रे ।
निसि पोसउ करइं भावनइं भावना बारो रे ।२१ध.।
पाप अठारइ परिहरे रे, चित धरइ सरणा च्यारि ।
डाभ संथारइ संथरइ रे, ध्यान धरइ सुविचारो रे ।२२ध.।
धरम जागरिया जागतां रे, करइ मनोरथ एह ।
संजम लेइसि जिणी दिनइ रे, धन दिवस मुझ तेहो रे ।२३ध.।
संख श्रावक पोपउ कीयौ रे, वीर बखाणउ तेह ।
तिण परि तुम्हे पोसौ करउ रे, जिम पामउ सिव गेहो रे ।२४ध.।
वीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय ।

तिणि रातइं पोसउ कीयौ रे, वीर वांदण चित लायरे ।२५ध.।
तुंगिया नगरी तणा रे, श्रावक सुध अनेक ।
जिण विधि तिणि पोसउ कीयौ रे, ते विधि करउ सुविवेक रे ।२६ध.।
लेप श्रावक पोसउ लीयौ रे, आणंद नइं कामदेव ।
वलि दिष्टांत सुणाहुनउ रे, मनि धरिजो नितमेव रे ।२७ध.।

ढाल पांचमी—(जग जीवन वीरजी कुवण तुम्हारइ सीस, एहनी ढाल)

पाछिली रातइ उठइं नइ हो, श्रावक हुयइ सावधान ।
राइ पायछत काउसग करी हो, देव वांदइ सुभ ध्यान ।२८।
संवेगी श्रावक पोसउ नी विधि एह ।
मिलती सूत्र सिद्धांत सुं हो, मति करउ करिज्यो संदेह ।२६।सं.।
उंचइ सरि बोलइ नहीं हो, दोष कह्या भगवंत ।
वलि सामाइक ल्यइ नवउ हो, पडिकमणउ करइ तंत ।३०।सं.।
पडिलेहण किरिया करइ हो, सगली पूरव रीति ।
सहु सज्झाय कियां पछी हो, खिण पडखइ दृढ चीति ।३१।सं.।
पहिलउ पोसौ पारिनइं हो, सामाइक पारेइ ।
पडिलाभइ अणगारनइ हो, अतिथि संभाग करेइ ।३२।सं.
विधि सेती पोसउ कीयउ हो, बहु फलदायक होइ ।
अविधि संघाति कीजतां हो, काज सरइ नहीं कोइ ।३३।सं.
पणि विधिनी खप कीजतां हो, अविधि हुवइ जिकाय।
मिच्छा दुक्कड दीजतां हो, शुद्धक [illegible] थाय ।

पोसउ ओसउ कर्मनउ हो, टालइ दुरगति दुख।
असुभ करम नउ खय करइ हो, आपइ सासतां सुख।३५।सं.।
उतकृष्टी पोसा तणी हो, ए विधि कही उपगार।
जेसलमेरी संघ नइं हो, आग्रह करि सुविचार।३६।सं.।
सोलइ सइ सत सठि समइ हो, नगर मरोट मझार।
मगसिर सुदी दसमी दिनइ हो, सुभ दिन सुर गुरुवार।३७।सं.।
श्री जिणचंद सूरीसरू हो, श्री जिनसिंघ सूरीस।
सकलचंद सुपसाउलइ हो, समयसुन्दर भणइ सीस।३८।सं.।

इति पौषध विधि गीत सपूर्ण
श्री शुभं भवतु। जेसलमेरु संघमभ्यर्थनया कृतं च

——:o:——

श्री मुनिसुव्रत पञ्चोपवास स्तवन

जंबूदीव सोहामणुं, दक्षिण भरत उदार ।
राजगृह नगरी भली, अलकापुरि अवतार ॥ १ ॥
श्री मुनिसुव्रत स्वामि जी, समरंतां सुख थाय ।
मन वंछित फल पामियइ, दोहग दूरि पुलाय ॥ २ ॥ श्री.॥
राज करइ तिहां राजियउ, सुमित्र नरेसर नाम ।
पटराणी पदमावती, शील गुणे अभिराम ॥ ३ ॥ श्री.॥
श्रावण ऊजल पूनिमइ, श्री जिनवर हरिवंश ।
माता कुक्षि सरोवरइ, अवतारियउ रायहंस ॥ ४ ॥ श्री.॥
जेठ पढम पखि अष्टमी, जायउ श्री जिनराय ।
जनम महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय ॥ ५ ॥ श्री.॥
सामल वरण सोहामणउ, निरुपम रूप निधान ।
जिनवर लांछन काछवउ, वीस धनुष तनुमान ॥ ६ ॥ श्री.॥
परणी नारि प्रभावती, भोग पुरंदर सामि ।
राजलीला सुख भोगवइ, पूरइ वंछित काम ॥ ७ ॥ श्री.॥
नव लोगान्तिक देवता, आवि जंपइ जयकार ।
प्रभु फागुण सुदि बारसइ, लीधउ संजम भार ॥ ८ ॥ श्री.॥
फागुण वदि प्रभु बारसइ, मनि धरि निर्मल ध्यान ।
च्यार करम प्रभु चूरियां, पाम्यउ केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ श्री.॥

॥ ढाल ॥

ततखिण तिहां मिलिया चलियासण सुर कोडि ।
प्रभुना पद पंकज प्रणमइ बेकर जोडि ॥
बेकर जोड़ी मछर छोडी समवसरण विरचंति ।
माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकंति ॥
सिंहासन बइठा तिहां सामी चउविह धरम प्रकासइ ।
बार परषदा आगलि बइठी निसुणइ मन उलासइ ॥१०॥

तप नइ अधिकारइ पखवासउ तप सार ।
पडिवा थी लीजइ पनरह तिथि सुविचार ॥
पनरह तिथि कीजइ गुरु मुखि लीजइ जिण दिन हुइ उपवास ।
श्री मुनिसुव्रत नाम जपीजइ, वांदी देव उल्लास ॥
तप ऊजमणइ रजत पालणउ सोवन पूतलि चंग ।
मोदक थाल देहरइ ढोइ जिनवर स्नात्र सुचंग ॥११॥

तप कीजइ रे निरंतर अदुख दर्शनी जेम ।
मन वंछित सुख संपति पामीजइ तेम ॥
संपति पामीजइ लील करीजइ राज रिद्धि विस्तार ।
पुत्र मित्र परिवार परंपर अति वल्लभ भरतार ॥
जस कीरति सोभाग वधइ महियल महिमा जाण ।
पर भवि सुगति तणा फल लहियइ ए तप तणइ प्रमाण ॥१२॥

थिर थापी रे चतुर्विध संघ तणउ अधिकारि ।
भरुयच्छि प्रमुख नगरादिक करिय विहार ॥

विहार करी प्रतिबोधी खंधग पंच सयां परिवार ।
कार्तिक सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ।।
त्रीस सहस वरस आउखुं पाली जगदाधार ।
श्री सम्मेत शिखरि परमेसर पहुँता मुगति मझारि ।।१३।।
इम पंच कल्याणक थुणियउ त्रिभुवन तास ।
मुनि सुव्रत सामी वीसमउ जिणवर राय ।।
वीसमउ जिणवर राय जगत्र गुरु भय भंजण भगवंत ।
निराकार निरंजण निरुपम अजरामर अरिहंत ।।
श्री जिणचंद विनेय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस ।
वाचक समयसुंदर इम बोलइ पूरउ मनह जगीस ।।१४।।

इति श्री मुनि सुव्रत स्वामी पक्षोपवास स्तवनम् ।।

---:o:---

प्राकृत संस्कृत स्तवन संग्रह—

ऋषभ-भक्तामर-स्तोत्रम् ।

नम्रेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्र ! चन्द्र !,
ज्ञानात्मदर्श–परिहृष्ट–विशिष्ट–विश्व ! ।
त्वन्मूर्तिरर्त्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

टीका—ऐँ नमः । हे जिनेंद्र ! त्वन्मूर्ति जनानामालंबनं । किं० भवजले पततां । केव ? तरणीव । किं० त्वन्मूर्ति ? अर्त्तिहरणी-संताप-नाशिनी । हे नमेंद्र ! नम्र इन्द्राणां चंद्रः-समुद्रो यस्य यस्मिन्वा । शेषं सुगमम् ॥१॥

गृह्णाति यज्जगति गारुडिको हि रत्नं,
तन्मंत्र–तंत्र–महिमैव बुधोप्यशक्तः ।
स्तोतुं हि यं यदबुधोप्यदशीयशक्तिः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

टीका—'किलेति' सत्येऽहमबुधोपि तं प्रथम जिनेंद्रं स्तोष्ये । तत्र अदशीयशक्तिः । तं कथं स्तोतुं बुधोपि-सौम्योपि अथवा पण्डितोपि अशक्तोऽसमर्थः ? दृष्टांतमाह—यज्जगति गारुडिकोऽहिरत्नं-सर्पमणिं गृह्णाति तन्मंत्र-तंत्र-महिमैव । इत्यनेन निजगर्वनिरासः जिनमहात्म्यैव दर्शितं । मणि-शब्दः इकरांतोऽपि स्त्रीलिंगेप्यस्ति ॥२॥

त्वां संस्मरन्नहमरं करमीप्सितस्य,
दूरं चिरं परिहरामि हरादिदेवान् ।

हित्वा मणिं करगतामुपलं हि विज्ञं,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

ध्यानानुकूलपवनं गुण-पुण्य पात्रं,
त्वामद्भुतं भुवि विना! जिन यानपात्रं ।
मिथ्यात्वमत्स्य-भवनं भवरूपमेनं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

क्षुत्क्षाम-कुक्षि-तृषिताऽऽतप-शीत-वात,
दुःखीकृताद्भुत-ततोर्मरुदेविमाता ।
अद्याप्युवाच भरतेति भवान् जिनस्य,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

टीका—मरुदेविमाता इति उवाच । इतीति किं? हे भरत! भवान् जिनस्य परिपालनार्थं अद्यापि किं न अभ्येति?

मुक्तिप्रदा भवति देव! तवैव भक्ति-
र्नान्यस्य देवनिकरस्य कदाचनापि ।
युक्तं यतः सुरभिरेव न रौद्रमास-
स्तच्चारु-चूत-कलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

गांगेयगात्र* ! नूतमस्तृणसन्नदात्र,
त्वन्नाम मंत्रवशतो गुणरत्नपात्र!।
मिथ्यात्वमेति विलयं मम हृन्निलीनं,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

*स्वर्ण.

नेत्रामृते भवति[†] भाग्यबलेन दृष्टे,
हर्षप्रकर्षवशतस्तव भक्तिभाजाम् ।
वक्षस्थल-स्थित तु ते चणतश्च्युतोऽसौ,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥

श्रीनाभिनंदन ! तवाननलोकनेन,
नित्यं भवंति नयनानि विकस्वराणि ।
भव्यात्मनामिव दिवाकरदर्शनेन ।
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ६ ॥

त्वत्पादपद्मशरणानुगतान्नरांस्त्वं,
संसारसिंधुपतिपारगतान्करोषि ।
निःपाप ! पारगत ! यच्च स एव धन्यो,
भूत्याश्रितं च य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

टीका—हे पारगत ! त्वं नरान् संसारसिंधुपतितान् पारगतान् करोषि । संसारसिंधुपतेः पारे गतान्-तीरे प्राप्तान् सजसि-स्वसदृशान् करोषीत्यर्थः । किं० न० ? त्वत्पादपद्मेति, सुगमं । यत्-यस्मात्कारणात् स एव ना-पुमान् धन्यो य इह जगति आश्रितं नरं प्रति भूत्या कृत्वा आत्मसमं करोति—आत्मतुल्यं कुर्यात् । अतः त्वं पारगतः सन् परान्नरानपि पारगतान्करोषीति युक्तम् ॥१०॥

युक्तं त्वदुक्तवचनानि निशम्य सम्यक्,
नो रोचते किमपि देव ! कुदेववाक्यम् ।

[†] भवति=त्वयि.

पीयूषपानमसमानमहो विधाय,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

शंभुस्वकीयललनाकलिताङ्गभोगो,
विष्णुर्गदासहितपाणिरितीव देव ! ।
प्रद्वेषरागरहितोऽसि जिन ! त्वमेव,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

टीका—हे देव ! ईश-शंभुः स्वकीयललनाकलितांगभागः, विष्णुर्गदासहितपाणिरितीव हेतो रागद्वेषरहितः त्वमेवासि । यत्-यस्मात्कारणात्ते समानं-तव तुल्यमपरं रूप नास्ति । अयं भावार्थः । देवत्वं त्रिष्वपि-हर-हरि-जिनेषु वर्त्तते पर रागद्वेषरहितो जिन एव । कथं ? हरस्तु स्त्रीसहितत्वाद्रागवान् । हरिस्तु गदाशस्त्रकलितपाणित्वात् द्वेषवान् ।

तेजस्विनं जिन ! सदेह भवंतमेव,
मन्येऽस्तमेति सविता दिवसावसाने ।
दीपोऽपि वर्तिविरहे विधुमंडलं च,
यद्वासरे भवति पांडुपलासकल्पम् ॥१३॥

ये व्याप्नुवंति जगदीश्वर ! विश्व-विश्व,
मेऽध्यान् जनापि सृजतितरां ? त्रिलोक्याम् ।
त्वां भास्करं जिन ! विना तमसः समूहान्,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

टीका—हे जिन ! त्वां भास्करविना तान् तमसः समूहान्-अज्ञानप्रजान्, पक्षे-अन्धकारप्रजान् को निवारयति ? कोपीत्यर्थः, इत्युक्तिः, शेषं सुगमम् ।

सिंहासनं विमलहेममयं विरेजे,
मध्यस्थितत्रिजगदीश्वरमूर्त्तिरम्यम् ।
नोद्योतनार्थमुपरिस्थितसूर्यबिंबं,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचिद् ॥१५॥

टीका—किं मन्दराद्रिशि० न कदाचिच्चलितम् ।

दोषाकरो न सकरो न कलंक युक्तो,
नास्तंगतो न सतमानमविग्रहो न ।
स्वामिन् विधुर्जगति नाभिनरेंद्रवंश—
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

टीका—हे स्वामिन् ! जगति त्वमपरो विधुरसि-नवीनचन्द्र असि ! कथं ? विलक्षणधर्मानाह—स तु विधुर्दोषाकरो-दोष-रात्रिं करोतीति दोषाकरोऽथवा दोषायां-रात्रौ करा:-किरणाः यस्य स, त्वं तु न दोषाकरो दोषाणामन्तरायादीनामष्टानामाकरः । पुनः स तु सकरः-सहकरैः-किरणैर्वर्त्तते यः सः, त्वं तु न सकरः-सह करेण-दण्डेन वर्त्तते यः सः । पुनः स तु कलंकयुक्तः-कलंकेनाभिज्ञानेन युक्तो य सः । त्वं तु न कलङ्कयुक्तो—न दोष-विशेष सहितः । पुनः स तु अस्तंगतोऽस्तमस्ताचलङ्गतः-प्रातः सायमित्यर्थात् ग्राह्यः । त्वं तु नास्तंगतः । नास्तमितं उद्गत इत्यर्थः । पुनः स तु 'सतमा' सह तमसा—राहुणा वर्त्तते यः सः, त्वं तु न सतमा—सह तमसाऽज्ञानेन वर्त्तते य सः एवंविधो न । पुनः स तु विग्रहः-सह विशिष्टैर्ग्रहैर्वर्त्तते यः सः, त्वं तु सविग्रहः सह विग्रहेण-संग्रामेण वर्त्तते यः सः, एवंविधो न, शेष सुगमम् ॥१६॥

नित्योदयस्त्रिजगतीस्थतमोपहारी,
भव्यात्मनां वदनकैरवबोधकारी ।
मिथ्यात्वमेघपटलैर्न समावृतो यत्,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्रलोके ॥१७॥

लावण्यपुण्यसुवरेण्य सुधानिधानं,
प्रह्लादकं जनविलोचनकैरवाणाम् ।
वक्त्रं विभो ! तव विभाति विभातिरेकं,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥

ध्यातस्त्वमेव यदि देव ! जनाभिलाप–
पूर्णीकरः किमपरैः विविधैरुपायैः ।
निःपद्यते यदि च भौमजलेन धान्यं,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

माहात्म्यमस्ति यदनंतगुणाभिराम,
सर्व्वज्ञ ते हरिहरादिषु तन्नवो न ।
चिंतामणौ हि भवतीह यथा प्रभावो,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०॥

तद्देव ! देहि मम दर्शननात्मनस्त्व–
मत्यद्भुतं नृनयनामृत यत्र* दृष्टे ।
स्वामिन्निहापि परमेश्वर †मेऽन्यदेवं,
कश्चिन्मनोहरति नाऽथ¶ भवांतरेपि ॥२१॥

*दर्शने. †मम. ¶अत्रभवे.

ज्ञानस्य शिष्टतरदृष्टसमस्तलोका-
लोकस्य शीघ्रहतसंतमसस्य शश्वत् ।
दाता त्वमेव भुवि देव ! हि भानुमंतं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

सिंहासनस्थ भवदुक्त चतुर्विधात्मा,
धर्म्मावृते‡ त्रिजगदीश ! युगादिदेव ! ।
सद्दानशीलतपनिर्मलभावनाख्या,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥२३॥

टीका—तपशब्दः शब्दप्रभेदेऽकारांतोप्यस्ति श्रतो नात्र दोषः।

स्वामिन्ननंतगुणयुक्तकषायमुक्तः,
साक्षात्कृत त्रिजगदेव भवत्सदृक्षाः ।
नान्ये विभंगमतयो रुचिरं च पंच-
ज्ञानस्वरूपममलं प्रविदंति संतः ॥२४॥

चिंतामणिर्मणिषु धेनुषु कामधेनु-
र्गंगानदीषु नलिनेषु च पुण्डरीके ।
कल्पद्रुमस्तरुषु देव ! यथा तथात्र*,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥

भास्वद्गुणाय करुणाय सुदोरुणाय,
विद्याक्षणाय कमलप्रतिमेक्षणाय ।
सल्लक्षणाय जनताकृतरक्षणाय ।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

‡ धर्मावृते-पुण्यमन्तरेणेति पर्यायः. * जगति.

एमां छलेन पतितं पुरतो हि रत्नं,
दृश्येत किं नियतमंतरतत्त्वदृष्ट्या ।
मोहाद्दतेन मयि का त्वयि सुस्थितेऽग्रे,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

मन्मानसान्तरगतं भवदीय नाम,
पापं प्रणाशयति पारगत प्रभूतम् ।
श्रीमद्युगादिजिनराज ! हिमं समंता-
द्बिम्बरवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥

जन्माभिषेकसमये गिरिराजशृङ्गे,
प्रस्थापितं तव वपुर्विधिना सुरेंद्रैः ।
प्रद्योतते प्रबलकांतियुतं च बिंबं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः[†] ॥२९॥

केशच्छटां स्फुटतरां दधदंगदेशे,
श्रीतीर्थराज ! विबुधावलिसंश्रितस्त्वम् ।
मूर्धस्थकृष्णलतिकासहितं च शृङ्ग-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

स श्रीयुगादिजिन ! मेऽभिमतं प्रदेहि,
धर्मोपदेशसमये दिवि गच्छदूर्ध्वम् ।
ज्योतिर्दृतां जयति यस्य शिवस्य मार्गं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

---

† सहस्ररश्मे .

सोपानपंक्तिमरजांसि भवद्वचांसि,
स्वर्गाधिरोहणकृते यदि नो कथं तत्।
तत्राश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! यांति जीवा,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३२॥

भाति त्वया भुवि यथा न तथा विना त्वां,
श्रीसंघनायकगुर्णैस्सहितोपि संघः ।
शोभा हि यादृगमृतद्युतिना विना तं,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥

त्वत्स्कंधसंस्थचिकुरावलिकृष्णवल्लि,
वक्त्रस्फुरद्विषनिजातिविनिर्यदग्निम् ।
सर्पोपि न प्रभवति प्रबलप्रकोपो,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

संप्राप्तसंयमदरी वसनं प्रलंब-
पुण्यौषधं परमशर्म्मफलोपपेतम् ।
मर्त्यं महोदयपते ! भववैरिवृन्दो,
नाऽऽक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

धर्म्मे धनानि विविधानि सनादहंतं,
मानुष्य मानसवने नियतं वसंतम् ।
प्रोद्यत्तरस्मरसमीपसखं वृषांक !
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

यत्रोद्गता क्षितिलताहि गिरेर्गुहायां,
किं तत्र तिष्ठति फणी गुणगेह तस्मात्।
मिथ्यात्वमेतदगमन्त्रितरामुपप्ट,
त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥

पीडां करोति न कदापि सतां जनानां,
सूर्योदयादमृतसू सरसीरुहाणाम् ।
दुःखीकृत त्रिभुवनो विपदां च यश्च,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति ॥३८॥

त्वद्वाणिमंजुलमरंदरसं पिबंत-
स्तापोष्मितां परमनिर्वृतिमादिदेव ! ।
पुण्याल्पपंचजनचंचुरचंचरीका-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभंते ॥३९॥

कंदर्पदेवरिपुसैन्यमपि प्रजित्य,
त्वल्लोहकारकृतमार्गसु वर्म्मितांगाः ।
देव ! प्रभो जय जयारवमगिधीरा-
स्त्रास विहाय भवाः स्मरणाद् व्रजति ॥४०॥

त्वत्पादपद्मनखदीधितिकुंकुमेन,
चित्रीकृतः प्रणमतां स्वललाटपट्टः ।
येषां तयेव सुतरां शिवसौख्यभाजो,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

भग्ने च कर्मनिगडे जिन ! लोहकार-

वाङ्मुद्गरेण भवगुप्तिगृहात्सवासाः ।
कर्मावली–निगडितापि–भक्त–सत्वा,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥४२॥

रोषादिवेलिसहगामपहाय माम–
सौ संपदाभिरमते सह······पत्न्या ।
द्राक्चक्रवालमगमद्विपदेव तस्य,
य स्तावकस्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥

तस्यां गणे सुरतरुसुरधेनुरंहो–
चिंतामणिकरतलं निजमंदिरं च ।
यः श्रीयुगादिजिनदेवमलंस्तवीति,
तं मानतुंगमवसा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

श्रीमन्मुनीन्द्रजिनचन्द्रयतीन्द्रशिष्यं,
पूर्णेंदुशिष्यसमयादिमसुंदरेण ।
भक्तामरस्तवनतुर्यपदं समस्या,
काव्यैः स्तुतः प्रथमतीर्थपतिर्गृहीत्वा ॥४५॥

इति श्रीमदादीश्वरस्य गृहीतभक्तामरचतुर्थपादसमस्यास्तवः समाप्तः।



नानाविधश्लेपमयं श्रीआदिनाथस्तोत्रम्

विनौति यो नो सकलानिकेतनं, कुले जिनं हंसकलानिकेतनम् ।
सुखानि लेभे समहंस किन्नर, प्रणम्य पादं समहंसकिन्नरः । १ ।
निर्मुक्तराग प्रमदाभिराम, वने मतंगप्रमदाभिराम ।
नम्रीभवन्मंदरनिग्रहाभ, जय प्रभो ! मंदरनिग्रहाभ । २ ।
पुण्याङ्कुरे जीवन्मुक्तमोहं, गुणद्रु-राजीवनमुक्तमोहम् ।
विनौम्यहं स्कंधरमंगदांत, जिनं वचस्कं धर मंगदान्तम् । ३ ।
जय प्रभो ! कैवनचक्रहारी, यस्य स्तुवेस्त्वं तव चक्रहारी ।
मायामहीदारहलो भवामः, स्वर्गाधियामारह-लोभवाम । ४ ।

प्रथमजिनवरा संकल्पभावप्रमाणं,

प्रगटभुवनकीर्त्ते कल्पभावप्रमाण ।

प्रदलितरिपुवृन्दः सर्वदा तातमेणं,

प्रथय मदलिमिश्रे सर्वदाता तमेश । ५ ।

अपवर्गसरोवरराजहस, कुमतानलसंवरराजहंस ।
भुवनोत्तमवंशमतागमेन, जय हेमतनो ! शमतागमेन । ६ ।
सुमनस्कृतसातपपातकान्त, भवनागिणि भूत पपात कान्त ।
ददृशे तव येन सनाट्यपांक, वदनं नयनेन मना घृपांक । ७ ।
पदकजे चंचरीकायते नायका, द्वेपनिर्घ्मंमनाकायते नायकः ।
उन्मुखस्तमगांगेयनालीरुग्, भक्तिभाजां सतां गेयनालीरुग् । ८ ।
नम्रीभवत्सुरपुरन्दरमौलिरंगत्पादांबुजो नलिनमुदरमौलिरंग ।
अज्ञानपंकहरणं न रराज चक्रे, जीयान्स केवलवने नरराजचक्रे । ९ ।

पालय मांप स्तवालक परतिकं जगतांगज,
मानमहीरुहनाभिदेशजितकंजगतांगज ।
ऊचे तरनमिह प्रमोदवरमालसदायक,
ईतिभीतिवित्ततेः सहावरमालसदायक ।१०।
नमतामजहारवंदित, स्मरसुजनैर्विजहारवंदित ।
विनुवे विभवालयादरं, तं त्वां नष्टभवालयादरम् ।११।
प्रथमदेव सतानयनामृत, पदनता जनतानयनामृत ।
तव सुरेध्रृतपंकजगामया, समलकोलघ्रपांक जगाम या ।१२।
त्वां नुवे यस्य तं शं करे मे मते, देवपादांबुजेशं करे मे मते ।
मन्मनश्चंचरीकोपसंतापते, नाभिभूपांगभूः कोपसंतापते ।१३।
एवं श्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरो पादा नत स्वगुरो,
श्रीनाभेयसमेन्दुकुन्दयशसा संछन्नगौरीगुरो ।
भंगं श्लेषविशेषकाव्यकलितं स्तोत्रं तवाश्चर्यकृत्,
संकुर्यात्समयादिसुन्दरकृतं कर्त्तुः सदा संपदम् ।१४

——:o:——

नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्

....वारं स सायं वरं ।
सञ्जो नंदित वायरं पणमिमो हे देव ! सम्मं तुमं ॥ ७ ॥
अत्र काव्ये प्राकृतश्लोकोऽनुक्रमेण निस्सरनि, सच.यं—
नेमिनाहं सया वंदे, वरायमपयासयं ।
सायरंतरगंभीरं, भयवं स दिवायरं ॥ ८ ॥

भक्त्या जे⋯⋯हं जरागणमदानंदादयध्वंसकं।
लक्ष्मीदीप्रतनुं दयागुणभुवं त्रातां सतां दे वरम् ॥
कृष्णस्फीतरुचिं नरा नमत भो जीवामतीति क्षिपं।
त्यागश्रेष्ठयसोरसं कृतनतिं नेमिं मुदा त्रायक ॥ ६ ॥

अत्र कविदये सस्कृतश्लोकोऽनुक्रमेण निस्सरति सचार्य—

भजेहं जगदानंद सकलप्रभुतावरम् ।
कृतराजीमतीत्यागं श्रेयः संततिदायकम् ॥१०॥

पदकजनत सदमरशरण वरकमलवदन वरकरचरण।
शमदमधर नरदरहरण जय जलजधरणमरकरकरण ॥११॥

एक स्वर मय काव्यम्—

श्रीसर्वज्ञं प्रोद्यतप्रज्ञं, मोक्षावासं दत्तोल्लासम्।
भव्याधारं रम्याकारं, वंदे नित्यं नष्टासत्यं ॥१२॥

सर्वगुरुवर्णमय काव्यम्—

प्रोत्सर्प्पद्गुणपुष्पपुञ्जकलितः कृष्णच्छविः सर्वदा।
मर्त्यानां शिवसौख्यवञ्छितफलं सद्बाहुशाखावरः ॥
दद्याद्द्य दरिद्रताभरहरः सद्धर्मपत्राकरः।
श्रीमद्रैवतमेरुमण्डनमसौ श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥१३॥

विविधवरकाव्यभेदैः, स्तुत एवं सकलचंद्रबिंबमुखः।
प्रणतेन्द्रसमयसुन्दर गुणविततिर्नेमितीर्थेशः ॥१४॥

इति श्रीनेमिनाथस्तवन नानाविधकाव्यजातिमयं समाप्तं।

—•❀•—

नेमिनाथ गीतम्

राग—आसाउरी

जादवराय जीवे तुँ कोडि वरीस ।
गगन मंडल उडत प्रमुदित चित्त, पांख्या देत आसीस ।१। जा.।
हम उपरि करुणा तइं कीनी, जगजीवन जगदीस ।
तोरण थी रथ फेरि सिधारे, जोग ग्रह्यउ सुजगीस ।२। जा.।
समुद्र विजय राजाकउ अंगज, सुरनर नामइं सीस ।
समयसुंदर कहइ नेमि जिणिंद कउ,नाम जपुँ निस दीस ।३। जा.।

इति नेमिनाथ गीत (३३)
(नेमिनाथ गीत छत्तीसी में स्वय लिखित ।)

यमकवद्ध-प्राकृतभाषायां पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

परमपासपहू महिमालयं, जस विणिज्जिय सोमहिमालयं ।
सम''''''य रायमयं गयं, सिव पए य पयो अमयं गयं ।१।
नारणपाणिज्जिय (?) नीरयं, सयलदूपणवज्जियनीरयं ।
नमिर-नाग-पुरंदर-देवयं, भविअ-माणव-सुन्दर-देवयं ।२।
तणुविहा वि जिअं जणपव्वयं, कयकसायखयं जणपव्वयं ।
महिमवम्महमाणस हं सयं, जणणमंजुलमाणसहंसयं ।३।
चरमरुअ पणामहिआपमं, भुवणलच्छिललामहिआयमं ।
ललिअलच्छणलंछणलच्छिअं, कणयतामरसेच्छणलच्छिअं ।४।

विप्ररणाभिणवामरपायर्यं, परमसुक्खकरामरपायर्यं ।
लहुअरं परवाइसयासयं, सुपणतीसरवाइसया सयं ।५।
परमपुरणलयावरणीरयं, दुहदवाणलजीवरणीरयं ।
सुकइकेरवरंगनिसायरं, गुणमरणीभवणंगखिसायरं ।६।
दुरिअयं दवरणेगयमच्छरं, पवरसुक्खकरं गयमच्छरं।
गयरणनिज्जिअ-पंकयसंपयं, सरयसोममुहं कयसंपयं ।७।
कलिकसायकलंकमलावहं, निरुवमारणकलाकमलावहं ।
अहिणवामि तुमं समयालयं, जयइदीव समं समयालयं ।८।
इय थुओ पहुपासजिणेसरो, सुहगसुक्खनिवासजिणेसरो।
सयलचंदजसप्पसरो वरो, समयसुन्दरकप्पसरोवरो ।९।

इति श्रीपार्श्वनाथस्यशुद्धप्राकृतभाषायां लघुस्तवनसम्पूर्णम् ।

——:o:——

समस्यामयं पार्श्वनाथबृहत्स्तवनम्

त्वद्धामंडलभास्करे स्फुटतरे भास्वत्प्रभाभासुरे ।
दृष्टे त्वेकपदे त्वदीयवदने पूर्णेन्दुबिम्बात्प्रति ॥
धर्माख्यानविधौ त्वयीति भगवन् व्यज्ञायि······ ।
सूर्याचन्द्रमसौ प्रभातसमये ह्येकत्र किं रेजतुः ? ॥ १ ॥
विष्णुब्रह्ममहेश्वरप्रभृतयः सर्वेपि श····················
······ः खलु पर्यवाः प्रतिदिनं प्रोच्यार्यमाणाः परैः ॥
श्रीअर्हन् भगवन् जगत्त्रयपदेस्त्वब्धेर्जलानां यथा ।
अम्भोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधिः ॥ २ ॥

श्रीवामेयगुणत्रगेयमहिमामेयाभिधेयाभिध-
स्त्वत्पादाम्बुजसुप्रसादवशतः राजन् त्रिलोकीपते ! ॥
अंधो पश्यति निर्धनो धनपती रंकोपि राजायते ।
मूको जल्पति संशृणोति बधिरः पंगुर्नरी नृत्यति ॥ ३ ॥
सिंहासनं समधिरोहयतः प्रभाते,
भामंडलं भगवतः प्रविलोक्य दूरात् ।
प्राच्यां स्थितेन पुरुषेण विनिश्चितं य-
दभ्युद्यतो दिनकरः खलु पश्चिमायाम् ॥ ४ ॥
त्वय्यशोभिरमितस्त्रिविष्टपे, शुश्रितेऽभ्रशारदिंदुसुन्दरे ।
पार्श्वदेव ! गुणरत्ननीरधे, कज्जलं रजतसन्निभं बभौ ॥ ५ ॥
लोकोत्तरां धर्मधुरां दधाने, देव ! त्वयि ज्ञानगुणप्रधाने ।
त्वद्वादिवक्त्रेषु तवोरुकीर्ति-सुधाव्यधादंजननीलिमानम् ॥ ६ ॥
मा दृष्टदोषोस्त्वतिसुंदरत्वान्मात्रा कृतां कज्जलकृष्णरेखाम् ।
प्रभोः कपोले प्रविलोक्य कोप्यवक्, पिपीलिका चुंबति चंद्रबिंबम् ७
मनोभवे क्षोभयितुं भवन्तं, समुद्यते तीर्थपते ! नितान्तम् ।
···स्त्वया तत्र नियन्त्रितं यत्सुतापराधे जनकस्य दण्डः ॥ ८ ॥
अस्यौपरिश्यामफणामणीनां, प्रभा प्र······ ····· ।
पार्श्वप्रभो ! कोपि विदो वदत्किं, चन्द्रोपरि क्रीडति सैंहिकेयः ॥९॥
दशशतनयनौघैः स्वर्ण कुंभ·······
विमलसलिलपूर्णैः स्नापिते श्रीजिनेंद्रे ।
प्रवहदतुलपाथः प्रोच्छ·········
·················धा दुरासीत्पयोधिः ॥१०॥

शस्त्रो हस्तप्रशस्तो ऽ भिनवकिशलयं शो`·········
···········`भिरामौ मधुकरनिकरप्रस्फुरन्नीलपद्मौ ॥
कान्ता-दन्ताश्च कुन्दान् कथयत कवयः पार्श्वनाथस्य शंसो।
·····कौ केकंम्कौ (?) कान् प्रहसति हसतः फुल्लगल्ल' हसंति।११।
स जयत्वनिशं भुवनाधिपते स्त्र···सि स्व···तत्त्व वि···।
भुवि यास्मयदीय वचोनधि (?) सं वदते वदते वदते वदवे।१२।
इत्थं श्रीजिनचन्द्रसुन्दरजगत्स्वामिन्! समस्यास्तवो ।
···········`पुरतः प्रधाय वदते विज्ञप्तियुद्धक्रये ॥
मोहेनात्तचतुर्गतिस्थितिनिजग्रासाय रोषावशान् ।
मह्य' देहाथ पार्श्वदेव! पदवीं त्वच्छासनस्थेयसीम्॥१३॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य समस्यास्तवनबृहत्समाप्तम्।

यमकमयं पार्श्वनाथ-लघुस्तवनम्

विज्ञान-विज्ञा न नुवंति केत्वां, मासार-मासारमधर्मपंके ।
नीराग-नीरागम-कानने सहेला-महेला-मव-हेलयंतम् ॥१॥
सद्यः प्रसद्य प्रकटोपदेश-नावासनावासवसेवितांहे ।
मेधार मे धारय दुःखतोये, साद-प्रसाद-प्रणतं पतंतम् ॥२॥
सत्याग-सत्यागम-केवलेन, विस्फार-विस्फारय मे सुखानि ।
वामाभवामाभव - पार्श्वनाथा - पद्मार - पद्मारतिराज - राज ॥३॥
चिन्ताम-चिंतामणि-रीश देवमायाति मायातिमिरे गभस्तिम्।
तस्या-मत स्यामहर करे त्वं, दानं ददानं-दहिनं विनौति ॥४॥

सुजनकैरवसोमसमोदयस्तनुसमस्तसुखालस मोदय।
त्वमिह मां करुणाखिलभूघनः, कमलकुड्मलकोमलभूघनः।।६।
जपति नाम जनो जिन तावकं, स्पृशति ते न विपज्जनतावकम्।
सुखकरण्डमणिं महिमाशुभं, हृदयकैरवपूर्णहिमांशु भम् ।।७।।
जिन जडोपि जनस्तव नामतः, कवि पदं लभते स्तवनामतः।
सुकृतिसज्जनसंचयसोदर, प्रबलपुण्यलतापयसोदर ।।८।।
तव वचो जिन मे सरसंशय, द्युतिजितांबुजविस्मरसंशय।
हरतु सर्वतमः पुन रक्षणं, भवपयोधिपतज्जनरक्षण ।।६।।
त्वमिह पुण्यगुणेन समुद्धर, प्रपतितं भववारिसमुद्धर।
रतिपतौ जिन मां सहसालसल्ललनवल्लभनैकहसालस ।।१०।।
कनककैरवकायकलाप का'''''रुपमानतलोककलापरुक्।
सुजननेत्रसुधारविराजते, चरमतीर्थप ! कापि विराजते ।।११।।
समय मे जिनराज भवानल, पदकजं प्रणतस्य भवानलम्।
परिहरन् प्रतिपापपरंपर, व्रतकृताद्भुतपपापरंपरः ।।१२।।
तव विलोक्य रुचिं भुवि कांचनं, कृत तदा'''नो भवि कांचन।

पद्मां विपद्मां विदुषां दिशन्तं शान्तं निशान्तं नियतं गुणानाम्।
सेवामि सेवामि तमुत्त्रिलोकी-नाथं सनाथं समया मयाहम् ॥५॥
संकल्प संकल्पसमं नतेन्द्र ! कोटीरकोटीरमणीयपादम् ।
तारं जितारं जिनपं वरेण्य !, दन्तं भदन्तं भविका भजध्वम् ॥६॥
योगाय योगाय''''''शस्ते, सोमानसोमाननदेव धन्यः।
देवाधिदेवाधिमतंगसिंहा, सत्कीर्ति–सत्कीर्त्तितमोक्षमार्गः ॥७॥
इति नुतो जिनचन्द्र दिवाकरः, सकलचंद्रमुख प्रभुतावरः ।
यमकबन्धकविच्चकदम्बकैः, समयसुन्दरभक्तिविनिर्मितैः ॥८॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य लघुस्तवन यमकमयम् ॥

यमकमयं महावीरबृहद्स्तवनम्

जयति वीरजिनो जगतांगज, सकलविघ्नवने विगतांगजः ।
चणनिरस्तसमस्त'''मानवग्रहनिषेव्य पदो नत मानवः ॥१॥
विधुवरेण्ययशः प्रसरो वर–प्रविलसद्गुणहंससरोवर ।
दिशतु मेऽभिमतं सुमनोहर, स्मरतिरस्कृतरूपमनोहरः ॥२॥
जिनवरं विनुवामि कलापदं, हतनमत्सुमनः सकलापदम् ।
त्रिजगतीयुवतीतिलकोपमं, कमलकान्तदृशं मलकोपमम् ॥३॥
पिबत निर्मलवाक्यसुधारसं, जिनपते जन'''द्रसुधारसम्।
त्रिभुवनस्य तिरस्कृततामसं, सुखशशिप्रसृतं विततामसम् ॥४॥
कुशलकंदपयः कुशलाभयं, भज नतं हतवांस्त्रिशलाभवम् ।
शिवसरोजरविं शमतामलं, सुपकरं कृतिनां नमतामलम् ॥५॥

सुजनकैरवसोमसमोदयस्तनुसमस्तसुखालस मोदय।
त्वमिह मां करुणाखिलभूषनः, कमलकुड्मलकोमलभूषनः।६।
जपति नाम जनो जिन तावकं, स्पृशति ते न विपज्जनतावकम्।
सुखकरण्डमणिं महिमाशुभं, हृदयकैरवपूर्णहिमां शुभम्।।७।।
जिन जडोपि जनस्तव नामतः, कवि पदं लभते स्तवनामतः।
सुकृतिसज्जनसंचयसोदर, प्रबलपुण्यलतापयसोदर ।।८।।
तव वचौ जिन मे सरसंशय, द्युतिजितांबुजविस्मरसंशय।
हृग्तु सर्वतमः पुन रच्चणं, भवपयोधिपतज्जनरच्चण ।।९।।
त्वमिह पुण्यगुणेन समुद्धर, ऽपतितं भववारिसमुद्धर।
रतिपतौ जिन मां सहसालसल्ललनवल्लनैकहसालस ।।१०।।
कनककैरवकायकलाप का‥‥‥रूपमानतलोककलापरुक्।
सुजननेत्रसुधारविराजते, चरमतीर्थप ! कापि विराजते ।।११।।
समय मे जिनराज भवानल, पदकजं प्रणतस्य भवानलम्।
परिहरन् प्रतिपापपरंपर, व्रतकृताद्भुतपापरंपरः ।।१२।।
तव विलोक्य रुचिं शुचि कांचनं, कृत तदा‥‥नो भवि कांचन।
प्रविशतीव शुचौ शमतालसद्भवपयोनिधिपोतमतालस ।।१३।।
इति मयका महितो जिनचंद्रश्चरमजिनश्चरमोदधिमंद्रः
स्तुति करणेन वितन्द्रः।
करुणाकैरविणीसमचंद्रः समयमनोहरकृतिकृतभद्रः
प्रदलितभवभयचंद्रः ।।१४।।

इति श्री महावीरस्य वृहत्स्तवनं यमकमय सम्पूर्णम् ।।

दाहिण - पुरत्थिमेणं, उत्तरपचत्थिमेण अहिअसमा ।
पुव्वि असंख अहिआ, पच्छिम तह दाहिणुत्तरओ ॥११॥
अप्पबहुत्तसरूवं, इय दिट्ठं केवलेण नाह ! तुमे ।
अह तह कुणसु पसायं, अहमवि पासेमि जह सक्खं ॥१२॥
इय चउदिसासु भमिओ, तुह आणा वज्जिओ य वीर ! अहं ।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिवं देसु ॥१३॥
इति श्री अल्पाबहुत्व विचारगर्भितं श्री महावीरदेववृहत्स्तवन संपूर्णं ।१६।※

संवत् १६५४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि १ दिने बुधवासरे श्रीपत्तने श्रीकंसारपाटके कृतं चोपड़ा पा० देवजी समभ्यर्थनया।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि गीत

....
....

...केसर अगर कपूर पूजा करी। चाढउ कुसुम की माला।१।डि०।
नगर विश्राम विमान...
........................थि। खरतरगछ प्रतिपाल।१।डि०।
महतीयाण श्रावक प्रतिबोधक। जाणत बाल गोपा(ला)......।
....।३।डि०।

इति श्री दिल्ली मण्डन श्री जिनचन्द्रसूरि गीतं ॥१॥

जिनकुशलसूरि गीत

राग—सारङ्ग

दादउ...
....।रसाल्इ।१।दा०।स०।

※ यह टीका सहित आत्मानन्द सभा भावनगर से बहुत वर्षो पूर्व छपा था, अब अप्राप्य है।)

अल्पाबहुत्व-विचारगर्भित-श्रीमहावीर-बृहतस्तवनम्

जेण परूविअमेयं, दिसाणुवाएण अप्पबहुठाणं ।
जीवाण बायराण य, थुणामि तं वद्धमाणजिणं ॥ १ ॥
सामन्नेणं जीवा आऊ-वण - विगल - तिरिअ - पंचिंदी ।
पच्छिमथोवा - अहिआ, पुव्वादिसि दाहिणुत्तरओ ॥ २ ॥
मणुया सिद्धा तेऊ, सव्व - थोवा य दाहिणुत्तरओ ।
पुव्वि संखा पच्छिम, अहिआ कहिआ तुमे नाह ! ॥ ३ ॥
वाउ थोवा पुव्वि, तत्तो अहिआ य पच्छिमुत्तरओ ।
दाहिण नारय थोवा, पुव्वुत्तर पच्छिमासु समा ॥ ४ ॥
दाहिण असंख पुढवी, दाहिण थोवा कमेण अहिअ तओ ।
उत्तर पुव्वा वरदिसि, तुज्झ नमो जेण निदिट्ठा ॥ ५ ॥
भवणवइ-पुव्व-पच्छिम, थोवा तुल्ला य उत्तर असंखा ।
दाहिण तओ असंखा, वंतर - थोवा य पुव्वदिसि ॥ ६ ॥
पच्छिम उत्तर दाहिण, अहिआ थोवा य जोइसा तुल्ला ।
पुव्वा वरदिसि दाहिण, उत्तर अहिआ कमा भणिआ ॥ ७ ॥
पढम - चउकप्प - देवा, सव्वत्थोवा य पुव्वपच्छिमओ ।
उत्तर-असंख दाहिण, अहिआ तुह मय विऊविंति ॥ ८ ॥
बंभाइ - कप्प - चउगे, पुव्वुत्तर पच्छिमासु थोवसमा ।
दाहिण संखा तत्तो, उवरिम देवा य सम सव्वे ॥ ९ ॥
थोवा पुग्गल उड्ढं, अहिअ अहे तह य संखतुल्ला य ।
उत्तरपुरत्थिमेणं, दाहिण पच्चत्थिमेण तओ ॥१०॥

दाहिण - पुरत्थिमेणं, उत्तरपच्चत्थिमेण अहिअसमा ।
पुव्विं असंख अहिआ, पच्छिम तह दाहिणुत्तरओ ॥११॥
अप्पबहुत्तसरूवं, इय दिट्ठं केवलेण नाह ! तुमे ।
अह तह कुणसु पसायं, अहमवि पासेमि जह सक्खं ॥१२॥
इय चउदिसासु भमिओ, तुह आणा वज्जिओ य वीर ! अहं ।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिवं देसु ॥१३॥

इति श्री अल्पाबहुत्व विचारगर्भितं श्री महावीरदेवबृहत्स्तवन संपूर्णं ।१६।※

संवत् १६५४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि १ दिने बुधवासरे श्रीपत्तने श्रीकंसारपाटके कृतं चोपड़ा पा० देवजी समभ्यर्थनया ।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि गीत

....
....

...केसर अगर कपूर पूजा करी। चाढउ कुसुम की माला ।१।डि०।
नगर विश्राम विमान.......................................
.........................धि । खरतरगछ प्रतिपाल ।१।डि०।
महतीयाण श्रावक प्रतिबोधक । जाणत बाल गोपा(ला).......।
....।३।डि०।

इति श्री ढिल्ली मण्डन श्री जिनचन्द्रसूरि गीतं ॥१॥

जिनकुशलसूरि गीत

राग—सारङ्ग

दादउ...
....।रसावइ ।१।दा०।स०।

※ यह टीका सहित आत्मानन्द सभा भावनगर से बहुत वर्षों पूर्व छपा था, अब अप्राप्य है ।)

श्री संघ जाच करत विधि सेती । मन सुधि भावना भावइ ।
प्रारथिया·································
··· ······ · ···सुख संपति पूरति । खरतर सोह वडावइ ।
जागति जोति कुसलसूरि जागइ······· ············

··· ···लसूरि गीतं ॥३॥

५. दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतं

राग—जयतसिरी-धन्यासिरी

देराउर उंचउ गढ································
··········ट घट अलि विघन विडारण । मांग्या मेह वरीस ।
पुत्र कलत्र आसा सुख····························
नाम जपुं निसदीस ।·····························
························समयसुन्दर मांगति पद सेवा ।
साहिब करउ बगसी (स) ।························

मुलताण मंडन जिनदत्तसूरि जिनकुशलसूरि गीत

राग—भूपाल

जिणदत्त जि० २ सूरि कुस·······················
·················राजी । जग बोलई जसवाद ॥१॥ जि०॥
हितकरि हि० एक गुरु दुखह·····················
···············परिजी । मनोरथ चाढइं प्रमाण ॥२॥ जि०॥

परतखि २ थई कहइं··· ························

·············गोजी। सबलउ देस्यइ सोभाग ॥३॥ जि०॥

केसर के० २ भरिय कचोल ··················· ···

······· ··· ······। अगर उखेवउ अति भाय ॥४॥ जि०॥

दिन २ दिन २ चेउ दादा दीपताजी ·····················

····························ऊगत भांण ॥५॥ जि०॥

इति श्री मुलताण मण्डन श्री जिनदत्तसूरि श्री जि ·····

·········रण समये ॥७॥

अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीतम्

राग—मारुणी

पूजिजी अ······· ········ ······· ···············

······गुरु एह विचारवा। संघ उदय करिज्यो संभारवा।१। पू०।

जागति जोति ····································

······भय संकट भागइ। मोटा महिपति सेवा मांगइ।२। पू०।

मेदनि तटसंघ···················· ················ ······

·· ·····तणइ परमाणइ। वखतवंत गुरु एह वखाणइ।३। पू०।

समरवउ सद ································ ·····················

····ण दत्तसूरि दादा। समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादा।४ पू०।

इति श्री मेड·········· ················ ······

······करणे श्री अजयमेरु मंडन श्री जिनदत्तसूरि गीतं ॥६॥

सं० १६८८ वर्षे मार्गशीर्षे ५ दिन श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः लिखितम्················ ❀

परिशिष्ट

कविवर के गद्य रचना का एक उदाहरण

२४ तीर्थंकरों के नामों का अर्थ व कारण

(चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ)

१. ।ॐ। संयम धुरा वहिवा भणी ऋषभ-समानि, ते ऋषभ । ए सामान्य अर्थ ।

उरू नइ विषय ऋषभ लांछन अथवा चउद सुपना माहे पहिलउ मरुदेवायइ ऋषभ दीठउ, ते भणी ऋषभ । ए विशेष ।१।

२. परीसहेन जीतउ, ते अजित । ए सामान्य । गर्भ थकां माता नइ पासा सारी रमतां राजायइ जीती नहीं । ए वि० ।२।

३. चउत्रीस अतिसय अथवा सुख जेहनइ विषय संभवइ, ते संभव । ए सामान्य ।

जिणइ गर्भि थकां पृथिवी मांहि धान्य निष्पत्ति अधिकी थई, ते सम्भव । ए वि० ।३।

४. अभिनंदियइ देवेंद्रादिके ते अभिनन्दन । ए सामान्य । गर्भि आव्यां पछी वार २ इंद्रइ अभिनंदयउ ते अभि० । ए वि० ।४।

५. जेह नी भली मति ते सुमति । ए सामान्य । गर्भि थकां सउकि नइ झगडइ माता नइ भली मति ऊपनी, झगडउ भागउ ते भणी सुमति । ए वि० ।५।

६. पद्म नी परि प्रभा ते भणी पद्मप्रभ । ए सामान्य । गर्भि थकां माता नइ पद्म नी शय्या नउ डोहलउ ऊपनउ, ते भणी पद्मप्रभ । ए वि० ।६।

७. शोभन छइ पसवाड़ा जेहना, ते सुपार्श्व । ए सामान्य । गर्भि थकां माता ना पसवाडा भला थया, रोग गयउ, ते भणी सुपार्श्व । ए वि० ।७।

प्रबोधगीतम्

साम्भां थकां सहु भ्रम करउ, पछइ आपणउ काम ।
दुख आव्यां थायइ दोहिलउ, मन न रहइ ठाम ॥१॥सा०
जीवण जाणइ ·········णु, सउ बरस नी आस ।,
पणि वेसास नहीं घड़ी, आविउ नाव्यो के सास ॥२॥सा०
अमर तो को दीसइ नहीं, जग ऊलटय ·········।
यइसि रहाउ किउं बापड़ा, करि जउ काइ थाइ ॥३॥सा०
ए सामग्री दोहिली, वली नीरोग डील ।
भोजन प्राण·········उ, हिवइ काइं करइ ढील ॥४॥सा०
पहिलुं परिवारी रह्यू, लेजे संबल साथि ।
समयसुन्दर कहइ··· , हुस्यइ सहु सुख हाथि ॥५॥सा०

साजा० इति गीतं ।

लिखितं पंडित जगजीवनेन साध्वी लखमी माला पठन कृते
शुभम् भवतु कल्याणमस्तु ।



⊛ (पत्र १ आधा त्रुटित मिला, इसमें दादा गुरु के १० गीत हैं जिनमें पूर्व प्रकाशित ५ गीतों को छोड़ अन्य ५ गीत यहाँ दिये गये हैं ।)

परिशिष्ट

कविवर के गद्य रचना का एक उदाहरण

२४ तीर्थंकरों के नामों का अर्थ व कारण

(चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ)

१. । ॐ । संयम धुरा वहिवा भणी ऋषभ-समानि, ते ऋषभ । ए सामान्य अर्थ ।

उरू नइ विषय ऋषभ लांछन अथवा चउद सुपना माहे पहिलच मरुदेवायइ ऋषभ दीठउ, ते भणी ऋषभ । ए विशेष ।१।

२. परीसहेन जीतउ, ते अजित । ए सामान्य । गर्भे थकां माता नइ पासा सारी रमतां राजायइ जीती नहीं । ए वि० ।२।

३. चउत्रीस अतिसय अथवा सुख जेहनइ विषय संभवइ, ते संभव । ए सामान्य ।

जिणइ गर्भि थकां पृथिवी मांहि धान्य निष्पत्ति अधिकी थई, ते सम्भव । ए वि० ।३।

४. अभिनंदियइ देवेंद्रादिके ते अभिनन्दन । ए सामान्य । गर्भि आव्यां पछी वार २ इंद्रइ अभिनंद्यउ ते अभि० । ए वि० ।४।

५. जेह नी भली मति ते सुमति । ए सामान्य । गर्भि थकां सउकि नइ झगडइ माता नइ भली मति ऊपनी, झगडउ भागउ ते भणी सुमति । ए वि० ।५।

६. पद्म नी परि प्रभा ते भणी पद्मप्रभ । ए सामान्य । गर्भि थकां माता नइ पद्म नी शय्या नउ डोहलउ ऊपनउ, ते भणी पद्मप्रभ । ए वि० ।६।

७. शोभन छइ पसवाड़ा जेहना, ते सुपार्श्व । ए सामान्य । गर्भि थकां माता ना पसवाडा भला थया, रोग गयउ, ते भणी सुपार्श्व । ए वि० ।७।

८. चंद्र नी परि सौम्य प्रभा छइ जेहनी, ते चंद्रप्रभ। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ चंद्रमा नउ डोहलउ थयउ,
ते भणी चंद्रप्रभ। ए वि० ।८।
९. शोभन भलउ विधि आचार जेहनउ, ते सुविधि। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व विधि नइ विषइ कुशल थई,
ते भणी सुविधि। ए वि० ।९।
१०. समस्त जीव नइ सन्ताप पाप उपशमावी शीतल करइ,
ते शीतल। ए सामान्य।
गर्भि थकां माताना कर स्पर्श थी पिता नउ पूर्वोत्पन्न असाध्य
रोग उपशम्यउ, ते भणी शीतल। ए वि० ।१०।
११. समस्त लोक नइ श्रेय हित करइ, ते श्रेयांस। ए सामान्य।
गर्भि थकां मातायइ किणइ अनाक्रमी शय्या आक्रमी
श्रेय कल्याण थयउ ते भणी श्रेयांस। ए वि० ।११।
१२. वसु देव विशेष तेहनइ पूज्य, ते वसुपूज्य। ए सामान्य।
गर्भि थकां वसु रत्ने करी इंद्रराज कुल पूरतउ हुयउ अथवा
वसुपूज्य राजा नउ बेटउ, ते वासुपूज्य। ए वि० ।१२।
१३. विमल निर्मल ज्ञान छइ जेहनउ, ते विमल।
अथवा गयउ छइ मल जेहथी, ते विमल। ए सामान्य।
गर्भि थकां मातानी मति अनइ देह विमल निर्मल थई,
ते विमल। ए वि० ।१३।
१४. अनन्त कर्म ना अंश जीता अथवा अनन्त ज्ञानादि छइ
जेहनां, ते अनन्त। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता रत्न खचित अनन्त कहतां महत्प्रमाण
दाम स्वप्नइ दीठुं, ते भणी अनन्त। ए वि० ।१४।
१५. दुर्गति पडतां प्राणी नइ धरइ ते धर्म। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता दानादि धर्म नइ विषय तत्पर थई,
ते भणी धर्म। ए वि० ।१५।

१६. शांति करइ, ते शांति । ए सामान्य।
गर्भि थकां अशिव उपशमयउ शांति थई, ते भणी शांति । ए वि० ।१६।
१७. कु कहतां पृथिवी विषइ रहाउ, ते कुन्थु । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नखचित कुन्थु कहतां थूभ देखती हुई, ते भणी कुन्थु । ए वि० ।१७।
१८. कुल नी वृद्धि भणी हुवइ ते अर । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नमय अरउ दीठउ, ते भणी अर । । ए वि० ।१८।
१९. परीषहादि मल्ल जीता ते भणी मल्लि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ सर्व ऋतु कुसुम माल्य शय्या नउ डोहलउ देवता पूरयउ, ते भणी मल्लि । ए वि० ।१९।
२०. जगत् नी त्रिकालावस्था जाणइ ते मुनि, अनइ भला व्रत छइ जेहना ते सुव्रत, (बे) पद मिल्यां मुनि सुव्रत । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता मुनिनी परि सुव्रत थई, ते भणी सु० । ए वि० ।२०।
२१. परीसहां नइ नमाड्या, ते भणि नमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां गढ परि माता नइ देखी नइ वैरी नम्या, ते भणि नमि । ए वि० ।२१।
२२. अरिष्ट उपद्रव छेदिवा नइ नेमि कहतां चक्रधारा समावि, ते नेमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अरिष्ट रत्नमय नेमि दीठउ ते भणी, नेमि । ए वि० ।२२।
२३. सर्व भाव देखइ ते पार्श्व । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अन्धारइ सांप दीठउ, ते भणी पार्श्व । ए वि० ।२३।
२४. ज्ञानादि के वध्यउ ते वर्द्धमान । ए सामान्य।
गर्भि थकां ज्ञान, कुल, धन, धान्यादिकइ करी वध्यउ, ते भणी वर्द्धमान । ए वि० ।२४।
ए चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ जाणिवा।
(पत्र १ स्वयं लिखित समयसुन्दर)

८. चंद्र नी परि सौम्य प्रभा छइ जेहनी, ते चंद्रप्रभ । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ चंद्रमा नउ डोहलउ थयउ,
ते भणी चंद्रप्रभ । ए वि० ।८।

९. शोभन भलउ विधि आचार जेहनउ, ते सुविधि। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व विधि नइ विषइ कुशल थई,
ते भणी सुविधि। ए वि० ।९।

१०. समस्त जीव नइ सन्ताप पाप उपशमावी शीतल करइ,
ते शीतल । ए सामान्य।
गर्भि थकां माताना कर स्पर्श थी पिता नउ पूर्वोत्पन्न असाध्य
रोग उपशम्यउ, ते भणी शीतल । ए वि० ।१०।

११. समस्त लोक नइ श्रेय हित करइ, ते श्रेयांस । ए सामान्य।
गर्भि थकां मातायइ किणइ अनाक्रमी शय्या आक्रमी
श्रेय कल्याण थयउ ते भणी श्रेयांस । ए वि० ।११।

१२. वसु देव विशेष तेहनइ पूज्य, ते वसुपूज्य । ए सामान्य।
गर्भि थकां वसु रत्ने करी इंद्रराज कुल पूरतउ हुयउ अथवा
वसुपूज्य राजा नउ बेटउ, ते वासुपूज्य । ए वि० ।१२।

१३. विमल निर्मल ज्ञान छइ जेहनउ, ते विमल।
अथवा गयउ छइ मल जेहथी, ते विमल । ए सामान्य।
गर्भि थकां मातानी मति अनइ देह विमल निर्मल थई,
ते विमल । ए वि० ।१३।

१४. अनन्त कर्म ना अंश जीता अथवा अनन्त ज्ञानादि छइ
जेहनां, ते अनन्त । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता रत्न खचित अनन्त कहतां महत्प्रमाण
दाम स्वप्नइ दीठुं, ते भणी अनन्त । ए वि० ।१४।

१५. दुर्गति पडतां प्राणी नइ धरइ ते धर्म । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता दानादि धर्म नइ विषय तत्पर थई,
ते भणी धर्म । ए वि० ।१५।

१६. शांति करइ, ते शांति । ए सामान्य।
गर्भि थकां अशिव उपशमयउ शांति थई, ते भणी शांति
। ए वि० ।१६।

१७. कु कहतां पृथिवी विषइ रह्यउ, ते कुन्थु । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नचित्र कुन्थु कहतां थूभ देखती हुई,
ते भणी कुन्थु । ए वि० ।१७।

१८. कुल नी वृद्धि भणी हुवइ ते अर । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नमय अरउ दीठउ, ते भणी अर ।
। ए वि० ।१८।

१६. परीषहादि मल्ल जीता ते भणी मल्लि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ सर्व ऋतु कुसुम माल्य शय्या नउ
डोहलउ देवता पूरयउ, ते भणी मल्लि । ए वि० ।१६।

२०. जगत् नी त्रिकालावस्था जाणइ ते मुनि, अनइ भला व्रत
छइ जेहना ते सुव्रत, (वे) पद मिल्यां मुनि सुव्रत । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता मुनिनी परि सुव्रत थई, ते भणी सु० ए वि० ।२०।

२१. परीसहां नइ नमाड्या, ते भणि नमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां गढ परि माता नइ देखी नइ वैरी नम्या,
ते भणि नमि । ए वि० ।२१।

२२. अरिष्ट उपद्रव छेदिवा नइ नेमि कहतां चक्रधारा समावि,
ते नेमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अरिष्ट रत्नमय नेमि दीठउ ते भणी,
नेमि । ए वि० ।२२।

२३. सर्व भाव देखइ ते पार्श्व । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अन्धारइ सांप दीठउ, ते भणी पार्श्व । ए वि० ।२३।

२४. ज्ञानादि के वध्यउ ते वर्द्धमान । ए सामान्य।
गर्भि थकां ज्ञान, कुल, धन, धान्यादिकइ करी वध्यउ,
ते भणी वर्द्धमान । ए वि० ।२४।

ए चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ जाणिवा।
(पत्र १ स्वयं लिखित समयसुन्दर)